विशय सूची

लेखक के द्वारा कुछ षब्द : यह टीका कैसे आपकी सहायता कर सकती है ? 4

बाइबल अध्ययन के लिए दिषा निर्देष : प्रमाणित कर सकनेवाले सत्य की स्वयं खोज करना 6

टीका :
यूहन्ना रचित सुसमाचार का परिचय 14

यूहन्ना – 1 22
यूहन्ना – 2 51
यूहन्ना – 3 65
यूहन्ना – 4 84
यूहन्ना – 5 104
यूहन्ना – 6 119
यूहन्ना – 7 144
यूहन्ना – 8 162
यूहन्ना – 9 182
यूहन्ना – 10 196
यूहन्ना – 11 211
यूहन्ना – 12 227
यूहन्ना – 13 247
यूहन्ना – 14 260
यूहन्ना – 15 283
यूहन्ना – 16 297
यूहन्ना – 17 311
यूहन्ना – 18 328
यूहन्ना – 19 345
यूहन्ना – 20 363
यूहन्ना – 21 376

1यूहन्ना का परिचय 387

1यूहन्ना – 1:1–2:2 393
1यूहन्ना – 2:3–3:3 406
1यूहन्ना – 2:28–3:24 428
1यूहन्ना – 4 456
1यूहन्ना – 5 472

2यूहन्ना 492

3यूहन्ना 503

यूहन्ना रचित सुसमाचार के विषेश षीर्शकों की सूची

यीषु के प्रति गवाही	30
फरीसी	41
दाखरस और तीव्र पेयजल।	55
यूहन्ना द्वारा क्रिया '' विष्वास '' का प्रयोग।	65
जातिवाद	91
परमेष्वर की इच्छा (थेलेमा)	102
मसीही निष्चयता	136
बुलाए गए	140
यूहन्ना में ''सच्चाई''	143
साहस (परेसिया)	153
दृढ़ रहने की आवष्यकता	178
उद्धार के लिए प्रयोग किए गए यूनानी क्रिया पद वाक्य	193
अंगीकार	197
विनाष (अपोलुमी)	208
बाइबल में अभिशेक	222
षवसंसकार की अभ्यास	231
व्यक्तिगत बुराई	248
हृदय या मन	252
पहली षताब्दी के यहूदी धर्म में फसह के क्रम (निर्ग. 12)	260
प्रभावषाली प्रार्थना	278
यीषु और पवित्र आत्मा	280
त्रिएकता	286
मसीही और षान्ति	289
आग	299
प्रभु का नाम	303
यूहन्ना के लेखें में ''सत्य''	327
स्वधर्म त्याग	332
पोन्तियुस पीलातुस	353
महिलाएं जिन्होंने यीषु के पीछे हो लिए।	369
षवससंकार का इत्र	375

***1यूहन्ना की पत्री** के विषेश षीर्शकों की सूची*

यूहन्ना 1 का तुलना 1यूहन्ना 1 से	411
मसीहत सहभागिता है।	414
यूहन्ना के लेखों में ''बने रहना''	429
मानवीय सरकार	434
मसीह के पुनरागमन का नए नियम षब्दें।	447
धार्मिकता	449
एक व्यक्ति के उद्धार के बारे में नए नियम में प्रमाण	454
परमेष्वर का पुत्र	460
प्रार्थना, असीमित पर सीमित।	469

क्या मसीहियों को एक दूसरे पर दोश लगाना चाहिए ? 476
“परख” का यूनानी षब्द तथा उनका संकेतार्थ । 477
निष्चयता 497
मध्यस्थता प्रार्थना 500
क्या है वह पाप जिसका फल मृत्यु है ? 507

लेखक द्वारा कुछ षब्द : यह टीका कैसे आपकी सहायता कर सकती है?

बाइबलीय अनुवाद एक बुद्धिसंगत और आत्मिक प्रक्रिया है जो प्राचीन प्रेरणा पाए हुए लेखक को इस तरह समझने की कोषिष करता है कि परमेष्वर का संदेष आज के समय में समझा और लागू किया जा सके।

आत्मिक प्रक्रिया बहुत ही महत्वपूर्ण है पर इसे वर्णन करना कठिन है। इसमें परमेष्वर की षरण में जाना और परमेष्वर के प्रति खुल्लापन ज़रूरी है। भूख होना ज़रूरी है (1) परमेष्वर के लिए, (2) उन्हें जानने के लिए, (3) उनकी सेवा करने के लिए। इस प्रक्रिया में प्रार्थना, पाप स्वीकार करना और जीवन षैली में परिवर्तन के लिए तैयार होना षामिल है। बाइबल की अनुवाद प्रक्रिया के लिए पवित्र आत्मा का होना ज़रूरी है पर ईमानदार और भक्त मसीही कैसे बाइबल को अलग रीति से समझते हैं ये एक रहस्य है।

बुद्धिसंगत प्रक्रिया का वर्णन करना आसान है। हमें मूलपाठ में ही बने रहना चाहिए और बिना पक्षपात के और अपने व्यक्तिगत या कलीसियाई पृश्ठभूमी से प्रभावित नहीं होना चाहिए। हम सभी एतिहासिक रूप से सषर्त है। हम में से कोई भी मन से बाहर के या स्वतंत्र अनुवादक नहीं है। यह टीका अनुवाद के तीन सिद्धान्त के साथ बुद्धिसंगत प्रक्रिया को सावधानी से प्रयोग करने के कार्य को प्रस्तुत करती है ताकी हम अपनी पृश्ठभूमी पर विजय पा सकें।

पहला सिद्धान्त

पहला सिद्धान्त यह है कि बाइबल की पुस्तक किस ऐतिहासिक घटना के समय लिखी गई उसे लिखिए और किस ऐतिहासिक घटना के कारण यह लिखी गई। वास्तविक लेखक का इसे लिखने का कोई उद्देष्य था और एक संदेष था जिसे वह बताना चाहते थे। मूलपाठ का अर्थ हमारे लिए कभी भी वो नहीं हो सकता जो अर्थ उसके वास्तविक, प्राचीन और प्रेरणा प्राप्त लेखक के लिए नहीं था। उनका उद्देष्य ही इसकी कुंजी है न कि हमरी ऐतिहासिक , भावनात्मक, सांसकृतिक, व्यक्तिगत या कलीसियाई आवष्यकता। यह लगातार दोहराया जाना चाहिए कि प्रत्येक बाइबलीय मूलपाठ का केवल एकमात्र अर्थ होता है। यह वही अर्थ है जिसे आज के समय के लिए पवित्र आत्म की अगुवाई में वास्तविक लेखक बताना चाहते थे। इस एक अर्थ की विभिन्न संस्कृतियों और परिस्थितियों में विभिन्न व्यवहारिकताऐं हो सकती हैं। पर यह तमाम व्यवहारिकताऐं वास्तविक लेखक के केंन्द्रीय सत्य से जुड़ी होनी चाहिए। इसी कारण बाइबल की हरेक पुस्तक की भूमिका प्रदान करने के उद्देष्य से यह पढ़ने में मार्गदर्षन देने वाली टीका बनाई गई है।

दूसरा सिद्धान्त

दूसरा सिद्धान्त यह है कि मूलपाठ के पूर्ण लेखन संदर्भ को पहचानना। बाइबल की सम्पूर्ण पुस्तकें एक ही लेख हैं। अनुवादक को कोई अधिकार नहीं कि वह किसी एक सत्य का प्रयोग करे और बाकी भाग को एसे ही छोड़ दे।एक भाग का अनुवाद करने से पहले हमें बाइबल की पूरी पुस्तक के उद्देष्य को समझना होगा। एक भाग जैसे– पाठ, अनुच्छेद, और आयत का कभी भी वह अर्थ नहीं हो सकता तो पूरे भाग का नहीं है। अनुवाद पूर्ण भाग का व्याख्यान करने के साथ षुरू होना चाहिए और फिर आयतों के अनुवाद तक पंहुचना चाहिए। इसलिए यह टीका बनाई गई ताकी विद्यार्थी प्रत्येक लिखित संदर्भ को समझ सके। अनुच्छेद और अध्याय प्रेरणा पाए हुए नहीं हैं पर वह हमारी सहायता करते हैं कि एका ही सोच या विशय के भाग को समझ सकें।

एक षब्द, मुहावरा, वाक्यांष या वाक्य का अनुवाद नहीं परन्तु सम्पूर्ण अनुच्छेद का अनुवाद करना ही लेखक के उद्देष्य को समझने की कुंजी है। अनुच्छेद षीर्शक पर आधारित होता है और अधिकतर ये केन्द्रीय विशय या षीर्शक वाक्य के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक अनुच्छेद के षब्द, मुहावरे, वाक्यांष और वाक्य उसके षीर्शक पर आधारित होते हैं। ये उसे सीमित करते हैं, बड़ाते हैं, व्याख्या करते हैं और उससे सवाल करते हैं। सही तरह से व्याख्या करने की कुंजी ये है कि प्रत्येक अनुच्छेद को लिखने के पिछे के लेखक के उद्देष्य को समझना जिनके जुड़ने से ही बाइबल का निर्माण हुआ है। ये अध्ययन टीका इसलिए रची गई ताकी विद्यार्थी विभिन्न अंग्रेजी अनुवादों की आपस में तुलना करके अनुवाद कर सके। इन अनुवादों का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि ये भिन्न प्रणालियों से रचे गए हैं।

1. यूनाईटेड़ बाइबल सोसाइटी का यूनानी मूलपाठ चौथी प्रती है। यह मूलपाठ नवीन बुद्धि जीवीयों द्वारा अनुच्छेदों में बाँटा गया।

2. न्यू कींग जेम्स वरषन हरेक षब्द का अनुवाद करके रचा गया जो कि यूनानी हस्त लेख परम्परा जिसे टक्सटस रेसिप्टस कहते हैं पर आधारित है। इसके अनुच्छेद बाकी अनुवादों की अपेक्षा बड़े हैं। यह बड़े अनुच्छेद विद्यार्थी की सहायता करते हैं कि वह जुड़े हुए षीर्शक को देख सके।

3. न्यू रिवाईस्ड़ स्टेन्ड़र्ड़ वरषन नवीनतम हरेक षब्द का अनुवाद है। यह दोनों अनुवादों के मध्य के बिन्दु पर केन्द्रीत है। विशय को पहचानने के लिए इसके अनुच्छेद काफी सहायक हैं।

4. टूड़ेस ईंग्लीस वरषन यूनाईटेड़ बाइबल सोसाईटी का षक्तियुक्त समानता का प्रकाषन है। इसमें बाईबल का इस तरह अनुवाद किया गया है कि आज के समय के अंग्रेज़ी बोलने वाले यूनानी मूलपाठ के अर्थ को समझ सकें। अधिकतर, विषेश रूप से सुसमाचारों में, अनुच्छेदों को इसमें वक्ता के आधार पर न कि विशय के आधार पर, ठीक उसी प्रकार जैसे कि एन आई वी में। अनुवाद के उद्‌देष्य के लिए यह सहायक नहीं है। यह बहुत ही आष्चर्य की बात है कि यू बी एस और टी ई वी एक ही प्रकाषन ने प्रकाषित किए हैं पर फिर भी इनके अनुच्छेद विभाजन में कितना अंतर है।

5. यरूषलेम बाइबल फ्रांस कैथलिक अनुवाद पर आधारित एक षक्तियुक्त समानता का अनुवाद है।

6. छापा हुआ मूलपाठ 1995 का न्यू अमेरिकन स्टेन्ड़र्ड बाइबल का उन्नत अनुवाद है जो कि हरेक षब्द का अनुवाद है। इसके अनुच्छेद में प्रत्येक आयत पर टिप्पणी की गई है।

तीसरा सिद्धान्त

तीसरा सिद्धान्त यह है कि बाइबल के विभिन्न अनुवादों को पढ़ें ताकी इसके विस्तरित अर्थ को समझा जा सके। साधारण तौर पर यूनानी षब्दों और मुहावरों को कई अर्थों में समझा जा सकता है। ये अनुवाद हमारी सहायता करते हैं कि हम यूनानी हस्त लेखों के उन विभिन्न अर्थों को समझ सकें। ये हमारे सिद्धान्तो को प्रभावित नहीं करते परन्तु हमारी सहायता करते हैं कि हम प्रेरणा पाए हुए वास्तविक लेखक द्वारा लिखे षब्दों का सही अर्थ समझ सकें।

टीका विद्यार्थी की सहायता करता है कि वह अपने अनुवाद की जांच कर सके। यह पूर्ण अनुवाद है एसा नहीं है पर यह जानकारी देने वाला और सोचने के लिए प्रेरणा देने वाला है। बाकी अनुवाद हमारी सहायता करते है ताकी हम संकुचित, हठधर्मी और जातीय विचारधारा के न हो जाऐं। अनुवादक के पास बहुत से प्रकार के अनुवाद के चुनाव होने चाहिए ताकी वह जान सके कि प्राचीन अनुवाद कितने अनेकार्थी हो सकते हैं। यह बहुत ही चौंका देने वाली बात है कि मसीहियों के बीच कितना थोड़ी सहमति है जो बाइबल को अपने सत्य का स्रोत मानते हैं।

इन सिद्धान्तों ने मेरी सहायता की है कि मैं प्रचीन अनुवादों से संघर्श कर सकूं और अपनी ऐतिहासिक षर्तों पर विजय पा सकूं। मेरी आषा यह है कि यह आपके लिए भी एक आषीश का कारण होगा।

बॉब यूट्‌ले
ईस्ट टेक्सास बापटिस्ट यूनिवर्सिटी

बाइबल अध्ययन के लिए दिषा निर्देष :
प्रमाणित कर सकने वाले सत्य की स्वयं खोज करना

क्या हम सच जान सकते हैं? यह कहाँ मिलता है? क्या इसे हम तर्कानुसार प्रमाणित कर सकते हैं। क्या कोई अनन्त षक्ति है? क्या ऐसा कोई परम सत्य हैं जो हमारे जीवन और संसार की अगुवाई कर सके? क्या जीवन का कोई अर्थ है? हम क्यों यहाँ पर हैं? हम कहाँ जा रहे हैं? ये बुद्धिसंम्पन्न लोगों द्वारा घृणा किए गए वो सवाल हैं जिन्होंने षुरूवात से ही बुद्धिमान लोगों को भयभीत किया हुआ है (सभो. 1:13–18; 3:9–11)। मैं अपने जीवन के मध्य अंषों की व्यक्तिगत खोज को याद कर सकता हूँ। अपने ही परिवार के मुख्य सदस्यों की गवाही के कारण मैं युवा अवस्था में ही मसीही विष्वासी बन गया। जब मैं जवान हो गया तो अपने और संसार के बारे में प्रष्न भी बढ़ने लगे। साधारण संस्कृति और धार्मिक अनुश्ठान वह अर्थ नहीं ला सके जो मैंने पढ़े और अनुभव किए थे। यह इस अचेतन और कठोर संसार में मेरे दुविधा, खोज, अभिलाशा और आषाहीनता के अनुभव करने का समय था।

बहुत से लोग यह दावा करते हैं कि इन सवालों का उत्तर उनके पास है पर खोज और मनन के बाद मैंने पाया कि उनके उत्तर इन बातों पर आधारित थे : 1) व्यक्तिगत तत्वज्ञान, 2) प्राचीन मिथ्या, 3) व्यक्तिगत अनुभव और 4) मनोवैज्ञानिक प्रवृति। मुझे जरूरत थी कुछ प्रमाणों, कुछ सबूतों, कुछ तर्काधार बातों की जिन पर मैं अपना संसारिक दृश्टिकोणों, अंषों का बना मेरा जीवन और मेरे जीने का कारण आधारित कर सकूं।

मैंने ये सब कुछ अपने बाइबल के अध्ययन में पाया। मैं इसकी विष्वासयोग्यता के प्रमाणों का खोजने लगा, जो मुझे इन जगहों पर मिले : 1) पुरातत्व विज्ञान के द्वारा बाइबल विष्वस्त ऐतिहासिकता का प्रमाण, 2) पूराने नियम की भविश्यवाणीयों की पूर्णता, 3) 1600 साल के बाइबल के लेखन काल में भी बाइबल के संदेष में एकता, 4) उन लोगों के व्यक्तिगत जीवन की गवाही जिनका जीवन बाइबल के सम्पर्क में आते ही पूरी तरह से बदल गया। विष्वास और मत विचार का मिश्रण होने के कारण मसीहत में वो काबलियत है कि वह मानव जीवन के पेंचीदा सवालों के जवाब दे सकती है। इसने न केवल प्रमाणिक चौखट प्रदान कर अपितु बाइबलीय विष्वास के प्रायोगिक चरण को भी प्रस्तुत किया जिसने मेरे अन्दर भावनात्मक आनन्द और दृढ़ता उत्पन्न की। मैंने सोचा कि मैंने अपने जीवन के मध्य अंष को पा लिया है—मसीह, जैसा कि पवित्र षास्त्र से समझा जा सकता है। यह एक विचारात्मक अनुभव और भवात्मक छुटकारा है। मैं अब भी उन धक्कों और दर्दों को याद करता हूँ जब एक ही कलीसिया और एक ही विचार रखने वाले विद्यालयों से इस पुस्तक के अलग–अलग अनुवादों की वकालत करते थे। बाइबल की प्रेरणा और विष्वस्तता को साबित करना अन्त नहीं परन्तु केवल षुरूवात है। मैं कैसे बाइबल को आधिकारिक और विष्वस्त समझने वाले लोगों द्वारा बाइबल के कठिन भागों के आपस में टकराने वाले अनुवादों को ग्रहण कर सकता हूँ या उनका तिरस्कार कर सकता हूँ?

यह कार्य मेरे जीवन का लक्ष्य और मेरे विष्वास का तीर्थस्थल बन गया। मैं जानता था कि मसीह पर विष्वास करने के कारण : 1) मेरे जीवन में अगम्य षान्ति और आनन्द था। मेरी संस्कृति के बीच मेरा दिमाग किसी पूर्णता की खोज में था। 2) संसारिक विवादास्पद धर्मों का हठधर्मीपन; और 3) जातीय घमण्ड। प्राचीन लेख की प्रमाणिक अनुवाद की विधियों की तलाष ने मेरे अपने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, जातीय और अनुभव के पक्षपात को समझने में मेरी देखरेख की। अधिकतर मैं अपने ही विचारों को थोपने के लिए बाइबल पढ़ा करता था। मैंने दूसरों पर प्रहार करने के लिए इसका प्रयोग हठधर्म के स्रोत के रूप किया और साथ ही अपनी असुरक्षा और अपर्याप्तता को प्रमाणित किया। इसे समझना मेरे लिए कितना दर्दनाक है।

मैं कभी भी स्थूल नहीं हो सकता परन्तु केवल बाइबल का एक अच्छा पाठक बन सकता हूँ। मैं अपने पक्षपात को पहचान कर और उनके अस्तित्व की मौजूदगी को समझ कर उसे सीमित कर सकता हूँ। मैं उनसे स्वतंत्र नहीं हूँ पर मैने अपनी कमज़ोरी का सामना कर लिया है। अधिकतर एक अनुवादक ही बाइबल का सबसे बुरा षत्रु होता है।

मैं अपनी पूर्वधारणा की सूची जो बाइबल को पढ़ने के समय मेरे मन में थी उसे प्रस्तुत करना चाहता हूँ ताकी आप, पाठक, स्वयं को जांच सकें।

(1) पूर्वधारणा

क) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल एक सच्चे परमेष्वर की स्वयं को प्रकट करने के लिए एक स्वयं प्रकाषन है। इसलिए इसका अनुवाद इसके वास्तविक ईष्वरीय लेखक (पवित्रात्मा) के उद्देष्य के प्रकाष में तथा मानव लेखक की ऐतिहासिक परिस्थिति में होना चाहिए।

ख) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल सामान्य व्यक्ति (सभी मनुश्यों) के लिए लिखी गई है। परमेष्वर ने हमसे स्पश्ट बातें करने के लिए स्वयं को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ में ढ़ाल लिया। परमेष्वर कभी भी सत्य नहीं छिपाते पर चाहते हैं कि हम उसे जानें। इसलिए उसे उसके दिन के प्रकाष में ही अनुवाद करना चाहिए न कि हमारे। बाइबल का हमारे लिए वह अर्थ नहीं होना चाहिए जो उसके सबसे पहले पढ़ने और सुनने वालों के लिए नहीं था। इसे साधारण मानवीय दिमाग द्वारा समझा जा सकता है क्योंकि यह साधारण मनुश्य की भाशा और विधि में लिखी गई है।

ग) मैं विष्वास करता हूँ कि बाइबल में एक संदेष और इसका एक उद्देष्य है। यह कभी भी स्वयं का विरोध नहीं करती यद्धपि इसमें कठिन लिखित भाग हैं। इसलिए बाइबल का उत्तम अनुवादक बाइबल स्वयं है।

घ) मैं विष्वास करता हूँ कि भविश्यवाणीयों को छोड़ सभी भागों का एक ही अर्थ है जो प्रेरणा पाए हुए और वास्तविक लेखक के उद्देष्य पर आधारित है। हम कभी भी वस्तविक लेखक की सम्पूर्ण मनसा को नहीं जान सकते पर उस ओर जाने के कुछ निर्देष हैं।

1) संदेष को पहुँचाने के लिए किस तरह की लेखन विधि का प्रयोग किया गया है।
2) ऐतिहासिक घटना या विषेश घटना जिसने लेख को जन्म दिया।
3) सम्पूर्ण पुस्तक और लिखित साहित्य भाग का साहित्य सम्बन्धी संदर्भ।
4) मूलपाठ रचनातंत्र जो साहित्य भाग जो सम्पूर्ण संदेष का वर्णन करता है।
5) संदेष पहुँचाने के लिए विषेश व्याकरण का प्रयोग किया गया है।
6) संदेष को प्रस्तुत करने के लिए किन षब्दों का प्रयोग किया गया है।
7) सदृष्य लेख।

इन सभी बातों का अध्ययन करना लेख के अध्ययन करने का साधन है। इससे पहले कि मैं अपनी बाइबल पढ़ने की अच्छी विधि बताऊँ, मैं आज कल प्रयोग में लाई जाने वाली गलत विधियों की चर्चा करना चाहता हूँ जिन्होंने अनुवाद में भिन्नता उत्पन्न कर दी है और इन्हें प्रयोग में नहीं लाना चाहिए।

(2) <u>गलत विधियाँ</u>

1. बाइबल के सम्पूर्ण साहित्य संदर्भ को छोड़ एक वाक्य, वाक्यांष, या षब्द को सत्य वाक्य के रूप में प्रयोग करना जो लेखक और पूरे संदर्भ का उद्देष्य न हो। इसे ''प्रमाणित–मूलपाठ'' कहते हैं।

2. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और काल्पनिक इतिहास जिसे मूलपाठ या तो थोड़ा या बिलकुल भी प्रमाणित नहीं करता।

3. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और उसे सुबह के अख़बार के समान पढ़ना जैसे कि वह प्राथमिक रूप से नए ज़माने के मसीहियों के लिए लिखी गई हो।

4. बाइबल के ऐतिहासिक आधार को छोड़ देना और रूपक कथा द्वारा मूलपाठ को तत्वज्ञान और धर्मषिक्षा के रूप में संदेष को प्रकट करना जो पहले पाठक और लेखक के उद्देष्य से बिलकुल मेल न खाता हो।

5. वास्तविक संदेष को छोड़कर अपनी ही धर्मषिक्षा, सिद्धान्त और वर्तमान घटनाओं के बारे में सीखना जो वास्तविक लेखक और दिए गए संदेष से मेल न खाए। यह बात तब होती है जब वक्ता अपने अधिकार को साबित करने के लिए बाइबल पढ़ता है। इसे ''पाठक के प्रतिउत्तर'' के रूप में जाना जाता है (इस मूल पाठ का मेरे लिए क्या अर्थ है)।

प्रत्येक मानव रचित लेखों में तीन अंष पाए जाते हैं।

वास्तविक लेखक का उद्‌देष्य	लिखित मूलपाठ	वास्तविक प्राप्तकर्ता

पीछलि अध्ययन प्रणाली तीन में से एक बात पर केन्द्रीत थी। सही रूप से अतुल्य प्रेरणात्मक बाइबल को प्रमाणित करूँ तो नवीनतम रेखा चित्र अधिक सही है।

पवित्रात्मा	हस्तलेख वर्गभेद	बाद के विष्वासी
वास्तविक लेखक का उद्‌देष्य	लिखित मूलपाठ	वास्तविक प्राप्तकर्ता

सच्चाई में ये तीनों ही अंष अनुवाद प्रणाली में षामिल होना चाहिए। प्रमाणिकता के उद्‌देष्य से मेरे अनुवाद षुरू के दो अंषों पर केन्द्रीत होते हैं : वास्तविक लेखक और मूलपाठ। मैं उन दुरूपयोगों का विराध कर रहा हूँ जिन्हें मैंने देखा है। 1) मूलपाठ को रूपक कहानियों और आत्मिक बातों में बदलना। 2) पाठक का प्रतिउत्तर (इस मूल पाठ का मेरे लिए क्या अर्थ है)। दुरूपयोग किसी भी स्तर पर हो सकता है। हमें हमेषा अपने उद्‌देष्य, पक्ष, तरीके और व्यवहारिकता को जाँचना चाहिए। इन्हें हम कैसे जाँचें अगर अनुवाद करने की कोई सीमा न हो? वास्तविक लेखक और मूलपाठ का उद्‌देष्य ही मुझे अनुवाद की सीमा रखने में सहायता करता है।
इन गलत अध्ययन विधियों के प्रकाष में अच्छे बाइबल अध्ययन और अनुवाद के कौन से तरीके हो सकते हैं जो प्रमाणिकता और एकजुटता लाते हैं।

(3) अच्छे बाइबल अध्ययन के सम्भव तरीके

यहाँ पर मैं विषेश बाइबल अनुवाद के बारे में चर्चा नहीं कर रहा पर सामान्य अनुवाद सिद्धान्त के बारे में बात कर रहा हूँ जो सभी प्रकार के साहित्य के अनुवाद में सहायता कर सकता है। विभिन्न प्रकार के लेखों का अनुवाद कैसे करना है इसके लिए गॉड़न फी और ड़गलस स्ट्राउट की पुस्तक ‘‘हाऊ टू रीड़ बाईबल फॅार ऑल इट्‌स वर्थ’’ उत्तम है।

मेरा तरीका यह है कि षुरूवात में पवित्रात्मा को कार्य करने दें कि वह साहित्य के चार अध्ययन क्रमों में इसे समझने में आपकी सहायता करे। यह पवित्रात्मा, मूलपाठ और पाठक को प्राथमिक बनाता है न कि अप्रधान। यह पाठक की भी सहायता करता है कि वह पूरी तरह से टीका पर आश्रीत न हो जाए। मैंने एसा कहते हुए सुना है कि ‘‘बाइबल टीका पर रोषनी ड़ालती है।’’ इसका अर्थ यह नहीं कि मैं अध्ययन सहायक सामग्री की आलोचना कर रहा हूँ पर मैं यह विनती करना चाहता हूँ कि उनका प्रयोग सही समय पर करें।

हममें अपने अनुवाद को मूलपाठ से प्रमाणित करने की क्षमता होनी चाहिए। पाँच क्षेत्र सीमित प्रमाणिकता प्रदान करते हैं।

1. वास्तविक लेखक की

क) ऐतिहासिक पृश्ठभूमी
ख) साहित्य संदर्भ

2. वास्तविक लेखक का चुनाव

क) व्याकरण रचना
ख) समकालीन कार्य प्रयोग
ग) लेखन विधि

3. सही की हमारी पहचान

क) सदृष्य सहित्य

हममें अपने अनुवाद के पीछे के कारण और स्वभाविकता को प्रमाणित करने की क्षमता होनी चाहिए। विष्वास और प्रयोग के लिए हमारे पास बाइबल ही एक मात्र स्त्रोत है। दुःख की बात है कि मसीह लोग इसकी षिक्षा और प्रमाणिकता का इन्कार करते हैं। यह स्वयं को ही हराने की बात है कि विष्वासी बाइबल को प्रेरणा पाया हुआ कहते हैं पर इसकी षिक्षाओं और उसकी मांग का इन्कार करते हैं।

चार अध्ययन कालचक्र जो कि अनुवाद के कार्य पर प्रकाष ड़ालने के लिए रचे गए हैं।

1. <u>पहला अध्ययन कालचक्र</u>

क) एक ही बार में पुस्तक को पढ़ना। फिर उसे दूसरे अनुवाद में पढ़ना।
– हरेक षब्द का अनुवाद (एन के जे वी, एन ए एस बी, एन आर एस वी)
– षक्तियुक्त समानता (टी इ वी, जे बी)
– भावानुवाद (लीवीगं बाईबल, एम्पलीफाइड़ बाईबल)

ख) पूरे लेख के केन्द्रीय उद्देष्य की खोज कीजिए। केन्द्रीय विशय को पहचानिए।

ग) साहित्य भाग को अलग कीजिए जैसे– अध्याय, अनुच्छेद, वाक्य जो स्पश्ट रूप से केन्द्रीय उद्देष्य या विशय को प्रकट करता हो।

घ) विषिश्ट साहित्य लेखन प्रणाली को पहचानिए।

– <u>पूराना नियम</u>
(1) इब्रानी वृत्तान्त
(2) इब्रानी काव्य (बुद्धि साहित्य, भजन संहिता)
(3) इब्रानी भविश्यवाणी (गध्य, काव्य)
(4) व्यवस्था नियम

– <u>नया नियम</u>
(1) वृ त्तान्त (सुसमाचार, प्रेरित)
(2) दृश्टान्त (सुसमाचार)
(3) पत्र
(4) भविश्यसूचक साहित्य

2. <u>दूसरा अध्ययन कालचक्र</u>

क) मुख्य षीर्शक या विशय को पहचानने के उद्देष्य से पूरी पुस्तक को फिर से पढ़ें।

ख) मुख्य षीर्शक को लिखिए और उसकी लिखित सामग्री को साधारण वाक्यों में लिखिए।

ग) अपने उद्देष्य वाक्य को जाँचीए और रूपरेखा को बढ़ाइए।

3. तीसरा अध्ययन कालचक्र

क) पूरी पुस्तक को फिर से पढ़िए और उसके ऐतिहासिक पृश्ठाधार और लिखने के पीछे की परिस्थितियों को पहचानने की कोषीष कीजिए।

ख) ऐतिहासिक चीज़ें जो पुस्तक में लिखी गई हैं उन्हें लिखिए।
– लेखक
– तारीख
– प्राप्तकर्ता
– लिखने का कारण
– लिखने के उद्देष्य का सांस्कृतिक पृश्ठाधार।
– ऐतिहासिक लोगों और घटनाओं के बारे में लेख।

ग) जिस पुस्तक का आप अनुवाद करना चाहते हैं उसकी रूपरेखा को अनुच्छेद के रूप मे विस्तरित कीजिए। साहित्य लेख को हमेषा पहचानिए। ये षायद बहुत से अनुच्छेद और अध्याय हो सकता है। यह आपकी सहायता करता है कि आप वास्तविक लेखक के उद्देष्य और लेखन प्रणाली को समझ सकें।

घ) अध्ययन सामग्री की सहायता से ऐतिहासिक पृश्ठाधार को जाँचिए।

4. चौथा अध्ययन कालचक्र

क) विभिन्न अनुवादों में साहित्य भाग को बार – बार पढ़ें।
– हरेक षब्द का अनुवाद (एन के जे वी, एन ए एस बी, एन आर एस वी)
– षक्तियुक्त समानता (टी इ वी, जे बी)
– भावानुवाद (लीवीगं बाईबल, एम्पलीफाइड़ बाईबल)

ख) साहित्य और व्याकरण की संरचना को पहचानिए।
– दोहराए गए मुहावरे, इफि.1:6, 12, 13
– दोहराए गए व्याकरण संरचना, रोमियों8:31
– सामान्य विचार अवधारणा में विरोध।

ग) निम्नलिखित चीज़ों की सूची बनाईए।
– अर्थपूर्ण बातें
– असाधारण बातें
– महत्वपूर्ण व्याकरण संरचना
– खास तौर पर कठिन षब्द, वाक्यांष और वाक्य।

घ) सदृष्य लेख की खोज कीजिए
– निम्नलिखित के द्वारा अपने विशय के स्पश्ट षिक्षा देने वाले लेख की खोज कीजिए :
(1) ''यथाक्रम धर्मषास्त्र'' की पुस्तकें
(2) परस्पर सम्बन्ध वाली बाइबल
(3) अनुक्रमणिका
– अपने ही विशय में विरोधाभासी जोड़े को खोज़ें। बहुत से बाइबलीय सत्य द्वंद्वात्मक जोड़े में आते हैं, विभिन्न कलीसियाई जातीय विवाद आधे बाइबलीय परेषानियों के साहित्य को साबित करने के कारण आते हैं। सम्पूर्ण बाइबल प्रेरणा द्वारा रची गई है हमें इसके पूर्ण संदेष को तलाषना है ताकी अनुवाद में वचनों का तौल बराबर हो।

– एक ही पुस्तक, लेखक और एक ही प्रकार के साहित्य लेख में सदृष्यता खोजिए, बाइबल ही अपनी सबसे अच्छी अनुवादक है क्योंकि इसका एक ही लेखक है, पवित्रात्मा।
ङ) अपनी ऐतिहासिक और घटना क्रम की परख को जाँचने के लिए अध्ययन के लिए सहायक सामग्री को प्रयोग करें।

– अध्ययन सहायक बाइबल
– बाइबल के षब्दकोश, विष्व कोश, गुटिका
– बाइबल की भूमीका
– बाइबल की टीका (अपने अध्ययन के इस बिन्दु पर विष्वासियों के पुर्व और वर्तमान समूह को अनुमति दें कि वह आपके व्यक्तिगत अध्ययन को ठीक कर सकें।)

(4) <u>बाइबलीय अनुवाद का व्यवहारिकरण</u>

इस बिन्दु पर हम व्यवहारिकरण की ओर मुड़ते हैं। आपने साहित्य को इसके वास्तविक पृश्ठाधार में समझने के लिए समय लगाया है अब इसे अपने जीवन और संस्कृति में लागु करने की आवष्यकता है। मैं बाइबल के अधिकार का इस प्रकार वर्णन करता हूँ ''बाइबल के वास्तविक लेखक उनके समय में क्या कहना चाहते थे उसे समझना और उस सत्य को अपने दिनों में लागु करना''।

समय और तर्क के आधार पर वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने के बाद किए गए अनुवाद के बाद उसे व्यवहार में लाना भी जरूरी है। हम बाइबल के भाग को तब तक अपने दिनों में लागु नहीं कर सकते जब तक हम यह नहीं जानतें कि उसके वास्तविक दिनों में उसका क्या अर्थ था। बाइबल के भाग का कभी भी वो अर्थ नहीं निकलना चाहिए जो उसका अर्थ कभी नहीं था।

आपकी विवर्णात्मक रूपरेखा से अनुच्छेद तक का स्तर (तीसरा अध्ययन कालचक्र) आपकी अगुवाई करेगा। व्यवहारिकरण अनुच्छेद स्तर पर होना चाहिए न कि षब्द स्तर पर। षब्द, वाक्यांष और वाक्य का अर्थ केवल संदर्भ में है। अनुवाद प्रक्रिया में प्रेरणा पाया हुआ केवल एक ही व्यक्ति षामिल है और वो है वास्तविक लेखक। हम पवित्रात्मा की ज्योति में केवल उनका अनुसरण करते हैं। यह ज्योति प्रेरणा नहीं है। ''यहोवा यूँ कहते हैं'' कहने के लिए हमे वास्तविक लेखक के उद्देष्य के साथ बने रहना पड़ेगा। व्यवहारिकता का पूरे लेख के सामान्य उद्देष्य, विषेश लेख साहित्य भाग और अनुच्छेद स्तर की विचार उन्नति के साथ सम्बन्ध होना चाहिए।

हमारे प्रतिदिन की घटनाऐं अनुवाद न करें परन्तु बाइबल को बोलने दें। यह हमसे साहित्य में से सिद्धान्त निकालने की माँग करेगा। यह तभी प्रमाणित है जब साहित्य सिद्धान्त का समर्थन करता हो। दुर्भाग्यवष अधिकतर हमारे सिद्धान्त हमारे सिद्धान्त होते हैं न कि साहित्य के सिद्धान्त।

जब हम बाइबल का व्यवहारिकता में लातें हैं तो यह याद रखना बहुत ही आवष्यक है कि भविश्यद्वाणी को छोड़ बाकी सभी भागों का केवल एकमात्र अर्थ होता है। अर्थ इसके वास्तविक लेखक के उद्देष्य से सम्बन्धित है जब उन्होंने उस समय की जरूरत और मुसीबतों के लिए लिखा था। इसके एक ही अर्थ से कई व्यवहारिक बातें निकाली जा सकती हैं। व्यवहारिकता लोगों की आवष्यकता के अनुसार हो सकती है पर वास्तविक लेखक के अर्थ से सम्बन्धित होनी चाहिए।

(5) *<u>अनुवाद का आत्मिक भाव</u>*

अब तक मैं अनुवाद और व्यवहारिकता के तार्किक और साहित्यीक प्रक्रिया के विशय मे चर्चा कर रहा था। पर अब मैं थोड़े षब्दों में अनुवाद के आत्मिक भाव की चर्चा करना चाहता हूँ। निम्नलिखित जाँच सूची मेरे लिए सहायक सिद्व हुई :
1. पवित्रात्मा की सहायता पाने के लिए प्रार्थना करो (1कुरि.1:26–2:16)

2. व्यक्तिगत क्षमा के लिए और प्रकट पापों के लिए प्रार्थना करो (1यूह.1:9)

3. परमेष्वर को जानने के लिए अत्यधिक इच्छा के लिए प्रार्थना करो (भ.सं.19:7–14; 42:1...; 119:1...)

4. अगर कोई नया प्रकाष मिला है तो तुरन्त उसे अपने जीवन में लागु करो।

5. दीन और षिक्षा पाने को तैयार रहो।

तर्क प्रक्रिया और पवित्रात्मा की अगुवाई में समान तौल बनाए रखना बहुत कठिन है। निम्नलिखित लेखों ने इसमें मेरी काफी सहायता की है :

क) स्क्रीपचर टवीस्टींग (पृश्ठ 17–18) – जेमस डबल्यू सरी
केवल आत्मिक तौर पर उन्नत ही नहीं पर परमेष्वर के लागों के दिमाग में भी ज्योति आती है। बाइबलिय मसीहत में कोई गुरू स्तर या प्रकाष पाए हुए मात्र लोग नहीं हैं जिनसे सिद्व अनुवाद मिलता हो। जब पवित्रात्मा बुद्धि, ज्ञान और आत्मा की परख का वरदान देती है तो वह इन्हीं वरदान पाए हुए मसीहियों को ही वचन के अधिकार पाए हुए मात्र अनुवादक के रूप में नहीं रहने देती। यह परमेष्वर के लोगों पर निर्भर करता है कि वह बाइबल जो की सर्वाधिकारी है से सिखें, जाँचें और परखें और साथ ही उनसे भी जिन्हें विषेश वरदान मिले हैं। परिकल्पना को पूरी पुस्तक के साराषं के तौर पर मैं यूँ कहता हूँ कि ''बाइबल पूरी मानव जाती के लिए परमेष्वर का सत्य प्रकाष है, जिस किसी विशय पर ये बात करती है उन सभी पर इसका सर्वाधिकार है, यह पूरी तरह से रहस्य नहीं है तथा हरेक संस्कृति के सामान्य लोग इसे समझ सकते हैं।''

ख) प्रोटेस्टेन्ट बिबलिकल इन्टरप्रटेषन (पृश्ठ 75) :

केरिगार्ड के अनुसार बाइबल का व्याकरण, षब्द–संग्रह, और ऐतिहासिक अध्ययन आवष्यक है परन्तु सबसे पहले सच्चा बाइबल अध्ययन जरूरी है। ''बाइबल को परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ने के लिए व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने हृदय को मुँह में रखकर पढ़े, पूर्ण तैयारी के साथ, पाने की आषा से, और परमेष्वर से बात करने के उद्देष्य से पढ़े। बाइबल को बिना विचार, असावधानी, पढ़ाई के उद्देष्य, व्यवसायीक तौर पर पढ़ना इसे परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ना नहीं है। जब व्यक्ति इसे प्रेम पत्र के रूप में पढ़ता है तो वह इसे परमेष्वर के वचन के रूप में पढ़ता है।''

ग) एच. एच. रौले की द रैवलेषन ऑफ द बाइबल (पृश्ठ 19) :

''बाइबल को केवल बुद्धिमता से समझना, चाहे वह पूरा ही क्यों न हो, इसके सम्पूर्ण खज़ानों को नहीं समझ को समा नहीं सकता। यह एसी समझ को तिरस्कार नहीं कर रहा क्योंकि पूर्ण समझ होना जरूरी है। यदि इसे पूरा होना है तो ये हमें बाइबल के आत्मिक खज़ाने के लिए आत्मिक समझ की ओर ले जाने वाला होना चाहिए। इसके लिए बुद्धिमता की जागरूकता से अधिक आत्मिक समझ की जरूरत है। आत्मिक चीज़ो को आत्मिक रूप से ही पहचानना चाहिए, और बाइबल के विद्यार्थी को आत्मिक ग्रहणषील होना चाहिए, परमेष्वर को पाने के लिए खोजी होना चाहिए ताकी वह स्वयं को परमेष्वर में लीन कर सके, यदि वह अपनी वैज्ञानिक समझ से ऊपर इस सबसे महान पुस्तक के समृद्ध उत्तराधिकार को पाना चाहता है।''

(5) इस टीका की विधि

अध्ययन सहायक टीका निम्नलिखित तरह से अनुवाद की प्रक्रिया में आपकी सहायता करने के लिए बनाई गई है :

1. छोटी सी ऐतिहासिक रूपरेखा प्रत्येक पुस्तक की भूमीका बान्धती है। ''अध्ययन का कालचक्र तीन'' पूरा करने के बाद आप इस जानकारी को जाँचीए।

2. संदर्भ पर प्रकाषन प्रत्येक अध्याय की षुरूवात में पाया जाता है। यह आपकी सहायता करेगा ताकी आप साहित्य भाग की बनावट देख सकें।

3. हरेक अध्याय और मुख्य साहित्य भाग की षुरूवात में अनुच्छेद विभाजन और उनका व्याख्यात्मक षीर्शक विभिन्न अनुवादों से दिया गया है :

क) यूनाईटेड़ बाइबल सोसाईटी का यूनानी मूलपाठ चौथी प्रती पुनः प्रकाषित (यू बी एस)

ख) न्यू अमेरिकन स्टेन्ड़र्ड बाइबल, 1995 में पुनः उन्नत (एन ए एस बी)

ग) न्यू कींग जेम्स वरषन (एन के जे वी)

घ) न्यू रिवाईस्ड़ स्टेन्ड़र्ड़ वरषन (एन आर एस वी)

ङ) टूड़ेस ईंग्लीस वरषन (टी इ वी)

च) यरूषलेम बाइबल (जे बी)

अनुच्छेद विभाजन प्रेरणा पाया हुआ नहीं है। इनका निष्चय संदर्भ से करना चाहिए। अलग अलग प्रकार की अनुवाद प्रणाली और धार्मिक विचार की नवीनतम अनुवादों की आपस में तुलना करने के द्वारा हम वास्तविक लेखक के विचारों के ढ़ाँचे को समझ सकते हैं। हरेक अनुच्छेद का एक मुख्य सच होता है। इसे ''षीर्शक वाक्य'' या ''साहित्य का केन्द्रीय विचार'' कहते हैं। ये एकता पूर्ण विचार ऐतिहासिक, व्याकरात्मक अनुवाद की कुर्जी है। अनुच्छेद से कम में किसी को भी प्रचार या षिक्षा नहीं देनी चाहिए। यह भी याद रखें कि हरेक अनुच्छेद अपने आस पास के अनुच्छेदों से जुड़ा होता है। इसी लिए पूरी पुस्तक की अनुच्छेद स्तर की रूपरेखा इतनी महत्वपूर्ण है। हमें वास्तविक लेखक के विशय का अनुसरण करना जरूरी है।

4. बॉब के लेख प्रत्येक आयत का अनुवाद है। ये हम पर दवाब ड़ालता है कि हम वास्तविक लेखक के विचारों का अनुसरण कर सकें। ये लेख विभिन्न क्षेत्रों से जानकारी प्रदान करता है :

1) साहित्य संदर्भ
2) ऐतिहासिक, सांस्कृतिक प्रकाषन
3) व्याकरण की जानकारी
4) षब्दों का अध्ययन
5) सदृष्य साहित्य

5. टीका के किसी – किसी भाग में न्यू अमेरिकन स्टेंड़र्ड़ वरषन की जगह अन्य अनुवादों का प्रयोग किया गया है।

क) न्यू कींग जेम्स वरषन (एन के जे वी), जिसमें ''टैक्सटस रिसीत्टस'' के साहित्यीक हस्त लेख का अनुसरण किया गया है।

ख) न्यू रिवाइस्ड़ स्टेंड़र्ड़ वरषन(एन आर एस वी), जो नेषनल काऊँसिल ऑफ चर्चचिस के रिवाइस्ड़ स्टेंड़र्ड़ वरषन का षब्द प्रति षब्द अनुवाद है।

ग) टूड़ेस ईंग्लीस वरषन(टी इ वी), अमेरिकन बाइबल सोसाइटी का षक्तियुक्त समानता अनुवाद है।

घ) यरूषलेम बाइबल (जे बी), फ्रेन्च कैथोलिक षक्तियुक्त समानता अनुवाद का अंग्रेज़ी अनुवाद।

6. जो लोग यूनानी नहीं पढ़ सकते, अंग्रेज़ी के विभिन्न अनुवादों की तुलना उनकी सहायता कर सकती है कि वे साहित्य की समस्या को पहचान सकें।
क) हस्तलिखित अन्तर
ख) वैकल्पिक षब्दार्थ
ग) व्याकरण तौर पर कठिन साहित्य और ढ़ाँचा
घ) संदिग्ध साहित्य

यूँ तो अंग्रेज़ी अनुवाद इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते, पर वे उन क्षेत्रों पर लक्ष्य बनाकर गहरी और ध्यान पूर्वक अध्ययन करने में सहायता करते हैं।

7. हरेक अध्याय के अन्त में चर्चा के लिए सम्बन्धित प्रष्न दिए गए है जो कि अध्याय के मुख्य अनुवाद के विशय को लक्ष्य बनाकर पूछे गए हैं।

यूहन्ना रचित सुसमाचार का परिचय

प्रथम वाक्य

क. मत्ती और लूका ने यीषु के जन्म के साथ, मरकूस ने यीषु के *बपतिस्मा* के साथ अपना लेख षुरू किया, परन्तु यूहन्ना ने सृश्टि के पहले से षुरू किया ।

ख. यूहन्ना यीषु नासरी की पूर्ण ईष्वरियता का वर्णन 1:1 से करते है तथा इसे अपने इस सुसमाचार में अन्त तक दोहराते है । समानन्तर सुसमाचार ने इस बात को अन्तिम समय तक ढ़ाँपकर(मसीह गोपनीयता) रखा है।

ग. यूहन्ना ने अपना सुसमाचार, समानन्तर सुसमाचार की ज्योति पर निर्भर होकर ही लिखा है। वह प्रारम्भिक कलीसिया (पहली षताब्दी के अन्तिम समय) की अवष्यकता के अनुसार यीषु के जीवन और षिक्षा की व्याख्या करने की कोषिष कर रहे है। वह प्रेरितों में से अन्तिम गवाह थे।

घ. यूहन्ना ने यीषु मसीह का प्रस्तुतीकरण निम्नलिखित ढाँचे के तहत किया है।

1. सात चमत्कार /चिन्ह तथा उनकी व्याख्या।
2. विभिन्न व्यक्तियों के साथ 24 साक्षात्कार या वार्तालाप।
3. विषेश आराधना और पर्व के दिन
   - क. साबत
   - ख. फ़सह(अध्याय 5–6)
   - ग. मिलापवाला तम्बू (अध्याय 7–10)
   - घ. स्थापन पर्व (यूहन्ना 10:22–39)
4. ''मैं हूँ'' कथन
   - क. ईष्वरीय नाम (यहोवा) से सम्बधित
     - 1) मैं वही हूँ (यूहन्ना 4:26; 8:24,28;13:19; 18:5–6)
     - 2) इब्राहीम से पहले मैं था (यूहन्ना 8: 54 – 59)
   - ख. विधेयात्मक संज्ञा के साथ
     - 1) जीवन की रोटी मैं हूँ (यूहन्ना 6: 35, 41, 48, 51)
     - 2) जगत की ज्योति मैं हूँ (यूहन्ना 8: 12)
     - 3) भेड़ों का द्वार मैं हूँ (यूहन्ना 10: 7,9)
     - 4) अच्छा चरवाहा मैं हूँ (यूहन्ना 10: 11,14)
     - 5) पुनरूत्थान और जीवन मैं हूँ (यूहन्ना 11: 25)
     - 6) मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ (यूहन्ना 14: 6)
     - 7) सच्ची दाखलता मैं हूँ (यूहन्ना 15: 1,5)

ङ. यूहन्ना और समानन्तर सुसमाचार के बीच का अन्दर।

1. हलाँकि यह सच है कि यूहन्ना का प्रथम उद्‌देष्य धर्मषास्त्रीय है तथा उसका भौगोलिक और ऐतिहासिक बातों का प्रयोग बिलकुल त्रुटिहीन और वर्णनीय है। यूहन्ना और समानन्तर सुसमाचार के बीच के अन्दर का यथार्थ कारण अब भी अज्ञात है।

   क. प्रत्याषित समय से पहले का यहूदिया प्रन्दों में सेवकोई के(प्रत्याषित समय से पहले मन्दिर का षुद्धीकरण)।

   ख. यीषु के जीवन के अन्तिम सप्ताह की घटनाक्रम तथा तिथि।

2. यूहन्ना और समानन्तर सुसमाचार के बीच के अन्दर के बारे में चर्चा करना काफी लाभदायक होगा। इसके बारे में '' *ए थियोलॅजी ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट*'' से जॉर्ज एल्डन लाड का कथन मैं यहाँ उद्‌धृत करता हूँ:

क. ''चौथा सुसमाचार समानन्तर सुसमाचारो से भिन्न होने के कारण इसे प्रष्नों का सामना करना है कि इसमें यीषु मसीह की षिक्षा के विशय लिखी हुई बातें त्रुटिहीन है, या कहीं ऐसा तो नहीं मसीही विष्वास परम्परा के कारण परिवर्तित किया गया धर्मषास्त्रीय व्याख्या ने इतिहास को निगल लिया हो'' (पृश्ठ.215)।

ख. ''इसका एक संभवतः समाधान यह है कि यूहन्ना ने अपने षब्दों से यीषु की षिक्षाओ को प्रर्दषित किया। यदि यह सही है तो हमें यह निचोड़ निकालना होगा कि चौथा सुसमाचार यूहन्ना के विचारों से भरा है, तब यह प्रष्न उठते है कि क्या चौथा सुसमाचार का धर्मषास्त्र यीषु का है या यूहन्ना का? और कहाँ तक

यूहन्ना में यीषु मसीह की षिक्षा अन्दरलीन हुई है जिसे हम यूहन्ना की व्याख्या कहने की बजाय यीषु मसीह की षिक्षा का त्रुटिहीन प्रस्तुतीकरण कह सकते है।

ग.डबल्यू.डी. डेविस और डी. डुबे के द्वारा संस्करण किया गया *''द बैकग्रॉन्ट ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट एण्ड इट्स एस्कटालॅजी''* से लेखक डबल्यू.एफ. आलब्रिट का *'' रीसेन्ट डिस्कवरीज़ इन पालस्टीन एण्ड गॅस्पल ऑफ जॉन''* से भी लाड इस प्रकार उद्धृत करता है:

''यूहन्ना और समानन्तर सुसमाचार के बीच षिक्षा में कोई मौलीक अन्दर नहीं है;केवल कुछ स्थानों में यीषु मसीह की षिक्षा परम्पराओ पर आधारित दिखाई पड़ने के सिवाय कोई विरोधाभास इसमें नहीं है, जो कि यह षिक्षा *एसेन्स* झुण्ड की भी लगती है। ''

यहाँ पर सर्वथा कुछ भी नहीं है जिसे हम यह कहे कि यीषु मसीह की षिक्षा को जालसाज़ी किया गया या बिगाड़ दिया गया, या ओर कोई नई बात को जोड़ दिया गया। हम इस बात से सहमत है कि प्रारम्भिक कलीसिया ने अवष्यकता के अनुसार सुसमाचार में षिक्षा को सम्मिलित करने में लेखक को प्रभावित किया। परन्तु कोई ऐसा कारण नहीं जिसे यह कहे कि प्रारम्भिक कलीसिया की अवष्यकता हर प्रकार की धर्मषास्त्रीय विचारो के लिए ज़िम्मेवार है।

बाइबल विद्वानो की एक आष्चर्यजनक पूर्वधारणा यह है कि यीषु का मन इतना सीमित था जिसके चलते प्रारम्भिक धर्मषास्त्रीय विद्वानो के विरोधाभासक विचार के कारण यूहन्ना और समानन्तर सुसमाचार के बीच अन्तर उत्पन्न हुआ। विभिन्न महान चिंतक की व्याख्या विभिन्न लोगो द्वारा की जाएगी और उनकी इच्छा है कि वे किस बात को अपनाएं (पृश्ठ.170 – 171)।

घ. जॉर्ज एल्डन लाड फिर लिखता है:

इन दोनों के बीच का अन्दर यह नही है कि यूहन्ना धर्मषास्त्रीय है और दूसरे नहीं, परन्तु वे सब विभिन्न षैली से धर्मषास्त्रीय है। व्याख्या किए गए इतिहास के पहलू को सादे विवरण से अधिक स्पश्ट करते है। यदि यूहन्ना धर्मषास्त्रीय व्याख्या है तो यह इतिहास में घटी बातों की व्याख्या है। यह स्पश्ट है कि समानन्तर सुसमाचारों का उद्देष्य यीषु के जीवन चरित्र को बताना है न कि यीषु के यथार्थ षब्द का उल्लेख करना । वे यीषु की षिक्षा का निचोड़ है। मत्ती और लूका स्वतन्त्र है कि मरकूस में लिखी हुई यीषु की षिक्षा को पुनर्व्यवस्थित करें। यदि यूहन्ना ने इस स्वतन्त्रता का प्रयोग अधिक किया तो वह चाहता था कि यीषु की षिक्षा को अत्याधिक प्रबल रीति से प्रगट के (पृश्ठ.221 – 222)।

लेखक

क. सुसमाचार बेनाम है पर यूहन्ना के प्रति परोक्ष संकेत है।

1. लेखक एक प्रत्यक्षदर्षी है (यूहन्ना 19:35)
2. षब्द समूह ''षिश्य जिसे वो प्रेम रखता था'' (पॅलीक्रेतेस और एरिनियुस पहिचानते थे यह षिश्य तो प्रेरित यूहन्ना है)।
3. जब्दी के पूत्र यूहन्ना के नाम का उल्लेख नहीं है।

ख. सुसमाचार के अन्दर ऐतिहासिक घटनाक्रम है, इसलिए व्याख्या में लेखक का नाम अहम नहीं है। लेखक पवित्रात्मा प्रेरित होना अहम है।

लेखक की पहचान और तारीख पवित्रात्मा की प्रेरणा को प्रभावित नहीं करती,पर व्याख्या को। टिप्पणीकर्ता ऐतिहासिक घटनाक्रम, लिखने का कारण और अवसर की खोज करते है। क्या कोई यूहन्ना का द्वैतवाद को (1)

यहूदियों का दो युग (2) धार्मिकता का खुमरान षिक्षक (3)ज़रदुष्त धर्म (4) नॉस्टिकविचार (5) यीषु के अनोखे परिप्रेक्ष्य के साथ तुलना कर सकते हैं?

ग. प्रारम्भिक परम्परागत विचार है कि लेखक जब्दी का पुत्र,प्रेरित यूहन्ना, प्रत्यक्षदर्षी श्रोत,है। इसे यहाँ स्पश्ट करना अवष्यक है क्योंकि दूसरी षताब्दी में कुछ बाहरी श्रोतों ने इसे किसी ओर के नाम कर दिया था।

1.सहविष्वासियों और इफिसूस के प्राचीनों ने प्रेरित को उत्साहित किया की इसे लिखे (यूसेबियूस के अनुसार सिकन्द्रिया का क्लेमन्द)।

2. सह प्रेरित, अन्द्रियास (*द मूराटारियन फ्रागमेन्ट,* 180 – 200 ई0 रोम से) ।

घ. विशय और षैली पर आधारित होकर कुछ आधुनिक विद्वानो ने किसी ओर लेखक के होने का संकेत दिया है। कई विद्वानो ने दूसरी षताब्दी की तारीख पर विष्वास किया (115 ई0 से पहले):

1. यूहन्ना के किसी षिश्य द्वारा जिसने उसकी षिक्षा को याद रखा था (जे.वेईस, बी. लाइटफूट, सी.एच. डोढ़, ओ. कुलमान, आर. ए. कलपेप्पर, सी.के. बारट)

2. प्राचीन यूहन्ना (प्रेरित यूहन्ना के षिक्षा से प्रभावित आषिया के प्रारम्भिक अगुवा) ने लिखा, जिसको यूसेबियूस ने पापियास(70–146 ई0) से उद्धृत किया (280 – 339 ई0)।

ङ इस सुसमाचार के लेखक रूप में यूहन्ना के लिए सबूत

1. अन्दरूनी सबूत
- क. लेखक पुरानेनियम के यहूदी रीतिरिवाज और षिक्षा को जानता था।
- ख. लेखक 70 ई0 से पहले के पलिस्तीन और यरूषलेम को जानता था।
- ग. लेखक प्रत्यक्षदर्षी होने की दावा करते है।
  1. 1:14
  2. 19:35
  3. 21:24
- घ. लेखक प्रेरितों के झुण्ड का एक सदस्य थे, क्योंकि वह निम्नलिखत बातों से सुपरिचित थे:
  1. समय और स्थान का ब्योरा (रात की बातें)
  2. गिनती (2:6 के मटका, 21:11 की मछलियाँ)
  3. व्यक्तियों का ब्योरा
  4. घटनाक्रम तथा नतीजे का ब्योरा
  5. लेखक अपने आपको ''षिश्य जिसे वो प्रेम रखता था'' पदवी देता है:
     - क. 13:23,25
     - ख. 19:26–27,34–35
     - ग. 20:2–5,8
     - घ. 21:7,20–24
  6. ऐसा लगता है कि लेखक अन्दरूनी षिश्य मण्डली का सदस्य है (पतरस, साकूब, यूहन्ना मत्ती 17:1; 26:37)
     - क. 13:23,24
     - ख. 20:2
     - ग. 21:7
  7. इस सुसमाचार में जब्दी के पुत्र यूहन्ना के नाम का उल्लेख नहीं है। यह असामान्य लगता है क्योंकि वह अन्दरूनी षिश्य/प्रेरित मण्डली का एक सदस्य है

2. बाहरी सबूत:

क. सुसमाचार निम्नलिखित लोगों द्वारा जाना गया

1.ऐरेनियूस (120 – 202 ई0) जो पॉलीकार्प का साथी था यूहन्ना को पहिचानता था(यूसेबियूस हिस्टोरिकल एक्लीष्यिस्टिक्स 5:20:6–7) – ''यीषु के सीने से लगकर बैठनेवाले षिश्य यूहन्ना ने इस सुसमाचार को आषिया के इफिसुस से जारी किया''(हेयर 3:1:1 यूसेबियूस हिस्टोरिकल एक्लीष्यिस्टिक्स 5:8:4 में उद्धृत)।

2. सिकन्द्रिया का क्लेमन्द (153 – 217 ई0) – ''पवित्रात्मा से प्रेरणा प्राप्त तथा दोस्तो द्वारा अनुरोध प्राप्त यूहन्ना ने एक आत्मीय सुसमाचार की रचना की''(यूसेबियूस हिस्टोरिकल एक्लीष्यिस्टिक्स 6:14:7)।

3. जस्टिन मार्टियर (110 – 165 ई0) डायलॉग विथ ट्रैफो 81:4

4.तर्तुलियन (145 – 220 ई0)

ख. यूहन्ना के लेखक होने का परिचय प्रारम्भिक प्रत्यक्षदर्षीयों द्वारा पक्का किया गया।

1. पॉलीकार्प (70 – 156 ई0 ऐरेनियूस द्वारा रेखांकित) जो स्मुरना के बिषप थे।

2. पापियास (70 – 146 ई0 रोम एण्ड यूसेबियूस के एण्टि मारकोनैट प्रॉलॉग) जो फ्रिगिया के हीरापॅलीस के बिषप और प्रेरित यूहन्ना के षिश्य थे।

च. परम्परागत लेखक की पहचान के प्रति षक का कारण

1. नॉस्टिक विचारधारा के साथ इस सुसमाचार का संबन्ध
2. अध्याय 21का स्पश्ट परिषिश्ट
3. समानन्तर सुसमाचार के साथ इसका घटनाक्रम में अन्तर
4. षायद यूहन्ना अपने आपको संबोधित ''षिश्य जिसे वो प्रेम रखता था'' नही किया होगा।
5. यूहन्ना में यीषु की षब्दावलियो का प्रयोग समानन्तर सुसमाचार से अलग है।

छ. यदि हम माने इसका लेखक प्रेरित यूहन्ना है तो हम उस व्यक्ति के बारे में क्या मानेंगे?

1. उसने इफिसुस से लिखा (ऐरेनियूस कहते है यूहन्ना ने इस सुसमाचार आषिया के इफिसुस से जारी किया'')

2. उसने अपने बूढ़ापे में लिखा (ऐरेनियूस कहते है ड्रॉजन के षासनकाल तक वह जीवित रहा 98 – 117 ई0) ।

तारीख

क. यदि हम माने इसका लेखक प्रेरित यूहन्ना है

1. 70 ई0 से पहले, रोमी जनरल तीतुस के द्वारा यरूषलेम मन्दिर नाष किए जाने से पहले

क. ''यरूशलेम में भेड़–फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बेतहसदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैं।''

ख. प्रेरितों के प्रारम्भिक षीर्शक ''षिश्य'' षब्द का बार बार दोहराया जाना ।

ग. मृतसागर चर्मलेखों में पाया गया नॉस्टिक विचारधारा इस बात की सबूत देता है कि वे पहली षताब्दी के धर्मषास्त्रीय विशय का भाग थे।

घ. 70 ई0 में नाष किए गए यरूषलेम मन्दिर का कोई उल्लेख नहीं

2. पहली षताब्दी के अन्त में

क. यूहन्ना का प्रौढ़ धर्मषास्त्र
ख. यरूषलेम मन्दिर के नाष का कोई उल्लेख नहीं किया गया जो लगभग 20 साल पहले हुआ था।
ग. यूहन्ना द्वारा नॉस्टिक षब्दावली का प्रयोग
घ. कलीसिया की प्रारम्भिक परम्परा
1. ऐरेनियूस
2. यूसेबियूस

ङ प्रसिद्ध पुरातत्वज्ञ डबल्यू.एफ. आलब्रिट के अनुसार इस सुसमाचार का तारीख 70 ई0 के अन्त या 80 ई0 षुरू में है।

ख. यदि हम माने इसका लेखक प्राचीन यूहन्ना है तो तारीख दूसरे षताब्दी के मध्य में होगा। इस सिद्धान्त का उत्भव दिनॉसिस से हुआ जिसने साहित्यिक कारणों से यूहन्ना का लेखक होने की बात को नकारा। धर्मषास्त्रीय कारणों से यूहन्ना प्रकाशितवाक्य के लेखक होने की बात को यूसेबियूस ने भी नकारा और उसने पापियास के उद्धृत में दो यूहन्ना को पाया (1) प्रेरित यूहन्ना ,(2) प्राचीन यूहन्ना (प्रिस्बिटर) (*हिस्टोरिकल एक्लीषियस्टिक्स 5:39:5,6)।*

<u>*प्राप्तकर्ता*</u>

क. आसिया की रोमी प्रान्तों की कलीसियाओ के लिए, विषेशरूप से इफिसुस की कलीसिया के लिए लिखा गया।
ख. सरलता और यीषु नासरी के जीवन का गहरा विवरण होने के कारण यह अन्यजाती विष्वासी और नॉस्टिक के पसन्दीदा सुसमाचार बन गए।

<u>***उद्देष्य***</u>

क. सुसमाचार स्वयं इसका उद्देष्य 20:30 – 31 कहती है।
1. यहूदी पाठकों के लिए
2. अन्यजाती पाठकों के लिए
3. प्रारम्भिक *नॉस्टिक* पाठकों के लिए

ख. ऐसा लगता है कि इसका उद्देष्य विष्वास की रक्षा के लिए है।
1. यूहन्ना बपतिस्मादेनेवाले के कट्टर अनुयायियों के विरोध में
2. प्रारम्भिक *नॉस्टिक* झूठे षिक्षकों के विरोध में (विषेश तौर से प्रस्तावना) इनका उल्लेख कुछ नए नियम की पत्रियों में मिलता है।
   क. इफिसियों
   ख. कुलुस्सियों
   ग. पास्तरीय पत्रियॉ
   घ. 1 यूहन्ना (यह यूहन्ना रचित सुसमाचार के लिए सहपत्र का काम करता है)।

ग. षायद 20:31 का उद्देष्य कथन दृढ़ता का उपदेष और सुसमाचार प्रचारकीयता को उत्साहित करता है। वर्तमानकाल का निरन्तर प्रयोग उद्धार की ओर संकेत करता है। इस तरह षायद याकूब के समान यूहन्ना भी आसिया मैनर के कुछ लोगों द्वारा पौलूस के धर्मषास्त्र को अधिक महत्व देने को(2 पत.3:15 – 16) अंकुष लगा रहा है। यह आष्चर्य की बात है प्रारम्भिक कलीसिया इफिसुस के साथ यूहन्ना को पहचानते है न कि पौलूस को (ब्रूस का पीटर,स्टीफन,जेम्स एण्ड जॉनः स्टडीज़ इन नॉन पॉलैइन खि्रस्टानिटि पृश्ठ.120 – 121)।

घ. उपसंहार (अध्याय 21)प्रारम्भिक कलीसिया के कुछ प्रष्नो का उत्तर दे रहे है।

1. यूहन्ना समानन्तर सुसमाचार को अनुपूरित कर रहा है। हलॉकि वह यहूदिया सेवकोई, विषेशरूप से यरूषलेम, में ध्यान दे रहा है।
2. उपसंहार (अध्याय 21) दो प्रष्नो का उत्तर दे रहा है।
    क. पतरस की पुनःप्रतिश्ठा
    ख. यूहन्ना की दीर्घायु
    ग. यीषु का पुनरागमन देर से

ङ कुछ यह कहते है कि यूहन्ना ने अध्याय 3(बपतिस्मा) और अध्याय 6 (प्रभु भोज) को छोडकर किसी धर्मनिश्ठा पर ध्यान नही दिया, और उसने बाकि बातों को नज़रअन्दाज कर दिया।

रूपरेखा

क. एक दर्षन – षास्त्रीय / धर्मषास्त्रीय प्रस्तावना(यूहन्ना 1:1–18) तथा प्रायोगिक उपसंहार(यूहन्ना 21)

ख. यीषु की सार्वजनिक सेवकोई के सात चमत्कार /चिन्ह तथा उनकी व्याख्या(यूहन्ना अध्याय 2 – 12)।

1. काना के विवाह में पानी को दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2:1–11)
2. राजकर्मचारी के पुत्र को चंगा करना(यूहन्ना 4:46–54)
3. यरूषलेम के बैतहसदा कुण्ड में लंगडे को चंगा करना (यूहन्ना 5:1 –18)
4. पाँच हजार पुरूशों को खिलाना (यूहन्ना 6:1–15)
5. गलील की झील के ऊपर चलना (यूहन्ना 6:16–21)
6. जन्म के अन्धे को दृश्टिदान (यूहन्ना 9:1–41)
7. बैतनिय्याह का लाज़र को जिलाना (यूहन्ना 11:1–57)

ग. व्यक्तियों के साथ साक्षात्कार और वर्तालाप

1. यूहन्ना बपतिस्मादेनेवाला
2. षिश्य
    क. पतरस और अन्द्रियास (यूहन्ना 1:35–42)
    ख. फिलिप्पुस और नतनएल (यूहन्ना 1:43–51)
3. नीकुदेमुस (यूहन्ना 3:1–21)
4. सामरिया की स्त्री (यूहन्ना 4:1–45)
5. यरूषलेम का यहूदी (यूहन्ना 5:10–47)
6. गलील की भीड़ (यूहन्ना 6:22–66)
7. पतरस और षिश्य लोग (यूहन्ना 6:67–71)
8. यीषु के भाई लोग (यूहन्ना 7:1–13)
9. यरूषलेम का यहूदी (यूहन्ना 7:14–8:59)
10. ऊपरी कोटरी में षिश्य (यूहन्ना 13:1–17:26)
11. यहूदियों द्वारा गिरफ्तारी और मुक़दमा (यूहन्ना 18:1–27)
12. रोमियों द्वारा मुक़दमा (यूहन्ना 18:28–19:16)
13. पुनरूत्थान के बाद का वार्तालाप (यूहन्ना 20:11–29)
    क. मरियम के साथ
    ख. 10 प्रेरितों के साथ
    ग. थोमा के साथ
14. पतरस के साथ उपसंहारिक वार्तालाप (यूहन्ना 21:1–25)

15. व्यभिचारिणी स्त्री की कहानी (यूहन्ना 7:53–8:11)यूहन्ना रचित सुसमाचार का भाग नहीं है।

घ. निष्चित आराधना/पर्व के दिन

1.सब्त (यूहन्ना 5:9;7:22; 9:14;19:31)
2. फसह (यूहन्ना 2:13; 6:4; 11:55; 18:28)
3. मिलापवाले तम्बू का पर्व(अध्याय 8–9)
4. स्थापन पर्व (दीप का पर्व यूहन्ना 10:22)

ङ ''मैं हूँ'' कथन का प्रयोग

1. मैं वही हूँ (यूहन्ना 4:26; 8:24,28,54–59;13:19; 18:5–6,8)
2. जीवन की रोटी मैं हूँ (यूहन्ना 6: 35, 41, 48, 51)
3. जगत की ज्योति मैं हूँ (यूहन्ना 8: 12)
4. भेड़ों का द्वार मैं हूँ (यूहन्ना 10: 7,9)
5. अच्छा चरवाहा मैं हूँ (यूहन्ना 10: 11,14)
6. पुनरूत्थान और जीवन मैं हूँ (यूहन्ना 11: 25)
7. मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ (यूहन्ना 14: 6)
8. सच्ची दाखलता मैं हूँ (यूहन्ना 15: 1,5)

अध्ययन कालचक्र एक

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड़ सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए और मुख्य विशय का रूपरेखा बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

1. पुस्तक का केन्द्रीय विशय

2. साहित्य का प्रकार

अध्ययन कालचक्र दो

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पुनः पढ़िए और मुख्य विशय का रूपरेखा बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

देनेवाले की गवाही	पुकारनेवाले का शब्द		देनेवाले का सन्देष	
1:19 – 28	1:19 – 28	1:19 – 23	1:19	1:19 – 28
			1:20	
			1:21क	
			1:21ख	
			1:21ग	
			1:21घ	
			1:22	
			1:23	
		1:24 – 28	1:24 – 25	
			1:25 – 27	
			1:28	
परमेश्वर का मेम्ना	परमेश्वर का मेम्ना		परमेश्वर का मेम्ना	
1:29 – 34	1:29 – 34	1:29 – 34	1:29 – 31	1:29 – 34
			1:32 – 34	
पहला षिश्य	पहला षिश्य	यीषु के पहले षिश्यों की गवाही	यीषु का पहला षिश्य	पहला षिश्य
1:35 – 42	1:35 – 42	1:35 – 42	1:35 – 36	1:35 – 39
			1:37 – 38क	
			1:38ख	
			1:39	
			1:40 – 42क	1:40 – 42
			1:42ख	
फिलिप्पुस और नतनएल को बुलाया जाना	फिलिप्पुस और नतनएल		यीषु फिलिप्पुस और नतनएल को बुलाते हैं	
1:43 – 51	1:43 – 51	1:43 – 51	1:43 – 45	1:43 – 51
			1:46क	
			1:46ख	
			1:47	
			1:48क	
			1:48ख	
			1:49	
			1:50 – 51	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>*धर्मषास्त्रीय तथा ऐतिहासिक अन्तरदृश्टि 1:1 – 18*</u>

क. कविता / धार्मिक गीत / मत की धर्मषास्त्रीय रूपरेखा

1.अनन्त,दैवीय,सृश्टिकर्ता, छुडानेहारा मसीह 1:1 – 5 (यीषु वचन के रूप में)
2. मसीह के लिए भविश्यसूचक गवाही 1:6 – 9,15 (यीषु ज्योति के रूप में)
3. देहधारी मसीह परमेष्वर को प्रगट करता हैं 1:10 – 18 (यीषु पुत्र के रूप में)

ख. धर्मषास्त्रीय ढाँचा तथा पुनरावर्तक विशयवस्तु 1:1 – 18

1. यीषु आदि से पिता परमेष्वर के साथ थे (1:1क)
2. यीषु पिता परमेष्वर के साथ घनिश्ठ संगति में थे (1:1ख, 2, 18ग)
3. यीषु पिता परमेष्वर के सारतत्व में हिस्सेदार हैं (1:1ग, 18ख)
4. यीषु पिता परमेष्वर का छुटकारा तथा लेपालक की सामग्री बन गए (1:12–13)
5. देहधारण, दैवीयता मनुश्य बन गए (1:9,14)
6. प्रकाषन, दैवीयता पूर्ण रूपा से प्रगट किए तथा समझाए गए (1:18घ)

ग. *लॉगॉस* की इब्रानी तथा यूनानी पृश्ठभूमि

1. इब्रानी पृश्ठभूमि

क. कहे गए वचन के सामर्थ (यषा.55:11; भ.सं. 33:6; 107:20;145:15) के तौर पर सृश्टि (उत्. 1:3,6,9,11,14,20,24,26,29) तथा गोत्र पिता के आषिश में(उत्. 27:1 – ; 49:1)

ख. नीतिवचन 8:12 – 23 के ''बुद्धि'' परमेष्वर की पहली सृश्टि तथा सृश्टि के अभिकर्ता के तौर पर (भ.सं. 33:6; नॉन कानोनिकल *विस्ढम् ऑफ सॉलामोन 9:9*)

ग. परमेष्वर के प्रति मानवीय षब्दों के प्रयोग से बचने के लिए *लॉगॉस* की जगह पर *द टारगम्स* (आरामिक अनुवाद और टीका) ''परमेष्वर का वचन'' षब्दसमूह का प्रयोग करता है।

2. यूनानी पृश्ठभूमि

क. हीराक्लीटस – यह दुनिया निरन्तर होनेवाले परिवर्तन प्रक्रिया में थी; दैवीय और अटल *लॉगॉस* ने *इस* परिवर्तन प्रक्रिया को दिषा दी।

ख.प्लूटो – दैवीय और अटल *लॉगॉस* ने ग्रह की गति तथा ऋतु को निर्धारित किया।

ग.स्टोइक्स – *लॉगॉस* दुनिया का प्रबन्धक था, परन्तु अर्ध – व्यक्ति।
घ. फिलो – के अनुसार *लॉगॉस* एक महायाजक है जिन्होंने मनुश्य की आत्मा को परमेष्वर के सामने पेष किया, या परमेष्वर और मनुश्य के बीच का पुल (*कोस्मोक्रेटर*)।

घ. दूसरी षताब्दी ई0 के प्रौढ़ नॉस्टिक धर्मषास्त्रीय / दर्षन – विशयक प्रणाली।

1. अनादीकाल विरूद्ध दैतवाद आत्मा और भौतिक पदार्थ के बीच है।
2. भौतिक पदार्थ बुरा और हठी है; आत्मा अच्छी है।
3. *नॉस्टिक* प्रणाली बताती है कि स्वर्गदूतों का श्रृंखला है जहाँ एक ऊँचा अच्छा परमेष्वर है तथा एक अपेक्षाकृत कम परमेष्वर भी है जो भौतिक पदार्थों से सृश्टि कर सकता हैं। कुछ यह कहते हैं कि अपेक्षाकृत कम परमेष्वर पुराने नियम का यहावा हैं।
4. उद्धार इससे मिलता है
क. जिसके पास गोपनीय ज्ञान और संकेत षब्द है उसे यह अनुमति है कि वह स्वर्गदूतों के मण्डल से होकर परमेष्वर से एक होजाए।
ख. दैवीय चिंगारी जिसकी जानकारी केवल गोपनीय ज्ञान प्राप्ती से होती है।
ग. प्रकाषन के विषेश व्यक्तिगत अभिकर्ता जो गोपनीय ज्ञान मनुश्य के पास पहुँचाता है (*मसीह का आत्मा*)।
5. यह विचारधारा यीषु की दैवीयता को मानती है परन्तु असल तथा स्थाई देहधारण और छुटकारे के काम को नकारता है।

ङ ऐतिहासिक पृश्ठभूमि

1.1:1 – 18 में *लॉगॉस* के प्रयोग के द्वारा इब्रानी तथा यूनानी मनों से सम्पर्क की कोषिष हो रही है।
2.यूहन्ना रचित सुसमाचार का दर्षन – विशयक पृश्ठभूमि यहाँ पर *नॉस्टिक* झूठी षिक्षा के कारण दिया गया है। 1 यूहन्ना यूहन्ना रचित सुसमाचार के लिए सहपत्र का काम करता है। दूसरी षताब्दी तक धर्मषास्त्रीय विचारधारा प्रणाली जिसे *"नॉस्टिसृम"* कहते हैं लिखित रूप में नहीं पाया गया। परन्तु प्रारम्भिक *नॉस्टिक* विशयवस्तु मृतसागर चर्मलेखों और फिलो में पाया जाता है।
3. समानन्तर सुसमाचारों ने (विषेशरूप से मरकूस) यीषु की दैवीयता (मसीह गोपनीयता)को कलवरी तक छिपाकर रखा। परन्तु यूहन्ना, काफी बाद में लिखते हुए अध्याय 1 में निर्णायक विशयवस्तु, यीषु की दैवीयता तथा मानवियता को प्रस्तुत किया हैं।

च. देखिए विषेश षीर्शकः यूहन्ना अध्याय 1 की तुलना 1 यूहन्ना के साथ – 1 यूहन्ना 1:1

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

यूहन्ना 1:1 – 5

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था।
3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना

उत्पन्न नहीं हुई।
4 उस में जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी।
5 और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।

1:1

"आदि में"

यह उत्पति 1:1 और 1 यूहन्ना 1:1 को दर्षाता है। यह संभव है कि 1 यूहन्ना इस सुसमाचार के लिए सहपत्र का काम करता है। यीषु का अस्तित्व जो सृश्टि से पहले से है उसे 1–5 आयतें पक्का करती हैं (1:15; 8:56 – 59; 16:28; 17:5; 2 कुरि. 8:9; फिलि. 2:6,7; कुलु. 1:17; इब्रा. 1:3; 10: 5–8)।

" था "(3 बार)

यह एक अपूर्णकाल वाक्य है (1,2,4,10)। यह भूतकाल में जारी रहे हुए काम को दर्षाता है। इसका प्रयोग लॉगॉस के अस्तित्व को बताने के लिए किया गया। यह 3,6,और 14 के अनिष्चित भूतकाल के विरोध में है।

" वचन "

यूनानी षब्द *लॉगॉस* **एक सन्देष को** दर्षाता है न कि एक षब्द को। इस प्रसंग में यह षीर्शक यूनानी "विष्व युक्ति" और इब्रानी "बुद्धि" को बताने के लिए प्रयोग किया गया। यूहन्ना ने इस षब्द का प्रयोग व्यक्ति और **सन्देष दोनो को** बताने के लिए किया।

" परमेश्वर के साथ "

अर्थात् आमने – सामने। यह घनिश्ठ संबन्ध को दर्षाता है। यह इस सामान्यविचार को भी बताता है कि एक दैवीय तत्व के तीन अनादी व्यक्तिगत प्रगटीकरण। नया नियम इस असत्याभास को भी बताता है कि यीषु पिता से अलग हैं, परन्तु वह पिता के साथ एक भी हैं।

"वचन परमेश्वर था"

यह एक अपूर्णकाल क्रिया है। यूनानी में "थियोस" षब्द के साथ कोई आर्टिकल नही है। यह और आयत 18 पहले से वर्तमान *लॉगॉस* **के प्रति एक षक्तिषाली कथन है (5:18; 8:58; 10:30; 14:9; 20:28; रोमि. 9:5; इब्रा. 1:8; 2 पत.1:1)। यीषु परिपूर्ण दैवीय तथा मानवीय है। यीषु पिता** परमेश्वर सा नही, पर उनके अन्दर एकसा **दैवीय तत्व है।**
नया नियम यीषु नासरी की परिपूर्ण दैवीयता को प्रगट करता है साथ ही साथ पिता परमेश्वर के अलग व्यक्तित्व को सुरक्षित रखता है। यूहन्ना 1:1; 5:18; 10:30, 34 – 38; 1:9,10; और 20:28 में एक ही **दैवीय तत्व को विषेश महत्व दिया है, तथा उनकी भिन्नता का वर्णन** यूहन्ना 1:2,14,18; 5:19–23; 8:28; 10:25,29; 14:11,12,13,16 में है।

<u>*1:2*</u>

यह आयत 1 के सदृष में है। अद्वैतवाद ज्योति में एक सच्चाई प्रगट कर रहा है कि यीषु, जिनका जन्म लगभग 5–6 ई0 पू0 में हुआ, हमेषा पिता के साथ थे और, इसलिए, वह दैवीय है।

<u>*1:3*</u>

<u>*'' सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ ''*</u>

लॉगॉस पिता की ओर से प्रत्यक्ष और परोक्ष सृश्टि का अभिकर्ता है (यूहन्ना 10:1; 1कुरि. 8:6; कुलु. 1:16; इब्रा. 1:2)। यह भ.सं.33:6 और नीति. 8: 12–23 के बुद्धि का सदृष है।

<u>*''कोई भी वस्तु उसके बिना*</u>
<u>*उत्पन्न नहीं हुई''*</u>

यह नॉस्टिक झूठे षिक्षा – एक ऊँचा अच्छा परमेष्वर तथा एक अपेक्षाकृत कम परमेष्वर – को नकारते है।

<u>*1:4*</u>

<u>*'' उस में जीवन था ''*</u>

यह षब्दसमूह बलपूर्वक कहते है पूत्र, वचन, से जीवन मिलता है। पुनरूत्थित जीवन, अनन्त जीवन, परमेष्वर का जीवन, के लिए *ज़ोए* षब्द का प्रयोग करते है (यूहन्ना 1:4; 3:15,36; 5:24,26,29,39,40; 6:22, 33, 35, 40, 47, 48, 51, 53, 54,63,65 इत्यादि)। जीवन के लिए यूहन्ना ने *बयोस* षब्द का भी प्रयोग किया है जो भौमिक तथा भौतिक जीवन को दर्षाता है (यूहन्ना 2:16)।

<u>*'' और वह जीवन*</u>
<u>*मुनष्यों की ज्योति थी। ''*</u>

परमेष्वर के ज्ञान और सच्चाई को बताने के लिए यूहन्ना ज्योति को रूपक के समान साधारण रूप से प्रयोग करता है (यूहन्ना 3:19; 8:12; 9:5; 12:46)। यह जीवन समस्त मानवजाती के लिए है। ज्योति और अन्धकार मृतसागर चर्मलेखो की मुख्य विशयवस्तु है। यूहन्ना कई बार अपने आपको विरोधाभासक षब्दों से प्रगट करता है।

<u>*1:5*</u>

'' ज्योति चमकती है;''यह जारी रहनेवाली प्रक्रिया है। यीषु पहले से है अब वह इस दुनिया में प्रगट हुआ। पुराने नियम में परमेष्वर के प्रगटीकरण की पहचान अधिकतर बार *प्रभु के दूत* से हुई है(उत्प.16:7–13; 22:11–15; 31:11,13; 48: 15,16; निर्ग. 3: 2,4; 13:21; 14:19; न्या. 2:1; 6:22,23; 13:3–22; ज़क. 3:1,2)। कुछ कहते है कि यह देहधारित *लॉगॉस* है।

एन ए एस बी, एन के जे वी " अन्धकार उसे समझ नहीं पाया।"
एन आर एस वी " अन्धकार उस पर प्रबल नहीं हो पाया।"
टी इ वी " अन्धकार उसे **हरा** नहीं पाया **।**"
एन जे बी " अन्धकार उस पर जयवन्त नहीं हो पाया **।**"

इसका मूलभूत अर्थ है"पकड़े रखना"। इसका अर्थ यह भी हो सकता है (1) जयवन्त होने के लिए **पकड़े रखना या (2)** समझने के लिए **पकड़े रखना।** यूहन्ना ने षायद दोनों अर्थ से इसे प्रयोग किया है। यूहन्ना रचित सुसमाचार
में इस प्रकार का प्रयोग है (उदा. "नये सिरे से जन्मना या ऊपर से जन्मना" 3:3 तथा "हवा – आत्मा" 3:8 **)।**

1:6 – 8

6 एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिस का नाम यूहन्ना था।
7 यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं।
8 वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था।

1: 6 – 7

"एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ ...
गवाही देने आया ...
ज्योति की गवाही देने के लिये आया "

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला पुराने नियम का अन्तिम नबी था (सन्देष और नज़रिए की वजह से)। वह मलाकी 3:1 और 4:5 (यूहन्ना 1:20 – 25) में बताया हुआ अग्रदूत है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के प्रति पहली षताब्दी में पैदा हुए गलत विचार (लूका 3:15; प्रेरित. 18:25; 19:3)के कारण प्रेरित यूहन्ना ने 1:6–8 लिखा है। अन्य सुसमाचार लेखको के बाद यूहन्ना के लिखने के कारण से इस गलत विचार की बढ़ौतरी को वह जानता था।

यह ध्यान देनेवाली बात है कि मसीह का वर्णन अपूर्णकाल क्रिया (अस्तित्व) और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला का वर्णन अनिष्चित भूतकाल क्रिया (समय में प्रगट होना) में की गई। यीषु मसीह हमेषा हैं।

1:6–8

ये और 1:15यीषु के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला की गवाही के रूपा में लिखा गया। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला पुराने नियम का अन्तिम नबी था। ये एक कविता के रूपा में लिखना असम्भव है। यह प्रस्तावना भाग वादविवाद की बात बनी है कि यह पद्य है या गद्य?

1:7

'' ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं। ''

यूहन्ना रचित सुसमाचार अन्य सुसमाचारों के समान एक सुसमाचार पर्चा है। यह उत्तम अवसर है यीषु पर,जो जगत की ज्योति है, विष्वास करने के द्वारा उद्धार पा सकते है(यूहन्ना 1:12; 20:31; 1 तिमु. 2:4; 2 पत.3:9)।

1:7,12

''विष्वास''

यूहन्ना रचित सुसमाचार में इस क्रिया का प्रयोग 78 बार और यूहन्ना का पत्रीयों में 24 बार हुआ है। यूहन्ना रचित सुसमाचार में इसे संज्ञा के रूप में प्रयोग नहीं किया। विष्वास प्राथमिक रूपा से बुद्धिसंगत और भावनात्मक प्रत्युत्तर नही है परन्तु इच्छापूर्ण प्रत्युत्तर है। इस यूनानी षब्द को अंग्रज़ी भाशा की विष्वास, भरोसा ,और आस्था षब्दों में अनुवाद किया गया। यह ''उसे स्वागत करना''(1:11) तथा ''ग्रहण करना'' (1:12) के सदृष है। उद्धार परमेष्वर के अनुग्रह से मुफ़्त तथा मसीह के पूर्ण काम है, परन्तु इसे ग्रहण करना अवष्य है। उद्धार एक वाचा का संबन्ध है जिसमें सैभाग्य और कर्तव्य षामिल हैं।

1:8

यह संभव है कि अन्य सुसमाचार लेखको के लिखने के बाद यूहन्ना के लिखने के कारण उसने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के षिश्यों (जिन्होंने यीषु के बारे में नहीं सुना या तो ग्रहण नहीं किया) के बीच की समस्या को जानता था।

विषेश षीर्शक – यीषु के प्रति गवाही

षब्द '' **गवाही** '' का संज्ञा *(माटूरिया)* और क्रिया *(माटूरियो)* यूहन्ना का कुंजी षब्द है। यहाँ **यीषु के प्रति कई गवाही हैः**

1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (यूहन्ना 1:7,8,15; 3:26,28; 5:33)
2. यीषु स्वयं (यूहन्ना 3:11; 5:31;8:13,14)
3. सामरी स्त्री (यूहन्ना 4:39)
4. पिता परमेष्वर (यूहन्ना 5:32,34,37; 8:18; 1यूहन्ना 5: 9)
5. पवित्रषास्त्र (यूहन्ना 5:39)
6. लाज़र को जिलाने के समय की भीड़ (यूहन्ना 12:17)
7. पवित्रात्मा (यूहन्ना 15:26,27; 1 यूहन्ना 5:10,11)
8. षिश्य लोग (यूहन्ना 15:27; 19:35; 1यूहन्ना 1:2;4:14)
9. लेखक स्वयं (यूहन्ना 21:24)

1:9 – 13

9.सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी।
10. वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना।
11. वह अपने घर में आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया।
12. परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें
जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। 13. वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से,
परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

1:9

'' सच्ची ज्योति ''

यहाँ ''सच्च'' का अर्थ है वास्तविक। यह षायद पहली षताब्दी के तमाम धर्मषास्त्रीय विभिन्नताओ को सम्बोधित कर रहा है। यह यूहन्ना के लेखों में पाए जानेवाला साधारण विषेशण है(3:35; 4:23,37;6:32; 7:28; 15:1; 17:3; 19:35; 1 यूहन्ना 2: 8; 5:20 तथा प्रकाषितवाक्य में 10 बार)। देखिए **विषेश षीर्शक 6:55**

'' जगत में आनेवाली''

स्वर्ग, आत्मिक साम्राज्य, को छोड़कर समय और स्थान के भौतिक साम्राज्य में प्रवेष किया हुए यीषु के बारे में बताने के लिए यूहन्ना इस षब्दसमूह का प्रयोग करता है (6:14; 9:39; 11: 27; 12:46; 16: 28)। इस आयत में यीषु के देहधारण को बताने के लिए इस षब्दसमूह का प्रयोग किया है।

एन ए एस बी, ''हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है''
एन के जे वी ''हर एक मनुष्य को प्रकाश देता है''
एन आर एस वी ''हर एक को प्रकाशित करती है''
टी इ वी ''समस्त मनुष्य के ऊपर चमकती है''
एन जे बी **''वह** हर एक मनुष्य को प्रकाश देता है''

इस षब्दसमूह को दो अर्थों में समझ सकते है। (1) यूनानी संस्कृति के अनुसार यह अन्दरूनीप्रकाषन की ज्योति है, एक दैवीय चिंगारी। *क्वॉकेर्स* इस प्रकार इसकी व्याख्या करते हैं। हलॉकि ऐसा एक विचार यूहन्ना में नही है। यूहन्ना के अनुसार ज्योति मानवजाति की बुराई को प्रगट करती हैं (3:19 – 21)।
(2) यह प्रकृति द्वारा **प्रकाषन को नही दर्षाता परन्तु यीषु द्वारा (जो** सच्ची ज्योति है **) प्रकाषन और उद्धार को दर्षाता है ।**

1:10

'' जगत ''

तीन विभिन्नार्थ से यूहन्ना ने षब्द *कॉसमॉस* का प्रयोग किया: (1) विष्व (1:10,11; 11:9; 16:21; 17:5,24: 21:25); (2) समस्त मानवजाति (1:10,29; 3:16,17; 4:42; 6:33; 12;19,42; 18:29); और परमेष्वर से दूर व्यस्त रहनेवाला पतित मानव (7:7; 15:18,19; 1 यूहन्ना 2:15; 3:1,13)। इस प्रसंग में दूसरा ठीक है।

" जगत ने उसे नहीं पहिचाना। "

यीषु को प्रतिज्ञात मसीह के रूपा में न तो यहूदियों ने और न अन्यजातियों ने पहचाना। षब्द 'पहचान' इब्रानी भाशा के एक मुहावरे को दर्षाता है जिसका अर्थ है घनिश्ठ सम्बन्ध(उत्प. 4:1; यिर्मा. 1:5)।

1:11

" वह अपने घर में आया
और उसके अपनों ने
उसे ग्रहण नहीं किया। "

इस आयत में षब्द अपने **का प्रयोग दो बार किया गया हैः पहलेवाला भौगोलिक तौर से यहूदिया और यरूषलेम के लिए है, और दूसरा यहूदियों के लिए है।**

1:12

" परन्तु जितनों ने
उसे ग्रहण किया,"

यह उद्धार में मानव की भूमिका को दर्षाता है (1:16)। मनुश्य को अनुग्रह जो मसीह के द्वारा परमेष्वर की ओर से मिला है उसका प्रत्युत्तर देना अवष्यक है (3:16; रोमि 10: 9 – 13; इफि. 2:8,9)। परमेष्वर अवष्य संप्रभु हैं,किन्तु उनका संप्रभुता में उन्होंने पतित मानवजाति के साथ एक षर्तीय वाचा का सम्बन्ध बनाया। पतित मानवजाति के लिए अवष्य है कि वे मनफिराएं, विष्वास करें, आज्ञा मानें तथा विष्वास में बने रहें।

"उसने अधिकार दिया "

इस यूनानी षब्द का अर्थ है (1) कानूनी अधिकार या (2) सौभाग्य (5:27; 17:2; 19:10,11)। **पतित मानवजाति यीषु के द्वारा अब परमेष्वर को जान सकती है तथा उन्हें पिता और परमेष्वर के रूप में अंगीकार कर सकती है।**

" परमेश्वर की सन्तान होने "

नए नियम के लेखकों ने मसीहत को दर्षाने के लिए पारिवार का रूपक प्रयोग किया। (1)पिता (2) पुत्र (3) सन्तान (4) नया जन्म और (5) लेपालकपन। मसीहत एक पारिवार के समान है न कि उत्पन्न।
पुत्र के लिए यूनानी में दो षब्दों का प्रयोग हुआ है यीषु के लिए *हुइयोस* और विष्वासियो के लिए *टेक्नॉन,टेक्ना*। विष्वासी **परमेष्वर की** सन्तान है परन्तु वे **परमेष्वर के** पुत्र यीषु की समानता में नहीं। उसका सम्बन्ध अनोखा है।

"उन्हें जो उसके नाम पर
विश्वास रखते हैं"

इसका अर्थ है जारी रहनेवाला विश्वास। षब्द '' विश्वास '' की पृश्ठभूमि हमें समकालीन अर्थ को समझाने में हमारी मदद करेगी। इब्रानी में यह स्थिर रहने वाले एक व्यक्ति की ओर दर्षाता है। इस षब्द का प्रयोग भरोसेमन्द या विष्वासयोग्य और ईमानदार व्यक्ति के लिए रूपकात्मक रीति से प्रयोग होता है। यूनानी षब्द को अंग्रज़ी में ''विष्वास'',''भरोसा'', ''आस्था'' षब्दों में अनुवाद किया है। बाइबलीय विष्वास वह है जिस पर हम विष्वास रखते है न कि जो हम करते है । **पतित मानवजाति परमेष्वर की** विश्वास–योग्यता पर भरोसा करते, ईमानदारी पर विश्वास करते और उनके प्रियों पर आस्था रखते हैं। यहाँ मनुश्य के विश्वास की गहराई को नहीं पर उस विश्वास के मनोभाव को देख रहे हैं। देखिए **विषेश षीर्शक 2:23।**

'' उसके नाम पर ''

पुराने नियम में एक व्यक्ति के लिए उसका नाम महत्वपूर्ण था। नाम उसके चरित्र का षब्दचित्र था। नाम नर विष्वास करने का अर्थ है ग्रहण या स्वीकार करना।

1:13

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी *''*वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से उत्पन्न हुए हैं।''
टी इ वी ''संसारिक पिता से जन्मने के कारण प्रकृति ***की बातों से वे परमेष्वर की सन्तान नहीं बने''।***
एन जे बी ''**वे न तो मनुश्य** की इच्छा से या अवष्यकता से उत्पन्न हुए हैं''

षब्द लहू यहाँ पर बहुवचन है। यह इस बात को प्रगट करता है कि परमेष्वर किसी जाति को अधिक महत्व नहीं देता, परन्तु जो कोई पुत्र पर विष्वास करता है उसे परमेष्वर चुनते तथा अपनी ओर खींचते हैं (6:44, 65)। 12 और 13 आयतें परमेष्वर के परमाधिकार और मनुश्य की अवष्यकता के बीच तालमेल बैठाती हैं।

1:14 — 18

14. और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
15. यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, कि यह वही है, जिसका मैं ने वर्णन किया, कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है क्योंकि वह मुझ से पहिले था।
16. क्योंकि उस की परिपूर्णता से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।
17. इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई; परन्तु अनुग्रह, और सच्चाई यीषु मसीह के द्वारा पहुंची।
18. परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में हैं, उसी ने उसे प्रगट किया।

1:14

'' वचन देहधारी हुआ;''

मसीहत को यूनानी विधर्मी विचारों में सम्मिलित करने के लिए कोषिष करनेवालों, नॉस्टिक झूठे उपदेषों,पर यूहन्ना हमला कर रहा है। इम्मानुएल के वायदा को परिपूर्णता में (यषा. 7:14) यीषु वास्तविक मनुश्य तथा वास्तविक परमेष्वर थे (1 यूहन्ना 4:1 – 3)। **पतित मानवजाति के बीच** परमेष्वर ने डेरा किया। पाप स्वभाव के लिए पौलूस के समान यूहन्ना षब्द *देह या षरीर* का प्रयोग नहीं कर रहा है।

'' हमारे बीच में डेरा किया ''

इस षब्द के पीछे मिलापवाला तम्बू और उनके मरूभूमि यात्रा का यहूदी पृश्ठभूमि है (प्रका.7:15; 21:3)। इस समय के सिवाय परमेष्वर कभी भी इस्राएल के समीप नही रहा। उस समय उनके साथ रहा हुआ दैवीय बादल को ''शेकैनाह'' कहते है । इब्रानी षब्द का अर्थ है '' डेरा करना।''

'' हम ने उस की महिमा देखी ''

यह यीषु के जीवन के किसी विषेश बात की ओर इषारा कर रहा है जैसे कि (1)रूपान्तर या स्वर्गारोहण (2)अदृष यहोवा की प्रत्यक्षता और उसे परिपूर्णता से जान सकते हैं। इस बात का उल्लेख हम 1 यूहन्ना 1:1–4 में पाते हैं जिसमें यीषु की मानवियता में आत्मा और भौतिकता बीच की गलत नॉस्टिक षिक्षा का विरोध किया गया है।
पुराने नियम में इब्रानी भाशा में महिमा के लिए साधारण रीति से व्योपार सम्बन्धी षब्द प्रयोग किया गया जिसका अर्थ है भारी होना। जो भारी है वह कीमती भी है। कई बार इस प्रकार के षब्दों का प्रयोग परमेष्वर की विभूति को बताने के लिए प्रयोग करते हैं (निर्ग.15:16; 24:17; यषा. 60: 1–2)। केवल वो मात्र महिमा और आदर के योग्य हैं। वो इतना बुद्धिमान है कि **पतित मानवजाति उसे निहारे (निर्ग. 33:17; यषा. 6:5)। केवल यीषु मसीह के द्वारा ही** परमेष्वर को जान सकते हैं (यिर्म. 1:14; मत्ती 17:2; इब्र. 1:3; याकूब 2:1)।
षब्द ''महिमा'' का अर्थ हो सकता है (1) परमेष्वर की धार्मिकता के सदृष्य (2) परमेष्वर की पवित्रता या पूर्णता () परमेष्वर का स्वरूप जिसमें मनुश्य की सृश्टि की गई (उत्प. 1:26,27; 5:1; 9:6), परन्तु यह विद्रोह के कारण बिगड़ गए(उत्प. 3:1 – 22) यह अपने लोगों के साथ यहोवा की उपस्थिति को ईषारा करता है (निर्ग. 16:7,10; लेवि. 9:23; गिनती 14:10)।

एन ए एस बी, एन के जे वी '' जैसी पिता के एकलौते की महिमा। ''
एन आर एस वी '' जैसी पिता के एकमात्र पुत्र की महिमा। ''
टी इ वी **''पिता के** एकलौते **होने के कारण महिमा पाया।''**
एन जे बी **''महिमा पाई** जैसी पिता के एकलौते की महिमा''

षब्द एकलौता (मोनोजेनेस) का अर्थ है अनोखा, एकसा (3:16)। वॉल्गेट ने इसे एकलौता पुत्र अनुवाद किया जिसका अनुकरण कुछ पुराने अंग्रज़ी अनुवादों में पाया जाता है (लूका 7:12; 8:42; 9:38; इब्र. 11:17)। यहाँ का मुख्य विशय एकता तथा अनोखापन है।

'' पिता ''

पुराने नियम में परमेष्वर को पिता कहकर पारिवारिक रूपक का प्रयोग किया है: इस्राएल को परमेष्वर का 'पुत्र' कहा गया (होषे 11:1; मलाकी 3:17); (2) व्यवस्थाविवरण में परमेष्वर को पिता कहा गया (1:31); (3) व्यवस्थाविवरण 32में इस्राएल को परमेष्वर का 'पुत्र' और परमेष्वर को 'पिता' कहा गया; (4) इस रूपक का प्रयोग भ.सं 103:13 में किया गया तथा इसका विस्तृत विवरण भ.सं 68: 5 (अनाथों का पिता) में है; (5) नबियों में यह सर्वसाधारण था (यषा. 1:2; 63:8 इस्राएल परमेष्वर का 'पुत्र', परमेष्वर पिता के रूप में 63:16;64:18; यिर्मा. 3:4,19; 31:9)

विषेशरूप से यूहन्ना में यीषु इस रूपक में संपूर्ण पारिवारीक संबन्ध की ओर गहराई की ओर ले जाते हैं (1:14,18; 2:16; 3:35;4:21,23;5:17,18,19,20,21,22,23,26,36,37,43,45;6:27,32,37, 44,45,46,57;8:16,19,27, 28,38,42,49,54; 10:15,17)।

"अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण"

यह पुराने नियम का *हेसेड़* (प्रतिज्ञात प्रेम और वफेदारी) और *एमेत* (विष्वासयोग्यता) से सम्बन्धित है जिसका प्रयोग नीतिवचन 16:6 में है। पुराने नियम का प्रतिज्ञात षब्द यीषु का चरित्र (यूहन्ना 1:17) को सूचित करता है। देखिए **विषेश षीर्शक सच्चाई 6:55 तथा 17:3।**

1:15

"वह मुझ से पहिले था"

यह यीषु के अस्तित्व के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का मजबूत दृढ़ कथन है (यूहन्ना 1:1; 8:56 – 59; 16:28; 17:5; 2कुरि. 8:9; फिलि. 2:6,7; कुलु. 1:17; इब्रा. 1:3; 10:5–8)। **अस्तित्व और की गई नबूवतें इस बात को पक्का करती हैं कि इतिहास से बढ़कर एक परमेष्वर है तथा वो इतिहास में कार्य कर रहे हैं। यह बाइबलीय विष्व–दृश्टि** का अभिन्न भाग है।

1:16 – 18

यूहन्ना रचित सुसमाचार की विषेशता यह ह कि जब भी लेखक ने ऐतिहासिक घटना, वार्तालाप, और षिक्षा को समाप्त करना चाहा तब अपने ही कथन के साथ किया। कई बार यीषु, यूहन्ना और दूसरों की बातों को पहचानना मुष्किल होता है। अधिकतर विद्वानों का मानना यह है 1:16 – 19 लेखक का ही कथन है।

1:16

" परिपूर्णता "

इसे यूनानी में *प्लेरोमा* कहते है। नॉस्टिक झूठे षिक्षक इसे एक ऊॅचा अच्छा परमेष्वर तथा एक अपेक्षाकृत कम परमेष्वर के बारे में बताने के लिए प्रयोग करते थे। यीषु ही परमेष्वर तथा मनुश्य के बीच के एक मात्र मध्यस्थ हैं (कुलु. 1:19; 2:9; इफि. 1:23; 4:13)। ऐसा लगता है कि प्रेरित यूहन्ना प्रारम्भिक नॉस्टिक विचारधारा पर हमला कर रहे है।

एन ए एस बी, एन आर एस वी "अनुग्रह पर अनुग्रह"
एन के जे वी "अनुग्रह के लिए अनुग्रह"
टी इ वी **"एक आषिश के बाद दूसरी आषिश "**
एन जे बी **"एक आषिश दूसरे का स्थान लेते हुए"**

यहाँ प्रष्न यह है कि हम इस अनुग्रह को किस प्रकार समझें? क्या यह (1) उद्धार के लिए मसीह में परमेष्वर की करूणा है? (2) मसीही जीवन के लिए परमेष्वर की करूणा है? (3) नई वाचा में मसीह के द्वारा परमेष्वर की करूणा है? यीषु के देहधारण में आष्चर्यजनक रीति से परमेष्वर का अनुग्रह दिया गया। **पतित मानवजाति के लिए** यीषु परमेष्वर का हाँ है (2 कुरि. 1:20)।

1:17

''व्यवस्था''

मूसा की व्यवस्था बुरी नहीं थी। संपूर्ण उद्धार दिलाने में यह अपर्याप्त थी (गल. 3: 23 – 29; रोमि. 4)।

'' अनुग्रह ''

यह पतित मानवजाति, लायक न होने के बावजूद भी, के प्रति परमेष्वर का प्रेम है (इफि. 2:8)। **षब्द** अनुग्रह (कारिस) पौलूस के लेखों का मुख्य षब्द है जिसका उपयोग यूहन्ना ने केवल इस अनुच्छेद में किया है (यूहन्ना 1:14,16,17)। पवित्रात्मा प्रेरणा प्राप्त नए नियम के लेखकों की यह स्वतन्त्रता थी कि वे अपनी इच्छानुसार षब्दों का चुनाव करें।

'' सच्चाई ''

यह इस अर्थ से प्रयोग किया (1) विष्वासयोग्यता (2) सच्चाई बनाम झूठ (यूहन्ना 1:14; 8:32; 14:6)। दोनों अनुग्रह और सच्चाई यीषु के द्वारा आए हैं।

''यीषु ''

मरियम के बेटे यीषु के मानवीय नाम का उल्लेख प्रस्तावना में यहाँ पहली बार हो रहा है।

'' परमेश्वर को किसी ने
कभी नहीं देखा, ''

कुछ कहते है यह निर्ग.33:20 – 23 के विरोध में हैं। इब्रानी षब्द का अर्थ है ''चमक '' न कि परमेष्वर का षारीरिक दर्षन। इस अनुच्छेद का अर्थ है केवल यीषु ही परमेष्वर की परिपूर्णता से प्रगट करते हैं (14:8)।

यह अनुच्छेद यीषु नासरी में परमेष्वर के अनोखे प्रगटीकरण को महत्व देता है। वो एकमात्र और परिपूर्ण स्वयं का प्रगटीकरण है।यीषु को जानने का अर्थ है परमेष्वर को जानना। यीषु स्वयं पिता का परिपूर्ण प्रगटीकरण है। उसके बिना स्पश्ट रूप से दैवीयता को जानना नामुमकीन है (कूलू.1:15 – 19; इब्रा. 1: 2,3)।

एन ए एस बी, '' परमेष्वर का एकलौता पुत्र''
एन के जे वी ''एकलौता पुत्र''
एन आर एस वी '' परमेष्वर का एकमात्र पुत्र''
टी इ वी ''एकलौता पुत्र''
एन जे बी ''**यह है** एकलौता पुत्र''

यूनानी हस्तलेखों में थोड़ा सा अन्तर है। पी66,पी75,बी, तथा सी में *थियॉस/* परमेष्वर **का प्रयोग है, परन्तु ए तथा सी3 में** ''परमेष्वर'' **की जगह ''पुत्र'' का प्रयोग है। यह यूहन्ना 3:16 और 1यूहन्ना 4:9 के वजह से आए होंगे (ब्रूस एम. मेटज़गर का ए टेक्सचुयल कमेन्टरी ऑन द ग्रीक न्यू टेस्टमेन्ट** पृश्ठ. 198**) यह यीषु की** परिपूर्ण **दैवीयता के प्रति एक ठोस सबूत है। इस आयत में हम यीषु के लिए 3 षीर्शक देख सकते हैं: (1)** एकलौता पुत्र (2) परमेष्वर (3) जो पिता की गोद में है।

''जो पिता की गोद में है''

यह आयतें 1 और 2 के समानता में है। यह घनिश्ठ संबन्ध के बारे में है।

एन ए एस बी, "उसी ने उसका विवरण किया"
एन के जे वी "उसी ने उसे घोशित किया"
एन आर एस वी, एन जे बी **"जिन्होंने उसकी पहचान करवाई"**
टी इ वी **"उसने उसकी पहचान करवाई "**

यूहन्ना 1:18 में यूनानी में प्रयोग किया गया षब्द से हमें *टीका* षब्द मिला है, जिससे परिपूर्ण प्रगटीकरण हमें प्राप्त है। यीषु का सबसे महत्वपूर्ण कार्य पिता को प्रगट करना था (**यूहन्ना** 14:7 – 10; इब्रा. 1: 2,3)। यीषु को देखने और पहचानने का अर्थ है पिता को देखना और पहचानना।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सकें। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. लॉगॉस की परिभाश दीजिए, तथा इसके बाइबलीय, प्राचीन धार्मिक, लौकिक प्रयोग के बारे में बताए।
2. यीषु के अस्तित्व की षिक्षा महत्वपूर्ण क्यों है?
3. उद्धार में मनुश्य की क्या भूमिका है? कैसे एक व्यक्ति यीषु को ग्रहण करता है?
4. वचन को देहधारी होने की अवष्यकता क्यों थीं?
5. इस अनुच्छेद की रूपरेखा बनाना इतना कठिन क्यों है?
6. यीषु को सूचित करने के लिए प्रयोग की गई विभिन्न धर्मषास्त्रीय
सच्चाईयों का सुची बनाएं (कम से कम 8)।
7. आयत 18 इतनी महत्वपूर्ण क्यों है?

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि ***यूहन्ना 1: 19 – 51***

क. यह अनुच्छेद यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला के प्रति प्रारम्भिक कलीसिया की दो गलत धारणाओं की चर्चा कर रहा है:

1. जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के इर्द–गिर्द पनपना झगड़े का विशय बना (**यूहन्ना 1: 6–9,20,21,25; 3:22–36**)

2. 1:32–34 में चर्चा किए गए मसीह के व्यक्तित्व के प्रति। यही नॉस्टिक झूठी षिक्षा का हमला 1 **यूहन्ना 1 में भी हैं।** 1 यूहन्ना, यूहन्ना रचित सुसमाचार के लिए सहपत्र का काम करती है।

ख. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के द्वारा यीषु के बपतिस्मा के बारे में यूहन्ना रचित सुसमाचार खामोष है। यूहन्ना द्वारा दिए गए यीषु के जीवन के घटनाक्रम में कलीसिया की धर्मनिश्ठा, बपतिस्मा तथा प्रभु भोज, अनुपस्थित है। ऐसा करने के लिए दो विषेश कारण हैं।

1. प्रारम्भिक कलीसिया का धर्मनिश्ठा पर अधिक ज़ोर देने के कारण यूहन्ना मजबूर हुआ कि इस बात का उल्लेख न किया जाए। उसके सुसमाचार सम्बन्धों पर आधारित है न कि संस्कृतियों पर। उसने बपतिस्मा तथा प्रभु भोज जो धर्मनिश्ठा है इन बातों का उल्लेख नहीं किया । यह अनुपस्थिती हमारे ध्यान को उसकी ओर खींच रही है।

2. यूहन्ना, अन्य सुसमाचारों के बाद लिखने के कारण, मसीह के जीवितांष को लेकर दूसरों को पूर्ती कर रहा है। समानान्तर सुसमाचार इन बातों को बताने के कारण यूहन्ना ने जिन बातों का उल्लेख नही किया उन बातों को लिख रहा है। उदाहरण के तौर पर ऊपरी कोठरी का वार्तालाप (यूहन्ना 13 –17) न कि भोज।

ग. यीषु के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही का विषेश महत्व। यूहन्ना द्वारा निम्नलिखित मसीहषास्त्रीय कथनः

1. यीषु परमेश्वर का मेम्ना है (1:29) यीषु का षीर्शक जिसका उल्लेख केवल इधर और प्रकाषितवाक्य में है।
2. यीषु का अस्तित्व (1ः 30)
3. यीषु परमेश्वर का पुत्र है (1ः 34)
4. यीषु पवित्रात्मा का प्रापक और दाता है।

घ. यीषु के व्यक्तित्व और काम के बारे में निम्नलिखित लोगों के व्यक्तिगत गवाहियों से बटोरी हुई सच्चाईः

1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला
2. अन्द्रियास और पतरस
3. फिलिप्पुस और नतनएल

यह इस सुसमाचार को लिखने का एक तरीका बन गया। इस सुसमाचार में यीषु के बारे में या यीषु के साथ 27 वार्तालाप या गवाहियाँ है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

यूहन्ना 1ः 19 – 23

19. यूहन्ना की गवाही यह है, कि जब यहूदियों ने यरूशलेम से याजकों और लेवीयों को उस से यह पूछने के लिये भेजा, कि तू कौन है?

20. तो उस ने यह मान लिया, और इन्कार नहीं किया परन्तु मान लिया कि मैं मसीह नहीं हूँ।
21. तब उन्हों ने उस से पूछा, तो फिर कौन है? क्या तू एलिय्याह है? उस ने कहा, मैं नहीं हूँ: तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है? उस ने उत्तर दिया, कि नहीं।
22. तब उन्होंने उस से पूछा, फिर तू है कौन? ताकि हम अपने भेजनेवालों को उत्तर दें; तू अपने विषय में क्या कहता है?
23. उस ने कहा, मैं जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा है, जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हूँ कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो।

1:19

''यहूदियों ने ''

यूहन्ना रचित सुसमाचार में यह (1)यहूदिया में यीषु से दूर रहनेवाले, या (2) धार्मिक अगुवे की ओर इषारा करता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि यह समस्त यहूदियों की ओर इषारा नहीं करता है। हलाँकि 90 ई0 में जामिना की सभा के बाद मसीहियों के प्रति यहूदियों के सताव में बढ़ौतरी हुई।

''याजकों और लेवीयों ''

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला भी याजकीय परिवार से था (लूका 1:5)। लेवीयों का उल्लेख यूहन्ना रचित सुसमाचार में केवल यहाँ पाते है। सम्भव है कि वे मन्दिर के पुलिस होंगे। ये यीषु के विरोध में यरूषलेम से धार्मिक अगुवों के द्वारा भेजे गए जासूस थे (1:24)। याजक और लेवी सदूकी होते हैं तथा षास्त्री फरीसी होते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को सवाल के घेरे में लानेवाले ये दानों झुण्ड़ के थे। यीषु और उनके षिश्यों का विरोध करने के लिए राजनैतिक और धार्मिक अगुवे एक मत थे।

'' तू कौन है?''

यूहन्ना 8:25 में यीषु के साथ भी इस सवाल को दोहराया गया। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और यीषु की षिक्षा और काम ने धार्मिक अगुवों को बेचैन कर दिया, क्योंकि वे जानते थे इन दोनों में पुराने नियम की कुछ भविश्यात्मक बातें हैं। इसलिए यह सवाल यहूदियों के अन्त समय की प्रतिक्षा से जुड़े हैं, नए युग के अगुवे।

'' उस ने यह मान लिया,
और इन्कार नहीं किया
परन्तु मान लिया ''

यह बहुत षक्तिषाली कथन है। प्रतिज्ञात मसीह होने की बात को वो नकार रहे है।

'' मसीह ''

यह इब्रानी षब्द का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''अभिशिक्त''। पुराने नियम के अनुसार परमेष्वर के विषेश काम के लिए एक खास व्यक्ति को अभिशेक किया जाता था। याजक, राजा, नबी का अभिशेक होता था। इसलिए कईयों ने सोचा कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला ही प्रतिज्ञात मसीह है (लूका 3:15)। क्योंकि वो ही एकमात्र सन्देषवाहक था जो लगभग 400 साल के बाद परमेष्वर की ओर से आया।

1:21

'' तो फिर कौन है?
क्या तू एलिय्याह है?''

क्योंकि एलिय्याह मरा नहीं पर जीवित स्वर्ग की ओर उठा लिया गया (2 राजा 2:1), और यह विष्वास किया जाता था कि वह प्रतिज्ञात मसीह से पहले आएगा (मला. 3:1; 4:5) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने एलिय्याह के समान कार्य किया (ज़क. 13:4)।

'' मैं नहीं हूँ:''

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला स्वयं को एलिय्याह की भविश्यात्मक भूमिका में नहीं देखता, परन्तु यीषु उसको मलाकी के भविश्यद्वाणी के पूर्तीकरण के रूप में देखते हैं (मत्ती 11:14; 17:12)।

'' तो क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है?''

मूसा ने कहा था उसके बाद उसके समान एक भविष्यद्वक्ता आएगा (व्यवस्था. 18:15,18; प्रेरित. 3:22)। नए नियम में इस बात का उपयोग दो विभिन्न तरीके से किया है(1) प्रतिज्ञात मसीह से अलग दूसरा एक व्यक्तित्व (यूहन्ना 7:40 – 41) या (2) प्रतिज्ञात मसीह के साथ दूसरा एक व्यक्तित्व (प्रेरित. 3:22)।

1:23

'' मैं जंगल में एक
पुकारनेवाले का शब्द हूँ''

यह यषा. 40:3 के सेप्टूवजन्ट अनुवाद के उद्धृत तथा मलाकी 3:1 का सदृष्य है।

''प्रभु का मार्ग सीधा करो ''

यह यषा. 40:3 के उद्धृत तथा यषायाह के सेवक गीत (अध्याय 40 – 54) का भाग है (यषायाह 42:1–9; 49:1–7; 50:4–11; 52:13–53:12)। ये प्राथमिक रूप से इस्राएल के लिए कहे गए, परन्तु यषायाह 52:13–53:12 एक व्यक्ति की ओर इषारा करते है। प्रभु का मार्ग सीधा करने का अर्थ है उनके राजकीय दौरे की तैयारी। पहली षताब्दी के कुछ झूठे उपदेष्को के झूण्ड़ ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को अपना अगुवा मान लिया था इसलिए प्रेरित यूहन्ना ने धर्मषास्त्रीय रीति से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का मूल्य घटाकर प्रस्तुत किया है।

1:24 – 28

24. ये फरीसियों की ओर से भेजे गए थे।
25. उन्हों ने उस से यह प्रश्न पूछा, कि यदि तू न मसीह है, और न एलिय्याह, और न वह भविष्यद्वक्ता है, तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है?
26. यूहन्ना ने उन को उत्तर दिया, कि मैं तो जल से बपतिस्मा देता हूँ; परन्तु तुम्हारे बीच में एक व्यक्ति

खड़ा है, जिसे तुम नहीं जानते।
27. अर्थात् मेरे बाद आनेवाला है, जिस की जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं।
28. ये बातें यरदन के पार बैतनिय्याह में हुई, जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देता था।

1:24

''ये फरीसियों की ओर से भेजे गए थे ''

इसका अर्थ यह हो सकता है:(1) यूहन्ना से सवाल करने फरीसियों ने उन्हें भेजा (1:19) या (2) सवाल करनेवाले फरीसी थे,परन्तु यह बात थोड़ीसी विरोधाभास लग रही है क्योंकि याजक सदूकी होते थे(1:9)

विषेश षीर्शक – फरीसी

1. इस षब्द का उत्भव निम्नलिखित किन्हीं एक से होगा।

क. **''अलग किए गए''। इनका प्रचलन मकाबियन के समय पर हुआ** (अधिकतर इस विचार को मानते है।)**।**

ख. **''विभाजन करना''। यह एक ही इब्रानी मूल षब्द का दूसरा अर्थ है। कुछ कहते है इसे किसी अनुवादक के द्वारा प्रयोग किया गया** (2 तिमु. 2:15)**।**

ग. **''पारसी''। यह एक ही मूल षब्द का अरामिक अर्थ है।** फरीसियों के कुछ उपदेष पारसी धर्म के साथ मेल खाते है।

2. इनकी प्रगति **मकाबियन के समय के भक्तों से हुई। यह एन्टियाकस् 4 एपीपानोस के विरोध में निकले कई झुण्ड में से एक हो सकते हैं।** फरीसियों का नाम सर्वप्रथम जॉसीफॉस का एन्टिक्यूटीस् ऑफ ज्वूस 8.5. 1–3 में उल्लेखित है।

3. मुख्य षिक्षा / उपदेष

क. **मसीह के आगमन में विष्वास। यह यहूदी भविश्यात्मक साहित्यों, 1 हानूक, से प्रभावित है।**

ख. **परमेष्वर प्रतिदिन के जीवन में कार्यषील है। यह सदूकियों के विचार के विरोध में है।** धर्मषास्त्रीय रीति से फरीसियों की अधिकतर षिक्षाएं **सदूकियों की** षिक्षाओं **के विरोध में है।**

ग. भौमिक जीवन पर आधारित भविश्य षारीरिक जीवन, जिसमें न्याय और प्रतिभल है (दानिएल 12:2)।

घ. पुराने नियम तथा मौखिक परम्परा (*तालमूद*) की आधिकारिकता, उन्हें मालूम था कि जैसे वे रब्बियों की पाठषाला में पुराने नियम में कही गई आज्ञाओं की व्याख्या करते हैं वैसे आज्ञाकारी बनना। इसकी व्याख्या दो विभिन्न विचारधारा रखनेवाले रब्बियों के आपसी तर्क–वितर्क से ही होती थी। आखिर इस व्याख्या को बॅबिलोनियन तालमूद तथा पलिस्तीनियन तालममूद में लिखा जाता था। वे विष्वास करते थे कि मूसा ने सिय्योन पर्वत पर इसे पाया। इस कार्यप्रणाली का ऐतिहासिक आरम्भ एज़्रा और महान सिनगॉग के बीच हुई वाद–विवाद से हुआ (बाद में इसे सनहद्रीन कहा गया)।

ङ **उच्चस्तरीय स्वर्गदूत षास्त्र। इसमें दोनों बुरे तथा भले आत्मिक प्राणी सम्मिलित है। इसकी प्रौढ़ता पारसी धर्म और यहूदी भविश्यात्मक साहित्यों से** हुई है।

1:25

''तो फिर बपतिस्मा क्यों देता है?''

अन्यजाती से यहूदी बननेवालों का बपतिस्मा सधारण घटना थी, परन्तु यहूदियों का बपतिस्मा चौकानेवाली बात थी। यह यषा. 52:15; यज़े. 36:25; जक. 13:1 से लिया हुआ होगा।

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है।

''न मसीह है, और न एलिय्याह,
और न भविष्यद्वक्ता है?''

मृतसागर चर्मलेखों के अनुसार एक विचारधारा इस प्रकार है कि ये तीनों मसीह के अलग–अलग चित्र होंगे। प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवे ने यह भी विष्वास किया कि मसीह के पुनरागमन से पहले एलिय्याह भौतिक रूप से आएंगे (क्रिस्टोसम् , जरॉम, ग्रिगरी , अगस्टीन)।

1:26

''मैं तो जल से बपतिस्मा देता हूँ''

आयत 33 के सदृष्य में हैं।

1:27

'' जिस की जूती का बन्ध
मैं खोलने के योग्य नहीं।''

यह एक गुलाम के कार्य को दर्षाता है जब उसका स्वामी घर आता है तो उसे चाहिए कि उनका जूता खोले। रब्बियों पर आधारित यहूदियों का यह मत था कि एक षिश्य अपने रब्बी के जूते खोलने को छोड़कर बाकी सब काम करने की तैय्यारी में एक गुलाम के तरह रहें। यह अत्यन्त नम्रता का रूपक है।

1:28

''बैतनिय्याह''

यह यरदन नदी के पूरब तट के यरीहो के पास का षहर है।

1:29 – 34

29. दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।
30. यह वही है, जिस के विषय में मैं ने कहा था, कि एक पुरूष मेरे पीछे आता है, जो मुझ से श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझ से पहले था।
31. और मैं तो उसे पहचानता न था, परन्तु इसलिये मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया, कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए।
32. और यूहन्ना ने यह गवाही दी, कि मैं ने आत्मा को कबूतर की नाईं आकाश से उतरते देखा है, और वह उस पर ठहर गया।
33. और मैं तो उसे पहचानता न था, परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा, उसी ने मुझ से कहा, कि जिस पर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे; वही पवित्रा आत्मा से बपतिस्मा देनेवाला है।
34. और मैं ने देखा, और गवाही दी है, कि यही परमेश्वर का पुत्र है।

1:29

''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है,''

जल्द ही फ़सह पर्व होनेवाला है(2:13)। इसलिए यह मिस्र से (निर्ग. 12) छुटकारा (अर्थात उद्धार) दिलानेवाले उस मेम्ने को दर्षाता है। हलॉकि इसकी और भी व्याख्या है (1) षायद दुःखभोगी सेवक को दर्षाता है, यषा. 53: 7; (2) षायद झाड़ियों से मिले हुआ मेढे को दर्षाता है, उत्पती 22:8; (3) मन्दिर में जारी रहनेवाले बलीदान को दर्षाता है, निर्ग. 29:38–46। वास्तविकता कुछ भी हो बली होने के उद्देष्य से इस मेम्ने को भेजी गया।
पौलूस ने इस रूपक का उपयोग कभी नहीं किया, यूहन्ना ने इस रूपक का उपयोग नाम मात्र के लिए ही किया है (1:29,36)। 21:15 में यूनानी षब्द ''छोटे मेम्ने'' का प्रयोग हुआ है, और 28 बार इसे प्रकाशितवाक्य में पाते हैं।
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के इस षब्द के प्रयोग के पीछे एक ओर कारण हो सकता हैः पुराने तथा नए नियम के बीच के अन्तराल में जो भविश्यात्मक साहित्य हुआ है उनमें मेम्ने को जयवन्त योद्धा बताया गया। बली का विचार अभी भी स्थाई है, परन्तु मेम्ने का न्यायाधीष होना पूर्वकाल से ही तय है (प्रकाष. 5:5–6, 12–13)।

''जो जगत के पाप उठा ले जाता है।''

अर्थात् उठाना तथा लेकर चलना। यह लेवी. 16 में कहे गए बली के बकरे के विचार के सदृष्य है।
यह मेम्ने के विष्वस्तरीय काम को दर्षाता है। यहाँ पाप षब्द एकवचन है। पाप की समस्या जो विष्व में है उसे यीषु ने निपटाया।

1:30

''वह मुझ से पहिले था।''

यह आयत 15 के महत्व को दोहराती है। यह यीषु के अस्तित्व और दैवीयता का दूसरा प्रर्दषन है(यूहन्ना 1:1, 15; 8:58; 16:28; 17:5, 24; 2कुरि. 8:9; फिलि. 2:6,7; कुलु. 1:17; इब्रा. 1:3)।

1:31

"कि वह इस्राएल पर प्रगट हो जाए।"

यह यूहन्ना का साधारण षब्द है(2:11; 3:21; 7:4; 9:3; 17:16; 21:14), परन्तु इसे समानान्तर सुसमाचारों में कम पाया गया, केवल मरकूस 4:22 में इसका उल्लेख है। यूहन्ना के बपतिस्मा के दो पहलू है (1) लोगों को तैयार करना (2) मसीह को प्रगट करना।

1:32–33

यूहन्ना ने देखा हुआ पवित्रात्मा का आगमन और यीषु में उसकी आवाज की तीन प्रकार की विषेशता इसमें हैं।

1:32

"आत्मा को कबूतर की नाईं
आकाश से उतरते देखा है"

यह मसीह की पहचान कराने का यषायाह का तरीका था (यषायाह 42:1; 59:21; 61:1) इसका अर्थ यह नहीं कि इससे पहले यीषु के पास आत्मा नहीं थी।यह परमेष्वर के विषेश–चुनाव तथा तैयारी का तरीका था। यह प्रथमिक रूप से यीषु के लिए नही परन्तु यूहन्ना के लिए था।
दो युगों के बारे में यहूदी विचार रखते थेः वर्तमान बुरे युग और भविश्य के धार्मिक युग। नए युग जो आत्मा का युग कहलाता है। यही दर्षन यूहन्ना के साथ बाँटा होगा कि(1) यह मसीह है तथा (2) नए युग का भोर हुआ है।

"कबूतर"

यह (1) इस्राएल के लिए रब्बियों का चिन्ह (2) आत्मा का रूपक जो मण्डलानेवाले पक्षी के समान है (उत्प.1:2) (3) आत्मा के उतरने के ढ़ंग को दर्षाने के लिए प्रयोग किया गया (आत्मा एक पक्षी नही है।)

"ठहर गया"

देखिए विषेश षीर्शक 1 यूहन्ना 2:10

1:33

" मैं तो उसे पहचानता न था "

इसका अर्थ यह नही कि यूहन्ना यीषु को नहीं जानता पर मसीह के रूप में पहचानता नहीं था। वे रिष्तेदार होने के कारण पिछले सालों में अवष्य मिले होंगे।

" परन्तु जिस ने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा,
उसी ने मुझ से कहा,"

जैसे दूसरे भविश्यद्वक्ताओं के साथ परमेष्वर ने बात की वैसे यूहन्ना के साथ भी की। यूहन्ना को बपतिस्मा में होनेवाली विषेश बातों से मसीह को पहचानना था।

यूहन्ना का बपतिस्मा एक धार्मिक अधिकार रखता था। यरूषलेम के अधिकारियों ने उस अधिकार को जानना चाहा (1:19–28)। यूहन्ना यीषु को अपने अधिकार का श्रोत मानता है। यूहन्ना के पानी के बपतिस्मा से उत्तम है यीषु की आत्मा में बपतिस्मा । यीषु का पानी में स्वयं का बपतिस्मा आत्मा में बपतिस्मा का चिन्ह बनता है, जो कि नए युग मे प्रवेष है।

"वही पवित्र आत्मा से
बपतिस्मा देनेवाला है"

यह कथन 1 कुरि. 12:13 के अनुसार प्राथमिक रूप से एक व्यक्ति का परमेष्वर के परिवार में षामिल होने को दिखाता है। आत्मा पाप के बारे में निरूत्तर करती है, यीषु की ओर आकर्शित करती है तथा मसीह में बपतिस्मा दिलाती, और नए विष्वासी में यीषु को उत्पन्न करती है (यूहन्ना 16:8713)।

1:34

" और मैं ने देखा,
और गवाही दी है,"

यह उस काम को बताता है जो पूरा हो चुका है तथा जारी भी है। यह 1 यूहन्ना की समानता में है।

" कि यही
परमेश्वर का पुत्र है। "

1:49 में नतनएल ने इस षीर्शक का प्रयोग किया है। मत्ती 4:3 में षैतान ने भी इस षीर्शक का प्रयोग किया है। परन्तु यूनानी हस्तलेख पी5 और आलेफ में परमेश्वर के पुत्र के बदले में परमेश्वर क चुने हुए का प्रयोग है। यूहन्ना में " परमेश्वर का पुत्र " षब्दसमूह का प्रयोग आम हैं।

1: 35 – 42

35. दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे। 36. और उस ने यीशु पर जो जा रहा था दृष्टि करके कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।
37. तब वे दोनों चेले उस की सुनकर यीशु के पीछे हो लिए।
38. यीशु ने फिरकर और उन को पीछे आते देखकर उन से कहा, तुम किस की खोज में हो? उन्हों ने उस से कहा, हे रब्बी, (अर्थात् हे गुरू) तू कहाँ रहता है? उस ने उन से कहा, चलो, तो देख लोगे।
39. तब उन्हों ने आकर उसके रहने का स्थान देखा, और उस दिन उसी के साथ रहे; और यह दसवें घंटे के लगभग था।
40. उन दोनों में से जो यूहन्ना की बात सुनकर यीशु के पीछे हो लिए थे, एक तो शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था।
41. उस ने पहिले अपने सगे भाई शमौन से मिलकर उस से कहा, कि हम को ख्रिस्तस अर्थात् मसीह मिल गया।
42. वह उसे यीशु के पास लायाः यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, कि तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है, तू केफा, अर्थात् पतरस कहलाएगा।

<u>1:35</u>

<u>" उसके चेलों में से दो जन "</u>

इन षिश्यों को बुलाने की घटना को मरकूस अलग षैली से प्रस्तुत करता है(मरकूस 1:16–20)। यह पक्का पता नही है कि उन्हें बुलाने से पहले यीषु का और गलील के इन षिश्यों के साथ कोई सम्बन्ध रहा कि नहीं। यीषु के समय में किसी को रब्बी के षिश्य बनने के लिए विषेश अनुषासन की विभिन्न प्रक्रिया से होकर गूज़रना था। उस प्रक्रिया का उल्लेख रब्बियों की पुस्तक में है परन्तु उसे सुसमाचार में क्रमानुसार नहीं अपनाया है। जिन दो षिश्यों का उल्लेख यहाँ है वे (1) अन्द्रियास (1:40) (2) यूहन्ना (इस सुसमाचार में वह स्वयं को नाम से संबोधित नहीं करते)
षब्द षिश्य का अर्थ (1) सीखनेवाला, या (2) अनुयायी , हो सकता है। यह यीषु मसीह पर, जिन्हें यहूदियों के प्रतिज्ञात मसीह के रूप में, विष्वास किए हुए लोगों के प्रारम्भिक नाम थे। नए नियम षिश्यों की कामना करते हैं न कि केवल निर्णयों की (मती.13)। मसीहत एक निर्णय (मनफिराव और विष्वास) से आरम्भ होकर लगातार जारी रहनेवाला आज्ञाकारिता तथा धैर्य का निर्ण्य है। मसीहत स्वर्ग पहुँचने का टिकट नहीं है परन्तु यीषु के साथ एक सेवक/दोस्त का सम्बन्ध है।

<u>1:37</u>

<u>" वे दोनों चेले उस की सुनकर "</u>

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला स्वयं से लोगों का ध्यान हटाकर यीषु की ओर इषारा करता हैं(3:30)।

<u>1:38</u>

<u>" हे रब्बी, (अर्थात् हे गुरू)"</u>

जो मूसा की व्यवस्था और परम्परा(तालमूद) के प्रभाव और प्रयोग के बारे में अच्छे से जानते थे उन्हें पहली षताब्दी के यहूदी धर्म रब्बी कहते थे। इसका षाब्दिक अर्थ है गुरू। षिक्षक की समानता में प्रेरित यूहन्ना ने इसका प्रयोग किया है (11:8, 28; 13:13,14; 20:10)। इन षब्दों की व्याख्या से यह कह सकते है कि यूहन्ना ने इसे अन्यजातियों के लिए लिखा है (1:38,41,42)।

<u>" तू कहाँ रहता है?"</u>

यह गुरू षिश्य सम्बन्धों को बताने का एक अनोखा तरीका है। इस प्रष्न ने इस बात को स्पश्ट किया कि मार्ग में केवल प्रष्न से बढ़कर वे यीषु के साथ अधिक समय बिताना चाहता थे (1:39)।

<u>1:39</u>

<u>"यह दसवें घंटे के लगभग था "</u>

यह बताना कठीन है कि यूहन्ना किस समय का विवरण कर रहा है, षायद यह (1) रोमी समय है जिसका आरम्भ प्रभातकाल के 12 बजे या (2) दोपहर के 12 बजे या (3) यहूदी समय जो सायंकाल के 6 बजे आरम्भ होता है। परन्तु यूहन्ना 19:14; मरकूस 15:25 के साथ इसकी तुलना की जाए तो यह रोमी समय लगता है।

यदि इसकी तुलना यूहन्ना 11:9 के साथ की जाए तो यह यहूदी समय लगता है। यूहन्ना ने सम्भवत् दोनों का उपयोग किया। यहाँ पर रोमी समय का दोपहर का वक्त है, अर्थात 4 बजे।

1:41

एन ए एस बी, "पहले उसने अपने भाई को पाया"
एन के जे वी, एन आर एस वी " उसने अपने भाई को पहले पाया "
टी इ वी "एकदम उसने पाया"
एन जे बी "पहले अन्द्रिास ने किया"

हस्तलेखों का अन्तर अनुवाद को प्रभावित करता है। विकल्प निम्नलिखित हैः (1) **पहला कार्य अन्द्रिास ने किया कि** (2) पहला व्यक्ति जिसको उसने देखा (3) पहले जाकर कहनेवाला **अन्द्रिास** ही था।

"मसीह"

देखिए नोट 1:20

1:42

"यीशु ने उस पर दृष्टि करके "

इस व्याख्यांष का अर्थ है ध्यानपूर्वक देखना।

"यूहन्ना का पुत्र शमौन "

पतरस के नाम के प्रति नया नियम असमंजस में हैं। मत्ती 10:17 में पतरस को योना का पुत्र कहा गया (*ऐयानॉस*), परन्तु यहाँ यूहन्ना का पुत्र कहा है *(ऐयान्नॉस)* यूहन्ना नाम पी66, पी75, आलेफ, और एल में है। योना नाम ए, बी3, के और भी कुछ हस्तलेखों में है। अरामिक नामों के अनुवाद में अक्सर यह समस्या रही है।

" तू केफा,
अर्थात् पतरस कहलाएगा। "

केफा पत्थर का अरामिक (*केपा*)है, इसे यूनानी में *केफास* कहते हैं। यह षब्द किसी की दृढ़ता,काबिलीयत, स्थाईपन को दर्षाता है।

1:43 — 51

43.दूसरे दिन यीशु ने गलील को जाना चाहा; और फिलिप्पुस से मिलकर कहा, मेरे पीछे हो ले।
44. फिलिप्पुस तो अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा का निवासी था। 45. फिलिप्पुस ने नतनएल से मिलकर उस से कहा, कि जिस का वर्णन मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यद्वक्ताओं ने किया है, वह हम को मिल गया; वह यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी है।
46. नतनएल ने उस से कहा, क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से निकल सकती है? फिलिप्पुस ने उस से कहा, चलकर देख ले।

47. यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, देखो, यह सचमुच इस्राएली है: इस में कपट नहीं।
48. नतनएल ने उस से कहा, तू मुझे कहाँ से जानता है? यीशु ने उस को उत्तर दिया; उस से पहिले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के तले था, तब मैं ने तुझे देखा था।
49. नतनएल ने उस को उत्तर दिया, कि हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का महाराजा है।
50. यीशु ने उस को उत्तर दिया; मैं ने जो तुझ से कहा, कि में ने तुझे अंजीर के पेड़ के तले देखा, क्या तू इसी लिये विश्वास करता है? तू इस से भी बड़े बड़े काम देखेगा।
51. फिर उस से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि तुम स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र के ऊपर उतरते और ऊपर जाते देखोगे।

1:43

'' दूसरे दिन ''

समस्त सुसमाचार में यूहन्ना कालानुक्रमिक षब्दसमूहों का उपयोग करता है।

''यीशु ने जाना चाहा ''

यूहन्ना यीषु के प्रारम्भिक यहूदिया की सेवकोई के बारे में, जिसका उल्लेख समानन्तर सुसमाचारों में नहीं है, रेखांकित करता है। यूहन्ना रचित सुसमाचार यहूदिया विषेशरूप से यरूषलेम की सेवकोई पर अधिक जोर देता है।

''मेरे पीछे हो ले''

यह स्थाई षिश्यता के लिए रब्बी का बुलावा है। इस सम्बन्ध के प्रति यहूदियों के पास कुछ मार्गनिर्देषन थे।

1:44

'' फिलिप्पुस जो बैतसैदा का निवासी था''

इस षहर के नाम का अर्थ है ''मछली पकड़ने का भवन''। यह अन्द्रियास और पतरस का नगर है।

1:45

'' नतनएल ''

इस इब्रानी नाम का अर्थ है ''परमेष्वर ने दिया''। समानन्तर सुसमाचारों में इस नाम से इसका उल्लेख नही हैं। नवीन विद्वानों की मानें तो यह बरतलोमी है, परन्तु यह केवल एक अनुमान ही है।

'' व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं ''

यह इब्रानी कानोन की तीन में से दो बातों को सूचित करता है: व्यवस्था, भविष्यद्वक्ता और लेख (90 ई0 में जिसे जामनिया में क्रमीकृत किया गया)। यह समस्त पुराने नियम को दर्षाने का एक तरीका है।

''यूसुफ का पुत्र, यीशु नासरी ''

इसे यहूदियों की समझ में समझना चाहिए। यीषु नासरत में रहते थे और उस भवन के पिता का नाम यूसुफ था। यह यीषु का बेतनलेहम में पैदा होने से इन्कार नहीं करते (मीका 5:2) न कुंवारी से जन्म का (यषा. 7:14)।

1:46

'' नतनएल ने उस से कहा,
क्या कोई अच्छी वस्तु भी नासरत से
निकल सकती है?''

निष्चयरूप से फिलिप्पुस और नतनएल पुराने नियम को जानते थे, उन्हें मालूम था कि मसीह बेतलहेम से ही आएगा (मीका 5:2) न कि अन्यजातियो की गलील के नासरत से (षायद वे यषा. 9:1–7 को ध्यान में नही रखा)।

1:47

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी ''इस में कपट नहीं''
टी इ वी **''उसमें कोई गलती नही''**
एन जे बी **''इसमें पाखण्डीपन नही''**

अर्थात् सीधे मनवाले व्यक्ति (भ.सं. 32:2) चुने हुए वंष, इस्राएल का सही चित्रीकरण।

1:48

''यीशु ने उस को उत्तर दिया;
उस से पहिले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया,
जब तू अंजीर के पेड़ के तले था,
तब मैं ने तुझे देखा था। ''

यीषु ने यहाँ स्वयं को मसीह बताने के लिए नतनएल के सामने अपनी आलौकिक बुद्धी का प्रयोग किया।

कई बार यह समझना कठीन हो जाता है कि किस प्रकार यीषु की मानवीयता और दैवीयता कार्य करती है। यहाँ पर यीषु अपनी आलौकिकता का प्रयोग करते हैं।

1:49

*'' नतनएल ने उस को उत्तर दिया,
कि हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है;
तू इस्राएल का महाराजा है। ''*

दोनों षीर्शकों को ध्यान दीजिए! दोनों में मसीह का प्रभाव है। प्रारम्भिक षिश्यों ने यीषु को यहूदियों की सोच विचार में समझा। वे यीषु के व्यक्तित्व और दुःख भोगी सेवक (यषा. 53) के तौर पर उनके काम को पुनरूत्थान तक नहीं समझ पाए।

1:51

एन ए एस बी, '' मैं तुम से सच सच कहता हूँ''
एन के जे वी ''**बड़े निष्चय से** मैं तुम से कहता हूँ''
एन आर एस वी '' मैं तुम से सच कहता हूँ''
टी इ वी ''मैं तुम से सच्चाई कहता हूँ''
एन जे बी **''सच में''**

यह आक्षरिक रूप से ''आमीन आमीन'' है। केवल यूहन्ना रचित सुसमाचार
में यीषु ने इस षब्द को दोहराया वह भी 25 बार। **आमीन विष्वास का इब्रानी षब्द *(एमेत)* है। इसे स्थिरता और भरोसे के लिए रूपक के तौर पर पुराने नियम में प्रयोग किया गया है। इसे विष्वास या विष्वासयोग्यता में अनुवाद किया गया। इसे समयानुसार निष्चयता के लिए प्रयोग करना षुरू कर दिया। यह प्रभु यीषु के महत्वपूर्ण कथन की ओर ध्यान खींचने की एक अनोखी षैली थी (1:51; 2:3,5,11; 5:19,24,25; 6:26,32,47,53; 8:34,51,58; 10:1,7: 12:24; 13:16,20,21,38; 14:12; 14:12; 16:20,23; 21:18)।**
यहाँ पर प्रयोग किए गए सर्वनाम और क्रिया बहुवचन है। वहाँ पर उपस्थित सभों को सम्बोधित कर रहे हैं।

'' स्वर्ग को खुला हुआ ''

षब्द स्वर्ग यहाँ बहुवचन है, इब्रानी भाशा में भी यह बहुवचन है। यह (1) उत्पत्ती 1 में बताए गए पृथ्वी के ऊपर के वातावरण या (2)परमेष्वर की उपस्थिती, को दर्षाता है।

*''स्वर्गदूतों को ऊपर उतरते
और ऊपर जाते देखोगे।''*

यह बेतेल में याकूब की अनुभव की ओर इषारा करता है (उत्पत्ती. 28:10)। यीषु कह रहे कि जो वायदा परमेष्वर ने यकूब के साथ किया था परमेष्वर ने उन तमाम बातों का उपाय किया।

'' मनुष्य के पुत्र ''

यीषु ने स्वयं के लिए प्रयोग किए हुए षीर्शक हैं। यह मनुश्य प्राणी को दर्षाने के लिए इब्रानी में प्रयोग होनेवाला षब्दसमूह है (भ.सं. 8:4; यहेज़. 2:1)। परन्तु दानिय्येल, 7:13 के प्रयोग के कारण इसे दैवीय योग्यताएं मिली हैं। अपने स्वभाव की विषेशता के कारण यीषु ने इस षीर्शक का प्रयोग किया है (1 यूहन्ना 4:1–6)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से यरूषलेम के परिशद ने यह क्यों पूछा कि वह उन तीन पुराने नियम के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक है?
2. आयत 19 – 30 में यीषु के बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के द्वारा प्रयोग किए गए मसीहषास्त्र को पहचानिए?
3. षिश्यों की बुलाहट के विशय में समानन्तर सुसमाचार और यूहन्ना रचित सुसमाचार में इतना अन्तर क्यों है?
4. वे यीषु के बारे में क्या समझे? आयत 39 में उन्होंने यीषु के लिए उपयोग किए हुए षीर्शक पर ध्यान दीजिए।
5. यीषु स्वयं को किस नाम से संबोधित करते है? क्यों?

<u>यूहन्ना – 2</u>

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4] काना में विवाह	एन के जे वी पानी का दाखरस में परिवर्तन	एन आर एस वी काना में विवाह	टी इ वी काना में विवाह	जे बी काना में विवाह
2:1 – 11	2:1 – 12	2:1 – 11	2:1 – 3 2:4 2:5 2:6 – 10 2:11	2:1 – 10 2:11 – 12
2:12		2:12	2:12	
मन्दिर का षुद्धिकरण	यीषु मन्दिर को षुद्ध करते हैं	मन्दिर का षुद्धिकरण		मन्दिर का षुद्धिकरण
2:13 – 22	2:13 – 22	2:13 – 22	2:13 – 17 2:18 2:19 2:20 2:21 – 22	2:13 – 22
यीषु सब मनुश्य को जानते हैं	हृदयों को जाँचनेवाला		मनुश्य स्वभाव के बारे में यीषु की जानकारी	यीषु यरूषलेम में
2:23 – 25	2:23 – 25	2:23 – 25	2:23 – 25	2:23 – 25

<u>अध्ययन कालचक्र तीन</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 2:1 – 11

क. यीषु अपने दिनों के सब धार्मिक अगुवों से अलग थे। आम जनता के साथ उन्होंने खाया पिया। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला जंगल से आया हुआ एकांतिक व्यक्ति था, यीषु सर्वविदित व्यक्ति थे।

ख. उनका चिन्ह घरेलू था। आम जनता के लिए उनका ध्यान और सोच यीषु के स्वभाव का एक हिस्सा है और पाख्ण्डी धार्मिक लोगों के प्रति उनका रोश यीषु के स्वभाव का दूसरा हिस्सा है। लोगों का प्राथमिकता यीषु की स्वतन्त्रता को प्रगट करता है।

ग. ये पहले 7 चिन्ह हैं जो यीषु के स्वभाव और सामर्थ को प्रगट करते हैं (2 –11)।

1. काना के विवाह में पानी को दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2:1–11)
2. राजकर्मचारी के पुत्र को चंगा करना (यूहन्ना 4:46–54)
3. यरूषलेम के बैतहसदा कुण्ड में लंगडे को चंगा करना (यूहन्ना 5:1 –18)
4. पाँच हजार पुरुशों को खिलाना (यूहन्ना 6:1–15)
5. गलील की झील के ऊपर चलना (यूहन्ना 6:16–21)
6. जन्म के अन्धे को दृश्टिदान (यूहन्ना 9:1–41)
7. बैतनिय्याह का लाज़र को जिलाना (यूहन्ना 11:1–57)

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

यूहन्ना 2:1 – 11

1. फिर तीसरे दिन गलील के काना में किसी का ब्याह था, और यीशु की माता भी वहाँ थी।
2. और यीशु और उसके चेले भी उस ब्याह में नेवते गए थे।
3. जब दाखरस घट गया, तो यीशु की माता ने उस से कहा, कि उन के पास दाखरस नहीं रहा।
4. यीशु ने उस से कहा, हे महिला मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।
5. उस की माता ने सेवकों से कहा, जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना। 6. वहाँ यहूदियों के शुद्ध करने
की रीति के अनुसार पत्थर के छः मटके धरे थे, जिनमें दो दो, तीन तीन मन समाता था।
7. यीशु ने उन से कहा, मटको में पानी भर दो उन्होंने उन्हें मुहाँमुँह भर दिया।
8. यीशु ने उन से कहा, अब निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ। 9. वे ले गए, जब भोज के प्रधान
ने वह पानी चखा, जो दाखरस बन गया था, और नहीं जानता था, कि वह कहाँ से आया है, (परन्तु जिन सेवकों ने पानी निकाला था, वे जानते थे) तो भोज के प्रधान ने दूल्हे को बुलाकर, उस से कहाँ

10. हर एक मनुष्य पहले अच्छा दाखरस देता है और जब लोग पीकर छक जाते हैं, तब मध्यम देता है; परन्तु तू ने अच्छा दाखरस अब तक रख छोड़ा है।
11. यीशु ने गलील के काना में अपना यह पहला चिन्ह दिखाकर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।

2:1

'' किसी का ब्याह था ''

गाँव में विवाह एक बड़ी सामाजिक घटना थी। कई बार समस्त जनता इसमें षामिल होती थी और यह कई दिनों तक चलता रहता था।

'' यीशु की माता भी वहाँ थी। ''

मरीयम वहाँ की तैयारी में मदद कर रही थीं। इस बात का सबूत (1) सेवकों से उनका कहना (2:5) और (2) खान पान के ऊपर उनकी चिन्ता (2:3) से मिलता है। इस काम को रिष्तेदार या मित्र करते थे।

2:3

'' उनके पास
दाखरस नहीं रहा। ''

अतिथियों को दाखरस पिलाना इब्रानी संस्कृती हैं। यह दाखरस अवष्य उत्तेजित करनेवाला था जैसे कि (1) भोज के प्रधान का बयान (9 – 10) यीषु के समय की यहूदी संस्कृती, और (3) साफ सुधरे वातावरण प्रक्रिया की कमी।

विषेश षीर्शकः दाखरस और तीव्र पेयजल।

1. बाइबलीय षब्द

क. पुराना नियम

1. *यायीन* – यह दाखरस के लिए साधारण रीति से उपयोग किया गया षब्द है, जिसका उल्लेख 141 बार है। षब्द–विषेश की उत्पत्ति के बारे में जानकारी नही है, क्योंकि यह एक इब्रानी मूल षब्द नहीं है। इस षब्द का अर्थ है उत्तेजित फलों का रस, विषेशरूप से अंगूर का रस। कुछ अनुच्छेद निम्नलिखित हैः उत्पत्ति 9:21; निर्ग. 29:40; गिनती. 15:5, 10

2. *तिरोश* – यह *''नए दाखरस''* के लिए है। वहाँ के वतावरण की विषेशता के कारण रस निकालने के 6 घण्ट के अन्दर उत्तेजित हो जाता है। उत्तेजन प्रक्रिया के लिए इस षब्द का प्रयोग होता है। कुछ अनुच्छेद निम्नलिखित हैः

व्यव्स्था. 12:17; 18:4; यषा. 62:8–9; होषै 4:11

3. *एसिस* – यह मदिरा के लिए प्रयोग करते है। (योएल. 1:5; यषा. 49:26)

4. *सेकर* – यह तीव्र पेयजल के लिए है। यहाँ इब्रानी मूल षब्द ''षराब'' या ''षराबी''का प्रयोग है। यह *यायीन* के सदृष्य है (नीति. 20:1; 31:6; यषा. 28:7)।

ख. नए नियम

1. *ओइनॉस* – *यायीन* का यूनानी षब्द।
2. *नियोस ओइनॉस (नए दाखरस)* – *तिरोश* का यूनानी षब्द (मरकूस 2:22)।
3. *ग्लूकॉस विनॉस (मीठा दाखरस)* – उत्तेजन प्रक्रिया की प्रारम्भिक अवस्था (प्रेरित. 2:13) ।

2. बाइबलीय उपयोग

क. पुराना नियम

1. दाखरस परमेष्वर का दान है (उत्.27:28; भ.सं.104:14–15; सभो.9:7;होषै. 2:8,9; योएल. 2:19,24; आमोस. 9:13; जक.10:7)।
2. दाखरस बलीदान का एक भाग है (निर्ग. 29:40; लैव्य. 23:13; गिन. 15:7,10; 28:14; व्यवस्था. 14:26; न्यायी. 9:13)।
3. दाखरस औशध के रूप में उपयोग किया गया (2षामू.16:2;नीति.3:16–17)।
4. दाखरस एक वास्तविक समस्या हो सकती है (नूह–उत्. 9:21; लूत–उत्. 19:33,35; षिमषोन–न्यायी.16:19; नाबाल–1षमू. 25:36; ऊरिय्याह–2षमू.11:13; अम्मोन–2षामू. 13:28; एलाह–1राजा. 16:9; बेनहदद–1राजा. 20:12; अधिकारी–आमोस. 6:6; स्त्रियाँ–आमोस.4) ।
5. दाखरस दुरूपयोग किया जा सकता है (नीति.20:1; 23:29–35; 31:4,5; यषा. 5:11,22; 19:14; 28:7,8; होषै. 4:11)।
6. दाखरस कुछ एक झुण्ड के लिए मना था (याजक–लैव्य. 10:9; यहेज. 44:21; नाजीर–गिन. 6; अधिकारी–नीति. 31:4,5; यषा. 56:11,12; होषै. 7:5)।
7. दाखरस अन्तिम समय षास्त्र में उपयोग किया गया (आमो. 9:13; याएल. 3:18; जक. 9:17)।

ख. अन्दर पवित्रषास्त्रीय

1. थोडा सा दाखरस मद्दगार है (एकली. 31:27–30)
2. रब्बियों की मानें तो दाखरस सब औशधों में श्रेश्ठ हैं, जहाँ इसकी कमी है वहाँ नषीली दवाईयों की अवष्यकता है (बी बी 58बी)।

ग. नए नियम

1. यीषु ने पानी को दाखरस में परिवर्तित किया (यूह. 2:1–11)।
2. यीषु ने दाखरस पीया (मत्ती.11:18,19; लूका.7:33–34; 22:17)।
3. लोगों ने आरोप लगाया कि पतरस ने पेन्तकुस्त के दिन नया दाखरस पीया (प्रेरित. 2:13)।
4. दाखरस औशध के रूप में उपयोग किया जा सकता है (मरकुस. 15:23; लूका. 10:34; 1तिमु. 5:23)।

5. अगुवे इसका दुरूपयोग करनेवाले न हो। इसका अर्थ यह नहीं कि परिपूर्ण परहेज़ करनेवाले हो (1तिमु. 3:3,8; तीतुस. 1:7; 2:3; 1पत. 4:3)।
6. दाखरस अन्तिम समय षास्त्र में उपयोग किया गया (मत्ती. 2:1; प्रकाषित. 19:9)।
7. मदोन्मत्तता निन्दा का विशय है (मत्ती. 24:49; लूका. 11:45; 21:34; 1कुरि. 5:11–13; 6:10; गला. 5:21; 1पत. 4:3; रोमि. 13:13,14)।

3. धर्मषास्त्रीय अन्तरदृश्टि

क. तर्कषास्त्रीय संघर्श

1. दाखरस परमेष्वर का दान है।
2. मतवालापन एक बड़ी समस्या है।
3. कुछ संस्कृती के विष्वासियों को अपनी स्वतंत्रता पर सुसमाचार के कारण रोक लगाना है (मत्ती. 15:1–20; मरकुस. 7:1–23; 1कुरि. 8:10; रोमि. 14:1; 15:13)

ख. दी गई सीमाओं से बाहर जाने का रूझान

1. समस्त वस्तुओं का श्रोत परमेष्वर है (सृश्टि ''बहुत अच्छे'' है, उत. 1:31)।
2. पतित मानवजाती ने परमेष्वर की ओर से दिए गए समस्त तोहफे का दुरूपयोग परमेष्वर की ओर से दी गई सीमाओं से बाहर जाकर किया ।

ग. दुरूपयोग हम में है, न कि वस्तुओं में। भौतिक सृश्टि में कोई बुराई नही है (मरकुस.7:18–23; रोमि. 14:14,20; 1कुरि. 10:23–26; 1तिमु. 4:4; तीतुस. 1:15)।

4. पहली षताब्दी के यहूदी संस्कृती तथा उत्तेजन प्रक्रिया

क. रस निकालने के तुरन्त 6 घण्टे के बाद उत्तेजन प्रक्रिया षुरू हो जाती है विषेशरूप से साफ सुधरे वातावरण के कमी में।

ख. यहूदी संस्कृती के अनुसार रस के ऊपर जब झाग आना षुरू होता है तब इस दाखरस का दषांष देना है (*मा असेरॉथ 1:7*)। इसे ''*नया दाखरस*'' या '' *मीठा दाखरस* ''कहा जाता है।

ग. एक सप्ताह के बाद प्रारम्भिक उत्तेजन प्रक्रिया पूर्ण हो जाती हैं।

घ. उत्तेजन प्रक्रिया का दूसरा चरण 40 दिन तक चलता है। इस समय के दाखरस को *''मान्य दाखरस '* कहते हैं जिसे बली वेदी पर चढ़ाते हैं *(एदुयोत्त. 6:1)*

ङ अधिक समय तक रहे हुए दाखरस को उत्तम माना जाता है, परन्तु इसे उपयोग करने से पहले छानना अवष्य है।

च. उत्तेजन प्रक्रिया में एक साल रहनेवाले दाखरस को मान्यता दी जाती है। अधिक से अधिक तीन साल तक इसे सम्भालकर रख सकते हैं। इसे पुराना दाखरस कहते है जिसे पानी के साथ मिलाना अवष्य है।

छ. प्राचीन युग नैसर्गिक उत्तेजन प्रक्रिया को रोक नही पाया।

5. अन्तिम कथन

क. आपके अनुभव, धर्मषास्त्र, बाइबल व्याख्या यीषु और पहली षताब्दी की यहूदी संस्कृती तथा मसीह संस्कृती को चोट न पहुँचाए! यह स्पश्ट है कि वे परिपूर्ण रीति से परहेज़ करनेवाले नही थे।

ख. षराब के सामूहीक सेवन को मैं बढ़ावा नही दे रहा हूँ। कईयों ने इस विशय के प्रति बाइबल के विचार को तोडमरोड कर दिया हैं।

ग. मुझे रोमियों 14:1 – 15:13 और 1 कुरी. 8 – 10 ने इस विशय के प्रति सह विष्वासियों से प्रेम और आदर के आधार पर मार्गदर्षन तथा अन्तरदृश्टि प्रदान किया है, जिसकी मदद से मैं हर एक संस्कृती में सुसमाचार फैला सकूँ। यदि बाइबल ही विष्वास और कर्म का एक मात्र श्रोत है तो हमें इस विशय के बारे में पुनः विचार करना अवष्य है।

घ. यदि हम परमेष्वर की इच्छा कहकर परिपूर्ण रीति से परहेज़ करे तो यीषु के बारे में क्या कहेंगे? और प्रतिदिन इसे उपयोग करनेवाले के विशय क्या कहेंगे (यूरॉप, इस्राएल, अरजन्टीना)?

<u>2:4</u>

<u>" हे महिला "</u>

यह आदर का षब्द सुनाई नही पडता, परन्तु यह एक इब्रानी षब्द है जिसका प्रयोग आदर दिखाने के लिए ही होता है (4:21; 8:10; 19:26; 20:15)।

एन ए एस बी, "उससे हमें क्या काम है?"
एन के जे वी "तुम्हारी चिन्ता से मुझे क्या काम है?"
एन आर एस वी " मुझे तुझ से क्या काम?"
टी इ वी "तुम मुझे न कहो कि मैं क्या करूँ"
एन जे बी "तुम्हें मुझसे क्या चाहिए?"

यह एक इब्रानी कहावत है जिसका अर्थ है तुम्हें और मुझे इससे क्या? (न्यायी. 11:12; 2षमू. 16:10; 19:22; 1राजा. 17:18; 2राजा. 3:13; 2इति. 35:21; मत्ती. 8:29; मरकूस. 1:24; 5:7; लूका. 4:34; 8:28; यूहन्ना. 2:4)। यह भी हो सकता है कि यह अपने परिवार के साथ यीषु का नया रिष्ता हो (मत्ती. 12:46; लूका. 11:27–28)।

<u>"अभी मेरा समय नहीं आया"</u>

यह अपने लक्ष्य के बारे में यीषु के स्वयं की समझ को दर्षाता है(मरकूस. 10:45)। षब्द "समय" को यूहन्ना विभिन्न तरीके से प्रयोग करता हैः (1) समय के लिए (1:39; 4:6, 52, 53; 11:9; 16:21; 19:14, 27); (2) अन्तिम समय के लिए (4:21, 23; 5:25, 28); यीषु के अन्तिम दिनों के लिए (गिरफ्तारी, मुकद्दमा, मृत्यु 2:4; 7:30; 8:20; 12:23, 27; 13:1; 16:32; 17:1)।

<u>*2:5*</u>

<u>*" जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना। "*</u>

इस अवसर में अपनी तरफ से यीषु के उत्तर और काम को मरियम नही समझ पाईं।

<u>*2:6*</u>

एन ए एस बी, "यहूदियों के शुद्ध करने की संस्कृती के लिए "
एन के जे वी " शुद्ध करने की रीति के अनुसार "
एन आर एस वी "यहूदियों के शुद्ध करने की रीति के अनुसार "
टी इ वी "यहूदियों के पास शुद्ध करने की रीति का नियम है "
एन जे बी "यहूदियों के बीच स्नान एक संस्कृती है "

इन मटकों का पानी, पाँव, हाथ, बरतन, आदि धोने के लिए उपयोग करते थे। यूहन्ना ने इस बात को अन्यजातियों की समझ के लिए लिखा है।

<u>*2:6–7*</u>

<u>*" पत्थर के छः मटके "*</u>

इस चिन्ह के दो लक्ष्य हैः (1) दम्पतियों की मदद करना; परन्तु (2) आखिर यह चिन्ह दर्षाता है कि यीषु यहूदी धर्म का पूरक है। इस अन्तिम कथन का कारण ये हो सकता है : (क) संख्या '6' मनुश्य के प्रयास को दर्षाती है; (ख) मटके के घेरे तक उसे भरने का यीषु के आदेष का भी अर्थ है, केवल दाखरस की पूर्ति करना ही नही; (ग) प्रादेषिक विवाह के लिए इतनी अधिक मात्रा में दाखरस की पूर्ति असंभव थी; और (घ) दाखरस नए युग की बहुतायत का चिन्ह है (यिर्म. 31:12; होषै. 2:22; 14:7; योएल. 3:18; आमोस. 9:12–14)।

<u>*" तीन तीन मन समाता था। "*</u>

माप के लिए इब्रानी षब्द *बाथ* का प्रयोग किया गया है। यीषु के दिनों में 3 प्रकार के *बाथ* उपयोग में थे इसलिए सही माप कहना मुष्किल है, परन्तु इस चमत्कार में अत्याधिक दाखरस हुआ है!

<u>*2:8*</u>

एन ए एस बी, "प्रधान"
एन के जे वी "भोज के प्रधान"
एन आर एस वी "प्रधान भण्डारी"

टी इ वी **"भोज का जिम्मेवार"**
एन जे बी **"भोज का अध्यक्ष"**

यह व्यक्ति (1) माननीय अतिथि जो इस कार्यक्रम का जिम्मेवार या (2) अतिथियों की पहुनाई करनेवाले गुलामों का प्रधान हो सकता है।

2:10

सामान्य रीति से उत्तम दाखरस पहले परोसते हैं। और जब लोग मतवाले हो जाते है तब मध्यम देते हैं । परन्तु उत्तम अन्तिम में आया! यह यहूदी धर्म की पुरानी वाचा और यीषु में नई वाचा के बीच के विरोधाभास को दर्षाता है (इब्रानियों का पत्री)। यीषु के द्वारा मन्दिर का षुद्धिकरण(2:13–25) इस सच्चाई को प्रकाषित करता हैं।

2:11

" अपना यह पहला चिन्ह"

यूहन्ना रचित सुसमाचार 7 चिन्हों तथा उनकी व्याख्या के इर्द–गिर्द बनाया गया। यह प्रथम चिन्ह है।

" अपनी महिमा प्रगट की
और उसके चेलों ने
उस पर विश्वास किया।। "

इस चमत्कार का लक्ष्य यीषु की महिमा (1:14 का नोट देखें) था। इस चमत्कार ने, दूसरों के समान, षिश्यों पर सर्वप्रथम प्रभाव डाला! यह उनके प्रारम्भिक विष्वास का विशय नही बताता पर यीषु के व्यक्तित्व और काम के प्रति उनकी समझ को प्रगट करता है। हमें नही पता कि इस चमत्कार के विशय में अतिथि जानते थे कि नही।

2:12

12 इस के बाद वह और उस की माता और उसके भाई और उसके चेले कफरनहूम को गए और वहाँ कुछ दिन रहे।

2:12

" कफरनहूम "

नसरत के अविष्वास के कारण (लूका. 4:16–30) कफरनहूम यीषु के गलील की सेवकोई का केन्द्र बन गए (मत्ती. 4:13; मरकूस. 1:21; 2:1; लूका. 4:23, 31; यूहन्ना. 2:12; 4:46,47)।

काना के चमत्कार के आधार पर यह यीषु के अपने परिवार की सेवकोई है।

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 2:13 – 25

क. नए नियम के विद्वानों के बीच तर्क– वितर्क जारी है कि कितने बार यीषु ने मन्दिर षुद्ध किया । यूहन्ना षुद्धिकरण को यीषु की सेवकोई के आरम्भ में उल्लेख करता है, जबकि समानन्तर सुसमाचार में (मत्ती. 21:12; मरकूस. 11:15; लूका.19:45) इसे यीषु के अन्तिम सप्ताह के कार्यक्रम में षामिल किया है। इन दोनों का भिन्नता को देखकर लगता है कि मन्दिर का षुद्धिकरण एक बार नही, दो बार है।

हलाँकि यह पक्का है कि यूहन्ना ने धर्मषास्त्रीय उद्देष्य से यीषु के कार्यों का ढाँचा बनाया है। पवित्रात्मा की प्रेरणा के अधीन प्रत्येक लेखक को स्वतंत्रता है कि वह यीषु के कार्य तथा षिक्षा को संक्षिप्त करे, व्यवस्थित करे, और चुनाव करे। मैं विष्वास नही करता हूँ कि उन्हें यीषु के षब्दों को तोड़–मरोड़ करने, घटनाओं को बनाने की स्वतंत्रता थी। यह याद रखना है कि सुसमाचार आधुनिक जीवनी नही,परन्तु सुसमाचार पर्चा हैं। सुसमाचार कालानुक्रमिक नही है,न वहाँ यीषु के मूँह से निकले हर षब्द का उल्लेख है। इसका अर्थ यह नही है कि वे त्रुटियुक्त है।

ख. यूहन्ना के धर्मषास्त्रीय उद्देष्य में मन्दिर का षुद्धिकरण यहूदी राश्ट्र के प्रति यीषु के कार्य में प्रथम होना ठीक बैठता हैं। इस बात को अध्याय 3 में नीकुदेमुस (कट्टर यहूदी धर्म) के साथ यीषु का वार्तालाप में स्पश्ट दिखाई पड़ता है। हलाँकि अध्याय 4 में यीषु कई दूसरे झुण्ड के साथ भी सम्पर्क करना, सामरी स्त्री के साथ, आरम्भ करते हैं।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

2:13 – 22

13. यहूदियों का फसह का पर्व निकट था और यीशु यरूशलेम को गया। 14. और उस ने मन्दिर में बैल और भेड़ और कबूतर के बेचनेवालों ओर सर्राफों को बैठे हुए पाया।
15. और रस्सियों का कोड़ा बनाकर, सब भेड़ों और बैलों को मन्दिर से निकाल दिया, और सर्राफों के पैसे बिखेर दिए, और पीढ़ों को उलट दिया। 16. और कबूतर बेचनेवालों से कहा; इन्हें यहाँ से ले जाओः मेरे पिता के भवन को व्योपार का घर मत बनाओ।
17. तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, 'तेरे घर की धुन मुझे खा जाएगी'।
18. इस पर यहूदियों ने उस से कहा, तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?
19. यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि इस मन्दिर को ढ़ा दो, और मैं उसे तीन दिन में खड़ा कर दूंगा।
20. यहूदियों ने कहा; इस मन्दिर के बनाने में छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?
21. परन्तु उस ने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था।
22. सो जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया, कि उस ने यह कहा था; और उन्हों ने पवित्र शास्त्र और उस वचन की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की।

2:13

" फसह का पर्व "

इस वार्शिक पर्व का उल्लेख निर्ग. 120 तथा व्यवस्था. 16:1–6 में है। केवल यही एक मात्र पर्व है जिसके द्वारा हम यीषु की सेवा के काल को माप सकते है। इसके आधार पर समानन्तर सुसमाचार यीषु की सेवा काल को एक साल में मापता है। परन्तु यूहन्ना में तीन फसह के पर्व का उल्लेख हैः (1) 2:13,23; (2) 6:4; और (3) 11:55; 12:1; 13:1; 18:28,39; 19:14। 5:1 चौथा फसह का पर्व हो सकता है। हमें नही मालूम है कि कितने साल तक यीषु की सार्वजनिक सेवकोई चलती रही, यूहन्ना रचित सुसमाचार के आधाार पर यह कम से कम तीन साल तक थी अथवा 4 या 5 साल तक चलती रही। यूहन्ना ने अपने सुसमाचार का ढ़ाँचा यहूदियों के पर्व को केन्द्र बनाकर किया (फसह, मिलापवाला तम्बू, स्थापन पर्व)।

'' और यीशु
यरूशलेम को गया। ''

यहूदी हमेषा यरूशलेम के बारे में कहते हैं तो धर्मषास्त्रीय समझ से कहते है न कि भौगोलिक समझ से।

2:14

'' मन्दिर में ''

हेरोद (जिसने 37 ई.पू. से पलिस्तीन पर षासन किया) का मन्दिर 7 भाग में बाँटा गया था। आंगन अन्यजातियों के लिए था जहाँ व्योपारियों ने अपनी दूकान बनाई थी कि जो बली चढ़ाना चाहते हैं वे इनसे सामान मोल ले।

'' सर्राफों ''

इन लोगो का वहाँ होने के पीछे 2 कारण बताए जाते हैं (1) मन्दिर में केवल षेकेल ही स्वीकार करते थे। यहूदी षेकेल का सिक्का बनाने में काफी समय लग जाता था इसलिए यीषु के दिनों में सोर से आनेवाले षेकेल को ही मान्यता थी। या तो (2) रोमी सम्राट के तस्वीरवाले सिक्के को मन्दिर मे लाने की अनुमती नही थी। इसलिए सिक्का के क्रय–विक्रय में अवष्य षुल्क लगता था।

'' भेड़ों और बैलों और कबूतर ''

काफी दूर से आनेवाले लोगों को बली चढ़ाने योग्य जानवरों को खरीदना पड़ता था। हलाँकि इन दूकानों का नियंत्रण महायाजक के परिवार के पास था, वे जानवरों को असाधारण रूप से महँगा देते थे। अगर कोई जानवर को लाते भी हो तो याजक उसको अयोग्य कहते थे। इसलिए उन्हें मजबूरन यहाँ से जानवरों को खरीदना पड़ता था।

2:15

'' रस्सियों का कोड़ा बनाकर,
उन्हें मन्दिर से निकाल दिया,''

इस अवसर पर यीषु का क्रोध स्पश्टरूप से देख सकते है। क्रोध अपने आप में पाप नही है। षायद इफि.4:26 इस बात से संबन्धित है।

2:16

''इन्हें यहाँ से ले जाओ''

यह एक आज्ञा है, अर्थात् इन्हें बाहर करो।

'' मेरे पिता के भवन को
व्योपार का घर मत बनाओ। ''

अर्थात् जो काम अब हो रहा है उसे बन्द करो। इस घटना के साथ समानान्तर सुसमाचार यषा. 56:7; यिर्मा. 7:11 का उद्धृत करता है। हलाँकि यूहन्ना रचित सुसमाचार में पुसाने नियम की भविश्यद्वाणी का उल्लेख नही है। यह षायद ज़क. 14:21 की मसीह भविश्यद्वाणी का संकेत है।

2:17

'' उसके चेलों को स्मरण आया ''

इस वाक्य का अर्थ है कि यीषु की सेवकोई और पवित्रात्मा की मदद से बाद में ही वे यीषु के काम की आत्मिक सच्चाई को पहचान पाए (2:22; 12:16; 14:26)।

'' कि लिखा है ''

यह पुराने नियम की पवित्रात्मा की प्रेरणा को ठोस सबूत देने की अनोखा तरीका है। यह भ.सं. 69:9 का उद्धृत हैं। यह भजन, भ.सं. 22के समान यीषु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से संबन्धित है। यीषु के , परमेष्वर तथा उनको सच्ची आराधना के प्रति जलन उनको मृत्यु की ओर ले जाएगी जो कि पिता की इच्छा है (यषा. 53:4,10; लूका. 22:22; प्रेरित. 2:23; 3:18; 4:28)।

2:18

एन ए एस बी, '' हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है कि तू किस अधिकार से यह करता है? ''
एन के जे वी '' तू जो यह करता है तो हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?''
एन आर एस वी ''*इसे करने के लिए हमें कौन सा चिन्ह दिखाता है?''
टी इ वी '' *इसे करने के लिए तुम्हें अधिकार है तो हमें चिन्ह दिखाकर बताओ ?''
एन जे बी ''*तुम्हें इस प्रकार करने के लिए कौनसा चिन्ह हमें दिखाओगे?''

यह यीषु के प्रति यहूदियों का मुख्य प्रष्न था। फरीसियों ने कहा कि उसे षैतान से सामर्थ प्राप्त है (8:48,49,52; 10:20)। उनका विचार था कि मसीह कुछ अलग तरीके से कुछ विषेश कामो को करेंगे। जब यीषु ने उस प्रकार काम नही किया तो वे आष्चर्यचकित हो गए (मरकूस. 11:28; लूका. 20:2) ।

2:19

'' इस मन्दिर को ढ़ा दो,
और मैं उसे तीन दिन में
खड़ा कर दूंगा। ''

मन्दिर के लिए आयत 14 और 15 में प्रयोग किए हुए यूनानी षब्द (*हीय्रॉन*) का अर्थ है मन्दिर का क्षेत्र, पर आयत 19,20 और 21 में प्रयोग किए हुए यूनानी षब्द (*नावॉस*) का अर्थ है मन्दिर का अतिपवित्र स्थान। इस आयत के ऊपर भी काफी तर्क–वितर्क है। मत्ती. 26:60; मरकूस. 14:57–59; प्रेरित. 6:14 स्पश्ट रूप से यीषु के क्रूस पर चढ़ाए जाने तथा पुनरूत्थान को दर्षाते है। हलाँकि इस संदर्भ में षायद 70 ई0 में तीतुस के द्वारा मन्दिर को नाष किए जाने की ओर दर्षाता है (मत्ती. 24:1,2)। ये दोनों वाक्य उस सच्चाई की ओर इषारा करते हैं कि यीषु अपने ऊपर केन्द्रित एक आत्मिक आराधना की स्थापना कर रहे हैं न कि प्राचीन यहूदी धर्म पर आधाारित (4:21–24)।

2:20

" इस मन्दिर के बनाने में
छियालीस वर्ष लगे हैं,"

दोबारा बनाए हुए मन्दिर का (ज़रूबाबेल के समय के) विस्तार हेरोद महान ने किया । जॉसीफस कहते हैं इस निर्माण का आरम्भ 20 या 19 ई.पूर्व में हुआ तथा 64 ई0 तक यह चलता रहा। यह घटना 27 या 28 ई0 में हो रही है। यह मन्दिर यहूदियों के लिए आषा का कारणा बन गया (यिर्मा. 7)।

2:21

" परन्तु उस ने
अपनी देह के मन्दिर
के विषय में कहा था। "

ज्ब यीषु ने यह बात कही उनके षिश्यों ने इस बात को नही समझा।
यीषु जानते थे कि वो किसलिए आए। ऐसा लगता है कि 3 उद्देष्य हैः (1) परमेष्वर को प्रगट करने के लिए; (2) सही मनुश्यत्व को दर्षाने; और (3) कईयों के छुडौती के लिए अपने प्राण देना। यहाँ पर तीसरे उद्देष्य को प्रगट कर रहे हैं (मरकूस. 10:45; यूहन्ना. 12:23,27; 13: 1–3; 17:1)।

2:22

" उसके चेलों को स्मरण आया,
कि उस ने यह कहा था; "

कई बार यीषु की बातें षिश्यों के लिए थीं पर वे उसे उस समय समझ नहीं पाए।

2:23 – 25

23. जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था, तो बहुतों ने उन चिन्हों को जो वह दिखाता था देखकर उसके नाम पर विश्वास किया।
24. परन्तु यीशु ने अपने आप को उन के भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब को जानता था।
25. और उसे प्रयोजन न था, कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप जानता था, कि मनुष्य के मन में क्या है?

<u>2:23</u>

" उसके नाम पर विश्वास किया। "

विश्वास के लिए प्रयोग किया गया यूनानी षब्द *(पिस्टीयो)* का अर्थ है " विश्वास ", "प्रतीति ", "भरोसा"। यूहन्ना रचित सुसमाचार में *संज्ञा* के प्रयोग की बजाय *क्रिया* के प्रयोग है। यीषु नासरी को मसीह के रूप में वहाँ पर एकत्रित भीड़ के समर्पण का कोई पक्का भरोसा नही कर सकता। ऊपरी विश्वास के प्रयोग यूहन्ना 8:31–59; प्ररित. 8:13, 18–24 में पाते है। सही बाइबलीय विष्वास प्रारम्भिक प्रत्युत्तर से बढ़कर है। इसमें षिश्यता भी षामिल है (मत्ती. 13:20–22, 31–32)।
यीषु के चिन्हों को देखकर ऊपरी विश्वास रखनेवाले आकर्शित हुए (2:11; 7:31)। उनका उद्देष्य यीषु के काम तथा व्यक्तित्व को मापना था। इस पर ध्यान देना अवष्य है कि यीषु के सामर्थी कामों में विष्वास पर्याप्त नही था परन्तु दृढ़ विष्वास था (4:38; 20:29)। विष्वास का मूल यीषु ही होना है (20: 30,31)। आष्चर्य कर्म परमेष्वर का एक आकस्मिक चिन्ह नही है (मत्ती. 24:24; प्रका. 13:13; 16:14; 19:20)। यीषु के कामो का उद्देष्य लोगों के अन्दर उसके प्रति विष्वास पैदा करना था (2:23; 6:14; 7:31; 10:42); कई बार ऐसा हुआ कि लोगों ने अवष्य चिन्ह देखे पर विष्वास नही किया (6:27; 11:47; 12:37)।

<u>विषेश षीर्शक : यूहन्ना द्वारा क्रिया " विष्वास " का प्रयोग।</u>

यूहन्ना प्राथमिक रूप से विष्वास का प्रयोग विभक्ति के साथ करता है।

1. *एइस* अर्थात् "पर"। यह यीषु पर विषवस या भरोसा रखने को दर्षाता हैं

- **क. उसके नाम पर (1:12; 2:23; 3:18; 1यूहन्ना. 5:13)।**
- **ख. उस पर (2:11; 3:15, 18; 4:39; 6:40; 7:5,31,39,48; 8:30; 9:36; 10:42; 11:45,48; 12:37,42)।**
- **ग. मुझ पर (6:35; 7:38; 11:25,26; 12:44,46; 14:1,12; 16:9; 17:20)।**
- घ. उस पर, जिसे उस ने भेजा है, **(6:28–29)।**
- **ङ पुत्र पर (3:36; 9:35; 1यूहन्ना. 5:10)।**
- **च. यीषु पर (12:11)।**
- **छ. ज्योति पर (12:36)।**
- **ज. परमेष्वर पर (12:44; 14:1)।**

2. *एन* अर्थात् "में" जैसे यूहन्ना 3:15 में है (मरकूस. 1:15)।

3. बिना विभक्ति के (1यूहन्ना. 3:23; 4:50; 5:10)।

4. *होटि* अर्थात् "उसे विष्वास करो"

- **क. यीषु परमेष्वर का पवित्र जन (6:69)**
- **ख. यीषु "मैं हूँ" (8:24)।**
- **ग. यीषु पिता में और पिता यीषु में हैं (10:38)।**
- **घ. यीषु मसीह है (11:27; 20:31)।**
- **ङ यीषु परमेष्वर का पुत्र है (11:27; 20:31)।**
- **च. यीषु पिता की ओर से भेजे गए हैं (11:42; 17:8,21)।**
- **छ. यीषु पिता के साथ एक है (14:10–11)।**

ज. यीशु पिता से आए हैं (16:27,30)।
झ. यीशु पिता की वाचा के नाम ''मैं हूँ'' से पहचाने गए (8:24; 13:19)।

बाइबलीय विष्वास व्यक्ति और सन्देष दोनों है! यह आज्ञाकारिता, प्रेम और सहनषीलता से प्रगट होता है।

2:24–25

यह यूनानी में एक ही वाक्य है। इस प्रसंग में ''भरोसा'' षब्द यीषु के नज़रिए और काम को बताने के लिए प्रयोग किया गया। यह वाक्य इस बात का प्रमाण भी देता है कि यीषु मनुश्य के हृदय की बुराई के बारे में जानते थे। अध्याय 3 में वर्णित नीकुदेमुस का जीवन स्पश्ट करता है कि धार्मिक स्वयं का प्रयास, ज्ञान, वंषावली और पदवी से परमेष्वर तक पहुँच नही सकते। धार्मिकता केवल यीषु पर विष्वास करने के द्वारा ही आती है (रोमियों. 1:16,17; 4:)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. यीषु ने क्यों पानी को दाखरस बनाया ? यह क्या दर्षाता है ?
2. यीषु के समय के विवाह संस्कृती का वर्णन करो।
3. क्या आप हेरोद के द्वारा बनाए हुए मन्दिर का नक्षा बना सकते हैं ?
4. क्यों समानान्तर सुसमाचार में मन्दिर के प्रारम्भिक षुद्धिकरण के बारे में नही लिखा ?
5. क्या यीषु ने हेरोद के मन्दिर के नाष के बारे में भविश्यद्वाणी की थी ?
6.'' विश्वास '', ''प्रतीति '', ''भरोसा'' के लिए प्रयोग किए गए यूनानी षब्द की परिभाशा तथा विवरण दीजिए।

यूहन्ना – 3

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4] यीशु और नीकुदेमुस	एन के जे वी नया जन्म	एन आर एस वी यीशु और अधिकृत यहूदी धर्म	टी इ वी यीशु और नीकुदेमुस	जे बी नीकुदेमुस के साथ वार्तालाप
3:1 – 15	3:1 – 21	3:1 – 10	3:1 – 2	3:1 – 8
			3:3	
			3:4	
			3:5 –8	
			3:9	3:9 – 21
			3:10 – 13	
		3:11 – 15		
			3:14 – 17	
3:16 – 21		3:16		
		3:17 – 21		
			3:18 – 21	
यीशु और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु को ऊँचा उठाता है।	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के आगे की गवाही	यीशु और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला	यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला पहली बार गवाही दे रहा है
3:22 – 30	3:22 – 36	3:22 – 24	3:22 – 24	3:22 – 24

	3:25 — 30	3:25 — 26	3:25 — 36
		3:26 — 30	
जो स्वर्ग से आता है,		जो स्वर्ग से आता है,	
3:31 — 36	3:31 — 36	3:31 — 36	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

3:1 — 3

1. फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम एक मनुष्य था, जो यहूदियों का सरदार था।
2. उस ने रात को यीशु के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की आरे से गुरू हो कर अया है; क्योंकि कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता।
3. यीशु ने उस को उत्तर दिया; कि मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।

3:1

'' फरीसियों ''

इस राजनैतीक/धार्मिक झुण्ड का उत्भव मकाबियन समय से है। उनके नाम का अर्थ है ''अलग किया गया''। वे *तालमूद* के द्वारा परिभाशित की गई व्यवस्था का पालन करने में तत्पर रहते थे। देखिए नोट 1:24।

'' नीकुदेमुस ''

एक यहूदी का यूनानी नाम (जैसे अन्द्रियास तथा फिलिपुस के है 1:40, 43) पलिस्तीन में होना आष्चर्य की बात है, जिसका अर्थ है ''लोगो का विजेता'' (7:50; 19:39)।

एन ए एस बी, एन के जे वी ''यहूदियो का षासक''
एन आर एस वी, एन जे बी ''यहूदियों का सरदार ''
टी इ वी ''यहूदी अगुवे''

यह यरूषलेम के 70 सदस्यीय सन्हद्रीन के सदस्यों का अधिकृत **षब्द था। इनके अधिकार क्षेत्र को रोमियो ने अपने वष में रखा था, तौभी** यहूदियों के बीच में इनका बडा प्रभाव था।

पहली षताब्दी के कट्टर यहूदी धर्म के प्रतिनिधी के रूप में यूहन्ना ने षायद नीकुदेमुस को दर्षाया। जिन्होंने सोचा कि वे आत्मिक मुकाम तक पहूँच गए उन से पुनः आरम्भ करने को कहा गया। यीषु पर विष्वास, न नियमों के लिए निश्ठा (दैवीय नियम), या न जातीय पृश्ठभूमि, परमेष्वर के राज्य में एक का नागरीकता को निर्धारित करती है। मसीह में परमेष्वर का दान, न निश्कपटता, न कट्टर धार्मिकता, है दैवीय स्वीकृति का द्वार। नीकुदेमुस का जानकारी, यीषु परमेष्वर की ओर से भेजा हुआ गुरू है, हलाँकि यह सत्य है, मात्र काफी नही है। यीषु का मसीह के रूप में व्यक्तिगत भरोसा, परिपूर्ण भरोसा, महानतम भरोसा ही पतित मानवजाती की एकमात्र आषा हैं!

3:2

'' रात को ''

रब्बियों का कहना है व्यवस्था को सीखने का अच्छा समय 'रात' है, क्योंकि उस समय बाधा डालनेवाला कोई काम नही होता। यह भी हो सकता है कि उसने यीषु के साथ दूसरो के सामने दिखना नही चाहा, इसलिए वह रात को यीषु के पास आया। कुछ ऐसे कहते है यह नीकुदेमुस का आत्मा के अन्धकार को दर्षाता है।

'' हे रब्बी,''

अर्थात् ''गुरू''। इस बात ने यहूदी अगूवों को काफी परेषान किया कि यीषु किसी रब्बियों की धर्मषास्त्रीय पाठषाला में षामिल नहीं हैं।

'' तू परमेश्वर की आरे से अया है;''

इस वाक्यांष को षरू में महत्व देने के लिए प्रयोग किया है। यह षायद व्यवस्था. 18:15,18 के भविश्यद्वाणी की ओर इषारा कर रहा है। नीकुदेमुस ने यीषु के काम तथा कथन की षक्ति को अवष्य पहचान लिया, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह परमेष्वर के साथ सही संबन्ध में है।

''यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, ''

यह एक तीसरे दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् वास्तविक।

3:3,5,11

" सच सच "

यह षाब्दिक रूप से *"आमीन, आमीन"* है। यह विष्वास के लिए पुराने नियम का षब्द है। इसका मूल *"दृढ़ रहना", "पक्का होना"* है। यीषु ने कुछ विषेश वाक्यों को कहने के लिए प्रस्तावना के रूप में प्रयोग किया है। इसे कुछ भरोसेमन्द वाक्यों को पक्का करने के लिए प्रयोग किया। इस आमीन षब्द को दोहराया जाना यीषु और नीकुदेमुस के बीच की वार्तालाप को प्रगट करता है।

3:3

"यदि कोई"

जैसे 3:2 में है यह एक तीसरे दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् वास्तविक।

***एन ए एस बी, एन के जे वी , टी इ वी* "नया जन्म"**
***एन आर एस वी ,एन जे बी* "ऊपरी जन्म"**

इस षब्द *(अनॉथेन)* का अर्थ हो सकता है (1) "षारीरिक रूप से दोबरा जन्म लेना" (2) "आरम्भ से जन्मा हुआ" (प्ररित. 26:5) या (3) "ऊपर से जन्म लेना", तीसरा इस प्रसंग में ठीक बैठता है। यह षायद दो अर्थ देनेवाले षब्दों के लिए यूहन्ना का **एक ओर उदाहरण है, तथा ये दोनों सही भी हैं (बाउर, एरन्टिट, गेनग्रिच एण्ड डानकर *ए लेक्सिकॉन ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट*** पृश्ठ. 77**)। आयत 4 से** नीकुदेमुस **को समझ में आया कि यह एक मात्र विकल्प है। जब यूहन्ना और पतरस (1 पत. 1:23) उद्धार के लिए यही प्रसिद्ध रूपक का प्रयोग करते है तब पौलूस लेपालकपन का प्रयोग करते है । ध्यान जन्म में पिता के काम में है। उद्धार परमेष्वर का एक तोहफा और काम है (1:12713)।**

" देख नहीं सकता। "

आयत 5 "प्रवेष नहीं कर सकता" के सदृष्य में है यह कहावत सा षब्द समूह।

" परमेश्वर का राज्य "

यूहन्ना में केवल दो बार इस षब्दसमूह का प्रयोग है (3:5)। समानान्तर सुसमाचार में यह कुंजी षब्दसमूह है। यीषु के आरम्भिक तथा आखरी प्रचारों, अधिकतर दृश्टान्तो में उन्होंने इस षब्दसमूह का उपयोग किया। अब मनुश्य के हृदयों में परमेष्वर के अधिकार क्षेत्र को दर्षाता है। यह चौकानेवाली बात है कि केवल दो ही बार यूहन्ना ने इसका प्रयोग किया (**यीषु के** दृश्टान्तो में इसका प्रयोग कभी भी यूहन्ना ने नहीं किया।)। यूहन्ना में कुंजी षब्दसमूह "अनन्त जीवन है"।

यीषु की षिक्षा के अन्तिम समय षास्त्र से यह षब्दसमूह संबन्ध रखता है। यह यहूदियों के धर्मषास्त्रीय असत्याभास '' है पर अब नही '' विचारधारा से संबन्ध रखता है जिसमें वर्तमान बुरे युग और आनेवाले धार्मिक युग, जिसका प्रारम्भ मसीह करेंगे, वर्णन है। वे इस बात की प्रतीक्षा में थे कि मसीह एक ही बार आत्मा से परिपूर्ण होकर एक फौज के सरदार के समान आएंगे **(जैसे पुराने नियम के न्यायियों के समान)। यीषु के दो आगमन इन दोनों युग के बीच में अन्दराल लाए। बेतलहेम में देहधारण के द्वारा** परमेश्वर का राज्य मनुश्य के इतिहास में उतर आया। हलॉकि यीषु का आगमन प्रका. 19 के विजयी फौज के सरदार के समान **नहीं परन्तु दुःखभोगी सेवक के समान (यषा. 53) और नम्र अगुवे के समान हुआ (ज़क. 9:9)। इसलिए** परमेश्वर के राज्य का प्रारम्भ हुआ **(मत्ती. 3:2; 4:17; 10:7; 11:12; 12:28; मरकूस. 1:15; लूका.9:9,11; 11:20; 21:31,32) परन्तु पूरा नहीं हुआ (मत्ती. 6:10; 16:28; 26: 64)।**

विष्वासी लोग इन दो युगों के संघर्श के बीच में रहते हैं। उनका पुनरूत्थित जीवन है, परन्तु वे षारीरिक रूप से मर रहे हैं वे पाप के दासत्व से मुक्त है परन्तु वे पाप करते हैं। वे अन्तिम समय षास्त्र के '' है पर अब नही '' **संघर्श में जीवन बिता रहे हैं! इस विशय के बारे में फ्रांक स्टाग के न्यू टेस्टमेन्ट थियॅालजी में इस प्रकार लिखा गया है**

''यूहन्ना रचित सुसमाचार एक भविश्य आगमन के विशय में जोर देता है **(14:3,18—28; 16:16,22) तथा यह अन्तिम दिनों के पुनरूत्थान और आखरी न्याय के बारे में विवरण करता है (5:28; 6:39,44,54; 11:24; 12:48); फिर भी इस चौथे सुसमाचार में अनन्त जीवन, न्याय, तथा पुनरूत्थान वास्तविक है (3:18; 4:23; 5:25; 6:54; 11:23; 12:28,31; 13:31; 14:17; 17:26)''**(पृश्ठ. 311)**।**

3:4 — 8

4.नीकुदेमुस ने उस से कहा, मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो क्योंकर जन्म ले सकता है?
5. यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूँ; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।
6. क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।
7. अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा; कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।
8. हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।

3:5

'' जब तक कोई मनुष्य
जल और आत्मा से न जन्मे तो ''

यह एक तीसरे दर्जे का षर्तीय वाक्य है। वहाँ पर एक स्पश्ट विरोधाभास है **(1) षारीरिक बनाम आत्मिक; (2) भौमिक बनाम स्वर्गीय। इस** विरोधाभास को हम आयत 6 में पाते हैं। ''पानी'' के अर्थ के प्रति कुछ विचार तत्व निम्नलिखित हैः **(1) रब्बियों इसे पुरूश के वीर्य के लिए प्रयोग किया है; (2) षिषु के जन्म के समय के पानी; (3)** यूहन्ना के बपतिस्मा मनफिराव को दर्षाता है **(1:26; 3:23); (4) पुराने नियम की पृश्ठभूमि के आधार पर यह आत्मा का धार्मिक छिड़काव (5) मसीह** बपतिस्मा **(हलॅाकि** नीकुदेमुस **इसे इस प्रकार नहीं समझा)। इस प्रसंग में** विचार तत्व 3 — यूहन्ना का बपतिस्मा और मसीह के द्वारा पवित्रात्मा से बपतिस्मा के बारे में यूहन्ना का कथन ठीक लगता है। **इस प्रसंग में जन्म एक रूपक मात्र ही है, इसलिए** विचार तत्व 1 गलत है। **हलॅाकि** नीकुदेमुस **यीषु के कथन को मसीह** बपतिस्मा **के रूप में नही समझा होंगा, यीषु के ऐतिहासिक षब्दों में अपना** धर्मषास्त्र जोड़ना **प्रेरित यूहन्ना की षैली है (3:14—21)।** विचार तत्व 2 यूहन्ना के दोहरेपन से मेलखाता है जैसे

कि ऊपर और नीचे, **भौमिक** और **स्वर्गीय। परिभाशा देने से पहले यह जानना अवष्य है कि वे आपस में मेलखाते (** विचार तत्व 4) **है या विरोध में हैं (** विचार तत्व 1 या 2)**।**

3:6

यह दोहरापन **है जो** यूहन्ना रचित सुसमाचार में साधारण रीति से पाया जाता है **(3:11)।**

3:7

" तुझ ... तुम्हें "

पहला एकवचन है जो नीकुदेमुस **की ओर संकेत करता है, दूसरा बहुवचन है जो समस्त मानवजाती की ओर संकेत करता है। हो सकता है कोई इसे यहूदी रिवाज़ के आधार पर व्याख्या करे (4:12; 8:53) यूहन्ना पहली षताब्दी के अन्त में लिखने के कारण** नॉस्टिक वाद तथा यहूदी जातीय घमंड के सामना करता है।

3:8

इब्रानी **(अरामिक) षब्द** *(रूहा)* **तथा यूनानी षब्द** *(न्यूमा)* **अर्थ है** *"हवा", "आत्मा"***। मुख्य बात यह है कि हवा स्वतंत्र है ठीक वैसे ही आत्मा भी। कोई हवा को देख नहीं सकता ठीक वैसे ही आत्मा भी। मनुश्य का उद्धार उसके वष में नही है पर आत्मा के वष में है(यहेज. 37)। हो सकता है आयतें 5—7 इसी सच्चाई को दोहरा रही हैं। उद्धार पवित्रात्मा के काम (6:44, 65) और मनुश्य के विष्वास प्रत्युत्तर का संयोजन है (1:12; 3:16,18)।** यूहन्ना रचित सुसमाचार अनोखी रीति से पवित्रात्मा के व्यक्तित्व और काम में केन्द्रित हैं **(14:17,25—26; 16:7—15)। वह नए युग को** पवित्रात्मा के युग के रूप में देखते हैं।

3:9 — 15

9. नीकुदेमुस ने उस को उत्तर दिया; कि ये बातें क्योंकर हो सकती हैं?
10. यह सुनकर यीशु ने उस से कहा; तू इस्राएलियों का गुरू हो कर भी क्या इन बातों को नहीं समझता।
11. मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि हम जो जानते हैं, वह कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उस की गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते।
12. जब मैं ने तुम से पृथ्वी की बातें कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें कहूँ, तो फिर क्योंकर प्रतीति करोगे?
13. और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वहीं जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।
14. और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाए।
15. ताकि जो कोई विश्वास करे उस में अनन्त जीवन पाए।।

3:9—10

नीकुदेमुस **यीषु के रूपकात्मक षब्द को (1) अन्यजातियों के यहूदी बपतिस्मा तथा (2)** यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के प्रचार की ज्योति में समझा होंगा।
यह मानुश्यिक ज्ञान की मूर्खता को दर्षाता है। नीकुदेमुस के समान, यहूदियों का षासक, एक व्यक्ति अपनी बलबूते पर आत्मिक बातों को नही समझ पाया। नॉस्टिक झूठी षिक्षा, ज्ञान के द्वारा उद्धार प्राप्त कर सकता है, कि विरोध करने के लिए इस सुसमाचार की रचना हुई।

3:11

" हम जो जानते हैं,
वह कहते हैं,"

ये सर्वनाम (बहुवचन) यीषु और प्रेरित यूहन्ना की ओर इषारा करता है (3:11) या यीषु और पिता की ओर इषारा करता है (3:12), दूसरा इस प्रसंग में ठीक बैठता है।

"तुम हमारी गवाही ग्रहण नहीं करते"

धर्मषास्त्रीय तरीके से यूहन्ना कई बार षब्द स्वीकारना/ ग्रहण करना ***(लम्बानो)*** का प्रयोग करता है।

1. **यीषु को** ग्रहण करने में
   - **क. नकारात्मक रूप से (1:11; 3:32; 5:47)**
   - **ख. सकारात्मक रूप से (1:12; 3:11,33: 5:43; 13:20)**
2. **पवित्रात्मा को** स्वीकारने में
   - **क. नकारात्मक रूप से (14:17)**
   - **ख. सकारात्मक रूप से (7:39)**
3. **यीषु की बातों को** स्वीकारने में
   - **क. नकारात्मक रूप से (12:48)**
   - **ख. सकारात्मक रूप से (17:8)**

देखिए **विषेश षीर्शक : यीषु के प्रति गवाही**

3:12

"यदि ...यदि "

पहला यदि, पहले दर्जे की षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। दूसरा यदि, एक तीसरे दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् वास्तविक, बलवन्त काम को दिखाता है।

"तुम"

सर्वनाम और क्रिया दोनों बहुवचन हैं। हो सकता है जब नीकुदेमुस यीषु के पास आया तब उसके साथ षिश्य भी हों, या यह अविष्वासी यहूदियों को संबोधित करने का साधारण षब्द है (3:7,11)।

3:13

यह आयत साबित करती है कि यीषु के द्वारा पिता परमेष्वर का प्रगटीकरण सच्चा, पूर्ण, और अनोखा है (1:1–14)। यह यूहन्ना के दोहरापन का एक ओर उदाहरण हैः स्वर्ग बनाम पृथ्वी, भौमिक बनाम आत्मिक, नीकुदेमुस के स्रोत बनाम यीषु के स्रोत (1:51; 6:33,38,41,50,51,58,62)।

'' मनुष्य का पुत्र''

यह यीषु का स्वयं निर्धारित नाम है। पहली षताब्दी के यहूदी धर्म में इसका कोई राश्ट्रीय या मसीह प्रभाव नही था। यह षब्द यहेज. 2:1; भं.स.8:4 (अर्थात् मनुश्य), और दानी. 7:13 (अर्थात् दैवीय) से आया है। यह षब्द यीषु के परिपूर्ण मनुश्य तथा परिपूर्ण ईष्वर होने के असत्याभास को प्रगट करता है (1 यूहन्ना 4:1–3)।

3:14–21

यह बता पाना कठीन है कि यहाँ यीषु की वार्तालाप नीकुदेमुस के साथ खत्म हुई और प्रेरित यूहन्ना की बातें षुरू हुई या नहीं। आयत 14–21का इस प्रकार रूपरेखा बना सकते हैं (1)आयत 14,15 यीषु से संबन्धित है; (2) आयत 16,17 पिता से संबन्धित है; (3) आयत 18–21 मानवजाती से संबन्धित है।

3:14

'' जिस रीति से मूसा ने
जंगल में साँप को ऊंचे पर चढ़ाया, ''

यह मरूभूमि यात्रा के दौरान घटित एक दण्ड की ओर इषारा करता है जिसका उल्लेख गिनती. 21:4–9 में है।यहाँ केन्द्रिय सच्चाई यह है कि मनुश्य को परमेष्वर पर भरोसा रखना तथा आज्ञाकारी बनना चाहिए, चाहे वे पूरी रीति से उसे समझे या न समझे। केवल विष्वास करने के द्वारा इस्राएली साँप के काटने से बच सकते हैं। इस विष्वास का प्रमाण केवल उसके वचनों की आज्ञाकारिता से प्रगट होता है।

'' चढ़ाया, ''

इसका अनुवाद कई बार ''ऊंचे उठाना'' होता है (प्रेरित. 2:33; 5:31; फिलि.2:9) और यह दो अर्थ देनेवाला दूसरा षब्द है (1:5; 3:3,8)। जिन्होंने परमेष्वर के वचन को मानकर पीतल से बने हुए साँप की ओर दृश्टि की उन्होंने मृत्यु से छुटकारा पाया ठीक वैसे ही जो परमेष्वर के वचन पर विष्वास करें (मसीह के सुसमाचार) वे साँप (षैतान, पाप) के चुंगल से उद्धार पाएंगे।

3:15–18

'' जो कोई ''(3:15)
'' जो कोई ''(3:16)
''जो उसपर'' (3:18)

परमेष्वर का प्रेम समस्त मानवजाती के लिए एक निमन्त्रण है (यषा. 55:1–3; यहेज. 18:23,32; 1तिमु. 2:4; 2पत. 3:9)।

3:15

'' विश्वास ''

विश्वास जारी रहनेवाला भारोसा है। 1:7 और 1:12 के नोट देखिए तथा देखिए **विषेश षीर्शक 2:33।**

'' उस पर ''

यह केवल धर्मषास्त्रीय बातों को नही दर्षा रहा है बल्कि एक व्यक्तिगत रिष्ते को जो यीषु के साथ है दर्षा रहा है। उद्धार विष्वास करने योग्य एक सन्देष है और हर किसी को स्वीकाना तथा मानना अवष्य है।

3:15,16

''अनन्त जीवन''

यह यूनानी षब्द की योग्यता को दिखाता है न कि गिनती को। अनन्त काल के अलगाव के लिए मत्ती 25:46 में इस षब्द का प्रयोग है। यूहन्ना में ज़ोए साधारण रीति से पुनरूत्थान, अन्तिम दिन षास्त्र जीवन, या नए युग के जीवन, स्वयं परमेष्वर के जीवन को दर्षाता है।
''अनन्त जीवन'' का प्रयोग में बाकी सुसमाचारों से अनोखा है यूहन्ना रचित सुसमाचार। यही इस सुसमाचार का केन्द्रिय विशय तथा लक्ष्य है।

3:16 –21

16. क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17. परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।
18. जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहरा चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।
19. और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे।
20. क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए।
21. परन्तु जो सच्चाई पर चलता है वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।

3:16

'' परमेश्वर ने ऐसा प्रेम रखा ''

आयत 16 और 17 पिता के प्रेम को दिखाते हैं। प्रेम रखा का यूनानी षब्द है *आगापाओ*। साधारण रीति से इसका अधिक प्रयोग यूनानी में नही है। प्रारम्भिक कलीसिया ने इस षब्द को लेकर इसमें विषेश अर्थ देकर उपयोग किया। कुछ संदर्भ में यह पिता और पुत्र के प्रेम के लिए प्रयोग करते हैं। हलॉकि मानवीय प्रेम के लिए इसे नकरात्मक रीति से प्रयोग किया है (3:19; 12:43;1 यूहन्ना. 2:15)। धर्मषास्त्रीय ढंग से यह पुराने नियम के हेसेड़ के समान है, जिसका अर्थ है वाचकीय निश्ठा और प्रेम। यूहन्ना के दिनों के यूनानी में *आगापाओ* और *फिलियो* पर्याय थे (3:35 के तुलना 5:20 से करे)।

व्याख्या करनेवाले को यह समझना कि जो भी षब्द परमेष्वर के लिए प्रयोग हुआ है उनमें मानवियता सम्मिलित है। अनन्त, पवित्र, अनोखे परमेष्वर के जिक्र में हमारा संसार, भावना, ऐतिहासिक नजरिए का उपयोग है। सब मानवीय षब्द रूपक के समान हैं। परमेष्वर को अवष्य प्रगट किया गया परन्तु संपूर्णता से नहीं। पतित, अस्थाई, सीमित मानव संपूर्ण वास्तविकता को ग्रहण नही कर पाएंगे। देखिए **विषेश षीर्शक : यूहन्ना द्वारा ''विष्वास'' का प्रयोग–2:23।**

''इसलिए''

यह एक रीति है न कि भावना। परमेष्वर ने अपना प्रेम देने (3:16) और भेजने (3:17) के द्वारा प्रगट किया (रोमियों 5:8)। मानवजाती के बदले में उनके पुत्र को मरना है (यषा. 53; रोमि. 3:25; 2कुरि. 5:21; 1यूह. 2:2)।

''जगत''

यूहन्ना ने इस यूनानी षब्द कॉसमॉस का प्रयोग विभिन्नार्थ से किया है (देखिए नोट 1:10)।
यह वचन नॉस्टिक झूठी षिक्षा के दोहरावाद परमेष्वर/आत्मा और पदार्थ के बीच के खिलाफ़ है । यूनानी लोग ने पदार्थ को बुरा कहाँ उनके लिए पदार्थ दैवीय चिंगाारी का कारागृह है। यहाँ षरीर या पदार्थ की बुराई को यूहन्ना नही कह रहे हैं। परमेष्वर ने जगत से प्रेम रखा (पृथ्वी, रोमि. 8:23)। यह यूहन्ना के दोहरेवाद का एक ओर उदाहरण है (1:5; 3:3,8)।

''एकलौता पुत्र''

अर्थात् अनोखा। इसे गलत रीति से व्याख्या न करें कि (1) लैंगिक, (2) ओर कोई बच्चे नहीं है। हाँ, यीषु के समान ओर कोई सन्तान नहीं है। देखिए नोट 1:14

'' जो कोई उस पर विश्वास करे,''

यह प्राथमिक तथा जारी रहनेवाले विष्वास को महत्व देता है। जोर देने के लिए इसे आयत 15 में दोहराया गया। जो कोई के लिए परमेष्वर का धन्यवाद हो। यह किसी जाति की प्रमुखता को नकारते है। इसमें परमेष्वर का अधिकार और मनुश्य की इच्छा षामिल है। परमेष्वर हमेषा षुरू करते हैं और कार्यप्रणाली को बनाते हैं (6:44,65),परन्तु मनुश्य के साथ वाचाओं के द्वारा उन्होंने रिष्ता बनाए रखा है। लोगों को चाहिए कि लगातार उनके तोहफे और षर्तों का प्रत्युत्तर देते रहे।

देखिए **विषेश षीर्शक 2:23**

'' वह नाश न हो''

अर्थात् कुछ नाष होंगे। वह भी उनके ही प्रत्युत्तर की कमी की वजह से। परमेष्वर की कोई भूमिका नहीं है, पर उनका अविष्वास (यहेज. 18:23,32; 1तिमु. 2:4; 2पत. 3:9)।

कईयों ने षब्द का षाब्दिक अर्थ लिया और कहते हैं कि बुरे लोग भी बचाए जाएंगे। परन्तु दानि. 12:2 और मत्ती. 25:46 इसके साथ मेल नहीं खाते।

3:17

" जगत पर दंड की आज्ञा दे"

यूहन्ना के अन्दर ऐसी कई आयतें हैं जो कहती हैं यीषु एक उद्धारकर्ता के रूप में आए हैं न कि न्यायी के रूप में (3:17–21; 8:15; 12:47)। हलॉकि ऐसी भी कई आयतें है जो यीषु को न्याय करने के लिए आए हुए न्यायी के रूप में प्रगट करती हैं (5:22,23,27; 9:39; और दूसरे नए नियम की किताबों में प्रेरित. 10542; 17:31; 2तिमु. 4:1; 1पत. 4:5)।

कुछ धर्मषास्त्रीय कथन निम्नलिखित हैः

(1) आदर के चिन्ह के तौर पर पिता ने न्याय के काम यीषु को सौंप दिए है जैसे उन्होंने सृश्टि और छुटकारे का काम किए है(5:23)।
(2) यीषु का प्रथम आगमन छुडौती के लिए है न कि न्याय के लिए (3:17),परन्तु लोगों ने उसे ठुकराया और अपने ऊपर दण्ड लाए।
(4) यीषु राजाओं के राजा और न्यायाधीष के रूप में लौटेंगे (9:39)।

यह कथन यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के जीवन के प्रति विरोधाभास कथन के समान है।

3:18

यह मसीह के द्वारा मिलनेवाले मुफ्त उद्धार बनाम स्वयं के कारण मिले हुए दण्ड को दोहरा रहे हैं। परमेष्वर किसी को नरक नही भेजते। वे अपने आप जा रहे है। विष्वास का फल है, तो अविष्वास का भी है। देखिए **विषेश षीर्शक 2:23।**

3:19–21

" मनुष्यों ने अन्धकार को
ज्योति से अधिक प्रिय जाना"

जिन्होंने सुसमाचार सुना वे उसे ठुकराया किसी समझ, संस्कृती के लिए नहीं, परन्तु प्राथमिक रूप से वो नैतिक होने के कारण (अय्यूब. 24:13)। ज्योति मसीह तथा परमेष्वर के प्रेम का सन्देष, मानव जाती की अवष्यकता, मसीह के प्रबन्ध, आवष्यक प्रत्युत्तर को दर्षाता है। यह 1:1–18 का निश्कर्श है।

3:19

" दंड की आज्ञा यह है"

उद्धार के समान दंड (3:19; 9:39) और दोशी ठहराया जाना (5:27–29; 12:31,48) भी वास्तविक है। विष्वासी लोग ने जाना अन्तिम दिन षास्त्र और संपूर्ण होने वाले अन्तिम दिन षास्त्र में जी रहे है।

3:21

'' सच्चाई पर चलता''

ज्योति (3:19,20 दो बार, 21)स्पश्ट रूप से यीषु की ओर संकेत करती है, सो सच्चाई भी यीषु की ओर संकेत करती है।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. ''नया जन्म'' का अर्थ क्या है ?
2. आयत 5 में ''पानी'' किसकी ओर संकेत करता है ?
3. विष्वास में कौन–सी बातें सम्मिलित है ?
4. यूहन्ना 3:16 मनुश्य के प्रति यीषु के प्रेम को दर्षाता है या पिता के ?
5. यूहन्ना 3:16 से कैलविन वाद किस प्रकार जुडा है ?
6. क्या नाष का अर्थ संहार होता है ?
7. ''ज्योति'' की परिभाशा दीजिए।

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 3:22 – 36

क. इस सुसमाचार के आरम्भ से ही युहन्ना ने यीषु मसीह के ईष्वरीयता के विशय में वार्तालाप और व्यक्तिगत मुलाकतों के द्वारा साबित करने का कोषिष की है। इस ढाँचे को आखरी तक जारी रखा है।
ख. समानान्तर सुसमाचार के लिखने के बाद जो सवाल पैदा हो गया उसे यह सुसमाचार पहली षताब्दी के अन्त में लिखने के कारण निपटाने का प्रयास कर रहे है। उनमें से प्रमुख है यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से संबन्धित झूठी षिक्षा। इसका उल्लेख 1:6–8, 19–36; 3:22–36 में है। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला निष्चय करता है कि वह यीषु से कम है और यीषु नासरी ही मसीह है (प्रेरित. 18:24–19:7)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

3:22 – 24
22. इस के बाद यीशु और उसके चेले यहूदिया देश में आए; और वह वहँ उन के साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा।
23. और यूहन्ना भी शालेम् के निकट ऐनोन में बपतिस्मा देता था। क्योंकि वहाँ बहुत जल था और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे।
24. क्योंकि यूहन्ना उस समय तक जेलखाने में नहीं डाला गया था।

3:22

''यहूदिया देश में आए''

इस प्रारम्भिक सेवकोई के बारे में समानान्तर सुसमाचार में ज़िक्र नहीं है। सुसमाचार यीषु की कालानुक्रमिक जीवनी नही है।

'' और वह वहँ उन के साथ रहकर ''

यीषु ने लोगों से प्रचार किया और षिश्यों के साथ विचार विमर्ष किया। और अपने आप को उनके सामने प्रगट किया। यहाँ यीषु छोटे झुण्ड के साथ जुडे हुए हैं।

'' बपतिस्मा देने लगा। ''

4:2 में हम देखते हैं कि यीषु ने स्वयं बपतिस्मा नही दिया पर उनके षिश्यों ने दिया। प्राथमिक रूप से यीषु का सन्देष यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के सन्देष के समान है। यह मनफिराव और तैयारी का पुराने नियम का सन्देष था। यहाँ का बपतिस्मा मसीह बपतिस्मा नहीं परन्तु मनफिराव और आत्मिक स्वीकृती का बपतिस्मा है।

<u>*3:23*</u>

<u>*''यूहन्ना भी शालेम् के निकट*</u>
<u>*ऐनोन में बपतिस्मा देता था। ''*</u>

स्थान तय नहीं हैः (1) कुछ कहते है यह यरदन के पास के पेरिया नामक जगह है ; (2) कुछ कहते हैं यह उत्तर पष्चिम समरिया है; (3) कुछ कहते हैं यह षेखेम से 3 मील दूर का एक षहर है;ऐनोन षब्द का अर्थ है सोता, सो इस प्रसंग में 3 ठीक बैठता है। यीषु यहूदिया में और यूहन्ना उनके उत्तर दिषा में कहीं सेवा कर रहे थे।

<u>*3:24*</u>

<u>*'' क्योंकि यूहन्ना उस समय तक*</u>
<u>*जेलखाने में नहीं डाला गया था।''*</u>

हमें नहीं मालूम किसलिए इस कालानुक्रमिक बात का जिक्र किया गया। कुछ कहते हैं यह समानान्तर सुसमाचार के साथ मिलाने के लिए लिखा है (मत्ती. 14:1—12; मरकूस. 6:14—29)। यह यीषु मसीह के जीवन की तिथि को बताता है।

3:25—30

25. वहाँ यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद—विवाद हुआ।
26. और उन्हों ने यूहन्ना के पास आकर उस से कहा, हे रब्बी, जो व्यक्ति यरदन के पार तेरे साथ था, और जिस की तू ने गवाही दी है देख, वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते हैं।
27. यूहन्ना ने उत्तर दिया, जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।
28. तुम तो आप ही मेरे गवाह हो, कि मैं ने कहा, मैं मसीह नहीं, परन्तु उसके आगे भेजा गया हूँ।
29. जिस की दुल्हन है, वही दूल्हा हैः परन्तु दूल्हे का मित्रा जो खड़ा हुआ उस की सुनता है, दूल्हे के शब्द से बहुत हर्षित होता है; अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ है।
30. अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं।।

<u>*3:25*</u>

'' वहाँ यूहन्ना के चेलों का किसी यहूदी के साथ शुद्धि के विषय में वाद—विवाद हुआ। ''
यह संघर्श के लिए प्रयोग किया गया सबसे षक्तिषाली षब्द है। कुछ यूनानी हस्तलेख में यहूदी षब्द बहुवचन है।

एन ए एस बी, एन के जे वी एन आर एस वी एन जे बी ''शुद्धि के विषय में ''
टी इ वी ''रिवाज के अनुसार धोने के विशय में''

इस वाद–विवाद के बारे में कई निर्वचन हैः (1) षायद यूहन्ना के चेलों ने यीषु और यूहन्ना के बपतिस्मा को जोडकर यहूदियों के **रिवाज के अनुसार** शुद्धि **के** विशय में वाद विवाद किया होंगा। (2) कुछ यह समझते हैं कि यहाँ के प्रसंग हैं यहूदी धर्म की बातों से भरा हुए यीषु के जीवन और सेवकोई, (क) 2:1–12 काना में विवाह (ख) 2: 13–22 मन्दिर का षुद्ध किया जाना (ग) 3:1–21 नीकुदेमुस के साथ यीषु का वार्तालााप (घ) 3:22–36 यहूदियों की शुद्धि तथा यीषु और यूहन्ना का बपतिस्मा । इस प्रसंग से यह मालूम हाता है कि यीषु नासरी की श्रेश्ठता के विशय में अधिक गवाही देने के लिए यूहन्ना को ओर अवसर नहीं मिला।

<u>*3:26*</u>

<u>*''जिसकी तू ने गवाही दी है देख,*</u>
<u>*वह बपतिस्मा देता है, और सब उसके पास आते है''*</u>

परमेष्वर के मेम्ने के विशय में यूहन्ना के द्वारा दी गई गवाही उन्हें अभी भी स्मरण है (1:19–36) और वे यीषु की सफलता से जलते थे। मुकाबला करनेवाली आत्मा के प्रति यीषु भावुक थे (4:1)।

<u>*3:27*</u>

<u>*'' जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए*</u>
<u>*तब तक वह कुछ नहीं पा सकता। ''*</u>

यह सीधा सीधा कथन है कि आत्मिक बातों में कोई आपसी मुकाबला नहीं होता। जो कुछ भी विष्वासियों के पास है वे सब कुछ परमेष्वर के अनुग्रह से दिया हुआ है। यहाँ पर '' वह'' ''कुछ'' के अर्थ के बारे में काफी सारे वाद विवाद हैंः (1) कुछ कहते है '' वह'' विष्वासी को दर्षाते है ''कुछ'' जो उद्धार के लिए यीषु के पास आनेवालों के आगमन को दर्षाते है (6:44, 65)।(2) कुछ कहते है '' वह'' यीषु है और ''कुछ'' विष्वासी हैं (6:39; 10:29; 17:2,9,11, 24) इन दोनों कथन की परख केवल षब्द ''दिया'' में है, यानि उद्धार विष्वासी को दान के तौर पर मिला है या विष्वासी स्वयं यीषु के लिए पिता की ओर से एक दान हैं (17:2)।

<u>*3:28*</u>

<u>*'' मैं मसीह नहीं,''*</u>

जैसे 1:20 में कहा गया वैसे ही इसे पुनःकहा गया कि वह मसीह नहीं पर उनका मार्ग तैयार करनेवाला है। यह मलाकी. 3:1; 4:5–6 और यषा. 40 की ओर संकेत है (1:23)।

<u>*3:29*</u>

<u>*'' दुल्हन है, वही दूल्हा हैः''*</u>

पुराने नियम में कई आयतें परमेष्वर और इस्राएल के बीच रूपकात्मक वैवाहिक संबन्ध को प्रगट करतीं हैं (यषा. 54:5; 62:4,5; यिर्मा. 2:2; 3:20; यहेज. 16:8; 23:4; होषै. 2:21)। पौलूस ने भी इसका प्रयोग इफि. 5:22 में किया है। इस वाचा के संबन्ध के लिए मसीह विवाह एक उदाहरण है।

'' अब मेरा यह हर्ष पूरा हुआ ''

विरोध की आत्मा से भरने की बजाय यहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला हर्शित हो रहा है।

3:30

'' अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूं।''

षब्द अवष्य की खास भूमिका है। इसे 3:14 और 4:4 में प्रयोग किया गया। यह अपने बारे में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की समझ को प्रगट करता है। वह जानता है कि वह यीषु की महान सेवा के निमित्त केवल मार्ग तैयार करनेवाला है।

3:31 – 36

31. जो ऊपर से आता है, वह सर्वोत्तम है, जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है: जो स्वर्ग से आता है, वह सब के ऊपर है।
32. जो कुछ उस ने देखा, और सुना है, उसी की गवाही देता है; और कोई उस की गवाही ग्रहण नहीं करता।
33. जिस ने उस की गवाही ग्रहण कर ली उस ने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है।
34. क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।
35. पिता पुत्र से प्रेम रखता है, और उस ने सब वस्तुएं उसके हाथ में दे दी हैं।
36. जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।

3:31–36

इन आयतों के बारे में टिप्पणीकर्ताओं के बीच वाद–विवाद चलता रहता है कि ये (1) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला अपना भाशण जारी रखता है; (2) यह यीषु के द्वारा कहे गए हैं (3:11–12); या (3) प्रेरित यूहन्ना का ही वचन है। ये आयतें 3:16–21 के मुख्य विशय की ओर हमें ले जाता है।

3:31

'' जो ऊपर से आता है ''

यह महत्वपूर्ण है यहाँ मसीह के अस्तित्व और दैवीयता (3:31), उसकी देहधारण और परमेष्वर की ओर से मिली हुई सेवा (3:34) को बताने के लिए दो प्रकार के षीर्शक का प्रयोग है। आयत 3 में ऊपर से जन्मना या नए जन्म के लिए जिस षब्द का प्रयोग किया गया है उसी षब्द का ही प्रयोग यहाँ '' ऊपर से'' के लिए किया है। यूहन्ना रचित सुसमाचार का दोहरावाद मृत्यु सागर हस्तलेखों में पाए जानेवाले दोहरावाद और नॉस्टिक दोहरेवाद से बिल्कुल भिन्न है। यूहन्ना के अनुसार सृश्टि स्वयं और मानवीय षरीर अपने में बुरा या पाप नहीं है।

'' वह सब के ऊपर है। (दो बार) ''

इस आयत का पहला भाग यीषु के अस्तित्व और दैवीयता और स्वर्ग से उतर आने की ओर संकेत करता है (1:1—18; 3:11—12)। इस आयत का दूसरा भाग उसे सृश्टि के स्वामी साबित करता है। यह मालूम करना आसान नहीं कि यूनानी में ''सब'' मानवजाती के लिए या समस्त सृश्टि के लिए प्रयोग हुआ है।

एन ए एस बी, '' जो पृथ्वी से आता है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है:''
एन के जे वी '' जो पृथ्वी से आता है वह संसारिक है; और पृथ्वी की ही बातें कहता है:''
एन आर एस वी '' जो पृथ्वी की ओर से है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी की ही बातें कहता हैं:''
टी इ वी '' जो पृथ्वी से है वह पृथ्वी का है; और पृथ्वी के बारे में कहता है:''
एन जे बी '' जो पृथ्वी का है वह स्वयं संसारिक है; और संसारिक तौर से बातें करता है:''

यहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के प्रति कोई नकारात्मक बात नहीं कर रहा है। पृथ्वी के लिए यहाँ *''गे''* षब्द का प्रयोग किया गया है (12:32; 17:4; 1यूहन्ना. 5:8 और प्रकाषित वाक्य में 76 बार) यह संसार *(कॉसमॉस)* के लिए प्रयोग किए गए षब्द से भिन्न है जिसका उपयोग यूहन्ना ने कई बार नकारात्मक रूप से किया है। इस वाक्य का प्रयोग इसलिए है यीषु जिन बातों को जानते हैं, स्वर्गीय, उसे कहते है और मनुश्य जिन बातों को जानते हैं, पृथ्वी की , उसे कहते हैं । इसलिए यीषु की गवाही किसी षिक्षक या नबी से सर्वोत्तम है।

3:32

'' जो कुछ उस ने देखा,
और सुना है, उसी की गवाही देता है; ''

'' कोई उस की गवाही ग्रहण नहीं करता। ''

यह उस समय के संदर्भानुसार की बात नहीं है। यह समस्त यहूदियों की ओर इषारा करता है।

3:33

''जिस ने उस की''

यह परमेष्वर के विष्वस्तर अतुल्नीय प्रेम की ओर इषारा करता है। परमेष्वर का सुसमाचार के प्रति कोई सीमा नहीं है, एक को चाहिए कि वह मन फिरे तथा विष्वास करें (मरकूस. 1:15; प्रेरित. 20:21), यह प्रस्ताव सब के लिए है (1:12; 3:16—18; यहेज. 18:23,32; 1तिमु. 2:4; 2पत. 3:9)।

'' गवाही ग्रहण कर ली ''

उद्धार के लिए परमेष्वर पर भरोसा करना एक प्राथमिक निर्णय ही नहीं पर यह एक जीवन भर की षिश्यता है। स्वीकृती की इस अवष्यकता के बारे में 1:12 और 3:16—18 में बताया है। गवाही स्वीकृति (3:33) और उसमें बने रहने (3:36) में आनेवाले द्वि—विभाजन को ध्यान दीजिए। विष्वास के समान नए नियम में स्वीकृति के भी दो संकेतार्थ है (1) व्यक्तिगत रूप से यीषु को ग्रहण करना तथा उसमें चलते रहना, और (2) सुसमाचार में पाए जानेवाली सच्चाई तथा सिद्धान्तों को गहण करना (यहूदा. 3,20)।

एन ए एस बी, ''उस ने इस बात पर छाप दे दी कि परमेश्वर सच्चा है''
एन आर एस वी , एन के जे वी ''**मान्यता पत्र** दे दी कि परमेश्वर सच्चा है ''
टी इ वी ''**इस से साबित होता है कि** परमेश्वर सच्चा है ''
एन जे बी ''**प्रमाण** दे दिया कि परमेश्वर सच्चा है''

जब विष्वासी लोग परमेष्वर पर भरोसा करते हैं यह इस बात को प्रगट करता है कि स्वयं, संसार, मानवजाती, तथा उसके पुत्र के बारे में परमेष्वर का सन्देष सही है (रोमि. 3:4)। यह यूहन्ना में बार बार आनेवाला मुख्य विशय है (3:33; 7528; 8:26; 17:3: 1यूहन्ना. 5:20)। यीषु सच्चा है क्योंकि वो एक जो सच्चा है उसे प्रगट करता है (3:7,14; 19:11)।

<u>3:34</u>

*<u>'' जिसे परमेश्वर ने भेजा है,
वह परमेश्वर की बातें कहता है: ''</u>*

आयत 34 में एक जैसे 2 वाक्य है जिससे यह साबित होता है कि यीषु को अधिकार परमेष्वर से मिला है;(1) परमेष्वर ने उसे भेजा, तथा (2) उसके पास आत्मा की भरपूरी है।

*<u>'' क्योंकि वह
आत्मा नाप नापकर नहीं देता। ''</u>*

आत्मा की भरपूरी के विशय में 2 भिन्न विचारधारा है: कुछ विष्वास करते हैं (1) यीषु आत्मा की भरपूरी विष्वासियों को देते है (4:10–14; 7:37–39); तथा (2) आत्मा की भरपूरी मसीह के लिए परमेष्वर का तोहफा है (3:35) । रब्बियों ने षब्द ''नाप'' नबियों को मिलनेवाली परमेष्वरीय प्रेरणा के लिए प्रयोग करते हैं। रब्बियों का कहना है कि किसी भी नबी के पास आत्मा का नाप पूरा नहीं था। इसलिए यीषु समस्त नबियों से श्रेश्ठ हैं (इब्रा.1:1,2) सो वो परमेष्वर का परिपूर्ण प्रकाषन है।

<u>3:35</u>

<u>'' पिता पुत्र से प्रेम रखता है, ''</u>

इस आयत को 5:20 तथा 17:23–26 में दोहराया गया। मसीह के लिए परमेष्वर के प्रेम में परमेष्वर के साथ विष्वासियों का संबन्ध प्रगट है। इस प्रसंग में मनुश्य क्योंकर यीषु को मसीह के रूप में भरोसा करें, कुछ कारण निम्नलिखित है:
(1) क्योंकि वह ऊपर से आया है तथा सब से श्रेश्ठ भी है (3:31)। (2) छुडौती के कार्य के लिए उसे परमेष्वर ने भेजा (3:34)। (3) परमेष्वर उसे लगातार आत्मा की भरपूरी देता रहा (3:34)। (4) क्योंकि परमेष्वर उसे प्रेम करते हैं (3:35)। तथा परमेष्वर ने सब कुछ उसके हाथों में दे दिया है (3:35)।

*<u>'' और उस ने सब वस्तुएं
उसके हाथ में दे दी हैं। ''</u>*

यह काफी दिलचस्व और एक जैसे कई वाक्यों वाला है (13:3; 17:2; मत्ती. 11:27; 28:18; इफि. 1520–22; कुलु. 2:10; 1पत. 3:22)।

<u>*3:36*</u>

एन ए एस बी, ***"*** जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, ''
एन के जे वी " जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्तकाल का जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र पर नहीं विश्वास करता, वह जीवन को नहीं देखेगा, ''
एन आर एस वी " जो पुत्र पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन है; परन्तु जो अनाज्ञाकारी बनता है, उसे जीवन नहीं मिलेगा, ''
टी इ वी " जो पुत्र पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन है; परन्तु जो अनाज्ञाकारी बनता है, उसे जीवन नहीं मिलेगा, ''
एन जे बी " जो कोई पुत्र पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन है; परन्तु जो कोई पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा''

यह एक जारी रहनेवाला कार्य है। विष्वास का स्तर एक बार के निर्णय से कहीं ऊंचा है चाहे कोई जितना भी भावुक और निश्कलंक क्यों न हो (मत्ती. 13:20)। यह इस बात को प्रगट करता है कि यीषु को बिना जाने कोई पिता को जान नहीं सकता (12:44–50; 1यूहन्ना. 5:10)। पुत्र यीषु के साथ लगातार जारी रखनेवाले रिष्ते से ही उद्धार मिलता है।
इस वाक्य में '' विष्वास '' और ''मानना '' का अंतर दिखाई पड़ता है। सुसमाचार केवल एक व्यक्ति ही नहीं जिसे हम ग्रहण करते और सच्चाई जिसे हम अपनाते, परन्तु यह एक जीवन भी है जिसे हम जीते हैं (लूका. 6:46; इफि. 2:8–10)।

<u>*'' परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है। ''*</u>

यूहन्ना के लेख में यहाँ पहली बार (प्रकाष. में 5 बाार है) षब्द क्रोध (ओरगे) का प्रयोग हुआ है। यह विचार साधारण तथा ''दंड'' से जुडे हुए हैं। ''विष्वास'', ''मानना '' और ''दंड'' भविश्य में पूरी हानेवाली वास्तविकता है। यह परमेष्वर के राज्य की ''हाँ'' पर ''अब नही'' संघर्श है। परमेश्वर के क्रोध के पूरे ब्योरा के लिए पढ़िए रोमि. 1:18 – 3:20।

<u>*चर्चा के लिए प्रष्न*</u>

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. यीषु का प्रारम्भिक सन्देष यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला के जैसे था ?
2. मसीह बपतिस्मा यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बपतिस्मा के समान है ?
3. यूहन्ना रचित सुसमाचार के षुरू में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के षब्दों को इतना महत्व क्यों दिया गया ?

4. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और यीषु के बीच का संबन्ध बताने के लिए प्रयोग किए गए अंतर तथा उनकी संख्या कितनी है ?
5. आयत 33 की ''स्वीकृती'' आयत 36 के साथ किस प्रकार संबन्धित है ? इस वाद विवाद में षब्द '' अनाज्ञाकारी बनना'' का क्या संबन्ध है ?
6. लोग क्योंकर यीषु नासरी को उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करेंगे? कारण की सुची बनाए (आयत 31—36)। ?
7. आयत 36 का षब्द '' क्रोध '' वर्तमानकाल क्रिया क्यों है ?

यूहन्ना — 4

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4] यीशु और सामरी स्त्री	एन के जे वी सामरी स्त्री उसके अपने मसीह से मिलती है	एन आर एस वी यीशु और सामरी लोग	टी इ वी यीशु और सामरी लोग	जे बी यीशु सामरी लोगों के बीच
4:1—6	4:1—26	4:1—6	4:1—4	4:1—10
			4:5—6	
4:7—15		4:7—15	4:7—8	
			4:9	
			4:10	
			4:11—12	4:11—14
			4:13—14	
			4:15	4:15—24
4:16—26		4:16—26	4:16	
			4:17क	
			4:17ख—18	
			4:19—20	
			4:21—24	
			4:25	4:25—26
	....		4:26	
4:27—30	4:27—38	4:27—30	4:27	4:27—30
			4:28—30	
4:31—38		4:31—38	4:31	4:31—38
			4:32	
			4:33	
	संसार का उद्धारकर्ता		4:34—38	
4:39—42	4:39—42	4:39—42	4:39—40	4:39—42
			4:41—42	
राजकर्मचारी के बेटे की चंगाई	गलील में सवागत	यीशु और अन्यजाती	यीशु राजकर्मचारी के बेटे को चंगा करते हैं	यीशु गलीली में
4:43—45	4:43—45 कुलीन व्यक्ति के बेटे की चंगाई	4:43—45	4:43—45	4:43—45 राजकर्मचारी के बेटे की चंगाई
4:46—54	4:46—54	4:46—54	4:46—48	4:46—53
			4:49	
			4:50—51	
			4:52—53	
			4:54	4:54

<u>अध्ययन कालचक्र तीन</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 4:1 – 54

क. अध्याय 3 तथा 4 में एक उद्देष्यपूर्ण ढाँचा है
1. श्रीमान धार्मिक (नीकुदेमुस) बनाम कुंवारी बहिश्कृत (कुए के पास की स्त्री)।
2. यरूषलेम केन्द्रित यहूदी धर्म (कट्टर) बनाम सामरिया केन्द्रित यहूदी धर्म (विधर्मी)।

ख. यीषु के व्यक्तित्व और काम की सच्चाई प्रौढ़ता प्राप्त करते हुए
1. कुए के पास की स्त्री के साथ वार्तालाप 4:1–26
2. षिश्यों के साथ वार्तालाप 4:27–38
3. गॉववालों की गवाही 4: 39–42
4. गलीलियों द्वारा स्वागत्म 4: 43–45
5. चिन्ह/चमत्कार, रोग के ऊपर यीषु का सामर्थ 4: 46–54

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

4:1 – 6

1. फिर जब प्रभु को मालूम हुआ, कि फरीसियों ने सुना है, कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता, और उन्हें बपतिस्मा देता है।
2. (यद्यपि यीशु आप नहीं बरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे)।
3. तब यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया।
4. और उस को सामरिया से होकर जाना अवश्य था।
5. सो वह सूखार नाम सामरिया के एक नगर तक आया, जो उस भूमि के पास है, जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था।

6. और याकूब का कूआं भी वहीं था; सो यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर योंही बैठ गया, और यह बात छठे घण्टे के लगभग हुई।

4:1

'' प्रभु ''

काफी वर्शों के बाद यूहन्ना उस घटना को याद कर रहा है (आत्मा की सहायता से)। एक ही वाक्य में एक ही व्यक्ति को ''प्रभु'' तथा ''यीषु'' करके पुकार रहे हैं।

'' फरीसियों ''

देखिए नोट 1:24

'' सुना है, कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता,
और उन्हें बपतिस्मा देता है। ''

यीषु के षिश्य और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के षिश्य के बीच का संघर्श का कारण यीषु उस जगह से निकल गया। समानन्तर सुसमाचार उल्लेख करता है कि हेरोद अन्दिपास ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला को गिरफ़तार किया इसलिए यीषु उस जगह से निकल गया (मत्ती. 4:12; मरकूस. 1:14; लूका. 3:20)।

4:2

''यीशु आप नहीं बपतिस्मा देते थे ''

यह बपतिस्मा के प्रति अपमानजनक कथन नहीं है पर मनुश्य के स्वयं केन्द्रित स्वभाव की पहचान है। यीषु ने अपनी सेवा के आरम्भ में बपतिस्मा दिया (3:22) परन्तु बाद में छोड़ दिया।

4:3

'' तब यहूदिया को छोड़कर
फिर गलील को चला गया। ''

यह यीषु के भौगोलिक भ्रमण को दर्षानेवाला कथन है।

4:4

'' उस को सामरिया से होकर जाना अवश्य था। ''

अवश्य के लिए यूनानी भाशा में 'डेई' षब्द का प्रयोग है इसका उपयोग इस संदर्भ में कई बार हुआ है (3:7,14,30)। यीषु के पास इस मार्ग में एक विषेश योजना है। यह सबसे छोटा मार्ग है। जोसिफुस की मानें तो गलील के यहूदी इस मार्ग का उपयोग करते थे। यह बात सच्च है कि यहूदिया के यहूदी सामरियों से घृणा करते थे कि वे मिश्रित जाती है, इसलिए वे उनकी भूमि से होकर नही चलते थे।

विषेश षीर्शक : जातिवाद

क) *भूमिका*

1) यह पतित मानवजाति की अपने समाज में विष्वव्यापी प्रतिक्रिया है। यह मानवजाति का अहंकार है, दूसरों के पिछे छुपकर अपना पक्ष साबित करना। जातिवाद कई तरह से नया विचार है, जबकी राश्ट्रवाद प्रचीनतम विचार है।

2) राश्ट्रवाद बाबुल से षुरू हुआ (उत्प.11) और जो कि वास्तविक तौर पर नूह के पुत्रें से सम्बन्धित है जहाँ से जातियों की षुरूवात हुई (उत्प.10)। पर वचन से ये बिलकुल स्पश्ट है कि मानवजाति का एक ही श्रोत है (उत्प.1:3; प्रेरित.17:24–26)।

3) जातिवाद बहुत से भेदभावों में से एक है। कुछ और हैं (1) षिक्षा में भेदभाव; (2) आर्थिक अहंकार और भेदभाव; (3) स्वधर्मी धार्मीक कट्टरता; और (4) सैद्धान्तिक राजनैतिक षोशण।

ख) *बाइबल की सामग्री*

पुराना नियम

1) उत्प.1:27 मानवजाति को परमेष्वर ने नर और नारी के रूप में अपने ही स्वरूप में रचा, जो उन्हें अद्वितिय बनाता है। यह उनके व्यक्तिगत मूल्य और अस्तित्व को भी प्रगट करता है (यूह.3:16)।

2) उत्प.1:11–25 में दस बार लिखा है ''...एक एक की जाति के अनुसार...''। ये जाति भेदभाव की सराहना करने के लिए प्रयोग किया जाता है। पर संदर्भ से ये बिलकुल स्पश्ट है कि ये जानवरों और पेड़–पौधों के लिए है मानवजाति के लिए नहीं।

3) उत्प.9:18–27 का प्रयोग जातिय षोशण की सराहना करने के लिए किया जाता है। यह ध्यान में रखना अति आवष्यक है कि परमेष्वर ने कनान को श्राप नहीं दिया। नषे से जागने के बाद उसके पिता नूह ने ही उसे श्राप दिया। बाइबल कहीं पर भी यह नहीं बताती कि परमेष्वर ने इसे मन्जुर किया। यदि उन्होंने ऐसा किया तो भी यह काली जाति को प्रभावित नहीं करता। कनान उन लोगों का पिता था जो पलिस्तीन में रहते थे और मिस्र के चित्र बताते हैं कि वे काले नहीं थे।

4) यहो.9:23 का प्रयोग इस उद्देष्य से किया गया कि एक जाति दूसरी जाति के दासत्व में रहेगी। जबकी इस संदर्भ में गिबोन भी उसी जाति में से हैं जिससे यहूदी हैं।

5) एज्रा.9–10 और नहे.13 का प्रयोग जातिवाद के विचार के लिए किया गया है पर इस संदर्भ षादियाँ जाति (सभी नूह के एक ही पुत्र की संतान थे) के कारण नहीं पर धार्मिक कारणों से गलत ठहराई गईं।

नया नियम

1) <u>सुसमाचार</u>

क. यीषु ने यहूदियों और सामरियों के बीच की नफ़रत का कई जगह प्रयोग किया, जो यह बताता है कि जातिय नफ़रत गलत है।
– अच्छे सामरी का दृश्टान्त (लूका.10:25–37)

– कुँए के पास सामरी स्त्री (यूह.4:4)

– धन्यवादि कोढ़ी (लूका.17:7–19)

ख. सुसमाचार सारी मानवजाति के लिए है
– यूह.3:16

– लूका.24:46–47

– इब्रा.2:9

– प्रका.14:6

ग. परमेष्वर के राज्य में सारी मानवजाति से लोग होंगे

– लूका.13:29

– प्रका.5

2) <u>प्रेरितों के काम</u>

क. पेरित.10 सम्भवतः वो मूलपाठ है जो परमेष्वर के सार्वभौमिक प्रेम और संदेष को प्रस्तुत करता है।

ख. पतरस पर प्रेरित.11 के उनके कार्य के कारण आक्रमण किया गया और इस समस्या का समाधान प्रेरित. 15 की यरूषलेम सभा तक नहीं हुआ। पहली सदी के यहूदियों और अन्यजातियों के बीच बहुत अधिक भेदभाव था।

3) <u>पौलुस</u>

क. मसीह में कोई रूकावट नहीं है

(1) गला.3:26–28

(2) इफि.2:11–22

(3) कुलु.3:11

ख. परमेष्वर किसी व्यक्ति का पक्ष नहीं लेते

(1) रोमियों.2:11

(2) इफि.6:9

4) <u>पतरस और याकूब</u>

(१) परमेष्वर किसी व्यक्ति के प्रति पक्षपात नहीं करते, 1पत.1:17

(२) क्योंकि परमेष्वर पक्षपात नहीं करते इसलिए मनुश्य को भी नहीं करना चाहिए, याक.2:1।

5) <u>यूहन्ना</u>

क. विष्वासियों की ज़िम्मेदारी से सम्बन्धित दृढ़ वाक्यों में से एक 1यूह.4:20 में मिलता है।

ग) <u>*सारांष*</u>

1) जातिवाद या कोई भी भेदभाव परमेष्वर की सतान के लिए पूर्णतया गलत है। हैनली बारनीटी द्वारा कहा गया वाक्य, जो उन्होंने ग्लोरीटा, न्यू मैक्सीको में क्रिष्चन लाइफ कमीषन में 1964 में कहाँ वह है ''जातिवाद बिलकुल गलत और झुठा है क्योंकि यह गैरबाइबलीय और गैरमसीही है, बयान करने की आवष्यकता नहीं कि ये गैरविज्ञानिक है।''

2) ये समस्या मसीहियों को अवसर प्रदान करती है कि वह मसीही प्रेम, क्षमा और खोए हुए संसार के प्रति समझ दिखाऐं। इस क्षेत्र में अवसर को ठुकराना मसीही की अपरिपक्वता को प्रगट करता है और षैतान को अवसर देता है कि वह विष्वासी के विष्वास, पुश्ठि और उन्नति में रूकावट डाले। यह खोए हुए लोगों को मसीह के पास आने में भी रूकावट है।

3) मैं क्या कर सकता हूँ? (ये भाग क्रिष्चन लाइफ कमीषन की पुस्तिका ''जाति सम्बन्ध'' से लिया गया है)

<u>*''व्यक्तिगत स्तर पर''*</u>

(1) जातिवाद से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को ग्रहण कीजिए।

(2) प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, और दूसरी जाति के लोगों के साथ संगति रखिए और जातिय भेदभाव से बाहर निकालने की कोषिष कीजिए।

(3) जहाँ पर जातिय नफ़रत को फैलाने वाले लोगों को चुनौती देने वाला कोई नहीं वहाँ जाति के प्रति अपने विचारों को व्यक्त करो।

<u>*''पारिवारीक जीवन में''*</u>

(1) जातियों के प्रति भावना के परिवार के उत्तरदायित्व के महत्व को पहचानिए।

(2) बच्चे और माता पिता जाति के बारे में बाहर क्या सुनते हैं उसके बारे में चर्चा करके मसीही भावना को

उत्पन्न करो।

(3) माता पिता को दूसरी जाति के प्रति उदाहरण प्रस्तुत करते समय सावधान रहना चाहिए।

(4) दूसरी जाति वालों के साथ पारिवारीक सम्बन्ध बनाने के अवसरों की खोज कीजिए।

''आपकी कलीसिया में''

(1) जाति के बारे में बाइबल की सच्चाईयों की षिक्षा और प्रचार कीजिए, जिसके द्वारा कलीसिया के लोग उत्साहित होकर सारे समाज के लिए एक उदाहरण बन सकें।

(2) जैसे नए नियम की कलीसिया सभी जातियों के लिए खुली थीं वैसे ही ध्यान दीजिए कि आपकी कलीसिया भी सभी जाति के लोगों को आराधना, संगति, और सेवा में आने देने के लिए खुली हो (इफि. 2:11—22; गला.3:26—29)।

''प्रतिदिन के जीवन में''

(1) कार्य क्षेत्र में हर प्रकार के जातिय भेदभाव पर विजय पाने के लिए सहायता कीजिए।

(2) सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर सभी जातियों के लिए समान अधिकार प्राप्त करने के अवसरों में कार्य कीजिए, यह ध्यान में रखकर कि जाति की समस्या पर आक्रमण करना है न कि किसी व्यक्ति पर। उद्‌देष्य है समझ पैदा करना न कि कड़ुवाहट पैदा करना।

(3) यदि यह सही जान पड़ता हो तो समाज की भलाई सोचने वाले लोगों के साथ मिलकर एक समिति का गठन कीजिए जो सर्व षिक्षा के बारे में और सभी जातियों के आपसी सम्बन्ध को सुधारने का कार्य करे।

(4) जातिय न्याय और जो राजनैतिक लाभ के लिए जातिय षोशण को बढ़ावा देते हैं, ऐसे लोगों के विरूद्ध कानून और उसे पारित करने वाले लोगों का साथ दीजिए।

(5) कानून पारित करने वाले लोगों से अनुरोध कीजिए कि वे कानून को बिना भेदभाव के पारित करें।

(6) हिंसा को रोकिए और कानून के प्रति आदर फैलाइऐ और मसीही नागरिक होने के नाते देखिए कि जो लोग भेदभाव उत्पन्न करते हैं उनके हाथ में कानून व्यवस्था साधन न बने।

(7) मानवीय सम्बन्ध में मसीह के मन और आत्मा को आदर्ष रूप में प्रगट करो।

'' सामरिया से होकर ''

सामरियों और यहूदियों के बीच में ई0पू0 8वी षताब्दी से गहरी नफ्रत थी। 722 ई0पू0 में अष्षूर लोगों ने राजधानी सामरिया समेत उत्तर दिषा के 10 गोत्रों को गुलाम बनाकर मेदियों में ले गए (2 राजा. 17:6)। कुछ को उत्तर में ही बसा दिया (2 राजा. 17:24)। उन वर्शों में अन्यजातिय लोगों ने उनसे विवाह किया। सो यहूदी यह समझते है कि सामरी इनमें से जन्मी हुई मिश्रित जाती है (एज़्रा. 4:1—4)। यह यूहन्ना 4:9 का पृश्ठभूमि है।

4:5

''सूखार नाम सामरिया के एक नगर तक आया,
जो उस भूमि के पास है,
जिसे याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को दिया था''

(उत. 33:18,19; यहो. 24:32)। कई विष्वास करते है कि सूखार ही षेकेम है, परन्तु इस बारे में कोई उल्लेख नए नियम में नही है।

4:6

''याकूब का कूआं भी वहीं था;''

यह वास्तव में 100 फुट गहराई में खोदा हुआ जलाषय था। इसमें बारिष का पानी इकट्टा किया करते थे। इस कुएं के विशय में पुराने नियम में कोई उल्लेख नही हैं।

''यीशु मार्ग का थका हुआ ''

यहाँ पर यीषु का मानवीय स्वभाव हम देखते है। परन्तु लोगों को प्रेम करने में यीषु थके हुए नही थे।

एन ए एस बी, एन के जे वी, जे बी **''समय** छठे घण्टे के लगभग **था''**
एन आर एस वी, टी इ वी **''दोपहर का वक्त था''**

यूहन्ना का समय के प्रयोग के प्रति कई तर्क–वितर्क है। ऐसा लगता है यूहन्ना में दिन का आरम्भ सुबह 6 बजे होता है; इसलिए यीषु अब दिन की सबसे अधिक गर्मी में कुए के पास बैठे हुए है।

4:7 — 14

7. इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आईः यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला।
8. क्योंकि उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे।
9. उस सामरी स्त्री ने उस से कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)।
10. यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।
11. स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, तेरे पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कूआं गहरा हैः तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया?
12. क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिस ने हमें यह कूआं दिया; और आपही अपने सन्तान, और अपने दासों समेत उस में से पीया?
13. यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा।
14. परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगाः वरन

जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।

4:7

''एक सामरी स्त्री आईः''

इस समय में इस स्त्री का वहाँ आना समाज में उसकी पदवी को दर्षाता है।

'' मुझे पानी पिला। ''

यह आज्ञा अति आवष्यकता को दिखाते है।

4:8

यह आयत यहूदियों द्वारा बहिश्कृत जाती की उस स्त्री से निजी वार्तालाप के लिए मंज बनाती है।

4:9

*'' तू यहूदी होकर
मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है?''*

सामरियों द्वारा उपयोग की गई बाल्टि का उपयोग यहूदियो के लिए मना था (लैव.15)। यीषु दो संब्रदायिक बातों का इनकर कर रहे थेः (1) सामरी से बात करना ; (2) सार्वजनिक रूप से एक स्त्री से बातें करना।

4:10

''यदि''

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है जिसे ''वास्तविकता के विरुद्ध ''कहा जाता हैं। अर्थात् कथन गलत है और उसका निशकर्श भी गलत है।

'' जीवन का जल ''

इस षब्द के लिए पुराने नियम की रूपकात्मक पृश्ठभूमि है (भं.सं. 36:9; यषा. 12:3; 44:3; यिर्मा. 2:13; 17:13; जक. 14:8)। यीषु ने इस षब्द को ''आत्मिक जीवन'' के पर्यायवाची षब्द के रूप में प्रयोग किया है। सामरी स्त्री ने सोचा कि कुएं के पानी के बजाए बहता हुआ पानी के बारे में यीषु कह रहे हैं।

4:11

'' हे प्रभु,''

यह यूनानी षब्द *कुरियोस* का संबोधनवाचक षब्द *कुपै* है। इसे नम्र संबोधन (मालिक) तथा धर्मषास्त्रीय कथन (प्रभु) के लिए प्रयोग करते है, यह यीषु की पूर्ण ईष्वरीयता को दर्षाता है जैसे रोमि. 10:13 में है। यहाँ पर नम्र संबोधन है।

'' क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है ?''

यह एक व्यंग्यात्मक कथन है। सामरी स्त्री अपने पूर्वजों की महानता के विशय में घमण्ड कर रही है जिसे एप्रैम और मनष्षे के द्वारा याकूब से मिली है। आष्चर्य की बात है कि इसी बात को ही यीषु भी कह रहे है!

4:13—14

'' जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा,
वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा:''

इसमे मसीह प्रभाव है (यषा. 49:10)। आयत 13 बार बार पीने के विशय में कहती है परन्तु आयत 14 एक ही बार पीने के बारे में कहती है।

'' उस में एक सोता बन जाएगा
जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।''

अर्थात् ''लगातार उमड़ते रहना (यषा. 58:11, यूहन्ना. 7:38)।

4:15 — 26

15. स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे दे ताकि मैं प्यासी न होऊं और न जल भरने को इतनी दूर आऊं।
16. यीशु ने उस से कहा, जा, अपने पति को यहाँ बुला ला।
17. स्त्री ने उत्तर दिया, कि मैं बिना पति की हूँ: यीशु ने उस से कहा, तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूँ।
18. क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिस के पास तू अब है वह भी तेरा पति नहीं; यह तू ने सच कहा है।
19. स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है। 20. हमारे बापदादों ने उसी पहाड़ पर भजन किया: और तुम कहते हो कि वह जगह जहाँ भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।
21. यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।
22. तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसका भजन करते हैं; क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है।
23. परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढ़ता है।

24. परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।
25. स्त्री ने उस से कहा, मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।
26. यीशु ने उस से कहा, मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।

4:15

इस स्त्री ने भी यीशु को नीकुदेमुस के समान भौतिकरूप से समझने की कोषिष की हैं। षिश्यों के लिए भी यह एक सामान्य बात नही थी । उन्होंने कई बार यीशु की रूपकात्मक बातों की गलत व्याख्या की है (4:31—33; 11:11—13)।

4:16

''जा, बुला ला''

यह एक वर्तमानकाल आज्ञा है।

4:17

'' मैं बिना पति की हूँ''

पाप का सामना करना आवष्य है। पाप के प्रति यीशु ने कभी अरोप नहीं लगााया न लगाएंगे।

4:18

'' तू पांच पति कर चुकी है,''

भौतिक स्तर से आत्मिक स्तर की ओर उस स्त्री को लाने के लिए यीशु अपने अलौकिक ज्ञान का प्रयोग कर रहे हैं (1:48)।

4:19

'' मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है। ''

स्त्री अब तक मसीह के ज्ञात में नही पहुँची। इस वाक्यांश के प्रयोग के द्वारा स्त्री परमेष्वर के साथ अपने रिष्ता के बारे में बताने की प्रयास कर रही है (3:2 में नीकुदेमुस के समान)।
अनेक टिप्पणीकार इसे व्यवस्था. 18:15—22 के मसीह के प्रति व्याख्या समझते है।

4:20

'' हमारे बापदादों ने ''

यह इब्राहिम और याकूब की ओर इषारा करते है (उत. 12:7; 33:20)।

" उसी पहाड़ पर भजन किया: "

यह एक धर्मषास्त्रीय तर्क–वितर्क की ओर इषारा करता है कि परमेष्वर (यहोवा) की आराधना कहाँ पर की जाएं। यहूदी बताते है कि मोरियाह पहाड़ पर और सामरी कहते है गेरिज़िम् पहाड़ पर। जब तक धर्म और दर्षनषास्त्र एक को व्यक्तिगत तौर से प्रभावित नही करता तब तक वह उससे सीखते है।

4:21

" कि वह समय आता है कि
तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।
22. तुम जिसे नहीं जानते, उसका भजन करते हो;"

यह उस स्त्री और षिश्यों को हिलाकर रखनेवाला कथन था। यहाँ प्रथमिकता व्यक्ति के लिए है न कि जगह के लिए।

4:22

" क्योंकि उद्धार यहूदियों में से है। "

यह मसीह के उत्भव को साबित करता है (उत.12:2–3; रोमि. 9:4–5)।

4:23

" परन्तु वह समय आता है,
वरन अब भी है "

यह मलाकी 1:11 की विष्वस्तरीय आराधना की ओर संकेत है। यह स्पश्ट है कि यीषु अपने जीवनकाल में और मृत्यु के बाद अनन्तजीवन का तोहफा लाए हैं। यह कथन मसीह के दो आगमन के बीच के संघर्श को बताता है। दो यहूदी युगों का अन्तराल बढ़ गया है। पवित्रात्मा का नया युग वर्तमान है, फिर भी हम पाप और बुराई के उस प्रचीन युग में जी रहे हैं।

"आत्मा और सच्चाई से"

षब्द *"आत्मा"* इस बात को स्पश्ट करता है कि आराधना प्रदेष और षरीर में आधारित नहीं है। षब्द "सच्चाई" के लिए यूनानी भाषा में प्रयोगित षब्द का अर्थ है 'मानसिक विचार' परन्तु इब्रानी भाषा में प्रयोगित षब्द का अर्थ है 'विष्वासयोग्यता' या 'भरोसा'। सच्चाई पर देखिए **विषेश षीर्शक 6:55 तथा 17:3।**

" पिता "

नए नियम में इस प्रकार यीषु को अनोखा पुत्र बताए बिना परमेष्वर को पिता कहना असाधारण है।

" क्योंकि पिता अपने लिये

ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढ़ता है।"

परमेष्वर पतित मानवजाती को अपनाने के लिए अभी भी कार्यषील है (यषा. 55; यहेज. 18:23,32)।

4:24

" परमेश्वर आत्मा है,"

परमेश्वर के चरित्र को दर्षानेवाले कई वाक्यांष यूहन्ना में हैः (1) परमेष्वर प्रेम है; (2) परमेष्वर ज्योति है; (3) परमेष्वर आत्मा है। अर्थात् (1)भौतिक नहीं है; (2) एक जगह में सीमित नहीं है; (3) समय तथा घटना के साथ कोई लेन देन नहीं है; (4) स्वर्गीय बनाम भौमिक।

4:25

"जब वह आएगा,
तो हमें सब बातें बता देगा"

यह संकेत करता है कि सामरी भी एक मसीह की प्रतीक्षा में है। तथा यह भी दर्षाता है कि उन्हें मालूम था कि वो परमेष्वर की पूर्णता को प्रगट करेंगे।

4:26

" मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।"

यह यषा. 52:6 का संकेत है। यह उसकी ईष्वरीयता का साफ सबूत है। यह पुराने नियम के यहोवा (निर्ग. 3:12,14) जो वाचा का नाम है उसकी स्पश्टता है। यीषु ने इस पुराने नियम के नाम का उपयोग इसलिए किया कि लोग जानें कि यीषु में यहोवा का स्पश्ट स्वयं प्रकाषन है (यूहन्ना. 8:24,28,58; 13:19; 18:5 तुलना करें यषा. 41:4; 43:10; 46:4)। इसमें 'मैं हूँ 'का प्रयोग यूहन्ना के " मैं हूँ" कथन जो 6:35,51; 8:12; 10:7,9,11,14; 11:25; 14:6; 15:1,5 से बिल्कुल भिन्न है।

4:27 – 30

27. इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे, कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न कहा, कि तू क्या चाहता है? या किस लिये उस से बातें करता है।
28. तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी।
29. आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दियाः कहीं यह तो मसीह नहीं है?
30. सो वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे।

4:27

''वे अचम्भा करने लगे,
कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; ''

रिवाज के अनुसार कट्टर यहूदी इस प्रकार नही करते थे।

4:28

'' स्त्री ने अपना घड़ा छोड़कर ''

यह गॉव की ओर गवाही देने के लिए दौड़नेवाली उस स्त्री की उत्तेजना को दर्षानेवाला बहुत ही खूबसूरत ऐतिहासिक वचन है (4:29—30)।

4:31 — 38

31. इतने में उसके चेले यीशु से यह बिनती करने लगे, कि हे रब्बी, कुछ खा ले।
32. परन्तु उस ने उन से कहा, मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।
33. तब चेलों ने आपस में कहा, क्या कोई उसके लिये कुछ खाने को लाया है?
34. यीशु ने उन से कहा, मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं।
35. क्या तुम नहीं कहते, कि कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं? देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखे उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं।
36. और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है; ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें।
37. क्योंकि इस पर यह कहावत ठीक बैठती है कि बोनेवाला और है और काटनेवाला और।
38. मैं ने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा, जिस में तुम ने परिश्रम नहीं किया: औरों ने परिश्रम किया और तुम उन के परिश्रम के फल में भागी हुए।

4:34

'' मेरा भोजन यह है,
कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं
और उसका काम पूरा करूं। ''

यूहन्ना अध्याय 17 पिता उससे क्या चाहते है (मरकूस. 10:45; नूका. 19:10;
यूहन्ना 6:29) उसका प्रदर्षन है।
यहाँ के भेद यह हैं कि यीषु को ऊपर से भेजे जाने के कारण, पिता की उपस्थिती से,उनके प्रतिनिधि के रूप में उसका कर्तव्य है कि वो पिता और उनके कार्य को प्रगट करे । यह यूहन्ना का दोहरावाद है: (ऊपर बनाम नीचे; आत्मा बनाम षरीर)।

यीषु के भेजे जाने के प्रति दो भिन्न षब्दो का प्रयोग हुआ है : (1)*पेम्पो* (4:34; 5:23,24,30,37; 6:38,39,40,44; 7:16,18,28,33; 8:16,18,26,29; 9:4; 12:44,45,49; 14:24; 15:21; 16:5) और (2) *अपोस्टलो* (3:17,24; 5:36,38; 6:29,57; 7:29; 8:42; 10:36; 11:42; 17:3,18,21,23,25; 20:21)। 20:21 के आधार पर ये दानों पर्यायवाची षब्द हैं। और यह उस बात की भी पुश्टि करता है कि विष्वासी को पिता के प्रतिनिधियों की तरह छुड़ौती के काम के लिए इस खोए हुए संसार में भेज दिया है (2कुरि. 5:13–21)।

विषेश षीर्शकः परमेष्वर की इच्छा (थेलेमा)

यूहन्ना रचित सुसमाचार

– यीषु पिता की इच्छा को करने आया (4:34; 5:30; 6:38)।
– जिन्हें पिता ने उसे दिया उन्हें जिलाने (6:39)।
– ताकि सब पुत्र पर विष्वास करें (6:29, 40)।
– **इच्छा** को पूरा करने के द्वारा उत्तर मिली हुईं प्रार्थनाएं (9:31; 1यूहन्ना. 5:14)।

समानन्तर सुसमाचार

– **परमेष्वर की इच्छा करना निर्णयात्मक है** (मत्ती. 7:21)।
– **परमेष्वर की इच्छा करना एक को यीषु के भाई या बहन बना देते है** (मत्ती. 12:5; मरकूस. 3:35)।
– यह **परमेष्वर की इच्छा नही है कि कोई नाष हो** (मत्ती. 18:14; 1तिमू. 2:4; 2पत. 3:9)।
– कलवरी यीषु के लिए **परमेष्वर की इच्छा थी** (मत्ती. 26:42; लूका. 22:42)।

पौलूस की पत्रियाँ

– समस्त विष्वासियों की परिपक्कता तथा सेवा (रोमि. 12:1–2)।
– विष्वासी इस दुश्ट युग से छुड़ाए जाएं (गला .1:4)।
– छुटकारे की योजना थी **परमेष्वर की इच्छा** (इफि.1:5,9,11)। – आत्मा से भरपूर जीवन को विष्वासी व्यतित करें (इफि. 5:17)।
– विष्वासी **परमेष्वर की** समझ से भरपूर हों (कुलु.1:9)।
– विष्वासी विषिश्ट तथा संपूर्ण बनाए जाएं (कुलु.4:12)।
– विष्वासी षूद्ध किए जाएं (1थिस्स.4:3)।
– विष्वासी हर एक बातों के लिए धन्यवाद कहें (1थिस्स.5:18)।

पतरस की पत्रियाँ

– विष्वासी सही कर रहा हो (अधिकारियो के आधीन होना) जिसके द्वारा विरोधी के मूँह बन्ध किए जाए (1पत. 2:15)।
– विष्वासी का दुःख उठाना (1पत. 3:17; 4:19)।
– विष्वासी अहम केन्द्रित जीवन नही बिता रहे हैं (1पत. 4:2)।

यूहन्ना की पत्रियाँ

– विष्वासी हमेषा के लिए साथ रहते हैं (1यूह.2:17)।
– प्रार्थना सुनने के लिए विष्वासी की कुंजी (1यूह. 5:14)।

4:35

''कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े है ?''

आत्मिक प्रत्युत्तर के अवसर को बताने के लिए इसे रूपक के तौर पर उपयोग किया है। यीषु के जीवनकाल के दौरान उस पर विष्वास करने के द्वारा कईयों ने उद्धार पाया न केवल पुनरूत्थन के बाद।

4:36–38

''बोनेवाला और है और काटनेवाला और''

यह षायद यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और नबियों की सेवकोई को दर्षाते हैं। पौलूस और अप्पलूस की सेवकोई के बीच का संबन्ध कहने के लिए इसे 1कुरि. 3:6–8 में प्रयोग किया है।

4:39 – 42

39. और उस नगर के बहुत सामरियों ने उस स्त्री के कहने से, जिस ने यह गवाही दी थी, कि उस ने सब कुछ जो मैं ने किया है, मुझे बता दिया, विश्वास किया।
40. तब जब ये सामरी उसके पास आए, तो उस से बिनती करने लगे, कि हमारे यहां रहः सो वह वहाँ दो दिन तक रहा।
41. और उसके वचन के कारण और भी बहुतेरों ने विश्वास किया। 42. और उस स्त्री से कहा, अब हम तेरे कहने की से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।।

4:39

''बहुत सामरियों ने विश्वास किया''

यूहन्ना ने क्रिया ''विष्वास'' का प्रयोग कई अनेक षब्दों के साथ किया हैः ''उसमें विष्वास करो'' (एन), ''उसे विष्वास करो'' (हॉटी), और कई बार ''उस पर विष्वास करो'' (एईस्) या भरोसा करो (2:11,23; 3:16,18,36; 6:29,35,40; 7:5,31,38,48; 8:30; 9:35,36; 10:42; 11:25,26,45,48; 12:11,37,42,44,46,; 14:1,12; 16:9; 17:20)। वास्तव में सामरियों ने उस स्त्री की गवाही (4:39) के कारण विष्वास किया, परन्तु जब उन्होंने व्यक्तिगत तौर से यीषु को सुना जब उन्होंने व्यक्तिगतरूप से उसकी बातों को ग्रहण किया (4:41–42)। यीषु इस्राएल की खोई हुई भेड़ों को ढूंढ़ते हूए आए, पर उसका सुसमाचार सब के लिए है : सामरी, सुरूफिनीकी स्त्री और रोमी सैनिक (रोमि. 10:12; 1कुरि. 12:13; गला. 3:28–29; कुलु. 3:11)। देखिए **विषेश पीर्शक 2:23**

'' उस स्त्री के कहने से,

जिस ने यह गवाही दी थी, "

परमेष्वर इस धर्मविरोधी तथा अनैतिक स्त्री की गवाही को उपयोग में लाए। वो मुझको और आपको उपयोग कर सकता है। यह आयत व्यक्तिगत गवाही के महत्व को बताती है। देखिए **विषेश षीर्शक 1:8 यीषु के प्रति गवाही।**

4:40

एन ए एस बी, एन आर एस वी "पूछने लगे"
एन के जे वी " अनुरोध करने लगे,"
टी इ वी , एन जे बी " बिनती करने लगे,"

यह यूनानी में एक बलपूर्वक षब्द है जिसका अनुवाद " अनुरोध **" या "बिनती" होना चाहिए। इस षब्द की तीव्रता आयत 47 में देखते हैं** (लूका. 4:38)।

4:42

" जगत का उद्धारकर्ता "

इस षब्दसमूह का प्रयोग 4:14 में भी है। इसे मानवजाती के प्रति परमेष्वर के प्रेम को दर्षाने के लिए प्रयोग किया गया है (1तिमु.2:6; 1यूह.2:2)। पहली षताब्दी में इसे कैसर के लिए प्रयोग किया करते थे। मसीहियों ने यीषु के लिए इस षीर्शक का प्रयोग किया जिस कारण रोमियों द्वारा सतावट उनके बीच में आई। यह षीर्शक यह भी प्रगट कर रहा है कि किस प्रकार नए नियम के लेखकों ने पिता परमेष्वर के षीर्शक को यीषु के लिए प्रयोग किया है (तीतुस. 1:3–4; 2:10–13; 3:4–6)।

4:43 – 45

43. फिर उन दो दिनों के बाद वह वहाँ से कूच करके गलील को गया।
44. क्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी, कि भविष्यद्वक्ता अपने देश में आदर नहीं पाता।
45. जब वह गलील में आया, तो गलीली आनन्द के साथ उस से मिले; क्योंकि जितने काम उस ने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, उन्हों ने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे।

4:43

यह आयत समानान्तर सुसमाचार से बढ़कर बताती है कि यीषु किस प्रकार यहूदिया और गलील में स्वतंत्रता से चलते रहे।

4:44

यह एक असाधारण आयत है क्योंकि पूर्ववर्ती आयतें इसके साथ मेल खाती हैं। यह षायद आगे आरम्भ होनेवाली गलील की सेवकोई का संकेत हो सकती है (4:3)। इस कहावत को मत्ती. 13:57; मरकूस. 6:4; लूका. 4:24 में भी पाते हैं। समानन्तर सुसमाचार में यह गलील को दर्षाता है पर यहाँ यहूदिया की ओर संकेत करता है।

4:45

" गलीली आनन्द के साथ उस से मिले; "

क्योंकि जितने काम उस ने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, उन्हों ने उन सब को देखा था। यह इस बात को दर्षाता है कि उन्होंने कुछ हद तक (4:48) यीषु को मसीह के रूप में ग्रहण किया है (1:12)।

4:46 – 54

46. तब वह फिर गलील के काना में आया, जहाँ उस ने पानी को दाख रस बनाया थाः और राजा का कर्मचारी था जिस का पुत्र कफरनहूम में बीमार था।
47. वह यह सुनकर कि यीशु यहूदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उस से बिनती करने लगा कि चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर देः क्योंकि वह मरने पर था।
48. यीशु ने उस से कहा, जब तक तुम चिन्ह और अद्‌भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे।
49. राजा के कर्मचारी ने उस से कहा; हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने के पहिले चल।
50. यीशु ने उस से कहा, जा, तेरा पुत्र जीवित हैः उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया।
51. वह मार्ग में जा रहा था, कि उसके दास उस से आ मिले और कहने लगे कि तेरा लड़का जीवित है।
52. उस न उन से पूछा कि किस घड़ी वह अच्दा होने लगा? उन्हों ने उस से कहा, कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उतर गया।
53. तब पिता जान गया, कि यह उसी घड़ी हुआ जिस घड़ी यीशु ने उस से कहा, तेरा पुत्र जीवित है, और उस ने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया।
54. यह दूसरा आश्चर्यकर्म था, जो यीशु ने यहूदिया से गलील में आकर दिखाया।

4:46

एन ए एस बी, एन आर एस वी, एन जे बी "एक राजकीय अधिकारी"
एन के जे वी " राजा का एक कर्मचारी "
टी इ वी "सरकारी कर्मचारी "

यह हेरोद के घराने में तयनात **सरकारी** कर्मचारी थे।

4:48

'' जब तक तुम चिन्ह और अद्‌भुत काम न देखोगे
तब तक कदापि विश्वास न करोगे। ''

यह एक तीसरे दर्जे का षर्तीय वाक्य है,जिसमें दो नकारात्मक बातें जुड़ी हैं। यीषु उस व्यक्ति को बहुवचन में संबोधित कर रहे है। यहूदी अद्‌भुत काम की खोज में थे (2:18; 6:2, 30; मत्ती. 12:38; 16:1)। परन्तु हेरोद के इस सेवक ने अद्‌भुत काम से पहले ही विष्वास किया।

4:50

यह आयत यूहन्ना रचित सुसमाचार का निचोड़ हैः यीषु पर विष्वास करें, उसके वचन पर विष्वास करें, उसके कार्यों पर विष्वास करें,उसके व्यक्तित्व पर विष्वास करें, यीषु के वायदे को बिना देखे इस व्यक्ति ने विष्वास किया।

4:53

'' और उस ने और उसके सारे घराने ने
विश्वास किया। ''

यह पहली लिखित घटना है जहाँ एक व्यक्ति के विष्वास के द्वारा उसके पूरे घराने पर असर पडा हैः कुरनेलियुस (प्ररित. 10:44—48); लुदिया (प्ररित. 16:15); दरोगा (प्ररित. 16:31—34); क्रिसपुस (प्ररित. 18:8)और स्तिफानूस (1कुरि. 1:16)। घराने समेत उद्धार पाने के विशय में आज भी विचार—विमर्ष जारी है और यह अवष्य है कि उद्धार के लिए प्रत्येक यीषु को ग्रहण व्यक्तिगतरूप से करे । यह भी सही है कि हमारे जीवन में दूसरों की भूमिका हमारे चुनाव को भी प्रभावित करती है।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. क्यों यीषु ने यहूदिया प्रान्तों को छोड़ा ?
2. क्या यूहन्ना यहूदी या रोमी समय का उपयोग करता है ?
3. एक सामरी स्त्री के साथ यीषु की बातें करना इतना महत्वपूर्ण क्यों है ?
4. आज के संगठनो के साथ आयत 20 का क्या प्रभाव है ?
5. आयत 26 के षुरूवाती कथन का विवरण करें
6. क्या गलीली ने सही विष्वास का प्रयोग किया ?

<u>यूहन्ना – 5</u>

<u>पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद</u>

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
कुंड के पास चंगाई	बैतहसदा कुंड के पास एक मनुश्य को चंगाई	साबत के दिन में एक लंगडे को चंगाई	कुंड के पास चंगाई	बैतहसदा कुंड के पास एक बीमार का चंगा होना
5:1–9क	5:1–15	5:1	5:1–6	5:1–9क
		5:2–9क		
			5:7	
			5:8–9क	
5:9ख–18		5:9ख–18	5:9ख–10	5:9ख–18
			5:11	
			5:12	
			5:13	
			5:14	
			5:15–17	
	पिता और पुत्र का आदर		5:18	
पुत्र का अधिकार	5:16–23	परमेष्वर के साथ यीषु के संबन्ध	पुत्र का अधिकार	
5:19–29		5:19–24	5:19–23	5:19–47
	पुत्र के द्वारा जीवन और दण्ड			
	5:24–30		5:24–29	
		5:25–29		
		परमेष्वर के साथ यीषु के संबन्ध का सबूत	यीषु के प्रति गवाही	
5:30		5:30	5:30	
यीषु के प्रति गवाही	4 प्रकार की गवाही			
5:31–40	5:31–47	5:31–38	5:31–40	

	यीशु अपने तोहफे को ठुकराए हुओं को डांटते हैं 5:39—47	
5:41—47		5:31—47

<u>*अध्ययन कालचक्र तीन*</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>षब्द और वाक्यांष अध्ययन</u>

5:1—9क

1. इन बातों के पीछे यहूदियों का एक पर्व हुआ और यीशु यरूशलेम को गया।
2. यरूशलेम में भेड़—फाटक के पास एक कुण्ड है जो इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है, और उसके पांच ओसारे हैं।
3. इन में बहुत से बीमार, अन्धे, लंगड़े और सूखे अंगवाले (पानी के हिलने की आशा में) पड़े रहते थे।
4. (क्योंकि नियुक्ति समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थेः पानी हिलते ही जो कोई पहिले उतरता वह चंगा हो जाता था चाहे उसकी कोई बीमारी क्यों न हो।)
5. वहाँ एक मनुष्य था, जो अड़तीस वर्ष से बीमारी में पड़ा था।

6. यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उस से पूछा, क्या तू चंगा होना चाहता है?
7. उस बीमार ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारे; परन्तु मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझ से पहिले उतर पड़ता है।
8. यीशु ने उस से कहा, उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर।
9. वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया, और अपनी खाट उठाकर चलने फिरने लगा।

5:1

''एक पर्व ''

कुछ प्राचीन यूनानी हस्तलेखो में, आलेफ,सी, ''पर्व'' है, परन्तु अधिकतर यूनानी हस्तलेखो में ''एक पर्व '' है। यहूदी पुरूशों के लिए 3 वार्शिक पर्व में षामिल होना आवष्यक था (लैव.23): (1) फसह, (2) मिलापवाला तम्बू, और (3)पेन्तेकुस्त का पर्व। यदि यह फसह के बारे में है तो यीषु ने 3 साल के बजाय 4 साल सेवा की (2:13,23; 6:4; 12:1)। पारम्परिक रूप से विष्वास किया जाता है कि यूहन्ना के द्वारा बपतिस्मा के बाद यीषु ने 3 साल सेवा की। यह यूहन्ना में उल्लेखित फसह पर्व की गिनती से किया जाता है।

5:2

'' भेड़–फाटक के पास ''

यरूषलेम दीवार के उत्तरी पष्चिमी भाग में है भेड़–फाटक। इसका उल्लेख नेहम्याह के समय में मन्दिर तथा दीवार के पुनःनिर्माण में है (नेह.3:1,32; 12:39)।

एन ए एस बी, एन के जे वी **''एक कुंड जो इब्रानी में** बैतहसदा कहलाता है''
एन आर एस वी '' इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है,''
टी इ वी **''जो** इब्रानी भाषा में बैतहसदा कहलाता है''
एन जे बी **'' इब्रानी में** बैतहसदा कहलाता है''

इस षब्द का अर्थ है ''आनन्द का भवन'' या ''दोहरा श्रोत का भवन''। वर्तमान में यह *संत अन्ने* के कुंड के नाम से जाना जाता है।

5:4

यह आयत बाद में लिखकर जोडी हुई टिप्पणी है जो कुछ निम्नलिखित बातों को विवरण करने का प्रयास करती है: (1) कुंड के पास सब बीमारो की उपस्थिती ; (2) वह मनुश्य एक लम्बे अरसे तक वहाँ क्यों था; तथा वह क्यो चाहता है कि उसे कोई पानी में डाले (5:7)। यह वास्तव में एक यहूदी कथन है, क्योकि (1) यह हस्तलेखों में नही है; (2) इसे कोश्ठक में दिया गया। यहाँ कई ऐसे षब्दो का प्रयोग हुआ है जो यूहन्ना के नही है। इसे केजेवी, ***एन ए एस बी, एन के जे वी*** में पाते है, पर ***एन आर एस वी*** और *एन ऐ वी* में छोड दिया गया हैं।

5:5

यीषु ने इस व्यक्ति का चुनाव क्यों किया यह अज्ञात है। इस मनुश्य की तरफ से थोड़े से विष्वास की अवष्यकता है। वास्तव में यीषु यहाँ यहूदियों का सामना कर रहे हैं। इस घटना ने उसे मसीह होने का दावा करने का अवसर प्रदान किया। यषा.35:6 का अन्तिम दिन षास्त्र अनुच्छेद इस चंगाई के साथ जुड़ा हुआ है।

5:8

''उठ, अपनी खाट उठाकर चल फिर''

यह आदेषों की श्रंगला है।

यह खाट कपडे से बनाया हुआ गद्या है जिसे दिन के समय बॉटा जाता था (मरकूस. 2:4,9,11,12; 6:55; प्रेरित. 9:33)।

5:10—18

10. वह सब्त का दिन था। इसलिये यहूदी उस से, जो चंगा हुआ था, कहने लगे, कि आज तो सब्त का दिन है, तुझे खाट उठानी उचित्त नहीं।
11. उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि जिस ने मुझे चंगा किया, उसी ने मुझ से कहा, अपनी खाट उठाकर चल फिर।
12. उन्हों ने उस से पूछा वह कौन मनुष्य है जिस ने तुझ से कहा, खाट उठाकर चल फिर?
13. परन्तु जो चंगा हो गया था, वह नहीं जानता था वह कौन है; क्योंकि उस जगह में भीड़ होने के कारण यीशु वहाँ से हट गया था।
14. इन बातों के बाद वह यीशु को मन्दिर में मिला, तब उस न उस से कहा, देख, तू तो चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इस से कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े।
15. उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया, कि जिस ने मुझे चंगा किया, वह यीशु है।
16. इस कारण यहूदी यीशु को सताने लगे, क्योंकि वह ऐसे ऐसे काम सब्त के दिन करता था।
17. इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ।
18. इस कारण यहूदी और भी अधिक उसके मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि को तोड़ता, परन्तु परमेश्वर को अपना पिता कह कर, अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था।

5:10

''वह सब्त का दिन था''

इस मनुश्य के ठीक होने से खुष होने की बजाय यहूदी अगुवे यीषु के सब्त की विधियों को तोड़ने के कारण परेषान होगए (5:16,18; मत्ती. 7:1—232)।
यीषु का चंगाई कार्य सब्त के दिन में दो प्रकार के विवरण को प्रस्तुत करता है : (1) यीषु प्रतिदिन चंगाा करते रहे परन्तु सब्त के दिन का विरोध हुआ है; या (2) अपने धर्मषास्त्रीय विचारों को पेष करने के लिए यूहन्ना ने केवल सब्त दिन की चंगाईयों का उपयोग किया है।

यीषु ने अधिकतर सब्त के दिन चंगा किया है (मत्ती. 12:9–14; मरकूस. 1:29–31; 3:1–6; लूका. 6:6–11; 14:1–6; यूहन्ना. 5:9–18; 9:14)। यीषु ने सब्त के दिन दुश्टात्माओं को निकाला (मरकूस. 1:21–28; लूका. 13:17)। यीषु ने सब्त के दिन में षिश्यों द्वारा भोजन करने को सही ठहराया (मत्ती. 12:1:8; मरकूस. 2:23–28; लूका. 6:6–15)। सब्त के दिन आराधनालय में यीषु ने संघर्शात्मक कार्यों को किया (लूका. 4:16–30; यूह. 7:14–24)।

5:13

''यीशु वहाँ से हट गया था। ''

षाब्दिक अर्थ है ''सिर एक तरफ मुड़ना''। यीषु अपने दिनों में आम यहूदी की तरह दिखते थे। वो भीड़ के बीच में लुप्त हो गए।

5:14

एन ए एस बी, एन आर एस वी, एन जे बी ''आगे पाप मत करना ''
एन के जे वी '' कभी पाप मत करना ''
टी इ वी ''इसलिए पाप मत करना ''

अर्थत् एक काम जो प्रगति पर है उसे रोक देना। यहूदी धर्मषास्त्रियों की माने तो रोग पाप का नतीजा है (याकूब. 5:14–15)। यह वचन तमाम रोगों के विशय नही कहता क्योकि यूह.9 में जन्म से अन्धे के साथ यीषु के व्यवहार को देखिए तथा लूका. 13:1–4 में यीषु के कथन भी।
यीषु अभी भी उस व्यक्ति के आत्मिक जीवन के साथ कार्य कर रहे है। हमारे काम हृदय तथा विष्वास में प्रतिबिंबित होते है। बाइबलीय विष्वास सकर्मक तथा कर्तापरक दोनों है, भरोसा तथा कार्य।
वर्तमान में कलीसिया के अन्दर केवल षारीरिक चंगाई पर अधिक जोर है। हाँ, परमेष्वर अवष्य चंगा करता है। परन्तु दैवीय चंगाई के द्वारा जीवनषैली तथा प्रथमिकता में आत्मिक परीवर्तन आना चाहिए। एक अच्छा प्रष्न होगा कि ''आप किस लिए चंगा होना चाहते हैं ?''

5:15

'' उस मनुष्य ने जाकर यहूदियों से कह दिया ''

उसके यहूदी अधिकारियों से कहने का तात्पर्य हमें नही मालूम परन्तु यह इस बात का ज़िक्र करता है कि चंगााई हमेषा विषवस से उत्पन्न नही होती।

5:17

'' मेरा पिता अब तक काम करता है,
और मैं भी काम करता हूँ। ''

तात्पर्य है कि परमेष्वर कभी भी विश्राम नहीं करते न यीषु करते हैं। यह, वास्तव में, परमेष्वर तथा यीषु के बीच का रिष्ते की सही समझ को बताता है (5:19–29)।
यहूदियों का एक परमेष्वर विचार (व्यवस्था 6:4)प्रायोगिक रूप से इस संसार के घटना में कार्यार्थ है (न्यायी. 9:23; अय्यूब. 2:10; सभो. 7:14; यषा. 45:7; 59:16; विलाप. 3:33–38; अमोस. 3:6)। हर एक कार्य वास्तव में

एक सच्चे परमेष्वर का ही है। जब यीषु ने इस संसार पे कार्यों का युगल अभिकर्ता होने की बात कही तब उसने दैवीय कारणत्व में द्वैतवाद को सम्मिलित किया। यह त्रीएकता के सबसे मुष्किल प्रष्न है। एक परमेष्वर, पर तीन प्रगटीकरण (मत्ती. 3:16–17; 28:19; यूह. 14:26; प्रेरित. 2:33–34; रोमि.8:9–10; 1कुरि. 12:4–6; 2कुरि. 1:21–22; 13:14; गला. 4:4; इफि. 1: 3–14; 2:18; 4:4–6; तीतुस. 3:4–6; 1पत. 1:2)।

5:18

" इस कारण यहूदी
उसे मार डालने का प्रयत्न करने लगे,"

यहूदी यीषु को मारने के लिए दो कारण है: (1) उसने सार्वजनिक रूप से सब्त के परम्परा *(तालमूद)* को तोड़ा; उसके कथनो से यह प्रगट होगया कि वो स्वयं को परमेष्वर के तुल्य बना रहे है (8:58–59; 10:33; 19:7)।

5:19 – 23

19. इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।
20. क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है; और वह इन से भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम अचम्भा करो।
21. क्योकि जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है उन्हें जिलाता है।
22. और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है।
23. इसलिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें: जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिस ने उसे भेजा है, आदर नहीं करता।

5:19,24,25

" सच सच "

यह षाब्दिक रूप से *"आमीन, आमीन"* है। यह इब्रानी षब्द का अनुवाद है। इसका अर्थ है विष्वासयोग्यता। इसे कुछ भरोसेमन्द वाक्यों को पका करने के लिए प्रयोग किया। केवल यीषु ने ही इस षब्द का प्रसोग किया है। उन्होंने कुछ विषेश वाक्यों के लिए प्रस्तााावना के रूप में इसे प्रयोग किया है। केवल यीषु ने ही "आमीन" षब्द को दोहराया है।

5:19

''पुत्र''

अगले कुछ आयतो में धर्मषास्त्रीय विषेशता से इस षब्द को दोहराया गया है। इस छोटे से अनुच्छेद में 8 बार इसका उल्लेख है। उन्हें पिता और अपने बीच का संबन्ध के बारे में अनोखी समझ थीं तथा वह ''मनुश्य के पुत्र'' और ''परमेष्वर के पुत्र'' षीर्शकों में प्रतिबिंबित होता है।

'' पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, ''

नए नियम में कई बार यीषु को असत्याभास रंग–ढंग से प्रस्तुत करता है; कुछ आयतों में वो पिता के साथ है (1:1; 5:18; 10:30,34–38; 14:9–10; 20:28) तो कुछ में वो परमेष्वर से अलग हैं(1:2,14,18; 5:19–23; 8:28; 10:25,29; 14:10,11,12,13,16; 17:1–2); तथा तो कुछ में वो परमेष्वर से कम है (5:20,30; 8:28; 12:49; 14:28; 15:10,19,24; 17:8) यह षायद ऐसे कहने का प्रयास करते है कि यीषु परिपूर्ण रूप से दैवीय है साथ ही साथ वो अलग और विषेश दैवीय प्रकाषन है।
द जेरोम बिब्लिकल कमेन्टरी का सपादक रेयमेन्ट इ. ब्राउन के अनुसार '' इसे यीषु की अधीनता का मानवीय स्वाभाव समझकर इसका गूढ़ार्थ को न ठुकराए ऐसे करने से यूहन्ना की मसीह षास्त्र के सर्वश्रेश्ठ बात को खो देंगे। यहाँ यीषु, पुत्र और पिता के बीच के तालमेल को दर्षाता है जिसके लिए कुदरत की पहचान होना आवष्यक है। ठीक इसी प्रक्रिया को 16:12 में पवित्रात्मा के साथ बताया गया है। इस सुसमाचर के अन्दर त्रीएकता को हम अव्यवहारिक धर्मषास्त्र के समान नही पाते है, यह हमेषा हमें उद्धारषास्त्र की ओर ले जाता है।''(पृश्ठ.434)

'' केवल वह जो पिता को करते देखता है, ''

मानवजाती ने कभी भी पिता को नही देखा (5:37; 1:18), परन्तु पुत्र उनके साथ का व्यक्तिगत, घनिश्ठ,जानकारी के बरे में कह रहे है (1:1–3)।

'' क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है
उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। ''

यीषु के काम तथा षिक्षा के द्वारा मानव अदृष्य परमेष्वर को देख सकता है (कुलु. 1:15; इब्रा. 1:3)।

5:20

'' क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है
और जो जो काम वह आप करता है,
वह सब उसे दिखाता है;''

यह जारी रहनेवाला काम को बताता है। प्रीति के लिए यूनानी षब्द *फिलियो* का प्रयोग हुआ है। 3:35 के समान *अगापेयो* का प्रतीक्षा आप यहाँ कर रहे होंगे। यूनानी भाशा में ये दोनों पर्यायवाची षब्द है।

'' बड़े काम ''

यह प्रसंग का अर्थ मरे हुओं को उठाना (5:21,25–26) तथा न्याय करना (5:22,27) है।

5:21

" क्योकि जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी "

पुराने नियम में केवल यहोवा ही जीवन देते है (व्यवस्था. 32:39)। इस कथन का अर्थ है यीषु यहोवा के तुल्य है (5:26)।
अब यीषु अनन्तजीवन देते है (2कुरि. 5:17; कुलु.1:13) जो नए युग में प्राप्त होनेवाली षारीरिक नए जीवन का प्रगटीकरण है (1 थिस्स. 4:13–18) । ऐसा लगता है कि यूहन्ना का मुलाकात यीषु के साथ व्यक्तिगत तौर से हुआ है और भविश्य में भीड़ के साथ मुलाकात होनेवाली है (उद्धार तथा न्याय दोनों)।

5:22

यह इस बात का उल्लेख करता है कि न्याय का जिम्मा पुत्र के कन्धों पर है (5:27; 9:39; प्ररित. 10:42;17:31; 2तिमु. 4:1; 1पत. 4:5)। इस आयत और 13:17 के बीच का विरोधाभास यह है कि इन आक्रि दिनों में यीषु किसी का न्याय नही करते परन्तु मनुश्य यीषु के प्रति अपने ही प्रत्युत्तर के साथ स्वयं का न्याय करते है। यीषु का भविश्यात्मक न्याय (अविष्वासियों का) एक का यीषु को अंगीकार करने या तिरस्कार करने पर आधारित है।

5:23

" इसलिये कि सब लोग पुत्र का भी आदर करें:"

षब्द "सब" भविश्यात्मक न्याय को दर्षाता है (फिलि.2:9–11)।

" जो पुत्र का आदर नहीं करता,
वह पिता का जिस ने उसे भेजा है,
आदर नहीं करता।"

यह कथन 1यूह.5:12 के सदृष्य में है। कोई भी पुत्र को जाने बिना परमेष्वर को जान नहीं सकता, स्पश्टरूप से जो पुत्र की आराधना और आदर नही करते वह पिता की भी आराधना और आदर नही कर सकते।

5 :24 – 29

24. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
25. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।
26. क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे।
27. बरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है।

28. इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।
29. जिन्हों ने भलाई की है वे जीवन के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्हों ने बुराई की है वे दंड के पुनरूत्थान के लिये जी उठेंगे।

<u>*5:24*</u>

<u>*'' सच सच ''*</u>

यूहन्ना का अनोखा दोहराना (5:25) विषेश कथनो के लिए खास प्रस्तावना। देखिए नोट 1:51।

<u>*'' जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है,*</u>
<u>*अनन्त जीवन उसका है,''*</u>

पिता पर के विष्वास की विषेशता पुत्र पर के विष्वास से प्रगट की जा सकती है (1यूह. 5:9–12।) समानान्तर सुसमाचार में अनन्तजीवन एक भविश्यात्मक बात है पर यूहन्ना में अब की वास्तविकता है। षब्द ''सुनना'' इब्रानी षब्द ''षेमा '' से आया है, जिसका अर्थ है ''मानने के लिए सुनना'' (व्यवस्था.6:4)।

<u>*'' मेरे भेजनेवाले ''*</u>

षब्द ''अपॉस्टल'' का मूल षब्द है ''अपॅस्टलो''। इस षब्द का प्रयोग रबियों के द्वारा किए किसी खास काम के साथ भेजा जाता है। इस षब्द का प्रयोग यूहन्ना में पिता ने अपने पुत्र को प्रतिनिधि के रूप में भेजा इस बात की पुश्टि के लिए किया गया। देखिए नोट 4:34।

<u>*'' परन्तु वह मृत्यु से पार होकर*</u>
<u>*जीवन में प्रवेश कर चुका है। ''*</u>

परमेष्वर का राज्य अब है तथा भविश्य में है वैसे अनन्तजीवन भी (5:25–26)। परमेष्वर के राज्य की उपस्थिति के लिए आयत 25 ठोस सबूत है।

<u>*5:25*</u>

<u>*'' जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे,''*</u>

आयत 25 आत्मिकरूप से मृतको को दर्षाता है; और आयत 29 षारीरिक रूप से मृतको को दर्षाता है । बाइबल तीन प्रकार की मृत्यु के बारे में उल्लेख करती हैः (1) आत्मिक मृत्यु (उत.3); (2) षारीरिक मृत्यु (उत.5); और (3) अनन्तकाल की मृत्यु (इफि.2:2; प्रका. 2:11;20:6,14) या आग की झील, नरक (गेहन्ना)।
'' परमेश्वर के पुत्र'' शब्दसमूह का कम प्रयोग हुआ, क्योंकि यूनानी धार्मिक विचार के आधार पर उनके देवता स्त्रियों को ले जाकर षादी करते थे या तो रखैल बनाते थे। यीषु की पदवी '' परमेश्वर के पुत्र''षरीरिक पीढ़ी को नही बता रही है परन्तु एक घनिश्ठ संबन्ध को दर्षाती है। यह एक यहूदी पारिवारिक रूपक है। यीषु पुराने नियम की बातों को लेकर अपनी दैवीयता को स्पश्ट रूप से साबित कर रहे हैं (5:21,26)।

<u>*5:26*</u>

" क्योंकि जिस रीति से
पिता अपने आप में जीवन रखता है,"

यह प्राथमिक रूप से यहोवा षब्द का अर्थ है। इस वाचा के नाम का अर्थ है हमेषा के लिए जीवित तथा एकमात्र जीवित।

" उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है
कि अपने आप में जीवन रखे। "

यह यीषु की दैवीयता का मजबूत निष्चय है (1:4; 1यूह. 5:11)।

5:27

न्याय करने के लिए योग्य (एक्सूसिया, अधिकार होना, 10:18; 17:2; 19:11) इसलिए कि वो परिपूर्ण परमेष्वर तथा परिपूर्ण मनुश्य हैं । मनुश्य के पुत्र के साथ कोई विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग नहीं है (यहेज. 2:1; भ.सं. 8:4)। वो हमे परिपूर्णता से जानते हैं (इब्रा.4:15); वो परिपूर्णता से परमेष्वर को जानते हैं (1:18; 5:30)।

5:28

" इस से अचम्भा मत करो,"

अर्थात् जो कार्य प्रगति पर है उसे रोकें। क्योंकि यीषु के पहले कथन में जिस प्रकार यहूदी अगुवों ने अचम्भा किया वैसे ही आनेवाली बात भी उन्हें ओर अचम्भित करेगी।

'' जितने कब्रों में हैं,
उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। "

यह यीषु के पुनरागमन की पुकार के बारे में है (1थिस्स. 4:16)।यह 2कुरि.5:8 के बारे में नही है। यहाँ पुत्र के विष्वस्तरीय न्याय तथा अधिकार का जिक्र है।
अधिकतर प्रसंग यहाँ के और अब के आत्मिक जीवन के बारे में हैं। साथ ही साथ भविश्यात्मक घटना के विशय मे भी हैं।परमेष्वर का राज्य है पर अब नहीं के संघर्श का विवरण समानान्तर सुसमाचार, विषेशरूप से यूहन्ना रचित सुसमाचार में है।

5:29

बइबल धर्मी तथा दुश्ट के पुनरुत्थान के विशय मे सिखाती है (दानि.12:2; मत्ती. 25:46; प्ररित. 24:15) अधिकतर अनुच्छेद केवल धर्मियो के पुनरुत्थान पर जिक्र करते हैं (अय्यूब. 19:23–29; यषा. 26:19; यूह. 6:39–40,44,54; 11:24–25; 1कुरि. 15:50–58)।

यह हमारे कामों पर आधारित न्याय के बारे में नही परन्तु विष्वासी की जीवनषैली पर आधारित होंगे (मत्ती. 25:31–46; गला.5:16–21)। यह परमेष्वर के वचन और संसार के उसूल है कि जो हम बोते हैं वही हम काटते हैं (नीति.11:24–25; गला. 6:6)। पुराने नियम के अनुसार " परमेष्वर एक एक जन को उसके काम के अनुसार फल देता है।।" (भ.सं. 62:12; 28:4; अय्यूब. 34:15; नीति. 24:12; मत्ती. 16:27; रोमि. 2:6–8; 1कुरि. 3:8; 2कूरि. 5:10; इफि. 6:8; कुलु. 3:25)।

5:30
मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ।

5:30

यीषु परमेष्वर के देहधारी लॉगॉस् पिता के अधीन रहने में सहमत थे।आयत 19 में अधीनता पर विषेश जोर देखने को मिलता है (पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता,)। यह इस बात को नही कहता है कि यीषु पिता से कम है, परन्तु छुटकारे के काम को त्रीएकता के तीनो व्यक्तित्व, पिता, पुत्र, पवित्रात्मा, में बाँटा गया।

5:31 – 47

31. यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूं; तो मेरी गवाही सच्ची नहीं।
32. एक और है जो मेरी गवाही देता है वह सच्ची है।
33. तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उस ने सच्चाई की गवाही दी है।
34. परन्तु मैं अपने विषय में मनुष्य की गवाही नहीं चाहता; तौभी मैं ये बातें इसलिये कहता हूँ, कि तुम्हें उद्धार मिले।
35. वह जो जलता और चमकता हुआ दीपक था; और तुम्हें कुछ देर तक उस की ज्योति में, मगन होना अच्छा लगा।
36. परन्तु मेरे पास जो गवाही है वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है: क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है।
37. और पिता जिस ने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है: तुम ने न कभी उसका शब्द सुना, और न उसका रूप देखा है।
38. और उसके वचन को मन में स्थिर नहीं रखते क्योंकि जिसे उस ने भेजा उस की प्रतीति नहीं करते।
39. तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है।
40. फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते।
41. मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता।
42. परन्तु मैं तुम्हें जानता हूँ, कि तुम में परमेश्वर का प्रेम नहीं।
43. मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि कोई और अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे।
44. तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किसी प्रकार विश्वास कर सकते हो? 45. यह न समझो, कि मैं पिता के साम्हने तुम पर दोष लगाऊंगा: तुम पर दोष लगानेवाला तो है, अर्थात् मूसा जिस पर तुम ने भरोसा रखा
46. क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिये कि उस ने मेरे विषय में लिखा है।
47. परन्तु यदि तुम उस की लिखी हुई बातों की प्रतीति नहीं करते, तो मेरी बातों की क्योंकर प्रतीति करोगे।।

5:31

पुराने नियम में किसी बात को प्रमाणित करना है तो 2 गवाहो की अवष्यकता है (गिनती. 35:30; वयवस्था. 19:15)। इस संर्दभ में यीषु अपने लिए 5 गवाहों को प्रस्तुत करते हैं ; (1)पिता (5:32,37); (2) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (5:33; 1:19–51); (3) यीषु के अपने कार्य (5:36); (4) पवित्रवचन (5:39); तथा (5) मूसा (5:46) जिसका उल्लेख व्यवस्था. 18:15–22 में है।

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जो एक मजबूत कार्य को दर्षाता है।

''तो मेरी गवाही सच्ची नहीं''

यह 8:14 के विरोध मे लगता है। परन्तु संदर्भ प्रगट करता है कि ये दानों भिन्न अवसर के हैं। यहाँ कहते है गवाही देने के लिए ओर भी गवाह हैं, परन्तु 8:14 में केवल यीषु ही काफी है।

5:32

''एक और है जो मेरी गवाही देता है ''

षब्द अल्लोस, जिसका अर्थ है ''एक ही जैसा दूसरा '' के प्रयोग के कारण यह पिता परमेष्वर की ओर इषारा करता है (1यूह.5:9)। देखिए **विषेश षीर्शक यीषु के प्रति गवही 1:8।**

5:33

''यूहन्ना''

यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला के लिए है।

5:34

'' मैं ये बातें इसलिये कहता हूँ,
कि तुम्हें उद्धार मिले। ''

परमेष्वार या पवित्रात्मा के अभिकर्ता की ओर संकेत करता है (6:44, 65)। सुसमपचार ऐतिहासिक जीवनी नही पर षभ सन्देष की उद्घोशणा है (20:30–31)।

5:35

''वो दीपक था;''(1:6–8)।

5:36

'' काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं,''

मसीह के प्रति पुराने नियम की भविश्यद्वाणियों का पूर्तीकरण था यीषु के काम। यीषु के समय की यहूदियों ने दस बातों को जान लिया होगाः अन्धे को आँखें, दरिद्र को खिलाना, लंगडे को ठीक करना ()। यीषु की षिक्षा का अधिकार, धार्मिक जीवनषैली, तरस, अचम्भित चमत्कार () , ये सब इस बात की पुश्टि करतें हैं कि वे कौन है, कहाँ से आए और उसे किसने भेजा ?

5:37

'' तुम ने न कभी उसका शब्द सुना,
और न उसका रूप देखा है। ''

यीषु कह रहे है कि षायद यहूदी ने परमेष्वर को वचन के द्वारा और व्यक्तिगत आराधना के द्वारा जाना होगा परन्तु उसने उन्हें पहचाना नहीं()। पुराने नियम में परमेष्वार को देखने का अर्थ है मृत्यु को आमन्त्रित करना। यहोवा से आमने सामने बात किए हुए एकमात्र व्यक्ति मूसा है वो भी बादल की छाया में रहकर। कईयों ने सोचा निर्ग.33:23 के विरोध में है यूह.1:18। इब्रानी भाशा में निर्गमन की घटना का अर्थ है ''महिमा'' न कि षारीरिक प्रगटीकरण।

5:38

'' उसके वचन को मन में स्थिर रखते ''

यूहन्ना के लेखो में दो षक्तिषाली रूपक है। परमेष्वार का वचन *(लॉगॉस)* ग्रहण करना, एक बार ग्रहण किया तो (1:27) उसमें बने रहना (8:31; 15:4,5,6,7,10; 1यूह.2:6,10,14,17,24,27,28; 3:6,14,15,24)। यीषु परमेष्वार का परिपूर्ण प्रकाषन है (1:1–18; फिलि. 2:6–11; कुलु. 1:15–17; इब्रा. 1:1–3)। उद्धार की स्थिरता स्थाई रहनेवाला रिष्ता (उत्.4:1; यिर्मा.1:5) तथा सुसमाचार सच्चाई की निष्चयता से है (2यूह. 9)।

धीरज के साथ घनिश्ठ, व्यक्तिगत रिष्ते को दर्षाने के लिए बने रहना षब्द का प्रयोग किया है। सही उद्धार की षर्त है बने रहना (अध्याय. 15)। कई अर्थ से यूहन्ना ने इसका उपयोग कियाः

1. पिता में पुत्र (10:38; 14:10,11,20,21; 17:21)
2. पुत्र में पिता (10:38;14:10,11,21; 17:21,23)
3. पुत्र में विष्वासी लोग (10:56; 14:20,21; 15:5; 17:21)
4. पिता और पुत्र में विष्वासी लोग (14:23)
5. वचन में विष्वासी लोग (5:41; 8:31; 15:7; 1यूह. 2:4)

देखिए **विषेश षीर्शक 2:10**

5:39

'' तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो,''

यहाँ यह दुख की बात है कि उनके पास वचन है, वे पढ़ते है, मनन करते है, याद करते है फिर भी वे उस व्यक्ति को पहचान नही पाए जिसका जिक्र यह करते हैं। पवित्रात्मा बिना वचन भी बेअसरदार है।

"यह मेरी गवाही देता है। "

यह पुराने नियम की ओर इषारा करती है। पतरस (प्रेरित. 3:18; 10:43) और पौलूस (प्रेरित. 13:27; 17:2,3; 26:23,22,27) का अधिकतर प्रचार पुराने नियम की भविश्यद्वाणी से भरा हुआ था कि वे यीषु को मसीह के रूप में प्रगट करते थे। नए नियम के अन्दर जितनी भी आयतें हैं वचन के अधिकार को बताती हैं वे सब पुराने नियम की ओर इषारा करते हैं (1कुरि. 2:9—13; 1थिस्स. 2:13; 1तिमु. 3:16; 1पत.1:23—25; 2पत. 1:20,21)। यीषु स्वयं को पुराने नियम के लक्ष्य और संपूर्णता के रूप में देखते है (मत्ती. 5:17—48)। देखिए **विषेश षीर्शक यीषु के प्रति गवाही 1:8।**

5:41—44

इन आयतो से ऐसे लगता है कि यहूदी धार्मिक अगुवों ने साथियों से प्रषंसा पाने में खुष रहते थे। भूतकाल के रबियो के उद्‌धृत से वे महिमा पाते थे, परन्तु वे सबसे बहुमूल्य षिक्षक को जो उनके बीच मे थे आत्मिक अन्धेपन के कारण देख नही पाए।

5:41

एन ए एस बी, एन आर एस वी "मैं मनुष्यों से महिमा नहीं चाहता"
एन के जे वी "मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता"
टी इ वी "मैं मनुष्यों की प्रषंसा नहीं चाहता"
एन जे बी " मनुष्यों से आदर **मेरेलिए कोई मायना नही रखता"**

षब्द "महिमा" डोक्सा का अनुवाद करना कठिन है। इब्रानी में "महिमा" के लिए कबोध षब्द है जिसका प्रयोग (1) परमेष्वर की उज्जवल उपस्थिती को बताता है (निर्ग. 16:10; 24:17; 40:34; प्रेरत. 7:2) तथा (2)उसके काम और चरित्र के प्रति स्तुति और आदर बताने के लिए होता है। इन दोनो बातों को सम्मिलित किए हुए वचन है 2 पतरस.1:17।
परमेष्वर की उज्जवल उपस्थिती और चरित्र निम्नलिखितों से संबन्धित हैः (1) स्वर्गदूतों से (लूका. 2:9; 2पत. 2:10); (2) यीषु की श्रेश्ठता से (1:14; 8:54; 12:28; 13:31; 17:1—5,22,24; 1कुरि. 2:8; फिलि. 3:17); और (3) विष्वासियों से (रोमि. 8:18,21; 1कुरि. 2:7; 15:43; 2कुरि. 4:17; कुलु. 3:4; 1थिस्स. 2:12; 2थिस्स. 2:10; इब्रा. 2:10; 1पत. 5:1,4)।
यह भी दिलचस्प बात है कि यूहन्ना यीषु के क्रूस पर चढ़ाए जाने को महिमा की बात कहते हैं (7:39; 12:16,23; 13:31)। हलॉकि इसे "आदर" या "धन्यवाद" कह सकते है (लूका. 17:18; प्रेरत. 12:23; रोमि. 4:20;1कुरि. 10:31; 2कुरि. 4:15; फिलि. 1:11; 2:11; प्रकाष. 11:13; 14:7; 16:9; 19:7)। इस संदर्भ में इसे इस प्रकार प्रयोग किया गया है।

5:43

" तुम मुझे ग्रहण नहीं करते;"

पूरे यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीषु पर विष्वास करने का अर्थ है उनके साथ व्यक्तिगत मुलाकात। विष्वास उस पर भरोसा करने के निर्णय से षुरू होता है। यह ष्यि जैसे जीवन की ओर प्रगति प्राप्त करते और मसीह समान जीवन में पहुँचते है।

5:45—47

यीषु कहते है कि मूसा ने उन्हें प्रगट किया है। यह षायद व्यवस्था. 18:15—22 के लिए संकेत है। आयत 45 के माने तो वचन को दोश लगानेवाला है।यह मार्ग निर्देषन के लिए दिया गया था (लूका. 16:31)। जब इसका तिरस्कार हुआ जब यह आरोप लगाानेवाला बन गया (गला.3:8—14, 23—29)।

5:46,47

''यदि...यदि''

यह द्वितीय दर्जे का षर्त वाक्य है जिसे सच्चाई का विरोधी कहा जाता है। यहूदी ने सच में मूसा का लेखों में विष्वास नही किया और इसलिए अन्तिम दिन में यीषु उनका न्याय करेंगे।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. क्यों आयत 4 आधुनिक अनुवादों में नहीं है ?
2. यीषु ने क्यों इसी व्यक्ति को चंगा किया ?
3. क्या इस व्यक्ति की चंगाई में विष्वास षामिल था ? क्या षारीरिक चंगाई आत्मिक चंगाई को ओर संकेत करती है ?
4. क्या उसका रोग उसके व्यक्तिगत पाप का फल है ? क्या हर रोग व्यक्तिगत पाप से संबन्धित है ?
5. यहूदियों ने यीषु को क्यों मारना चाहा ?
6. पुराने नियम में परमेष्वर के कुछ कार्यों का सुची बनाए जिसका संबन्ध यीषु से हो।
7. क्या अनन्त जीवन वर्तमान समय की वास्तविकता है या भविश्य की ?
8. क्या अन्तिम न्याय कर्म या विष्वास पर आधारित है ? कयों ?

यूहन्ना – 6

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
पाँच हज़ार को खिलाना	पाँच हज़ार को खिलाना	पाँच हज़ार को खिलाना	यीषु पाँच हज़ार को खिलाते हैं	रोटीयों द्वारा चमत्कार
6:1—15	6:1—14	6:1—15	6:1—6	6:1—4
				6:5—15
			6:7	
			6:8—9	
			6:10—13	
			6:14— 15	
पानी पर चलना	यीषु समुद्र के ऊपर चलते हैं	यीषु समुद्र के ऊपर चलते हैं	यीषु पानी पर चलते हैं	यीषु अपने षिश्यों के पास पानी पर

				चलकर आते हैं
6:16—21 यीषु जीवन की रोटी	6:15—21 स्वर्ग से आई हुई रोटी	6:16—21 यीषु जीवन की रोटी	6:16—21 लोग यीषु को ढूँढ़ते हैं	6:16—21 कफरनहूम के आराधनालय में वार्तालाप
6:22—33	6:22—40	6:22—24	6:22—24	6:22—27
		6:25—40	यीषु जीवन की रोटी	
			6:25	
			6:26—27	
			6:28	6:28—40
			6:29	
			6:30—31	
			6:32—33	
6:34—40			6:34	
	अपनों ने ठुकराया		6:35—40	
6:41—51	6:41—59	6:41—51	6:41—42	6:41—51
			6:43—51	
6:52—59		6:52—59	6:52	6:52—59
			6:53—58	
			6:59	6:59—63
अनन्त जीवन के वचन	कई षिश्यों का मुड़ जाना		अनन्त जीवन के वचन	
6:60—65	6:60—71	6:60—65	6:60	
			6:61—65	
				6:64—66 पतरस का विष्वास
6:66—71		6:66—71	6:66—67	
				6:67—71
			6:68—69	
			6:70—71	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड़ सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 6:1 : 71

क. यूहन्ना रचित सुसमाचार में प्रभु भोज का कोई उल्लेख नहीं है, हलाँकि अध्याय 13–17 में ऊपरी कोठरी के वार्तालाप और प्रार्थना का उल्लेख है। जान बूझकर इसे हटाया गया। दूसरी षताब्दी की कलीसिया अध्यादेष को धर्मानुश्ठान के रूप में आयोजित करना षुरू हो गई। वे इसे अनुग्रह का मार्ग समझने लगे। यीषु के बपतिस्मा तथा प्रभु भोज को न लिखते हुए यूहन्ना ने अपने विरोध को प्रगट किया।

ख. पाँच हज़ार को खिलाना यूहन्ना 6 का संदर्भ है। हलॉकि कईयों ने इसे धर्मानुश्ठान के लिए उपयोग किया है। रोमन कैथलिक विचार की नींव सही है।
प्रभु भोज के मामले में अध्याय 6 किस प्रकार संबन्धित है– यह सवाल सुसमाचार के दोहरे स्वभाव को दिखाते हैं। यह सच है कि सुसमाचार में यीषु के वचन और कार्य वर्णित है, फिर भी कई सालो के बाद लेखको ने अपने विष्वास के अनुसार इसे लिख छोड़ा है। इसलिए तीन स्तर के प्रयोजन है (1) पवित्रात्मा; (2) यीषु और उसे सुननेवाले; (3) सुसमाचार लेखक और उसे पढनेवाले। हम किस प्रकार इसकी व्याख्या करें ? आसान तरीका है कि संदर्भीय, व्याकरणात्मक और ऐतिहासिक जानकारी के अनुसार व्याख्या करें।

ग. हमें याद रखना है कि दर्षक मूसा से भी श्रेश्ठ मसीह की प्रतीक्षा में रहनेवाले यहूदी थे और संस्कृति रबियों की षिक्षा में, विषेश रूप से मन्ना के विशय में उत्कृश्ट था (6:30–31)। रबियों ने भं.सं. 72:16 को इसके लिए सबूत के तौर पर मानते थे। यीषु के ये असाधारण कथन (6:60–62,66) भीड़ में फैली मसीह की प्रतीक्षा की गलत धारणा को ठीक करने योग्य थी।

घ. प्रारम्भिक कलीसिया के अगुवे इन आयतों को जो प्रभु भोज के प्रति है करके नहीं मानते थे। सिकन्द्रिया के क्लेमन्द, ऑरिगन और यूसेबियूस ने कभी भी अपने विचार–विमर्ष में इसे प्रभु भोज के लिए प्रयोग नही किया।

ङ यूहन्ना 4 में प्रयोग किए गए से रूपको का उपयोग इस अध्याय मे भी है। अनन्त जीवन और आत्मिक सच्चाईयों के लिए रोटी तथा जल का रूपक प्रयोग किया गया है।

च. चारों सुसमाचार में उल्लेखित एक मात्र अद्‌भुत काम इन रोटीयों की वृद्धी है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

6:1 – 14

1. इन बातों के बाद यीशु गलील की झील अर्थात् तिबिरियास की झील के पास गया।
2. और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली कयोंकि जो आश्चर्य कर्म वह बीमारों पर दिखाता था वे उन को देखते थे।
3. तब यीशु पहाड़ पर चढ़कर अपने चेलों के साथ वहाँ बैठा।
4. और यहूदियों के फसह के पर्व निकट था।
5. तब यीशु ने अपनी आँखें उठाकर एक बड़ी भीड़ को अपने पास आते देखा, और फिलिप्पुस से कहा, कि हम इन के भोजन के लिये कहाँ से रोटी मोल लाएं?
6. परन्तु उस ने यह बात उसे परखने के लिये कही; क्योंकि वह आप जानता था कि मैं क्या करूंगा।
7. फिलिप्पुस ने उस को उत्तर दिया, कि दो सौ दीनार की रोटी उन के लिये पूरी भी न होंगी कि उन में से हर एक को थोड़ी थोड़ी मिल जाए।
8. उसके चेलों में से शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उस से कहाँ
9. यहाँ एक लड़का है जिस के पास जव की पांच रोटी और दो मछलियॉ हैं परन्तु इतने लोगों के लिये वे क्या हैं।
10. यीशु ने कहा, कि लोगों को बैठा दो। उस जगह बहुत घास थीः तब वे लोग जो गिनती में लगभग पांच हजार के थे, बैठ गएः
11. तब यीशु ने रोटीयां लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को बांट दीः और वैसे ही मछलियों में से जितनी वे चाहते थे बांट दिया।
12. जब वे खाकर तृप्त हो गए तो उस ने अपने चेलों से कहा, कि बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ फेंका न जाए।
13. सो उन्हों ने बटोरा, और जव की पांच रोटीयों के टुकड़े जो खानेवालों से बच रहे थे उन की बारह टोकरियां भरीं।
14. तब जो आश्चर्य कर्म उस ने कर दिखाया उसे वे लोग देखकर कहने लगे; कि वह भविष्यद्वक्ता जो जगत में आनेवाला था निश्चय यही है।

6:1

'' गलील की झील अर्थात् तिबिरियास की झील ''

यहाँ का पानी कई नामों से जाना जाता था। पुराने नियम में इसे किन्नेरेत कहा जाता था (गिनती. 34:11)। लूका 5:1 में इसे रोमी नाम गन्नसरेत झील भी कहा गया, यूह. 21:1 में इसे तिबिरियास झील कहा हैं।

6:2

देखिए कि भीड़ उनके पीछे क्यों हो लिए।

6:3

यीशु ने अपनी आवाज़ की भलाई के लिए नैसर्गिग जल तथा पहाड़ का उपयोग किया। वो ''बैठ गए'' का अर्थ है कि यह षिश्यों के साथ एक औपचारिक षिक्षा का समय है। यह षायद मत्ती. 5–7 के जैसी बातो को याद दिलाती है।

इन षिक्षाओं के समय में यीषु ने कई प्रकार के झुण्ड़ के साथ वार्तालाप किया। उनमें से सबसे करीब उनके ही षिश्य होंगे, उसके बाद बड़े झुण्ड़ में उस जगह के आष्चर्यचकित लोग होंगे, तथा छोटे झुण्ड़ में धार्मिक अगुवे होंगे (फरीसि, सदूकि, षास्त्री, और षायद जलन रखनेवाले)।

6:4

''यहूदियों के फसह के पर्व ''

यीषु की सेवकोई के काल का अनुमान करने का एक मात्र उपाय है यूहन्ना में उल्लेखित यह पर्व (पहला, 2:13; दूसरा,6:4; तथा तीसरा, 11:55; 13:1)। यदि 5:1 भी फसह के बारे में कहता है तो साढे तीन साल या चार साल की सेवा की जानकरी हमें मिल जाती है।

6:6

'' उस ने यह बात उसे परखने के लिये कही; ''

यूनानी षब्द परख (पेईज़ारो) का अर्थ दुश्ट से निकला हुआ सा लगता है (देखिए **विषेश षीर्शक 1यूहन्ना. 4:1; मत्ती. 4:1**)।यह आधुनिक व्याख्याकर्ता के लिए एक उदाहरण है कि नए नियम के षब्दों की एक ही परीभाशा हो।

यीषु फिलिप्पुस को परख रहे थे, परन्तु कैसे ? (1) उसके विष्वास के प्रति कि यीषु उपाय करनेवाले है ? (2) पुराने नियम के प्रति उसकी जानकारी के विशय में (खाने का उपलब्धि के विशय में परमेष्वर से मूस के सवाल, गिनती. 11:13,) ? या (3) भीड़ के प्रति उसका तरस तथा ध्यान ?

6:7

एन ए एस बी, एन के जे वी, जे बी '' दो सौ दीनार की ''
एन आर एस वी **''6 महीने की मजदूरी के''**
टी इ वी '' दो सौ चान्दी के टुकड़ो की ''

एक सिपाही और मजदूर (मत्ती. 20:2) को एक दिन के लिए एक दिनार **मजदूरी** मिलती थी।

6:8–9

''शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ''

यह संदर्भ यीषु की काबलियत तथा व्यक्तित्व पर अन्द्रियास के साधारण विष्वास की छाप छोड़ते हैं।

6:9

'' जव की रोटी ''

इसे कम दाम तथा अधिक लोग न पसन्द करनेवाला भोजन कहते हैं। यह आम आदमी का भोजन है। यीषु ने अपनी षक्ति का गलत उपयोग नही किया कि वे लोगों को महंगाा भोजन दे सकें!

6:10

''कि लोगों को बैठा दो''

इस संस्कृति के लोग नीचे बैठकर या फिर छोटे कद की मेज़ के सहारे भोजन करते हैं।

'' लोग जो गिनती में लगभग पांच हजार के थे,
बैठ गए''

इसे हम आम रीति से पांच हजार नही कह सकते, क्योकि उस दिन काफी लोग वहाँ थे। पांच हजार केवल पुरुश की गिनती है इसमें स्त्री तथा बच्चे षामिल नहीं हैं (मत्ती. 14:21)। हलॉकि यह बताना संभव नही कि वहाँ कितने स्त्री तथा बच्चे थे।

6:11

'' और धन्यवाद करके
बैठनेवालों को बांट दीः ''

वृद्धि का यह आष्चर्यकर्म यीषु के हाथ में ही हो गया । इस संदर्भ में यह घटना प्रतीक्षित होगी कि मसीह मूसा के मन्ना की तरह भोजन खिला रहे हैं।

धन्यवाद का यूनानी षब्द (यूकरिस्टॉ) बाद में अन्तिम भोजन का नाम बन गए (1कूरि. 10:23–24)। क्या यूहन्ना ने यहाँ भविश्य में प्रयोग करेंगे सोचकर इस षब्द का प्रयोग किया है ? दूसरे सुसमाचारों में यूकरिस्टॉ षब्द का प्रयोग नही है बदले में यूलॉजियॉ षब्द है (मत्ती. 14:19; मरकूस. 6:41)। उसने अन्तिम भोजन के लिए यूकरिस्टॉ षब्द का प्रयोग किया है (मत्ती. 15: 36; मरकूस. 8:6; लूका. 17:16; 18:11)। ऊपरी कोठरी में यीषु की धन्यवादी प्रार्थना के लिए भी इस षब्द का प्रयोग किया है (मत्ती. 26:27; मरकूस. 14:23; लूका. 22:17–19)। इसलिए, इसका प्रयोग एक जैसा न होने के कारण यूहन्ना को चाहिए था कि वह अपने प्रयोग का अर्थ स्पश्ट करे, इसकी कमी के कारण कईयों ने इसे प्रभु भोज समझकर रखा है।

6:12

'' फेंका ''

देखिए **विषेश षीर्शक** अपोलूमीः 10:10

6:13

'' जव की पांच रोटीयों के टुकड़े
जो खानेवालों से बच रहे थे
उन की बारह टोकरियां भरीं। ''

यहाँ टोकरी का संकेत है कि वह गहरा था। यह महत्वपूर्ण है कि यीषु ने वृद्धि किए हुए खाने में से कुछ भी नश्ट नही किया। और न रोटी की षकल बदली।

क्या षब्द 12 कुछ अलग बातों की ओर इषारा कर रहा है ? यह बताना कठीन है। इसकी व्याख्या ऐसे की गई कि ये इस्राएल के 12 गोत्रों की तरफ इषारा करती है।

6:14

" वह भविष्यद्वक्ता "

यह व्यवस्था. 18:15–22 के लिए एक संकेत है। भीड ने यीषु की षक्ति को पहचाना परन्तु उसकी सेवा तथा स्वभाव को गलत समझा।

6:15
यीशु यह जानकर कि वे मुझे राजा बनाने के लिये आकर पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया।

भीड़ मसीह के इस आष्चर्य काम से काफी उत्साहित हुई। यह वचन मत्ती. 4:3 के षैतान द्वारा प्रलोभन की ओर इषारा करता है।

6:16–21

16. फिर जब संध्या हुई, तो उसके चेले झील के किनारे गए।
17. और नाव पर चढ़कर झील के पार कफरनहूम को जाने लगेः उस समय अन्धेरा हो गया था, और यीशु अभी तक उन के पास नहीं आया था।
18. और आन्धी के कारण झील में लहरे उठने लगीं।
19. सो जब वे खेते खेते तीन चार मील के लगभग निकल गए, तो उन्हों ने यीशु को झील पर चलते, और नाव के निकट आते देखा, और डर गए।
20. परन्तु उस ने उन से कहा, कि मैं हूँ; डरो मत।
21. सो वे उसे नाव पर चढ़ा लेने के लिये तैयार हुए और तुरन्त वह नाव उस स्थान पर जा पहुंची जहाँ वह जाते थे।

6:17

" कफरनहूम "

अपने षहर नासरत के अविष्वास (लूका. 4:28–29) के कारण इस षहर को यीषु ने अपने गलील का सेवा केन्द्र बनाया।

6:19

'' वे खेते खेते तीन चार मील के ''

जब यीषु उनके पास पानी के ऊपर चलते आ रहे थे तब वे झील के मध्य भाग तक पहूँच चुके थे। मत्ती इसे ओर भी खूबसूरती से विवरण करते है जिसमें पतरस का भी पानी पे चलने का जिक्र है।

'' डर गए''

वे यीषु को अभी भी पृथ्वी का समझ रहे हैं। इन तमाम आष्चर्यकर्मों ने उन्हें मजबूर किया कि वे विचार करे कि वो कौन है ?

6:20

'' कि मैं हूँ;''

यह षाब्दिकरूप से *(इगो एमि)* ''मैं हूँ;'' है (4:26; 8:24,28,54—59; 13:19; 18:5—6) जो पुराने नियम के निर्गमन 3:12—15 के यहोवा का वाचकीय नाम है। यीषु है दृष्य ''मैं हूँ;'', परमेष्वर का स्वयं का परिपूर्ण प्रकाषन, परमेष्वर का देहधारी लॉगॉस्, सच्चा एकलौता पुत्र।

मरकूस 6:49 में षिश्यों के डर का विवरण है।

6:21

'' तुरन्त वह नाव उस स्थान पर जा पहुंची
जहाँ वह जाते थे। ''

यह सच में एक अद्‌भुत काम है (6:22—23)। मरकूस की मानें तो वे झील के मध्य भाग तक ही पहुँचे थे।

6:22 — 25

22. दूसरे दिन उस भीड़ ने, जो झील के पार खड़ी थी, यह देखा, कि यहाँ एक को छोड़कर और कोई छोटी नाव न थी, और यीशु अपने चेलों के साथ उस नाव पर न चढ़ा, परन्तु केवल उसके चेले चले गए थे।
23. (तौभी और छोटी नावें तिबिरियास से उस जगह के निकट आईं, जहाँ उन्हों ने प्रभु के धन्यवाद करने के बाद रोटी खाई थी।)
24. सो जब भीड़ ने देखा, कि यहाँ न यीशु है, और न उसके चेले, तो वे भी छोटी छोटी नावों पर चढ़ के यीशु को ढूंढ़ते हुए कफरनहूम को पहुँचे। 25. और झील के पार उस से मिलकर कहा, हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?

6:23

'' तिबिरियास ''

इस षहर का निर्माण हेरोद अन्दिपास ने 22 ई0 में किया था और यह उसकी राजधानी था।

6:26 — 34

26. यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूँ, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटीयां खाकर तृप्त हुए।
27. नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात् परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।
28. उन्हों ने उस से कहा, परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें? 29. यीशु ने उन्हें उत्तर दिया; परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो।
30. तब उन्हों ने उस से कहा, फिर तू कौन सा चिन्ह दिखाता है कि हम उसे देखकर तेरी प्रतीति करें, तू कौन सा काम दिखाता है?
31. हमारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया; जैसा लिखा है; कि उस ने उन्हें खाने के लिये स्वर्ग से रोटी दी।
32. यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि मूसा ने तुम्हें वह रोटी स्वर्ग से न दी, परन्तु मेरा पिता तुम्हें सच्ची रोटी स्वर्ग से देता है। 33. क्योकि परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।
34. तब उन्हों ने उस से कहा, हे प्रभु, यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर।

6:26,32,53

'' मैं तुम से सच सच कहता हूँ ''

यह एक इब्रानी षब्दसमूह है जिसके 3 भिन्न प्रयोग हैः (1) पुराने नियम में इसे भरोसे के लिए प्रयोग किया है। आलंकारिक भाशा में इसका अर्थ है स्थिर रहना तथा यहोवा पर किसी के विष्वास के लिए भी इसे उपयोग किया है। (2) यीषु ने इसे कुछ महत्वपूर्ण कथनों की प्रस्तावना के रूप में प्रयोग किया है। आमीन का ओर कोई समकालीन प्रयोग नही है। प्रारम्भिक कलीसिया में इसे निष्चयता के लिए प्रयोग किया है।

'' इसलिये कि तुम रोटीयां खाकर तृप्त हुए''

उनका उद्देष्य आत्मिक तथा अनन्तकाल के लिए नही था, षारीरिक तथा तत्कालिक था।

'' तृप्त हुए''

अर्थात् निगलना। यह आम रीति से जानवरों के लिए प्रयोग करते हैं।

6:27

''परिश्रम न करो''

अर्थात् जो काम प्रगति पर है उसे रोको। पुराने नियम में इस आयत की पृश्ठभूमि यषा. 5 है। ये आयतें यूह. 4 में कुएं के पास की स्त्री के साथ वार्तालाप के समान है।

" नाशमान "

देखिए **विषेश षीर्शक** अपोलूमीः 10:10

"परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है"

इसका षब्दिक अर्थ है मुहर लगाना। यह स्वामित्व, अधिकार, और सुरक्षा के चिन्ह हैं (मत्ती.28:18; यूह. 17:2)। ***टी इ वी*** तथा एन ऐ वी में इसे ग्रहणयोग्य अनुवाद किया है, क्योंकि यीषु की सेवा पिता की ओर से ग्रहणयोग्य है।

6:28

" परमेश्वर के कार्य करने के लिये
हम क्या करें?"

यह पहली षताब्दी के यहूदी धर्म के मुख्य प्रष्न थे (लूका. 18:18)। वे समझते थे कि एक धार्मिक यहूदी (1) अपने वंषावली के कारण और तालमूद के अन्दर लिखे हुए मूसा की व्यवस्था की व्याख्या के पालन करने के कारण परमेष्वर के साथ करीब संबन्ध में होतें हैं।

6:29

" कि तुम उस पर,
जिसे उस ने भेजा है,
विश्वास करो। "

उद्धार के बारे में नए नियम की षिक्षा को जानना है तो हमें षब्द "विष्वास" के अर्थ को सही से समझना ज़रूरी है। देखिए **विषेश षीर्शक 2:23। इस षब्द का प्राथमिक अर्थ है इच्छायुक्त भरोसा। यूनानी षब्द पिस्तिस् का अनुवाद हो सकता है**"विष्वास" , "भरोसा", या प्रीति। मनुश्य के "विष्वास" का केन्द्र "वो" होना है (1:12; 3:16) न कि मनुश्य की निश्कलंकता, सर्मपण, उत्साह पर आधारित हो। इस अनुच्छेद का निकटस्थ स्थिति है यीषु के साथ व्यक्तिगत संबन्ध, उसके बारे में न कोई कट्टर धर्मषास्त्र, धार्मिक रिवाज, या नैतिक जीवन। ये सब कुछ मददगार है परन्तु प्राथमिकता नहीं है।

6:30—33

यह याद रखना कि यह भीड़ थोड़ी ही देर पहले पांच हजार को खिलाने के आष्चर्यकर्म में षामिल हुई थी। उनके पास चिन्ह मिल चुका है! रब्बियो के द्वारा षिक्षित यहूदियो के विचार थे कि पुराने नियम की कुछ घटना को मसीह दोहराएंगे, जैसे मन्ना भेजना (2बारूक. 29:8)। आयत 29 तथा 30 में प्रयोग "उसमें विष्वास" तथा "तुम मे विष्वास" में कुछ व्याकरणात्मक बातें है। यह एक व्यक्तिगत बात है। यीषु के वचन और कथनों पर विष्वास करना दूसरी केन्द्रिय बात है। सुसमाचार व्यक्ति तथा सन्देष दोनों है।

6:31

'' जैसा लिखा है; ''

यह पुराने नियम के उद्‌धृतों को परिचित कराने का तरीका है। यह पुराने नियम के ईष्वरीय प्रेरणा तथा अधिकार को साबित करने का एक मुहावरा हैं। यह उद्‌धृत इन आयतों का मिश्रण हो सकता हैः भ.सं. 78:24; 105:40; निर्ग. 16:4,15; या नेह. 9:15।

6:32

यीषु यहूदियों के पारम्परिक धर्मषास्त्र को संबोधित कर रहे हैं। व्यवस्था. 18:15,18 के कारण उन्होंनें विष्वास किया था कि मसीह भी मूसा की तरह आष्चर्य कर्मों को करेंगे। यीषु ने इनके विचारों को कई तरह से ठीक करते हैंः (1) परमेष्वर, मूसा नही, ने मन्ना दिया; (2) मन्ना जैसे लोगों ने सोचा कि वैसे स्वर्ग से उत्पादित नही है (भ.सं. 78: 23–25); (3) स्वर्ग का सच्चा भोजन यीषु है जो भूतकाल की बात नही है परन्तु वर्तमान वास्तविकता है।

6:33

'' जो स्वर्ग से उतरकर ''

यह यूहन्ना मे बार बार आनेवाला मुख्य विशय है (3:13)। यह यूहन्ना का दोहरावाद है । यीषु के वंष के बारे में सात बार दोहराया गया है (6:33,37,41,42,50,51,58)। यह उसके अस्तित्व तथा दैवीय उत्भव के बारे में बताते है (6:33,38,41,42,50,51,5,62)। यह मन्ना के प्रति एक नाटक के समान है जो स्वर्ग से उतर आई हुई सच्ची रोटी है अर्थात् यीषु।

यह '' परमेश्वर की रोटी वही है, जो स्वर्ग से उतरकर जगत को जीवन देती है।'' यह (1) रोटी या (2) एक मनुश्य, यीषु की ओर संकेत करता है। कई बार यूहन्ना ने इस प्रकार का उपयोग बड़ी समझदारी से किया है।

'' जगत को जीवन देती है। ''

यह यीषु के आने का लक्ष्य है (3:16)। लक्ष्य है– खोए हुए संसार के लिए – एक खास झुण्ड के लिए नहीं है (यहूदी–अन्यजाती, चुना हुआ– न चुना हुआ, गुलाम– स्वतंत्र) परन्तु सब के लिए ''नया जीवन'', ''अनन्त जीवन'', ''नए युग का जीवन'', ''परमेष्वर का सा जीवन'' देना।

6:34

''यह रोटी हमें सर्वदा दिया कर ''

यह यूह.4:4 में उस स्त्री के द्वारा कहे गए कथन के समान है। यहूदियों को भी यीषु के रूपक का प्रयोग समझ में नही आया।

6:35 — 40

35. यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूँ: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।
36. परन्तु मैं ने तुम से कहा, कि तुम ने मुझे देख भी लिया है, तोभी विश्वास नहीं करते।
37. जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा।
38. क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं,वरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ।
39. और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊं परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊं।
40. क्योंकि मेरे पिता की इच्छा यह है, कि जो कोई पुत्र को देखे, और उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।

6:35

'' जीवन की रोटी मैं हूँ:''

यह यूहन्ना के ''मैं हूँ'' कथनों से एक है (6:35,41,48,51; 8:12; 10:7,9,11,14; 11:25; 14:6; 15:1,5)। यूहन्ना रचित सुसमाचार यीष्रु जो व्यक्ति है उस ᴾ आधारित है। षब्दसमूह '' जीवन की रोटी ''यहूद परम्परा से जुड़े हुए है कि जब मसीह आएगाा तअ वो अपने जनता को मूसा के तरह भोजन करा देंगे।यीषु ने इस ने इस परमपरा को स्वयं को , भेजन को नही, वास्तविक जीवन के कुंजी को प्रगट करने कलिए प्रयोग करते है।वो है नया मूसा (''भविश्यद्वक्ता'' , व्यवस्था.18:15) जो पाप से निर्गमन कराता है।

'' जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा
और
जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा। ''

ये यूनानी में दो नकारात्मक बाते है, ''कभी न होगा न होगा'' (6:37)।
आना तथा विष्वास करने के बीच सदृषात्मक रिष्ता है (7:37—38)।विष्वासियों का आना तथा विष्वास करना एक समय का कार्य नही है परन्तु यह एक नया जीवन षैली का षुरूवात, दोस्ती और संगति है।

''भूखा ... प्यासा''

आत्मिक वास्तविकता को दर्षाने केनिए कई बार इन्हें उपयोग में लाते है (भ.सं. 42:1; यषा. 55:1; आमोस. 8:11—12; मत्ती. 5:6)।

6:37

'' जो कुछ पिता मुझे देता है
वह सब मेरे पास आएगा, ''

प्राथमिक रूप से इस कथन का अर्थ ह परमेष्वर का परमाधिकार। इस धर्मषास्त्रीय सच्चाई की अन्य आयते हैं रोमि.9 और इफि.1:3–14। मजे की बात है कि इन दोनों प्रसंगों में मनुश्य का भागी होना अवष्य है। रोमि. 10 में 4 बार ''जो कोई'' षब्द का प्रयोग है। इफि. 2 मे जहाँ विष्वास में आने की बुलाहट है 2:8,9 में, जहाँ परमेष्वर के अनुग्रह के विशय में चर्चा हो रही है 2:1–7 में , भी इस बात की अवष्यकता है। छुडाए हुओं के लिए है पूर्वनिर्धारण का सिद्धान्त, यह खोए हुओ के लिए रुकावट की बात नही है। जो कुछ पिता यीषु को देते है वे सब उसके पास आते है। परमेष्वर हमेषा षुरू करते है (6:44,65), पर मनुश्य को प्रत्युत्तर देना है (1:12; 3:16)।

'' जो कुछ उस ने मुझे दिया है,
उस में से मैं कुछ न खोऊं ''

यह एक ओर प्रभावषाली नकारात्मक बात है। यह इस बात का महत्व देता है कि परमेष्वर यीषु के द्वारा लोगों को अपने पास बुलाते है (यहेज. 18:21–23; 30–32; 1तिमु. 2:4; 2पत.3:9)। परमेष्वर हमेषा षुरू करते है (6:44,65), पर मनुश्य को प्रत्युत्तर देना है (मरकूस. 1:15; प्रेरित. 20:21)। सुरक्षाा के प्रति कितना अनोखी अनुच्छेद है यह (रोमि. 8:31–39)।

विषेश षीर्शकः मसीही निष्चयता

निष्चयता एक बाइबलीय सच्चाई तथा विष्वासियों का विष्वास का अनुभव और जीवन षैली दोनों है।

क. निष्चयता के लिए बाइबलीय आधार है

1.पिता परमेष्वर का चरित्र

क. उत्प. 3:15; 12:3

ख. भ.सं. 46:10

ग. यूह. 3:16; 10:28–29

घ. रोमि. 8:38–39

ङ. इफि. 1:3–14; 2:5,8–9

च. फिलि. 1:6

छ. 2तिमु. 1:12

ज. 1पत.1:3–5

2. पुत्र परमष्वर का काम

क. उसके महायाजकीय प्रार्थना, यूह. 17:9–24, खास 17:12

ख. उसके एवज़ बलिदान

1) रामि. 8:31

2) 2कुरि. 5:21

3) 1यूह.4:9–10

ग. उसके जारी रहनेवाला मध्यस्थता

1) रोमि.8:34

2) इब्रा. 7:25

3) 1यूह. 2:1

3. आत्मा पारमेष्वार की सामर्थ

क. बुलसहट यूह. 6:44,65

ख. छाप लगाना

1) 2कुरि. 1:22; 5:5
2) इफि. 1:13–14; 4:30
ग. उसके व्यक्तिगत निष्चयता
1) रोमि. 8:16–17
2) 1यूह.5:7–13

ख. विष्वासी के वाचकीय प्रत्युत्तर है
1. प्रारम्भिक और जारी रहनेवाला मनफिराव और विष्वास
क. मरकूस. 1:15
ख. यूह. 1:12
ग. प्ररित. 3:16; 20:21
घ. रोमि. 10:9–13

2. याद रखना कि उद्धार का लक्ष्य मसीहसमानता है
क. रोमि. 8:28–29
ख. इफि. 1:4; 2:10

3. याद रखना कि निष्चयता जीवनषैलि के द्वारा साबित कियाजाता है
क. याकूब
ख. 1यूहन्ना

4. याद रखना कि निष्चयता विष्वास और सहनषीलता के द्वारा साबित कियाजाता है
क. मरकूस. 13:13
ख. 1कुरि. 15:2
ग. इब्रा. 3:14
घ. 2पत. 1:10
ङ. यहूदा. 20–21

<u>*6:38*</u>

<u>*'' मैं स्वर्ग से उतरा हूँ''*</u>

यह देहधारण को दर्षाता है (1:1; इफि. 4:8–10)।उसका नतीजा स्थाई है। यह यीषु के स्वर्गीय उत्भव को दर्षाता है (6: 41,42)।

<u>*'' मैं अपनी इच्छा नहीं,*</u>
<u>*वरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये ''*</u>

नए नियम त्रीएकता के एकता और तीनों व्यक्तियों के व्यक्तित्व (14:8–9) दोनो कर प्रगट करती है।यह यीषु पिता के अधीन रहने के विशय में जो चर्चा यूहन्ना`ररहे हे उनमें से एक आययत है यह। 5:19 के नोट देखिए।

<u>*6:39*</u>

" जो कुछ उस ने मुझे दिया है,
उस में से मैं कुछ न खोऊं "

इस प्रकार के असाधारण वाक्यांष का प्रयोग ओर भी जगह हम देखते है (17:2,24)। यह खास तौर पर संपूर्णता कि ओर सहयोग करते है (6:40,45)।
यह उत्तम वायदा है कि परमेष्वर बचाए रखते है, **मसीही निष्चयता** की श्रोत (10:28–29; 17:2, 24)। आयत 37 के क्रिया वर्तमान काल मे है , 39 में पूर्णकाल क्रिया है परमेष्वर का तोहफा बना रहता है। जो कुछ भी पमेष्वार ने उन्हें सैंपा है तो उन्हों उसने नही खेया (6:37,38)। और वो उसे अंतिम दिन फिर जिलाएंगे। यहाँ (1) चुनाव और (2) सहनषीलता के दो दैवीय वसदा है।

" मैं उसे अंतिम दिन
फिर जिला उठाऊंगा। "

यह विष्वासियों के लिए जी उठने का दिन तथा अविष्वासियो के लिए न्याय का दिन है (6:40,44,54; 5:25,28; 11:24तथा 1कुरि.15)। ए न्यू टेस्टमेंट थियॉलजी का लेखक फ्रॉग सटाग्गकेमाने तो

> "यूहन्ना रचित सुसमाचार यीषु के दूसरे आगमन के बारे में सषक्त है (14:3,18–28; 16:16,22) और यह अन्तिम दिन का पुनरुत्थान तथा न्याय के बारं में में कहते है (5:28; 6:39, 44,53; 11:24; 12:48); इस चैथे सुसमाचार भर अनन्त जीवन, न्याय, और पुनरुत्थान वास्तविकता है (3:18, 4:23, 5:25, 6:54, 11:23, 12:28,31; 13:31; 14:17; 17:26)" (पृश्ठ.311)।

6:40

" मेरे पिता की इच्छा यह है,"

यह आयत 28 में किया गया प्रष्न " परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें? "का उत्तर है। देखिए **विषेश षीर्शक** : परमेष्वर की इच्छा 4:34।

यहाँ देखना तथा विष्वास करना समानार्थ षब्द है। यह जारी रहनेवाला कार्य हैं,न कि एक समय की घटना। देखने का अर्थ है जानने या समझने के लिए ध्यानपूर्वक देखना।

" उस पर विश्वास करे,"

याद रखिए कि उद्धार एक नैतिक जीवनषैली या सही धर्मषास्त्र नही पर एक व्यक्तिगत रिष्ता है (3:16; 11:25–26)। यहाँ जोर विष्वास के लिए है न कि तीव्रता। देखिए **विषेश षीर्शक** 2:23। 6:37,39, 44, 65 में परमेष्वर का परमाधिकारीय चुनाव तथा 6:37,40 में मनुश्य के विष्वास प्रत्युत्तर को देखें।परमेष्वर का परमाधिकार और मनुश्य की स्वेच्छा बाइबलीय वाचा के दो विचारों को उत्पन्न करता है।

" अनन्त जीवन पाए"

एक प्रत्युत्तर की अवष्यकता है (1यूह.5:11)।आयत 39 सब के लिए है तो आयत 40 व्यक्तिगत है। यह है उद्धार का असत्याभास।

6:41—51

41. सो यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे, इसलिये कि उस ने कहा था; कि जो रोटी स्वर्ग से उतरी, वह मैं हूँ।
42. और उन्हों ने कहा; क्या यह यूसुफ का पुत्र यीशु नहीं, जिस के माता पिता को हम जानते हैं? तो वह
क्योंकर कहता है कि मैं स्वर्ग से उतरा हूँ। 43. यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि आपस में मत कुड़कुड़ाओ।
44. कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले; और मैं उस को
अंतिम दिन फिर जिला उठाऊंगा।
45. भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है, कि वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे। जिस किसी
ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है।
46. यह नहीं, कि किसी ने पिता को देखा परन्तु जो परमेश्वर की ओर से है, केवल उसी ने पिता को देखा
है।
47. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है।
48. जीवन की रोटी मैं हूँ।
49. तुम्हारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए।
50. यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उस में से खाए और न मरे।
51. जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और
जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है।

6:41

" सो यहूदी उस पर कुड़कुड़ाने लगे,"

अर्थात् वे बार बार कुड़कुड़ाने लगे। इस बात की समानता को हम मरूभूमि यात्रा (निर्गमन तथा गिनती) में देखते है। उन दिनों का इस्राएली मूसा, परमेष्वर का प्रतिनिधि, जिसने उन्हें भोजन करवाया, को भी नकारा।

6:42

यह इस बात को दर्षाता है कि यीषु के वचन को वे समझें। वो अपनी दैवीयता तथा अस्तित्व को पेष करने के लिए यहूदी मुहावरों का प्रयोग कर रहे हैं।

6:43

"आपस में मत कुड़कुड़ाओ"

अर्थात् जो कार्य प्रगति पर है उसे रोको।

6:44

" कोई मेरे पास नहीं आ सकता,
जब तक पिता उसे खींच न ले;"

हमेषा परमेष्वर षुरूवात करते हैं (6:65; 15:16)। हर एक आत्मिक निर्णय पवित्रात्मा की अगुवाई का फल है न कि मनुश्य के धर्म के काम से (यषा. 53'6)।परमेष्वर की इच्छा और करुणा के द्वारा परमेष्वर का परमाधिकार तथा मनुश्य का प्रत्युत्तर एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। यह है वाचा के प्रति पुराने नियम के सामान्य विचार। परमेष्वर की ओर खींचने के विशय में (विषेशरूप से व्यक्तियों को) हम 12:32 में देखते हैं कि वो सब को अपनी तरफ खींचता है। यह पुराने नियम के अपने लोगों के डीठता को दर्षाता भी है कि उन्होंने नबियों के द्वारा कहे गए वचनों की बिल्कुल कदर नही की (यषा. 6:9—13;29:13; और यिर्मायाह के पुस्तक)। अब परमेष्वर बातें करते हैं, नबियों के द्वारा इस्राएल से नही, अपने पुत्र के द्वारा समस्त मानव जाती से (इब्रा. 1:1—3)।

विषेश षीर्शकः बुलाए गए।

लोगों को बुलाने में, चुनने में, विष्वासियों को अपने प्यार में लाने में परमेष्वर हमेषा षरूवात करते है (6:12,44,65; 15:16; इफि. 1:4—5,11)। षब्द "बुलाना" कई धर्मषास्त्रीय अर्थ से प्रयोग किया गया।

क. मसीह के द्वारा संपूर्ण किए गए काम के द्वारा पापियों को परमेष्वर के अनुग्रह से उद्धार की ओर बुलाया गया (क्लेटॉस् रोमि.1:6—7 जो धर्मषास्त्रीय ढंग से 1कुरि.1:1—2; 2तिमु. 1:9; 2पत. 1:10 के समान है।)।

ख. उद्धार पाने के लिए पापी प्रभू के नाम को पुकारते हैं (एपिकालियो, प्ररित. 2:21; 22:16; रोमि. 10:9—13)। यह कथन यहूदी आराधना के लिए प्रयोगित मुहावरा है।

ग. मसीह समानता में जीने के लिए विष्वासियों को बुलाया गया (क्लेसिस् 1 कुरि. 1:26; 7:20; इफि. 4:1; फिलि. 3:14; 2थिस्स. 1:11; 2तिमु. 1:19)।

घ. विष्वासियो को सेवकोई के कार्यों के लिए बुलाया गया (प्ररित. 13:2; 1कुरि.12: 4—7; इफि. 4:1)।

6:45

" भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है"

यह यषा. 54:12 या यिर्मा. 31:34 का उद्धृत है।

" जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है,
वह मेरे पास आता है। "

यह नमुंमकिन है कि यीषु का तिरस्कार करे और कहे कि मैं परमेष्वर को जानता हूँ (1यूह. 5:1—12)।

6:46

"यह नहीं, कि किसी ने पिता को देखा "

यीषु यह साबित करते हैं कि केवल उसी के द्वारा ही कोई परमेष्वर को देख या जान सकता है (यूह. 1:18; 14:6–9)। मूसा ने भी ढंग से दैवीयता को नहीं देखा। (देखिए नोट 5:32)।

6:47

यह आयत समस्त मानवजाती के मुफ्त उद्धार प्राप्ति के लिए यीषु की अनोखी देन का निचोड़ है (6:51,58; 3:15,16,36; 5::24; 11:26; 20:31)। यीषु ही एकमात्र परमेष्वर का सच्चा प्रकाषन है, एक मात्र द्वार, परन्तु यह आदम की समस्त सन्तानों के लिए है।

6:50

यह भी आयतें 31– 35 में बताई हुई बातों के समान रोटी के अर्थ के बारे में कहती हैं, षारीरिक रोटी (मन्ना), तथा स्वर्गीय रोटी (यीषु)।एक षारीरिक जीवन देती और स्वस्थ बनाए रखती पर मृत्यु को नहीं रोक सकती। दूसरी अनन्त जीवन देती और स्थाई रखती पर पापो का अंगीकार करके देखभाल करते हुए आत्मिक मृत्यु की रोकथाम करती है (परमेष्वर के साथ का रिष्ता में तनाव; स्वयं तथा पाप के साथ घनिश्ठ संबन्ध।)।

6:51

" जीवन की रोटी मैं हूँ"

यह *"मैं हूँ"* कथन में से सबसे प्रसिद्ध कथन है (6:35,48,51)। यह यीषु के अपने व्यक्तित्व के ऊपर ध्यान आकर्शित करने का एक तरीका था। उद्धार, प्रकाषन के समान एक व्यक्ति तथा दोस्ताना है।

" जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा,
वह मेरा मांस है।"

इस रूपक के द्वारा यीषु यह प्रगट करते है कि हमारे जीवन की आवष्यकता भोजन नही यीषु ही है।

6:52 – 59
52. इस पर यहूदी यह कहकर आपस में झगड़ने लगे, कि यह मनुष्य क्योंकर हमें अपना मांस खाने को दे सकता है?
53. यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूँ जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं।
54. जो मेरा मांस खाता, और मेरा लहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा।
55. क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लहू वास्तव में पीने की वस्तु है।
56. जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में।
57. जैसा जीवते पिता ने मुझे भेजा और मैं पिता के कारण जीवित हूँ वैसा ही वह भी जो मुझे खाएगा मेरे कारण जीवित रहेगा।
58. जो रोटी स्वर्ग से उतरी यही है, बापदादों के समान नहीं कि खाया, और मर गएः जो कोई यह रोटी

खाएगा, वह सर्वदा जीवित रहेगा।
59. ये बातें उस ने कफरनहूम के एक आराधनालय में उपदेश देते समय कहीं।

6:52

एन ए एस बी, **''वाद–विवाद''**
एन के जे वी ''झगड़ने लगे ''
एन आर एस वी **''विवाद''**
टी इ वी **''एक क्रोधित झगडा''**
एन जे बी ''झगड़ने लगे ''

यह अपूर्ण काल उस बात की ओर दर्षाता है कि एक काम भूतकाल में षुरू हो गया और जारी है। यूनानी भाषा में इस षब्द को झगडे के लिए प्रयोग करते है (प्ररित. 7:26; 2तिमु. 2:23–24; तीतुस. 3:9) तथा इसे रूपक के समान 2कुरि.7:5 और याकूब. 4:1–2 में प्रयोग किया है।

''यह मनुष्य क्योंकर हमें अपना मांस खाने को दे सकता है?''

यीषु की रूपकात्मक बातों को लोगो ने अधिकतर बार षाब्दिक रूप से समझने का प्रयास कियाः (1) नीकुदेमुस 3:4(2) सामरी स्त्री 4:11 (3) यहूदी समूह 6:52 (4) षिश्य 11:11।

6:53–57

आयतें 53 तथा 54 बहूत ही दिलचस्प है। आयत 53 में क्रिया ''खाओ'' और ''पीओ'' भूतकालिन है जो एक काम की इच्छायुक्त षुरूवात को बताता है। आयत 54 में क्रिया ''खाता'' और ''पीता'' वर्तमानकाल के जो एक काम का लगातार होने का संकेत देते है (6:56,57,58)। इसका तात्पर्य यह है कि एक को चाहिए कि वह यीषु को प्रत्युत्तर दें और लगातार देते रहें (6:44)।
इस अनुच्छेद को षाब्दिक रूप से समझने का प्रयास करने से यहूदियो के लहू पीने की व्यवस्था का उलंघन है (लैव्य. 17:10–14)। मन्ना के प्रति यीषु के स्पश्ट संकेत को (6:58) प्रभु भोजके साथ मिलाना इस प्रसंग तथा ऐतिहासिक बातों के खिलाफ है।

6:54

''माँस और लहू''

यह एक संपूर्ण मनुश्य को दर्षाने का यहूदियो का रूपक है जेसे ह्रदय।

6:55

''वास्तव में खाने की वस्तु ...

<u>*वास्तव में पीने की वस्तु है''*</u>

षब्द सच/सच्चाई का प्रयोग यूहन्ना की विषेशता है (देखिए निम्नलिखित **विषेश षीर्शक**)। समस्त नए नियम के लेखकों के बाद लिखने के कारण यूहन्ना ने कई प्रकार की झूठी षिक्षा का विकास होते हुए देखा (यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को अधिक जोर, धर्मानुश्ठान पर अधिक जोर. नॉस्टिक विचारधारा)।

<u>*विषेश षीर्शकः यूहन्ना में ''सच्चाई''*</u>
(देखिए **विषेश षीर्शक :17:3 भी)**

एक प्रकार से यूहन्ना ने *अलेथिया,* ''सच्चाई'' के इब्रानी तथा यूनानी पृश्ठभूमि को एक साथ जोड़ रहा है जैसे *लॉगॉस* के साथ किए थे (1:1–14)। **इब्रानी** में एमेत का अर्थ है भरोसेमन्द या सच्चाई (सह कई बार सेप्टूवलन्ट में पिस्टेयूओ के साथ आते है)। **यूनानी** में प्लूटो के वास्तविकता बनाम अवास्तविकता,स्वर्गीय बनाम भौमिक। यह **यूहन्ना** के दोहरावाद में ठीक बैठता है। परमेष्वर अपने आपको स्पश्टरूप से (***अलेथिया,* का** अर्थ है प्रगट करना, पर्दापाष करना, स्पश्ट प्रगटीकरण) अपने पुत्र के द्वारा प्रगट किए। इसे कई ढ़ंग से प्रगट किया हैः

1. संज्ञा, ***अलेथिया,* सच्चाई'**
   क. यीषु अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है (1: 14,17 – पुराने नियम के वाचकीय षब्द)

   ख. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला का गवाही का केन्द्र यीषु था (4:33; 18:37 – पुराने नियम के आखरी भविश्यद्वक्ता)

   ग. यीषु **सच्चाई कहते हैं।** (8:4,44,45,46 – पंकाषन व्यक्तिगत है)

   घ. यीषु (***लॉगॉस*** , 1:1–3) **सच्चाई** है (17:17)

2. विषेशण, अलेथेस्,सच या भरोसेमन्द
   क. यीषु की गवाही (5:31–32; 7:18; 8:13–14)

   ख. यीषु का न्याय (8:16)

3. विषेशण, अलेथिमुस्, वास्तव
   क. यीषु वास्तव ज्योति है (1:19)

   ख. यीषु वास्तव रोटी है (6:32)
   ग. यीषु वास्तव दाख है (15:1)
   घ. यीषु वास्तव गवाह है 19:35

4. क्रियाविषेशण, अलेथॉस, सच में
   क. यीषु को संसार के उद्धारकर्ता के रूप में सामरी की गवाही (4:42)।
   ख. मूसा के दिनों के मन्ना के विरुद्ध में यीषु है सच्चा भोजन (6:55)

यीशु के लिए दूसरों की गवाही से भी सच, अलेथेस षब्द का प्रयोग हुआ है
क. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही सच है (10:41)
ख. क्रूसीकरण के समय में सिपाहियों में से एक की गवाही सच है (19:35)
ग. यूहन्ना का (इस सुसमाचार के लेखक) गवाही सच है (21:24)
घ. यीशु सच्चे नबी के रूप में (6:14; 7:40)

पुराने तथा नए नियम में सच्चाई के बारे में अधिक तर्क–वितर्क के लिए देखिए जॉर्ज एल्डन लाड के ''ए थियोलॅजी ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट'' (पृश्ठ.263–269)।

6:56

'' वह मुझ में स्थिर बना रहता है,
और मैं उस में। ''

इसी सच्चाई को यूह. 15:4–7; 1यूह. 2:6,27,28; 3:6,24 में दोहराया गया है। यह संतो की सहनषीलता के विशय में नए नियम में कही गई विषेश बात है (गला.6:9; प्रका. 2:7,11,17,26; 3:5,12,21)। सच्चा प्रत्युत्तर जारी रहनेवाले प्रत्युत्तर से ही होता है। एक को विष्वास से षुरू करना ही काफी नहीं विष्वास में ही उसे अन्त भी करना है।

6:57

'' जीवते पिता ''

यह षब्द समूह अनोखा है, पर इसे कई बार बाइबल में उल्लेख कर चुके हैं। इस षीर्शक के उत्भव के बारे में कई व्याख्या है

1. वाचा के परमेष्वर का आधारभूत नाम (निर्ग. 3:12,14–16; 6:2,3)
2. परमेष्वर के नाम से षपथ खाना, जैसे '' जीवते परमेष्वर के नाम, या जैसे प्रभु जीवित है (गिन. 14:21,28; यषा. 49:18; यिर्मा. 4:2)
3. परमेष्वार के लिए एक संकेत(भ.सं. 42:2; 84:2; यहो. 3:10; यिर्मा. 10:10; दानि. 6:20,26; होषै. 1:10; मत्ती. 16:169 26:63; प्रेरित. 14:15; रोमि. 9:26; 2कुरि. 3:3; 6:16; 1थिस्स. 1:9; 1तिमु. 3:15; 4:19; इब्रा. 3:12; 9:14; 10:21; 12:22; प्रकाष. 7:2)
4. यूह.5:26 जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है और 5:21 जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसे ही पुत्र भी का कथन

6:58

पुराने तथा नए नियम और मूसा तथा यीशु की तुलना

'' बापदादों के समान नहीं कि खाया,
और मर गए:''

यह इस बात का भी पुश्टी करता है कि उद्धार वंषागत नहीं है(8:33–39) या मूसा की व्यवस्था के द्वारा (तोरह)।

6:59

यीषु ने अपने समय का यहूदी धर्म का अनुसरण किया। उन्होने अराधनालय में सीखा, उन्होने अराधनालय में अराधना की तथा उन्होने अराधनालय में षिक्षा दीं। बाबुल के बन्धुवाई के दौरान (605–538 ई0पू0) अराधनालयों का प्रयोग होने लगी। जहाँ कहीं 10 यहूदी पुरुश इकट्टे होते थे वहाँ एक जगह अराधना तथा षिक्षा के लिए अलग किया जाती थी। यह यहूदियों का रीति रिवाज का एक हिस्सा बन गया। यहूदिया में वापस आने के बाद उन्हों ने इस संब्रदाय को जारी रखा।

6:60–65

60. इसलिये उसके चेलों में से बहुतों ने यह सुनकर कहा, कि यह बात नागवार है; इसे कौन सुन सकता है?
61. यीशु ने अपने मन में यह जान कर कि मेरे चेले आपस में इस बात पर कुड़कुड़ाते हैं, उन से पूछा, क्या इस बात से तुम्हें ठोकर लगती है?
62. और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहाँ वह पहिले था, वहाँ ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?
63. आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आत्मा है, और जीवन भी हैं।
64. परन्तु तुम में से कितने ऐसे हैं जो विश्वास नहीं करते: क्योंकि यीशु तो पहिले ही से जानता था कि जो विश्वास नहीं करते, वे कौन हैं? और कौन मुझे पकड़वाएगा।
65. और उस ने कहा, इसी लिये मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर यह बरदान न दिया जाए तक तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।

6:60

'' इसलिये उसके चेलों में से बहुतों ने ''

यहाँ पर प्रयोगित ''चेले''षब्द कई अर्थों से नवाजा हुआ है। यूहन्ना रचित सुसमाचार में षिश्य तथा विष्वास षब्द दोनों (1) सच्चा अनुयायी (6:68) और (2) अस्थाई अनुयायी (6:64, 8:31–47) के लिए प्रयोग किया गया है।

6:62

यह एक अपूर्ण पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जिसका कोई उपसंहार नही है। यह इसलिए कि उन्होंने प्रत्युत्तर देने में काफी समय लगाया (फिलि. 2:10–11)।

" जहाँ वह पहिले था,
वहाँ ऊपर जाते देखोगे,"

यह यीषु के स्वर्ग से उतर आने पर जोर देता है। यह स्वर्ग में पिता परमेष्वार के साथ उसके अस्तित्व तथा स्वर्ग में पिता परमेष्वार के साथ उसके घनिश्ठ संबन्ध को दर्षाता है (17:5,24)।

6:63

यह आयत षायद पुरानी बनाम नई वाचा ,मूसा बनाम यीषु से संबन्धित है (6:58; 2मुरि. 3:6; इब्रानी के पत्री में दो वाचा के बीच का तुलना)।

" आत्मा तो जीवनदायक है,"

यह उनमें से एक षब्द समूह है जिसका प्रयोग यीषु और पवित्रात्मा के लिए किया गया। (1) आत्मा जीवन देनेवाला जल है (7:38–39); यीषु जीवन जल है (4:10–14); (2) पवित्रात्मा सच्चाई की आत्मा है (14:17; 15:26; 16:13); यीषु सत्य है (14:6); (3) आत्मा सहायक है (14:16,26; 15:26; 16:7); तथा यीषु सहायक है (1यूह. 2:1) देखिए **विषेश षीर्शक** अध्याय16 क अन्त में।

6:64

झूठे अनुयायियों की गिनती कम होकर एक में पहूँच गई– यहूदा (6:70–71; 13:11)। वास्तव में विष्वास के अलग अलग स्तर के बीच रहस्य छिपा हुआ है।

6:65

यह आयत 44 के ही सच्चाई को प्रगट करती है। पतित मानवजाती कभी भी अपने बलबूते पर परमेष्पर की खोज नही करती (रामि. 3:9–18, पुराने नियम की उद्‌धृतों की सुची देखिए)।

देखिए **विषेश षीर्शक 6:44।**

6:66 – 71

66. इस पर उसके चेलों में से बहुतेरे उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।
67. तब यीशु ने उन बारहों से कहा, क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?
68. शमौन पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं।
69. और हम ने विश्वास किया, और जान गए हैं, कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है।
70. यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुन लिया? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है।
71. यह उस ने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा, क्योंकि यही जो उन बारहों में से था,

उसे पकड़वाने को था।।

6:67

''उन बारह''

प्रेरितों के लिए पहली बार इस षब्द का प्रयोग यूहन्ना यहाँ करते हैं (6:70,71; 20:24)।

''शमौन पतरस ने उत्तर दिया,''

इन बारहों के लिए पतरस बोला करता था (मत्ती. 16:16)। वे उसको अगुवे के रूप में देखने के कारण यह नही हुआ (मरकूस. 9:34; लूका. 9:46; 22:24)।

'' अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं। ''

मसीहत (1) सच्चाई से भरा एक संदेष है जिसमें '' अनन्त जीवन की बातें ''है, तथा (2) एक व्यक्ति, यीषु, में इस सच को प्रगट किया है। अर्थात् सुसमाचार व्यक्ति तथा संदेष दोनों है। षब्द *पिस्तिस्* (1) संदेष (यहूदा. 3,20) तथा (2) एक व्यक्ति से(1:12; 3:15,16) संबन्धित हो सकता है।

6:69

'' और हम ने विश्वास किया,
और जान गए हैं, ''

आयत 53 में उद्धार भूतकाल है । आयतें 40,53,54,56 तथा 57 में उद्धार वर्तमान काल में है यानि यह जारी रहनेवाली प्रक्रिया है। यहाँ पर उद्धार पूर्ण काल क्रिया में है। यूनानी में उद्धार हर काल की क्रिया में है:
1. उद्धार पाया (रोमि.8:24)
2. उद्धार पाते है (1 कुरि. 1:18; 15:2)
3. उद्धार हो चुका है (इफि.2:5,8)
4. उद्धारा होगा (रोमि. 5:9,10; 10:9)

एन ए एस बी, एन आर एस वी, एन जे बी ''परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है''
एन के जे वी **''आप जीविते परमेष्वर के पुत्र मसीह हैं''**
टी इ वी **''आप मात्र है परमेष्वर की ओर से आए हुए पवित्र जन''**

कुछ हस्तलेखों में भिन्नता हैं।

षब्दसमूह ''परमेश्वर का पवित्र जन '' पुराने नियम का मसीह षीर्शक है। इसे हम लूका. 1:35; प्रेरित. 3:14 में पाते है। मरकूस. 1:24तथा लूका 4:34 में दुश्टात्मा ने यीषु को इसी षीर्शक से पुकारा है।

6:70

'' क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुन लिया?''

यह षिश्यों का दैवीय नियुक्ति का प्रमाण है (6: 44,65)। आयत 67 के प्रष्न पर भी घ्यान दीजिए। एक वाचकीय संबन्ध के दो पहलू है दैवीय नियुक्ति और मानवीय इच्छा।

'' तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है। ''

कितना चौंकानेवाला कथन है! यह उल्टे चले गए षिश्यों से किसी के बात नही है (6:66),परन्तु चुने हुए बारहों में से एक के बारे में है जिसने यीषु पर विष्वास लाने की बात कही थी। कई इस आयत को 13:2 या 27 से जोड़ते है। इस आयत को समझने के प्रति अनेक प्रष्न हैः (1) क्यों यीषु ने एक षैतान को चुना ? (2) इस प्रसंग में इस षब्द का क्या अर्थ है ?
पहला प्रष्न किए गए नबूवत के साथ संबन्धित है (17:12; भ.सं. 41:9)। यीषु के पास जानकारी थी यहूदा उनके साथ क्या करनेवाला है। मुआफी न मिलनेवाले पाप के लिए यहूदा एक उदाहरण है। कई साल तक साथ रहने, देखने, सुनने के बाद भी उसने यीषु को ठुकराया।

षायद दूसरे प्रष्न के दो अर्थ हैंः (1) यह यहूदा के अन्दर (13:2,27) षैतान प्रवेष (प्रेरित. 13:10; प्रकाष. 20:2 में षैतान के लिए कोई विभक्ति प्रत्य का उपयोग नही है।) करने की ओर दर्षाता है। या (2) षायद इस षब्द को प्रतिनिधि के रूप से प्रयोग किया है (1तिमु. 3:11; 2तिमु. 3:3; तीतुस. 2:3 में कोई विभक्ति प्रत्य का उपयोग नही है)। पुराने नियम के अनुसार षैतान के समान यहूदा भी एक दोश लगााने वाला था। यूनानी में इस षब्द धोखा देनेवाले या पीछे से वार करनेवाले के लिए प्रयोग होता है। यूनानी में इसका अर्थ है '' उस पार फेंकना''।

6:71

''शमौन इस्करियोती ''

इस नाम के लिए दो पृश्ठभूमि हो सकती हैः (1) इब्रानी में, यहूदा से करियोत नामक व्यक्ति (यहो.15:25)। यदि यह बात सही है तो यहूदा एक मात्र गैर गलीलि प्रेरित है। (2) यूनानी में, यहूदी हत्यारों के द्वारा उपयोग करनेवाले चाकू के नाम , अर्थात वह ऐसे एक झुण्ड़ के सदस्य था जो जलन रखनेवालों के नाम से जाना जाता है। देखिए नोट 18:1।

'' पकड़वाने वाला''

यहूदा यीषु को यहूदियो के हाथ पकड़वाएगा।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. क्या यूहन्ना 6 प्रभु भोज के लिए एक टिप्पणी है ? क्यों ओर क्यो नही ?
2. जब यीषु ने कहा कि ''मैं जीवन की रोटी हूँ'' उनका क्या तात्पर्य था?
3. क्यों यीषु ने उस भीड़ में चौंका देने वाले कथनों का प्रयोग किया ?

यूहन्ना – 7

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी

यीषु के भाईयों का अविष्वास	यीषु के भाईयों का अविष्वास	यीषु जीवन का जल	यीषु तथा उनके भाई	यीषु पर्व में यरूषलेम की ओर जाते हैं तथा षिक्षा देते हैं।
7:1—9	7:1—9	7:1—9	7:1—9	7:1
यीषु मिलापवाले तम्बू के पर्व में	स्वर्गीय विद्वान		यीषु मिलापवाले तम्बू के पर्व में	7:2—9
7:10—13	7:10—24	7:10—13	7:10—11 7:12—13	7:10—13
7:14—24		7:14—18	7:14—15 7:16—19	7:14—24
		7:19—24	7:20 7:21—24	
क्या यह मसीह है	क्या यह मसीह हो सकता है	क्या यह मसीह है		लोग मसीह के उत्भव के बारे में चर्चा कर रहे हैं
7:25—31	7:25—31	7:25—31	7:25—27 7:28—29 7:30—31	7:25—27 7:28—29 7:30
यीषु की गिरफ्ततारी के लिए अधिकारियो को भेजा जाना	यीषु और धार्मिक अगुवे		यीषु की गिरफ्ततारी के लिए सिपाहियों का भेजा जाना	यीषु अपने प्रस्थान के बारे में पहले से कहते है। 7:31—34
7:32—36	7:32—36	7:32—36	7:32—34 7:35—36	7:35—36
जीवन जल की नदियाँ	पवित्रात्मा का वायदा		जीवन देनेवाले जल का श्रोत	जीवन जल का वायदा
7:37—39	7:37—39	7:37—39	7:37—39	7:37—38 7:39
लोगों के बीच मे विभाजन	वो कौन है ?		लोगों के बीच मे विभाजन	मसीह के उत्भव के बारे में ताजा खोजबीन
7:40—44	7:40—44	7:40—44	7:40—44	7:40—44
अधिकार में रहनेवालों का अविष्वास	अधिकारियों द्वारा तिरस्कार		यहूदी अधिकारियों का अविष्वास	
7:45—52	7:45—52	7:45—52	7:45 7:46 7:47—49 7:50—51 7:52	7:45—52

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्‌देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 7:1–52

पृश्ठभूमि

क. फसह के पर्व अध्याय 5 तथा 6 के पृश्ठभूमि है। मिलापवाला तम्बू के पर्व 7:1 से 10:21 में पृश्ठभूमि है।

ख. मिलापवाला तम्बू के पर्व प्राथमिक रूप से कटनी का आभार प्रकटन है (जिसे बटारन का पर्व कहते है निर्ग. 23:16; 34:22)। यह उनका कूच को भी याद करने का अवसर था (जिसे झोपडियों का पर्व कहते है, लैव्य. 23:29–44; व्यवस्था. 16:13–15)। यह तिषारी महीने के 15 तारिक को मनाया जाता था जो हमारे सितम्बर के अन्त या अक्तूबर के आरम्भ में है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

7:1–9

1. इन बातों के बाद यीशु गलील में फिरता रहा, क्योंकि यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे, इसलिये वह यहूदिया में फिरना न चाहता था। 2. और यहूदियों का मण्डपों का पर्व निकट था।
3. इसलिये उसके भाइयों ने उस से कहा, यहाँ से कूच करके यहूदिया में चला जा, कि जो काम तू करता

है, उन्हें तेरे चेले भी देखें।
4. क्योंकि ऐसा कोई न होगा जो प्रसिद्ध होना चाहे, और छिपकर काम करेः यदि तू यह काम करता है, तो अपने आप को जगत पर प्रगट कर।
5. क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे।
6. तब यीशु ने उन से कहा, मेरा समय अभी नहीं आया; परन्तु तुम्हारे लिये सब समय है।
7. जगत तुम से बैर नहीं कर सकता, परन्तु वह मुझ से बैर करता है, क्योंकि मैं उसके विरोध में यह गवाही देता हूँ, कि उसके काम बुरे हैं।
8. तुम पर्व में जाओः मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता; क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।
9. वह उन से ये बातें कहकर गलील ही में रह गया।।

7:1

''यहूदी उसे मार डालने का यत्न कर रहे थे,''

यूहन्ना में यहूदी षब्द बुरे लगनेवाली संकेतार्थ से प्रयोग किया गया है (1:19; 2:18,20; 5:10,15,16; 6:41,52; 7:1,11,13,35; 8:22,; 10:24,31,33; 11:8; 19:7,12; 20:19)। उनके नफरत तथा मारने के विचार के बारे में कई बार उल्लेख किया गया है (5:16—18; 7:19,30,44; 8:37,40,59; 10:31,33,39; 11:8,83)।

7:2

''यहूदियों का मण्डपों का पर्व ''

इसे मिलापवाला तम्बू के पर्व भी कहा जाता है (लैव्य.23:29—44; व्यवस्था. 16:13—17) क्योंकि कटनी के समय में वे झोपड़ियों में रहा करते थे जिससे यहूदी अपने मिस्र से निकलने की घटना को याद करते है। इस पर्व का रीति रिववाज 7:1— 10:21 के यीषु के षिक्षा के लिए पृश्ठभूमि तैयार करती है जैसे फसह पर्व ने अध्याय 5 तथा 6 के लिए पृश्ठभूमि तैयार किया था।

7:3

'' उसके भाइयों ने'

2:12 के बाद यह पहली बार यीषु के परिवार का जिक्र किया गया हैं। यह स्पश्ट है कि वे भी उनके तरीके, उद्देष्य तथा इरादे को नही समझ पाए।

''यहाँ से कूच करके यहूदिया में चला जा ''

यह यरूषलेम की ओर के आक्रि तीर्थयात्री झुण्ड़ (लूका. 2:41—44) को दर्षाता है जिनका प्रस्थान गलील से आरम्भ हो चुका था। याद रखे कि यूहन्ना रचित सुसमाचार का केन्द्र यीषु की यरूषलेम सेवा है।

7:4

''ससार्वजनिक''

देखिए निम्नलिखित **विषेश षीर्शक**

विषेश षीर्शकः साहस (परेसिया)

यह ''सब'' *(पान)* **और ''भाशण''** *(रेहिसिस)* **का यूनानी मिश्रित षब्द है। भाशण में स्वतंत्रता या साहस तिरस्कार और विरोध के बीच के साहस को दर्षाता है** (7:13; 1थिस्स. 2:2)।
यूहन्ना के लेखों में (13 बार) यह सार्वजनिक घोशणा को दिखाता है (7:4; कुलु.2:15)। हलॉकि कई बार इसे साधारण रूप से भी प्रयोग किया है (10:24; 11:14; 16:25,29)।
प्ररितों के काम में यीषु के सन्दंष को बड़े साहस के साथ प्रचार किया जैसे यीषु ने पिता और अपनी योजना के बारे में कहा था (प्रेरित.2:29,; 4:13,29,31; 13:46; 14:3; 18:26; 19:8; 26:26; 28:31)। सुसमाचार प्रचार साहस के साथ करने के लिए पौलूस ने प्रार्थना भी माँगी (इफि.6:19; 1थिस्स. 2:2; फिलि. 1:20)।
मसीह में अन्तिम दिन षास्त्र आषा ने इस बुरे संसार में (2कुरि.3:11—12) पौलूस को साहस के साथ मसीह का संदेष को फैलाने में मदद की। उसे यह विष्वास था कि यीषु के पीछे हो लेनेवाले सही प्रतिक्रिया अपनाएंगे (2कुरि. 7:4)।
इस षब्द में एक ओर पहलू है। इब्रानियों की पत्री मसीह में इस साहस को पिता के पास तक पहूँचने में और उनसे बातें करने में हमारी मदद करती है (इब्रा. 3:6; 4:16; 101:19,35)। पुत्र के द्वारा पिता के साथ घनिश्ठ संबन्ध रखने के लिए विष्वासियों को आमन्त्रण है।

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है।

7:5

'' क्योंकि उसके भाई भी उस पर विश्वास नहीं करते थे। ''

एक ही घर में पालन पाशण होने के कारण उसे मसीह के रूप में अपनाना बहूत ही कठीन था (मरकूस. 3:20—21)। यीषु ने उनके भाईयों और बहनों का खयाल रखा। पुनरुत्थान के बाद प्रगट होने के पीछें उनका यह भी लक्ष्य था कि स्वयं को उनके सामने प्रगट करना। वे विष्वास में आगए। याकूब यरूषालेम की कलीसिया के अगुवा बन गए। याकूब तथा यहूदा के द्वारा लिखी गई पुस्तकें नए नियम में षामिल है।

'' अपने आप को जगत पर प्रगट कर। ''

आयत 4 में उन्हीं के द्वारा उपयोग किए गए षब्द को ही लेकर यीषु आयत 7 में बातें करते है। इस जगत ने उसे ग्रहण नहीं किया (15:18—19)
क्योंकि उसने उनके पाप और विघर्म को प्रगट किया (15:18—19; 17:14; 1यूहन्ना. 3:13)।

7:6

" मेरा समय अभी नहीं आया;"

यीषु अपने लक्ष्य का पहचानते थे (12:23; 13:1; 17:1—5)। सुसमाचार की घटना को प्रर्दषन करने की एक दैवीय समय सरणी है।

7:8

***एन ए एस बी,* " तुम अकेला इस** पर्व में जाओः मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता;
एन के जे वी " तुम पर्व में जाओः मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता; "
***एन आर एस वी एन जे बी* "तुम अकेला जाओ मै हर्नी आता।"**
टी इ वी " तुम पर्व में जाओः मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता; "

> 7:10 — 13
> 10. परन्तु जब उसके भाई पर्व में चले गए, तो वह आप ही प्रगट में नहीं, परन्तु मानो गुप्त होकर गया। 11. तो यहूदी पर्व में उसे यह कहकर ढूंढ़ने लगे कि वह कहाँ है? 12. और लोगों में उसके विषय चुपके चुपके बहुत सी बातें हुईं: कितने कहते थे; वह भला मनुष्य हैः और कितने कहते थे; नहीं, वह लोगों को भरमाता है। 13. तौभी यहूदियों के भय के मारे कोई व्यक्ति उसके विषय में खुलकर नहीं बोलता था।

7:11

"यहूदी "

इस अध्याय में यीषु के साथ बातें करनेवाले 4 प्रकार के झुण्ड़ हैः (1) उसके भाई; (2) यहूदी जो धार्मिक अगुवे है; (3) भीड़ जो मिलापवाला तम्बू **के पर्व में षामिल होने के लिए आनेवाले तीर्थयात्री है; और (4) यरूषलेम की जनता जो यीषु के लिए बनाए हुए घात को जानते है।**

7:12

*" और लोगों में उसके विषय
चुपके चुपके बहुत सी बातें हुईं: "*

सुसमाचार इस काम को हर एक भीड़ में करते है। यह मनुश्य के अन्दर के आत्मिक स्तर की भिन्नता को दर्षाता है (7:40–44)।

7:13

"यहूदियों "

भीड़ यहूदियों से थी। पर यह षब्द विषेश रूप से **यरूषलेम के** धार्मिक अगुवे की ओर इषारा करती है। देखिए नोटः 7:1

7:14 – 18

14. और जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगा।
15. तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, कि इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?
16. यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजनेवाले का है।
17. यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूँ।
18. जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजनेवाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उस में अधर्म नहीं।

7:14

" और जब पर्व के आधे दिन बीत गए;"

इस समय तक यीषु ने इतंजार क्यों किया इसका उत्तर हमारे पास नही है, परन्तु यह तीर्थयात्री और उस षहर के लोगों को दिया गया समय था कि वे यीषु और उनकी सेवा के विशय मे चर्चा करें। और यह धार्मिक अगुवों को भी मिला हुआ समय था कि वे भी अपनी षत्रुता को प्रगट करें।

7:15

" इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई? "

इसका तात्पर्य है कि वो कोई आधिकारिक रब्बियों के स्कूल से या फिर प्रसिद्ध रबी से षिक्षा प्राप्त नही की। षब्द "इसे" से अनादर का संकेतार्थ मिलता है (18:17,29)।
यीषु की षिक्षा ने सुननेवालों को उसके (1) विशय–सूची और (2)ढाँचा के कारण कई बार अचम्भित किया है (मरकूस. 1:21–22; लूका. 4:22)। रबी एक दूसरे को उद्धृत करते है परन्तु यीषु ने परमेष्वर से उद्धृत किया!

7:16

यीषु ने अपने समर्पण के कारण **(5:19)** ही नही पर पिता के प्रति उनके जानकारी के कारण वे लोगों को आकर्शित किया।उनके पास भौमिक षिक्षक थे, यीषु के पास स्वर्गीय षिक्षक थे।

7:17

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यह सुसमाचार का विष्वस्तरीय प्रस्ताव (**1:12; 3:16) तथा परमेष्वर का परमाधिकार (6:44,65) के बीच का असत्याभास है। पवित्रात्मा हृदयों को खोलता है (16:8–13)।**

7:18

पतित मानवजाती के लिए यीषु अपने अनोखपन का आग्रह करता है: (1) वो स्वयं का महीमा नही चाहते; (2) वो पिता का महीमा चाहते है; (3) वो सच्चे है तथा (4) वो पाप रहित है।

'' अपने भेजनेवाले की बड़ाई ''

देखिए नोटः 1:14

7: 19 – 24

19. क्या मूसा ने तुम्हें व्यवस्था नहीं दी? तौभी तुम में से कोई व्यवस्था पर नहीं चलता। तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?
20. लोगों ने उत्तर दिया; कि तुझ में दुष्टात्मा है; कौन तुझे मार डालना चाहता है?
21. यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि मैं ने एक काम किया, और तुम सब अचम्भा करते हो।
22. इसी कारण मूसा ने तुम्हें खतने की आज्ञा दी है (यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु बाप–दादों से चली आई है), और तुम सब्त के दिन को मनुष्य का खतना करते हो।
23. जब सब्त के दिन मनुष्य का खतना किया जाता है ताकि मूसा की व्यवस्था की आज्ञा टल न जाए, तो तुम मुझ पर क्यों इसलिये क्रोध करते हो, कि मैं ने सब्त के दिन एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया।
24. मुँह देखकर न्याय न चुकाओ, परन्तु ठीक ठीक न्याय चुकाओ।।

7:19

व्याकरणात्मक ढाँचा ''हाँ'' में उत्तर चाहता है।

'' तौभी तुम में से कोई
व्यवस्था पर नहीं चलता। ''

उस पर्व में षामिल होनेवाले यहूदियों के लिए यह चौंका देनेवाले कथन था।
जानबूझकर हत्या करना मूसा के व्यवस्था के विरोध में है परन्तु अगुवे उस काम को करने पर तुले है। वहाँ के क्षेत्रीय लोगों के पास इस विशय में जानकारी थी परन्तु वे अगुवों को रोकना नही चाहते थे।

" तुम क्यों मुझे मार डालना चाहते हो?"

आयत 20 का प्रष्न तीर्थयात्रियों के तरफ से आया जो इस घात की बात से अन्जान है। बाद में आयत 25 में यरूषलेम के लोगो को मालूम हो जाता है इस घात के विशय में।
धार्मिक अगुवे यीषु को दुश्टात्मा ग्रसित कहते है ताकि उसके षक्ति और ज्ञान को नजरअन्दाज किया जाए (मत्ती. 9:34; 11:18; 12:24; मरकूस. 3:22—30; यूह. 8:48—52; 10:20—21)।

7:20

" तुझ में दुष्टात्मा है; "

यह स्पश्ट था कि जितने यीषु से मिले वे जान गए थे कि उसके अन्दर आत्मिक सामर्थ है। प्रष्न यह है कि यह सामर्थ कहाँ से उपलब्द हुआ? यहूदी अगुवे यीषु के चिन्ह/चमत्कार का तिरस्कार नही कर सकते थे सो वे कहने लगे कि सामर्थ दुश्टात्मा की ओर से है।
इस प्रसंग में मिलापवाला तम्बू **के पर्व में षामिल होने आए हुए तीर्थयात्री उसी षब्दसमूह का प्रयोग करते है परन्तु अलग अर्थ से। वे कहते है कि यीषु दूसरो को हानी पहुँचाने के लिए बिना विवेक से काम करते है।**

7:22

एन ए एस बी, एन के जे वी "(यह नहीं कि वह मूसा की ओर से है परन्तु बाप—दादों से चली आई है),"
एन आर एस वी "(यह नहीं कि,वास्तव में, वह मूसा की ओर से है परन्तु गोत्र पिता से है),"
टी इ वी "(हलॉकि यह मूसा की ओर से नहीं परन्तु बाप—दादों ने षुरू की है),"
एन जे बी "यह मूसा की ओर से षुरू नहीं हुआ है परन्तु गोत्र पिता से चली आई है "

खतने का नियम मूसा की व्यवस्था से षुरू नही हुई (निर्ग. 12:48; लैव्य. 12:3) परन्तु इब्राहिम के साथ यहोवा की विषेश वाचा के चिन्ह के रूप में उसे दिया गया (उत्प. 7:9—14; 21:4; 34:22)।

"और तुम सब्त के दिन को
मनुष्य का खतना करते हो"

यीषु के तर्क—वितर्क का तात्पर्य है कि तुम एक बच्चे के खतने की खातिर सब्त के दिन को एक तरफ कर देते हो और एक मनुश्य को ठीक करने में सब्त के दिन के नियम को एक तरफ क्यो नही कर देते ? यहाँ यीषु रबियों पर आधारित यहूदी धर्म की ही विचारधाराओं का उपयोग कर रहे है।

7:23

"यदि"

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है।

" तुम मुझ पर क्यों इसलिये क्रोध करते हो,
कि मैं ने सब्त के दिन
एक मनुष्य को पूरी रीति से चंगा किया। "

यह या तो 5:1–9 में उल्लेखित चंगाई की घटना के बारे मे है या तो उल्लेखित न किया गया किसी चंगाई की ओर इषारा करती है।

7:24

" मुँह देखकर न्याय न चुकाओ,
परन्तु ठीक ठीक न्याय चुकाओ।"

यह एक आदेषात्मक कथन है अर्थात् जो काम प्रगति पर है उसे रोको। यह षायद यषा. 11:3 की ओर संकेत कर रहे होंगे।

7:25 – 31

25. तब कितने यरूशलेमी कहने लगे; क्या यह वह नहीं, जिस के मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है।
26. परन्तु देखो, वह तो खुल्लमखुल्ला बातें करता है और कोई उस से कुछ नहीं कहता; क्या सम्भव है कि सरदारों ने सच सच जान लिया है; कि यही मसीह है।
27. इस को तो हम जानते हैं, कि यह कहाँ का है; परन्तु मसीह जब आएगा, तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ का है।
28. तब यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए पुकार के कहा, तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ: मैं तो आप से नहीं आया परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है, उस को तुम नहीं जानते।
29. मैं उसे जानता हूँ; क्योंकि मैं उस की ओर से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।
30. इस पर उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा तौभी किसी ने उस पर हाथ न डाला, क्योंकि उसका समय अब तक न आया था।
31. और भीड़ में से बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया, और कहने लगे, कि मसीह जब आएगा, तो क्या इस से अधिक आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो इस ने दिखाए?

7:25

" क्या यह वह नहीं,
जिस के मार डालने का प्रयत्न किया जा रहा है। "

व्याकरणात्मक ढाँचा "हाँ" में उत्तर चाहता है (5:17; 7:19)। यह आयत 36 से आरम्भ होनेवाली प्रष्न प्रणाली में से पहला प्रष्न है।

7:26

एन ए एस बी, *""*
एन के जे वी "सरदारों ने सच सच जान लिया है; कि यही मसीह है ?"
एन आर एस वी " क्या सम्भव है कि सरदारों ने सच सच जान लिया है; कि यही मसीह है ?"
टी इ वी " क्या सम्भव है कि **उन्होंने** जान लिया है; कि यही मसीह है ?"
एन जे बी " क्या सम्भव है कि सरदारों ने जान लिया है; कि यही मसीह है ?"

यह **व्याकरणात्मक ढाँचा "न" में उत्तर चाहता है।**

7:27

'' इस को तो हम जानते हैं,
कि यह कहाँ का है; परन्तु मसीह जब आएगा,
तो कोई न जानेगा कि वह कहाँ का है। ''

यह मलाकी 3:1 पर आधारित रबियों के मसीह परम्परा की ओर इशारा करता है कि मसीह एकदम मन्दिर में प्रगट हो जाएगा इसका उल्लेख 1 हानूक 48:6; 4एज़्. 13:51—52 में भी है।

7:28

इस आयत में यीषु के दो कथन हैः (1) परमेष्वर ने उन्हें भेजा (3:17,34; 5:36,38; 6:29; 7:29; 8:42;10:36; 11:42; 17:3,18,21,23,25; 20:21) तथा (2) वे परमेष्वर को नही जानते है (5:42; 8:19,27,54—55; 6:3)।

'' मेरा भेजनेवाला सच्चा है,''

पिता सच्चा है (3:33; 8:26; 1यूह. 5:20) सो पुत्र भी (7:18; 8:16)। देखिए **विषेश षीर्शक 6:55**

7:29

'' मैं उसे जानता हूँ;
क्योंकि मैं उस की ओर से हूँ
और उसी ने मुझे भेजा है। ''

इस कथन को यहूदियों ने ईष्वर निन्दा समझा इसलिए वे यीषु को मार डालना चाहते थे।

7:30

'' उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा ''

अर्थात् (1) उसे पकडना आरम्भ किया या (2) बार बार उन्हें गिरफ्तार करना चाहा, परन्तु उन्होंने तीर्थ यात्रियों के बीच कलह उत्पन्न करना नही चाहा जिन्होंने उसे मसीह मान लिया था।

''क्योंकि उसका समय अब तक न आया था''

यह दैवीय समय सारणी को बताने का नबुवत षब्दसमूह है (2:4; 7:6,30; 8:20; 12:23,27; 13:1; 17:1)।

7:31

'' बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया,''

यह सच्चा विष्वास था, हलॉकि उनके अन्दर मसीह के कार्यो के प्रति कुछ गलत धारणाएं अवष्य थी। किसी के अन्दर भी ''सिद्ध'' विष्वास नही था (नूह, इब्राहिम, मूसा, दाऊद, 12 षिश्य) देखिए **विषेश षीर्शक 2:23।**

'' मसीह जब आएगा,
तो क्या इस से अधिक आश्चर्यकर्म दिखाएगा जो इस ने दिखाए? ''

यह **यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा ''न'' में उत्तर चाहता है। यीषु में विष्वास की प्रोत्साहन के लिए चिन्ह के प्रयोग के बारे में** *ए थियोलॅजी ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट''* में जॉर्ज एल्डन लाड इस प्रकार कहते है

> **''विष्वास के साथ चिन्ह के रिष्ते के बारे में स्पश्ट उत्तर देना आसान नही है, क्योकि इसका विवरण दो दिषा की ओर मुड़ते हूए दिखाई पड़ता है। कई बार चिन्ह यीषु पर विष्वास की ओर लोगों को ले आते है (2:23; 6:14; 7:31; 10:42)। दूसरी ओर जिन्होंने चिन्ह देखा उनमें से अधिक ने विष्वास नहीं किया (6:27; 11:47; 12:37)। एक बार यीषु ने यहूदियों को डांटा कि वे बिना चिन्ह देखे विष्वास करने में तत्पर नही थे (4:48; 6:30)। विष्वास और चिन्ह के बीच के संधर्श में हमें उत्तर ढूंढना है। चिन्ह के अर्थ और यीषु के प्रति उनकी गवाही को समझने के लिए हमें विष्वास की अवष्यकता है। जिनके अन्दर विष्वास नही था उनके लिए चिन्ह निरर्थक बात थी। जो प्रत्युत्तर देनेवाले थे उनके लिए चिन्ह विष्वास को साबित करने तथा बढ़नेवाली एक तरकीब थी। यह स्पश्ट था कि यीषु के चिन्ह विष्वास के लिए विवष करने वाले नही थे। दूसरी तरफ यीषु के कार्य उनके लिए पर्याप्त है जो देखते है सेवा में क्या हो रहा है। यीषु के कार्य एक षस्त्र के रूप में पापमय जीवन बितानेवालों के लिए दंड़ लाएंगे''** (पृश्ठ.274)।

7:32 — 36

32. फरीसियों ने लोगों को उसके विषय में ये बातें चुपके चुपके करते सुना; और महायाजकों और फरीसियों ने उसके पकड़ने को सिपाही भेजे।
33. इस पर यीशु ने कहा, मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूँ; तब अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊंगा।
34. तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु नहीं पाओगे और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।
35. यहूदियों ने आपस में कहा, यह कहाँ जाएगा, कि हम इसे न पाएंगेः क्या वह उन के पास जाएगा, जो यूनानियों में तित्तर बित्तर होकर रहते हैं, और यूनानियों को भी उपदेश देगा?
36. यह क्या बात है जो उस ने कही, कि तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु न पाओगेः और जहाँ मैं हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते?

7:32

''महायाजकों और फरीसियों ने''

यह सनहद्रिन के सदस्यों को दर्षाता है। वहाँ एक ही महायाजक था, परन्तु रोमी षासन काल से यह पदवी राजनैतिक वस्तु बन गई जिस कारण धनी परिवारवालो ने इसे ग्रहण करना चाहा और एक व्यक्ति से उन्हीं के परिवार के दूसरे सदस्य को दिया था।

" पकड़ने को सिपाही भेजे। "

ये मन्दिर की पुलिस की ओर इषारा करते है जो लेवी गोत्र के हैं।उनका अधिकार मन्दिर के सीमा तक ही है (7:45–46; 18:)।

7:33

" मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूँ: "

यह यूहन्ना रचित सुसमाचार का आम षब्द समूह है (12:35; 13:33; 14519; 16:16–19)। यीषु स्वयं को जानते थे, और कब क्या उनके साथ होनेवाला है इसकी पूरा जानकारी उनके पास थी। (12:23; 13:1; 17:1–5)।

" मैं अपने भेजनेवाले के पास चला जाऊंगा। "

यह यीषु के छुटकारे के सेवाकार्य के अन्तिम क्षण की ओर इषारा करता हैः क्रूसीकरण, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण, पहले की महिमा की पुनःस्थापना (17:1–5)।

7:34

यह ऊपरी कोठरी में षिश्यों के साथ यीषु के वार्तालाप के सदृष्य है। (13:33; 7:36; 8:21)।

7:35,36

" क्या वह उन के पास जाएगा,
जो यूनानियों में तित्तर बित्तर होकर रहते हैं,
और यूनानियों को भी उपदेश देगा? "

यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा "न" में उत्तर चाहता है। यहाँ दूसरा व्यंग प्रयोग है। यह हमेषा परमेष्वर का इच्छा रही (उत्प. 3:15)। मिलापवाले तम्बू के पर्व के दौरान 70 बैलों की बलि चढ़ाई जाती है। और यहूदियों का कर्तव्य बनता है कि अन्यजातियो के बीच में ज्योति आने के लिए प्रर्थना करे। यहाँ षब्द "यूनानी" अन्यजाती को दर्षाता है। " तित्तर बित्तर " षब्द अन्यतातियों के बीच में रहनेवाले यहूदियों को दर्षाता है। यह इस बात के लिए एक उदाहरण है कि लोग यीषु के रूपकात्मक बातों को गलत समझते है।
यह दोहरावाद का एक ओर उदाहरण है। लोगों ने यीषु की बात को इसलिए गलत समझा कि वे यीषु के कहे गए वचन के "स्वर्गीय" तथा "भौमिक" अर्थ लेने के बजाए षाब्दिक अर्थ को लिया। वो पिता से है और वो पिता की ओर लौटेंगे।

7:37 – 39

37. फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, यदि कोई प्यासा हो तो

मेरे पास आकर पीए।
38. जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेगी।
39. उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।

7:37

'' फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है,''

यहाँ एक सवाल आता है कि यह पर्व 7 दिन का (व्यवस्था. 16:13) या 8 दिन का हैं (लैव्य. 23:36; नेह.8:17; 2मकाबियूस. 10:60 तथा जॉसिफस)। यीशु के दिनों में यह 8 दिन का पर्व था: हलॉकि बाकी 7 दिन के समान 8 वॉ दिन षीलोम कुंड़ से पानी निकालकर बलिवेदी के नीचे नही छिडकाते थे। इसे हम *तालमूद* के *ट्राक्टे सुक्काह* से सीखते है जिसे यषा. 12:3 से उद्‌धृत किया गया है। यह खेती के लिए एक दर्षनीय प्रार्थना हो सकती है।

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

''कोई प्यासा हो तो''

यीशु पर विष्वास के लिए विष्वस्तरीय निमंत्रण। देखिए 7:17।

'' मेरे पास आकर पीए। ''

इसी रूपक का प्रयोग 4:13—15 में भी है। यह इस बात की ओर यंकेत करते है कि यीशु जीवन जल देनवाले मसीह चट्टान है (1कुरि. 10:4)। यह स्पश्टरूप से पुराने नियम के निमंत्रण, जो यषा.55: 1—3 में है, जुड़ा हुआ है।
कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''मेरे पास'' को उल्लेख नही किया हैं। यूहन्ना रचित सुसमाचार में लोगों को यीशु पर विषवस करने के लिए अनुरोध किया गया है। इस सुसमाचार में व्यक्तिगत ध्यान है।

7:38

'' जो मुझ पर विश्वास करेगा, ''

यह एक वर्तमानकाल का वाक्य है। यह रिष्ते में होनेवाली एक लगातार संबन्ध को बताते है जैसे कि यूहन्ना 15 का ''बने रहना''। देखिए **विषेश षीर्शक: दृढ़ रहने की आवष्यकता 8:31**

'' जैसा पवित्र शास्त्र में है ''

इसके लिए एक खास वचन ढूंढ़ निकालना कठिन है। यह (यषा. 44:3; 58:11; यहेज़.47:1; जक.13:1; 14:8)। इन में से कोई हो सकता है।

" उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियाँ
बह निकलेगी। "

यहाँ पर प्रयोग किया गया सर्वनाम के प्रति कई सिद्धान्त है: (1) यीषु स्वयं (प्रारम्भिक कलीसिया के पिता लोग, एन इ बी**) (2) मसीह में विष्वास किए हुए प्रत्येक व्यक्ति (पी66, ऑनिगन); या (3) यरूषलेम षहर। आरामिक भाशा में षब्द"उसका" षहर के लिए भी प्रयोग किया जाता है (रबियों के विचार यह है यहेज. 47:1—12; जक. 14:8)।**
यीषु अपने आपको जीवन का जल कहते है (4:10)। इस प्रसंग में यह पवित्रात्मा को दर्षाता है (7:39) जो यीषु के पीछे हो लेनेवालों के अन्दर जीवन का जल का सोता बनाता है (गॉरडेन डी. फी., टू व्हाट एन्ट एक्सजिसिस ? पृश्ठ. **83—87)। यह पवित्रात्मा के विष्वासी के अन्दर यीषु को रूपीकृत करने के काम के सदृष्य है (रोमि. 8:29; गला.4:19; इफि. 4:13)।**

7:39

" क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था;
क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था। "

यह इस कथन के ऊपर यूहन्ना के काफी समय बाद की सोच को प्रगट करता है (16:70)। यह कालवरी तथा पेन्तकुस्त का विषेशता को भी दर्षाता है और देखा गया कि वे महीमा की बातें है (3:14; 12523; 17:1)।

7:40 — 44

40. तब भीड़ में से किसी किसी ने ये बातें सुन कर कहा, सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है।
41. औरों ने कहा; यह मसीह है, परन्तु किसी ने कहा; क्यों? क्या मसीह गलील से आएगा?
42. क्या पवित्र शास्त्र में नहीं आया, कि मसीह दाऊद के वंश से और बैतलहम गांव से आएगा जहाँ दाऊद रहता था?
43. सो उसके कारण लोगों में फूट पड़ी।
44. उन में से कितने उसे पकड़ना चाहते थे, परन्तु किसी ने उस पर हाथ न डाला।।

7:40

" सचमुच यही वह भविष्यद्वक्ता है। "

व्यवस्था. 18:15,18 में मूसा के द्वारा कहे गए मसीह के वायदे के लिए संकेत है। कईयों ने यीषु को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में माना है **(4:19; 6:14; 9:17; मत्ती.21:11)। उन्होंने यीषु के सामर्थ को माना पर उसके व्यक्तित्व तथा काम को गलत समझा। इस्लाम भी इस षीर्शक का उपयोग करते है परन्तु उसके सन्देष को गलत समझा गया।**

7:41

"" औरों ने कहा; यह मसीह है,"

यह इस बात को दर्षाता है कि षब्द " खिश्ट **" इब्रानी षब्द "** मसीह **" के बराबर है, जिसका अर्थ है "अभिशक्त"। परमेष्वर की बुलाहट तथा तैयारी के चिन्ह के तौर पर** पुराने नियम **में राजा, याजक, और** भविष्यद्वक्ता को अभिशेक किया जाता था।

" परन्तु किसी ने कहा;
क्यों?
क्या मसीह गलील से आएगा? "

यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा "न" में उत्तर चाहता है। परन्तु यषा. 9:1 का क्या तात्पर्य है?

7:42

यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा "हाँ" में उत्तर चाहता है।

" दाऊद के वंश "

(2षमू. 7; मत्ती. 21:9; 22:42)।

" बैतलहम गांव से आएगा
जहाँ दाऊद रहता था?"

यह एक ओर व्यगं है (मीका. 5:2–3; मत्ती. 2:6–6)।

7:43

यीषु और उनके सन्देष ने हमेषा फूट डलवाइ (7:48–52; 9:16; 10:19; मत्ती.10: 34–39; लूका. 12:51–53;) यह खतों के बारे में जो दृश्टान्त (मत्ती. 13) कहे गए उनका रहस्य है। किसी के पास आत्मिक कान है तो किसी के पास नही (मत्ती. 10:27; 11:15; 13:9,15 दो बार, 16, 43; मरकूस. 4:9,23; 7:16; 8:18; लूका. 8:8; 4:35)

7: 45 – 52

45. तब सिपाही महायाजकों और फरीसियों के पास आए, और उन्हों ने उन से कहा, तुम उसे क्यों नहीं लाए?
46. सिपाहियों ने उत्तर दिया, कि किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न की। 47. फरीसियों ने उन को उत्तर दिया, क्या तुम भी भरमाए गए हो?
48. क्या सरदारों या फरीसियों में से किसी ने भी उस पर विश्वास किया है?
49. परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते, स्रापित हैं।
50. नीकुदेमुस ने, (जो पहिले उसके पास आया था और उन में से एक था), उन से कहाँ

51. क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को जब तक पहले उस की सुनकर जान न ले, कि वह क्या करता है; दोषी ठहराती है?
52. उन्हों ने उसे उत्तर दिया; क्या तू भी गलील का है ढूंढ़ और देख, कि गलील से कोई भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं होने का।

7:46

" सिपाहियों ने उत्तर दिया,
कि किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें न की। "

यह चौंका देनेवाले गवाही है : (1) उन्होंने बहाना नही बनाया कि वे भीड़ से डरते थे; (2) इन सिपाहियों का एक ही विचार था हलॉकि भीड़ का विचार भिन्न था; (3) वे उनको मिला हुआ आदेष का पालन करने में अभ्यस्त थे न कि अपने विचार को प्रगट करने में।

7:48

" क्या सरदारों या फरीसियों में से
किसी ने भी उस पर विश्वास किया है?"

आयत 47 तथा 48 के यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा "न" में उत्तर चाहता है। षब्द "सरदार" सन्हिद्रिन को दर्षाता है। यहाँ पर सदूकी तथा फारीसी (पूरा सन्हिद्रिन) जो एक दूसरे के षत्रु है,यीषु के विरोध में एकत्रित है (11:47,57; 18:3)।

7:49

" परन्तु ये लोग जो व्यवस्था नहीं जानते,
स्रापित हैं। "

यह *तालमूद* (व्यवस्था. 27:26) को सही से पालन न करने के कारण धार्मिक अगुवों के द्वारा उस जगह के नीचे किए गए लोगों *(अमा हा आरेस)* को दर्षाते है। यूहन्ना के व्यंगयात्मक बातें आयत 50 में भी देख सकते है जहाँ निकुदिमुस कहते है कि उनके व्यवहार जो यीषु के साथ वे कर रहे है वे भी व्यवस्था की उलंघन कर रहे हैं।
कितना दुःखपूर्ण है धार्मिक होना! जे कोई साधारण जन को स्राप देता है वह स्वयं को स्राप देता है! यदि ज्योति अन्धकार मे बदले तो उसका अन्ध्कार कितना भयंकर होगा! इसलिए षैक्षिक, आधुनिक धार्मियों सावधान!

7:51

" क्या हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति को
जब तक पहले उस की सुनकर जान न ले,
कि वह क्या करता है;
दोषी ठहराती है?"

यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा "न" में उत्तर चाहता है (निर्ग. 23:1; व्यव्स्था. 1:16)।

_7:52_

_"क्या तू भी गलील का है ?"_

यह यीषु के विरोध में सन्हिद्रिन का जज़बाती विरोध को दर्षाता है।

_"ढूंढ़ और देख "_

यहूदी धर्म में ढूंढ़ षब्द का अर्थ है पवित्र षास्त्र को पढ़ना **(5:39)। यह फिर से यूहन्ना के व्यंग प्रयोग को दर्षाता है। एलिय्याह (1राजा. 17:1), योना (2राजा. 14:25), होषै तथा नहूम के बारे में क्या कहे ? वे व्यवस्था. 18: 15,19; उत्प. 49: 10; 2षमू. 7 के** भविष्यद्वक्ता **की ओर इषारा करते हैं।**

_7:53—8:11_

देखिए अध्याय 8 के षुरूवाती नोट।

_चर्चा के लिए प्रष्न_

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. **अध्याय 7 मे यीषु के कथनों के लिए कौनसा पर्व का पृश्ठभूमि है ?**
2. मिलापवाला तम्बू **का पर्व का उद्देष्य का विवरण करे।**
3. **क्यों धार्मिक अगुवे यीषु के विरोध किए ?**
4. **इस अध्याय में यीषु के बारे में विभिन्न झुण्ड़ के विचार क्या थीं ?**

यूहन्ना – 8

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री	जगत की ज्योति के साथ एक व्यभिचारणी का आमना सामना	व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री	व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री	व्यभिचारिणी स्त्री
7:53 – 8:11	7:53 – 8:12	7:53 – 8:11	7:53 – 8:10	7:53 – 8:11
यीषु जगत की ज्योति है	यीषु स्वयं की गवाही की रक्षा करते हैं	यीषु जगत की ज्योति है	यीषु जगत की ज्योति है	यीषु जगत की ज्योति है
8:12 – 20		8:12 – 20	8:12	8:12
				यीषु का स्वयं की गवाही के प्रति एक चर्चा
	8:13 – 20		8:13	8:13 – 18
			8:14 – 18	
			8:19क	8:19
			8:19ख	
			8:20	8:20
जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम आ नहीं सकते	यीषु अपने प्रस्थान के बारे में पहले से कहते हैं।		तुम जा नही सकते जहाँ मैं जाता हूँ	
8:21 – 30	8:21 – 29	8:21 – 30	8:21	8:21
			8:22	8:22 – 24
			8:23 – 24	
			8:25क	8:25क
			8:25ख – 26	8:25ख – 26
	सच्चाई तुम्हें स्वतंत्र		8:27 – 29	8:27 – 29

	करेगी			
	8:30 – 36		8´30	8:30
सच्चाई तुम्हें स्वतंत्र करेगी			सच्चाई तुम्हें स्वतंत्र करेगी	यीषु और इब्राहिम
8:31 – 38		8:31 – 33	8:31 – 32	8:31 – 32
			8:33	8:33 – 38
	इब्राहिम का वंष और षैतान	8:34 – 38	8:34 – 38	
तुम्हारा पिता षैतान	8:37 – 47			
8:39 – 47		8:39 – 47	8:39क	8:39 – 41क
			8:39ख – 41क	
			8:41ख	8:41ख – 47
			8:42 – 47	
इब्राहिम से पहले मैं था	इब्राहिम से पहले मैं था		यीषु और इब्राहिम	
8:48 – 59	8:48 – 59	8:48 – 59	8:48	8:48 – 51
			8:49 – 51	
			8:52 – 53	8:52 – 56
			8:54 – 56	
			8:57	8:57 – 58
			8:58	
			8:59	8:59

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

मूलपाठ पृश्ठभूमि 7:53 – 8:11

क. यूहन्ना 7:53 – 8:11 वास्तव में यूहन्ना रचित सुसताचार का भाग नहीं है।

ख. सुसमाचार में यहअनुच्छेद न होने का सबूत

1. बाहरी सबूत

क. सबसे प्राचीन हस्तलेखों में इसकी अनुपस्थिति

1.पापिरस– पी65 (तीसरा षताब्दी के आरम्भ), पी75 (तीसरा षताब्दी)

2.आलेफ (चौथी षताब्दी), बी (चौथी षताब्दी) ए और सी। इन में इस जगह को नाष किया गया है परन्तु बचा हुआ प्रतियों में इस अनुच्छेद का कोई उल्लेख नही है।

ख. कई आधुनिक हस्तलेखों में इसे कुछ चिन्ह के साथ उल्लेख किया गया कि हम जानें की वास्तव में यह यूहन्ना रचित सुसमाचार का भाग नही है।

ग. आधुनिक हस्तलेखों में इसे विभिन्न स्थान में उल्लेख किया गया है:

1, यूहन्ना 7:36 के बाद
2. यूहन्ना 7:44 के बाद
3. यूहन्ना 7:25 के बाद
4. लूका 21:38 के बाद
5. लूका 24:53 के बाद

घ. प्राचीन अनुवादों में अनुपस्थिति

1. प्राचीन लतीनी
2. प्राचीन सूरियानी
3. पेषिथा (आधुनिक सूरियानी)की षुरूवाती प्रतियाँ

ङ यूनानी पिताओं के द्वारा इस अनुच्छेद के बारे में कोई जिक्र नही है (12 वी षताब्दी तक)।

च. यह कोडेक्स डी *(बेज़ेई)*, एक पष्चिमि अनुवाद,लतीनी व्लगेट,और आधुनिक पेषिथा के प्रतियों में उपस्थित है।

2. अन्दरूनी सबूत

क. षब्दावली और षैली यूहन्ना का नही लूका का लगता है। इसे कई हस्तलेखों में लूका. 21:38 या 24:53 के बाद उल्लेख किया गया है।

ख. मिलापवाला तम्बू के पर्व के बाद यहूदी अगुवे के साथ यीषु के उस वार्तालाप के प्रसंग को यह तोड़ते है।

ग. इस के लिए समानान्तर सुसमाचार में कोई समान अनुच्छेद नही है।

3. संपूर्ण तकनीकी चर्चा के लिए ब्रूस *एम् मेटस्गर का ए टेक्सचुयल केमन्टिरी ऑन द ग्रीक न्यू टेस्टमेन्ट* पृश्ठ. 219 – 221 देखें।

ग.यह घटना यीषु के जीवन की मौखिक परम्परा है। यीषु के जीवन के ओर भी घटना है जिसे सुसमाचार लेखकों ने उल्लेखित न करना ठीक समझा (ययूह. 20: 30–31)। केवल सुसमाचार लेखक ही पवित्रात्मा प्ररणा प्राप्त थे। बाद में लेखक के द्वारा उल्लेख नही किया गया एक घटना को इसमें जोड़ने का कोई अधिकार इसकी नकल करनेवालो के पास नही हैं। यीषु के काम और षब्दों का चुनाव करने का अधिकार या मार्गनिर्देषन केवल सुसमाचार लेखकों के पास ही था। यह अनुच्छेद असली में सुसमाचार के भाग नही है, इसलिए, पवित्रात्मा प्रेरणा नही है, इसे हमारे बाइाल में जोड़ना नही चाहिए!

घ, मैं ने चुनाव किया कि मैं इस अनुच्छेद पर टिप्पणी नही करूंगा, क्योंकि मैं विष्वास नही करता कि यह यूहन्ना के द्वारा लिखी गई,इसलिए यह पवित्रात्मा प्रेरित नही है (चाहे यह ऐतिहासिक क्यों न हो)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

8: 12 –20

12. तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
13. फरीसियों ने उस से कहा; तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं।
14. यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि यदि मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, तौभी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जाता हूँ? परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ।
15. तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता। 16. और यदि मैं न्याय करूं भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूँ, और पिता है जिस ने मुझे भेजा।
17. और तुम्हारी व्यवस्था में भी लिखा है; कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है।
18. एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूँ, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है जिस ने मुझे भेजा।
19. उन्हों ने उस से कहा, तेरा पिता कहाँ है? यीशु ने उत्तर दिया, कि न तुम मुझे जानते, तो मेरे पिता को भी जानते।
20. ये बातें उस ने मन्दिर में उपदेश देते हुए भण्डार घर में कही, और किसी ने उसे न पकड़ा; क्योंकि उसका समय अब तक नहीं आया था।

8:12

" तब यीशु ने फिर लोगों से कहा,"

इस अध्याय में षब्द भीड़ का प्रयोग नही है। षायद मिलापवाले तम्बू का पर्व खत्म हुआ पर यीषु धार्मिक अगुवों के लिए गवाह बनकर वहाँ रहा।
अपने आपको प्रगट करने के लिए जैसे उन्होंने पानी का रसम का उपयोग किया वैसे ही अपने आपके बारे में कहने के लिए यहाँ पर्व के ज्योति का रसम को वो अपना रहे है।

'' ज्योति मैं हूँ;''

अध्याय 6,7,8 में यीषु के द्वारा अपने लिए कहे गए रूपकों से लगता है कि ये इस्राएल के मरुभूमि यात्रा का इतिहस से संबन्धित हैः **(1) अध्याय 6 में ''मन्ना'' और ''जीवन की रोटी''; (2) अध्याय 7 में ''जल'' और ''जीवन का जल''; (3) अध्याय 8 में ''ज्योति'' और ''स्वर्गीय महिमा। इस ज्योति का रूपक को** यूहन्ना रचित सुसमाचार **के अन्य आयतों में भी दोहराया गया (1:4–5,8–9; 3:19–21; 9:5; 12:46)।**
इसके अर्थ के प्रति काफी तर्क–वितर्क हैः (1) अन्धकार के प्रति प्राचीन डर; (2) पुराने नियम के परमेष्वर के लिए एक षीर्शक **(भ.सं. 27:1; यषा. 62:20; 1यूह. 1:5); (3)** मिलापवाला तम्बू **का पर्व की पृश्ठभूमि, महिलाओं का आंगन में दिया जलाया जाना; (4)** मरुभूमि यात्रा **के दौरान परमेष्वर के उपस्थिति को दर्षानेवाला मेघस्तम्भ; या (5)** पुराने नियम में मसीह के लिए दिए गए षीर्शक **(यषा. 42:6; 49:6; लूका. 2:32)।**
रबियों ने भी मसीह के लिए ''ज्योति'' षीर्शक का प्रयोग किया है। महिलाओं का आंगन में जलाया गया दिया यीषु के इस कथन के लिए सही ढ़ाँचा है। ज्योति का मसीह गूढार्थ और 1:4,8 में दिया गया विषेश महत्व, मन्दिर का रस्म, अपने उत्भव के बारे में प्रगट करने में यीषु के मदद कर रहे है।
यह यूहन्ना में यीषु के सात ''मैं हूँ'' कथनों से एक कथन है।

1. जीवन की रोटी मैं हूँ (यूहन्ना 6: 35, 41, 48, 51)
2. जगत की ज्योति मैं हूँ (यूहन्ना 8: 12)
3. भेड़ों का द्वार मैं हूँ (यूहन्ना 10: 7,9)
4. अच्छा चरवाहा मैं हूँ (यूहन्ना 10: 11,14)
5. पुनरूत्थान और जीवन मैं हूँ (यूहन्ना 11: 25)
6. मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ (यूहन्ना 14: 6)
7. सच्ची दाखलता मैं हूँ (यूहन्ना 15: 1,5)

केवल यूहन्ना रचित सुसमाचार में पाए जानेवाले इन अनोखे कथन यीषु जो व्यक्ति है उसकी ओर हमारे ध्यान को आकर्शित करते है। यूहन्ना उद्धार के इन व्यक्तिगत पहलू पर जोर देते है।

'' जगत की ''

यह यीषु मसीह के सुसमाचार का विष्वस्तरीय क्षेत्र को दर्षाता है **(3:16)।**

'' जो मेरे पीछे हो लेगा,''

मसीहत कोई धर्म विज्ञान की बात नही है, पर यह एक व्यक्तिगत संबन्ध है जिसके द्वारा षिश्यता के जीवनषैली प्राप्त होती है (1यूह.1:7)।

'' वह अन्धकार में न चलेगा,''

यह षैतान ''अविष्वासी के मन को अन्धा करता है'' इस धर्मषास्त्रीय विचार के लिए एक संकेतार्थ है **(2कुरि. 4:4)। यह परमेष्वर के वचन के बारे मे** पुराने नियम के '' पाँव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।''(भ.सं. 119:105) के लिए भी एक संकेत है।

'' जीवन की ज्योति ''

यीषु के पास परमेष्वर का जीवन है और उसे वो अपने पीछे हो लेनेवालों को प्रदान करते है **(मत्ती. 5:14) जिसे परमेष्वर ने उसे दिया है।**

8:13

" तेरी गवाही ठीक नहीं। "

यहूदी एक कानूनी तकनीकी सबूत पेष कर रहे है (गिन. 35:30; व्यवस्था. 17:6; 19:15–21)। यीषु ने इस विरोध का उत्तर पहले ही दे दिया था (5:31) तथा कई गवाही भी दे चुके है। इस प्रसंग में उसका गवाह पिता है!

8:14,16

"यदि...यदि"

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। अध्याय 8 के अधिकतर षर्तीय वाक्य इस प्रकार के है।

*" मैं जानता हूँ कि
मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जाता हूँ?"*

यीषु के पास पिता के साथ अपना अस्तित्व के बारे में जानकारी थी तथा उनकी सेवा और नबूवत समय सीमा के बारे में अच्छी समझ थी **(1:1–4; 14–18; 7:28–29; 13:1; 17:5)।**

*" परन्तु तुम नहीं जानते कि
मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ। "*

इसके संबन्ध अध्याय 7 से है। उन्हें यीषु के जन्मस्थान के बारे में जानकारी नही हैं (7:41–42) न उन्हें मालूम है वो कहाँ की ओर जा रहे हैं (7:34–36; 8:21)। देखिए **विषेश षीर्शकः यीषु के प्रति गवाही 1:8।**

8:15

" तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; "

यह भी अध्याय 7 के लिए एक संकेत है (7:24)।

" मैं किसी का न्याय नहीं करता। "

कई यहाँ यूहन्ना 3:17 तथा 9:39 के बीच में विरोधाभास को देखते है। यीषु न्याय करने नही जीवन देने आए है। यीषु के पुनरागमन पे जिन्होंने उनका तिरस्कार किया था उनका न्याय किया जाएगाा (3:18–21)।

8:16–18

यह एक मुकद्दमे में 2 गवाहों की अवष्यकता दर्षाता है (गिन. 35:30; व्यवस्था. 17:6; 19:15)। यीषु पिता के साथ अपनी एकता को साबित करते है (7:29; 14:9)। देखिए **विषेश षीर्शकः यीषु के प्रति गवाही 1:8।**

8:19

" तेरा पिता कहाँ है? "

वे अभी भी यीषु को षारीरिक रूप से समझ रहे है। उनका अहंकारी ह्रदय पहले से सजाकर रखा हुए सोच विचार ने सच्चाई के सामने उनके मन को बन्ध कर दिया है (8:27)।

" कि न तुम मुझे जानते,
तो मेरे पिता को भी जानते। "

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। न तुम मुझे जानते, अर्थात् नही जानते , तो मेरे पिता को भी जानते अर्थात् वे नही जानते । इस केन्द्रिय विशय को 5:37 से दोहराया गया। कई बातों को दोहराये जाने के कारण इस पुस्तक का रूपरेखा बनाना आसान नही है।

8:20

'' भण्डार घर में कही,''

यह दूसरी एक इमारत नही थी। रबियो की परम्परा के अनुसार महिहलाओ के आंगन में 13 अलग अलग कमरे थे **(मरकूस. 12:41), जहाँ पर पर्व के दौरान बड़े दिए को जलाया करते थे।**

" उसका समय अब तक नहीं आया था।''

देखिए नोट 2:4।

8:21 — 30

21. उस ने फिर उन से कहा, मैं जाता हूँ और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पाप में मरोगेः जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते।
22. इस पर यहूदियों ने कहा, क्या वह अपने आप को मार डालेगा, जो कहता है; कि जहाँ मैं जाता हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते?
23. उस ने उन से कहा, तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं।
24. इसलिये मैं ने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ, तो अपने पापों में मरोगे।
25. उन्हों ने उस से कहा, तू कौन है? यीशु ने उन से कहा, वही हूँ जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ।
26. तुम्हारे विषय में मुझे बहुत कुछ कहना और निर्णय करना है परन्तु मेरा भेजनेवाला सच्चा है; और जो मैं ने उस से सुना है, वही जगत से कहता हूँ।
27. वे न समझे कि हम से पिता के विषय में कहता है।
28. तब यीशु ने कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।
29. और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ,

जिस से वह प्रसन्न होता है।
30. वह ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया।।

8:21—22

"जहाँ मैं जाता हूँ,
वहाँ तुम नहीं आ सकते .... क्या वह अपने आप को मार डालेगा,"

आयत 22 का प्रष्न "न" में उत्तर चाहता है। यह स्पश्ट है कि उन्होंने उनके कथन को गलत समझा (7:34—36),और उसके मृत्यु के साथ जोड़ दिया। जॉसिफस के माने तो आत्महत्या एक को नरक के सबसे नीचली भाग में ले जाता है। इस प्रष्न से यह मालूम होता है कि उनका विचार था कि वो आत्महत्या करने जा रहे है।

8:21

" अपने पाप में मरोगे:"

अर्थात् "तुम्हारे पाप के कारण तुम मरोगे"। आयत 21 में "पाप" एकवचन है, आयत 24 में बहूवचन है। यह प्राथमिक रूप से मसीह के रूप में यीषु को नकारने को दर्षाता है (8:24)। यह समानन्तर सुसमाचार के पापक्षमा न मिलनेवाला पाप है। अगुवे यीषु का तिरस्कार उनके कार्य तथा चमत्कर की बडे ज्योति मे कर रहे है।

8:23

" तुम नीचे के हो, मैं ऊपर का हूँ:"

यह यूहन्ना का दोहरावाद का एक ओर उदाहरण है **(7:35—36; 18:36)। यूहन्ना के इस दोहरावाद का उपयोग इस सुसमाचार को अनोखा बनाता है।** समानान्तर सुसमाचार दो युगों के बीच के भिन्नता बताते है, अब का बुरा युग और धार्मिकता के भविश्य युग। क्या यीषु ने इन दोनो बातों को अलग अलग ढ़ाँचे में सिखाया ? षायद समानान्तर सुसमाचार यीषु की सार्वजनिक षिक्षा और यूहन्ना रचित सुसमाचार यीषु के षिश्यों के साथ की निजी षिक्षा का उल्लेख करते है।

" तुम संसार के हो,"

सारा संसार उस दुष्ट के वंश में पड़ा है। **(2कुरि. 4:4; इफि. 2:2; 1यूह. 5:19)।**

8:24

"यदि "

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

एन ए एस बी, एन के जे वी " तुम विश्वास करोगे कि मैं वही हूँ,"
एन आर एस वी, जेबी "विश्वास करोगे कि मैं वही हूँ,"
टी इ वी " विश्वास करोगे कि मैं जो हूँ सो हूँ,"
एन जे बी " विश्वास करोगे कि मैं हूँ"

यह स्वयं का दैवीय स्वभाव का समझ के प्रति यीषु के सबसे दृढ़ कथन है। यहोवा के लिए प्रयोगित पुराने नियम के षीर्शक का प्रयोग वो अपने लिए कर रहे है **(निर्ग. 3:14 के मैं हूँ)। यह प्रसिद्ध "मैं हूँ" कथन से भिन्न हैं। इसमें कोई कर्म का ज़िक्र नही है (4:26; 6:20; 8:24,25,58; 13:19; 18:5,6,8)।** देखिए **विषेश षीर्शकः यूहन्ना द्वारा क्रिया " विष्वास " का प्रयोग, 2:23।**

8:25

एन ए एस बी, " जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ। "
एन के जे वी " अब जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ। "
एन आर एस वी **"क्यों मैं तुम से बात करूं ?"**
टी इ वी " जो मैं तुम से प्रारम्भ से कहता आया हूँ"
एन जे बी " मैं तुम से प्रारम्भ से कहता आया हूँ"

यूनानी हस्तलेख में षब्दों के बीच में खाली जगह नही छोडी गई। इस प्रसंग में ठीक बैठने के लिए इन यूनानी षब्दों को अलग करना आवष्यक है। (1) *हो ती* – **"क्यों मैं तुम से बात करूं ?"** (*एन आर एस वी*) ; **(2)** *होते* – " जो प्रारम्भ से तुम से कहता आया हूँ। "(*एन ए एस बी, एन के जे वी , टी इ वी, एन जे बी, एन अई वी*) ; **या (3) हो ती – मैं तुम से बात करूं** (*एन आर एस वी*)**।**
उत्प.1:1; और यूह. 1:1 से इस षब्द का प्रयोग सेप्टूवजन्ट से हुआ है। यीषु प्रारम्भ से है और प्ररम्भ से ही वो उनसे बातें कर रहे है।

8:26–27

विषेश महत्व देने के लिए इन्हें यूहन्ना में दोहराया गया (1) पिता ने मुझे भेजा (3:17,34; 4:34; 5:36,38; 6:29,44,47; 7:28,29; 8:16,26,42; 10:36; 11:42; 12:49; 14:24; 15:21; 17:3,18,21,23,25; 20:21);(2) पिता सच्चा है (3:33; 7:28); और (3) यीषु के षिक्षएं पिता की ओर से है (3:11; 7:16–17; 8:26,28,40; 12:49; 14:24; 15:15)।

" जगत "

देखिए नोटः 1:10

8:28

" जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे,"

यूहन्ना 3:14 में चर्चा किए गए गिनती. 21:4–9 के लिए यह संकेत है। यूहन्ना के बाकी षब्दो के समान इसके भी दो अर्थ है। "ऊंचे पर चढ़ाओगे," **का अर्थ हो सकता है क्रूस पर चढ़ाया जाना, परन्तु इसे कई बार**

''महिमा'' के लिए भी प्रयोग किया गया है (प्रेरित. 2:33; 5:31; फिलि.2:9)। यीषु जानते थे कि वो मरने के लिए ही आए (मरकूस. 10:45)।

'' मनुष्य के पुत्र ''

यह स्वयं यीषु के द्वारा ही चुना हुआ षीर्शक है क्योंकि रबियों के द्वारा प्रभावित यहूदी धर्म में इसकी कोई भूमिका नही है। यीषु ने इस षीर्शक का चुनाव इसलिए किया कि यह मानवीय (यहेज. 2:1; भ.सं. 8:4) और दैवीय (दानि. 7:13) दोनों विचार को आपस में जोडते है।

8:29

'' उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा;''

पिता के साथ उसका संबन्ध उसे स्थिर रखा (8:16; 16:32)। इसलिए क्रूस उनके लिए कठीन था (मरकूस. 15:34)।

8:30

''बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया''

इस अनुच्छेद में षब्द ''विष्वास'' का प्रयोग विस्तार से किया है। इसे कुछ सुननेवालों के विष्वास को (मत्ती. 13; माकूस. 4) दर्षाने के लिए प्रयोग किया गया। वे जो कूछ भी देखे उसके आधार पर उसे मसीह के रूप में विष्वास किया। 8:30—58 का संदर्भ बताता है कि वे वास्तविक रूप से विष्वासी नही थे (2:23—25)। यूहन्ना में कई स्तर का विष्वास है वे सब उद्धार की ओर नही पहुँचाता। देखिए **विषेश षीर्शक : 2:23**

8:31—33

31. तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32. और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।
33. उन्हों ने उस को उत्तर दिया; कि हम तो इब्राहीम के वंश से हैं और कभी किसी के दास नहीं हुए; फिर तू क्योंकर कहता है, कि तुम स्वतंत्र हो जाओगे?

8:31

*''**यदि** बने रहोगे,''*

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यह विष्वास में बने रहने की अयष्यकता के बारे में कहता है जिसे स्पश्ट रूप से यूहन्ना 15 में बताया गया है। यह वर्तमान समय के सुसमाचार प्रचार में

खोया हुआ है। वचन पर विष्वास करना **(5:24,), पालन करना और बने रहना आवष्य है।** देखिए **विषेश षीर्शक : बने रहना 1यूहन्ना 2:10**

विषेश षीर्शकः दृढ़ रहने की आवष्यकता

मसीही जीवन से जुड़े बाइबलीय सिद्धान्तों का वर्णन करना बहुत ही कठीन है क्योंकि वे बिलकुल ही पूर्वी विवादीय जोड़े में दिए गए हैं। यह जोड़े विरोधी प्रतीत होते हैं पर दोनों ही बाइबलीय हैं। पष्चिमी मसीही एक सत्य को चुनते और विपरीत सत्य को छोड़ देते हैं। मैं इसे प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

क. क्या उद्धार प्राथमिक निर्णय है मसीह पर भरोसा करने का या षिश्यता का जीवनभर का समर्पण है?

ख. क्या उद्धार श्रेश्ठ परमेष्वर के अनुग्रह के माध्यम से किया गया चुनाव है या मानवजाति का विष्वास करने और पष्चाताप करने के द्वारा किए हुए परमेष्वर के अवसर का प्रतिउत्तर है?

ग. क्या उद्धार, एक बार पा लिया जाए, तो खो देना असम्भव है, या लगातार प्रयत्न करते रहने की आवष्यकता है?

लगातार प्रयत्न करते रहना का कार्य कलीसिया के इतिहास में सतत है। समस्या नए नियम के विरोधाभासी भागों से षुरू होती है :

क. प्रमाणिकता पर मूलपाठ

1) यीषु के कथन (यूह.6:37; 10:28–29)

2) पौलुस के कथन (रोमियों.8:35–39; इफि.1:13; 2:5, 8–9; फिलि.1:6; 2:13; 2थिस्स.3:3; 2तीमु.1:12; 4:18)

3) पतरस के कथन (1पत.1:4–5)

ख. लगातार प्रयत्न करते रहने की आवष्यकता पर मूलपाठ

1) यीषु के कथन (मत्ती.10:22; 13:1–9, 24–30; मरकुस.13:13; यूह.8:31; 15:4–10; प्रका.2:7, 17, 20; 3:5, 12, 21)

2) पौलुस के कथन (रोमियों.11:22; 1कुरि.15:2; 2कुरि.13:5; गला.1:6; 3:4; 5:4; 6:9; फिलि.2:12; 3:18–20; कुलु.1:23)

3) इब्रानियों के लेखक का कथन (इब्रा.2:1; 3:6, 14; 4:14; 6:11)

4) यूहन्ना के कथन (1यूह.2:6; 2यूह.1:9)

5) पिता के कथन (प्रका.21:7)

बाइबलीय उद्धार त्रिएक परमेष्वर के प्रेम, दया और अनुग्रह से उत्पन्न होता है। कोई भी मनुश्य पवित्र आत्मा के कार्य के बिना उद्धार नहीं पा सकता (यूह.6:44, 65)। परमेष्वर पहले आते और कार्य का निर्धारण करते हैं, पर यह माँग करते हैं कि मनुश्य विष्वास और पष्चाताप से प्रतिउत्तर दे षुरूवात में और लगातार। परमेष्वर वाचा के सम्बन्ध के साथ मानवजाति के से साथ कार्य करते हैं। यहाँ पर विषेश अधिकार और ज़िम्मेदारियाँ दोनों ही हैं।

उद्धार मनुश्यों के सामने प्रस्तुत किया गया है। यीषु की मृत्यु ने पतित मानव के पाप की समस्या का निवारण कर दिया। परमेष्वर ने मार्ग तैयार कर दिया है और चाहते हैं कि सभी लोग जो उनके स्वरूप में रचे गए हैं उनके प्रेम और मसीह में के उपाय का प्रतिउत्तर दें।

यदि आप इस बारे में गैर–कैल्विनीय विचार में अधिक जानना चाहते हैं तो, देखिए

क. डेल मूडी, द वर्ड ऑफ ट्रूथ, इर्डमनस, 1981 (पृश्ठ.348–365)

ख. होवार्ड मार्षल, कैप्ट बाए द पॉवर ऑफ गॉड, बेथेनी फैलोषिप, 1969

ग. रॉवर्ट षैन्क, लाईफ इन द सन, वैस्टकौट, 1961

इस क्षेत्र में बाइबल दो भिन्न समस्याओं को प्रस्तुत करती है : (1) प्रमाणिकता को फलरहित और स्वर्थी जीवन के प्रमाण पत्र के रूप में लेना और (2) जो लोग सेवकोई और व्यक्तिगत पाप की समस्या से संघर्श कर रहे हैं उन्हें उत्साहित करना। समस्या यह है कि गलत समूह गलत संदेषों को ले रहे हैं और सीमित बाइबल के पदों पर धर्मषास्त्रीय षिक्षा की रचना कर रहे हैं। कुछ विष्वासियों को प्रमाणिकता के संदेष की अत्यन्त आवष्यकता है जबकी दूसरों को दहला देने वाली चेतावनियों की आवष्यकता है। आप कौन से समूह में हैं?

"तुम मेरे वचन में बने रहोगे,
तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे"

यीषु जीवनषैलीयुक्त आज्ञा पालन को महत्व देते हैं (लूका. 6:46; 2यूह.9)।

8:32

" तुम सत्य को जानोगे,"

इसे पुराने नियम को "जानना " के समझ में प्रयोग किया गया जिसका अर्थ है "व्यक्तिगत संबन्ध", यह किसी सच्चाई को जानने के बारे में नही हैं **(उत्प. 4:1; यिर्मा.1:5)।**

8:32,40,44,45,46

" सत्य"

यह है इस प्रसंग की कुंजी। इस षब्द का दो व्यंग्यार्थ हैः (1) भरोसेमन्द या (2) सत्य बनाम झूठ। दोनों व्यंग्य यीषु के जीवन और सेवा में सत्य है। वो ही है सुसमाचार का निचोड़ और लक्ष्य। सत्य प्राथमिक रूप से एक व्यक्ति है! यीषु व्यक्तिगत पिता को प्रगट कर रहे है। कई बार इस आयत को षिक्षाप्रणाली के लिए संकेत कर देते है। कारण, सत्य या काफी सारे सत्य कभी भी किसी को भी स्वतंत्र नही करता (सभो.1:18)। देखिए **विषेश षीर्शकः सत्य 6:55, 17:3।**

8:32

"स्वतंत्र करेगा"

विष्वासी मनुश्य के बनाए हुए धार्मिक न्याय–संगत,रीति–रिवाज, से स्वतंत्र है। फिर भी स्वतंत्र विष्वासी स्वयं सुसमाचार के लिए बन्धे हुए है (रोमि.14:1–15:6; 1कुरि. 8 – 10)।

" हम तो इब्राहीम के वंश से हैं
और कभी किसी के दास नहीं हुए;"

यह चौकानेवाली बात है कि जातीय घमण्ड कितना भयानक है। मिस्र, अष्षूर, बाबूल, फारसी,यूनान, सूर, तथा रोम के बारे में क्या वे भूल गए ?

8:34 – 38

34. यीशु ने उन को उत्तर दिया; मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।
35. और दास सदा घर में नहीं रहता; पुत्र सदा रहता है।
36. सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे। 37. मैं जानता हूँ कि तुम इब्राहीम के वंश से हो; तौभी मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता, इसलिये तुम मुझे मार डालना चाहते हो।
38. मैं वही कहता हूँ, जो अपने पिता के यहाँ देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुमने अपने पिता से सुना है।

8:34

" जो कोई पाप करता है,
वह पाप का दास है। "

यीषु ने आयत 32 में "स्वतंत्र करेगा" षब्दसमूह के तुरन्त बाद, जिसे वे आयत 34 मे गलत समझा गया, प्रयास कर रहे है कि उन्हें आत्मिक वास्तविकता में लाया जाए। यह आयत 21 और 24 से संबन्धित है। इस कम महत्वपूर्ण अनुयायियों का निन्दा–प्रस्ताव आयत 44–47 में पूरा किया जाएगा।
ए न्यू टेस्टमेन्ट थियॉलजी में फ्रान्क स्टाग इस प्रकार कहते है "मनुश्य का दुर्दषा का व्यंग्य है, मुक्त होने की प्रयास का नतीजा है, गुलामी" (पृश्ठ. 32)।

<u>*8:35*</u>

यह आयत 34 से संबन्धित नही, पर 36 से है। यीषु है असली में पुत्र, न कि यहूदी धर्म का मूसा। उस पर विष्वास करने के द्वारा, न कि रीति रिवाजों के पालन, ही एक स्वतंत्र हो सकता है (8:32)।

<u>*8:36*</u>

<u>*''यदि''*</u>

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

<u>*8:37*</u>
<u>*'' तौभी तुम मुझे मार डालना चाहते हो। ''*</u>

(5:18; 7:1,19; 8:37,40;11:53)।

<u>*''क्योकि मेरा वचन*</u>
<u>*तुम्हारे ह्रदय में जगह नहीं पाता ''*</u>

इस षब्द समूह को विभिन्न रीति से समझा जा सकता है। सबसे मददगार बात है *द बाइबल इन 26 ट्रानसलेशनस*।

1. '' क्योकि मेरा वचन ने तुम में जगह नहीं पाई'' — ए स वी
2. ''तुम में स्थान नही मिला'' — *द न्यू टेस्टमेन्ट* बाई हेनरी एलफॉर्ड।
3. ''तुम्हारे बीच में प्रगति नही'' — *द न्यू टेस्टमेन्ट* : ए न्यू *ट्रानसलेशन* बाई मॉफत।
4. तुम में स्थन नही पाया — *द एमफसाइसड़ न्यू टेस्टमेन्ट* : ए न्यू *ट्रानसलेशन* बाई जे.बी. रोथरहाम।
5. ''क्योकि मेरा वचन ने तुम्हारे ह्रदय में जगह नहीं पाई'' — *द फॉर गॉस्पलस* बाई इ.वी. रेयू।

<u>*8:38*</u>

<u>*''मैं ने जो देखा''*</u>

यह यीषु के अस्तित्व और पिता के साथ वर्तमान समय के संगति को बताता है (8:40,42)।

8:39 — 47

39. उन्हों ने उन को उत्तर दिया, कि हमारा पिता तो इब्राहीम हैः यीशु ने उन से कहा; यदि तुम इब्राहीम के सन्तान होते, तो इब्राहीम के समान काम करते।
40. परन्तु अब तुम मुझ ऐसे मनुष्य को मार डालना चाहते हो, जिस ने तुम्हें वह सत्य वचन बताया जो परमेश्वर से सुना, यह तो इब्राहीम ने नहीं किया था।
41. तुम अपने पिता के समान काम करते होः उन्हों ने उस से कहा, हम व्यभिचार से नहीं जन्मे; हमारा एक पिता है अर्थात् परमेश्वर।
42. यीशु ने उन से कहा; यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते; क्योंकि मैं परमेश्वर में से निकल कर आया हूँ; मैं आप से नहीं आया, परन्तु उसी ने मुझे भेजा।

43. तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिये कि मेरा वचन सुन नहीं सकते 44. तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, बरन झूठ का पिता है।
45. परन्तु मैं जो सच बोलता हूँ, इसीलिये तुम मेरी प्रतीति नहीं करते।
46. तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? और यदि मैं सच बोलता हूँ, तो तुम मेरी प्रतीति क्यों नहीं करते?
47. जो परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है; और तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर से नहीं हो।

8:39

'' हमारा पिता तो इब्राहीम है: ''

यीषु ने उनका षारीरिक वंषावली को मंजूर किया परन्तु कहा कि उनका चरित्र षैतान के परिवार से है (8:38,44)। एक जाती के पहचान नहीं, व्यक्तिगत संबन्ध ने यहूदियों को परमेष्वर के साथ मिलाया (व्यवस्था. 6:5,13; रोमि. 2:28–29; 9:6)।

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है परन्तु यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य के समान कार्य कर रहा है (8:19,42)। इस मिश्रित षर्तीय वाक्यों को बदलने का प्रयास यूनानी हस्तलेखों में किया गया है। ऐसे मे हम इसे इस प्रकार पढ़ेंगे ''यदि तुम इब्राहिम के संतान होते, तुम नही हो, तो तुम भी इब्राहिम के जैसा ही कार्य करते, तुम ऐसे नही करते।''

8:40

'' ऐसे मनुष्य''

यीषु अपने आप को केवल यहोवा के प्रतिनिधि के रूप में ही नही, एक ही दैवीय स्वभाव का ही नही,परन्तु एक वास्तविक मनुश्य के रूप में भी जाना है। इसने नॉस्टिक झूठे षिक्षकों का आत्मा और षारीरिक बातों के बीच के अनन्तकाल के दोहरावाद (1यूह. 1:1–4; 4:1–4) को खारीज कर दिए है।

8:41

एन ए एस बी, एन के जे वी '' हम व्यभिचार से नहीं जन्मे;''
एन आर एस वी '' हम कुकर्म से जन्मे हुए सन्तान नही ;''
टी इ वी '' हम वास्तविक सन्तान है।''
एन जे बी '' हम कुकर्म से नहीं जन्मे;''

यह आयत 48 के आरोप (तुम एक सामरी हो) से संबन्धित है। ऐसे लगता है कि यहूदी यीषु को कुकर्म के सन्तान बता रहा है। बाद के रबियों का कहना था कि यीषु का पिता एक रोमी सैनिक था।

'' हमारा एक पिता है
अर्थात् परमेश्वर। ''

यह कथन पुराने नियम के अद्वैतवाद की ओर इषारा कर रहे है (व्यवस्था. 4:35,39; 6:4–5) जिसे पैतृक षब्दों से नवाजा गया है (व्यवस्था. 32:6; यषा. 1:2; 63:16; 64:8)। यहाँ है असमंजिस : ये यहूदी अगुवे परमेष्वर के साथ सहभागिता को संपुश्ट करते है (व्यवस्था.6: 4–5) और मूसा की व्यवस्था के प्रति आज्ञा पालन परमेष्वर के साथ ठीक संबन्ध में लाते है (व्यवस्था. 6:1–3,1724–25)। यीषु ने इस बात को कहा कि वो और परमेष्वर एक है। यीषु ने कहा कि परमेष्वर के साथ ठीक संबन्ध उसके ऊपर व्यक्तिगत विष्वास रखने के द्वारा प्राप्त होता है न कि व्यवस्था का पालन करने से। उनका अचम्भित होना और असमंजिस स्वभाविक है परन्तु इस मौके में पवित्रात्मा की अन्तरदृश्टि और यीषु के सामर्थी काम की षुरूवात और विष्वास से होती है।

8:42

''यदि''

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, परन्तु नही, तो तुम मुझ से प्रेम रखते, जो तुम नही करते (8:47)।

8:43

''इसलिये कि मेरा वचन सुन नहीं सकते''

यह आत्मिक समझ और स्वीकृति को दर्षाता है। इनके पास आत्मिक कान नही है (यषा. 6'9–10;मत्ती. 11:15; 13:9,15–16, 43; मरकूस. 4:9,23; 7:16; 8:18; लूका. 8:8; 14:35; प्रेरित. 7:51; 28:26–27)।

8:44

'' तुम अपने पिता शैतान से हो, ''

यह यीषु के दिनों के धार्मीक अगुवों के प्रति कितनी चौका देनेवाली बात है (8:47)। इस विचार को एक इब्रानी मुहावरा '' सन्तान हो.....'' में प्रगट किया है (मत्ती. 13:38; प्ररित. 13:10; 1यूह. 3:8,10)।

'' वह तो आरम्भ से हत्यारा है, ''

यह बुराई का अनन्तता को नही दर्षाता, परन्तु आदम और हव्वा के आत्मिक मृत्यु को दर्षाता है जो एक साँप के अन्दर के झूठ के द्वारा हुई थी (उत. 3)।

8:46

'' तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है? ''

यह झूठी गवाही की ओर दर्षाता है। षैतान झूठ कहता है पर यीषु सत्य कहते हैं। यीषु इन यहूदी अगुवों को नेवता देते है कि वे उसका कथन या षिक्षा को गलत ठहराए। इस प्रसंग में यह कथन धर्मषास्त्रीय रूप से यीषु के पापरहित जीवन की ओर नही दर्षाता।
यूहन्ना रचित सुसमाचार में ''पाप'' एक विषेश काम को नही दर्षाता परन्तु इस पतित संसार में परमेष्वर के विरोध में होनेवाली मूलभूत बुराई को दर्षाता है। यीषु के समान न होना पाप नही है! एक षब्द मे कहे तो अविष्वास ही पाप है (16:9)।

8: 48 — 59

48. यह सुन यहूदियों ने उस से कहा; क्या हम ठीक नहीं कहते, कि तू सामरी है, और तुझ में दुष्टात्मा है?
49. यीशु ने उत्तर दिया, कि मुझ में दुष्टात्मा नहीं; परन्तु मैं अपने पिता का आदर करता हूँ, और तुम मेरा निरादर करते हो।
50. परन्तु मैं अपनी प्रतिष्ठा नहीं चाहता, हाँ, एक तो है जो चाहता है, और न्याय करता है।
51. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।
52. यहूदियों ने उस से कहा, कि अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है: इब्राहीम मर गया, और भविष्यद्वक्ता भी मर गए हैं और तू कहता है, कि यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा तो वह अनन्त काल तक मृत्यु का स्वाद न चखेगा।
53. हमारा पिता इब्राहीम तो मर गया, क्या तू उस से बड़ा है? और भविष्यद्वक्ता भी मर गए, तू अपने आप को क्या ठहराता है।
54. यीशु ने उत्तर दिया; यदि मैं आप अपनी महिमा करूं, तो मेरी महिमा कुछ नहीं, परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो, कि वह हमारा परमेश्वर है।
55. और तुम ने तो उसे नहीं जाना: परन्तु मैं उसे जानता हूँ; और यदि कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारी नाईं झूठा ठहरूंगा: परन्तु मैं उसे जानता, और उसके वचन पर चलता हूँ।
56. तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था; और उस ने देखा, और आनन्द किया।
57. यहूदियों ने उस से कहा, अब तक तू पचास वर्ष का नहीं; फिर भी तू ने इब्राहीम को देखा है?
58. यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से सच सच कहता हूँ; कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूँ।
59. तब उन्हों ने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया।।

8:48

'' तू सामरी है,
और तुझ में दुष्टात्मा है''

यहाँ षायद अरामिक भाषा का प्रयोग हुआ है, आरामिक में षब्द ''सामरी'' का अर्थ है ''षैतान के प्रधान''। यीषु आरामिक का उपयोग करते थे। यदि हम यहूदी अगुवों के आरोपों के आधार पर ध्यान करे तो वे कहते थे कि यीषु का सामर्थ षैतान की तरफ से है। यह भी हो सकता है कि यदि कोई झूठ कहे तो इस षब्द का प्रयोग किया जाता था (8:52)।

षब्द सामरी के प्रयोग के द्वारा वे कहना चाहते कि यीषु झूठा है तथा सच्चा यहूदी नही है (इब्राहिम उसके पिता नही है)। षब्द सामारी अवज्ञा तथा निन्दा के लिए उपयोग किया जाता है।

"मेरा आदर"

देखिए नोटः 1:14

8:51,52

"यदि... यदि"

ये दोनों तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। आज्ञाकारिता विष्वास से जुड़ी है (14:23; 15:20; 17:6)।

" वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा। "

इसमे दो नकारात्मक बात है। यह स्पश्टरूप से आत्मिक मृत्यु को दर्षाता है (8:21,24) न कि षारीरिक मृत्यु को(5:24; 6:40,47; 11:25,26)। यह षायद मृत्यु के प्रति डर को भी बताता है (1कुरि. 15:54–57)।

8:52

यह दिखाते है कि **उन्होंने** यीषु के कथन को गलत समझा (8:51)। वे इसे इब्रहिम और नबियों से संबन्धित करते है।

8:53

यह प्रष्न "न" में उत्तर चाहता है।

" क्या तू उस से बड़ा है? "

यह है यथार्थ बिन्दू। यीषु स्पश्टरूप से आयत 54 तथा 58 में निचोड कहते है जिससे वे इस बात को ईष्वर निन्दा समझकर उसे पत्थरवाह करते है (8:59)।

8:54

"यदि"

एक ओर तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

" महिमा करूं,"

इस षब्द का प्रयोग आदर के लिए किया गया (रोमि. 1:21; 1कुरि. 12:26)।

8:55

'' जानता हूँ; .... जानता ''

इस आयत में दो यूनानी षब्दों *''गिनस्को''* तथा '*'ओइडा''* का प्रयोग है जो इस प्रसंग में पर्यायवाची षब्द लगता है (7:28–29)। यीषु पिता को जानते है और अपने पीछे हो लेनेवालों को उसे प्रगट करते है। यह संसार (यहूदी भी) उसे नही पहचानता (1:10; 8:51; 10:3; 17:25)।

8:56

'' तुम्हारा पिता इब्राहीम ''

यह एक चौका देनेवाली कथन है। यीषु अपने आपको ''यहूदियो'', ''व्यवस्था'' (8:17), ''मन्दिर'' और गोत्रपिता इब्राहीम से भी अलग करते हैं। यह पुरानी वाचा से अलग होने का स्पश्ट उदाहरण है!

'' मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था;''

इब्राहीम कितनी गहराई से मसीह के बारे में जानता था ? कुछ अनुवादकों ने इसे भविश्यकाल में अनुवाद किया है। इन विकल्पों को *द बाइबल इन 26 ट्रानसलेशनस* से लिया गया है:

1. वह देखने के लिए प्रसन्न रहा – *द एमफसाइसड़ न्यू टेस्टमेन्ट* : ए न्यू *ट्रानसलेशन* बाई जे.बी. रोथरहाम।
2. मेरा दिन देखने के लिए मगन रहा – आर एस वी
3. उससे मिलने में वह अति प्रसन्न था – *द बेरकिलि वेरसन ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट* बाई गेरित्त वेरकुई
4. मेरे आगमन को देखते हुए – *द न्यू टेस्टमेन्ट* : एन अमेरिकन *ट्रानसलेशनस* बाइ एडगाार जे. गुढस्पीड
5. मेरे दिनों के बारे में जानने में मगन था – *द न्यू टेस्टमेन्ट इन द ल्वॉन्गेज ऑफ टुड़े* बाई विल्यम एफ बीक

''उस ने देखा, और आनन्द किया''

यह निम्नलिखित दो से एक बात है : (1) इब्राहीम ने अपने जीवनकाल में दर्षन में मसीह को देखा (2एसड्रास. 3:14); या (2) इब्राहीम ऊपर जीवित है तथा मसीह के पृथ्वी पर के काम को जानता है (इब्रा. 11:13)।

8:58

'' इब्राहीम उत्पन्न होने से पहले मैं हूँ''

यह यहूदियों के लिए ईष्वर निन्दा की बात थी और उसे पत्थरवाह करने की प्रयास किया गया (निर्ग. 3:12,14)। उसके कथन को **उन्होंने** अच्छे से समझलिया कि वो अस्तित्व में रहनेवाला ईष्वर है (4:26; 6:20; 8:24,28,54–59; 13:19)।

8:59

यह उन आयतो से एक है जिसे व्याख्या करनेवाले सोच मे पड़ गए कि यह (1) एक चमत्कार है (लूका. 4:30), या (2) यीषु दूसरे यहूदियो जैसे दिखते थे, सो वो भीड में गुल हो गया।
वहाँ एक दैवीय समय सारणी है। यीषु जानते थे कि वो मरने के लिए आए तथा उसे मालूम था कि कब, कैसे और कहाँ। उसका ''समय अब नही आया था!''

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. क्या यूह. 7:53 – 8:11 वास्तव में यूहन्ना रचित सुसमाचार का भाग है ? क्यो या क्यों नहीं ?

2. यीषु के कथन ''मैं जगत का ज्योति हूँ'' का क्या पृश्ठभूमि है ?

3. क्यो फारसी यीषु के खिलाफ थे ?

4. संदर्भ के आधार पर आयत 30 में प्रयोगित ''विष्वास'' का क्या अर्थ है ?

<u>*यूहन्ना – 9*</u>

<u>*पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद*</u>

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
जन्म के अन्धे की चंगाई	जन्म के अन्धे का दृश्टिदान	यीषु स्वयं को जीवन की ज्योति के रूप में प्रगट करते हैं	यीषु जन्म के अन्धे की चंगा करते हैं	जन्म के अन्धे का अभिषाप
9:1—12	9:1—12	9:1—12	9:1—2	9:1—5
			9:3—5	
			9:6—7	9:6—7
			9:8	9:8—12
			9:9क	
			9:9ख	
			9:10	
			9:11क	
			9:11ख	
			9:12	
फरीसि चंगाई के जांच पडताल करते हैं	फरीसि उस व्यक्ति को बाहर निकालते है		फरीसि चंगाई के जांच पडताल करते है	
9:13—17	9:13—34	9:13—17	9:13—15	9:13—17
			9:16क	
			9:16ख	
			9:17क	
			9:17ख	
9:18—23		9:18—23	9:18—19	9:18—23

			9:20—23	
9:24—34		9:24—34	9:24	9:24—34
			9:25	
			9:26	
			9:27	
			9:28—29	
			9:30—33	
			9:34	
आत्मिक अन्धापन	सही दृश्टि सही अन्धापन		आत्मिक अन्धापन	
9:35—39	9:35—41	9:35—41	9:35	9:35—39
			9:36	
			9:37	
			9:38	
			9:39	
9:40—41			9:40	9:40—41
			9:41	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 9:1—41

क. अन्धे व्यक्ति की चंगाई, जो यीषु के सेवा में अक्सर होती थी, जिसे कई प्रकार से पूरा किया गया।

ख. अन्धे को चंगा करना मसीह होने का एक चिन्ह था (यषा. 29:18; 35:5; 42:7; मत्ती. 11:15)। इस चंगाई की विषेशता यीषु के कथन ''मैं जगत का ज्योति हूँ'' (8:12; 9:5) के तुरन्त बाद के संदर्भ से होती है।

ग. यह अध्याय एक व्यक्ति के षारीरिक अन्धेपन तथा फरीसियों के आत्मिक अन्धेपन का दृश्टान्त प्रर्दषित करते है (9:39–41; मत्ती. 6:23)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

9:1 – 12

1. फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था।
2. और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रबी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने?
3. यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था, न इस के माता पिता नेः परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों। 4. जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य हैः वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता।
5. जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक जगत की ज्योति हूँ।
6. यह कहकर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर।
7. उस से कहा; जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।
8. तब पड़ोसी और जिन्हों ने पहले उसे भीख माँगते देखा था, कहने लगे; क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख माँगा करता था?
9. कितनों ने कहा, यह वही हैः औरों ने कहा, नहीं; परन्तु उसके समान हैः उस ने कहा, मैं वही हूँ।
10. तब वे उस से पूछने लगे, तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं?
11. उस ने उत्तर दिया, कि यीशु नाम एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा, कि शीलोह में जाकर धो ले; सो मैं गया, और धोकर देखने लगा।
12. उन्हों ने उस से पूछा; वह कहाँ है? उस ने कहा; मैं नहीं जानता।।

9:1

'' जन्म का अन्धा''

यह इस प्रकार का चंगाई के एक उदाहरण है। वहाँ धोखेबाज़ी की कोई संभावना नही।

9:2

" उसके चेलों ने "

अध्याय 6 से यहाँ पहली बार षिश्यों का ज़िक्र है। ये (1) 7:3 में बताए गए यहूदी षिश्य भी हो सकता है , या (2) 12 षिश्य भी हो सकते है।

" किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा,
इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने?"

इस प्रष्न ने अनेक धर्मषास्त्रीय वाद विवाद के लिए रास्ता खोला। हमें इसकी व्याख्या प्राचीन यहूदी धर्म पर आधारित करनी है न किसी पूर्वीय धर्म के आधार पर। यह षायद निम्नलिखित बातो की ओर इषारा कर रहे होंगेः (1) यह षायद उत्पत्ती. 25:22 से रबियो द्वारा बनाया गया सिद्धान्त है; (2)यह षायद माता पिता के या करीबी रिष्तेदारों के पाप की ओर इषारा कर रहे होंगे जिसे जन्म होने से पहले ही ग्रसित होगए (निर्ग. 20:5; व्यवस्था. 5:9); या (3)यह षायद पाप और रोग के बीच के रिष्ते को, जो रबियों के धर्मषास्त्र में आम है, इषारा कर रहे होंगे (याकूब. 5:15–16; यूह. 5:14)।

इसका पुर्नजन्म के साथ कोई लेना देना नही है। यह एक यहूदी ढाँचा है। इस बात के ऊपर तर्क–वितर्क के लिए देखे जेमस डब्ल्यू सिरे का *स्क्रिप्चर टिव्सिटिगं,* पृश्ठ. 127 – 144।

9:3

इस आयत में यीषु ने 9:2 में षिश्यों द्वारा पूछे गए प्रष्न का उत्तर दिया है। इस में कई सत्य छिपे हुए है जैसेः (1) पाप और रोग अपने आप आपस में जुडे हुए नही है, तथा (2) समस्या कई बार परमेष्वर के आषिश के लिए अवसर प्रदान करते है।

9:4

"हमें ... मुझे"

ये सर्वनाम आपस में मेल नही खाते। **व्याकरणात्मक** तालमेल के लिए कई यूनानी हस्तलेखों में किसी न किसी एक को बदल दिया गया है। यह इस बात को दर्षाता है कि धर्मषास्त्रीय रीति से यीषु जगत का ज्योति है और हमें प्रति दिन इस ज्योति को जलाना है (मत्ती. 5:14)।

" रात आनेवाली है "

जब हम आयत 5 के साथ इसका तुलना करते है तब पता चलता है कि यह एक रूपक है। रात इन में से किसी बात को दर्षाते होंगेः (1) आनेवाला न्याय, (2) अवसर लुब्द हो जाना, या (3) यीषु का तिरस्कार और क्रूसीकरण।

9:5

''मैं जगत की ज्योति हूँ। ''

यूहन्ना ने कई बार आत्मिक वास्तविकता को बताने के लिए ''ज्योति'' और ''अन्धकार'' को रूपक के समान प्रयोग किया है। यीषु जगत की ज्योति के रूप में (1:4–5, 8–9; 3:17–21; 8:12; 9:5; 12:46) कई पुराने नियम के कई मसीह बातों को दर्षाता है (यषा.42:6; 49:6; 51:4; 60:1,3)।

9:6

'' थूक से मिट्टी सानी,''

थूक यहूदियों का घरेलू नुस्का था। परन्तु उसे सब्त के दिन उपयोग में लाना मना था (9:14)। यीषु के द्वारा थूक का उपयोग हम सुसमाचर में तीन बार देखते है (मरकूस. 7:33, 8:23 और यूह. 9:6)। चंगाई के इस साधन के उपयोग के द्वारा यीषु उस व्यक्ति के विष्वास को संसारीक रूप से प्रोत्साहित कर रहे थे।

9:7

''शीलोह के कुण्ड ''

शीलोह का अर्थ है '' भेजा हुआ ''। मिलापवाला तम्बू के पर्व की रस्म के लिए इस कुण्ड का उपयोग करते थे।षब्द भेजा हुआ इस बात से संबन्धित है कि यहाँ के पानी यरूषलेम दीवार के बाहर गीहोन श्रोत से लाया जाता था। भेजा हुआ षब्द को रबियों ने मसीह प्रभाव से जोड़कर उपयोग किया करते थे।

''धोया,''

यह विष्वास का काम था। उसने यीषु का वचन का पालन किया! परन्तु यह उद्धार दिलानेवाली विष्वास नही था (9:11,17,36,38)। विष्वास एक प्रक्रिया है। चार सुसमाचारों में से यूहन्ना रचित सुसमाचार ने विष्वास के अलग अलग स्तर का खुलासा किया है। अध्याय 8 विष्वास किए हुए एक झुण्ड का जिक्र करता है पर वे उद्धार के योग्य विष्वास नही थे (मत्ती. 4; माकूस. 13 खेतो का दृश्टान्त)। देखिए निम्नलिखित **विषेश षीर्शक।**

विषेश षीर्शक : उद्धार के लिए प्रयोग किए गए यूनानी क्रिया पद वाक्य

उद्धार कोई उपज या परिणाम नहीं है, पर यह आपसी सम्बन्ध है। यह किसी के मसीह पर भरोसा करने से समाप्त नहीं होता; परन्तु तब यह षुरू ही होता है। यह आग के लिए बीमा नहीं है और नहीं यह स्वर्ग के लिए यात्रा पत्र है परन्तु यह मसीहसमानता में बढ़ने का जीवन है।

उद्धार पूर्ण किए हुए कार्य के समान

1) प्रेरित.15:11

2) रोमियों.8:24

3) 2तीमु.1:9

4) तीत.3:5

5) रोमियों.13:11

उद्धार होने की प्रक्रिया में (वर्तमान काल)

1) इफि.2:5, 8

उद्धार चल रही प्रक्रिया में

1) 1कुरि.1:18; 15:2

2) 2कुरि.2:15

3) 1पतरस. 3:21; 4:18

उद्धार भविश्य में पूरा होने वाले के रूप में

1)(मत्ती.10:22; 24:13; मरकुस.13:13 में प्रयोग किया गया है)

2) रोमियों.5:9, 10; 10:9, 13

3) 1कुरि.3:15; 5:5

4) फिलि.1:28;

5)1थिस्स.5:8–9

6) 1तिमु. 4:16

7) इब्रा.1:14; 9:28

8) 1पतरस. 1:5,9

इसलिए उद्धार का आरम्भ एक विष्वास का निर्णय से षरू होता है (यूह. 1:12; 3:16; रोमि. 10:9–13), परन्तु यह एक विष्वास का जीवनषैली प्रक्रिया में परीवर्तित होना है (रोमि. 8:29; गला. 4:19; इफि. 1:4; 2:10) जो एक दिन उसका पूर्णता में पहूँचेंगी (1यूह. 3:2)। इस अन्तिम सतर को महिमा प्राप्ती कहा जाता है। इसे इस प्रकार कह सकते है

1. प्रारम्भिक उद्धार – धर्मी ठहराया जाना (पाप के मजदूरी से छुटकारा)

2. प्रगतिषील उद्धार – षुद्धिकरण (पाप के ताकत से छुटकारा)

3. अन्तिम उद्धार – (पाप की उपस्थिति से छुटकारा)।

9:8

'' पड़ोसी ''

इस चमत्कर के गवाही देनेवाले तीन झुण्ड का जिक्र इस अध्याय मे हैः (1) उसके पडोसी (9:8); वह व्यक्ति स्वयं (9:11); और उसके मातापिता (9:18)। उसके चंगाई के बारे मे उसके पडोसियों और फरीसियों के बीच मे असहमती थीं।

'' क्या यह वही नहीं,
जो बैठा भीख माँगा करता था? ''

यह यूनानी प्रष्न ''हाँ'' में उत्तर चाहता है।

'' मैं वही हूँ। ''

यह यीषु के द्वारा 4:26; 6:20; 8:24, 28, 58; 13:19; 18:5,6,8 में प्रयोग किया गया यूनानी मुहावरा के समान मुहावरा है । यह इस बात को दर्षाता है कि इस प्रकार के षब्द अपने आप मे कोई दैवीयता नही रखते है। आयत 36 (साहिब) और 38 (प्रभु) में प्रयोग किया गया षब्द *कूरियोस* अधिक द्वि–अर्थी है।

9:11–12

यह वार्तालाप इस बात को दर्षाता है कि उसका चंगाई उसे तत्काल उद्धार में नही पहुँचाया। उसका विष्वास का प्रौढ़ता यीषु से मुलाकात होने से हुई है (9:35)।

9:13 – 17

13. लोग उसे जो पहिले अन्धा था फरीसियों के पास ले गए।
14. जिस दिन यीशु ने मिट्टी सानकर उस की आंखे खोली थी वह सब्त का दिन था।
15. फिर फरीसियों ने भी उस से पूछा; तेरी आंखें किस रीति से खुल गईं? उस ने उन से कहा; उस ने मेरी आंखो पर मिट्टी लगाई, फिर मैं ने धो लिया, और अब देखता हूँ।
16. इस पर कई फरीसी कहने लगे; यह मनुष्य परमेश्वर की ओर से नहीं, क्योंकि वह सब्त का दिन नहीं मानता। औरों ने कहा, पापी मनुष्य क्योंकर ऐसे चिन्ह दिखा सकता है? सो उन में फूट पड़ी।
17. उन्हों ने उस अन्धे से फिर कहा, उस ने जो तेरी आंखे खोली, तू उसके विषय में क्या कहता है? उस ने

कहा, यह भविष्यद्वक्ता है।

9:13

" लोग "

यह अवष्य पडोसियों की ओर इषारा करता है।

" फरीसियों "

यूहन्ना रचित सुसमाचार में यहूदी अगुवों के लिए दो षीर्शकों का प्रयोग हुआ है। साधारण रीति से उन्हें "यहूदी" करके संबोधित किया गया (9:18,22), हलॉकि इस अध्याय में उन्हें फरीसी भी कहा गया (13,15,16,40)।

9:14

" जिस दिन यीशु ने
मिट्टी सानकर उस की आंखे खोली थी
वह सब्त का दिन था। "

मनुश्य का आवष्यकता से बढ़कर यहूदी अगुवों के परम्परा (तालमूद) ने वरिश्ठता ले ली है (5:9; 9:16; मत्ती. 23:24)। ऐसे लगता है कि यहूदी अगुवों से तर्क–वितर्क करने के लिए ही उन्होंने इन कामों को सब्त के दिन ही किया। देखिए नोटः 5:9।

9:16

व्यवस्था. 13:1–5 के आधार पर **उन्होंने** यीषु के न्याय करना चाहा।

"उन में फूट पड़ी"

यीषु हमेषा इस बात का कारण बने (6:52; 7:439 10:19; मत्ती. 10:34–39)।

9:17

"वो भविष्यद्वक्ता है "

यह अध्याय इस मनुश्य का विष्वास के बढौतरी को चित्रित करती हैं (9:36,38)।

9:18 – 23

18. परन्तु यहूदियों को विश्वास न हुआ कि यह अन्धा था और अब देखता है जब तक उन्हों ने उसके माता–पिता को जिस की आंखे खुल गई थी, बुलाकर
19. उन से न पूछा, कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है, जिसे तुम कहते हो कि अन्धा जन्मा था? फिर अब क्योंकर देखता है?
20. उसके माता–पिता ने उत्तर दिया; हम तो जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है, और अन्धा जन्मा था।
21. परन्तु हम यह नहीं जानते हैं कि अब क्योंकर देखता है; और न यह जानते हैं, कि किस ने उस की आंखे खोलीं; वह सयाना है; उसी से पूछ लो; वह अपने विषय में आप कह देगा।
22. ये बातें उसके माता–पिता ने इसलिये कहीं क्योंकि वे यहूदियों से डरते थे; क्योकि यहूदी एकमत कर चुके थे, कि यदि कोई कहे कि वह मसीह है, तो आराधनालय से निकाला जाए।
23. इसी कारण उसके माता–पिता ने कहा, कि वह सयाना है; उसी से पूछ लो।

9:22–23

''यदि कोई कहे कि वह मसीह है,''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। उसके माता पिता यहूदियों से डरते थे । वहाँ काफी लोग थे जिन्होंने इस चंगाई को देखा और परखा : (1) पडोसी (9:8–10); (2) वह स्वयं (9:11–17,24–33); और (3) उसके माता पिता (9:18–23)।

विषेश षीर्शक : अंगीकार

क. अंगीकार या स्वीकार करने के लिए एक ही मूल के दो यूनानी षब्द हैं, *होमोलेगेओ* और *एक्सोमोलोगेओ*। याकूब मिश्रित षब्द प्रयोग करते हैं *होमो*, समान या वही; *लेगो*, कहना; और *एक्स*, से बाहर। इसका आधारभूत अर्थ है वही कहना जिससे सहमत हों। *एक्स* ने इसमें सार्वजनिक तौर पर मान लेने के विचार को जोड़ दिया।

ख. इस षब्द समूह के अग्रेज़ी अनुवाद हैं

1) प्रषंसा

2) सहमत होना

3) घोशणा करना

4) स्वीकार करना

5) अंगीकार करना

ग. इस षब्द के प्रगट रूप से दो विपरीत प्रयोग हैं

1) प्रषंसा करना (परमेष्वर की)

2) पाप स्वीकार करना

इसका उत्थान षायद परमेष्वर की पवित्रता और अपनी पापपूर्णता के बारे में मनुश्य के विचार से हुआ है। एक सत्य को मान लेना दोनों को मान लेना है।

घ. नए नियम में इस षब्द समूह का प्रयोग

1) वायदा करना (मत्ती.14:7; प्रेरित.7:17)

2) किसी बात से सहमत होना (यूह.1:20; प्रेरित.24:14; इब्रा.11:13)

3) प्रषंसा करना (मत्ती.11:25; रोमियों.14:11; 15:9)

4) से सम्मति करना

(क) व्यक्ति (मत्ती.10:32; यूह.9:22; 12:42; रोमियों.10:9; फिलि.2:11; 1यूह.2:23; प्रका.3:5)

(ख) सत्य (प्रेरित.23:8; 2कुरि.11:13; 1यूह.4:2)

5) सार्वजनिक रूप से घोशणा करना (कानूनी विचार का उत्थान धार्मिक पुश्ठि के रूप में, प्रेरित.24:14; 1तीमु. 6:13)

(क) दोश के दाखिले के बिना (1तीमु.6:12; इब्रा.10:23)

(ख) दोश के दाखिले के साथ (मत्ती.3:6; प्रेरित.19:18; इब्रा.4:14; याक.5:16; 1यूह.1:9)

9:22

" तो आराधनालय से निकाला जाए। "

उसके निकाले जाने से डरते थे (7:47–49)। इस प्रक्रिया का षुरूवात एज़्रा से हुई (एज़्रा. 10:8)। रबियों के साहित्यों से हमें मालूम होता है कि वहाँ तीन प्रकार का निकाला जाना होता थाः (1) एक सप्ताह के लिए; (2) एक महीने के लिए; ओर (3) जीवन भर के लिए।

" कहे (अंगीकार करें)"

यह एक मिश्रित षब्द है। इसे सार्वजनिक स्वीकार या घोशण के लिए प्रयोग करते है। यहाँ यीषु को मसीह के रूप में विष्वास करने को यह दर्षाता है।

"उसे आराधनालय से निकाला जाए। "

(12:42; 16:2)।

9:24 — 34

24. तब उन्हों ने उस मनुष्य को जो अन्धा था दूसरी बार बुलाकर उस से कहा, परमेश्वर की स्तुति कर; हम तो जानते हैं कि वह मनुष्य पापी है।
25. उस ने उत्तर दियाः मैं नहीं जानता कि वह पापी है या नहींः मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अन्धा था और अब देखता हूँ।
26. उन्हों ने उस से फिर कहा, कि उस ने तेरे साथ क्या किया? और किस तरह तेरी आंखें खोली?
27. उस ने उन से कहा; मैं तो तुम से कह चुका, और तुम ने ने सुना; अब दूसरी बार क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम भी उसके चेले होना चाहते हो?
28. तब वे उसे बुरा–भला कहकर बोले, तू ही उसका चेला है; हम तो मूसा के चेले हैं।
29. हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बातें कीं; परन्तु इस मनुष्य को नहीं जानते की कहाँ का है।
30. उस ने उन को उत्तर दिया; यह तो अचम्भे की बात है कि तुम नहीं जानते की कहाँ का है तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं।
31. हम जानते हैं कि परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता परन्तु यदि कोई परमेश्वर का भक्त हो, और उस की इच्छा पर चलता है, तो वह उस की सुनता है।
32. जगत के आरम्भ से यह कभी सुनने में नहीं आया, कि किसी ने भी जन्म के अन्धे की आंखे खोली हों।
33. यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से न होता, तो कुछ भी नहीं कर सकता।
34. उन्हों ने उस को उत्तर दिया, कि तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, तू हमें क्या सिखाता है? और उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया।।

9:24

" परमेश्वर की स्तुति कर; "

यह षपथ खाने की तरीका है जिससे ईमानदारी का सबूत मिलता है (यहोषू. 7:19)।

9:25

यह उत्तर आयत 16 की ओर इषारा करती है। यह व्यक्ति किसी धर्मषास्त्रीय बातो पर वाद–विवाद करना नही चाहते, परन्तु यीषु के साथ मुलाकात के द्वारा मिले हुए नतीजे को वह साबित कर रहा है।

9:27

" क्या तुम भी
उसके चेले होना चाहते हो?"

यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा "न" में उत्तर चाहता है। परन्तु यह सवाल काफी तेज और व्यंगय से भरा हुआ था।

9:28क

" तू ही उसका चेला है;"

यहाँ पर एक प्रष्न उठता है कि इस अध्याय में वह कौन सा मोड़ है जहाँ यह व्यक्ति विष्वासी बनता है। यीषु को मसीह के रूप में विष्वास करने के द्वारा इस व्यक्ति का चंगाई नही हूई; बाद में जब यीषु उसे मिला और मसीह होने की दावा पेष किया (9:36–38) तब उसने मसीह के रूप में उसे विष्वास किया। यह घटना इस बात को स्पश्ट करती है कि षारीरिक चंगाई उद्धार नही लाती।

9:28ख–29

यह धार्मिक अगुवों ने सामना की हुई कठिनाइयों को दिखाता है। **उन्होंने** मूसा को मिली हुई पवित्रात्मा प्रेरित प्रकाषन के साथ अपने तालमूद से तुलना करने की कोषिष की। पहले से सजाकर रखा हुआ धर्मषास्त्रीय विचारो के द्वारा उनके आँखें अन्धी हो चुकी है (मत्ती 6:23)।

9:30

"यह तो अचम्भे की बात है कि
तुम नहीं जानते की कहाँ का है
तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं। "

यह काफी तेज और व्यंगय से भरा हुआ बातो का एक ओर उदाहरण है।

9:31–33

धार्मिक अगुवों से श्रेश्ठ धर्मषास्त्र इस अनपढ़ भिखारी के पास था!

9:33

"यदि"

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे "वास्तविकता के विपरीत" कहा जाता है। इसे इस प्रकार समझा जाना चाहिए कि "यदि वो परमेष्वर की ओर से नही आए होते, अवष्य आए हैं, तो वो इस प्रकार के काम नही कर पाता, उसने ऐसा ही किया।

9:34

" कि तू तो बिलकुल पापों में जन्मा है, "

रबियो द्वारा चलाए जाने वाले यहूदी धर्म में "वास्तविक पाप" के बारे मे कोई समझ नही हैं (अय्यूब. 14:1,4; भं. स. 51:5)। रबियो द्वारा चलाए जाने वाले यहूदी धर्म में उत्प. 3 कोई मायने नही रखता। यहूदियो ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर भला और बुरा इरादा *(येट्सर)* होता है। फरीसी यह कहने की प्रयास कर रहे कि इस व्यक्ति का गवाही और विचारधारा का कोई मूल्य नही है, क्योंकि वह पापी है जिस से वह अन्धा था।

'' उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया।।''

अर्थात उसे समूह से बाहर निकाल दिया। यह इस बात को दर्षाता हैः (1) प्रादेषिक आराधनालय की सदस्यता से निकाल दिया; या (2) उस सभा से बाहर निकाल दिया। संदर्भ के आधार पर दूसरा ठीक बैठता है।

9:35 — 41

35. यीशु ने सुना, कि उन्हों ने उसे बाहर निकाल दिया है; और जब उसे भेंट हुई तो कहा, कि क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है
36. उस ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु; वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं?
37. यीशु ने उस से कहा, तू ने उसे देखा भी है; और जो तेरे साथ बातें कर रहा है वही है।
38. उस ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ: और उसे दंडवत किया।
39. तब यीशु ने कहा, मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं।
40. जो फरीसी उसके साथ थे, उन्हों ने ये बातें सुन कर उस से कहा, क्या हम भी अन्धे हैं?
41. यीशु ने उन से कहा, यदि तुम अन्धे होते तो पापी न ठहरते परन्तु अब कहते हो, कि हम देखते हैं, इसलिये तुम्हारा पाप बना रहता है।।

9:35

एन ए एस बी, एन आर एस वी , टी इ वी ,एन जे बी ''क्या तू मनुश्य के पुत्र पर विश्वास करता है''

एन के जे वी ''क्या तू परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है''

प्राचीन यूनानी हस्तलेखों में से ''ए'' में परमेश्वर के पुत्र का प्रयोग है, परन्तु अधिकतर मनुश्य के पुत्र पर जोर दिया गया है।

9:36

एन ए एस बी, एन के जे वी ,एन आर एस वी ,टी इ वी ''प्रभु''
एन जे बी '' साहिब ''

इस अध्याय के अन्दर ही इस मनुश्य के विष्वास की बढौतरी को देख सकते है, उसके द्वारा यीषु के लिए प्रयोग किए गए षब्द : (1)एक मनुश्य (9:11); (2) एक भविश्यद्वक्ता (9:17); आदरसूचक षब्द '' साहिब ''(9:36); (4) प्रभु (9:38)। आयत 36 तथा 38 के यूनानी षब्द एक ही है परन्तु संदर्भ ही अर्थ को तय करती है।

9:38

इस चंगाई प्राप्त व्यक्ति के उद्धार के प्रति यह है षिखर । यह अचम्भे की बात है कि कुछ प्राचीन यूनानी हस्तलेखो में इस आयत का उल्लेख नही है। केवल दो षब्दों का उल्लेख है (1)''उसने कहा'' यह केवल यहाँ और 1:23 में है; (2) उसे दण्डवत किया यह यूहन्ना में केवल यहाँ मिलते है। आधुनिक अनुवादों में इसका उल्लेख है।

9:39

'' मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूँ,''

यह 5:22,27 के साथ मेल खाता है जहाँ अन्तिम समय के न्याय के बारे में बताया गया है। हलॉकि यह 3:17–21 तथा 12:47,48 के विरूद्ध लगते है। इसे इस प्रकार कह सकते हैं यीषु लोगों की छुडौती के लिए आए हैं परन्तु जो उसका तिरस्कार करेगे वे स्वयं अपने न्याय को लाते है।

'' ताकि जो नहीं देखते वे देखें,
और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं। ''

यह यषाय्याह की भविश्यद्वाणी का दोहरा पूर्तीकरण हैः (1) अहंकारी इस्राएली परमेष्वर के सन्देष को नहीं समझेंगे (यषा. 6:10; 42:18–19; 43:8; यिर्मा. 5:21; यहेज. 12:2); (2) दरिद्र, भ्रश्ट, षारीरिक रूप से निर्बल, नम्र और मन फिराए हुए लोग सन्देष को समझेंगे (यषा. 29:18; 32:3–4; 35:5; 42:7,16)। जो देखना चाहते है उनके लिए यीषु जगत की ज्योति है (1:4–5, 8–9)।

9:40

'' क्या हम भी अन्धे हैं? ''

यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा ''न'' में उत्तर चाहता है (मत्ती. 15:14; 23 7 24)। ये अन्तिम आयते इस बात को प्रगट करती हैं कि षारीरिक अन्धापन ठीक हो सकता है परन्तु आत्मिक अन्धापन दूर करना कठीन है (माफी न मिलने वाला पाप– अविष्वास)।

9:41

यह आयत एक साधारण सच्चाई को प्रगट करती है (15:22,24; रोमि.3:20; 4:15; 5:13; 7:7–9)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. यह अध्याय प्राथमिकरूप से षारीरिक चंगााई या आत्मिक चंगाई के साथ व्यवहार कर रहा है ? षारीरिक अन्धापन या आत्मिक अन्धापन ?

2. जन्म से पहले इस व्यक्ति ने किस प्रकार पाप किया होगा ?

3. इस अध्याय में वह कौन–सा मोड़ है जहाँ इस व्यक्ति ने उद्धार पाया ?

4. क्या यीषु इस जगत में न्याय करने आए या छुडाने आए ?

5. षब्द ''मनुश्य का पुत्र'' की पृश्ठभूमि का विवरण करें।

6. यहूदी अगुवों के प्रत्युत्तर में इस अन्धे व्यक्ति द्वारा कहे गए व्यंग्यों की सूची बनाए।

यूहन्ना – 10

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
भेड़ों का दृश्टान्त	यीषु अच्छा चरवाहा	यीषु जीवन देनेवाला चरवाहा	चरवाहे का दृश्टान्त	अच्छा चरवाहा
10:1—6	10:1—6	10:1—6	10:1—5 10:6	10:1—5 10:6
यीषु अच्छा चरवाहा	यीषु अच्छा चरवाहा		यीषु अच्छा चरवाहा	
10:7—18	10:7—21	10:7—10 10:11—18	10:7—10 10:11—16 10:17—18	10:7—18
10:19—21		10:19—21	10:19—20 10:21	10:19—21
यीषु को यहूदियों ने नकारा	अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों को जानता है		यीषु का इनकार	यीषु परमेष्वर के पुत्र हैं
10:22—30	10:22—30 यीषु को पत्थरवाह करने का प्रयास	10:22—30	10:22—24 10:25—30	10:22—30
10:31—39	10:31—39	10:31—39	10:31—32 10:33 10:34—38 10:39	10:31—38 10:39
	यरदन के पार के विष्वासीगण			यीषु यरदन के दूसरे पार
10:40—42	10:40—42	10:40—42	10:40—42	10:40—42

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

10:1 — 6
1. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु और किसी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। 2. परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। 3. उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। 4. और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उन के आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसक शब्द पहचानती हैं। 5. परन्तु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परन्तु उस से भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानती। 6. यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है।।

10:1

" सच सच "

देखिए नोट 1:49।

" परन्तु और किसी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। "

भेडों के बाड़े में से कुछ बातें अच्छे चरवाहे की नहीं है (7:21—23; तथा गेहूँ और घास का दृश्टान्त, मत्ती. 12:24—30) यहाँ की समस्या यह है कि जो बातें परमेष्वर मसीह के द्वारा मुफ्त में देते है उसे स्वयं के परीश्रम के द्वारा प्राप्त करने का प्रयास कर रहे है (3:14—16)।

10:2

" परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। "

यह स्पश्ट है कि इस अध्याय में रूपकों को मिश्रित किया गया हैः यीषु द्वार है (10:7), भेडों का चरवाहा है (10:11,14)। हलॉकि ऐसे मिश्रित रूपक नए नियम और यूहन्ना में एक नई बात नही हैः (1) यीषु रोटी और रोटी देनेवाले है (6:35,51); (2) यीषु सत्य और सत्य की घोशणा करनेवाले है (8:45—46; 14:6); (3) यीषु मार्ग और मार्गदर्षक है (14:6); (4) यीषु बलिदान और बलि चढ़ानेवाले है (इब्रानियों की पत्री)।

पुराने नियम में साधारण रूप से परमेष्वर और मसीह के लिए ''चरवाहा'' षीर्शक का उपयोग हुआ है (भ.सं. 23; 80:1; यषा. 40:10–11; 1पत. 5:1–4)। यहूदी अगुवो को ''झूठा चरवाहा'' कहा गया (यिर्म.23; यहेज. 34; यषा. 56:9–12)। षब्द ''चरवाहा'' षब्द ''पास्टर'' से संबन्धित है (तीतुस. 1:5,7; इफि. 4:11)।

<u>*10:3*</u>

<u>*'' भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं,''*</u>

पहचान और आज्ञाकारिता संबन्ध पर आधारित है।

<u>*'' वह अपनी भेड़ों को*</u>
<u>*नाम ले लेकर बुलाता है ''*</u>

यीषु अपनों को व्यक्तिगत रीति से जानते है। चरवाहे अपने जानवरो का नाम रखते हैं।

<u>*'' बाहर ले जाता है। ''*</u>

यह केवल उद्धार को ही नही दर्षाता परन्तु प्रतिदिन के मार्गनिर्देषन को भी दर्षाता है (10:4,9)।

<u>*10:4*</u>

यह षायद इस बात को बताता है कि रात के समय एक ही जगह में विभिन्न झुण्ड़ रखे जाते है तथा भोर को जब चरवाहा बुलाता है तब उसकी भेड़ उसके पास आ जाती है।

<u>*10:5*</u>

कलीसिया को हमेषा झूठे चरवाहे का सामना करना पड़ता है (1तिमु. 4:1–3; 2तिमु. 4:3–4; 1यूह. 4:5–6)।

<u>*10:6*</u>

<u>*''यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा,''*</u>

यह दृश्टान्त के लिए प्रयोग करनेवाला साधारण षब्द नही है, परन्तु मूल षब्द एक ही है। यह षब्द यहाँ, 16:25,29 में, 2 पत. 2:22 में पाए जाते हैं। यह अवष्य अलग सा षब्द है पर दृश्टान्त का पर्यायवाची षब्द है। साधारण रूप से षब्द दृश्टान्त का अर्थ है सर्वसाधारण बात जिसे एक आत्मिक सच्चाई को समझने के लिए उपयोग में लाई जाती है। यह षायद इस बात को भी दर्षा रही होगी कि एक सच्चाई को आत्मिक रूप से अन्धे व्यक्ति से छुपाना (16:29; मरकूस. 4:11–12)।

<u>*'' परन्तु वे न समझे''*</u>

यदि अध्याय 9 के आधार पर देखा जाए तो यह ''उन'' फरीसियों को दर्षाता है।

10:7 – 10

7. तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि भेड़ों का द्वार मैं हूँ।
8. जितने मुझ से पहले आए; वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी।
9. द्वार मैं हूँ: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।
10. चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।

10:7

'' भेड़ों का द्वार मैं हूँ। ''

यह सात ''मैं हूँ'' कथनों से एक है। यह रूपक इस सच्चाई को स्पश्ट करता है कि यीषु ही मार्ग है (10:8,10; 14:6)। यदि बाइबल ही परमेष्वर के स्वयं का प्रकाषन है तो परमेष्वर के साथ ठीक संबन्ध का एक मात्र मार्ग है – मसीह में विष्वास (प्रेरित. 4:12; 1तिमु. 2:5)।

10:8

'' जितने मुझ से पहले आए;
वे सब चोर और डाकू हैं ''

अध्याय 9 और 10 के संदर्भ के आधार पर, स्थापन पर्व (10:22), इस बात की भी संभावना है कि अन्दर पवित्रषास्त्रीय समय मे मकाबियों द्वारा मसीह बनने की नकल की गई हो। हलॉकि यह भी हो सकता है यह झूठे चरवाहों को संबोधित कर रहा हो (यिर्मा.23; यहेज. 34)।
यह अत्यन्त रूपकात्मक भाशा से वर्णित है इसलिए कई हस्तलेखों में षास्त्रियों द्वारा ''मुझसे पहले'' को छोड़ दिया गया।

10:9

''यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे
तो उद्धार पाएगा ''

यह एक भविश्य काल संबन्धी क्रिया के साथ एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है। परमेष्वर के पास पहुँचने का एक मात्र मार्ग यीषु ही है (14:6)। क्रिया '' उद्धार पाएगा '' पुराने नियम के षारीरिक छुटकारे की ओर संकेत कर रहा है। हलॉकि यूहन्ना दो अर्थ देनेवाले षब्दों का प्रयोग करता है । आत्मिक उद्धार की बातें इस प्रसंग से लुप्त नहीं हैं (10:42)।

10:10

'' चोर ''

यह झूठे चरवाहों के अन्तिम लक्ष्य को प्रगट करती है। और षैतान की योजना को भी प्रगट करती है। आयतें 12–13 में किराए पर लिए गए चरवाहों का लापरवाही देखते हैं।

''नश्ट करना''

देखिए निम्नलिखित **विषेश षीर्शक।**

विषेश षीर्शकः विनाष (अपोलुमी)

भाशा विज्ञान में इस षब्द का स्तर काफी बड़ा है जिसकारण अनन्त दण्ड बनाम अस्तित्व–विनाष के धर्मषास्त्रीय विचारों में काफी असमंजिस पैदा हो गई। इसका प्राथमिक षाब्दिक अर्थ है *अपो + ऑलुमी* नश्ट करना या होना।
समस्या तब होती है जब इसे रूपकात्मक रीति से प्रयोग करते है। इसे हम लूवो और निडा के *ग्रीक–इन्गलिष लेक्सीकॉन ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट, बेस्ड़ ऑन सेमान्टिक डॉमयिनस्* भाग. 2 पृश्ठ.30 में पाते हैं। इस षब्द के
कई अर्थों को यहाँ लिखा हुआ है।

1. ध्वस्त करना (मत्ती. 10:28; लूका. 5:37; यूह. 10:10; 17:12; प्रेरित. 5:37; रोमि. 9:22 भाग 1 पृश्ठ.232)
2. प्राप्त करने में पराजित (मत्ती. 10:42; भाग 1, पृश्ठ. 566)
3. खोना (लूका. 15:8, भाग 1, पृश्ठ. 566)
4. असतर्क स्थान (लूका. 15:4, भाग 1, पृश्ठ. 566)
5. मरना (मत्ती. 10:39; भाग 1, पृश्ठ. 266)

गेरहार्ड किट्टल ने *थियोलॉजिकल डिक्षनरी ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट,* भाग 1, पृश्ठ. 394 में चार ओर प्रयोगों का सूची बनाकर अर्थ बताते हैं।

1. नाष करना या मारना (मत्ती. 2:3; 27:20; मरकूस. 3:6; 9:22; लूका. 6:9; 1कुरि. 1:19)
2. खोना या नश्ट सहना (मरकूस. 9:41;लूका. 15:4,8)
3. मिट जाना (मत्ती. 26:52;मरकूस. 4:38;लूका. 11:51; 13:3,5,33; 15:17; यूहन्ना. 6:12,27;1कुरि. 10:9,10)
4. लापता (मत्ती. 5:29–30;मरकूस. 2:22;लूका. 15:4,6,24,32; 21:18; प्रेरित. 27:34)

किट्टल कहते है
''साधारण रीति से हम कहेंगे कि दूसरा और चौथा इस संसार से संबन्धित है जैसे कि समानान्तर सुसमाचार में है, पहला और तीसरा भविश्य संसार से संबन्धित है जैसे कि यूहन्ना और पौलूस की पत्रियों में है।'' (पृश्ठ. 394)।

यहाँ असमंजिस है। भाशा विज्ञान में इस षब्द का स्तर काफी बड़ा है जिस कारण नए नियम के लेखको ने विभिन्न प्रकार से इसका प्रयोग किया है। मैं रोबॉट बी. गिरडलस्टॉन, *सिनॉनिमस ऑफ ओल्ड टेस्टमेन्ट,* पृश्ठ. 275 – 277 को पसंद करता हूँ। वह इस षब्द को जो नैतिक रीति से नाष होकर अन्नतकाल के लिए परमेष्वर से अलग रहने के लिए तैयार बनाम जो मसीह को जानकर अनन्तजीवन प्राप्त है उनके लिए प्रयोग

करते है। पहला झूण्ड विनाष के सामना कर रहा है तथा दूसरा झुण्ड उद्धार प्राप्त है।

मैं व्यक्तिगत रीति से विष्वास नही करता कि यह षब्द अस्तित्व–विनाष का सकेंत करता है। मत्ती. 25:46 में षब्द अनन्त दोनों जीवन और दण्ड के लिए है। एक को कम महत्व देने का अर्थ है दोनो को कम दिखाना।

'' मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।''

कई बार इस षब्दसमूह की भौतिक आषिशों को वायदे के लिए प्रयोग किया जाता है, परन्तु प्रसंग के आधार पर यह यीषु को व्यक्तिगत रीति से जानना और जिसके द्वारा उस से आत्मिक आषिशों को पाने को दर्षाता है। यह जीवन में बहुत कुछ होने को नही परन्तु सच्चा जीवन को जानना तथा उसे पाप्त करने को दर्षाता है!
जैसे समानान्तर सुसमाचार में परमेष्वर के राज्य के बारे में विषेश महत्व है वैसे यूहन्ना में अनन्त जीवन का विषेश महत्व है।

10:11 – 18
11. अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। 12. मजदूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर बित्तर कर देता है।
13. वह इसलिये भाग जाता है कि वह मजदूर है, और उस को भेड़ों की चिन्ता नहीं।
14. अच्छा चरवाहा मैं हूँ; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूँ।
15. इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूँ।
16. और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा।
17. पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूँ, कि उसे फिर ले लूं।
18. कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, बरन मैं उसे आप ही देता हूँ: मुझे उसके देने का अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है।।

10:11,14

'' अच्छा चरवाहा मैं हूँ;''

पुराने नियम में मसीह (यहेज. 34:23; जक. 11:1; 1पत. 5:4) और यहोवा (भ.सं. 23:1; 28:9; 77:52; 80:1; 94:7; 100:3; यषा. 40:11; यिर्मा. 23:1; 31:10; यहेज. 34:11–16) के लिए इस षीर्शक का प्रयोग करते थे।
यूनानी में ''अच्छा'' के लिए दो षब्दों का प्रयोग है (1) अगार्थॉस् जिसे यूहन्ना में चीज़ों के लिए उपयोग किया गया, और (2) कालॉस् जिसे सेप्टूवजन्ट में बुराई के विलोम षब्द के रूप में उपयोग में लाया है। नए नियम में इसका अर्थ है ''सुन्दर'', ''कुलीन'', ''नैतिक'', और ''योग्य'' है। लूका. 8:15 में इन दोनों षब्द का प्रयोग एकसाथ है।

10:11

" अच्छा चरवाहा
भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। "

यह मसीह की प्रायष्चित बली जो दूसरों के बदले में हुई, उसे दर्षाता है (10:11,15,17,18)। पापी मनुश्य के लिए उन्हों ने अपना जीवन कुर्बान कर दिया है (यषा. 52: 13–53:12; मरकूस. 10:45; 2कुरि. 5:21)। सच्चा जीवन, बहुतायत का जीवन केवल उसके मारे जाने से मिलता है।
ब्रूस एम. मेटसगर का *ए टेक्सचुयल केमन्बिरी ऑन द ग्रीक न्यू टेस्टमेन्ट* में इस आयत के ऊपर एक दिलचस्प बात है:

"अपना प्राण देता है"

इस वर्णन–षैली के बदले में, जो यूहन्ना का षैली है, (10:10,15,17; 13:37,38; 15:13; 1यूह. 3:16) समानन्तर सुसमाचार में "अपना प्राण देने का प्रयोग है (मत्ती. 20:28;मरकूस. 10:45;)"(पृश्ठ. 230)।

10:14

(10:3–5)।

10:15

" जिस तरह पिता मुझे जानता है,
और मैं पिता को जानता हूँ। "

यह यूहन्ना में बार बार आनवाला मुख्य विशय है।यीषु अपने पिता के साथ के घनिश्ठ संबन्ध से बातें तथा कार्यों को करते हैं।
आयतें 14–15 में पिता के साथ पुत्र का ध्निश्ठता की तुलना पुत्र और उनके पीछे हो लेनेवालों के साथ की है (14:23)। यीषु षब्द जानता को इब्रानी भाशा के अर्थ से प्रयोग किया जिसका अर्थ है घनिश्ठ संगती। यीषु पिता को जानते है, जो कोई यीषु को जानते हैं, वे परमेष्वर को जानते हैं!

10:16

" मेरी और भी भेड़ें हैं,
जो इस भेड़शाला की नहीं;"

यह यषा. 56:6–8 के लिए संकेत है।संदर्भ के आधार पर यह षायद (1) सामरियों को (4:1–42) या (2) अन्यजाती कलीसिया (4:43–54) को दर्षाता है। यह जितने यीषु पर विष्वास करते हैं उनकी एकता को दर्षाता है।

" तब एक ही झुण्ड और
एक ही चरवाहा होगा। "

यह हमेषा परमेष्वर का लक्ष्य रहा (उत. 3:15; 12:3; निर्ग.19:5–6)। इस एकता का धर्मषास्त्रीय विचार इफि. 2:11–3:13 तथा 4:1–6 में वर्णन किया है।

10:17

'' पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है,''

जैसे पुत्र को अपना प्राण देने के लिए किसी ने मजबूर नहीं किया वैसे ही पिता को भी अपने पुत्र देने के लिए किसी ने भी मजबूर नहीं किया। इस प्रकार इसकी व्याख्या न करे कि मनुश्य को आज्ञाकारिता के प्रतिफल के रूप में परमेष्वर ने यीषु को भेजा (इस झूठी षिक्षा को दत्तक ग्रहण कहा जाता है)।

'' कि मैं अपना प्राण देता हूँ,
कि उसे फिर ले लूं। ''

यह पुनरुत्थान की ओर इषारा करता है।नए नियम में साधारण रीति से पिता अपने पुत्र के बलीदान की स्वीकृति के रूप में उसे जिलाता है (10:18ख)। परन्तु यहाँ पुनरुत्थान में यीषु की षक्ति को प्रगट किया गया। यह षब्द समूह हमें सिखाते हैं कि छुड़ौती के काम में परमेष्वर के तीनों व्यक्तित्व षामिल थेः 1) पिता परमेष्वर ने यीषु को जिलाया (प्रेरित.2:24; 3:15; 4:10; 5:30; 10:40; 13:30, 33, 34, 37; 17:31; रोमियों.6:4, 9; 8:11; 10:9; 1कुरि.6:14; 2कुरि.4:14; गला.1:1; इफि.1:20; कुलु.2:12; 1थिस्स.1:10)

2) पुत्र ने स्वयं अपने आप को जिलाया (यूह.2:19–22; 10:17–18)

3) पवित्र आत्मा ने यीषु को जिलाया (रोमियों.8:11)

10:18

'' मुझे अधिकार है,''

इस षब्द को 1:12 मे प्रयोग किया है। इसे '' अधिकार '', ''कानून–सम्मति'', या ''सामर्थ ''में अनुवाद कर सकते हैं। यह आयत यीषु के अधिकार और सामर्थ को दर्षाती है।

10: 19 – 21

19. इन बातों के कारण यहूदियों में फिर फूट पड़ी।
20. उन में से बहुतेरे कहने लगे, कि उस में दुष्टात्मा है, और वह पागल है; उस की क्यों सुनते हो?
21. औरों ने कहा, ये बात ऐसे मनुष्य की नहीं जिस में दुष्टात्मा होः क्या दुष्टात्मा अन्धों की आंखे खोल सकती है?

10:19

वे अपने मत में 6:52; 7:12,25; 9:8–9,16; 10:19–21; 11:36–37 जिस प्रकार विभाजित थे उसका विवरण पूरे यूहन्ना में है। कुछ सुसमाचार को ग्रहण करते है कुछ नहीं करते, यह रहस्यमय इसलिए है कि नियुक्ति और मनुश्य की स्वेच्छा के बीच एक संघर्श जारी है।

10:20

'' उस में दुष्टात्मा है, और वह पागल है;''

यह दो विभिन्न नज़रिए से यीषु के ऊपर लगाए हुए सर्वसाधारण आरोप हैं : (1) इस आयत में 7:20 के समान वे कहते हैं कि यीषु एक मानसिक रोगी हैं; और (2) फरीसियों ने उसके सामर्थ (8:48,52; 10:21) के उत्भव स्थान के बारे में बताने के लिए इस आयत का प्रयोग किया है।

10:21

अन्धे को चंगा करना मसीह होने का चिन्ह है (निर्ग. 4:11; भ. सं. 146:18; यषा. 29:18; 35:5; 42:7)। अर्थात् अध्याय 9 के अन्धेपन के समान यहाँ इस्राएल भी अन्धा है।

10:22 – 30

22. यरूशलेम में स्थापन पर्व हुआ, और जाड़े की ऋतु थी।
23. और यीशु मन्दिर में सुलैमान के ओसारे में टहल रहा था।
24. तब यहूदियों ने उसे आ घेरा और पूछा, तू हमारे मन को कब तक दुविधा में रखेगा? यदि तू मसीह है, तो हम से साफ कह दे।
25. यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं ने तुम से कह दिया, और तुम प्रतीति करते ही नहीं, जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ वे ही मेरे गवाह हैं।
26. परन्तु तुम इसलिये प्रतीति नहीं करते, कि मेरी भेड़ों में से नहीं हो।
27. मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28. और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
29. मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।
30. मैं और पिता एक हैं।

10:22

'' स्थापन पर्व ''

जॉसिफस इसे ज्योतियों का पर्व कहते हैं। यह दिसम्बर महीने के मध्यम मे 8 दिनों तक होनेवाला पर्व है। सन् 164 ई0पू0 में यहूदा मकाबियूस द्वारा यरूषलेम पर कबजा करने के बाद यरूषलेम मन्दिर को पुनःस्थापित किया गया जिसकी यादगार में इसे मनाया जाता है। सन् 168 ई0पू0 में अन्टियोकस 4 एपिपानोस ने यहूदियों को जातियों की सी चाल चलने को मजबूर किया (दानि.8:9–14)। उन्होंने यरूषलेम मन्दिर को ज़ीयूस देवता के

मन्दिर में बदल डाला। याजक मोदिन के कई पुत्रें में से यहूदा मकाबियूस ने इस सिरया के देवता के ऊपर विजय प्राप्त मन्दिर को षद्ध किया तथा उसे पुनःस्थापित किया ।

" सुलैमान के ओसारे "

यह महिलाओं के आंगन के पूर्वी भाग में ढ़का हुआ स्थान था जहाँ यीषु सिखाया करते थे। जॉसिफस के अनुसार यह सन् 586 ई0पू0 के बाबूल के विनाष से बच निकले थे।

10:24

"यदि"

यह पहले दर्जे का षर्तीय वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। इस प्रसंग में कई पहले दर्जे का षर्त वाक्य है (10:24,35,37,38)। आयत 24 बताता है कि यह किस प्रकार लेख के लिए सही है। फरीसियों ने यीषु को मसीह के रूप में विष्वास नही किया। वे उसे फँसाने के प्रयास में थे।

" हम से साफ कह दे। "

इस आयत में कई बातें सीखने की है। (1) यीषु ने दृश्टान्त, आलंकारिक भाशा और अनेकार्थ दोहरावाद कथनों से षिक्षा दी। मन्दिर का भीड़ चाहते थे कि वो स्पश्ट बातों से उनसे बातें करें। देखिए **विषेश षीर्शक : परेसिया 7:4 ।**
(2) यीषु के समय के यहूदियों ने प्रतीक्षा नही की कि मसीह दैवीय देहधारी होंगे। यीषु ने कई बार (8:56–59) पिता के साथ उनके एक होने की बाते कही, परन्तु इस प्रसंग में वे विषेशरूप से मसीह के बारे में ही पूछ रहे है। यहूदियों की कामना थी कि यह अभिशिक्त मूसा के समान कार्य करें (व्यवस्था. 18:15,9)। यीषु ने उसे अध्याय 6 में किया था। उसके कामों ने पुराने नियम की भविश्द्वाणियों को पूरा किया, विषेशरूप से अन्धे को चंगा करना (अध्याय 9)। उनके पास सारे सबूत मौजूद थे। समस्या थी कि यीषु ने उनके पारम्परिक सैनिक मसीह के प्रति प्रतीक्षा को पूरा नही किया।

10:25

" जो काम मैं अपने पिता के नाम से करता हूँ
वे ही मेरे गवाह हैं। "

यीषु साबित करते है कि उसके काम उसके कथनों को सही ठहराते है (2:23; 5:36; 10:25,38; 14:11; 15:24)।

10:28

" मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, "

अनन्त जीवन तादाद और गुणवत्ता दोनों में है। यह नए युग का जीवन है। यह मसीह पर के विष्वास के द्वारा अब उपलब्ध है (3:36; 11:24–26)।

" वे कभी नाश नहीं होंगी,
और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। "

इसमे दो नकारात्मक बातें है। यह विष्वासियों की सुरक्षा के विशय में नए नियम में कहे गए सबसे षक्तिषाली वचनों में से एक है (6:39)। यह बात स्पश्ट है कि यदि कोई हमें यीषु से हटा सकता है तो वह हम स्वयं ही है (रोमि. 8:38–39; गला. 5:2–4)। निष्चयता दृढ़ रहने के साथ तालमेल में होती है। निष्चयता त्रीएक परमेष्वार के काम और चरित्र पर आधारित है।
मसीह के ऊपर लगातार विष्वास रखनेवालों की निष्चयता के बारे में यूहन्ना रचित सुसमाचार साबित करता है। इसका आरम्भ षुरूवाती विष्वास और मनफिराव से होता है और यह जीवनषैली मे बदल जाता है। धर्मषास्त्रीय समस्या तब उत्पन्न होती है जब व्यक्तिगत रिष्ते से हटकर हम किसी वस्तु पर मन लगाते है (एक बार उद्धार पाया तो हमेषा के लिए उद्धार प्राप्त है)। विष्वास में बने रहना ही उद्धार का सबूत है (इब्रानियों, याकूब, 1यूहन्ना)।

10:29

एन ए एस बी, एन के जे वी " मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, "
***एन आर एस वी* "मेरे पिता ने जो कुछ भी मुझे दिया है वे बाकियों से बडा है।"**
***टी इ वी* " मेरे पिता ने जो कुछ भी मुझे दिया है वे बाकी चीजों से बडा है। "**
एन जे बी " मेरा पिता, उन्हें मुझ को देने के कारण, सब से बड़ा है, "

प्रष्न यह है कि "बडा है" इस षब्द समूह का कर्म वस्तु क्या है ? (1) लोग जिन्हें परमेष्वार ने यीषु को दिया है;(***एन आर एस वी** ,**टी इ वी***)या (2) परमेष्वर स्वयं (***एन ए एस बी, एन के जे वी** , **एन जे बी***)। इस आयत के दूसरा भाग को लेकर कोई कह सकते है कि यह यीषु के पीछे हो लेनेवालों के बारे में है। धर्मषास्त्रीय रीति से दूसरा सही लगता है। देखिए **विषेश षीर्शकः मसीही निष्चयता 6:37।**
पिता की सामर्थ पर आधारित विष्वासियों की निष्चयता पर यह एक अच्छा अनुच्छेद है। विष्वासियों की निष्चयता,जैसे दूसरी बाइबलीय सच्चाईयों की तरह, संधर्श से भरे हुए, वाचा के तरीके से प्रस्तुत किया गया है। विष्वासियों की आषा और निष्चयता त्रीएक परमेष्वर के चरित्र, उसका अनुग्रह और करुणा मे है। हलॉकि विष्वासी को चाहिए कि वह विष्वास में ही रहे। उद्धार पवित्रात्मा प्रेरित निर्णय और मनफिराव से ही आरम्भ होता है। इसे जारी रहनेवाला मनफिराव, विष्वास, आज्ञाकारिता और सहनषीलता को उत्पन्न करना चाहिए। उद्धार एक उपज (जीवन बीमा, स्वर्ग की ओर जाने की टिकट) नही है परन्तु यह मसीह के द्वारा परमेष्वार के साथ आगे बढनेवाली एक प्रक्रिया है।
परमेष्वर के साथ के ठीक संबन्ध का ठोस सबूत है बदला हुआ तथा बदलते हुए विष्वास की जीवनषैली और सेवा (मत्ती. 7)। संसारिक मसीहियों के बारे में थोडा ही लिखा गया है (1कुरि. 2–3)। सिद्धान्त है कि वर्तमान समय मे मसीहसमानता, केवल मृत्यु के बाद जब स्वर्ग पहुँचते है तब नही। जो बढता है, सेवा करता है, और पाप के साथ लडता है उनके प्रति बाइबलीय सुरक्षा और निष्चयता की कोई कमी नही है। परन्तु जड़ नही तो फल भी नहीं। उद्धार केवल विष्वास के द्वारा अनुग्रह से मिलता है , और यह "अच्छे कामों" से लदा हुआ होता है (इफि. 2:10; याकूब. 2:14–26)।

10:30–33

" मैं और पिता एक हैं ...
यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए"

यह यीषु के मसीह और दैवीय होने का एक षक्तिषाली कथन है (1:1–14; 8:58; 14:8–10)। यीषु के कथन को वे अच्छे से समझे और उस कथन को ईष्वर निन्दा माने (10:33; 8:59)। लैव्य. 24:16 के आधर पर वे उसे पत्थरवाह करने जा रहे है।

10:31 — 39

31. यहूदियों ने उसे पत्थरवाह करने को फिर पत्थर उठाए।
32. इस पर यीशु ने उन से कहा, कि मैं ने तुम्हें अपने पिता की ओर से बहुत से भले काम दिखाए हैं, उन में से किस काम के लिये तुम मुझे पत्थरवाह करते हो?
33. यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि भले काम के लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं करते, परन्तु परमेश्वर की निन्दा के कारण और इसलिये कि तू मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाता है।
34. यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, क्या तुम्हारी व्यवस्था में नहीं लिखा है कि मैं ने कहा, तुम ईश्वर हो?
35. यदि उस ने उन्हें ईश्वर कहा जिन के पास परमेश्वर का वचन पहुँचा (और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती।)
36. तो जिसे पिता ने पवित्र ठहराकर जगत में भेजा है, तुम उस से कहते हो कि तू निन्दा करता है, इसलिये कि मैं ने कहा, मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ।
37. यदि मैं अपने पिता के काम नहीं करता, तो मेरी प्रतीति न करो।
38. परन्तु यदि मैं करता हूँ, तो चाहे मेरी प्रतीति न भी करो, परन्तु उन कामों की तो प्रतीति करो, ताकि तुम जानो, और समझो, कि पिता मुझ में है, और मैं पिता में हूँ।
39. तब उन्हों ने फिर उसे पकड़ने का प्रयत्न किया परन्तु वह उन के हाथ से निकल गया।।

10:31

यह आयत यीषु के कथन जो आयत 30 मे है उससे संबन्धित है। यीषु उनके आरोपों का उत्तर रबियो के तर्क—वितर्क पर देते है। यह *एलोहिम* षब्द का एक प्रकार का खेल है जो परमेष्वर के लिए प्रयोग करनेवाला पुराने नियम का षब्द है (उत्.1)। यह बहुवचन है। कई बार इसे मानवीय अगुवों के लिए भी प्रयोग किया गया (न्यायियों)।

10:32

अच्छा *(कालॉस)* चरवाहा पिता की तरफ से हमेषा अच्छा *(कालॉस)* कार्य करता है।

10:33

'' परमेश्वर की निन्दा के कारण ''

यीषु जान गए थे कि वे उनके कथनों को,परमेष्वर के साथ एक होने को, अच्छी तरह समझ गए है।

10:34

'' तुम्हारी व्यवस्था में ''

यीषु भजन संहिता से उद्धृत करते है और उसे व्यवस्था कहलाया है (12:34; 15:25; रोमि. 3:9—19)। साधारण रीति से षब्द व्यवस्था मूसा के लेखों (तोराह; उत्पत्ती से व्यवस्था विवरण) के लिए कहते है। यह दिखाता हे कि इस षब्द को पूरे पुराने नियम को बताने के लिए भी प्रयोग करते हैं।

'' तुम ईश्वर हो ''

यीषु भजन संहिता 82:6 से एक उद्धृत लेते है। यहाँ पर प्रयोगित *एलोहिम* षब्द मानवीय न्यायधीष को दर्षाता है। इन न्यायधीषों को (चाहे वे बुरा क्यों न हो) ''परमेष्वर की संतान'' कहते हैं। यहूदी यीषु पर इसलिए चढाई करना चाहते थे कि वो मनुश्य होने बावजूद भी परमेष्वर के तुल्य होने की बात कही। दूसरों को ईष्वर कहलाया (निर्ग. 4:16; 7:1; 22:8,9; भ.सं. 82:6; 138:1)।
यीषु का तर्क यह था कि यदि परमेष्वर का वचन सही है तो मनुश्य को *एलोहिम* कहलाया गया तो तुम मुझे परमेष्वर का निन्दक
क्यो कहते है ? इब्रानी भाशा में षब्द *एलोहिम* बहुवचन है परन्तु पुराने नियम के दैवीयता को बताने के लिए एकवचन क्रिया का प्रयोग किया है। यह केवल यूहन्ना का ही प्रयोग है: (1) इस षब्द के दो संकेत है, तथा (2) **यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा ''हाँ'' में उत्तर चाहता है।**

10:35

''(और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती।)''

कई बार यूहन्ना यीषु की बातों की टिप्पणी करता है। यह कथन यीषु का है या यूहन्ना का है हमें मानूम नही है। हलॉकि दोनों पवित्रात्मा प्रेरित होने के कारण कोई समस्या नहीं है। इस उद्धृत का उपयोग पवित्र षास्त्र की अधिकारिता को दिखाने के लिए की गई। यीषु तथा प्रेरितों पुराने नियम और उन्हीं के द्वारा उनकी व्याख्या को परमेष्वर का ही वचन समझाते थे (मत्ती. 5:17—19; 1कुरि. 2:9—13; 1थिस्स. 2:13; 2तिमु. 3:16; 1पत. 1:23—25; 2पत.1:20—21; 3:15,16)।

द लाइफ ऑफ बिषप मौले में बिषप एच. सी. जी.मौले कहते है ,
''वो (मसीह) बाइबल पर पूर्ण तौर से भरोसा किया, और, हलॉकि ऐसी कई बातें जो मेरे समझ के परे हैं, आदर के साथ उसके कारण बाइबल पर विष्वास करने जा रहा हूँ''(पृश्ठ.138)।

10:36

इस अयात में यीषु कहते है पिता ने उन्हें (पवित्र ठहराकर) भेजा (मसीह के रूप में)। इसलिए वो ''परमेष्वर के पुत्र कहलाने के योग्य है। जैसे इस्राएलियों के न्यायियों ने परमेष्वर का प्रतिनिधित्व किया था (भ.सं.82:6), वैसे यीषु अपने काम और वचन में पिता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

10:37

इसे आयतें 19—21 में कहा गया है। यीषु के चमत्कार ने परमेष्वर के काम को प्रगट किया।

10:37,38

''यदि... यदि''

ये पहले दर्जे का षर्त वाक्य है। यीषु ने पिता के काम किए । ऐसे में, उन्हें उसपर विष्वास करना चाहिए,वो और पिता एक है समझकर (10:30,38)। देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहना 1यूहन्ना. 2:10।

10:39

जब लोगो ने उसे मारना चाहा तब उनसे बच निकलने के अवसरों से एक है यह अवसर (लूका. 4:29–30; यूह. 8:59)। यह मालूम नही है कि उसका बचना किस प्रकार हुआ, षायद (1) यह एक चमत्कारी काम था, या (2) उसका षारीरिक भाव षेश लोगों के समान थे, जिससे वो भीड़ में मिल गए।

10:40 – 42
40. फिर वह यरदन के पार उस स्थान पर चला गया, जहाँ यूहन्ना पहले बपतिस्मा दिया करता था, और वहीं रहा।
41. और बहुतेरे उसके पास आकर कहते थे, कि युहन्ना ने तो कोई चिन्ह नहीं दिखाया, परन्तु जो कुछ यूहन्ना ने इस के विषय में कहा था वह सब सच था।
42. और वहाँ बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया।।

10:40

यह यरीहो के पास बैतनिय्याह नामक षहर के पास थे।

10:42

जिस प्रकार यहूदी अगुवों ने यीषु को नकारा उस प्रकार साधारण लोगों ने उस पर विष्वास किया (2:23; 7:31; 8:30)। देखिए **विषेश षीर्शक** : 2:23

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।
1. क्यों कई बार यूहन्ना ने अपने रूपकों को मिश्रित किया (उदा. यीषु द्वार और अच्छा चरवाहा है।) ?
2. यहन्ना 10 की क्या पृश्ठभूमि है ?
3. यीषु के ''अपना प्राण देना'' की विषेशता क्या है ?
4. यहूदी क्यों यीषु को बार बार दुश्टात्मा ग्रसित कह रहे थे ?
5. यीषु का काम इतना महत्वपूर्ण क्यों था ?
6. हम किस प्रकार ''विष्वासियों की सुरक्षा'' को ''संतों के दृढ़ रहने'' से तालमेल कर सकते है ?

यूहन्ना – 11

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
लाजर की मृत्यु	लाजर की मृत्यु	लाजर का पुनः जीवन	लाजर की मृत्यु	लाजर का पुनः जीवन
11:1–16	11:1–16	11:1–6	11:1–3	11:1–4
			11:4	
			11:5–7	11:5–10
		11:7–16		
			11:8	
			11:9–11	
				11:11–16
			11:12	
			11:13–15	
			11:16	
यीषु जीवन और पुनरुत्थान है	यीषु जीवन और पुनरुत्थान है		यीषु जीवन और पुनरुत्थान है	
11:17–27	11:17–27	11:17–27	11:17–19	11:17–27
			11:20–22	
			11:23	
			11:24	
			11:25–26	
			11:27	
यीषु रोया	यीषु और मृत्यु अन्तिम षत्रु		यीषु रोया	
11:28–37	11:28–37	11:28–37	11:28–31	11:28–31
			11:32	11:32–42
			11:33–34क	
			11:34ख	
			11:35–36	
			11:37	
लाजर को जीवन दान	लाजर को जीवन दान		लाजर को जीवन दान	
11:38–44	11:38–44	11:38–44	11:38–39क	
			11:39ख	
			11:40–44	

				11:43—44
यीषु को घात करने की योजना	यीषु को घात करने की योजना		यीषु को घात करने की योजना	यीषु को घात करने की योजना
11:45—53	11:45—57	11:45—53	11:45—48 11:49—52 11:53—54	11:45—54
11:54		11:54		फसह पर्व करीब है
11:55—57		11:55—57	11:55—57	11:55—57

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

11: 1 — 16

1. मरियम और उस की बहिन मरथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था।
2. यह वही मरियम थी जिस ने प्रभु पर इत्र डालकर उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछा था, इसी का भाई लाजर बीमार था।
3. सो उस की बहिनों ने उसे कहला भेजा, कि हे प्रभु, देख, जिस से तू प्रीति रखता है, वह बीमार है।
4. यह सुनकर यीशु ने कहा, यह बीमारी मृत्यु की नहीं, परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, कि उसके

द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।
5. और यीशु मरथा और उस की बहन और लाजर से प्रेम रखता था।
6. सो जब उस ने सुना, कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया।
7. फिर इस के बाद उस ने चेलों से कहा, कि आओ, हम फिर यहूदिया को चलें।
8. चेलों ने उस से कहा, हे रब्बी, अभी तो यहूदी तुझे पत्थरवाह करना चाहते थे, और क्या तू फिर भी वहीं जाता है?
9. यीशु ने उत्तर दिया, क्या दिन के बारह घंटे नहीं होते? यदि कोई दिन को चले, तो ठोकर नहीं खाता है, क्योंकि इस जगत का उजाला देखता है। 10. परन्तु यदि कोई रात को चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उस में प्रकाश नहीं।
11. उस ने ये बातें कहीं, और इस के बाद उन से कहने लगा, कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।
12. तब चेलों ने उस से कहा, हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा। 13. यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा थाः परन्तु वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में कहाँ
14. तब यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है।
15. और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।
16. तब थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता है, अपने साथ के चेलों से कहा, आओ, हम भी उसके साथ मरने को चलें।

11:1

''एक मनुष्य बीमार था। ''

यह एक अपूर्ण काल वाक्य है। यह इस बात का संकेत करता है कि वह काफी दिनों से बीमार था। इस अपूर्ण काल वाक्य को इस प्रकार भी व्याख्या कर सकते है कि वह ''बीमार होने लगे''।

'' लाजर ''

यह एक इब्रानी नाम ''एलियाज़र'' है, जिसका अर्थ है ''परमेष्वर सहायता करता है'' या ''परमेष्वर सहायक है''। यूहन्ना ने सोचा कि पाठक मरियम, मरथा और लाजर के साथ यीषु की दोस्ती को जानते हैं (लूका. 10:38—42 केवल यहाँ पर समानान्तर सुसमाचार में उनके विशय में उल्लेख है)।

'' बैतनिय्याह ''

यह 1:28; और 10:40 में कहे गए बैतनिय्याह जो यरीहो के पास यरदन नदी के किनारे थे से अलग षहर है। यह बैतनिय्याह दो मील दक्षिणपूर्व में स्थित है जहाँ जैतून का पहाड़ है। जब यीषु यरूषलेम में थे तब केवल इस जगह पर वो रहे थे।

'' मरियम ''

यह एक इब्रानी नाम है, मिरियम।

" मरथा "

यह श्रीमति का अरामिक षब्द है। यह असाधारण लगता है कि मरथा सबसे बडे होने के बावजूद भी उसका नाम पहले नही लिखा गया है। यह षायद लूका. 10:38 – 42 से संबन्धित है।

11:2

"यह वही मरियम थी
जिस ने प्रभु पर इत्र डालकर
उसके पाँवों को अपने बालों से पोंछा था,"

मरियम की इस प्रकर का भक्ति का विवरण (12:2–8) हम मत्ती (मत्ती. 26:6–13) और मरकूस (मरकुस.14: 3–9) में भी पाते है। इस प्रकर का एक अभिशेक के विशय में लूका. 7:36 में उल्लेखित घटना इस से अलग है।

यह आयत अब तक न लिखी हुई एक बात को बताते है जिसे 12 वीं अध्याय में वर्णन किया गया। कई ऐसे सोचते कि यूहन्ना ने चाहा कि इसे पढनेवाले इस परिवार के बारे में कहीं ओर से पता करें।

विषेश षीर्शकः बाइबल में अभिशेक

क. इसे मंगल कामों के लिए प्रयोग किया गया (व्यवस्था. 28:40; रूत. 3:3; 2षामू. 12:20; 14:2; 2इति. 28:1–5; दानि. 10:3; आमोस. 6:6; मीका. 6:15)
ख. अतिथियों **के लिए प्रयोग किया गया** (भ. सं. 23:5; लूका. 7:38,46; यूह. 11:2)
ग. चंगाई **के लिए प्रयोग किया गया** (यषा. 6:1; यिर्मा. 51:1; मरकुस. 3:13; लूका. 10:34; याकू. 5:14)
घ. दफन की तैयारी **के लिए प्रयोग किया गया** (उत्. 50:2; 2इति. 16:14; मरकुस. 16:1; यूह. 12:3,7; 19:39–40)
ङ धार्मिक समझ **के लिए प्रयोग किया गया (उत्. 28: 18,20; 31:13; निग्र. 29:36; 30:36; 40:9–16; लैव्य. 8:10–13; गिन. 7:1)**
च. अगुवों की नियुक्ति के लिए प्रयोग किया गया

1. याजक
क. हारून (निर्ग. 28:41; 29:7; 30:30)
ख. हारून के पुत्रें के (निर्ग. 40:15; लैव्य. 7:36)
ग. उच्चस्तरीय स्थन या षीर्शक (गिन. 3:3; लैव्य.16:32)

2. राजा
क. परमेष्वर केद्वारा (1षामू. 2:10; 2षामू. 12:7; 2राजा. 9:3,6,12; भ.सं. 45:7; 89: 20)
ख. भविश्यद्वक्तावों के द्वारा (1षामू. 9:16; 10:1; 15:1,17; 16:3,12,13; 1राजा. 1:45; 19:15,16)
ग. याजकों के द्वारा (1राजा. 1:34, 39; 2राजा. 11:12)
घ. प्राचीनो के द्वारा (न्यायी. 9:8,15; 2षामू. 2:7; 5:3; 2राजा. 23:30)
ङ. यीषु का मसीह राजा के रूप में (भ.सं. 2:2; लूका. 4:18; यषा. 61:1; प्रेरित. 4:27; 10:38; इब्र. 1:9; भ.सं. 45:7)
च. यीषु के अनुयायियों के(2कुरि. 1:21; 1यूह. 2:20,27)

> **3. षायद भविश्यद्वक्तावों के (यषा. 6:1)**
> **4. दैवीय छुटकारे का अविष्वासी उपकरण**
> **क. कुस्रू (यषा. 41:1)**
> **ख. सूर के राजा (यहेज. 28:14)**
> **5. षब्द ''मसीह'' का अर्थ है ''अभिशिक्त''**

<u>*11:3*</u>

<u>*'' उस की बहिनों ने उसे कहला भेजा,''*</u>

यरदन के पार पेरिया में यीषु के पास उन्होंने सन्देषा भेजा।

<u>*'' जिस से तू प्रीति रखता है, वह बीमार है। ''*</u>

यह उस परिवार के प्रति यीषु के अनोखे रिष्ते को दर्षाता है। यूनानी षब्द है *फिलियो* (11:5; 3:35; 5:20)।

<u>*11:4*</u>

<u>*''यह बीमारी मृत्यु की नहीं,*</u>
<u>*परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिये है, ''*</u>

यह संकेत देता है कि यीषु जानता था कि लाजर बीमार है। यीषु ने उसे मरने दिया ताकि लाजर को जिलाने के द्वारा पिता यीषु के द्वारा अपना सामर्थ दिखा सकें। बीमारी और समस्या कई बार परमेष्वर के इच्छानुसार होता है (अय्यूब की पुस्तक, 2 कुरि. 12:7—10)।

<u>*'' परमेश्वर की महिमा ''*</u>

देखिए नोट 1:14

<u>*'' कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो। ''*</u>

षब्द समूह '' परमेश्वर के '' प्राचीन पापरी हस्तलेखों में नही है। बीमारी पिता और पुत्र दोनों के लिए महिमा लाते है। इसमें यीषु के महिमा बिलकुल अलग हैं। सुसमाचार के आरम्भ से अन्तिम तक यूहन्ना ने यीषु के क्रूसीकरण और महिमा पाने का जिक्र किया है। लाजर को जिलाया जाना यहूदी अगुवों द्वारा यीषु के मृत्यु के कारण बनेगा।

<u>*11:6*</u>

"जिस स्थान पर वह था, वहाँ दो दिन और ठहर गया"

यीषु ने लाजर की मृत्यु की प्रतीक्षा की! यीषु पक्षपात नही करते। इस बीमारी के पीछे परमेष्वर के एक योजना था (11:15)।

11:7

" फिर इस के बाद उस ने चेलों से कहा,
कि आओ, हम फिर यहूदिया को चलें। "

इस कथन के बाद का वार्तालाप प्रगट करता है कि षिश्य जानते थे कि यहूदी उस पर पत्थरवाह करना चाहते है (11:8; 8:54; 10:39)। षिश्य यहाँ विष्वास और डर दोनों का एक मिश्रित स्वभाव को दिखा रहे हे **(11:16)। थोमा को संदेह करनेवाला षिश्य कहा जाता है, परन्तु यहाँ वह यीषु के साथ मरने के लिए भी तैयार है।**

11:9–10

यह इस अध्याय को 8:12 और 9:4–5 के साथ जोडने का एक कड़ी है (12:35)।

"यदि"

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

11:11

" हमारा मित्र लाजर सो गया है, "

कई बार षिश्यों ने भी यीषु के कथन को गलत समझा , क्योकि उन्होंने उसका षाब्दिक अर्थ लिया (11:13)। यीषु के द्वारा प्रयोगित मृत्यु का रूपक पुराने नियम के प्रयोग को दिखाते है। **अंग्रेजी षब्द "सेमीट्री" यूनानी षब्द "सोना" के मूल षब्द से निकला है।**

11:12

"यदि"

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है।

"वह बच जाएगा**"**

षब्द "बच जाएगा" पुराने नियम के षारीरिक छुटकारे के लिए इब्रानी भाषा में प्रयोग करते थे **(याकूब. 5:15)।**

11:14

"यीशु ने उन से साफ कह दिया,"

देखिए **विषेश षीर्शक : परेसिया 7:4।**

<u>*11:15*</u>

<u>*" और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ*</u>
<u>*कि मैं वहाँ न था जिस से तुम विश्वास करो, "*</u>

यीषु साबित करते है कि लाजर यीषु के दोस्त होने के कारण उसे जिलाया नही गया,पर मरियम और मरथा के रोने के कारण और षिश्यों के विष्वास के लिए किया है (11:14) तथा यहूदी भीड़ के विष्वास के प्रोत्साहन के लिए भी था (11:42)।

<u>*11:16*</u>

यह आयत थोमा के विष्वास को दर्षाती है कि वह यीषु के साथ मरने के लिए भी तैयार हो रहे है। षिश्यों के जीवन में मृत्यु,जो मानवजाती के सबसे बड़ा षत्रु है, के ऊपर यीषु की सामर्थ देखना आवष्यक था।
अरामिक में थोमा का अर्थ है ''जुडुवा'' जैसे कि यूनानी में ''दिदिमोस'''। समानान्तर सुसमाचार इसे प्रेरित कहते है () यूहन्ना रचित सुसमाचार में कई बार इसका जिक्र है।

11:17 — 27

17. सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।
18. बैतनिय्याह यरूशलेम के समीप कोई दो मील की दूरी पर था।
19. और बहुत से यहूदी मरथा और मरियम के पास उन के भाई के विषय में शान्ति देने के लिये आए थे।
20. सो मरथा यीशु के आने का समचार सुनकर उस से भेंट करने को गई, परन्तु मरियम घर में बैठी रही।
21. मरथा ने यीशु से कहा, हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।
22. और अब भी मैं जानती हूँ, कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा, परमेश्वर तुझे देगा।
23. यीशु ने उस से कहा, तेरा भाई जी उठेगा।
24. मरथा ने उस से कहा, मैं जानती हूँ, कि अन्तिम दिन में पुनरूत्थान के समय वह जी उठेगा।
25. यीशु ने उस से कहा, पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जा कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।
26. और जो कोई जीवत है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?
27. उस ने उस से कहा, हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूँ, कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।

<u>*11:17*</u>

<u>*" उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं। "*</u>

रबियों का कहना था कि आत्मा तीन दिनों तक ष्रीर के पास रहते है। यीषु ने इसलिए चार दिन तक रुका रहा कि रबियें को मालूम होजाए कि अब उसका जीवित होने का कोई आषाण नही है।

'' दो मील की दूरी ''

यह 15 फ़र्लांग है।

11:19

'' बहुत से यहूदी मरथा और मरियम के पास आए थे।''

यूहन्ना आम तौर पर षब्द ''यहूदी '' यीषु के षत्रूओं के लिए किया करते थे। परन्तु इस संर्दभ में यह षब्द इस परिवार को जाननेवाले यरूषलेम निवासियो को दर्षाता है (11: 31,33,45)।

11:20

''मरियम घर में बैठी रही''

आम तौर पर यहूदी फ़र्ष में बैठकर विलाप किया करते थे।

11:21,32

'' मरथा ने यीशु से कहा,
हे प्रभु,
यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता। ''

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। मरथा और मरियत का कथन यीषु से एकसा है (11:32)। वे षायद इन चार दिन के विलाप के बीच में इस बात पर विचार विमर्ष किया होगा। इसे कहने के द्वारा वे दोनों बहनों ने आष्वासन पाया है।

11:22

'' और अब भी मैं जानती हूँ,
कि जो कुछ तू परमेश्वर से मांगेगा,
परमेश्वर तुझे देगा। ''

हमें ठीक से मालूम नही है कि मरथा यीषु से क्या करने को कह रही है, क्योकि आयत 39 में लाजर के जीवित होने पे वह अचम्भित हो गई।

11:23–24

'' तेरा भाई जी उठेगा। ''

फरीसियों के समान, जो विष्वास करते थे कि अन्तिम दिन में एक षारीरिक पुनरुत्थान होगा, मरथा के जीवन में भी कुछ धर्मषास्त्रीय समझ थी। इस के लिए पुराने नियम में कुछ पवित्र षास्त्रीय सबूत है , यीषु ने उस उपदेषात्मक बातों को अपने ऊपर लाया (14:6)।

11:24

'' अन्तिम दिन में ''

यूहन्ना अब का उद्धार के विशय को अधिक महत्व देते है, परन्तु वह एक अन्तिम समय का पूर्णता को भी प्रतीक्षा कर रहे है। इसे कई तरीकों से प्रगट किया गयाः

1. एक न्याय के दिन / पुनरुत्थान के दिन
2. ''घडी''
3. यीषु के पुनरागमन (14:3;) (14:18–19,28 तथा 16:16,22 हो सकता है कि यह यीषु के जी उठने के बाद के प्रत्यक्षता के बारे में कही हो)।

11:25

'' यीशु ने उस से कहा,
पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ,''

यह सात''मैं हूँ'' कथनों से एक कथन हैं। लाजर के मृत्यु की स्थिती में भी मरथा को उत्साहित किया गया कि वह विष्वास करें कि उसका भाई जी उठेगा। यह आषा पिता और पुत्र के व्यक्तित्व और सामर्थ में जड़ पकड़ा हुआ होना चाहिए (5:21)

11:26

''जो कोई मुझ पर विश्वास करता है,
वह अनन्तकाल तक न मरेगा ''

इस अनुच्छेद में कई महत्वपूर्ण बातें हैं। (1) विष्वास्तरीय सर्वनाम ''कोई'' (2) वर्तमान काल क्रिया, जारी रहनेवाले विष्वास की अवष्सकता को दर्षाता है (11:25,26); और (3) मृत्यु के साथ जुडे हुए दो षक्तिषाली नकारात्मक ''कभी नही'' न मरेगा'' जो स्पश्टरूप से आत्मिक मृत्यु की ओर इषारा करता है। अनन्तकाल का जीवन विष्वासियों के लिए एक वर्तमान वास्तविकता है न कि एक भविश्यात्मक घटना।

11:27

'' हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास कर चुकी हूँ,
कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था,
वह तू ही है।''

यह संपूर्ण काल मे कहा गया है। यह यीषु को मसीह के रूप में मरथा के विष्वास का एक षक्तिषाली मानना है। यह धर्मषास्त्रीय रूप से पतरस का मानने के समान है (मत्ती. 16)। वह अपने विष्वास को प्रगट करने के लिए विभिन्न षीर्शकों का प्रयोग करता हैः

1. मसीह (अभिशिक्त)
2. परमेष्वार के पुत्र (मसीह का पुराने नियम षीर्शक)
3. जो आनेवाला (दूसरा पुराने नियम षीर्शक जो धार्मिकता के एक युग का प्रारम्भ करेंगे, 6:14)

यूहन्ना वार्तालापों की सच्चाई को प्रगट करने के एक तरीके के रूप में प्रयोग करता है। यीषु के ऊपर के विष्वास के प्रति कई ओर भी मानना यूहन्ना रचित सुसमाचार में है । देखिए **विषेश षीर्शक : यूहन्ना द्वारा क्रिया " विष्वास " का प्रयोग 2:23।**

11:28–29
28. यह कहकर वह चली गई, और अपनी बहिन मरियम को चुपके से बुलाकर कहा, गुरू यहीं है, और तुझे बुलाता है।
29. वह सुनते ही तुरन्त उठकर उसके पास आई।

11:30–37
30. (यीशु अभी गांव में नहीं पहुंचा था, परन्तु उसी स्थान में था जहाँ मरथा ने उस से भेंट की थी।)
31. तब जो यहूदी उसके साथ घर में थे, और उसे शान्ति दे रहे थे, यह देखकर कि मरियम तुरन्त उठके बाहर गई है और यह समझकर कि वह कब्र पर रोने को जाती है, उसके पीछे हो लिये।
32. जब मरियम वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पाँवों पर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई न मरता।
33. जब यीशु न उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और व्याकुलता से कहा, तुम ने उसे कहाँ रखा है?
34. उन्हों ने उस से कहा, हे प्रभु, चलकर देख ले।
35. यीशु के आंसू बहने लगे।
36. तब यहूदी कहने लगे, देखो, वह उस से कैसी प्रीति रखता था।
37. परन्तु उन में से कितनों ने कहा, क्या यह जिस ने अन्धे की आँखें खोली, यह भी न कर सका कि यह मनुष्य न मरता?

11:30

यह प्रेरित लेखक का एक ओर प्रत्यक्षदर्षी बयान है।

11:33

एन ए एस बी, " वो आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ "
एन के जे वी " वो आत्मा में बहुत ही रोया और व्याकुल हुआ "
एन आर एस वी " वो आत्मा में परेषान और व्याकुल हुआ "
टी इ वी " वो आत्मा में खेदित और व्याकुल हुआ "
एन जे बी **"यीषु काफी परेषान और व्याकुल हुआ"**

यह षाब्दिक रूप से " आत्मा में फूत्कारना" है। यह मुहावरा क्रोध के लिए प्रयोग करते है (दानि. 11:30; मरकुस.1:43; 14:5)। इस प्रसंग में यीषु के जज़्बा को दिखाने के लिए प्रयोग किया है (11:38)। यीषु के पास प्रबल मानवीय जज़्बा था (11:33,35,36,38) जो अपने दोस्तों के लिए था।

11:37

यह प्रष्न **"हाँ" में उत्तर चाहता है।**

11:38—44

38. यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था।
39. यीशु ने कहा; पत्थर को उठाओः उस मरे हुए की बहिन मरथा उस से कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।
40. यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।
41. तब उन्हों ने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आँखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है।
42. और मै जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।
43. यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।
44. जो मर गया था, वह कफन से हाथ पाँव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुँह अंगोछे से लिपटा हुआ था यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो।।

11:38

"एक गुफा "

उन दिनों में पलिस्तीन कब्र (1) चट्टानों के साथ खोदा जाता था और उसे एक गोल पत्थर से ढ़का करते थे। या (2) मैदान में खोदा जाता तथा उसे बडे पत्थरों से ढ़का करते थे। पुरातत्व षास्त्र के आधार पर यरूषलेम की कब्रें पहलेवाली थी।

11:39

" पत्थर को हटाओ"

एक बडा पत्थर जिसके द्वारा कब्र को बन्द करते है।

" उसे मरे चार दिन हो गए"

यह एक यूनानी मुहावरा है "चार दिन का मनुश्य"।

11:40

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यह आयत एक प्रष्न है तथा **''हाँ'' में उत्तर चाहता है।**

'' परमेश्वर की महिमा ''

परमेष्वर की महिमा यीषु के कामों द्वारा प्रगट होता है (11:4)। देखिए नोट : 1:14।

11:41

''यीशु ने आँखें उठाकर ''

साधरण रीति से यहूदी अपने हाथ फैलाकर तथा आँखें (खुला) स्वर्ग की ओर उठाकर प्रार्थना करते हैं।

11:42

यह यीषु के प्रार्थना और चमत्कार के उद्धेष्य को बताता है।यीषु ने कई बार षिश्यों के विष्वास की प्रौढता के लिए चम्तकार किए, और इस घटना में उद्धेष्य यरूषलेम के यहूदियों के अन्दर विष्वास पैदा करना था।

धर्मषास्त्रीय रीति से यीषु ने फिर से उसके काम में परमेष्वार के अधिकार तथा प्राथमिकता को दर्षाया (5:19,30; 8:28; 12:49; 14:10)। यह चमत्कर पिता के साथ यीषु के घनिश्ठ संबन्ध को प्रगट करती है।

11:43

'' उस ने बड़े शब्द से पुकारा,
कि हे लाजर, निकल आ। ''

ऐसे कहा गया कि यदि यीषु ने लाजर का नाम नही लिया होता तो सारे कब्र के लोग बाहर आ जाते।

11:44

दुर्गंध न निकले सोचकर षव को दफानते समय उसे नहलाकर कपडे में इत्र लगाकर लपेटा जाता है। षव को 24 घण्डे के अन्दर दफनाया जाता था क्योकि यहूदी षवों को सडने से नही बचाता था।

विषेश षीर्शकः षव संसकार की अभ्यास

1. मिसुपुतामिया
   - क. मृत्यु के बाद के खुष जीवन के लिए सही षवदाह अवष्य है
   - ख. मिसुपुतामिया का एक स्राप इस प्रकार है कि धरती तेरा षव को स्वीकार नही करें।

2. पूराने नियम

क. मृत्यु के बाद के खुष जीवन के लिए सही षवदाह अवष्य है (सभो.6:3)।

ख. यह तुरन्त किया जाता था (सारा– उत.23; राहेल – 35:19; और व्यवस्था. 21:23)

ग. गलत षावदाह तिरसकार और पाप का चिन्ह है

1. व्यवस्था. 28:26
2. यषा. 14:2
3. यिर्मा. 8:2; 22:19

घ. संभव है तो पारिवारिक गुफा में षवदाह किया जाता था वह भी घर के आस पास।

ङ मिस्र देष के समान सुगंधित नही करते। मनुश्य मिट्टी से लिया गया तथा मिट्टी में मिल जाएगा (उत. 3:19; भ. सं. 103:14; 104:29)।

च. यहूदी धर्म में षवषरीर को सही आदर के साथ संसकार की अभ्यास करना कठीन होता था षवषरीर के प्रति व्यवस्था होने के कारण।

3. नए नियम

क. मृत्यु के तुरन्त बाद , साधारण रीति से 24 घण्टे के अन्दर। यहूदी कई बार तीन दिनो तक कब्र का रखवाली करता था कि कहीं आत्मा वापस न आए (11:39)।

ख. दफनाने के काम में षरीर को साफ करना, लपेटना और इत्र डालना आम तौर से होता था (11:44, 19:39–40)।

ग. पलिस्तीन में षव संसकार के अभ्यास में यहूदी और मसीहियों के बीच मे कोई फर्क नही था।

11: 45 – 46

45. तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे, और उसका यह काम देखा था, उन में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

46. परन्तु उन में से कितनों ने फरीसियों के पास जाकर यीशु के कामों का समाचार दिया।

11:45

''यहूदी ... बहुतों ने उस पर विश्वास किया''

यह है इस सुसमाचार की लक्ष्य (20:30–31)। यह षब्दसमूह एक तरीका बन गया (2:23; 7:31; 8:30; 10:42; 11:45; 12:11, 42)। हलॉकि इस बात को दोहराना अवष्यक है कि यूहन्ना रचित सुसमाचार में विष्यास कई स्तर का है, हमेषा यह उद्धार दिलानेवाली नही होती (2:23–25; 8:30)। देखिए **विषेश षीर्शक** : 2:23।

11:46

*'' कितनों ने फरीसियों के पास जाकर
यीशु के कामों का समाचार दिया।''*

यह चौकानेवाली बात है कि इतना कुछ सुनने तथा देखने के बाद भी उनके आत्मिक अन्धापन कितना अधिक है। हलॉकि यीषु ने उसके पास आए हुए लोगों को दो झुण्ड में हमेषा बाँटा है ; जो उसपर विष्वास करते है ,जो उसपर विष्वास नही करते। जितने भी बडे चमत्कार क्यों न हो सबको यह विष्वस में नही लाता (लूका. 16: 30—31)।

11: 47— 53

47. इस पर महायाजकों और फरीसियों ने मुख्य सभा के लोगों को इकट्ठा करके कहा, हम करते क्या हैं? यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है।
48. यदि हम उसे योंही छोड़ दे, तो सब उस पर विश्वास ले आएंगे और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे।
49. तब उन में से काइफा नाम एक व्यक्ति ने जो उस वर्ष का महायाजक था, उन से कहा, तुम कुछ नहीं जानते।
50. और न यह सोचते हो, कि तुम्हारे लिये यह भला है, कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे, और न यह, कि सारी जाति नाश हो।
51. यह बात उस ने अपनी ओर से न कही, परन्तु उस वर्ष का महायाजक होकर भविष्यद्वाणी की, कि यीशु उस जाति के लिये मरेगा।
52. और न केवल उस जाति के लिये, वरन इसलिये भी, कि परमेश्वर की तित्तर बित्तर सन्तानों को एक कर दे।
53. सो उसी दिन से वे उसके मार डालने की सम्मति करने लगे।।

<u>*11:47*</u>

<u>*''महायाजकों और फरीसियों ने मुख्य सभा को इकट्ठा किया''*</u>

यह सन्हिद्रन को दर्षाता हैं, जो यरूषलेम के यहूदियों का उच्च न्यायालय है। इसमें 70 सदस्य होते है। महायाजक सदूकियों में से थे जो केवल मूसा की व्यवस्था को जानते है पर पुनरुत्थान को नकारते है। फरीसी प्रसिद्ध और कट्टर थे, वे (1)संपूर्ण पुराने नियम (2) स्वर्गदूतो की सेवा, और (3) मृत्यु के बाद का जीवन पर विष्वास करते थे। यह आष्चर्य की बात है कि ये दोनों विरोधी झुण्ड किसी भी काम के लिए इकट्ठा हुआ करते थे।

<u>*''यह मनुष्य तो बहुत चिन्ह दिखाता है ''*</u>

यीषु का नाम बताए बिना उसे ''यह मनुष्य'' कहना अपमानजनक तरीका है। ऐसे एक चमत्कार होने के बावूजमद भी, लाजर को जिलाना, वे पहले से सजाकर रखे हुए विचारों ने उन्हें अन्धा किया (2कुरि. 4:4)।

<u>*11:48*</u>

<u>*''यदि''*</u>

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

'' सब उस पर विश्वास ले आएंगे ''

यीषु के प्रति डर और संदेह की वजह जलन और धर्मषास्त्रीय असहमति है। ''सब'' सामरी और अन्यजाती की ओर इषारा करता है। उनके डर के लिए राजनैतिक बात भी एक कारण बना।

'' रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे। ''

यह यूहन्ना रचित सुसामाचार के व्यंग्यात्मक भविश्यद्वाणियों से एक है जिसका पूरा होना 70 ई0 में रोमी जनरल तीतुस के समय में हुआ।
यहूदियों के अन्तिम समय की आषा के साथ रोमी षासन की वास्तविकता अखण्ड रूप से जुडी है। वे विष्वास करते थे कि पुराने नियम के न्यायियों के समान परमेष्वर किसी धार्मिक/राजनैतिक नेता को भेजेंगे और जिसके द्वारा भौतिक रूप से उन्हें रोमियों से छुटकारा दिलाएंगे। अपने आपको मसीह कहलानेवाले कई आए और उनकी प्रतीक्षा में खरे उतरने का प्रयास अवष्य किया।
यीषु ने कहा कि उसका राज्य भौतिक नही पर आत्मिक है जो भविश्य में इस विष्व में भर जाएंगे। उसने कहा कि उसने पुराने नियम के तमाम भविश्यद्वाणी को पूरा किया, यहूदियों के कामना के अनुसार नही। इसलिए अधिकतर यहूदियों ने उसे ठुकराया।

11:49

'' काइफा, जो उस वर्ष का महायाजक था,''

महायाजकत्व पदवी पीढ़ी पीढ़ी से चला आता था, परन्तु जबसे रोमियों ने षासन षुरू किया तब से इस पदवी को धनवानों के हाथ बेच डाला। 18 – 36ई0 के महायाजक काइफा था।

11:50–52

'' कि हमारे लोगों के लिये एक मनुष्य मरे, ''

यह यूहन्ना के व्यंग्य का एक ओर उदाहरण है। काइफा सुसमाचार प्रचार कर रहे है!

11:52

'' वो परमेश्वर की तित्तर बित्तर सन्तानों को एक कर दे। ''

यह यूहन्ना के अतिरिक्त कथन लग रहे है जो 10:16 के सदृष्य में है। यह षायद (1) पलिस्तीन के बाहर रहनेवाले यहूदी; (2) सामरियों के समान आधा–यहूदी; या (3) अन्यजाति के लोग। विकल्प 3 सही लग रहे है।

11:53

'' सो उसी दिन से वे उसके मार डालने की सम्मति करने लगे।।''

यह यूहन्ना में बार बार आनेवाली मुख्य बात है (5:18; 7:19; 8:59, 10:39; 11:8)।

11:54
54. इसलिये यीशु उस समय से यहूदियों में प्रगट होकर न फिरा; परन्तु वहाँ से जंगल के निकट के देख में इफ्राईम नाम, एक नगर को चला गया; और अपने चेलों के साथ वहीं रहने लगा।

11:54

" इसलिये यीशु उस समय से
यहूदियों में प्रगट होकर न फिरा;"

धर्मिक अगुवों के साथ यूहन्ना 12 में आखरी बार यीषु बात करते है।

" इफ्राईम नाम, एक नगर "

यह समरीया के बतेल के पास के षहर है (2कुरि. 13:19)।

11:55—57

55. और यहूदियों का फसह निकट था, और बहुतेरे लोग फसह से पहिले दिहात से यरूशलेम को गए कि अपने आप को शुद्ध करें।
56 सो वे यीशु को ढूंढ़ने और मन्दिर में खड़े होकर आपस में कहने लगे, तुम क्या समझते हो?
57. क्या वह पर्व में नहीं आएगा? और महायाजकों और फरीसियों ने भी आज्ञा दे रखी थी, कि यदि कोई यह जाने कि यीशु कहाँ है तो बताए, कि उसे पकड़ लें।।

11:55—57

ये अयतें अध्याय 11 और 12 को आपस में जोडते है।

11:55

" अपने आप को शुद्ध करें। "

यह फसह पर्व के तैयारी के सांस्कृतिक षुद्धिकरण को दर्षाता है। यह अब भी एक वाद विवाद का विशय बना हुआ है कि कितने समय तक यीषु ने पलिस्तीन में षिक्षा दिया, प्रचार किया और सेवा टहल की। समानान्तर सुसमाचार के आधार पर यह दो या तीन साल के भीतर हुआ है। हलॉकि यूहन्ना में कई फसह पर्व (वार्शिक त्योहार) का विवरण है। तीन पर्व का साफ साफ विवरण है (2:13; 6:4; तथा 11:55) 5:1 एक ओर फसह पर्व को दर्षाता होगा।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. क्यो यीषु ने लाजर को मरने दिया ?
2. किसने इस चमत्कार को किया ?
3. पुनरुत्थान और जिलाया जाने में क्या अन्तर है ?
4. लाजर के जिलाया जाने से यहुदी अगुवे क्योंकर भयभीत हुए ?

यूहन्ना – 12

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
बैतनिय्याह में अभिशेक	बैतनिय्याह में अभिशेक	बैतनिय्याह में अभिशेक	बैतनिय्याह में अभिशेक	बैतनिय्याह में अभिशेक
12:1–8	12:1–8	12:1–8	12:1–6 12:7–8	12:1–8
लाज़र के विरुद्ध घात	लाज़र के विरुद्ध घात		लाज़र के विरुद्ध घात	
12:9–11	12:9–11	12:9–11	12:9–11	12:9–11
यरूषलेम में विजय प्रवेष	यरूषलेम में विजय प्रवेष	खजूर रविवार	यरूषलेम में विजय प्रवेष	यरूषलेम में मसीह का प्रवेष

12:12—19	12:12—19	12:12—19	12:12—13 12:14 12:15 12:16 12:17—19	12:12—19
यूनानी यीषु से मिलना चाहते हैं	गेहूँ का दाना	यीषु की सार्वजनिक सेवा का अन्त	यूनानी यीषु से मिलना चाहते हैं	यीषू अपनी मृत्यु और महिमा प्राप्ति के बारे में पहले कहते है
12:20—26	12:20—26	12:20—26	12:20—21 12:22—26	12:20—28क
मनुश्य के पुत्र को श्रेश्ठ किया जाएगा	यीषु अपने मृत्यु के बारे में कहते हैं		यीषु अपनी मृत्यु के बारे में कहते हैं	
12:27—36क	12:27—36क	12:27—36क	12:27—28क 12:28ख 12:29 12:30—33 12:34 12:35—36क	12:28ख 12:29—32 12:33—36क
यहूदियों का अविष्वास	किसने हमारी बातों को विष्वास किया		लोगों का अविष्वास	
12:36ख—43		12:36ख—43	12:36ख—38	12:36ख उपसंहार ; यहूदियों का अविष्वास
	12:37—41			12:37—38
			12:39—40	12:39—40
			12:41	12:41
	ज्योति में चलें		12:42—43	12:42—50
यीषु का षब्दों द्वारा न्याय	12:42—50		यीषु का षब्दों द्वारा न्याय	
12:44—50		12:44—50	12:44—50	

<u>*अध्ययन कालचक्र तीन*</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 12:1 : 50</u>

क. चारों सुसमाचार एक स्त्री के द्वारा यीषु की इत्र से अभिशेक किया जाने के विशय मे उल्लेख करते हैं। हलॉकि मत्ती. 26:6–13; मरकुस.14:3–9 और यूहन्ना. 12:2–8 उस स्त्री का पहचान लाजर के बहन मरियम से करते है, परन्तू लूका 7:36–50 उस स्त्री के पहचान गलील के एक पापिन स्त्री से करते है।

ख. अध्याय 12 में यीषु अपना सर्वजनिक सेवा को खत्म करते है। यीषु ने यहूदी अगुवों को विष्वास में लाने की प्रयास बार बार किए। अध्याय 11 में यरूषलेम षहर के निवासियों को विष्वास में लाने की प्रयास किया गया।

<u>षब्द और वाक्यांष अध्ययन</u>

12: 1 — 8
1. फिर यीशु फसह से छः दिन पहले बैतनिय्याह में आया, जहाँ लाजर थाः जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जिलाया था।
2. वहाँ उन्हों ने उसके लिये भोजन तैयार किया, और मरथा सेवा कर रही थी, और लाजर उन में से एक था, जो उसके साथ भोजन करने के लिये बैठे थे।
3. तब मरियम ने जटामासी का आधा सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के पॉवों पर डाला, और अपने बालों से उसके पाँव पोंछे, और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया।
4. परन्तु उसके चेलों में से यहूदा इस्करियोती नाम एक चेला जो उसे पकड़वाने पर था, कहने लगा।
5. यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को कयों न दिया गया?
6. उस ने यह बात इसलिये न कही, कि उसे कंगालों की चिन्ता थी, परन्तु इसलिये कि वह चोर था और उसके पास उन की थैली रहती थी, और उस में जो कुछ डाला जाता था, वह निकाल लेता था।
7. यीशु ने कहा, उसे मेरे गाड़े जाने के दिन के लिये रहने दे।
8. क्योंकि कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु मैं तुम्हारे साथ सदा न रहूँगा।।

<u>12:1</u>

<u>" फसह से छः दिन पहले "</u>

यह मत्ती 26:2 से भिन्न कालानुक्रमिक श्रंखला है। यह याद रखना कि सुसमाचार का प्राथमिक केन्द्र बिन्दु कालानुक्रमिक विवरण नही परन्तु यीषु के व्यक्तित्व तथा काम के बारे में सच्चाई को प्रगट करनेवाली व्यवहारों का प्रतिनिधित्व करना है।

12:2

''यह बैतनिय्याह षहर के लोगों को दर्षाता है'' जिन्होंने यीषु और उनके षिश्यों को लाजर को जिलाने के सम्मान में भोजन खिलाए। हलॉकि मत्ती. 26: 6 के आधार पर यह षैमोन कोढी के घर में आयोजित किया गया था।

12:3

'' आधा सेर ''

यह एक लतीनी षब्द है। यह षायद मरियम के विवाह के लिए रखा हुआ दहेज था। कई अविवाहित महिलाएं अपने गले में इस प्रकार के इत्र को लिए फिरते थे।

एन ए एस बी, '' बालछड़ का आधा सेर बहुमूल्य इत्र''
एन के जे वी '' जटामांसी का आधा सेर बहुमूल्य इत्र''
एन आर एस वी '' जटामासी से बना हुआ आधा सेर बहुमूल्य इत्र''
टी इ वी '' बालछड का डेढ़ पॉव बहुमूल्य इत्र''
एन जे बी '' जटामांसी का आधा सेर बहुमूल्य मलम''

क्रिया विषेशण के ऊपर कई प्रमाण रहित अनुमान है (1) षुद्ध; (2) तरल; या (3) एक जगह का नाम। यह हिमालय में पाए जानेवाली एक प्रकार के जड से बनाया जाता है जो काफी महंगा है।

''यीशु के पॉवों पर डाला,''

दूसरे सुसमाचारों में इसी घटना को यीषु के सिर को एक स्त्री के द्वारा अभिशेक किया जाने के बारे में बताया गया है। वास्तव में मरियम ने यीषु के पूरे षरीर को अभिशेक किया सिर से षुरू करके पॉंव तक। यीषु के पॉंव इसलिए दिखाई दे रहे थे कि कद में छोटे एक मेज़ पर अपनी बाई कोहनी रखकर बैठे हुए थे।

यह यूहन्ना का दोहरावाद का एक ओर उदाहरण है: यह इत्र षव संसकार के लिए भी प्रयोग किया जाता है (19:40)। षायद षिश्यों से बढ़कर मरियम ने यीषु के षीघ्र ही होने वाली मृत्यु के बारे में समझ लिया (12:7)। देखिए **विषेश षीर्शक : बाइबल में अभिशेक** 11:2।

12:4

'' यहूदा इस्करियोती ''

षब्द '' इस्करियोती '' के दो संभावित षब्द–व्युत्पत्ति षास्त्र है: (1) यहूदा के एक षहर के नाम (केरियोत. यहोषू. 15:25), या (2) ''हत्यारा का चाकू''। यूहन्ना ने सभी सुसमाचर लेखकों से बढ़कर यहूदा इस्करियोती के लिए कठोर षब्दों का प्रयोग किया है (12:6)। देखिए नोट: 18:1

'' पकड़वाने ''

इसका षाब्दिक अर्थ है न्यायिक रीति से या भरोसामन्द व्यक्ति के द्वारा''सौंपना'' या ''त्यागना''।

12:5

'' तीन सौ दीनार ''

एक मज़दूर और एक सैनिक का एक दिन का मज़दूरी था एक दिनार अर्थात् लगभग यह एक साल का वेतन था।

12:6

एन ए एस बी, एन के जे वी ''चंदा की पेटी''
एन आर एस वी ''संयुक्त थैला''
टी इ वी ''पैसे का थैला''
एन जे बी ''संयुक्त कोश''
इस षब्द का अर्थ है ''छोटा सा पेटी जिसे गवैया अपना बाजा ले जाने के लिए उपयोग करता है।

'' उस में जो कुछ डाला जाता था,
वह निकाल लेता था। ''

इस यूनानी षब्द का अर्थ है ''उठाना''। इसका प्रयोग दो भिन्न तरीको से किया गया है (1) वह इस पेटी को उठाकर चलता था (2) केवल पेटी को ही नही उठाता था पर उसके अन्दर का माल भी गायब किया करता था। यह इस बात को प्रगट करता है कि गरीबों के आड़ में वह अपना पेट भरना चाहता था।

12:7

यह एक आष्चर्यजनक बात है। इस प्रकार के व्यवहार को एक का षवसंस्कार के रस्म से जोडते हैं।

12:8

कंगाल तो तुम्हारे साथ सदा रहते हैं,''

यह व्यवस्था15:4,11 की ओर इषारा कर रहा है। प्राचीन समय के साहित्यो में पुराने नियम अनोखा है।

12: 9— 11

9. यहूदियों में से साधारण लोग जान गए, कि वह वहाँ है, और वे न केवल यीशु के कारण आए परन्तु इसलिये भी कि लाजर को देंखें, जिसे उस ने मरे हुओं में से जिलाया था।
10. तब महायाजकों ने लाजर को भी मार डालने की सम्मति की।

11. क्योंकि उसके कारण बहुत से यहूदी चले गए, और यीशु पर विश्वास किया।।

12:9

''यहूदियों में से साधारण लोग जान गए,
कि वह वहाँ है, ''

यह षब्द ''यहूदी'' का एक असाधारण प्रयोग है। अधिकतर यूहन्ना में यह षब्द यीषु के विरोध में खडे रहनेवाले यहूदी धार्मिक आगुवों के लिए प्रयोग होता था। हलॉकि 11:19,45; 12:17 उस षहर के विष्वासियों की ओर इषारे करते है जो लाजर के दोस्त थे और उसके षवसंसकार में षामिल थे।

12:10

'' महायाजकों ने
लाजर को भी मार डालने की सम्मति की। ''

उन्होंने सबूत को मिटाना चाहा। उनका प्रेरक डर (18:48) और जलन (11:448; 12:11) थे।
उन्होंने षायद सोचा होगा कि यीषु का काम अनूठा है। इन धार्मिक अगुवों के अन्धेपन पतित मानवजाति के अन्धकार का प्रतिनिधित्व करता है।

12:11

यह 11:45 से संबन्धित है। देखिए **विषेश षीर्शकः यूहन्ना द्वारा क्रिया '' विष्वास '' का प्रयोगः** 2:23

12:12 — 19

12. दूसरे दिन बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे, यह सुनकर, कि यीशु यरूशलेम में आता है।
13. खजूर की, डालियां लीं, और उस से भेंट करने को निकले, और पुकारने लगे, कि होशाना, धन्य इस्राएल का राजा, जो प्रभु के नाम से आता है।
14. जब यीशु को एक गदहे का बच्चा मिला, तो उस पर बैठा।
15. जैसा लिखा है, कि हे सिय्योन की बेटी, मत डर, देख, तेरा राजा गदहे के बच्चे पर चढ़ा हुआ चला आता है।
16. उसके चेले, ये बातें पहिले न समझे थे; परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई, तो उन को स्मरण आया, कि ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं; और लोगों ने उस से इस प्रकार का व्यवहार किया था।
17. तब भीड़ के लोगों ने जो उस समय उसके साथ थे यह गवाही दी कि उस ने लाजर को कब्र में से बुलाकर, मरे हुओं में से जिलाया था।
18. इसी कारण लोग उस से भेंट करने को आए थे क्योंकि उन्हों ने सुना था, कि उस ने यह आश्चर्यकर्म दिखाया है।
19. तब फरीसियों ने आपस में कहा, सोचो तो सही कि तुम से कुछ नहीं बन पड़ताः देखो, संसार उसके पीछे हो चला है।।

12:12

" बहुत से लोगों ने जो पर्व में आए थे, "

यहूदी पुरुशों के लिए तीन पर्व में षामिल होना आवष्यक था (निर्ग.23:14–17; लैव्य. 239 व्यवस्था. 16:16)। पलिस्तीन के बाहर तितर बितर रहनेवाले यहूदियों की इच्छा थी कि जिन्दगी में कम से कम एक बार यरूषलेम में पर्व में होना। ऐसे मौके में यरूषलेम की जनसंख्या 3 से 5 गुणा बढ़ती थी। यह षब्द समूह उन तीर्थयात्रियों को दर्षाता है जिन्होंने यीषु के बारे में सुना और उसे देखना चाहते है।

"खजूर की, डालियां "

यह खजूर की, डालियां के लिए एक असाधारण यूनानी षब्द समूह है। कुछ विष्वास करते है कि यह जैतून पहाड़ के पास में पाए जानेवाले है (जॉसिफस) और अन्य विष्वास करते है कि इसे यरीहो से मंगवाया हुआ है। यह विजय का चिन्ह था (प्रकाष. 7:9)। इसे फसह और मिलापवाले तम्बू के पर्वों में उपयोग करते है।

" पुकारने लगे,"

यह एक अपूर्णकाल है, जिस का अर्थ है (1) भूतकाल में दाहराया हुआ एक कार्य; या (2) भूतकाल में षुरू किए हुए एक कार्य।

" होशाना,"

इस षब्द का अर्थ है "अब उद्धार करो" या "कृप्या उद्धार कीजिए" (भ. सं. 118: 25–26)। फसह पर्व में जब तीर्थयात्री मन्दिर की ओर जलूस निकालते है तब हिलेल भजन संहिताओं (113–118) को दोहराया जाता था। हर साल वे इसे दोहराया करते थे। परन्तु इस साल वे यीषु में उनके मूलभूत अर्थ को पा लिया । भीड़ ने इस बात को समझ लिया और फरीसियों ने जान लिया।

" जो प्रभु के नाम से आता है। "

यही बात को ही यीषु कह रहे थे। वो ही है जिसे भेजा गया था। वो यहोवा का प्रतिनिधित्व करते है।

एन ए एस बी, एन के जे वी ,एन आर एस वी "यहाँ तक कि इस्राएल का राजा"
टी इ वी ,एन जे बी "इस्रएल का राजा"

यह षब्द समूह एक भजन संहिता का भाग नही है पर तीर्थयात्रियों द्वारा जोडा गया है। ऐसा लगता है कि 2 षामूएल. 7 में बताए गए मसीह राजा का परिचय वे यीषु के नाम से कर रहे है (मरकुस. 11:10)।

12:14

" एक गधे का बच्चा "

इस्राएल के राजाओं के राजकीय सैनिक वाहन था गधा (1 राजा. 1:33,38,44)। केवल राजा गधे के ऊपर सवार होते थे, इसलिए यीषु की सवारी बहुत मयाने रखती है वह भी कभी किसी ने सवारी न किए हुए गधे के ऊपर (मरकुस. 11:2)।

12: 14–15

'' जैसा लिखा है,''

यह उद्धृत ज़क. 9:9 से है। गधे का बच्चा केवल यीषु के मसीह होने की बात को ही प्रगट नही कर रहा है पर यीषु की नम्रता को भी। यीषु यहूदियों के प्रतीक्षा के अनुसार फतह पानेवाला एक योद्धा के समान नही अया। परन्तु यषा. 53 के दुःखभोगी सेवक के समान आया है।

12:16

'' उसके चेले, ये बातें पहिले न समझे थे; ''

यह बार बार आनेवाला मुख्य विशय है (2:22; 10:6; 16:18; मरकुस. 9:32; लूका. 2:50; 9:45; 18:34)।

'' परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई,
तो उन को स्मरण आया, ''

स्मरण दिलाने की यह प्रक्रिया पवित्रात्मा का हैं (14:26; 2:22)।
यह आयत इस बात को भी प्रगट करती है कि लेखक अपने ही अनुभवों से जो जी उठा हुआ यीषु से प्राप्त है। समानन्तर सुसमाचार यीषु के ऐतिहासिक प्रौढता को बाताते है उसकी महिमा को छिपाया हुआ है जब तक कि उनके प्रस्तुतीकरण के षिखर पहुँचा, परन्तु यूहन्ना महिमा प्राप्त मसीह का विवरण करता है। सुसमाचार बाद के स्मरण और विष्वासी समूह की अवष्यकता को इषारा करता है। इसलिए दो ऐतिहासिक घटना है (यीषु बौर उनके) दोनो पवित्रात्मा प्रेरित है।

'' महिमा प्रगट हुई, ''

देखिए **नोटः 1:14।**

12:17

देखिए **विषेश षीर्शकः यीषु के प्रति गवाही : 1:8**

12:19

'' फरीसियों ने आपस में कहा,''

यह एक भविश्यद्वाणी सूचक है। यह (1) यहूदियों, 11:48; 12:11; तथा (2) अन्यजाती , 12:20–23 से संबन्धित है। यह यीषु के जीवन तथा प्रारम्भिक कलीसिया में प्रतिबिंबित हैं।

12:20 – 26

20. जो लोग उस पर्व में भजन करने आए थे उन में से कई यूनानी थे। 21. उन्हों ने गलील के बैतसैदा के
रहनेवाले फिलिप्पुस के पास आकर उस से बिनती की, कि श्रीमान् हम यीशु से भेंट करना चाहते हैं।
22. फिलिप्पुस ने आकर अद्रियास से कहा; तब अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु से कहाँ
23. इस पर यीशु ने उन से कहा, वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र कि महिमा हो।
24. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला
रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।
25. जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय
जानता है; वह अनन्त जीवन के लिये उस की रक्षा करता करेगा।
26. यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी
सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।

12:20

" कई यूनानी "

इसे अन्यजातियों का संकेत करने के लिए प्रयोग किया है। यह खास तौर पर यूनानीयों को नही दर्षाता ।

"जो लोग उस पर्व में भजन करने आए थे उन में स"

वर्तमानकाल इस बात को प्रगट करता है कि पर्व में आना उन लोगों की एक आदत थी। वे (1) परमेष्वर के भय माननेवाले, या (2) यहूदी धर्म में धर्मान्तरण किए हुए लोग होंगे। पहले झुण्ड के आराधनालय में लगातार जानेवाले है तथा दूसरे झुण्ड यहूदी धर्म में अपना ईमान लाए हुए लोग हैं।

12:21

"उस से बिनती की, "

यह एक अपूर्ण काल वाक्य है। अर्थात् (1) **उन्होंने** बार बार बिनती की या (2) वे बिनती करने लगे। वे यीषु के साथ एक निजी मुलाकात चाहते थे। यह यीषु के मृत्यु की पहले भविश्यद्वाणी समय चक्र की अन्तिम ध्वनी थी (12:23)।

12:22

फिलिप्पुस और अद्रियास दोनों यूनानी नाम है जिस कपरएा वे उनसे बात करने पहूँचे।

12:23

" वह समय आ गया है,"

यूहन्ना ने इस षब्द का प्रयोग कई बार यीषु के क्रूसीकरण तथा पुनरुत्थान के विशय में जो यीषु के सेवा के अन्तिम लक्ष्य है कहने के लिए प्रयोग किया हैं (12:27; 13:1,32; 17:1)।

'' मनुष्य के पुत्र''

यह साधारण रीति से मनुश्य के बारे में कहने के लिए प्रयोग करनेवाला एक अरामिक षब्द है (भ.सं. 8:4; यहेज. 2:1)। हलॉकि इसे दानि. 7:13 में दैवीयता के संकेतार्थ से प्रयोग किया है। यह यीषु के द्वारा अपने लिए प्रयोग किया हुआ षीर्शक है जिसमें उसके दो स्वभाव सम्मिलित है, मानवीय तथा दैवीय (1यूह. 4:1—6)।

''महिमा हो''

यीषु की मृत्यु को हमेषा उसकी महिमा कहा गया। इस प्रसंग में कई बार षब्द ''महिमा'' का प्रयोग हुआ है (12:28दो बार; 32,33)। इसे यीषु की मृत्यु और पुनरुत्थान के लिए नियुक्त किया है (13:1,32; 17:1)। देखिए नोटः 1:14।

12:24

'' जब तक गेहूँ का दाना
भूमि में पड़कर मर नहीं जाता,''

यह ऐसी एक भाशा प्रयोग है जिसे पाँचों इन्द्रियाँ समझ सकते है। एक दाना कई अनेक दाने को पैदा कर सकता है (1कुरि. 15:36)। उसके मृत्यु ने कई सच्चा जीवन लाया (मरकुस. 10:45)।

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य (12:24,26,32,47)।

12:25

'' जो अपने प्राण को प्रिय जानता है,
वह उसे खो देता है; ''

यह यूनानी षब्द *सैके* की ओर संकेत करते है जो मनुश्य के व्यक्तित्व या जीवन के मूल्य को उल्लेख करते है (मत्ती 10:39; 16:25)। जब कोई यीषु पर भरोसा करता है जब उसे नया जीवन दिया जाता है। यह नया जीवन परमेष्वर की तरफ से सेवा के लिए एक तोहफा है, यह व्यक्तिगत उपयोग के लिए नही है। विष्वासी इस नए जीवन का भण्डारी है। हम पाप के दासत्व से मुक्त किए गए और परमेष्वर के सेवक बन गए (रामि. 6:1—7:6)।

''खो देता है''

इस षब्द का अर्थ है नाष करना। यह अनन्त जीवन का विलोम षब्द है। यदि किसी को मसीह पर विषवास नही है तो यही एकमात्र विकलप है। नाष होने का अर्थ उन्मूलन करना नही परन्तु परमेष्वर के साथ के व्यक्तिगत संबन्ध को खोना है।

'' अप्रिय जानता ''

यह तुलना का इब्रानी मुहावरा है। प्राथमिकता परमेष्वर को देना है (याकूब का पत्नियाँ; उत्‍.29:30,31; व्यवस्था. 21:15; एषाव और याकूब., मलाकी. 1:2,3; रोमि. 10—13; एक का परिवार, लूका. 14:26)।

" प्राण "

यूनानी षब्द है *ज़ोए*। यूहन्ना में इसका प्रयोग (1) आत्मिक जीवन, (2) अनन्त जीवन, (3) नए युग के जीवन, और (4) पुनरुत्थित जीवन के लिए है।

12:26

"यदि"

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

" तो मेरे पीछे हो ले;"

यह एक जारी रहनेवाले संबन्ध के बारे में कहता है (15 अध्याय)। यह कम ध्यान दी गई बाइबलीय सहनषीलता है। इस विशय को परमेषवर के परमाधिकार और मनुश्य की स्वेच्छा के धर्मषास्त्र ने इस विशय को असमंजिस में डाल दिया है। उद्धार को एक वाचा के अनुभव के तौर पर देखना अच्छा हैं। परमेष्वर हमेषा षुरू करते है (6:44,65) परन्तु मनुश्य से वो मनफिराव और विष्वास में उसके इस प्रसताव के प्रति प्रत्युत्तर की माँग करते है (मरकुस. 1:15; प्रेरित. 20:21)। यह प्रारम्भिक निर्णय तथा जीवन भर की षिश्यता हैं। हम उसे मानते है इस बात का सबूत है सहनषीलता (मत्ती. 10:22; 13:20—21; गला. 6:9; 1यूह. 2:19; प्रकाष. 2:7,11,17,26; 3:5,12,21)।

12:27 — 36क

27. जब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिये अब मैं क्या कहूँ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परन्तु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ।
28. हे पिता अपने नाम की महिमा करः तब यह आकाशवाणी हुई, कि मैं ने उस की महिमा की है, और फिर भी करूंगा।
29. तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे, उन्हों ने कहा; कि बादल गरजा, औरों ने कहा, कोई स्वर्गदूत उस से बोला।
30. इस पर यीशु ने कहा, यह शब्द मेरे लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये आया है।
31. अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा।
32. और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा।
33. ऐसा कहकर उस ने यह प्रगट कर दिया, कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा।
34. इस पर लोगों ने उस से कहा, कि हम ने व्यवस्था की यह बात सुनी है, कि मसीह सर्वदा रहेगा, फिर तू क्यों कहता है, कि मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है?
35. यह मनुष्य का पुत्र कौन है? यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो; ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है।

36. जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो कि तुम ज्योति के सन्तान होओ।।

12:27

''मेरा जी व्याकुल हो रहा है''

इसमें नए नियम का कई तरीको से प्रयोग किया गया एक षक्तिषाली षब्द है।

1. हेरोद का डर (मत्ती. 2:3)
2. षिश्यो का डर (मत्ती. 14:26)
3. यीषु की व्यकुलता (यूह. 12:26; 13:21)
4. यरूषलेम की कलीसिया (प्रेरित. 15:24)
5. गलातिया की कलीसिया में झूठे षिक्षको द्वारा दरार (गला. 1:7)

यह आनेवाले क्रूसीकरण के साथ के यीषु के मानवीय संघर्श के बारे में यूहन्ना का वर्णन करने का तरीका है (मरकुस. 14:32)। गतसमने में यीषु की वेदना के बारे में यूहन्ना उल्लेख नही करता है।

'' मुझे इस घड़ी से बचा''

इस कथन के अर्थ के बारे में काफी तर्क–वितर्क हैं। क्या यह एक प्रार्थना है ? या जो नही होने का है उसके प्रति एक चौकानेवाला कथन है ?

'' मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ''

यीषु का जीवन दैवीय पद्धती के अनुसार आगे बढ़ा है (लूका. 22:22; प्रेरित. 2:23; 3:18; 4:28;) जिसे वो भली भाँती जानता था (मत्ती. 20:28; मरकुस.10:45)।

12:28

'' मैं ने उस की महिमा की है,''

आयत 28ख में पिता प्रत्युत्तर देते हैं। षब्द ''महिमा'' का यहाँ तरल रूप से प्रयोग किया है जिसका अर्थ हो सकता है (1) अस्तित्व की महिमा (17:5) (2) यीषु द्वारा पिता का प्रगटीकरण (17:4) या (3) यीषु का क्रूसीकरण तथा पुनरुत्थान (1751)। देखिए नोटः 1:14।

'' आकाशवाणी हुई,''

रबी इसे *बाथ–कॉल* कहलाते है। मलाकी के समय से इस्राएल के अन्दर कोई भविश्यद्वाणी नही हुई। यदि परमेष्वर की इच्छा को साबित करना है तो जो स्वर्ग से एक षब्द होना आवष्य है। सुसमाचार उल्लेख करता है कि यीषु के समय में तीन बार परमेष्वर ने इस प्रकर बातें की ः (1) यीषु के बपतिस्मा में, मत्ती. 3:17; (2) परिवर्तन में, मत्ती. 17:5; (3) और इस आयत में।

12:29

" तब जो लोग खड़े हुए सुन रहे थे,
उन्हों ने कहा;"

जो हुई है उसके बारे में दो व्याख्या हैः (1) बादल गरजा। पुराने नियम में इसे परमेष्वर की बातचीत के लिए प्रयोग किया गया (2षमू. 22:14; अय्यूब. 37:4; भ.सं दृ 29:3; 18:13; 104:7) या एक स्वर्गदूत ने उससे बातें की। यही असमंजिस षाउल के अनुभव के बारे में भी है (प्रेरित. 9:7; 22:9)।

12:30

" इस पर यीशु ने कहा,
यह शब्द मेरे लिये नहीं
परन्तु तुम्हारे लिये आया है। "

यह प्राथमिक रूप से उन के लिए है (11:42);

12:31

" अब इस जगत का न्याय होता है,"

इसका समान अर्थ इसका आगे का षब्दसमूह में है (इस जगत का सरदार को निकाल दिया जाएगा) । इसके समय के बारे में कोई जानकारी नही है।

" इस जगत का सरदार "

यह एक व्यक्तिगत बुराई की ओर संकेत कर रहा है (14:30; 16:11) जिसे इब्रानी में षैतान या विरोधी कहते है (अय्यूब. 1–2) या यूनानी में षैतान या धोखेबाज कहते है (मत्ती. 4:1,5,8,11; 13ʹ39; 25:41; यूह. 6:70; 8:44; 13:2; 2कुरि. 4:4; इफि. 2:2)। ये दोनों नाम मत्ती. 4:1–11 और यूह.13:2,27 में पर्यायवाची षब्द है।

विषेश षीर्शकः व्यक्तिगत बुराई

यह विशय कई कारणों से बहुत ही कठीन है।
1. पुराना नियम भलाई के प्रमुख षत्रु के रूप में इसे प्रगट नही करता, परन्तु यहोवा के एक सेवक के समान जो मानवजाती के सामने एक विकल्प को प्रस्तुत करनेवाला और अधार्मिकता के लिए मानवजाती के ऊपर दोश लगानेवाले के रूप में प्रगट करता है।
2. परमेष्वर के प्रमुख षत्रु के सामान्य विचार की प्रौढ़ता फारसी धर्म के प्रभाव के द्वारा अन्दर–बाईबलीय (नॉन कानोनिकल) साहित्यों से हुई है। इसने समय रहते यहूदी धर्म को प्रभावित किया।
3. नया नियम पुराने नियम के मुख्य विशयों को नितान्त पर चुनकर स्पशट करता है।
यदि कोई बाइबलीय धर्मषास्त्र के अनुसार बुराई के बारे में पढाई करना चाहे (प्रत्येक पुस्तक या लेखक को पढ़े या रूपरेखा बनाए जाए) तो उसे बुराई के बारे में विभिन्न विचारधारा मिल जाएगी।
हलॉकि कोई विष्व के अन्य धर्मो की ओर से इसे सीखना चाहे तो नए नियम की प्रौढ़ता फारसी धर्म और युनानी–रोमी आत्मावाद की छाया के रूप में पाते हैं।

यदि कोई पवित्रषास्त्र के दैवीय अधिकार के प्रति समर्पित है तो नियम की प्रौढ़ता को प्रगतिषील प्रकाषन के तौर पर देखने पाएंगे। बाइबलीय परिभाशा देने के लिए मसीहियों को यहूदी और पाषचात्य साहित्यों का सहारा लेने से बचना चाहिए। इस विशय में अवष्य रहस्य तथा संकेतार्थ छिपा है। परमेष्वर ने बराई के हर पहलू को प्रगट करना नही चाहा जैसे इसका उत्भव, तथा इसके लक्ष्य, पर इसकी पराजय को प्रगट किया है!

पुराने नियम में षब्द षैतान या दोश लगानेवाला तीन विभिन्न झुण्ड से संपर्क रखता है

1. दोश लगानेवाले मनुश्य (1षामू. 29:4; 2षामू. 19:22; 1राजा. 11:14,23,25; भ.सं. 109: 6)।
2. दोश लगानेवाला स्वर्गदूत (गिनती. 22:22–23; ज़क. 3:1)
3 दोश लगानेवाली दुश्टात्मा (1इति. 21:1; 1 राजा. 22:1; ज़क. 13:2)।

बाद में, अन्दर बाइबलीय समय में उत्पत्ती 3 के साँप को षैतान के रूप में परीचय दिया गया (बुक ऑफ विस्ड़म् 2:23–24; 2इनोक. 31:3), और जब तक यह रबियों की विचरधारा नही बना (सोत 9बी,सान्ह 29ए)। उत्पत्ती 6 का ''परमेष्वर के पुत्र'' 1 इनोक 54:6 में स्वर्गदूत बन गए। मैं ने इस बात की धर्मषास्त्रीय त्रुटीहीनता को बताने के लिए नही लिखा परन्तु इसकी प्रौढ़ता का दिखाने के लिए लिखा है। नए नियम में इन कार्यो को 2कुरि.11:3 तथा प्रकाष. 12:9 में षैतान के साथ सम्बद्ध कर दिया है।

पुराने नियम से षैतान के उत्भव के बारे में जान पाना कठीन या नामुम्कीन है। इस्राएलियों का अद्वैतवाद का एक कारण यह है (1राजा. 22:20–22; सभो.7:14;यषा. 45:7; आमोस. 3:6)। समस्त दैवयोग यहोवा के अनोखेपन तथा प्राथमिकता को दर्षाने के लिए यहोवा से सम्बद्ध किया गया है (यषा. 43:11; 44:6,8,24; 45:5–6,14,18,21,22)।

(1)अय्यूब. 1–2 के ''परमेष्वर के पुत्र'' (स्वर्गदूत) या (2) यषा.14; यहेज़.28 के पूर्वीय राजा (बाबूल तथा सोर) षैतान के घमण्ड के बारे में (1तिमु. 3:6) बताने के लिए प्रयोग किया गया श्रोत है। इसके प्रति मेरी विचारधारा कुछ मिश्रित हैं। सोर के राजा को षैतान बताने के लिए यहेजकेल ने अदन की बाटिका का रूपक प्रयोग नही किया (यहेज. 28:12–16) पर मिस्र के राजा को भले बुरे का वृक्ष बताने के लिए भी (यहेज. 31) प्रयोग किया है। हलॉकि यषा.14:12–14 कुछ स्वर्गदूतो के घमण्ड का कारण बगावत को सूचित करता है। यदि परमेष्वर हम से षैतान का कोई स्वभाव या उत्भव के बारे में बताना चाहते है तो यह है सही तरीका। हमें क्रमबद्ध धर्मषास्त्र के छोटे छोटे वाक्यांष को लेकर सिद्धान्त बनाने वाले उन तरीकों से बचना चाहिए।

अलफ्रड एडेरषेम (*द लाइफ एण्ड टइम्स ऑफ जीसस् द मेसय्याह,* भाग 2, परिषिश्ट ग्प्ए पृश्ठ. 748– 763 तथा ग्ट्प पृश्ठ. 770– 776) कहते है यहूदी धर्म फारसी दोहरावाद और षैतानिक अटकलबाज़ी से प्रभावित है। इस क्षेत्र में रबि सही श्रोत नहीं है। यीषु ने आराधनालयों की षिक्षा से भिन्नता दिखाई। मैं सोचता हूँ कि सीनै पहाड़ पर मूसा को व्यवस्था देने के विशय में रबियों की विचारधारा ने यहोवा और मनुश्य के प्रमुख षत्रु के रूप में स्वर्गदूतों को साबित किया। फारसी धर्म के दोहरावाद के दो ऊँचे परमेष्वर *अहकिमान और ओरमाज़ा,* भले और बुरे , यहोवा और षैतान के रूप में यहूदी धर्म में स्थान पा लिया।

नए नियम के अन्दर बुराई के विशय में एक प्रगतीषील प्रकाषन अवष्य हैं परन्तु रबियों की विचारधारा जैसे इतनी विषालरूप से नहीं। इस के लिए एक अच्छा उदाहरण है ''स्वर्ग में युद्ध''।षैतान के पतन का विचार यही है परन्तु सुस्पश्ट नही किया गया। और कुछ भी किया गया हो वे भविश्यात्मक षब्दों में हैं (प्रकाष. 12:4,7,12–13)। हलॉकि षैतान को पराजित किया गया और उसे धरती की ओर निश्कासित किया गया तौभी वह यहोवा के एक सेवक के रूप में कार्यषील है (मत्ती. 4:1; लूका. 22:31–32; 1कुरि. 5:5; 1तिमु. 1:20)।

इस बात के प्रति हमारी उत्सुकुता को हमें वष में रखना है।बुराई की एक व्यक्तिगत षक्ति और प्रलोभन है परन्तु केवल एक मात्र परमेष्वर है और मनुश्य अपने चुने के स्वयं जिम्मेवार है। उद्धार के पहले और बाद भी एक आत्मिक युद्ध मौजूद है । विजय केवल त्रीएक परमेष्वर की तरफ से ही आता है। बुराई को पराजित किया गया और उन्मूल किया जाएगा।

'' निकाल दिया जाएगा ''

यह एक भविश्यकाल वाक्य है। स्वर्ग से षैतान के पतन के समय के बारे में पवित्रषास्त्र कुछ नही कहती। यषा. 14 और यहेज.28 में षैतान के बारे में समझना दूसरा स्थान ही लेता है। भविश्यद्वाणी का ये अनुच्छेद बाबूल तथा सोर के घमण्डी राजाओं को दर्षाता है। उनके पापमय घमण्ड षैतान के स्वभाव को दर्षाता है (यषा. 14:12,15; यहेज. 28:16)। हलॉकि 70 लोगों के लौटने पर यीषु ने कहा कि उसने षैतान को गिरते हुए देखा (लूका. 10:18)।
समस्त पुराने नियम में षैतान के प्रगति के बारे में ज़िक्र हैं। वास्तव में वह परमेष्वर का सेवक था पर घमण्ड ने उसे परमेष्वर के विरोधी बना दिया। इस विशय की चर्चा ए.बी. डेविडसन के *ऑल्ड टेस्टमेन्ट थियॉलजी* पृश्ठ. 300–306 में है।

12:32

'' मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, ''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। इस षब्द का अर्थ हो सकता है (1) ऊँचा उठाना (3:14); क्रूसीकरण (8:28); (3) उन्नत होना (प्रेरित. 2:33; 5:31); या (4) अतिश्रेश्ठ किया जाना (फिलि. 2:9)। यह यूहन्ना के अनेकार्थ षब्दों में से एक है।

'' सब को अपने पास खीचूंगा ''

यह यिर्मा. 31:3 में उल्लेखित यहोवा के वाचकीय प्रेम के लिए संकेतार्थ है। यह ''नई वाचा'' का (यिर्मा. 31:1–34) अनुच्छेद है। परमेष्वर लोगों के प्रति अपने काम और प्रेम के द्वारा अपनी ओर खींचता है। यह यूह. 6:44 तथा 65 में प्रयोग किया गया रूपक है। यहाँ ''सब'' का तात्पर्य है विष्वस्तरीय निमन्त्रण तथा छुटकारे का वायदा।

12:33

''ऐसा कहकर उस ने यह प्रगट कर दिया,
कि वह कैसी मृत्यु से मरेगा। ''

यह व्यवस्था. 21:23 से संबन्धित है जहाँ कहते है ''स्रापित है जो पेड पर लटकाया जाता है''। यही वजह है धार्मिक अगुवे यीषु को पत्थरवाह करना नही चाहा पर क्रुसीकरण चाहा। यीषु ने हमारे लिए व्यवस्था के स्राप को अपने ऊपर उठा लिया (गला. 3:13)।

12:34

'' इस पर लोगों ने उस से कहा,
... मसीह सर्वदा रहेगा,''

यह भ.सं 89 के लिए एक संकेत है। पुराना नियम मसीह के एकमात्र आगमन की प्रतीक्षा में था (भ.सं. 110:4; यषा. 9:7; यहेज. 37:25; दानि. 7:14)।

12:35

'' जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है
तब तक चले चलो;''

यह ''चलना'' के रूपकात्मक प्रयोग है। यह एक वर्तमानकाल आदेष है अर्थात् यह केवल एक निर्णय नही है पर जारी रहनेवाला एक संबन्ध है (12: 44–46)।

12:36

यीषु के यह मुख्य विशय जगत की ज्योति यूहन्ना में बार बार आनेवाला महत्वपूर्ण विशय है (1:4,5,7,8,9; 3:19,20,21; 5:35; 8:12; 9:5; 11:9,10; 12:35,36,46)। मृत सागर चर्मलेखों में ज्योति और अन्धकार भी भेद बतानेवाली आत्मिक वास्तविकता है।

12:36ख – 43

36ख. ये बातें कहकर यीशु चला गया और उन से छिपा रहा।
37. और उस ने उन के साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्हों ने उस पर विश्वास न किया।
38. ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन पूरा हो जो उस ने कहा कि हे प्रभु हमारे समाचार की किस ने प्रतीति की है? और प्रभु का भुजबल किस पर प्रगट हुआ?
39. इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने फिर भी कहाँ
40. कि उस ने उन की आँखें अन्धी, और उन का मन कठोर किया है; कहीं ऐसा न हो, कि आँखों से देखें, और मन से समझें, और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूं।
41. यशायाह ने ये बातें इसलिये कहीं, कि उस ने उस की महिमा देखी; और उस ने उसके विषय में बातें की।
42. तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रगट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं।
43. क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उन को परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।

12:38

''यशायाह भविष्यद्वक्ता का वचन ''

यह यषा. 53:1 ,जो दुःखभोगी सेवक अनुच्छेद है, से उद्धृत हैं।

12:39

'' इस कारण वे विश्वास न कर सके,''

वे यीषु के साथ विष्वास संबन्ध में लग नही पाया। यीषु के चमत्कार ने उन्हें आकर्शित अवष्य किया पर इन बातों ने उन्हें उद्धार की ओर अगुवाई नही किया या यीषु को मसीह मानने में वे असमर्थ रहे।

'' क्योंकि यशायाह ने फिर भी कहाँ ''

यषा.6:10; 43:8 यहूदियों के कठोर ह्रदय जो परमेष्पर के प्रति है की ओर इषारा करता है (यिर्मा. 5:21; यहेज. 12:2; व्यवस्था. 29:2–4)।

12:40

''मन''

देखिए निम्नलिखित **विषेश षीर्शक**

विषेश षीर्शक : हृदय या मन

सैप्टूआजैन्ट और नए नियम में इब्रानी षब्द लैब को प्रस्तुत करने के लिए यूनानी षब्द कार्डीया का प्रयोग किया गया है। यह बहुत से तरीकों से प्रयोग किया गया है (बाउएर, अरनद्‌ट, गिन्गरीच और ड़न्कर, ए ग्रीक–इग्लिष लैक्सीकन, पृश्ठ.403–404)।

1) दैहीक जीवन का केन्द्रीय भाग, व्यक्ति का रूपक (प्रेरित.14:17; 2कुरि.3:2–3; याक.5:5)

2) आत्मिक (नैतिक) जीवन का केन्द्रीय भाग

क) परमेष्वर हृदय को जानते हैं (लूका.16:15; रोमियों.8:27; 1कुरि.14:25; 1थिस्स.2:4; प्रका.2:23)

ख) मनुश्य के आत्मिक जीवन का प्रयोग (मत्ती.15:18–19; 18:35; रोमियों.6:17; 1तीमु.1:5; 2तीमु.2:22; 1पत. 1:22)

3) विचार जीवन का केन्द्रीय भाग (उदा. ज्ञान, मत्ती.13:15; 24:48; प्रेरित.7:23; 16:14; 28:27; रोमियों.1:21; 10:6; 16:18; 2कुरि.4:6; इफि.1:18; 4:18; याक.1:26; 2पत.1:19; प्रका.18:7; हृदय दिमाग का समानार्थ है 2कुरि. 3:14–15 और फिलि.4:7 में)

4) इच्छा का केन्द्रीय भाग (प्रेरित.5:4; 11:23; 1कुरि.4:5; 7:37; 2कुरि.9:7)

5) भावना का केन्द्रीय भाग (मत्ती.5:28; प्रेरित.2:26, 37; 7:54; 21:13; रोमियों.1:24; 2कुरि.2:4; 7:3; इफि.6:22; फिलि.1:7)

6) आत्मा के कार्य के लिए अद्वितिय स्थान (रोमियों.5:5; 2कुरि.1:22; गला.4:6; मसीह हमारे हृदय में – इफि. 3:17)

7) हृदय या मन एक व्यक्ति को प्रस्तुत करने का रूपक तरीका है (मत्ती.22:37, व्यव.6:5 से लिया गया)। विचार, उद्‌देष्य और कार्य जो मन से जुड़े होते हैं वह एक व्यक्ति को प्रस्तुत करते हैं।

पुराने नियम में इस षब्द के कुछ चौंका देने वाले प्रयोग हैं।

क) उत्प.6:6; 8:21, ''परमेष्वर मन में अति खेदित हुए'' (देखिए होषे.11:8–9)

ख) व्यव.4:29; 6:5, ''अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से''

ग) व्यव.10:16, ''खतना किए हुए हृदय'' और रोमियों.2:29

घ) यहे.18:31–32, ''एक नया हृदय''

ङ) यहे.36:26, ''एक नया हृदय'' और ''पत्थर का हृदय''

<u>*12:41*</u>

<u>*''यशायाह ने ये बातें इसलिये कही,*</u>
<u>*कि उस ने उस की महिमा देखी;''*</u>

यह इस बात का सबूत है कि पुराने नियम के भविश्यद्वक्ताओं के पास मसीह के आगमन की जानकारी थी (लूका. 24:27)। देखिए नोटः महिमा 1:14।

<u>*12:42*</u>

<u>*'' तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने*</u>
<u>*उस पर विश्वास किया,''*</u>

यीष का सन्देष अवष्य फल लाया (12:11; प्ररित. 6:7)। देखिए **विषेश षीर्शक 2:23।**

<u>*'' वे प्रगट में नहीं मानते थे,''*</u>

देखिए **विषेश षीर्शकः** अंगीकार **9:22।**

<u>*12:43*</u>

यह दर्षाता है कि साधारण विष्वास कमजोर तथा घबरानेवाले होगा। यूहन्ना रचित सुसमाचार षब्द विष्वास *(पिस्तियो)* का प्रयोग विभिन्नार्थ से करते हैं,प्राथमिक आकर्शण से उद्धार दिलानेवाली विष्वास तक।

12:44 – 50
44. यीशु ने पुकारकर कहा, जो मुझ पर विश्वास करता है, वह मुझ पर नहीं, वरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है।
45. और जो मुझे देखता है, वह मेरे भेजनेवाले को देखता है।
46. मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में ने रहे।
47. यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता, क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के

लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ।
48. जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहरानेवाला तो एक हैः अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, वह पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।
49. क्योंकि मैं ने अपनी ओर से बातें नहीं कीं, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या क्या कहूँ? और क्या क्या बोलूं?
50. और मैं जानता हूँ, कि उस की आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता हूँ, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है वैसा ही बोलता हूँ।।

12:44

'' जो मुझ पर विश्वास करता है,
वह मुझ पर नहीं,
वरन मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है। ''

विष्वास का मंजिल आखिर पिता में हैं (1कुरि.15:25—27)। यह बार बार आनेवाला मुख्य विशय है (मत्ती. 10:40; 5:24)। पुत्र को जानने का अर्थ है पिता को पहचानना (1यूह. 5:10—12)।

12:47

''यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने,''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। आज्ञाकारिता में बने रहना विष्वस के द्वारा व्यक्तिगत संबन्ध में बने रहने का चिन्ह है। निष्चयता बदला हुआ और बदलनेवाली आज्ञाकारिता की जीवनषैली और दृढ़ता पर निर्भर है (याकूब तथा 1यूहन्ना की किताबें)।

12:47—48

'' क्योंकि मैं जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं,
परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ। ''

यीषु प्राथमिक रूप से जगत का उद्धार करने आया, परन्तु उसके आने के कारणों को मनुश्य को निर्धारित करना है। यदि वे तिरस्कार करे तो वे स्वयं दण्ड लाते है (3:17—21)।

12:49—50

यीषु अपने अधिकार से नही वरन परमेष्वर के अधिकार से बात करते है।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. क्यों मरियम, लाजर के बहन, ने यीषु के पाँवों में इत्र डाला ?
2. क्यों इस घटना के बारे में मत्ती, मरकुस, और लूका ने अलग विवरण दिया ?
3. लोगों का खजूर की डालियों के साथ यीषु के साथ मिलना क्यों महत्वपूर्ण है ? और भ.सं. 118 का यहाँ क्या विषेशता है ?
4. क्यों यीषु यूनानीयों के अनुरोध पर प्रभावित हुए ?
5. क्यों यीषु के प्राण इतने व्याकुल थे ?
6. यूहन्ना ने क्यों षब्द विष्वास को विभिन्नार्थ से प्रयोग किया, वर्णन करे।

<u>*पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद*</u>

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
षिश्यों के पाँव धोना	गुरू दास बनता है	अन्तिम भोज	यीषु षिश्यों के पाँव धोते हैं	षिश्यों के पाँव धोना
13:1—11	13:1—11	13:1—11	13:1	13:1
			13:2—6	13:2—5
				13:6—11
			13:7	
			13:8क	
			13:9	
	हमें भी सेवा करना है		13:10—11	
13:12—20	13:12—30	13:12—20	13:12—17	13:12—16
				13:17—20
			13:18—20	
यीषु धोखे के बारे में पहले से कहते हैं			यीषु धोखे के बारे में पहले से कहते हैं	यीषु यहूदा के द्वारा होनेवाले धोखे के बारे में पहले से कहते हैं
13:21—30		13:21—30	13:21	13:21—30
			13:22—24	
			13:25	
			13:26—29	
			13:30	
नई आज्ञा	नई आज्ञा		नई आज्ञा	विदाई भाशण
13:31—35	13:31—35	13:31—35	13:31—35	13:31—35
पतरस के इनकार को पहले से कहा गया	पतरस के इनकार को पहले से कहा गया		पतरस के इनकार को पहले से कहा गया	
13:36—38	13:36—38	13:36—38	13:36क	13:36—38
			13:36ख	
			13:37	
			13:38	

<u>*अध्ययन कालचक्र तीन*</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्‌देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्‌दय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 13:1 – 38

क. समानान्तर सुसमाचार के समान यूहन्ना प्रभु भोज का उल्लेख नही करता। वह केवल ऊपरी कोठरी में जो वार्तालाप उस रात को हुई थी उसे उल्लेख करता है (अध्याय. 13–17)। कई कहते है कि प्रारम्भिक कलीसिया के रुची रस्मी प्रक्रिया में बढने के कारण यूहन्ना ने इस बात को जानबूझकर छोड़ दिया है। यूहन्ना ने कभी यीषु के बपतिस्मा वा प्रभु भोज को अधिक विवरण नही दिया।

ख. यूहन्ना 13 का ऐतिहासीक संदर्भ लूका.22:24 में पाते है।

ग. अध्याय 13–17 का भौतिक स्थान ऊपरी कोठरी है, यूहन्ना मरकुस के घर है, घटना जिस दिन यीषु यहूदा द्वारा पकडवाया गया उस दिन की है।

घ. ऐसा लगता है कि यीषु के पाँव धोने का प्रक्रिया में दो उद्‌देष्य षामिल थेः
1. 13:6–10 हमारे एवज में क्रूस पर होनेवाला काम की परछाई थ।
2. 13:12–20 विनम्रता के प्रति एक पाठ (लूका. 22:24 के ज्योति में)।

ङ अध्याय 12 में यीषु के चमत्कारों का उपसंहार यूहन्ना में होता है। अध्याय 13 से अन्तिम पीढ़ानुभव का सप्ताह षुरू होता है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

13:1 – 11

1. फसह के पर्व से पहले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।
2. और जब शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए, तो भोजन के समय।
3. यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूँ, और परमेश्वर के पास जाता हूँ।
4. भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी।
5. तब बरतन में पानी भरकर चेलों के पाँव धोने और जिस अंगोछे से उस की कमर बन्धी थी उसी से पोंछने लगा।
6. जब वह शमौन पतरस के पास आयाः तब उस ने उस से कहा, हे प्रभु,
7. क्या तू मेरे पाँव धोता है? यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो मैं करता हूँ, तू अब नहीं जानता, परन्तु इस के बाद समझेगा।
8. पतरस ने उस से कहा, तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगाः यह सुनकर यीशु ने उस से कहा, यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं।
9. शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तो मेरे पाँव ही नहीं, वरन हाथ और सिर भी धो दे।
10. यीशु ने उस से कहा, जो नहा चुका है, उसे पाँव के सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं; परन्तु वह बिलकुल शुद्ध हैः और तुम शुद्ध हो; परन्तु सब के सब नहीं।
11. वह तो अपने पकड़वानेवाले को जानता था इसीलिये उस ने कहा, तुम सब के सब शुद्ध नहीं।

13:1

'' फसह के पर्व से पहले ''

इस दिन के बारे में समानान्तर सुसमाचार और यूहन्ना में असहमती हैं कि यह फसह से पहले था या फसह के ही दिन था। उन दोनों के माने तो भोज गुरुवार के दिन और क्रूसीकरण षुक्रवार के दिन था (19:31; मरकुस. 15:43; लूका. 23:54)। फसह का भोजन मिस्र से इस्राएलियों के छुटकारे की यादकारी में किया जाता है (निर्ग. 12)। यूहन्ना साबित करता है कि यह फसह पर्व से पहले था (18:28;19:14,31,42)।

'' अपने लोगों से, जो जगत में थे,
जैसा प्रेम वह रखता था,''

यूहन्ना ने षब्द ''जगत'' *(कॉसमॉस)* का प्रयोग कई विभिन्नार्थ से किया हैः (1) धरती (1:10; 11:9;) (2) मानव () (3) विद्रोही जन () ।

''यीशु ने जान लिया,
कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है
कि जगत छोड़कर ''

कम से कम 12 वर्श की आयु से यीषु ने पिता के साथ अपने अनोखे रिष्ते को समझने लगे (लूका. 2:41—51)। 12:20 में उसे मिलने यूनानियों का आना इस बात को संपुश्ट करता है कि उसके मृत्यु की घडी और महिमा की घडी आगई है (2:4; 12:23,27; 17:1)। यूहन्ना रचित सुसमाचार में दोहरावाद, ऊपर बनाम नीचे, जारी हैं (13:3)। यीषु को पिता द्वारा भेजा गया (8:42) अब वो वापस जानेवाले है। समानान्तर सुसमाचार दो यहूदी युगों के बारे में यीषु की षिक्षा के चित्र बनाता है, परमेष्वार के राज्य जो अब है पर संपूर्ण नही है।

आधुनिक पाठकों के अन्दर इस सुसमाचार के प्रति कई प्रष्न है, पर सब कुछ स्पश्ट होने के बाद यह बात मालूम हो जाती है ये पवित्र लेख एक दृढ बाइबलीय विष्व—दृश्टि को प्रगट करता है।

1. एकमात्र पवित्र परमेष्वर है।
2. उसकी विषेश सृश्टि, मनुश्य, पाप और विद्रोह में गिर गई।
3. परमेष्वर ने एक देहधारी छुडानेहारे को भजा हैं।
4. मनुश्य को चाहिए कि वह विष्वास के द्वारा, मनफिराव, आज्ञाकारिता, दृढता में प्रत्युत्तर दे।
5. परमेष्वर और उसकी इच्छा का विरोध करनेवाला बुराई की एक व्यक्तिगत षक्ति है।
6. जिन सृश्टि के अन्दर विवेक है उनको परमेष्वर के सम्मुख में लेखा देना है।

'' अपनों को वह प्रेम रखता था,''

यूनानी भाषा के मिस्री पापरी में ''नज़दीकी रिष्तेदार'' का प्रयोग है (लूका.8:19—21)।

''अन्त तक प्रेम रखता रहा''

यहाँ यूनानी में *टेलॉस* का प्रयोग है जिसका अर्थ है पूरा किए हुए उद्‌देष्य। यह यीषु के जो मानवजाती के छुटकारे के प्रति क्रूस के काम को दर्षाता है। इसका एक रूप यीषु का क्रूस पर के अन्तिम कथन ''पूरा हुआ'' (19:30) है जिसका अर्थ मिस्री पापरी में ''भुगतान करदिया गया'' है।

13:2

'' भोजन के समय''

इस बात पे कई हस्तलेखों में अन्तर है। इसका अर्थ यह हो सकता है (1) भोजन के बाद; (2) आषिश के पहले प्याले के बाद, जब हाथ धोने के समय में; या (3) आषिश के तीसरे प्याले के बाद।

विषेश षीर्शकः पहली षताब्दी के यहूदी धर्म में फसह के क्रम (निर्ग. 12)

क. प्रार्थना
ख. दाखरस का एक प्याला
ग. मेजबान द्वारा हाथ धोना और हर एक के पास बासन को पहुँचाना।

घ. कड़वे सागपात और चटनी में डुबोना
ङ मेम्ना और मुख्य भोजन
च. प्रार्थना और दूसरी बार कड़वे सागपात और चटनी में डुबोना
छ. दाखरस का दूसरा प्याला और बच्चों के लिए प्रष्नोत्तर का समय।
ज. हिलेल भजन संहिता 113–114 के गाान और प्रार्थना
झ. अपने हाथों को धोने के बाद भोज का प्रधान प्रत्येक के लिए निवाला बनाता है।
10. पेट भरने तक सब खाते हैः एक मेम्ने का टुकड़े के साथ समाप्त करता है।
11. हाथ धोने के बाद दाखरस का तीसरा प्याला
12. हलेल भजन संहिता के दूसरा भाग 115–118 का गान
13. दाखरस का चौथा प्याला

कई विष्वास करते है कि प्रभु भोज 11 वा बिन्दु पर किया गया।

''शैतान शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था,''

यहूदा के बारे में यीषु षुरू से ही जानते थे (6:70)। काफी समय से षैतान उसे प्रलोभित कर रहा था (13:27)। देखिए **विषेश षीर्शक** : मन 12:40। देखिए यहूदा पर नोटः 18:1।

13:3

''यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है ''

यह यीषु के विस्मित करनेवाले कथनों से एक है (3:35; 17:2; मत्ती. 28:18)। इसमें अनिषचित भूतकाल का विषेश महत्व है। क्रूसीकरण से पहले ही पिता ने ''सब कुछ'' यीषु को दे दिया है। ये उसके आज्ञाकारिता के कारण उसे नही दिया गया पर ''वो कौन है'' इस बात पर दिया गया! वो जानते थे वो कौन है फिर भी उन्होंने उनके पाँव धोए जो महान होने के लिए तर्क–वितर्क कर रहे थे!

13:4

'' भोजन पर से उठकर ''

वे कुर्सियों पर नही बैठे थे पर अपने अपने बाई कोहनी के सहारे से लैटे हुए थे।

'' अपने कपड़े उतार दिए, ''

यह बहुवचन यीषु के बाहरी वस्त्र को दर्षाता है (19:23; प्रेरित. 8:16)। यह दिलचस्प है कि यही क्रिया के प्रयोग 10:11,15,17,18 में है जहाँ यीषु के अपने प्राण देने का ज़िक्र है (13:37)। यह यूहन्ना का दोहरावाद का एक ओर उदाहरण हैं। ऐसे लगता है कि पाँव धोना नम्रता का पाठ से कहीं अधिक प्रमुख है (13: 6–10)।

13:5

'' चेलों के पाँव धोने ''

इस आयत में प्रयोगित षब्द का अर्थ है ''षरीर का किसी भाग को धोना''। आयत 10 में प्रयोगित षब्द का अर्थ है ''नहाना''। पाँव धोने का काम गुलाम का होता है। यहाँ तक कि रबियों ने भी कभी भी अपने षिश्यों से इस काम की कामना नही करते थे। यीषु अपनी दैवीयता जानने के बावजूद भी तीव्र लालसा रखनेवाले षिश्यों का पाँव धोने के लिए तैयार हुए ।

13:6

पतरस का प्रष्न यीषु के इस काम का तिरस्कार था। पतरस ने सोचा कि यीषु को क्या करना और क्या नही करना चाहिए (मत्ती. 16:22)।

13:7

प्रेरित जो यीषु के साथ हमेषा रहे पर कई बार यीषु की षिक्षा और कार्य को वे समझ नही पाए (2:22; 10:6; 12:16; 16:18)।

13:8

'' तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगा:''

यह षक्तिषाली दो नकारात्मक है जिसका अर्थ है ''कभी किसी भी परीस्थिती में नही''।

''यदि मैं तुझे न धोऊं,
तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं। ''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है। यह आयत इस बात को प्रगट करने का प्रयास कर रहे कि जो यहाँ हो रहा है वह किसी प्रयोगिक पाठ से कहीं अधिक बेहतर हैं। अयत 6—10 पाप के मुआफी के निमित्त क्रूस पर यीषु के काम को दर्षाता है।
यह वाक्यांष पुराने नियम के उस मुहावरे से संबन्धित है जिसमें उत्तराधिकार के बारे में जिक्र हैं (व्यवस्था. 12:12; 2षामु. 20:1; 1 राजा. 12:12)। यह निकाल दिए जाने के विशय में षक्तिषाली मुहावरे है।

13:9

यूनानी नकारात्मक विभक्ति *(मे)* एक आदेष ''धोने'' की ओर इषारा करता है।

13:10

'' जो नहा चुका है, ''

यीषु छुटकारे के बारे में रूपकात्मक रूप से बातें कर रहे है। पतरस ने उद्धार पाया (15:3), परन्तु घनिश्ठ संबन्ध में बने रहने के लिए मनफिराव में लगे रहना आवष्य है (1यूह. 1:9)।

दूसरा संदर्भ यह हो सकता है कि यीषु यहूदा के धोखा के बारे (13:11 तथा 18) में कह रहें हो। इसलिए नहाना (1) पतरस का षरीर या (2) प्ररितों के झुण्ड को दर्षाता है।

13:11

टी. इ. वी. इसे लेखक का कथन के रूप में व्याख्या करता है।

13:12 —20

12. जब वह उन के पाँव धो चुका और अपने कपड़े पहनकर फिर बैठ गया तो उन से कहने लगा, क्या तुम समझे कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया?
13. तुम मुझे गुरू, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वहीं हूँ।
14. यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पाँव धोए; तो तुम्हें भी एक दुसरे के पाँव धोना चाहिए।
15. क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।
16. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से।
17. तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।
18. मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ: परन्तु यह इसलिये है, कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी खाता है, उस ने मुझ पर लात उठाई।
19. अब मैं उसके होने से पहिले तुम्हें जताए देता हूँ कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वहीं हूँ।
20. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।।

13:12—20

अयात 6—10 के विरोध में यीषु कहते है कि उसका यह कार्य एक नमूना था। प्रेरित आपस में महान कौन है इस विशय में वाद विाद कर रहे थे (लूका. 22:24)। इस संदर्भ में यीषु ने एक गुलाम की भूमिका निभाई।

13:14

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है।

13:14—15

" तुम्हें भी एक दुसरे के पाँव धोना चाहिए। "

क्या यह कथन कलीसिया के लिए तीसरा धर्मनिश्ठान का आदेष है ? अधिकतर मसीही झुण्ड ने कहा, नहीं, क्योकि (1) इसे किसी कलीसिया के द्वारा किया गया है इसका कोई विवरण हमें प्ररितों के काम की पुस्तक में नही मिलता; (2) इसके विशय में किसी पत्री में ज़िक्र नही है; और (3) इस के विशय में यह कभी नही कहा गया कि यह बपतिस्मा (मत्ती. 28:19) और प्रभु भोज (1कुरि.11:17–34) के समान जारी रहनेवाले एक धर्मनिश्ठान होंगे। इसका यह अर्थ नही कि इसे आराधना के एक मुख्य पहलू के समान काम में नही ला सकता।

13:16

" मैं तुम से सच सच कहता हूँ,"

यह अमीन आमीन है। यह पुराने नियम के षब्द "विष्वास "(इब्रा. 2:4) का दूसरा एक रूप हैं। यीषु एक मात्र व्यक्ति है (यूनानी सकहित्यों में भी) जिसने इस षब्द को इस प्रकार प्रयोग किया है। इसे साधारण रीति से किसी वाक्य का अन्त में किया जाता था। षुरू में इस प्रकार का प्रयोग लोगों को ध्यान से सुनने के लिए आकर्शित करता है।

13:17

" यदि तुम ये बातें जानते हो,
और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो। "

पहला "यदि" पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। दूसरा "यदि" एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यदि हम जानते है तो हमें करना है (मत्ती. 7:24–27; लूका. 6:46–49; रोमि. 2:13; याकूब. 1:22–25; 4:11)। लक्ष्य जानकारी नही परन्तु मसीह समानता का जीवन है।

13:18

" पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो,"

यह यहूदा की ओर संकेत करता है (17:12; 19:24,36; 15:25; 18:32)।

" उस ने मुझ पर लात उठाई। "

यह भ.सं. 41:9 का उद्धृत हैं। एक साथ भोजन करना दोस्ती का चिन्ह है अपना पाँव किसी को दिखाने का अर्थ है अपमानित करना।

3:19

यह आयत यीषु के चमत्कार के उद्देष्य को बताते है। यूहन्ना में विष्वास का तात्पर्य है बढ़ना तथा बने रहने का अनुभव। यीषु लगातार प्रेरितों के भरोसे का निर्माण कर रहे है।

'' कि मैं वहीं हूँ। ''

यह परमेष्वर का नाम ''यहोवा'' के लिए एक संकेत है जो इब्रनी क्रिया ''होना'' (निर्ग. 3:14 का मैं हूँ) का एक रूप है। यीषु दैवीय संकेतार्थों के साथ मसीह होने का दावा करते है (4:26; 6:20; 8:24,28,58; 13:19; 18:5,6,87)।

13:20

साधारण रीति से यूहन्ना मसीहियों की ओर इषारा करने के लिए ''विष्वास'' *(पिस्टियो),* ''विष्वास में'' *(पिस्टियो एईस)* और ''उसे विष्वास'' *(पिस्टियो होती)* षब्दों का प्रयोग करते है, साथ ही साथ ''ग्रहण करना'', ''स्वीकार करना'' षब्दों का भी प्रयोग हैं(1:12; 5:43; 13:20)। सुसमाचार एक व्यक्ति को स्वीकार करना तथा बाइबलीय सच्चाई और विष्व–दृश्टि को ग्रहण करना दोनों है।

13:21–30

21. ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ और यह गवाही दी, कि मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।
22. चेले यह संदेह करते हुए, कि वह किस के विषय में कहता है, एक दूसरे की ओर देखने लगे।
23. उसके चेलों में से एक जिस से यीशु प्रेम रखता था, यीशु की छाती की ओर झुका हुआ बैठा था।
24. तब शमौन पतरस ने उस की ओर सैन करके पूछा, कि बता तो, वह किस के विषय में कहता है?
25. तब उस ने उसी तरह यीशु की छाती की ओर झुक कर पूछा, हे प्रभु, वह कौन है? यीशु ने उत्तर दिया, जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूंगा, वही है।
26. और उस ने टुकड़ा डुबोकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया। 27. और टुकड़ा लेते ही शैतान उस में समा गयाः तब यीशु ने उस से कहा, जो तू करता है, तुरन्त कर।
28. परन्तु बैठनेवालों में से किसी ने न जाना कि उस ने यह बात उस से किस लिये कही।
29. यहूदा के पास थैली रहती थी, इसलिये किसी किसी ने समझा, कि यीशु उस से कहता है, कि जो कुछ हमें पर्व के लिये चाहिए वह मोल ले, या यह कि कंगालों को कुछ दे।
30. तब वह टुकड़ा लेकर तुरन्त बाहर चला गया, और रात्रि का समय था।।

13:21

'' वो आत्मा में व्याकुल हुआ ''

यहूदा के धोखा देने से वास्तव में यीषु को परेषानी हुई (12:27)। यहूदा के आत्मिक काबिलियत के कारण यीषु ने उसे चुना था पर वह हद तक नही पहुँचा (13:18)।

13:23

" जिस से यीशु प्रेम रखता था,"

ऐसा लगता है कि यह यूहन्ना की ओर इषारा करता है (13:23,25; 19:26–27, 34–35; 20:2–5,8; 21:7,20–24)। यूहन्ना का नाम कभी भी इस सुसमाचार में उल्लेखित नही है।

13:25

यह संदर्भ पहला षताब्दी का पलिस्तीन की भोजन षैली का विवरण कर रहा है। षिश्य एक कम कद के एक मेज़ पर अपने बाई हाथ के सहारे लैटा है तथा उनके पैर पीछे की तरफ है और वे दाहिने हाथ से खा रहे है।यूहन्ना यीषु के दाहिने ओर और यहूदा बाई ओर (आदर के स्थान)बैठे है। यूहन्ना ने पीछे की ओर झुककर प्रष्न किया।

13:26

" जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूंगा, "

यह एक आदर का चिन्ह है (रूत. 2:14)। यहूदा यीषु के बाई ओर है जो आदर के स्थान है और यीषु अभी भी यहूदा तक पहुँचना चाहते है!

13:27

"शैतान उस में समा गयाः"

यूहन्ना रचित सुसमाचार में केवल इस जगह पर ही षब्द षैतान का प्रयोग है । इब्रानी में इसका अर्थ है "विरोधी" (13:2; लूका. 22:3)। षैतान के समा जाने का जिम्मेवार यहूदा नही है ? बाइबल के अन्दर आत्मिक क्षेत्र (परमेष्वर फिरौन का हृदय को कठोर करते है) तथा मनुश्य की जिम्मेवारी के भौतिक क्षेत्र के बीच में संधर्श है। मनूश्य जैसे सोचता है कि वह स्वतंत्र है वैसे स्वतंत्र नही है। हम सब ऐतिहासिक, अनूभव–संबन्धि, तथा उत्पत्ती–षास्त्र रूप से सषर्त है। इसके साथ साथ भौतिक क्षेत्र का नियंत्रण आत्मिक क्षेत्र (परमेष्वर, पवित्रात्मा, स्वर्गदूत, षैतान और दुश्टात्माएं) के पास है। यह एक रहस्य है। हलॉकि मनुश्य रोबॉट नही है, पर हर एक कार्य, चुनाव,और उसके नतीजे के लिए वे स्वयं जिम्मेवार है। यहूदा ने कार्य किया। वह अकेला नही था! परन्तु नैतिक रूप से उसके कार्य के लिए वह स्वयं जिम्मेवार हैं। यहूदा के धोखा पहले से कही हुई बात थी। उक्सानेवाला षैतान था। यह दुःख की बात है कि यहूदा पूर्णरूप से यीषु के पास नही आया या भरोसा नही किया।

13:29

"यहूदा के पास थैली रहती थी,"

उस झुण्ड के पैसे का अधिकारी यहूदा था। देखिए नोटः 18:1

13:30

" रात्रि का समय था।"

क्या यह एक आत्मिक मूल्यांकन का समय था ? यूहन्ना कई बार संदिग्ध वाक्यांष का प्रयोग करता है (3:2; 19:39)।

13:31–35

31. जब वह बाहर चला गया तो यीशु ने कहा; अब मनुष्य पुत्र की महिमा हुई, और परमेश्वर की महिमा उस में हुई।
32. और परमेश्वर भी अपने में उस की महिमा करेगा, वरन तुरन्त करेगा। 33. हे बालको, मैं और थोड़ी देन तुम्हारे पास हूँ: फिर तुम मुझे ढूंढोगे, और जैसा मैं ने यहूदियों से कहा, कि जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते वैसा ही मैं अब तुम से भी कहता हूँ।
34. मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि एक दूसरे से प्रेम रखोः जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो।
35. यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।।

13:31–38

इन आयतो का संदर्भ षिश्यों के प्रष्नों का उत्तर है (13:36; 14:5,8,22; 16:17)।

13:31

'' मनुष्य पुत्र''

यह यीषु के द्वारा स्वयं चुना हुआ षीर्शक है। इसका पृश्ठभूमि यहेज. 2:1 तथा दानि. 7:13 में है। यह दैवीय और मानवीय स्वभाव को दर्षाता है। इस षीर्शक को यहूदी धर्म में उपयोग नही करते है इसलिए यीषु ने इसे उपयोग में लाया। यह उसके दोनों स्वभाव को सम्मिलित करता है (4:1–6)।

इसमें यूनानी हस्तलेखों में अन्तर नजर आता है। लम्बा वाक्य ***एन ए एस बी, एन के जे वी, एन आर एस वी, टी इ वी, और एन जे बी में पाते है। यह*** हस्तलेख आलेफ सी,ए, सी2,के,के द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसे (यदि परमेश्वर की महिमा उस में हुई) हस्तलेख पी66, आलेफ,बी,सी,डी, एल,डब्लयू, और एक्स में छोड़ दिया गया है। हो सकता है नकल करलनेवाले एक जैसे षब्दों से असमंजिस में पडकर षायद छोड़ दिया हो।

'' महिमा हुई,''

आयत 31 तथा 32 में इस षब्द को 4 या 5 बार प्रयोग किया गया है– 2 या 3 बार अनिषचित भूतकाल में और 2 बार भविश्यकाल में है। यह यीषु के मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा परमेष्वर के छुटकारे की योजना को प्रगट करता है (7:39; 12:16,23; 17:1,5)। यहाँ यीषु के जीवन में तुरन्त होनेवाली घटना के बारे में संकेत करते है। वे इतना पक्का है कि उन घटना को अनिषचित भूतकाल में लिखा गया है। देखिए नोटः महिमा 1:14

13:33

''हे बालको,''

यूहन्ना ने अपना बूढ़ापे में इफिसूस से पत्री लिखते समय 1यूह. 2:1,12,28; 3:7,18; 4:4; 5:21 में अपने पाठकों को इसी षीर्शक से संबोधित किया है। यीषु का रूपक पिता के साथ उनकी पहचान को प्रगट करने का एक अलग तरीका है। वो पिता, भाई, उद्धारकर्ता, दोस्त, और प्रभु है। दूसरे षब्दों में वो श्रेश्ठ परमेष्वर तथा करीब रहनेवाला दोस्त है।

'' मैं और थोड़ी देन तुम्हारे पास हूँ ....
और जैसा मैं ने यहूदियों से कहा,''

यीषु ने इस बात को कई महीने पहले यहूदियों से कहा था (7:33); अब वो अपने प्रेरितों से कह रहे है (12:35; 14:9; 16:16–19)। इसलिए यह स्पश्ट है कि समय संधिग्द है।

''जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम नहीं आ सकते''

यहूदी अगुवे तो बिलकुल आ नही सकते (7:34,36; 8:21)। षिश्यों के मृत्यु तक वे भी उस जगह जा नही सकते। मृत्यु वा उठा लिया जाना विष्वासियों को उसके साथ एकत्रित करेगे (2कुरि. 5:8; 1थिस्स. 4:13–18)।

13:34

'' मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ,
कि एक दूसरे से प्रेम रखो: ''

एक दूसरे से प्रेम रखना वास्तव में एक नई आज्ञा नही है (लूका. 19:18)। नई बात यह है कि विष्वासियों को चाहिए कि वे जैसे यीषु ने प्रेम किया वैसे ही करें (15:12,17; 1यूह. 2:7–8; 3:11,16,23; 4:7–8,10–12, 19–20; 2यूह. 5)।
सुसमाचार एक व्यक्ति है जिसे स्वागत करना, सच्चाईयों का एक वाहन है जिसे विष्वास करना, तथा एक जीवन है जिसे जीना, चाहिए (14:15,21,23; 15:10,12; 1यूह. 5:3; 2यूह. 5,6; लूका. 6:46)। सुसमाचार को स्वगात किया ,विष्वास किया, और जीया!
मैं, *फौन्डेशन फॉर बिबलिकल इन्टरप्रटेषन* में ब्रूस कोरले द्वारा लिखा गया ''बिबलिकल थियॉलजी ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट'' का एक कथन को पसन्द करता हूँ: ''मसीह के लोगों का चरित्र नैतिक प्रेम के द्वारा ही बनते है जहाँ अनुग्रह के होने उचित प्रेम के साथ पवित्रात्मा के काम के द्वारा संबन्धित है (13:34–35; 1यूह. 4:7; गला. 5:6,25; 6:2; याकूब. 3:17718;)।'' पृश्ठ.562।

13:35

'' इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।।''

प्रेम एकमात्र स्वभाव है जिसका नकल षैतान नही कर सकता । विष्वासियों के चरित्र प्रेम से चित्रित होना है (1यूह. 3:14; 4:20)।

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। दूसरे मसीहियों के साथ हमारे व्यवहार साबित करेंगे मसीह के साथ हमारे रिष्ता (1यूह. 2:9—11; 4:20—21)।

13:36—38

36. शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तू कहाँ जाता है? यीशु ने उत्तर दिया, कि जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता! परन्तु इस के बाद मेरे पीछे आएगा।
37. पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिये अपना प्राण दूंगा।
38. यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि मुर्ग बांग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा।

13:36

''शमौन पतरस ने उस से कहा ''

आयत 31—35 में यीषु के कथन के ऊपर षिश्यों द्वारा पूछे गए प्रष्नों के श्रंखला में पहला प्रष्न यह हैं (13:36; 14:5,8,22; 16:17)।

13:37

''तेरे लिये अपना प्राण दूंगा''

पतरस ने अर्थ को समझकर कहाँ यह हमें बताते है कि पतित मानव कितना निर्बल और प्रभु कितने समर्पित है।

13:38

''सच सच''

देखिए नोटः 1:51

'' मुर्ग बांग न देगा
जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा।''

यह एक रोमी मुर्गा होगा। षहर पवित्र होने के कारण यहूदियों के लिए जानवरों को अन्दर लाना मना था। इसलिए लोगों के बारी (उसमें खाद डाला करते थे) जैतून पहाड़ के पास षहर के दीवार के बाहर होता था। गतसमने का वाटिका उस प्रकार के एक था।

उसपर का विष्वास के बढौतरी के लिए यीषु भविश्यद्वाणी के उपयोग करते है। यह इस बात को प्रगट करता है कि कुछ नकारात्मक बातों की भी जानकारी उसके पास है और भविश्य पर भी अधिकार है (18:17—18,25—27; मत्ती. 26:31—35; मरकुस. 14:27—31; लूका. 22:31—34)

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. क्योंकर यूहन्ना ने प्रभु भोज के रीति रिवाज का उल्लेख नही किया ?
2. क्यो यीषु ने षिश्यों के पाँव धोए ? क्या हमें ऐसा एक दूसरे के साथ करना चाहिए ?
3. क्यों यीषु ने यहूदा को अपना षिश्य बनाया था ?
4. एक व्यक्ति को किस प्रकार हम जान सकते है कि वह मसीही है ?

यूहन्ना — 14

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
यीषु पिता के पास जाने का मार्ग	मार्ग, सच्चाई और जीवन	महिमा प्राप्त मसीह के साथ विष्वासियों का संबन्ध	यीषु पिता के पास जाने का मार्ग	विदाई भाशण (13:31—14:31)
14:1—14	14:1—6	14:1—7	14:1—4	14:1—4
			14:5	14:5—7
	पिता का प्रगटीकरण 14:7—11		14:6—7	
		14:8—14	14:8	14:8—21
	उत्तर प्राप्त प्रार्थना 14:12—14		14:9—14	
पवित्रात्मा का वायदा	दूसरे सहायक का वायदा		पवित्रात्मा का वायदा	
14:15—24	14:15—18	14:15—17	14:15—17	
	पिता और पुत्र का	14:18—24	14:18—20	

	अन्तरनिवास			
	14:19—24			
			14:21	
			14:22	14:22—31
	षान्ति का तोहफा		14:23—24	
14:25—31	14:25—31	14:25—31	14:25—26	
			14:27—31क	
			14:31ख	

यूहन्ना 14: 1—31 का पृश्ठभूमि।

क. एक ही साहित्य समूह होने के कारण अध्याय 13—17 तक कोई अध्याय विभाजन नही है। यह स्पश्ट है कि यीषु के चले जाने का कथन ने षिश्यों के अन्दर कई प्रष्नों को उत्भव किया। इसका संदर्भ यीषु के कथन को प्रेरितों के द्वारा गलत समझने के कारण बना।
1. पतरस (13:36)
2. थोमा (14:5)
3. फिलिपुस (14:8)
4. यहूदा (इसकरोति नही) (14:22)
5. कुछ षिश्य (16:17)

ख. ये प्रष्न अभी भी विष्वासियों को मदद करेगें।
1. जो प्रेरित षारिरीक रूप से यीषु के साथ थे वे भी उसे हमेषा समझ नही पाया।
2. इन प्रषनों के उत्तर में यीषु ने कुछ विषेश षब्दों का प्रयोग किया है।

ग. अध्याय 13—17 का साहित्यक संदर्भ ऊपरी कोठरी में प्रभु भोज के रात के वार्तालाप है।

घ. आनेवाला एक ''सहायक'' के बारे में कहते हुए अध्याय 14 का आरम्भ होता है।
1. ऊपरी कोठरी में पवित्रात्मा के बारे में जो चर्चा यीषु ने की है वे यीषु के चले जाने के विशय में जो डर षिश्यो के अन्दर थे उससे संबन्धित हैं।
2. पवित्रात्मा की सेवकोई का चर्चा कम स्तर पर किया गया। पवित्रात्मा की सेवकोई की कई प्रमुख विचारों की चर्चा इस संदर्भ में नही की गई ।
3. पवित्रात्मा के कार्य को (1) सच्चाई का प्रगटकर्ता, और (2) व्यक्तिगत सान्त्वनादाता के रूप में विषेश महत्व दिया गया।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

14:1—7

1.तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो।
2. मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये

जगह तैयार करने जाता हूँ।
3. और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊंगा, कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।
4. और जहाँ मैं जाता हूँ तुम वहाँ का मार्ग जानते हो।
5. थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू कहाँ जाता है? तो मार्ग कैसे जानें?
6. यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।
7. यदि तुम ने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को भी जानते, और अब उसे जानते हो, और उसे देखा भी है।

14:1

''न हो''

अर्थत् जो काम जारी है उसे रोको। ''तुम्हारा ह्नदय को व्याकुल होने से रोको''। यीषु के चले जाने का कथन व्याकुलता का कारण बना।

''मन''

यहाँ बहुवचन का प्रयोग है। यीषु 11 षिश्यों से बात कर रहे है। ''मन'' का इब्रानी प्रयोग संपूर्ण व्यक्ति को दर्षाता हैः हृदय, इच्छा, और जज़्बा (व्यवस्था. 6:5; मत्ती. 22:37)। देखिए **विषेश षीर्शक** : 12:40

'' परमेश्वर पर विश्वास रखते हो
मुझ पर भी विश्वास रखो।''

विष्वास एक जारी रहनेवाला आदत है। इस आयत का व्याकरणाम्तक रीति से संतुलित ढ़ांचा दर्षाता है कि यीषु परमेष्वर के साथ अपना बराबरी का घोशणा करते है। याद रखे कि ये अद्वैतवदी (व्यवस्था. 6:4–6) यहूदी थे पर उन्होंने यीषु के कथन का विषेशता को समझ लिए। सर्वषक्तिमान को जानना एक बात है और मसीही बनना दूसरा बात है। यह आयत उपदेषात्मक विशय पर ध्यान नही देता पर यीषु जो व्यक्ति है उस पर ध्यान देता है।

14:2

'' मेरे पिता के घर में ''

पुराने नियम में ''घर'' षब्द मिलापवाला तम्बू या मन्दिर को दर्षाता है; पर इस संदर्भ में ये स्वर्ग का पारीवारिक आवास स्थान है।

'' रहने के स्थान ''

यूनानी षब्द का अर्थ है ''स्थाई आवास स्थान'' (14:23) व्यर्थ व्यय किए बिना। अर्थात् हर विष्वासी के पास पिता के घर में अपने अपने कमरे होंगे (***टी इ वी, एन जे बी***)।
यह यूनानी मूलषब्द ''बने रहने'' से आया है जो कि यूहन्ना रचित सुसमाचार के प्रमुख विचार है (14:15)। पिता के साथ हमारे निवासस्थान का आरम्भ उसमें बने रहने से होता है।

''यदि''

यह एक भागिक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। वहाँ कई कमरे है। इस षब्द समूह को अनुवाद करना कठीन है।

एन ए एस बी, ''यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता ''
एन के जे वी ''यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता ''
टी इ वी **''मैं तुम से नही कहता जगह नही होती तो''**
एन जे बी **''नही तो मैं कह देता''**
वै. एल. टी. **''और नही है तो मैं ने कहा होता''**
एन. बी.वी. ''यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता ''
डब्लयू. टी. ''यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता ''

14:3

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यीषु ने उनसे कहा कि वो ज्लद अपने पिता के पास जा रहे है, और वो उनके लिए जगह तैयार करेंगे।
यूहन्ना रचित सुसमाचार के ऊपर *युनैइटेड बाइबल सोसाइटी* से प्रकाषित हेल्प फॉर ट्रान्सनेलेटेरस के लेखक न्यूमान एण्ड वैडर कहते है कि इस वाक्यांष को अस्थाई तरीके से ''मेरे जाने के बाद'' ,''जब मैं जाऊंगा'' या ''मेरे जाने से'' समझना चाहिए (पृश्ठ.456)।

'' मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं,''

इसका अर्थ यह नही कि स्वर्ग इस से पहले नही बनाया गया, परन्तु यीषु के जीवन, षिक्षा, और मृत्यु पापी को पवित्र परमेष्वर के पास पहूँचने तथा साथ वास करने का अनुमती देता है। यीषु विष्वासियों से पहले उनका मार्गदर्षक और मार्ग बनानेवाले के तरह जा रहे है (इब्रा. 6:20)।

'' फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊंगा, ''

यह दूसरा आगमन या मृत्यु को दर्षाता है (2कुरि. 5:8; 1थिस्स. 4:13—18)। यीषु के साथ के आमने—सामने का यह संगति यीषु और पिता के बीच की संगति को दर्षाता है (1:1,2)। विष्वासी पिता और यीषु के बीच का घनिश्ठता के सहभागी होंगे (14:23; 17:1)।

यहाँ पर ''स्वीकार'' *(परालम्बानो)* क्रिया का प्रयोग है जिसका अर्थ है ''एक के अन्दर में स्वीकार होना''। यह 1:12 *(लम्बानो)* से भिन्न है। कई बार यह पर्यायवाची है पर इसका त्रुटीहीन अर्थ बताना कठीन है।

''जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो''

जहाँ यीषु है वहाँ स्वर्ग है (17:24)। वास्तव में स्वर्ग त्रीएक परमेष्वर के साथ आमने—सामने की संगति है!

14:4

''तुम मार्ग जानते हो''

यीषु के इस कथन ने थोमा को उसके संदेह को मिटाने का एक मौका दिया। यीषु का उत्तर पुराने नियम में कई बार प्रयोग किए गए तीन षब्दों के द्वारा देते है।

14:6

''मैं मार्ग हूँ''

पुराने नियम में बाइबलीय विष्वास को एक जीवनषैली मार्ग के रूप में कहा जाता है (व्यवस्था. 5:32—33; 31:29; भ.सं. 27:11; यषा. 35:8)। प्रारम्भिक कलीसिया का षीर्शक भी ''मार्ग'' था (प्रेरित. 9:2; 19:9,23; 24:14,22)। यीषु इस बात को विषेश महत्व दे रहे है कि परमेष्वर के पास पहूँचने का एकमात्र मार्ग वो ही था और है। यूहन्ना रचित सुसमाचार का धर्मषास्त्रीय निशकर्श यही है! व्यक्तिगत विष्वास का सबूत है भलेकामो की जीवनषैली (इफि.2:8—10), न कि धार्मिकता का साधन।

''सच्चाई''

यूनानी दर्षनषास्त्र में षब्द ''सच्चाई'' का संकेतार्थ ''सच'' बनाम ''झूठ'' या ''वास्तविकता'' बनाम ''छल'' होता है। हलॉकि ये अरामिक भाशा बोलनेवाले षिश्यों ने समझ लिया कि यीषु पुराने नियम में आधारित होकर बातें कर रहे है जिसका अर्थ है ''विष्वासयोग्यता'' या ''बफ़ादारी'' (भ.सं. 26:3; 86:11; 119:30)। ''सच्चाई'' और ''जीवन'' ''मार्ग'' को निर्धारित करता है। यूहन्ना में कई बार दैवीय कार्य को बताने के लिए भी ''सच्चाई'' का प्रयोग है (1:14; 4:23—24; 8:32; 14:17; 15:26;16:13;17:17,19)। देखिए **विषेश षीर्शकः सच — 6:55; 17:3।**

''जीवन''

पुराने नियम में विष्वासी के विष्वास जीवनषैली को जीवन का मार्ग कहा गया है (भ.सं. 16:11; नीति. 6:23; 10:17)। ये तीनें षब्द विष्वास की जीवनषैली से संबन्धित है जो केवल यीषु मसीह के साथ के व्यक्तिगत संबन्ध से ही उत्पन्न होता है।

'' बिना मेरे द्वारा
कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।''

क्या चौकानेवाला कथन है यह! यह स्पश्ट है कि यीषु ने विष्वास किया कि उसके साथ के व्यक्तिगत संबन्ध के द्वारा ही कोई परमेष्वर को जान सकता है। इसके अलावा ओर कोई चारा नही है। यह कथन सही है या मसीहत झूठ है! कई बातों से यह यूह.10 के समान है।

14:7

''यदि''

हस्तलेखों में इसप्रकार के षर्तीय वाक्यों में अन्दर पाया गया। *युनैइटेड बाइबल सोसाइटी* के यूनानी मूलपाठ इसे पहले दर्जे का षर्त वाक्य समझते है। फिर इसका अनुवाद इस प्रकार होता ''यदि तुम नं मुझे जाना होता तुम जानते हो, तो मेरा पिता को भी जानते , तुम जानते हो।
यह षायद एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य भी है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। यह एक कठीन कथन है क्योंकि हम जानते है प्रेरितों ने उद्धार के लिए यीषु को मसीह के रूप में विष्वास किया। यह नई तथा संपूर्ण सच्चाई को एकदम हजम करना उनके लिए कठीन था। यूहन्ना रचित सुसमाचार विष्वास के कई स्तर के बारे में कहता है। यह संदर्भ द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य को मान्यता प्रदान करती है। आयत 28 में भी समान बात का ध्यान दीजिए।

'' तुम ने मुझे जाना होता,''

यीषु समस्त प्रेरितों को संबोधित कर रहे है (14:9)। षब्द ''जानना'' यहाँ पुराने नियम के समझ से प्रयोग किया गया हैं,जो घनिश्ठ व्यक्तिगत संबन्ध के विशय में कहता है (उत्.4:1; यिर्मा. 1:5)।

'' तो मेरे पिता को भी जानते,''

यीषु को देखने का अर्थ है पिता को देखना (1:14—18; 5:24; 12:44—45; 2कुरि. 4:4; कुलु. 1:15; इब्रा. 1:3)! यीषु अदृष्य परमेष्वर का संपूर्ण प्रकाषन है। कोई भी यीषु को तिरस्कार करके यह दावा नही कर सकता कि वह परमेष्वर को जानता है (1यूह. 5:9—12)।

14:8—14

8. फिलिप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा दे: यही हमारे लिये बहुत है।
9. यीशु ने उस से कहा; हे फिलिप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है: तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा।
10. क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।
11. मेरी ही प्रतीति करो, कि मैं पिता में हूँ; और पिता मुझ में है; नहीं तो कामों ही के कारण मेरी प्रतीति करो।
12. मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूँ वही भी करेगा,

बरन इन से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ।
13. और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।
14. यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।

14:8

" फिलिप्पुस ने उस से कहा,"

फिलिप्पुस मूसा, यषायाह या यहेज़केल के तरह परमेष्वर का दर्षन *(थियोफनी)* पाना चाहता था। यीषु उत्तर देते हूए यह साबित कर रहे है कि वह यीषु को देखने और जानने के द्वारा परमेष्वर को जान और देख चुका है (कुलु. 1:15; इब्रा. 1:3)!

एन ए एस बी, "यही हमारे लिये बहुत है।"
एन के जे वी "यही हमारे लिये पर्याप्त है।"
एन आर एस वी **"हम तृप्त हो जाएंगे।"**
टी इ वी **"हमें इसकी आवष्यकता है।"**
एन जे बी **"तो हम तृप्त हो जाएंगे।"**

फरीसियों के समान इन्हें भी कुछ प्रतिज्ञान चाहिए। हलॉकि विष्वासियों को चाहिए की वे विष्वास से चले न कि दृश्टि से।

14:9

" मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूँ, "

बहुवचन का ध्यान कीजिए। उन सब के सोच के अनुसार ही फिलिप्पुस ने प्रष्न किए।

" जिस ने मुझे देखा है
उस ने पिता को देखा है: "

अर्थात् देख चुका और देखते रहेंगे। यीषु दैवीयता को परिपूर्णरूप से प्रगट करते है (कुलु. 1:15; इब्रा. 1:3)।

14:10

यूनानी व्याकरणात्मक ढाँचा "हाँ" में उत्तर चाहता है।

"तू ... तुम"

पहलावाला एकवचन है और यह फिलिप्पुस की तरफ इषारा करता है। दूसरावाला प्रेरितों के झुण्ड को दर्षाता है (14:7,10)। देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहना 1यूहन्ना. 2:10।

''ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ,
अपनी ओर से नहीं कहता,''

यीषु सब कुछ परमेष्वर के तरफ से कर रहे है (14:24; 5:19,30; 7: 16—18; 8:28; 10:38; 12:49)। यीषु की षिक्षा का हर एक षब्द पिता का ही षब्द था (14:24)।

'' पिता मुझ में रहकर ''

पिता और पुत्र के बीच का इस संगति का विषेश महत्व अध्याय 17 में यीषु के महायाजकीय प्रार्थना में प्रगट किया गया। यह अध्याय 15 में विष्वासियों का मसीह में बने रहने का आधार बनता हैं। यूहन्ना रचित सुसमाचार उद्धार को इस तरह प्रगट करता है कि : (1) उपदेष; (2) संगति; (3) आज्ञाकारिता; और (4) दृढ़ रहना हैं।

14:11

'' प्रतीति करो,''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है (14:1)।
इस आयत के षुरूवात के प्रति कुछ हस्तलेखों में अन्तर है। कुछ प्राचीन यूनानी मूलपाठ (पी66, पी75, आलेफ,डी, एल, डब्लयू) के अनुसार केवल क्रिया ''प्रतीति'' है ''उस'' के बाद(होती), अर्थात् वे यीषु और पिता की एकता की सच्चाई को स्वीकार कर रहे थे। ओर मूलपाठ (ए तथा बी) में ''मुझ में'' का प्रयोग है जो प्रतीति के व्यक्तिगत कारक को बताता है। *युनैइटेड बाइबल सोसाइटी* पहले विकल्प को सही मानते है।

'' नहीं तो कामों ही के कारण
मेरी प्रतीति करो। ''

यीषु उनसे अनुरोध कर रहे है कि वे उसके कामों पर विष्वास करे (5:36; 10:25,38)। उसके काम ने पुराने नियम की भविश्यद्वाणी को पूरा किया। उसके काम इस बात को प्रगट करते है कि वो कौन है! प्रेरितों को भी हमारे समान विष्वास में बढ़ना था।

14:12

'' विश्वास ... वह भी करेगा, ''

विष्वास करना केवल एक मानसिक काम नही है परन्तु कार्यों से केन्द्रित वचन है। '' इन से भी बड़े काम करेगा,'' यह एक भविश्यकाल वाक्य है जिसका अर्थ है ''वह अतिमहान कार्यों को करेंगे। यह षायद निम्नलिखित बातों को दर्षाते होंगे: (1) भौगोलिक स्तर; (2) अन्यजाती सेवा; (3) प्रत्येक विष्वासी के पास पवित्रात्मा का होना। देखिए **विषेश षीर्शक : प्रार्थना, असीमित पर सीमित: 1यूह. 3:22।**

14:13—14

" जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे,
वही मैं करूंगा "

यीषु दावा करते हैं कि वो अपने चरित्र पर आधारित होकर हमारे प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे। प्रेरित. 7:59 में स्तिफानूस यीषु से प्रार्थना करते है। 2कुरि. 12:8 में पौलूस यीषु से प्रार्थना करते हैं। यूहन्ना. 15:16 ओर 16:23 में विष्वासी को पिता से **प्रार्थना करना है।यीषु के नाम से प्रार्थना करने का तात्पर्य यह नही कि अन्त में यीषु के नाम कहें पर उनकी इच्छा और चरित्र पर आधारित प्रार्थना करें।**
बाइबलीय बातों का उपदेषात्मक कथन बनाने से पहले दूसरी समानान्तर आयतों को ढूढ़कर देखने के विशय में यह एक अच्छा उदाहरण है। एक को चाहिए कि वह ''जो कुछ तुम मांगोगे,'' के साथ निम्नलिखित बातों का तालमेल बैठाए: (1) '' मेरे नाम से ''(14:13—14; 15:7,16; 16:23); (2) ''निरन्तर माँगते रहो'' (मत्ती. 7:7—8; लूका. 11:5—13; 18:1—8); (3) ''दो जन एक मन हों'' (मत्ती. 18:19); (4) ''विष्वास से'' (मत्ती. 21:22); (5) ''सन्देह बिना'' (मरकुस. 11:22—24; याकूब. 1:6—7); (6)''बुरी इच्छा से न हों'' (याकूब. 4:2—3); (7) ''आज्ञाओं को मानें'' (1यूह. 3:22); और (8) ''परमेष्वर की इच्छा से'' (मत्ती. 6:10; 1यूह. 5:14—15)।
यीषु का नाम उसका चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है। यह यीषु के मन और ह्रदय को दर्षाने का दूसरा तरीका है। यह वाक्यांष कई बार यूहन्ना रचित सुसमाचार में पाया जाता है (14:13—14,26; 15:16; 16:23—26)। यह बात पक्का है जो प्रार्थना मसीह के आधार पर हो उसका उत्तर अवष्य प्राप्त होता है। एक विष्वासी के जीवन में परमेष्वर यदि बुरा कर सकते हैं तो यह है कि उसकी स्वार्थी प्रार्थनाओं का उत्तर देना। देखिए नोटः 1यूहन्ना.3:22।

विषेश षीर्शकः प्रभावषाली प्रार्थना

क. त्रीएक परमेष्वर के साथ एक का व्यक्तिगत संबन्ध से संबन्धित
1. परमेष्वर की इच्छा से संबन्धित
क. मत्ती. 6:10
ख. 1यूह. 3:22
ग. 1यूह. 5:14—15
2. यीषु में बने रहना — यूह. 15:7

3. यीषु के नाम से प्रार्थना
क. यूह. 14:13,14
ख. यूह. 15:16
ग. यूह. 16:23—24

4. पवित्रात्मा में प्रार्थना
क. इफि. 6:18
ख. यहूदा. 20

ख. एक के व्यक्तिगत लक्ष्य से संबन्धित
1. बिना संषय का
क. मत्ती. 21:22

खं. याकूब. 1:6–7
2. बुरी इच्छा से माँगते – यकूब. 4:3
3. स्वार्थता से माँगना – याकूब. 4:2–3

ग. एक के व्यक्तिगत चुनाव से संबन्धित

1. दृढ़ रहना
   क. लूका. 18:1–8
   ख. कूलू. 4:2
   ग. याकूब. 5:16
2. घर में झगडा – 1पतरस
3. पाप
   क. भ,सं, 66:18
   ख. यषायाह 59:1–2
   ग. यषायाह 64:7

हर प्रार्थना का उत्तर मिलता है, पर हर प्रार्थना प्रभावषाली नहीं होती। प्रार्थना का दो–तरफा संबन्ध है। परमेष्वर यदि बुरा कर सकते है तो यह है कि असंगत प्रार्थनाओं का उत्तर देना। देखिए **विषेश षीर्शकः मध्यस्थता की प्रार्थनाः कुलु. 4:3।**

"यदि"

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

14:15–17

14. यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।
15. यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
16. और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।
17. अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता हैः तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।

14:15

"यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो,

<u>तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।''</u>

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। आज्ञाकारिता बहुत ही प्रमुख है (8:51; 14:23—24; 15:10; 1यूह. 2:3—5; 3:22,24; 5:3; 2यूह.6; लूका. 6:46)। आयत 21,23,24 भी यही सच्चाई पर विषेश महत्व देता है। आज्ञाकारिता सही मनफिराव का सबूत है (याकूब तथा 1यूहन्ना)।

<u>14:16</u>

एन ए एस बी, एन के जे वी, टी इ वी ''एक और सहायक ''
एन आर एस वी ''एक और वकील''
एन जे बी ''एक और मददगार''

षब्द ''एक और'' यूनानी षब्द *अल्लोस* से है जिसका अर्थ है ''एक ही वर्ग का दूसरा''। पवित्रात्मा को ''दूसरा यीषु'' कहते है (जी.कैमप्बेल मोरगन)।

यूनानी भाशा में प्रयोग किया गया दूयरा षब्द है पाराक्लीटॉस् जिसे 1यूह. 2:1 में मध्यस्थ और यूह. 14:26; 16:7—14 में पवित्रात्मा के लिए प्रयोग किया है। इसका अर्थ है कानूनी स्तर पे ''सहायता करने के लिए बुलाया गया''। इसलिए इस षब्द को अनुवाद करते समय षब्द ''वकील'' प्रयोग में लाते है। इस यूनानी मूलषब्द का एक ओर रूप ''सान्त्वना'' (पाराकालियो) 2कुरि.1:3:11 में पिता के लिए प्रयोग किया है।

<u>विषेश षीर्शक : यीषु और पवित्र आत्मा</u>

पवित्र आत्मा और पुत्र के कार्य में मेल जोल है। जी कॉम्पबेल मॉर्गन के अनुसार आत्मा के लिए अच्छा नाम ''दूसरे यीषु'' होगा। पुत्र और आत्मा का षीर्शक और कार्यों की निम्नलिखित रूपरेखा को देखिए।

1) आत्मा को ''मसीह की आत्मा'' कहा गया (रोमियों.8:9; 2कुरि.3:17; गला.4:6; 1पत.1:11)

2) दोनो को एक जैसे षब्दों से पुकारा गया

(क) <u>सत्य</u>

(1) यीषु (यूह.14:6)

(2) पवित्र आत्मा (यूह.14:17; 16:13)

(ख) <u>वकील या सहायक</u>

(1) यीषु (1यूह.2:1)

(2) पवित्र आत्मा (यूह.14:16, 26; 15:26; 16:7)

(ग) <u>पवित्र</u>

(1) यीषु (लूका.1:35; 14:26)

(2) पवित्र आत्मा (लूका.1:35)

3) तीनों विष्वासी के अन्दर वास करते हैं

(क) यीषु (मत्ती.28:20; यूह.14:20, 23; 15:4–5; रोमियों.8:10; 2कुरि.13:5; गला.2:20; इफि.3:17; कुलु.1:27)

(ख) पवित्र आत्मा (यूह.14:16–17; रोमियों.8:9, 11; 1कुरि.3:16; 6:19; 2तीमु.1:14)

(ग) पिता भी वास करते हैं (यूह.14:23; 2कुरि.6:16)

'' कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। ''

पवित्रात्मा के लिए कई विभक्ति प्रत्यय का प्रयोग हुआ हैः (1) ''मेटा'' (14:16) अर्थात् ''के साथ''; (2) ''पारा'' (14:17) अर्थात् ''के द्वारा''; (3) ''एन'' (14:17) अर्थात् ''में''। पवित्रात्मा हमारे साथ है, हमारे द्वारा है और हम में है। विष्वासी में यीषु के जीवन को प्रदर्षित करना पवित्रात्मा का कार्य है (14: 16–17,26; 16:11)।
पवित्रात्मा के लिए षब्द ''वह'' प्रयोग हुआ है। यह इस बात को प्रगट करता है कि वह एक व्यक्ति है (14:17,26; 15:26)। वह त्रीएकता का तीसरा व्यक्ति है। षब्द त्रीएकता बाइबलीय षब्द नही है, परन्तु यीषु दैवीय है तथा पवित्रात्मा एक व्यक्ति है तो किसी न किसी प्रकार का त्री–एकता सम्मिलित दिखाई दे रही है। परमेष्वर एक दैवीय अस्तित्व है, परन्तु तीन स्थाई, व्यक्तिगत प्रगटीकरण है (मत्ती 3:16–17; 28:19; प्रेरित. 2:33–34; रोमि. 8:9–10; 1कुरि. 12:4–6; 2कुरि. 1:21–22; 13:14; इफि. 1:3–14; 2:18; 4:4–6; तीतुस. 3:4–6; 1पत. 1:2)।

14:17

'' सत्य का आत्मा,''

षब्द ''सत्य'' का अर्थ 14:6 के समान है (15:26; 16:13; 1यूह.4:6)। यह वाक्यांष पवित्रात्मा को इस प्रकार दर्षाता है कि वह (1) दैवीय है या (2) पिता की दैवीयता को प्रगट करता है। देखिए **विषेश षीर्शक 6:55 तथा 17:3।**

'' जिसे ''

यह षब्द ''आत्मा'' (न्यूमा) के सथ सहमत होता है (14:26; 15:26; 16:7,8,13,14)। पवित्रात्मा स्त्री या पुरुश नहीं है; वह आत्मा है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वह एक विषिश्ट व्यक्तित्व है (इफि. 4:3; 1थिस्स. 5:19)।

" संसार ग्रहण नहीं कर सकता,"

मसीह पर के विष्वास के द्वारा ही पवित्रात्मा उपयुक्त हो सकती है (1:10–12)। विष्वासियों की हर आवष्यकता का उपाय वह करता है (रोमि. 8:1–11)। अविष्वासी संसार उसे समझ नहीं सकता ओर आत्मिक बातों की सराहना नही कर सकते (1कुरि. 2:14)।

" जानता है ... जानते हो, "

यह षायद यूहन्ना की एक और दोहरावाद षैली है। इब्रानी संकेतार्थ है घनिश्ठ, व्यक्तिगत संबन्ध (उत. 4:1; यिर्मा. 1:5)। यूनानी संकेतार्थ है जानकारी। सुसमाचार व्यक्तिगत तथा संज्ञात्मक दोनों है।

"वह तुम्हारे साथ रहता है,"

यूहन्ना रचित सुसमाचार का कुंजी विचार है साथ रहना या बना रहना। देखिए **विषेश षीर्शक** : 1यूह. 2:10। पिता पुत्र में रहता है; पवित्रात्मा विष्वासियों में रहती है, और विष्वासी पुत्र में रहते हैं। साथ रहना एक वर्तमानकाल प्रक्रिया है, न कोई वैकारिक प्रत्युत्तर या न कोई अकेला निर्णय।

" और वह तुम में होगा।"

इस प्रकार इसे समझ सकते है कि तुम्हारे बीच में (बहुवचन, ***एन आर एस वी***) या तुम में (बहुवचन, ***एन ए एस बी, एन के जे वी ,टी इ वी ,और एन जे बी***)। विष्वासी में परमेष्वर का अन्दरनिवास एक अत्भुत वायदा है। नया नियम सिखाता है कि त्रीएकता के तीनों व्यक्ति विष्वासी के अन्दर वास करते है।

क. यीषु (मत्ती. 28:20; यूह. 1420,23; 15:4–5; रोमि. 8:10; 2कुरि. 13:5; गला. 2:20; इफि. 3:17; कुलु. 1:27)।

ख. पवित्रात्मा (14:16–17; रोमि. 8:11; 1कुरि. 3:16; 6:19; 2 तिमु. 1:14)।

ग. पिता (14:23; 2कुरि. 6:16)।

14:18–24

18. मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ।
19. और थोड़ी देर रह गई है कि संसार मुझे न देखेगा, परन्तु तुम मुझे देखोगे, इसलिये कि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।
20. उस दिन तुम जानोगे, कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में।
21. जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, उस से मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा।
22. उस यहूदा ने जो इस्करियोती न था, उस से कहा, हे प्रभु, क्या हुआ की तू अपने आप को हम पर प्रगट किया चाहता है, और संसार पर नहीं।
23. यीशु ने उस को उत्तर दिया, यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ वास करेंगे।
24. जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं वरन

पिता का है, जिस ने मुझे भेजा।।

14:18

'' मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ।''

ऊपरी कोठरी में फसह के बाद, पहले रविवार में, पुनरुत्थान के बाद के पहला प्रत्यक्षता के द्वारा यीषु ने अपने षिश्यों के साथ किए हुए प्रत्येक वायदा को पूरा किया। कुछ टिप्पणीकर्ता इसे पेन्तुकुस्त के दिन में पवित्रात्मा के उतर आने की ओर दर्षाते है।

14:19

'' थोड़ी देर रह गई है कि संसार मुझे न देखेगा,
परन्तु तुम मुझे देखोगे, ''

आयत 20 के अनुसार यह यीषु के पुनरुत्थान के बाद के प्रत्यक्षता को बताता है। यह ही वह कथन है जिससे यहूदा ने दूसरा प्रषन किया। षिश्य अभी भी मसीह द्वारा स्थापित भौमिक साम्राज्य की प्रतीक्षा में है इसलिए जब यीषु ने कहा कि '' संसार मुझे न देखेगा,'' तो वे असमंजिस में पड़ गए। आयत 23 तथा 24 में यहूदा के प्रष्न का उत्तर कहते है कि वो प्रत्येक मसीही के जीवन में स्वयं की महिमा प्रगट करेंगे जिसके द्वारा संसार उसे देखेगा।

'' इसलिये कि मैं जीवित हूँ,
तुम भी जीवित रहोगे।''

यीषु के पुनरुत्थान परमेष्वर का जीवन देने का सामर्थ और इच्छा को प्रदर्षित करता है (रोमि. 8:9—11; 1कुरि. 15)।

14:20

'' उस दिन ''

यह वाक्यांष भविश्यकाल संबन्धि समझ से प्रयोग किया गया, परन्तु यहाँ यह पुनरुत्थान के बाद की प्रत्यक्षता और पेन्तुकुस्त के दिन में पवित्रात्मा का उतर आना है।

'' तुम जानोगे,''

कई बार ''जानना'' इब्रानी संकेतार्थ संगती, घनिश्ठ संबन्ध की ओर इषारा करती है, परन्तु यहाँ *(होती)* के साथ आया है इसलिए यह परिबोध है। जैसे षब्द ''प्रतीति'' के दो अर्थ है। सुसमाचार को प्रगट करने के लिए यूहन्ना इस प्रकार के षब्दों का उपयोग करते हैं। विष्वासी उसे जानता है (उस पर विष्वास करता है), साथ ही साथ उसके बारे में उन सच्चाईयों को भी जानता है (उसे विष्वास करो)।

" मैं अपने पिता में हूँ,
और तुम मुझ में,
और मैं तुम में। "

यूहन्ना कई बार पिता और पुत्र की एकता को विषेश महत्व देता है (10:38; 14:10–11; 17:21–23)। वह इस बात को भी जोड रहा है कि जैसे यीषु और पिता आपस में जुडे है ठीक वैसे विष्वासी और यीषु भी।

14:21

" जिस के पास मेरी आज्ञा है,
और वह उन्हें मानता है,"

आज्ञाकारिता अति आवष्यक है (15:10; लूका.6:46; 1यूह. 5:3; 2यूह.6)। यह सही मनफिराव का सबूत है (14:23)।
प्रेरित यहूदी थे और उनके लेखो में मुहावरों का प्रयोग है। आराधना के समय में षुरू करनेवाली प्रार्थना को *षेमा* कहते है (व्यवस्था. 6:4,5) अर्थात् ऐसे सुनो कि कर सकें। यूहन्ना का भी तात्पर्य यही है (याकूब. 2:14–26)।

" और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा।"

यह षायद इस बात की ओर इषारा कर रहे होंगे: (1) यीषु का पुनरुत्थान के बाद के प्रत्यक्षता ; या (2) पवित्रात्मा का भेजा जाना ताकि वह विष्वासियों में मसीह को प्रगट और रूपीकृत करें (14:26; रोमि. 8:29; गला. 4:19)।

यीषु ने विष्वास किया और साबित किया कि उन्होंने पिता (1) का प्रतिनिधित्व किया; (2) के लिए बातें की; और (3) को प्रगट किया। विष्वासियों के लिए परमेष्वर और उसका उद्देष्य का एक मात्र श्रोत है यह आधिकारिक वचन जो यीषु के द्वारा कहे गए और प्ररितों द्वारा लिखे गए । विष्वासी यीषु के अधिकार और वचन को परमाधिकार के रूप में साबित करता है ; विचार, अनुभव, परम्परा मददगार है परन्तु परम या अन्तिम नहीं है। पवित्र आत्मा और पुत्र के कार्य में मेल जोल है। जी कॉम्पबेल मॉर्गन के अनुसार आत्मा के लिए अच्छा नाम "दूसरे यीषु" होगा। पुत्र और आत्मा का षीर्शक और कार्यों की निम्नलिखित रूपरेखा को देखिए।

1) आत्मा को "मसीह की आत्मा" कहा गया (रोमियों.8:9; 2कुरि.3:17; गला.4:6; 1पत.1:11)

2) दोनो को एक जैसे षब्दों से पुकारा गया

(क) सत्य

(1) यीषु (यूह.14:6)

(2) पवित्र आत्मा (यूह.14:17; 16:13)

(ख) वकील या सहायक

(1) यीषु (1यूह.2:1)

(2) पवित्र आत्मा (यूह.14:16, 26; 15:26; 16:7)

3) तीनों विष्वासी के अन्दर वास करते हैं

(क) यीषु (मत्ती.28:20; यूह.14:20, 23; 15:4–5; रोमियों.8:10; 2कुरि.13:5; गला.2:20; इफि.3:17; कुलु.1:27)

(ख) पवित्र आत्मा (यूह.14:16–17; रोमियों.8:9, 11; 1कुरि.3:16; 6:19; 2तीमु.1:14)

(ग) पिता भी वास करते हैं (यूह.14:23; 2कुरि.6:16)

14:22

देखिए नोटः 14:19

''यहूदा जो इस्करियोती न था,''

तद्दै इसका दूसरा नाम है (मत्ती. 10:3; मरकुस.3:18)।

14:23

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यीषु के प्रति षिश्यों का प्रेम एक दूसरे के प्रति उनके प्रेम से प्रगट हो जाएगा!

14:25–31

25. ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही।
26. परन्तु सहायक अर्थात् पवित्रा आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।
27. मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देताः तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।
28. तुम ने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आता हूँः यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूँ क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है।
29. और मैं ने अब इस के होने के पहले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो।
30. मैं अब से तुम्हारे साथ और बहुत बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं।
31. परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूँ, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूँः उठो, यहां से चलें।।

<u>*14:25*</u>

<u>*''ये बातें ''*</u>

यह ऊपरी कोठरी का षिक्षा की ओर इषारा करता है (15:11; 16:1,4,6,25,33)

<u>*14:26*</u>

<u>*'' पवित्रा आत्मा ''*</u>

यूहन्ना रचित सुसमाचार में त्रीएकता के यह तीसरा षीर्शक केवल यहाँ और 1:33 में पाया जाता है। हलाँकि यूहन्ना रचित सुसमाचार में उसे कई अन्य नामों से पुकारा गया है (पाराक्लीटे, सत्य की आत्मा, अत्मा)। नए नियम में कई वचन है जहाँ आत्मा के लिए व्यक्तिगत षब्दों का प्रयोग किया है (14:26; 15:26; 16:7–15; मरकुस. 3:29; लूका. 12:12;) और भी वचन है जहाँ यूनानी में *न्यूमा* षब्द का प्रयोग है (14:17; रोमि. 8:26)। इस बिन्दु में त्रीएकता के विशय में एक सामान्य विचार– ष्ब्द ''त्रीएकता'' एक बाइबलीय षब्द नही है, परन्तु कई वचनो में सच्चे परमेष्वर के तीनों व्यक्तिगत प्रग्टीकरण हमें देखने को मिलते है ()। यदि यीषु दैवीय है और पवित्रात्मा व्यक्ति है, तथा धर्मषास्त्रीय ढ़ंग से एक परमेष्वर है (व्यवस्था. 6:4–6) हम त्री–एकता की ओर खींचे चले जा रहे है, जो प्रगतिषील प्रगटीकरण नही है पर अनन्त व्यक्ति है।

<u>*विषेश षीर्शक : त्रिएकता*</u>

त्रिएकता के तीनों व्यक्तियों के कार्यों को देखिए। षब्द ''त्रिएकता'' बाइबल में नहीं है, इस षब्द का उपयोग तेर्तूलियन ने किया पर विचारधारा बाइबल के अन्दर बहुत ही स्पश्ट है।

क. सुसमाचार

1) मत्ती.3:16–17; 28:19 (और समान आयतें)

2) यूह.14:26

ख. प्रेरितों के काम

प्रेरित.2:32, 33, 38, 39

ग. पौलुस

1) रोमियों.1:4, 5; 5:1, 5; 8:1–4, 8–10

2) 1कुरि.2:8–10; 12:4–6

3) 2कुरि.1:21; 13:14

4) गला.4:4–6

5) इफि.1:3–14, 17; 2:18; 3:14–17; 4:4–6

6) 1थिस्स.1:2–5

7) 2थिस्स.2:13

8) तीत.3:4–6

घ. पतरस

1पत.1:2

ङ. यहूदा

यहू.1:20–21

इसके बारे में पुराने नियम में भी बताया गया है।

क. परमेष्वर के लिए बहुवचन का प्रयोग

1) नाम *''इलोहिम''* बहुवचन है परन्तु परमेष्वर के लिए जब भी इसे प्रयोग किया गया तब एक वचन क्रिया का प्रयोग किया गया।

2) उत्पत्ति में *''हम''* षब्द का प्रयोग 1:26, 27; 3:22; 11:7 किया गया।

3) व्यव.6:4 में *''एक''* का प्रयोग बहुवचन है (जैसे कि उत्प.2:24, यहे.37:17 में है)।

ख. ईष्वरीयता के प्रतिनिधि प्रभु के दूत थे

1) उत्प.16:7–13; 22:11–15; 31:11, 13; 48:15–16

2) निर्ग.3:2, 4; 13:21; 14:19

3) न्या.2:1; 6:22, 23; 13:3–22

4) जक.3:1–2

ग. परमेष्वर और पवित्र आत्मा अलग अलग हैं

उत्प.1:1–2; भ.सं.104:30; यषा.63:9–11; यहे.37:13–14

घ. परमेष्वर *(यहोवा)* और मसीहा *(अडोन)* अलग अलग हैं

भ.सं.45:6–7; 110:1; जक.2:8–11; 10:9–12

ङ. मसीह और पवित्र आत्मा अलग अलग हैं

जक.12:10

च. यषा.48:16; 61:1 में इन तीनों का उल्लेख है।

यीषु की ईष्वरीयता और पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व षुरूवाती अद्वैतवादी, और नियमवद्ध विष्वासियों के लिए समस्याऐं उत्पन्न कर दीं।

1) तेर्तूलियन ने पुत्र को पिता से छोटा प्रगट किया।

2) ऑरिगन ने पुत्र और पवित्र आत्मा के भाव को पिता से छोटा प्रगट किया।

3) एरियस ने पुत्र और पवित्र आत्मा के ईष्वरत्व को नकारा।

4) एक राजा विष्वास में विष्वास किया जाता है कि परमेष्वर उत्तराधिकारी के रूप में अवतार लेते हैं।

बाइबलीय सामग्री के आधार पर त्रिएकता ने ऐतिहासिक रूप से बढ़ौतरी प्राप्त की।

क. निकीया की सभा ने 325 ई0 में पिता की बराबरी में यीषु को परिपूर्ण ईष्वरीयता की मान्यता दी।

ख. कन्सतेनतिनोपल की सभा ने 381 ई0 में पिता और पुत्र की बराबरी में पवित्र आत्मा को परिपूर्ण ईष्वरीयता तथा व्यक्तित्व की मान्यता दी।

ग. *डे ट्रीनीटेट* में अगस्तिन ने त्रिएकता के उपदेष का विवरण किया है।

यहाँ पर अवष्य ही रहस्यमय बात है। परन्तु नया नियम एक ईष्वरीय भाव की मान्यता तीन अलग अलग व्यक्तिगत प्रगटीकरण में देता है।

'' जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा,''

प्रारम्भिक (चौथी षताब्दी के) कलीसिया में एक बडा संघर्श था कि पवित्रात्मा पिता से आया (3:34; प्रेरित. 2:33) या पुत्र से (15:26; 16:7; लूका. 24:49)। एरियुस और अथानेसियुयस के बीच का तर्क संपूर्ण और अनन्त दैवीयता तथा पिता परमेष्वर और पुत्र यीषु मसीह के बीच का बराबरी के विशय में था।

'' तुम्हें सब बातें सिखाएगा,''

यह 'सक्षम बनाएगा' होना चाहिए। पवित्रात्मा विष्वसी को हर बातों के विशय में नही सिखाएगी, परन्तु आत्मिक सच्चाई, विषेश रूप से यीषु के काम और व्यक्ति, सुसमाचाार के बारे में सिखाएगी।

'' और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है,
वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।''

पवित्रात्मा का उद्देष्य है कि (1) मनुश्य को पाप के बारे में निरुत्तर करें; (2) उन्हें मसीह में ले आए; (3) मसीह में बपतिस्मा दें; (4) उनके अन्दर मसीह को उत्पादित करें (16:7–15)। और वह जो कुछ यीषु ने प्रेरितों से कहा है, उन सबका स्मरण कराएगा और अर्थ को भी स्पश्ट कराएगा जिससे वे उन बातों को पवित्र षास्त्र में उल्लेखित कर सकेंगे। पुनरुत्थान के बाद यीषु ने स्वयं प्रेरितों को सिखाया कि पुराने नियम की वे बातें किस प्रकार उस से संबन्धित है और उसे किस प्रकार पूरा किया गया (लूका. 24:13)।

14:27

'' मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ,
अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ;''

विष्वासियों की षान्ति परीस्थितियों पर आधारित नही है, पर उसके वायदे और उपस्थिति पर आधारित है (16:33; फिलि. 4:7; कुलु.3:15)।
''षान्ति'' का प्रयोग दोनों सकर्मक समझ में, परमेष्वर के साथ पुनःप्रतिश्ठा में आना, कर्तापरक समझ में, मुषकिल परीस्थितियों में सुरक्षा का अनुभव या दृढ़ खडे रहना, हुआ है। यह यहूदी अभिवादन ''षालोम'' की ओर इषारा करता है जिसका अर्थ है समस्याओं की अनुपस्थिति और सन्तुश्टता की उपस्थिति (20:19,21,26; 3यूह. 14)।

विषेश षीर्शकः मसीही और षान्ति

1. परिचय

क. बाइबल के अन्दर, हमारे विष्वास और अभ्यास का एक मात्र श्रोत, षान्ति के ऊपर कोई निर्णायक वचन नही है। इसका प्रस्तुति में कई बार यह असत्याभास हुआ है। षान्ति के प्रति पुराने नियम की संकेतात्मक पहूँच सैन्य–विशयक है। नए नियम ने इसे ज्योति और अन्धकार जैसे आत्मिक षब्दों द्वारा प्रगट किया है।

ख. बाइबलीय विष्वास और भूतकाल और वर्तमानकाल के विष्व धर्म ने ऐसा एक सुनहरे समय को ढूंढ़ा और प्रतीक्षा कर रहा है जो संघर्श विमुक्त है।

1. यषा. 252–4; 11:6–9; 32:15–18; 51:3; होषै. 2:18; मीका. 4:3
2. बाइबलीय विष्वास मसीह का व्यक्तिगत अभिकरण का नबूवत करती है।

ग. हम कैसे इस संघर्श भरे संसार में जीएंगे ? मध्य षताब्दी और प्रेरितों के मृम्यु के बीच में क्रमानुसार तीन बुनियादी प्रत्युत्तर विकसित हुए।

1. षान्तिवाद – यह रोमी सेना दल के प्रति प्रारम्भिक कलीसिया की रवैया था।
2. धार्मिक युद्ध कुस्तनतीनोस के मनफिराव के बाद (313 ई0) ''मसीही राज्य'' के समान कलीसिया सफल कुसंस्कृत सैनिक आक्रमण के प्रति सैनिक समर्थन सुसंगठित करने लगे। यह एक पारंपरिक यूनानी पदवी थी। इस पदवी को आम्ब्रोस ने व्यक्त किया और अगस्टिन के द्वारा विकसित किया गया।
3. क्रूसेढ़ जो कि पुराने नियम के पवित्र युद्ध के विचारधारा के समान है। इसका विकास मध्य

षताब्दियों में पवित्र भूमि और प्राचीन मसीही इलाके में मुसलमानों के आक्रमण के प्रत्युत्तर में किया गया। यह किसी राश्ट्र के तरफ से नही था पर कलीसिया के तरफ से था।

4. ये तीनों विचाधाराएं इस पतित संसार में मसीहियों को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए उस मसीही प्रसंग में विकसित हुई हैं। प्रत्येक विचारधारा कुछ बाइबल अनुच्छेदों को लेकर बनाई और षेश वचनों को छोड दिया गया। षान्तिवाद संसार से दूर रहने का प्रयास किया गया। धार्मिक युद्ध ने बुरे संसार को अपने आधीन करने का प्रयास किया (मार्टिन लूथर)। क्रूसेढ़ ने इस पतित संसार पर हमले करने की प्रयास किया ताकि वे षासन कर सकें।
5. रॉनालड एच. बेयीनटन, अपने पुस्तक में, अबिंग्टन द्वारा प्रकाषित क्रिस्टियन एटीटयूडस् टुवार्ड वॉर एण्ड पीस् पृश्ठ. 15 में कहते है :

"जागृति ने धार्मिक घोर युद्ध को रोका जिस वजह से ये तीनों विचारधारा अप्रत्यक्ष होगई।"

घ. षान्ति का यथार्थ परिभाशा अब भी असमंजिस में है।

1. यूनानीयों के लिए यह सुबोधता और व्यवस्था के एक समाज की ओर इषारा करता है।
2. रोमियों के लिए राश्ट्र की ताकत से प्राप्त किए गए संघर्श विराम है।
3. इब्रानियों के लिए यह यहोवा के प्रति मनुश्य का प्रत्युत्तर के कारण उसकी तरफ से मिला हुआ एक तोहफा है। साधारण रूप से इसे कृशी–संबन्धि षब्द कहा जाता है (व्यवस्था. 27–28)। इस में न केवल ऐष्वर्य दैवीय परीपालन और सुरक्षा भी सम्मिलित है।

2. बाइबलीय सामग्री।

क. पुराने नियम।

1. पवित्र युद्ध पुराने नियम का एक मूलभूत विचार है। निर्ग. 20:13 तथा व्यवस्था. 5:17 में उल्लेखित वाक्यांष "तुम हत्या नही करना" पहले से सोच समझकर किए हुए खून को दर्षाता है, युद्ध या दुर्घटनावष हुई हत्या के बारे में नहीं। यहोवा को अपनी लोगों के तरफ से एक योद्धा के समान हम पाते हैं (यहोषू – न्यायीयों तथा यषा. 59:17, इफि. 6:14)
2. परमेष्वर अपने रास्ते से भटक गए लोगों को दण्ड देने के लिए युद्ध को एक जरिया के समान उपयोग करते है। अष्षूर इस्राएल को बन्धुवाई में ले जाता है (722 ई0 पू0); बबूल यहूदा को बन्धुवाई में ले जाता है (586 ई0 पू0)।

ख. नया नियम

1. सुसमाचारों में सैनिक को बिना दण्ड के कहा गया है। रोमी "सरदारों" को हर तरफ से कई बार कुलीन बताया गया।
2. विष्वासी सैनिकों को अपना पेषा छोड़ने के लिए नही कहा गया (प्रारम्भिक कलीसिया)
3. सामूहिक बुराई के प्रति राजनैतिक सिद्धान्त या कार्यों के बारे में नए नियम में अधिक विवरणात्मक उत्तर नही पाए जाते है,परन्तु आत्मिक छुटकारे के विश्य में है। ध्यान भोतिक युद्धों में नहीं है परन्तु आत्मिक युद्ध जो ज्योति और अन्धकार के बीच , भलाई और बुराई के बीच, प्रेम और नफरत के बीच, परमेष्वर और षैतान के बीच है (इफि. 6:10–17)।
4. षान्ति सांसारिक समस्याओं के मध्य में हृदय का एक नजरिया है। यह मसीह के साथ हमारे संबन्ध से जुड़ा है (रोमि. 5:1; यूह. 14:27)। मत्ती 5:9 का "मेल करानेवाले" कोई राजनैतिज्ञ नहीं है, पर सुसमाचार प्रचार करनेवाले है! कलीसिया जीवन संगती से रची हुई होनी चाहिए न कि वैर से, यह कलीसिया के अन्दर और इस खोए हुआ संसार में प्रगट होना चाहिए।

'' तुम्हारा मन न घबराए''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है अर्थात् जो कार्य प्रगति में है उसे रोको (14:1)।

14:28

''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते,''

आयत 7 के समान यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। यह अच्छा होता कि यीषु पिता के पास जाते और पवित्रात्मा को भेजते, परन्तु वे इस बात को सही से नही समझेंगे।

'' क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। ''

यह पुत्र की असमानता को बतानेवाला कथन नही है, परन्तु मनुश्य के उद्धार के काम के प्रति जो कार्य है उसे प्रगट करनेवाला एक कथन है (10:29—30)। पुत्र की अधीनता कुछ ही समय के लिए थी (उसका पार्थिव जीवन), उसके धरती पर रहते समय त्रीएक परमेष्वर के प्रकाषन और छुटकारे की योजना को पूरा किया (17:4—5; फिलि. 2:6—11)। हलॉकि पिता के द्वारा भेजे जाने के कारण प्राथमिकता पिता को मिलती है (13:16; 1कुरि. 15:27—28; इफि. 1:3—14)।

14:29

'' और मैं ने अब इस के होने के पहले
तुम से कह दिया है,''

यह उनके विष्वास की प्रौढ़ता के लिए था (13:19; 16:4)।

14:30

एन ए एस बी, ''संसार का सरदार ''
एन के जे वी , एन आर एस वी , टी इ वी '' इस संसार का सरदार ''
एन जे बी '' इस संसार का राजकुमार ''
यह षैतान की ओर इषारा करता है जिसका काम और स्थान इस संसार में है (12:31; इफि. 2:2; 2कुरि. 4:4)। षायद यीषु ने यहूदा का आना षैतान के आने के समान देखा (13:27)।

एन ए एस बी, एन के जे वी , एन आर एस वी , टी इ वी ''मुझ में उसका कुछ नही''

एन जे बी ''मुझ में उसका अधिकार नही''

अर्थात् यीषु के ऊपर दोश लगाने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है, कोई अधिकार नही, और कुछ भी एकसा नही है।
जेम्स मोफत का अनुवाद ''मुझ में उसकी पकड़ नही''
विलियम एफ.बेक का अनुवाद ''मुझ में उसका दावा नही''
न्यू इंगलिष बाइबल ''मुझ में उसकी न्याय संगत नही''

टी.सी.एन.टी. अनुवाद ''मुझ में उसकी कोई समानता नही''

14:31

''परन्तु यह इसलिये होता है कि संसार जाने''

षैतान परमेष्वर की इच्छा के दायरे में है मानवजाती के छुटकारे के काम के लिए उसे मजबूर होना पडा।

'' उठो, यहां से चलें।''

यह बहुत ही कठीन वाक्यांष है क्योंकि यह मत्ती और मरकुस.में भी हैं गतसमना की वाटिका में जैसे यहूदा एक पलटन सैनिकों के साथ यीषु के पास पहुँचता है। यह किसलिए ऊपरी कोठरी के प्रसंग (13–17) में जोड है उसकी जानकारी नहीं है। षायद यीषु ऊपरी कोठरी छोड़ा और अब वो गतसमना की वाटिका के मार्ग में उन्हें सीखाते हुए आगे बढ़ रहे हैं (18:1)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. 14:1 के आधर पर ईष्वरवाद, दो मुख्य ईष्वरवाद और मसीहत का अन्तर क्या है ?
2. आयत 5 में पाई गई तीनों सज्ञा की पुराने नियम में पृश्ठभूमि क्या है ?
3. क्या कोई केवल आयत 13 में आश्रित होकर प्रार्थना का धर्मषास्त्र बना सकता है ?
4. पवित्रात्मा का मुख्य उद्देष्य क्या है ? (दोनों उद्धार प्राप्त तथा खांए हुओं के लिए)
5. क्या षैतान परमेष्वर की इच्छा की अधीनता में है ?

यूहन्ना – 15

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
यीषु सच्ची दाखलता	सच्ची दाखलता		यीषु सच्ची दाखलता	सच्ची दाखलता
15:1–10	15:1–18	15:1–11	15:1–4	15:1–17
	प्रेम और आनन्द सिद्ध हुआ		15:5–10	
	15:9–17			
15:11–17			15:11–17	
		15:12–17		
संसार के वैर	संसार के वैर		संसार के वैर	संसार और षिश्य
15:18–16:4क				15:18–16:4क
15:18–25	15:18–25	15:18–25	15:18–25	
	होनेवाला इनकार			
15:26–16:4क	15:26–16:4	15:26–27	15:26–16:4क	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड़ सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 15:1–27

क. यह एक अद्भुत तथा परेषान करनेवाला अनुच्छेद है। यह विष्वासियों को उत्साह और फलदायक होने का वायदा प्रदान करता है, ओर इसमें चेतावनी भी है। इस विशय पर तर्क –वितर्क करने में धर्मषास्त्रीय परम्पराओं को मुष्किल महसूस होती है। मैं अपनी पसंदीदा टिप्पणीकर्ता एफ.एफ. ब्रूस की पुस्तक आनस्वेर्स टू क्यॉस्टिनस से उद्धृत करना चाहता हूँ।

> ''यूहन्ना. 15:4,6 के ''मुझमें वास किए बिना'' और ''यदि कोई मुझमें बना न रहे'' का क्या तात्पर्य है ? क्या मसीह में बिना बने रहना संभव है ?
> ऐसा अनुच्छेद स्वयं कठीन नहीं है। कठीनाई तब आती है जब हम उसे धर्मषास्त्र की नींव के रूप में प्रयोग करने की बजाय अपने ही एक धर्मषास्त्र बनाने का प्रयास करते हैं। जब यीषु उन से बातें कर रहे थे तो उसी घड़ी में उनके पास बने न रहने के प्रति एक ताजा उदाहरण है– यहूदा इसकरोती, जो अभी उन्हें छोड़कर गया। यहूदा भी अपने संगी लोगो के समान ही चुने गए थे (लूका. 6:13; यूह. 6:70); यीषु के साथ का वास ऐसी किसी बात उनके जीवन में नही लाए जो उसके लिए पही था। विष्वासत्याग के खतरे के विशय में बतानेवाले अनुच्छेदों को हल्का करने के लिए संतों के दृढ़ रहने के विशय में बतानेवाले अनुच्छेदों का गलत उपयोग नही करना चाहिए।''(पृश्ठ. 71–72)

ख. यह हमें आष्चर्यचकित करेंगे कि वर्तमानकाल वाक्यों के बदले में कितने अनिषचित भूतकाल वाक्यों का प्रयोग किया गया है। ऐसा लगता है कि यह ऐसा इसलिए किया गया कि एक के जीवन को संपूर्ण रीति से देखा जाए।

ग. अध्याय 15 का अनुच्छेद विच्छेद आसान नहीं है क्योंकि 1यूहन्ना के समान षैली दोहराई गई है।

घ. नए नियम में षब्द ''वास करना'' या ''बने रहना'' *(मेनो)* 112 बार उल्लेखित है। 40 बार यह यूहन्ना रचित सुसमाचार में है और 26 बार उसके अपने पत्री में भी है। यूहन्ना के लिए यह एक प्रमुख धर्मषास्त्रीय षब्द है। हलॉकि अध्याय 15 उसमें बने रहने के यीषु के विषेश उद्देष्य को प्रगट करता है, पर यूहन्ना में इस षब्द का काफी गहरा अर्थ है।

1. व्यवस्था सदा के लिए बनी रहती है (मत्ती. 5:17—18) इसलिए मसीह भी (12:34)।
2. इब्रानियों की पत्री प्रकाषन के एक नए वाहन के बारे में कहते हैं, किसी दास के द्वारा नही वरन साथ वास करनेवाले पुत्र के द्वारा (इब्रा. 1:1—3; इसलिए यूह. 8:35)।
3. यीषु ने कहा जो बने रहते है उनके लिए भोजन का प्रावधान है (6:27) और जो बना रहता है वह फल लाता है (15:16)।ये दोनों रूपक एक ही सच्चाई को प्रगट करता है,मसीह के प्रति हमारी आवष्यकताः (1) प्राथमिक तथा (2) लगातार दोनों है (6:53; 15:3)।
4. यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीषु के बपतिस्मा के वक्त ऊपर से पवित्रात्मा को कबूतर के नाईं उतरते हुए और यीषु में वास करते हुए देखा (1:32)।

ङ देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहनाः 1यूह. 2:10।

च. आयत 11—16 में षिश्यों केलिए यीषु के आनन्द का वायदा है, पर आयत 17—27 में यीषु के सताव के वायदा है। सताव का संदर्भ 16:4क. तक है। हलॉकि इन सब बातों में विष्वासियों को चाहिए कि वे आपस में प्रम रखें जैसे यीषु ने उनसे किया!

<u>*षब्द और वाक्यांष अध्ययन*</u>

15:1—11

1. सच्ची दाखलता मैं हूँ; और मेरा पिता किसान है।
2. जो डाली मुझ में है, और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है, और जो फलती है, उसे वह छांटता है ताकि और फले।
3. तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो।
4. तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम मेंः जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
5. में दाखलता हूँः तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।
6. यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो वह डाली की नाई फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं।
7. यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।
8. मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।
9. जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, मेरे प्रेम में बने रहो।
10. यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगेः जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।
11. मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो

जाए।

15:1

'' सच्ची दाखलता मैं हूँ;''

यह यीषु के प्रसिद्ध ''मैं हूँ'' कथनों से एक है (4:26; 6:35; 8:12; 10:7,9,10,11,14; 11:25; 14:6)। पुराने नियम में दाखलता इस्राएल को दर्षाता है (भ.सं. 80:8—16; यषा. 5:1—7; यिर्मा.2:21; यहेज. 15; 19:10; होषै. 10:1; नए नियम में मत्ती. 21:33; मरकुस. 12:1—12; रोमि. 11:17)। पुराने नियम में हमेषा इसका नकारात्मक अर्थ होता था। यीषु साबित करते है वो ही सही इस्राएली थे (यषा. 53)। जैसे पौलूस ने कलीसिया के लिए मसीह की देह, मसीह की दुल्हन, परमेष्वर की इमारत रूपकों का उपयोग किया वैसा यूहना दाखलता का उपयाग करता है। यह इस बात को संपुश्ट करते है कि यीषु , जो सच्ची दाखलता है, के साथ सही संबन्ध होने के कारण कलीसिया सच्चा इस्राएल है (गला. 6:16; 1पतरस. 2:5,9; प्रका. 1:6)। देखिए **विषेश षीर्शक 6:55; 17:3।**

'' और मेरा पिता किसान है। ''

फिर से यीषु पिता के साथ अपने घनिश्ठ संबन्ध को साबित करते है और साथ में पिता के इच्छा के प्रति अधीनता भी दर्षाते है।

15:2

'' जो डाली मुझ में है,
और नहीं फलती,
उसे वह काट डालता है ... ताकि और फले।''

फल लाना उद्धार का सबूत है (मत्ती. 7:16,20; 13:18;21:18—22; लूका. 6:43—45)। यीषु का यह कहना षायद इस प्रसंग पर आधारित हैः (1)यहूदा का धोखा (15:6; 13:10; 17:12); या (2) झूठे षिश्य (2:23—25; 8:30—47; 1यूह. 2:19)। यूहन्ना में कई स्तर का विष्वास है।

'' वह छांटता है ''

अर्थत् साफ करता है। विष्वासियों के जीवन में होनेवाले दुःख का एक उद्देष्य होता है (15:17—22)। यह फल लाने की क्षमता को बढ़ाता है, नकली को प्रगट करता हैं, सहायता करता है कि परमेष्वर पर निर्भर रहें (मत्ती. 13:20—'23; रोमि. 8:17; 1पत. 4:12—16)। मैल्स स्टानफॉर्ड का *प्रिन्सिपल्स ऑफ स्पीरिच्युल ग्रॅाथ* नामक पुस्तक इस कठीन विशय के प्रति एक प्रायोगिक पुस्तक है।
अध्याय 13—17 के संदर्भ के कारण हो सकता है कि यह अध्याय 13 का पाँव धोने के उस संदर्भ की ओर इषारा कर रहा हो। वे नहा चुके है (उद्धार) पर उनके पाँव धुलते (निरन्तर मुआफी) रहना आवष्य है। इस

वर्तमानकाल क्रिया को देखर ऐसा लगता है कि यह 1यूह.1:9 को पक्का करने के लिए है। बने रहने के लिए मात्र आज्ञाकारिता ही काफी नहीं पर प्रतिदिन का मनफिराव भी चाहिए!
एक विष्वासी के दुःख उठाने के कई उद्देष्य हो सकता हैः (1) मसीह समानता का विकास (इब्रा. 5:8); (2) पाप की अस्थाई सजा; तथा (3) पतित संसार में साधारण जीवन के कारण। परमेष्वर का इच्छा को पहचानना काफी कठीन काम है, परन्तु संभावित नतीजा पहला बिन्दु हो सकता है।

<u>*15:3*</u>

<u>*''तुम तो शुद्ध हो ''*</u>

आयत 2 का षब्द '' छांटता '' *(कथाइरॉ)* और ''षुद्ध'' दोनों का यूनानी मूलषब्द *(कथरॉस)* एक है। समस्त प्रसंग सच्ची षिश्यता के सबूतों से भरा है। यूनानी मूलपाठ में ''तो'' को इसलिए प्रयोग किया कि षेश 11 षिश्यों को मसीह में उनके सुरक्षित स्थान के बारे में निष्चयता दी जाए (यहूदा इसकरियोती के लिए 13:10 में प्रयोग किया गया एक ही यूनानी मूलषब्द का तुलना करे)।

<u>*'' उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है,''*</u>

(17:17; इफि. 5:26; 1पत.1:23)।

<u>*15:4*</u>

एन ए एस बी, एन के जे वी '' तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में:''
एन आर एस वी ''मुझ में बने रहो, और मैं तुम में बना रहूँगाः''
टी इ वी '' मुझ में एकता में रहो, और मैं एकता से तुम में:''
एन जे बी ''मुझ में एकता में रहो, और मैं तुम में:''

यह एक अनिषचित भूतकाल बहुवचनात्मक आदेष है (6:56; 1यूह. 2:6)। **व्याकरणात्मक** प्रष्न है कि दूसरा वाक्यांष एक सूचना या तुलना है ? अनगिनित समय में इस अनुच्छेद के द्वारा एक पवित्र व्यक्ति के दृढ़ रहने के धर्मषास्त्रीय सिद्धानन्त को जोर दिया गया (15:4,5,6,7,9,10,14; मरकुस. 13:13; 1कुरि. 15:2; गला. 6:9; प्रका. 2:7,11,17,26; 3:5,12,21; 21:7)। सच्चा उद्धार प्राथमिक और निरन्तर प्रत्युत्तर है। इस धर्मषास्त्रीय सत्य को कई बार हम अपने व्यक्तिगत उद्धार के मसीही निष्चयता के कारण भुला देते है। बाइबलीय निष्चयता निम्नलिखित बातों से जुड़ी हैः (1) विष्वास में दृढ़ रहना; (2) मनफिराव की जीवनषैली; (3) आज्ञाकारिता की निरन्तर प्रक्रिया (याकूब तथा 1 यूहन्ना); और (4) फल लाना (मत्ती.7:13)। देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहनाः 1यूह. 2:10।

<u>*'' डाली अपने आप से नहीं फल सकती,''*</u>

यह दैवीय प्रावधान की प्राथमिकता को प्रगट करता है। फल के लिए देखिए आयत 5 का नोट।

<u>*''यदि बनी न रहे ...*</u>
<u>*तुम भी यदि बने न रहो तो''*</u>

ये दोनों तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यीषु के साथ का निरन्तर संबन्ध से जूडी है हमारी आत्मिक सफलता।

<u>*15:5*</u>

<u>*" जो मुझ में बना रहता है,*</u>
<u>*और मैं उस में,*</u>
<u>*वह बहुत फल फलता है,"*</u>

स्थाई फल का श्रोत स्थाई संगती है। फल विष्वासी के नज़रिया और कार्य की ओर इषारा करता है (मत्ती. 7:15–23; गला.5:22–23; 1कुरि.13)। यदि विष्वासी उसमें बने रहते है तो उनकी सफलता के लिए वायदा भी दिया गया है (15:16)। देखिए **विषेश षीर्शक : दृढ़ रहना 8:31।**

<u>*" क्योंकि मुझ से अलग होकर*</u>
<u>*तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"*</u>

यह दो षक्तिषाली नकारात्मक वाक्य है। यह सकारात्मक सत्य का नकारात्मक कथन है (15:5; फिलि. 4:13)।

<u>*15:6*</u>

<u>*"यदि कोई मुझ में बना न रहे,*</u>
<u>*तो उसे फेंक दिया जाता"*</u>

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है। दाख की डालियाँ किसी भी घरेलू काम के लिए उपयुक्त नही है यह जलाने के काम भी नही आती क्योकि यह तुरन्त जल जाता तथा अधिक गरम भी है (यहेज. 15)। यह षायद यहूदा या इस्राएल को दर्षाती है नही तो नकली विष्वास को (मत्ती.13:41–42,50; 1यूह. 2:19)।

<u>*"आग"*</u>

देखिए निम्नलिखित **विषेश षीर्शक**

<u>***विषेश षीर्शकः आग***</u>

वचन के अन्दर आग का सकारात्मक तथा नकारात्मक संकेतार्थ है।

क. सकारात्मक

1. गरम (यषा. 44:15; यूह. 8:8)
2. ज्योति (यषा. 50:11; मत्ती. 25:1–13)
3. पकाना (निर्ग. 12:8; यषा. 44:15–16; यूह. 21:9)
4. षुद्ध करता है (गिन. 31:22–23; नीति. 17:3; यष. 1:25; 6:6–8; यिर्मा. 6:29; मलाकी. 3:2–3)
5. पवित्रता (उत्.15:17; निर्ग. 3:2; 19:18; यहेज. 1:27; इग्रा.12:29)
6. परमेष्वर का नेतृत्व (निर्ग. 12:21; गिन.14:14; 1राजा.18:24)
7. परमेष्वर का सामर्थ प्रदान (प्ररित.2:3)
8. सुरक्षा (जक.2:5)

ख. नकारात्मक

1. जलाता है (यहोषू. 6:24; 8:8; 11:11; मत्ती. 22:7)
2. नश्ट करना (उत. 19:24; लैव्य. 10:1–2)
3. क्रोध (गिन. 21:28; यषा. 10:16; जक. 12:6)
4. दण्ड (उत. 38:24; लैव्य. 20:14; 21:9; यहो. 7:15)
5. झूठा अन्तिमसमय षास्त्र चिन्ह (प्रकाष. 13:13)

ग. पाप के विरोध में परमेष्वर का क्रोध आग के रूपक में प्रदर्षित किया गया।

1. उसका क्रोध जलाता है (होषै. 8:5; सप्न. 3:8;)
2. वह आग बरसाता है (नेह.1:6)
3. अनन्त आग (यिर्मा. 15:14; 17:4)
4. अन्तिम न्याय (मत्ती. 3:10; 13:40; यूह. 15:6; 2थिस्स. 1:7; 2पत.3:7–10; प्रकाष. 8:7; 13:13; 16:8)

घ. बाइबल के अन्य रूपकों के समान (खमीर, षेर) प्रसंग के अधार पर आग आषिश या स्राप हो सकती हैं।

15:7

''यदि तुम मुझ में बने रहो,
और मेरी बातें तुम में बनी रहें ''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। प्रर्थना अपने आप उत्तर नही लाती। यीषु उस में बने रहने से हटकर षिश्यों को उसके वचन में बने रहने में रूपकों को लाते है। यीषु पिता को प्रगट करते हैं और उसके षिक्षा को भी। वे प्रकाषन का श्रोत है। सुसमाचार व्यक्ति और संदेष दोनो है।

'' जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।''

यह एक अनिषचित भूतकाल आदेष है (15:16)। संपूर्ण पवित्रषास्त्र की षिक्षा को ढूंढे, अकेले वचन को अधिक महत्व न दें (देखिए नोट:14:13)। देखिए **विषेश षीर्शक : प्रार्थना, असीमित पर सीमितः 1यूह. 3:22।**

15:9

'' जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, ।''

प्रेम संबन्ध की यह कड़ी परमेष्वर के परिवार का चित्रण करती है; पिता पुत्र से प्रेम करते है, पुत्र अपने अनुयायियों से प्रेम करते है, उसके अनुयायी एक दूसरे से प्रेम करते है।

''मेरे प्रेम में बने रहो''

यह एक अनिषचित भूतकाल आदेष है। विष्वासियों को निम्नलिखित बातों में बने रहने के लिए कहा गया है (1) प्रार्थना (15:7;14:14); (2) आज्ञाकारिता (15:10,20; 14:15,21,23,24); (3) आनन्द (15:11); और (4) प्रेम (15:12;

14:21,22,24)। ये सब परमेष्वर के साथ के व्यक्तिगत संबन्ध का सबूत हैं। देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहनाः 1यूह. 2:10।

15:10

''यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे,''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। आज्ञाकारिता सच्ची षिश्यता का सबूत है (8:31; 14:15—21,23—24; लूका. 6:46)। यीषु इस उदाहरण को पिता के प्रति अपना निश्ठा के विशय बताने के लिए उपयोग करते हैं।

''प्रेम''

प्रेम का इस यूनानी षब्द *(अगापे)* को साहित्यों में अधिक प्रयोग नही करता था जब तक कलीसिया ने इसे एक विषेश रूप से प्रयोग नही किया गया। इसे निस्वार्थी, त्यागपूर्ण, ईमानदार, कार्यषील प्रेम को बताने के लिए प्रयोग किया गया। प्रेम एक कार्य है न कि जजबा (3:16)। नए नियम षब्द *अगापे* पुराने नियम का *हेसेड़* का पर्यायवाची है जिसका अर्थ है वाचकीय प्रेम और बफ़ादारी।

'' जैसा कि मैं ने
अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, ''

जैसे यीषु पिता से सम्बद्ध है वैसे विष्वासी भी सम्बद्ध हो। पिता और पुत्र के बीच में एकता है उसे विष्वासियों को पुनः उत्पन्न करना है (14:23)।

15:11

'' तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। ''

विष्वासियों के अन्दर यीषु का आनन्द होना चाहिए (17:13)। आनन्द सच्ची षिश्यता की दूसरा सबूत है (15:11 दो बार; 16:20,21,22,24; 17:13)। इस संसार में दुःख और वेदना है, मसीह में आनन्द, संपूर्ण आनन्द, उसका आनन्द है।

15: 12—17

12. मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।
13. इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।
14. जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ, यदि उसे करो, तो तुम मेरे मित्र हो।
15. अब से मैं तुम्हें दास न कहूँगा, क्योंकि दास नहीं जानता, कि उसका स्वामी क्या करता हैः परन्तु मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।
16. तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।
17. इन बातें की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूँ, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।

15:12

'' मेरी आज्ञा यह है,''

यीषु ने कई बार इस विशय को दोहराया है (13:34; 15:17; 1यूह. 3:11,23; 4:7—8,11—12, 19—21; 2यूह. 2,5)।

'' तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है, एक लगातार का आदेष। प्रेम पवित्रात्मा का एक फल है (गला. 5:22)। प्रेम एक जज़्बा नही है पर एक कार्य है। इसे प्रायोगिक षब्दों में कहा गया (गला. 5:22; 1कुरि. 13)।

'' जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा,''

यह एक अनिषचित भूतकाल आदेष है। यह षायद क्रूस के लिए प्रयोग किया गया आलंकारिक संकेत है (15:13)। यह यीषु के द्वारा दिया गया विषेश प्रेम है जिसे विष्वासियों को प्रदर्षित करना है (2कुरि. 5:14—15; गला. 2:20; 1यूह. 3:16)।

15:13

'' कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे।''

यह यीषु के एवज में किए गए प्रायष्चित बलि को दर्षाता है (10:11; रामि. 5:7,8)। यहाँ प्रेम कार्यषील है!

15:14

''तुम मेरे मित्र हो''

यह यूनानी संज्ञा *फिलॉस* है जो कईबार दोस्तों के बीच के प्रेम *(फिलियो)* के रूप में है। सामान्य यूनानी में *अगापाओ* और *फिलियो* दैवीय प्रेम के लिए प्रयोग किया गया पर्यायवाची षब्द है (तुलना करे 11:3 *फलियो* ओर 11:5 *अगापाओ*); 5:20 में परमेष्वर के प्रेम के लिए फिलियो का प्रयोग हुआ है।

'' जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ,
यदि उसे करो, ''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यहाँ दोस्ती का एक षर्त है वह है आज्ञाकारिता (14:15,23—24; 15:10; लूका. 6:46)। जैसे यीषु पिता में बने रहे, प्रेम में स्थिर रहे इसलिए षिश्य भी वैसा ही करें!

<u>*15:15*</u>

यीषु षिश्यों को (1) परमेष्वर के सच्चाई और (2) भविश्य की घटना के बारे में जानकारी देते है। वो अपनी षक्ति का प्रर्दषन करते है कि षिश्य विष्वास और भरोसे में बढ़ें। यीषु ने अपने पिता से सुनी बातों को षिश्यों के साथ बाँटा, और अब उनका कर्तव्य है कि वे उन बातों को दूसरों तक पहुँचाए (मत्ती. 28:20)।

<u>*15:16*</u>

<u>*'' तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है ''*</u>

यहाँ कई व्यकरणात्मक बातें हैः (1) अनिषचित भूतकाल – यीषु ने स्वयं एक बार सब के लिए उन्हें चुना; (2) षक्तिषाली *अल्ला* (परन्तु); और (3) सषक्त *ईगो* या ''मैं'' कथन! मनुश्य के प्रत्युत्तर और चुनाव के बीच का तालमेल। दोनों बाइबलीय षिक्षा है। परमेष्वर हमेषा आरम्भ करते है (6:44,65; 15:16,19), परन्तु मनुश्य को प्रत्युत्तर देना है (1:12; 3:16; 15:4,7,9)। मनुश्य के साथ परमेष्वर का व्यवहार हमेषा एक वाचा के बंधन में होता है (यदि ... तो) देखिए **विषेश षीर्शक** : बुलाए गए :6:44।

<u>*'' तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; ''*</u>

यहाँ तीन वर्तमानकाल प्रक्रिया हैः (1) जाओ; (2) फल लाओ; और (3) फल बना रहता है। विष्वासी एक कार्य में है (मत्ती. 28:19–20)। षब्द ''ठहराया'' का धर्मषास्त्रीय पहलू हम प्रेरित. 20:28; 1कुरि. 12:28; 2तिमु.1:11 में देखते है। यह विष्वासियों के एवज में मसीह की मृत्यु के लिए भी प्रयोग किया गया (10:11,15,17,18; 15:13)।

<u>*'' मेरे नाम से ''*</u>

विष्वासियों को मसीह के चरित्र का पुनःउत्पादन करना चाहिए। यह षब्दसमूह 1यूह. 5:14 के ''परमेष्वर की इच्छा'' के पर्यायवाची षब्द में है। 14:13–15 के समान यहाँ प्रेम और उत्तर प्राप्त प्रार्थना आपस में जुडी हैं।

<u>*विषेश षीर्शक : प्रभु का नाम*</u>

यह नए नियम का अक्सर प्रयोग किया जाने वाला वाक्यांष है जो कलीसिया में त्रिएक परमेष्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति और कार्यरत सामर्थ को प्रगट करता है। यह कोई जादूई नुसखा नहीं है पर परमेष्वर के चरित्र के लिए निवेदन है।

अक्सर यह वाक्यांष यीषु को प्रभु के रूप में सम्बोधित करता है (फिलि.2:11)

1) बपतिस्मे के समय यीषु में एक के विष्वास को स्वीकार करना (रोमियों.10:9–13; प्रेरित.2:38; 8:12, 16; 10:48; 19:5; 22:16; 1कुरि.1:13, 15; याक.2:7)

2) दुश्टआत्मा निकालते समय (मत्ती.7:22; मरकुस.9:38; लूका.9:49; 10:17; प्रेरित.19:13)

3) चंगाई के समय (प्रेरित.3:6, 16; 4:10; 9:34; याक.5:14)

4) सेवकोई के कार्य में (मत्ती.10:42; 18:5; लूका.9:48)

5) कलीसिया में अनुषासन के समय (मत्ती.18:15–20)

6) अन्यजातियों को प्रचार करते समय (लूका.24:47; प्रेरित.9:15; 15:17; रोमियों.1:5)

7) प्रार्थना में (यूह.14:13–14; 15:2, 16; 16:23; 1कुरि.1:2)

8) मसीहत को सम्बोधित करने का तरीका (प्रेरित.26:9; 1कुरि.1:10; 2तीमु.2:19; याक.2:7; 1पत.4:14)

एक प्रचारक, सेवक, सहायक, चगां करने वाले और दुश्टआत्माओं को निकालने वाले इत्यादि के रूप में जो कुछ भी हम करते हैं वो उनके चरित्र, उनकी सामर्थ, उनके द्वारा उपलब्ध और उनके नाम में करते हैं।

15:17

" इन बातें की आज्ञा मैं तुम्हें इसलिये देता हूँ,
कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो।"

देखिए नोटः15:12। उत्तर प्राप्त प्रार्थना प्रेम और कार्य से जुडी है!

15:18 — 26

18. यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो, कि उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा।
19. यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु इस कारण कि तुम संसार में से चुन लिया है इसी लिये संसार तुम से बैर रखता
20. जो बात मै ने तुम से कही थी, कि दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसको याद रखोः यदि उन्हों ने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे; यदि उन्हों ने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे।
21. परन्तु यह सब कुछ वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।
22. यदि मैं न आता और उन से बातें न करता, तो वे पापी न ठहरते परन्तु अब उन्हें उन के पाप के लिये कोई बहाना नहीं।
23. जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है।
24. यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, परन्तु अब तो उन्हों ने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया।
25. और यह इसलिये हुआ, कि वहि वचन पूरा हो, जो उन की व्यवस्था में लिखा है, कि उन्हों ने मुझ से व्यर्थ बैर किया।
26. परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।

15:18

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। संसार, पतित मानुशिक तरीका यीषु के पीछे चलनेवालों से बैर रखता है।

''संसार''

यूहन्ना इस षब्द को कई तरह से उपयोग करता हैः (1) ग्रह, समस्त मानवजाती के लिए एक रूपक के समान (3:16); और (2) परमेष्वर से अलग हटकर अपने मर्जी से चलनेवाले एक मानवीय समाज के समान (10:8; 1यूह. 2:15—17)।

'' तुम से बैर रखता है ''

यह एक वर्तमानकाल है, यह संसार लगातार बैर रखेगा (15:20)।

'' तुम जानते हो,''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है। नए नियम की सच्चाई के बारे में विष्वासी की जानकारी इस पतित संसार के सताव को सहने में उसकी सहायता करेगी।

'' उस ने तुम से पहिले मुझ से भी बैर रखा।''

सर्वनाम ''मुझ'' सषक्त है (7:7)। यह परमेष्वर, उसका मसीह, और उसके लोगों के प्रति इस संसार का विरोध को प्रगट करता है (17:14; 1यूह.3:13)। विष्वासी मसीह के प्रेम और उपद्रव में एक है। मसीह के साथ पहचान षान्ति, आनन्द, और सताव, यहाँ तक कि मृत्यु तक लाती है।

15:19

''यदि''

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। इसे इस प्रकार अनुवाद करना चाहिए कि ''यदि तुम संसार के होते, जो तुम नही हो, तो संसार अपनों से प्रीति रखता, परन्तु ऐसा नहीं।

15:20

''याद रखोः''

आयत 18 के समान यह एक वर्तमानकाल आदेष है।

''यदि उन्हों ने मुझे सताया,
.... यदि उन्हों ने मेरी बात मानी, ''

ये दोनो यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। सताव का यूनानी षब्द का अर्थ है एक जंगली जानवर के समान । सताव इस पतित संसार में विष्वासियों के लिए एक मानदण्ड है (रोमि. 8:17; 2कुरि. 1:5,7; फिलि.3:10; 2जिमु.2:12; 1पत. 4:12—19)।

15:21

'' वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते।''

यह स्पशटरूप से पिता की ओर दर्षाता है। यहूदी और अन्यजाती दोनों परमेष्वर को नहीं जानते है। ''जानना'' पुरानेनियम का व्यक्तिगत समझ से प्रयोग किया गया। खोया हुआ संसार विष्वासियों को सताता है, क्योंकि (1) वे यीषु के है जिसे संसार ने सताया; और (2) वे परमेष्वर को नहीं जानते है।

15:22

''यदि मैं न आता ''

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। जिम्मेवारी जानकारी से जुडी है। इस प्रसंग में जो डालियाँ फल नही लाती हैं उनके पास जानने के लिए बड़े अवसर थे, जिनके पास केवल प्राकृतिक प्रकाष्न ही है उन से बढ़कर अवसर थे (भ.सं. 19:1—6; रोमि. 1:18—20; 2:14—15)।

15:23

यीषु के प्रति निरन्तर विरोध परमेष्वर का निरन्तर विरोध है (15:24; 1यूह. 5:1)।

15:24

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। इसका अनुवाद इस प्रकार होगा ''यदि मैं उन में वे काम न करता, जो और किसी ने नहीं किए तो वे पापी नहीं ठहरते, वे ठहर चुके है।''
ज्योति जिम्मेवारी को लाती है (1:5;8:12; 12:35,46; 1यूहन्ना. 1:5; 2:8,9,11; मत्ती. 6:23)।

'' उन्हों ने मुझे और मेरे पिता दोनों को देखा, और दोनों से बैर किया।''

यीषु को तिरस्कार करने का अर्थ है पिता का तिरस्कार करना (1यूह.5:9—13)।

15:25

यह चौका देनेवाली बात है कि भ.सं 35:19; 69:4 के उद्धृत को यहाँ व्यवस्था कहा गया। साधारण रीति से मूसा के लेखों (उत्प.— व्ययस्था) को व्यवस्था कहा जाता है।
ऐसे स्पश्ट प्रकाषन के बावजूद भी यहूदियों द्वारा यीषु के तिरस्कार को इच्छायुक्त अविष्वास कहा जाता है (यषा. 6:9—13; यिर्मा. 5:21; रोमि. 3:9—18)।

15:26—27

26. परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा।
27. और तुम भी गवाह हो क्योंकि तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो।।

15:26

*'' जब वह सहायक आएगा,
जिसे मैं तुम्हारे पास भेजूंगा, ''*

पिता और पुत्र दोनों मिलकर पवित्रात्मा को भेजते है (14:15,26; 15:26;16:7)। छुटकारे का कार्य में त्रीएकता के तीनों व्यक्तित्व सम्मिलित है।

'' सत्य का आत्मा ''

यहाँ पवित्रात्मा को पिता की प्रगटकर्ता के समझ में सत्य का आत्मा कहते हैं (14:17,26; 15:26; 16:13)। देखिए **विषेश षीर्शक : सत्य — 6:55 तथा 17:3।**

''वह मेरी गवाही देगा''

पवित्रात्मा का काम है यीषु और उसकी षिक्षा की गवाही दें (14:26; 16:13—15; 1यूह. 5:7)।

15:27

'' और तुम भी गवाह हो ''

यह षायद नए नियम के लेखकों के पवित्रात्मा की प्रेरणा के बारे में है जो यीषु के साथ थे (लूका. 24:48)। देखिए **विषेश षीर्शकः यीषु के प्रति गवाही 1:8।**

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. ''बने रहना'' में क्या सम्मिलित है ?
2. यदि एक विष्वासी बना नही रहता तो क्या होता ? यदि विष्वासी के अन्दर फल नही होगा तो क्या होगा ?
3. सच्ची षिश्यता की सूची बनाए।
4. यदि सताव मसीहियों के लिए एक मानदण्ड है तो यह आज हम से क्या कहता है ?

5. आयत 16 का विवरण अपने षब्दों में करें।

यूहन्ना – 16

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
संसार की नफरत	होनेवाला इनकार			षिश्य और संसार
(15:18– 16:4क)	(15:18–16:4)	इस संसार के प्रति एक मसीही का संबन्ध	(15:18– 16:4क)	(15:18– 16:4क)
पवित्रात्मा के कार्य		16:1–4क	पवित्रात्मा के कार्य	सहायक का आना
16:4ख–11	पवित्रात्मा के कार्य 16:5–15	16:4ख–11	16:4ख–11	16:4ख–15
16:12–15		16:12–15	16:12–15	
दुःख आनन्द में बदल जाएगा	दुःख आनन्द में बदल जाएगा		सुख और दुःख	यीषु जल्द वापस जाएंगे
16:16–24	16:16–24	16:16–24	16:16	16:16
			16:17–18	16:17–28
			16:19–22	
			16:23–24	
मैंने जीत लिया	यीषू ने संसार को जीत लिया		संसार पर विजय	
16:25–33	16:25–33	16:25–28	16:25–28	
		16:29–33	16:29–30	16:29–33
			16:31–33	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 16:1–33

क. इसका प्रसंग 15: 18–16:4 तक है। अध्याय विभाजन, अनुच्छेद विभाजन और आयत विभाजन पवित्रात्मा प्रेरित नहीं हैं।

ख. आत्मिकता खोए हुओं के प्रति पवित्रात्मा के कार्य 16:8–11 में और उद्धार प्राप्ति के प्रति पवित्रात्मा के कार्य को 16: 12–15 में विवरण किया गया है। द एक्सपोसिषन बाइबल केमन्ट्रि, भाग. 1 में सामूएल जे. मिकोलास्की के द्वारा रचित द थियॉलजी ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट लेख में पवित्रात्मा के कार्य के बारे में जो नए नियम में है एक दिलचस्प निश्कर्श है:

> ''नए नियम का उपदेष षुद्धिकरण, जो दोशमुक्ति से सहबद्ध है, जो कभी भिन्न नही है। जैसे पुराने नियम में है, षुद्धिकरण पहले अलगााव को दर्षाता है, दूसरा, एक नैतिक योग्यता और संबन्ध जो परमेष्वर सा है। षुद्धिकरण पवित्रात्मा का कार्य है। वह एक व्यक्ति को मसीह के साथ जोड़ती है और उसके जीवन को आत्मिक तौर से नया बनाती है। नया नियम निम्नलिखित बातों को अनुक्रमित करता है पवित्रात्मा में बपतिस्मा (1कुरि. 12:13); पवित्रात्मा की मुहर (इफि. 1:13,14; 4:30), पवित्रात्मा का अन्दर निवास (यूह. 14:17; रामि. 5:4; 8:9–11; 1कुरि.3:6 6:19; 2तिमु.1:14), पवित्रात्मा द्वारा निर्देषन (यूह. 14:26; 16:12–15), पवित्रात्मा की भरपूरी (इफि. 5:18), पवित्रात्मा का फल (गला. 5:22,23)। षुद्धिकरण दोशमुक्ति से जुडा है जो कि परमेष्वार के सामने खड़े होना है (इब्रा.10:10) और एक नए रूप के लिए सोचविचार का विकास भी है'' (पृश्ठ.474)।

ग. 16: 17, 13:36; 14:5,8; और 18:1 के समान प्रेरितों द्वारा पूछा गया एक प्रष्न है।

घ. 14:31 और 18:1 के आधार पर कई विष्वास करते हैं कि यीषु ने अध्याय 15–17 ऊपरी कोठरी में रहकर नही कहा वरन गतसमने के रास्ते में कहा है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

16:1–4
1. ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कहीं कि तुम ठोकर न खाओ।
2. वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे, वरन वह समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा यह समझेगा कि मैं परमेश्वर की सेवा करता हूँ।
3. और यह वे इसलिये करेंगे कि उन्हों ने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं।
4. परन्तु ये बातें मैं ने इसलिये तुम से कहीं, कि जब उन का समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैं ने तुम से पहिले ही कह दिया था: और मैं ने आरम्भ में तुम से ये बातें इसलिये नहीं कहीं क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।

16:1

एन ए एस बी, '' कि तुम ठोकर खाने से बचो। ''
एन के जे वी '' कि तुम ठोकर के लिए नहीं हो। ''
एन आर एस वी '' कि तुम ठोकर न खाओ। ''
टी इ वी **''ताकि तुम अपने विष्वास को न खोओ''**
एन जे बी '' कि तुम न गिरो। ''

यूनानी में प्रयोगित इस षब्द का अर्थ है जाानवरों को पकड़ने के लिए बनाया गया फन्दा (6:61)। इस प्रसंग में इसका प्रयोग इस बात को दर्षाता है कि विष्वासी सह यहूदियों और धार्मिक अगुवेके की नफरत से अनजान रहकर ठोकर का कारण न बनें। यीषु ने इसे मत्ती. 11:2—6 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विष्वास को बताने के लिए भी प्रयोग किया है।

16:2

'' वे तुम्हें आराधनालयों में से निकाल देंगे,''

यह यहूदी धर्म से निकाले जाने की ओर इषारा करता है (9:22,34; 12:42)। निकाले जाने की प्रक्रिया के तरीके के बारे में अधिक जानकारी हमारे पास नहीं है। वहाँ स्थाई और अस्थाई रूप से बाहर निकाला जाता था। पहली षताब्दी के अन्त में रबियों ने पलिस्तीन के अन्दर मसीह से संबन्धि एक ''स्राप षपथ'' बनाया जिसके द्वारा मसीहियो को आराधनालय से निश्कासित करते थे। यह आखिर यीषु के अनुयायियों में और प्रादेषिक मसीहियों के बीच फूट पैदा कर दी।

16:3

''वे ये करेंगे''

सर्वषक्तिमान के प्रति सर्मपण और ह्रदय षुद्धता काफी नहीं है। कई बार परमेष्वर के नाम से बुराई, गलत, धार्मिक पागलपन भी उठता है।

*'' क्योकि
उन्हों ने न पिता को जाना है और न मुझे जानते हैं।''*

षब्द ''जानना'' का संकेतार्थ है घनिश्ठ तथा व्यक्तिगत संबन्ध (उत.4:1; यिर्मा. 1:5)। यह एक षक्तिषाली कथन है कि यीषु के तिरस्कार का अर्थ है परमेष्वर का तिरस्कार (8:19; 15:21; 1यूह. 5:9—12)।
यीषु कई बार संसार को आत्मिक अन्धेपन और अज्ञानता का आग्रह करते हैं (1:10; 8:19,55; 15:21; 16:3; 17:25)। हलॉकि पुत्र के आगमन का उद्धेष्य था कि संसार का उद्धार करें (3:16) और पिता को प्रगट करना ताकि संसार मसीह के द्वारा उसे जाने (17:23)।

16:4

यीषु के इस कथन ने तिरस्कार और सताव के मध्य में षिश्यों को उत्साहित किया (13:19; 14:29)।

16:5—11

5. अब मैं अपने भेजनेवाले के पास जाता हूँ और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, कि तू कहाँ जाता हैं?
6. परन्तु मैं ने जो ये बातें तुम से कही हैं, इसलिये तुम्हारा मन शोक से भर गया।
7. तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।
8. और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा।
9. पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते।
10. और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ,
11. और तुम मुझे फिर न देखोगेः न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।

<u>*16:5*</u>

<u>*'' तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता,
कि तू कहाँ जाता हैं?''*</u>

ऐसे लगता है कि यह प्रष्न 13:36 में पतरस ने पूछा और यीषु के जाने के दु:ख से उसका मन भटका और उनके साथ क्या होगा इस बात पर वे चिंतित होने लगा है। 14:1—3 में यीषु के स्वर्गारोहण के विशय में यूहन्ना कहता है (प्रेरित.1:9—11)।
यह वह जगह है जहाँ हमें स्मरण करना चाहिए कि सुसमाचार यीषु के द्वारा कहे गए समस्त षब्दों का उल्लेख नहीं है। वे धर्मषास्त्रीय उद्धेष्य के लिए लिखा हुआ संक्षिप्त रूप है। पवित्रात्मा की प्रेरणा के अधीन लेखकों को यह स्वतंत्रता थी कि वे मूलपाठों का चुनाव करें ओर उसे संवारे। मैं यह नही समझता कि उनके पास यह अधिकार था कि वे यीषु के मुँह में षब्दों को जोड़े।

<u>*16:6*</u>

<u>*'' तुम्हारा मन शोक से भर गया।''*</u>

ऊपरी कोठरी का अनुभव षोक से भरा हुआ था (14:1; 16:6,22)। इब्रानी समझ में ''मन'' संपूर्ण व्यक्ति को — हृदय, जज़बा और इच्छा को दर्षाता है। देखिए **विषेश षीर्शक** : मन 12:40

16:17

'' मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, ''

यीषु का भौतिक षरीर एक समय में एक ही जगह में उपस्थित हो सकता है जो एक ही समय में उसके सारे षिश्यों की सेवा करने में तथा षिक्षा देने में सीमित कर दिया है।उसके पार्थिव जीवन में केवल इस्राएल पर ही ध्यान दिया। पवित्रात्मा के आगमन ने एक नए युग का आरम्भ किया जिस के द्वारा विकसित सेवकाई होगी (इफि. 2:11—3:13)।

षब्द ''अच्छा'' का प्रयोग 11:50 और 18:14 में यीषु की मृत्यु के संबन्ध में बताया है। यह यीषु के अन्तिम सप्ताह की समस्त घटनओं को षामिल करते हैं।

'' क्योंकि यदि मैं न जाऊं,
तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा,''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। पवित्रात्मा के आगमन के लिए यीषु का जाना आवष्य है। षब्द पाराक्लीटो का अनुवाद ''वकील'', ''सान्तवनादाता'', ''सहायक'' है (14:16,26; 15:26)। यूनानी साहित्य में यह षब्द बचाव पक्ष के वकील के लिए प्रयोग किया जाता है।16:8—11 में पवित्रात्मा को हम अभियोजक की भूमिका में देखते हैं; हलॉकि 16:12—15 में पवित्रात्मा को हम विष्वासियों के लिए मध्यस्थता करनेवाले की भूमिका में देखते है।
1यूह. 2:1 में पुत्र के लिए षब्द पाराक्लीटो का प्रयोग किया गया है। यूनानी मूलषब्द को ''सान्तवनादाता'', में अनुवाद कर सकते हैं। इस अर्थ से इसे 2कुरि. 1:3—11 में पिता के लिए भी प्रयोग किया है।

'' उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। ''

पवित्रात्मा पिता और पुत्र दोनों से आया है (14:26)।

16:8

''' और वह आकर संसार को निरूत्तर करेगा।''

पवित्रात्मा के द्वारा व्यवहार करनेवाले उन तीनों क्षेत्र को ध्यान करें जो मनुश्य का आवष्य और यीषु के छुटकारे के कार्य से संबन्धित है। षब्द '' निरूत्तर'' एक न्यायिक षब्द है।
षब्द संसार परमेष्वर से अलग हटकर अपनी मर्जी से चलनेवाले एक मानवीय समाज की ओर इषारा करता है। देखिए नोटः 15:18।

16:9

'' पाप के विषय में इसलिये कि
वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। ''

सुसमाचार समस्त मानवजाती के व्यक्तिगत पाप की जानकारी और परमेष्वर की धार्मिकता की आवष्यकता संग षुरू होता है (रोमि.3:9—18,23)। इस प्रसंग में पाप ही उद्धार के लिए रुकावट नही है पर मसीह के काम और व्यक्तित्व के प्रति अविष्वास है रुकावट (3:6—21)। षब्द ''विष्वास'' के साथ कुछ जज़्बा भी

अवष्य जुड़ा है पर प्राथमिक रूप से यह एक इच्छा है। यह विष्वासियों की किसी योग्यता या क्षमता पर आधारित नहीं है पर परमेष्वर के प्रावधान और मसीह में वायदा के प्रति मनफिराव और विष्वास प्रत्युत्तर है (रोमि. 3:21–30)।

16:10

" धार्मिकता के विषय में "

यह षायद इन बातों की ओर दर्षा रहा हैः (1) मसीह के क्रूस में होनेवाले छुटकारे को दर्षा रहे है, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण एक साथ दिखाई देते हैं (16:10) या (2) जो मसीह के बिना स्वयं को परमेष्वर के साथ ठीक महसूस करते है, वास्तव में केवल मसीह ही परमेष्वर के साथ ठीक संबन्ध में है।

16:11

" न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।"

एक ऐसा दिन आनेवाला है जब पतित स्वर्गदूत और मानवजाती धर्मी परमेष्वर के सामने खड़ी होगी (फिलि. 2:6–11)। षैतान,हलाँकि इस संसार में एक बड़ी षक्ति है (12:31; 14:30; 2कुरि. 4:4; इफि. 2:2; 1यूह. 5:19) पर पहले से हारा हुआ है । उसके बच्चे अवष्य परमेष्वर के क्रोध की कटनी करेंगे (8:44; मत्ती. 13:38; 1यूह.3:8–10)।

16:12–15

12. मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।
13. परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।
14. वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।
15. जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।
16. थोड़ी देर तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे।

16:12

" अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।"

षब्द "सहना" षारीरिक रूप से जानवर का बोझ उठाने को दर्षाता है। कुछ निम्नलिखित बातें वे समझ सकते थे (1) मसीह का दुःख उठाना; (2) मसीह का पुनरुत्थान; और (3) कलीसिया की विष्वस्तरीय सेवकोई।
आधुनिक पाठक को ध्यान रखना है कि कई तरह से नया नियम एक संक्राती के समय का प्रतिनिधित्व करता है। जब तक पुनरुत्थान के बाद की प्रत्यक्षता और पेन्तिकुस्त के दिन में पवित्रात्मा का आना नही हुआ तब तक प्रेरितों ने कई बातों को नहीं समझा ।

हलॉकि हमें याद रखना है कि सुसमाचर सुसमाचरप्रचारकीयता के लिए कई वर्शों के बाद कुछ खास पाठकों को मन में रखते हुए लिखा गया। इसलिए वे एक प्रौढता प्राप्त धर्मषास्त्र को प्रगट करता है।

16:13

'' सत्य का आत्मा ''

सत्य *(अलेथिया)* का प्रयोग पुराने नियम के संकेतार्थ भरोसा का समानता मे किया गया, ईमानदारी दूसरा स्तर पे आते है। 14:6 में यीषु ने कहा कि वो सत्य है।पवित्रात्मा के लिए इस षीर्शक का प्रयोग असलिए हुआ कि उसका भूमिका है यीषु को प्रगट करना (14:17; 15:26; 16:13; 1यूह. 4:6; 5:7)। देखिए नोटः 6:55।

'' वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा,''

यह हर क्षेत्र को नही दर्षाता पर केवल आत्मिक क्षेत्र और यीषु की षिक्षा के सत्य के बारे में दर्षाता है (सुसमाचार)। यह प्राथमिक रूप से नए नियम का लेखकों का पवित्रात्मा प्रेरणा को दर्षाता है। पवित्रात्मा ने उन्हें अनोखा और आधिकारिक (प्रेरणात्मक) मार्ग पर चलाया। यह द्वितीय समझ में पवित्रात्मा बाद के पाठकों के मन को ज्यार्तिमय करने के काम को दर्षाता है। देखिए **विषेश षीर्शक 6:55** तथा 17:3।

'' क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा,
परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा,
और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। ''

आनेवाली बातें छुटकारे के घटना को दर्षाता हैः कालवरी, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, और पेन्तिकुस्त। यह भविश्य की बातों को बताने की सेवकाई नही है।
पवित्रात्मा परमेष्वर से सत्य को प्राप्त करेगी जैसे यीषु ने किया, और विष्वासियों के पास उसे पहुँचा देगी जैसे यीषु ने किया था। केवल इस संदेष के विशय को ही नही पर पिता से तरीके को भी पाएंगे। पिता कार्य में परमाधिकारी है (1कुरि. 15:27,28)।

16:14—15

''वह मेरी महिमा करेगा,
क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा''

पवित्रात्मा की प्राथमिक कार्य है यीषु मसीह को ऊँचे उठाना तथा विवरण करना (16:15)। पवित्रात्मा कभी भी अपने ऊपर लोगों का ध्यान खींचने की प्रयास नही करती परन्तु हमेषा मसीह पर (145:26)।

'' जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है;''

कितना चौंका देनेवाला कथन है (3:35; 5:20; 13:3; 12:10; मत्ती. 11:27)! यह मत्ती.28:18; इफि. 1:20—22; कुलु. 2:10; 1पत. 3:22 के समरूपता में है।
यह त्रीएकता के अन्दर का कार्य करने की विधि है। जैसे यीषु ने पिता को दर्षाया वैसे आत्मा यीषु को दर्षा रही हैं।

16:16—24

16. थोड़ी देर तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे।
17. तब उसके कितने चेलों ने आपस में कहा, यह क्या है, जो वह हम से कहता है, कि थोड़ी देर में तुम
मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे? और यह इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूँ?
18. तब उन्हों ने कहा, यह थोड़ी देर जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं जानते, कि क्या कहता
है।
19. यीशु ने यह जानकर, कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं, उन से कहा, क्या तुम आपस में मेरी इस बाते
के विषय में पूछ पाछ करते हो, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में मुझे देखोगे।
20. मैं तुम से सच सच कहता हूँ; कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगाः तुम्हें
शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा।
21. जब स्त्री जनने लगती है तो उस को शोक होता है, क्योंकि उस की दुःख की घड़ी आ पहुंची, परन्तु
जब वह बालक जन्म चुकी तो इस आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस संकट को फिर
स्मरण नहीं करती।
22. और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा और तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और
तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा।
23. उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगेः मैं तुम से सच सच कहता हूँ, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो
वह मेरे नाम से तुम्हें देगा।
24. अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।।

16:16

" थोड़ी देर "

यह वाक्यांष कई बार यूहन्ना में है (7:33; 12:35; 13:33; 14:19)। इस मुहावरे का अर्थ के प्रति कई सिद्धान्त हैः (1) पुनरुत्थान के बाद का प्रत्यक्षता; (2) दूसरा आगमन; या (3) पवित्रात्मा में और द्वारा मसीह का आगमन। संदर्भ के आधार पर बिन्दू 1 ठीक है (16:22)। षिश्य इस कथन से असमंजिस में पड़ गए (16:17—18)।

16:17

" तब उसके कितने चेलों ने आपस में कहा,"

यह 13:36; 14:5,8,22 के तरह एक ओर प्रष्न है। यीषु ने उन्हें व्यवस्थित करने और अपने आप को प्रगट करने के लिए इन प्रष्नों को उपयोग में लाया। यह यूहन्ना की ही विषेशता है कि वह सच्चाई को प्रगट करने के लिए वार्तालापों का उपयोग करता है। यूहन्ना में यीषु के बारे में या यीषु के साथ 27 वार्तालाप है।

" इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हू "

यीषु ने इसे 16:5 तथा 16:10 में प्रयोग किया है। दूसरे षब्दों में यह बहुत ही स्पश्ट मसीह संकेत है (13:1,3; 16:28; 17:24)।

'' थोड़ी देर में तुम
मुझे न देखोगे ... देखोगे ''

आयत 16 तथा 17 में षब्द '' देखोगे'' के लिए दो षब्दो का प्रयोग है। वे पर्यायवाची षब्द लगते है। यदि ऐसा है तो केवल एक ही समय के बारे में कहा गया है और वह समय यीषु की क्रूस पर मृत्यु और पुनरुत्थान के भोर होगी।
कुछ कहते है ये दो क्रिया और वाक्यांष ''षारीरिक'' और आत्मिक दृश्टि की ओर इषारा करते है, इसलिए ये (1) कालवरी और रविवार के भोर के बीच का समय या (2) स्वर्गाराहण तथा दूसरा आगमन के बीच के समय को दर्षाता है। आयत 16 तथा 17 का पहला क्रिया *थियोरियो* वर्तमान काल है,दूसरा क्रिया *होराओ* भविश्यकाल में है।

16:18

'' तब उन्हों ने कहा,''

यह एक अपूर्णकाल है जिसका अर्थ होगा (1) वे आपस में बार बार कह रहे है या (2) उन्होंने कहना षुरू किया।

'' जो वह कहता है, क्या बात है?''

जो उसके साथ थे, उससे सुना, और उस का चमत्कर को देखा वह यीषू को हमेषा नही समझ पाए (8:27,43; 10:6; 12:16; 18:4)। यह है पवित्रात्मा की सेवकोई।

16:19

''यीशु ने यह जानकर,
कि वे मुझ से पूछना चाहते हैं,''

यीषु लोगो के विचार को जानते थे (2:25; 6:61,64; 13:11)। यह पक्का करना कठीन है कि यह उनका दैवीय स्वभाव के वजह से था या लोगों और परीस्थिति के बारे में अन्दरदृश्टि होने का वजह से या दोनो।

16:20

'' मैं तुम से सच सच कहता हूँ; ''

यह अमीन आमीन है (1:51)। पुराने नियम में विष्वास के लिए आमीन (अमान, एमेत,एमुनाह) षब्द का प्रयोग होता था। इसका प्राथमिक अर्थ है पक्का करना या होना। इसे परमेष्वर के भरोसे को बताने के लिए प्रयोग किया जाता था जो कि बाइबलीय विष्वास की नींव है। यीषु ही केवल एक मात्र व्यक्ति हैं जिसने इस षब्द के द्वारा वाक्यों की षुरूवात की है। इसका संकेतार्थ है ''यह एक प्रमुख बात है इसलिए ध्यान से सुनें।''

'' तुम रोओगे और विलाप करोगे, ''

अर्थात् ऊँचा और प्रगटात्मक दुःख जो यहूदियों के दुःख प्रर्दषन का चित्रण है (11:31,33;20:11)। जब यीषु ने षिश्यों को दुःख के बारे में बताया तो तीन बार बहुवचन ''तुम'' प्रबलता से प्रयोग किया है (16:20

दोबार; 22)। नेतृत्व का अर्थ है (1) सेवकत्व; (2) संसार द्वारा तिरस्कार; और (3) गुरू के समान सताव का सामना।

'' तुम्हें शोक होगा,
परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा।''

षिश्यों के असमंजिस और समझ के कमी के मध्य में कितना महान वायदा है यह! यीषु ने जो कुछ इस छोटे झुण्ड के साथ वायदे किए थे वे सब कुछ पुनरुत्थान के बाद के ऊपरी कोठरी का पहला प्रत्यक्षता में पूरे किए : (1) वो कभी उन्हें छोडेंगे नही (16:19); (2) वो उनके पास आएंगे (16:19); (3) वो उनको षान्ति प्रदान करेंगे (16:19); और वो उन्हें पवित्रात्मा देंगे (16:22; 20:20)।

16:21

'' जब स्त्री जनने लगती है ''

पुराने और नए नियम में स्त्री के जनने का रूपक सर्वसाधारण है। साधारणतः इसे जन्म के समय के लिए प्रयोग किया जाता है पर यहाँ विशय उस स्त्री के पहले के और अब के व्यवहार पर है। यह रूपक नए युग के आरम्भ के दर्द के बारे मे है (यषा.26:17—18; 66:7; मरकुस. 13:8)। इस बात को यीषु षिश्यों से कह रहे थे और इसलिए कि षिश्यों को यीषु के वचन समझ मे नही आए।

16:23

'' उस दिन ''

यह एक इब्रानी मुहावरा है जो नए युग के आरम्भ से जुडा हुआ है (14:20; 16:25,26)।

'' तुम मुझ से कुछ न पूछोगेः ''

इस आयत में ''पूछने'' के लिए दो भिन्न षब्दों का प्रयोग है (16:26)। पहला है सवाल करना (16:5,19,30)। सही अनुवाद में यीषु से अध्याय 13—17 में जितने भी सवाल उनके द्वारा पूछे गए उसकी ओर इषारा करते है (13:36; 14:5,8,22; 16:16—18)। दुसरा षब्द पवित्रात्मा की ओर इषारा करता है जिसके आगमन पर उनके सवालो का उत्तर प्राप्ती होंगी (14:16—31; 15:26—27; 16:1—15)।

एन ए एस बी, ''यदि तुम पिता से मेरे नाम से कुछ भी माँगोगे''
एन के जे वी ''जो कुछ तुम पिता से मेरे नाम से माँगोगे ''
एन आर एस वी ''यदि तुम पिता से कुछ भी मेरे नाम से माँगोगे ''
टी इ वी '' जो कुछ भी पिता के है वह तुम मेरे नाम से माँगोगे तो पिता उसे देदेंगे''
एन जे बी '' जो कुछ भी तुम पिता से माँगोगे मेरे नाम से पिता उसे पूरा कर देंगे ''

मेरे नाम का अर्थ यह नही कि प्रार्थना के अन्त में यीषु का नाम जोडना पर यीषु के चरित्र के अनुसार प्रार्थना करना (1यूह.5:13)। देखिए नोटः15:16 तथा देखिए **विषेश षीर्शक : प्रार्थना, असीमित पर सीमितः 1यूह. 3:22।** हस्त लेखों में षब्द समूह ''मेरे नाम'' में अन्तर है। वास्तविकता में परमेष्वार से जो कुछ भी आता है वह केवल यीषु के द्वारा ही है (14:13,14; 16:15,24,26)। देखिए **विषेश षीर्शक** : प्रभु के नाम :15:16।

16:24

" मांगो तो पाओगे "

एक तरफ से विष्वासियों को एक बार प्रार्थना मे माँगना चाहिए परन्तु दूसरी ओर देखे तो प्रार्थना एक लगातार होनेवाली एक संगती और भरोसा है इसलिए विष्वासियों को निरन्तर माँगते रहना चाहिए है (मत्ती. 7:7—8; लूका. 11:5—13; 18:1—8)।

" ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।"

उत्तर प्राप्त प्रार्थना हमारे आनन्द का एक कारण है। यीषु के अनुयायीयों का एक स्वभाव है आनन्द (15:11; 16:20,21,24: 17:13)।

16:25—28

25\. मैं ने ये बातें तुम से दृष्टान्तों में कही हैं, परन्तु वह समय आता है, कि मैं तुम से दृष्टान्तों में और फिर नहीं कहूँगा परन्तु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा।
26\. उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे, और मैं तुम से यह नहीं कहता, कि मैं तुम्हारे लिये पिता से बिनती करूंगा।
27\. क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है, इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रीति रखी है, और यह भी प्रतीति की है, कि मैं पिता कि ओर से निकल आया।
28\. मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूँ, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूँ।

16:25

" दृष्टान्तों में "

यीषु के षिक्षा के दो प्रभाव हैः (1) समझ को खोला; (2) समझ को रोका (मरकुस.4:10—11; यष. 6:9—10; यिर्मा. 5:21)। सुननेवाले का हृदय ही समझ की कुंजि है। हलॉकि वहाँ ऐसी कई बात थी जिन्हें उद्धारप्राप्त भी नही समझ पाया जबतक कि अन्तिम सप्ताह का खत्मा नही हुआ (क्रूसीकरण, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, ओर पेन्तिकुस्त)।
एम्मुवस की ओर जानेवालो के साथ की प्रत्यक्षता (नूका. 24:13—35) हमें स्पश्ट चित्र देता है कि किस प्रकार यीषु ने उन्हें सिखाया था। उसने स्वयं पुनरुत्थान के बाद का प्रत्यक्षता में यह बात प्रगट किया कि पुराना नियम किस प्रकार उसका सेवकोई के साथ जुडा तथा भूमिका बना। यह प्रेरितो के काम में पतरस ने प्रचार (केरिग्मा) के लिए इस तरीके को अपनालिया।

"खोलकर बताऊंगा।"

देखिए **विषेश षीर्शक**: परेसिया 7:4।

16:26

" उस दिन तुम मेरे नाम से मांगोगे,
और मैं तुम से यह नहीं कहता,
कि मैं तुम्हारे लिये पिता से बिनती करूंगा।"

यह आयत एक प्रमुख सत्य को प्रगट करती है। कई आधुनिक मसीही समझते है कि परमेष्वर के पास सीधे नही जा सकते है! हलॉकि बाइबल सिखाती है कि :(1) पवित्रात्मा विष्वासियो के लिए प्रार्थना करती है (रोमि. 8:26–27); (2) पुत्र विष्वासियों के लिए मध्यस्थता करते है (1यूह.2:1); और (3) मसीह के कारण विष्वासी परमष्वर के पास प्रार्थना के द्वरा पहुँच सकता है।

16:27

" क्योंकि पिता तो आप ही तुम से प्रीति रखता है,"

यहाँ प्रेम के लिए फिलियॉ का प्रयोग है जिसे 5:20 में यीषु के प्रति पिता के प्रेम को दर्षाया है। कितना अनोखा वचन है जो 3:16 को याद दिलाता है (अगापाओ का प्रयोग) यहाँ ऐसा परमेष्वर नही है जिससे यीषु को अनुरोध करना पडे, परन्तु एक प्रेमी पिता जिसके साथ यीषु उनके छुटकारे का कार्य को पूर्ण करने का प्रयत्न कर रहे है।

एन ए एस बी,एन के जे वी ,एन आर एस वी "पिता से"
टी इ वी , एन जे बी "परमेष्वर से"

यहाँ दो हस्तलेख भिन्नता हैः (1) परमेष्वर या पिता; और (2) विभक्ति प्रत्य का उपस्थिति या अनुपस्थिति। "परमेष्वर" पी5, आलेफ2, ए,ओर एन में है, सी3 और डब्लयू में "पिता" है।

" इसलिये कि तुम ने मुझ से प्रीति रखी है,
और यह भी प्रतीति की है,
कि मैं पिता कि ओर से निकल आया।"

यीषु से प्रेम और विष्वास पिता के साथ संगती रखने के मंज को तैयार करता है। न्यूमान और निडा के ए ट्रन्सलेटेरस् हान्डबुक ऑन द गोसपल ऑफ जॉन का एक कथन इस प्रकार हैः
" यह कथन इस बात को प्रगट करता है कि यूहन्ना का विचार प्रेम, आज्ञाकारिता,और विष्वास पुत्र के साथ एक के संबन्ध को बताने का अलग तरीका है"(पृश्ठ. 518)।
देखिए **विषेश षीर्शक** : यूहन्ना द्वारा "विष्वास" का प्रयोग।

16:28

" मैं निकल आया ... आया हूँ,"

यह एक संपूर्णकाल के साथ एक अनिषचित भूतकाल भी है। यीषु का जन्म (देहधाारण) बेतलहेम में हुआ, उसके आने की नतीजा "बने रहे" था (मत्ती. 28:20)।

" फिर जगत को छोड़कर
पिता के पास जाता हूँ।"

यह निकट में होनेवाले स्वर्गारोहण और ''सहायक'' का सेवकोई तथा यीषु के मध्यस्थता का कार्य को दर्षाता है (1यूह. 2:1)। जैसे यीषु का असतित्व 1:1 में बताया गया वैसे यीषु की महिमा और सामर्थ में वापसी को इस आयत मे बताया गया (17:5,24)।

16: 29—33

29. उसके चेलों ने कहा, देख, अब तो तू खोलकर कहता है, और कोई दृष्टान्त नहीं कहता।
30. अब हम जान गए, कि तू सब कुछ जानता है, और तुझे प्रयोजन नहीं, कि कोई तुझ से पूछे, इस से हम प्रतीति करते हैं, कि तू परमेश्वर से निकला है।
31. यह सुन यीशु ने उन से कहा, क्या तुम अब प्रतीति करते हो?
32. देखो, वह घड़ी आती है वरन आ पहुंची कि तुम सब तित्तर बित्तर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता मेरे साथ है।
33. मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।।

16:29

''खोलकर कहता है ''

देखिए **विषेश षीर्शक** : पारेसिया 7:4।

16:30

इस वाक्य को आयत 19 में षिश्यों द्वारा किए गए प्रष्न के अधार पर समझना चाहिए। इस आयत में वे अपना प्रगति प्राप्त अपूर्ण विष्वास का परिचय देता है। वे बहुत सुन और देख चुके है। क्या यह घटना (16:19) उनके समझ के लिए एक प्रमुख कार्य का भूमिका निभाएगा?

16:31

'' तुम अब प्रतीति करते हो ''

यह एक कथन या प्रष्न हो सकता है। नवनीतम अनुवाद इसे प्रष्न के रूप में मानते हैं। यहाँ तक की इस खास मौके में भी प्ररितों का विष्वास पूर्ण नही है। आधुनिक विष्वासियों का प्रारम्भिक विष्वास, परन्तु कमजोर, परमेष्वर के सम्मुख में कबूल है जब वे उन्हें मिला हुआ ज्योति के आधार पर यीषु को प्रत्युत्तर देते है। यीषु के मुकद्दमा और क्रूसीकरण में षिश्यों के विष्वास के कमी स्पश्ट नजर आती है।

16:32

" तुम सब तित्तर बित्तर होकर अपना अपना मार्ग लोगे,
और मुझे अकेला छोड़ दोगे,"

वास्तव में केवल यूहन्ना यीषु के मुकद्दमा और क्रूसीकरण में उपस्थित था (मत्ती. 26:31; जक.13:7)। 21:1–3 उल्लेख करते हे कि कई प्रेरित मछली पकडने के लिए वापस गए।
यीषु मानवीय दोस्ती से दुःखीत थे (मत्ती. 26:38,40,4143,45) परन्तु दैवीय संगती से नही (8:16,29) क्रूसीकरण तक, जहाँ उसने जगत का पाप को उठा लिया (मत्ती. 27:45–46)।

16:33

" तुम्हें मुझ में शान्ति मिले;"

मसीह में सकर्मक और कर्तापरक दोनों प्रकार का षान्ति हैं (14:27)।

" संसार "

षब्द संसार परमेष्वर से अलग हटकर अपने मर्जी से चलनेवाले एक मानवीय समाज की ओर इषारा करते है।

"ढाढ़स बांधो,"

यह एक वर्तमानकाल आदेष है (मत्ती. 9:2,22; 14:27; मरकुस. 6:50; 10:49; प्रेरित.23: 11)। यह यहोषू से परमेष्वर का वचन सा लगता है (यहो. 1:6,9,18; 10:25)।

" मैं ने संसार को जीत लिया है।"

विजय गतसमने, कलवरी, और खाली कब्र (1कुरि. 15:57) से पहले से निषचित था! परमेष्वर नियंत्रण करते है।
पिता के प्रति प्रेम और आज्ञाकारिता से जैसे यीषु ने इस संसार को जीतलिया, वैसे विष्वासी भी उसके द्वारा जीतनेवाले है (1यूह. 5:4–5)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. अध्याय 15 और 16 के बीच में क्या संबन्ध है ?

2. अयात 5 के आधार पर 13:36 को हम किस प्रकार समझेंगे ?
3. इस पतित संसार के प्रति पवित्रात्मा की क्या सेवकोई है ?
4. विष्वासियों के प्रति () पवित्रात्मा की क्या सेवकोई है ?
5. आधुनिक संस्थाओं के रुझान के आधार पर आयत 26—27 के इतना महत्वपूर्ण सत्य क्यों है ?

यूहन्ना — 17

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4] यीषु की प्रार्थना	एन के जे वी यीषु अपने लिए प्रार्थना करते हैं	एन आर एस वी यीषु की महायाजकीय प्रार्थना	टी इ वी यीषु अपने षिश्यों के लिए प्रार्थना करते हैं	जे बी यीषु की प्रार्थना
17:1—5	17:1—5 यीषु अपने षिश्यों के लिए प्रार्थना करते हैं	17:1—5	17:1—5	17:1—23
17:6—19	17:6—19 यीषु सब विष्वासियों के लिए प्रार्थना करते हैं	17:6—19	17:6—8	
			17:9—19	
17:20—26	17:20—26	17:20—24	17:20—23	
			17:24—26	17:24—26
		17:25—26		

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे थ्टप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का ह्रदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>प्रासंगिक अन्तरदृश्टि : 17: 1–26</u>

क. ऐतिहासिक ढ़ाँचा

1. यह अध्याय यीषु के महायाजकीय प्रार्थना है जो कि स्वयं के लिए (1–5), अपने षिश्यों के लिए (6–19)ओर भविश्य अनुयायीयों के लिए (20–26)। इसने साहस का एक वतावरण को बनाया (16:33)।
2. यह यीषु के सबसे लम्बी उल्लेखित प्रार्थना है।
3. इस अध्याय के विशयों में बाँटना कठीन है क्योंकि लक्ष्य को बार बार दोहराया गया। यह पुनरावर्तक तरीकों की चित्रकारी कपडे के समान है। कुंजी षब्द है ''महिमा'', ''देना'', ''जानना'', ''भोजन'', ''नाम'', ''संसार'', और ''एक'' ।
4. इस अध्याय में पवित्रात्मा का कोई जिक्र नही है। अध्याय 14–16 में उसकी प्राथमिकता के कारण यह असाधारण बाते हैं।

ख. आयत 6–19 में षिश्यों का विषिश्टता

1. वे चुने हुए हैं
2. वे आज्ञाकारी हैं
3. वे परमेष्वर और मसीह को जानते हैं
4. वे सत्य को स्वीकारते हैं
5. उनपर यीषु द्वारा प्रार्थना की गई
6. वे संसार मे रहते हैं
7. वे उसकी षक्ति से सुरक्षित हैं
8. वे जैसे यीषु और पिता एक है वेसे एक हैं।
9. उनके पास उसका आनन्द हैं
10. वे इस संसार के नही
11. वे सत्य के द्वारा प्रतिश्ठित है
12. जैसे उसे भेजा गया वैसा उन्हें भी भेजा गया।

13. जैसे पिता ने यीषु को प्रेम किया वैसे उन्हें भी

ग. यूहन्ना में षब्द ''महिमा''

1. सेप्टुवजन्ट में कम से कम 25 इब्रानी षब्दों का अनुवाद यूनानी षब्द डोक्सा से किया गया। सबसे प्रमुख षब्द है कबोड़ जिसका अर्थ है ''अलग'' ''वजन'', ''भारीपन'', योग्यता'' , ''इज्जत'', आदर'' या ''उज्ज्वल/वैभव'' (ब्रउन,ड्राइवर एण्ड ब्रिग्स् पृश्ठ. 458)।

2. यूनानी षब्द डोक्सा इज्जत के समझ में क्रिया ''विचारना'' से निकला।

3. यूहन्ना में इस षब्द के विभिन्न अर्थ है।

क. दैवीय महिमा (17:5,24; 1:14; 12:40,16)।

ख. यीषु के चमत्कार, षिक्षा, और पीढ़ानुभव सप्ताह के काम के द्वारा पिता का प्रकाषन (17:4,10,22; 1:14; 2:11; 7:18; 11:4,40)।

ग. विषेशरूप से क्रूस (17:1,4; 7:39; 12: 1–3; 13:31–32)।

यहाँ स्पश्ट रूप से इन प्रयोगों के बीच में कुछ समानता है। केन्द्रिय सच्चाई यह है कि अदृष्य परमेष्वर यीषु और उसके कामो के द्वारा प्रगट हुआ है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

17:1–5
1. यीशु ने ये बातें कही और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
2. क्योंकि तू ने उस का सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
3. और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।
4. जो काम तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।
5. और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी।

17:1

''यीशु ने ये बातें कही ''

यह षायद ऊपरी कोठरी के वार्तालाप की ओर इषारा करता है जो अध्याय 13–16 में उल्लेखित है।

'' अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर ''

यह यहूदियों की प्रार्थना का तरीका है हाथ, सिर और खुली आँखें स्वर्ग की ओर उठाते हुए (11:41; मरकुस. 7:34; भ.सं.123:1)। यीषु से कई बार प्रार्थना किया। इसे हम लूका रचित सुसमाचार में स्पश्ट देखते है 3:21; 5:16; 6:12; 9:18,28; 11:1; 22:41–45; 23:34।

''पिता''

यीषु ने दैवीयता का संबोधन पिता से किया (11:41; 12:27,28; मत्ती. 11:25–27; लूका. 22: 42; 23:34)। यीषु ने अरामिक में बातें की। यीषु के द्वारा पिता के लिए उपयोग किया गया अरामिक षब्द है ''अब्बा'' (मरकुस.14:36)।

'' वह घड़ी आ पहुंची,''

यह इस बात को बताता है कि यीषु अपना लक्ष्य और सेवा का समय को जानते थे (2:4; 7:6,8,30; 8:20; 12:23; 13:1)। वो अनजान परिस्थिति से कभी घेरा नही गया।

'' अपने पुत्र की महिमा कर,''

यह एक अनिषचित भूतकाल आदेष है। एक जैसा षब्दों से हमेषा यीषु ने अपनी मृत्यु के बारे में जिक्र किया (17:4; 7:39; 12:23; 13:31–32)। यह षब्द यीषु के अस्तित्व को भी बताते है (1:14;17:5,24)। यीषु के कार्य ने पिता का महिमा किया। वहाँ पर एक आदान प्रदान का काम था। देखिए नोटः महिमा 1:14।

17:2

'' सब प्राणियों पर अधिकार ''

यह एक बढाई के द्वारा कहा गया अनमोल वचन था (5:27; मत्ती. 11:27; 28:18; लूका. 10:22)। षब्द ''अधिकार'' *(एक्सूसिया)* 1:12; 5:27; 19:10,11 में प्रयोग किए गए षब्द के जैसा ही है। इसे ''कानूनी न्यायसंगत'', ''अधिकार'' या ''सामर्थ'' में अनुवाद कर सकते है। वाक्यांष ''सब प्राणी'' यहाँ एकवचन है (यह मानवजाती की ओर दर्षानेवाला एक मुहावरा है , उत्.6:12; भ.सं. 65:2; 145:21; यषा. 40:5; 66:23; योएल. 2:28)।

'' जिन्हें तू ने उस को दिया है,''

षब्द ''जिन्हें''नपुंसक लिंग तथा एकवचन है (7:24) जो ष्यियों,और मसीह की देह को दर्षाता है न कि व्यक्तियों को! यह एक वर्तमानकाल की क्रिया है जो एक टिकनेवाले तोहफा के बारे में कहती है। यह धर्मषास्त्रीय विचार पहले से नियुक्ति और चुनाव की ओर इषारा करता है (17:6,9,12; 6:37,39; रोमि. 8:29–30; इफि. 1:3–14)। पुराने नियम में चुनाव सेवा के लिए था, नए नियम में आत्मिक, सुरक्षित, अनन्त उद्धार के लिए है। सेवा के लिए भी विष्वासी बुलाए गए। चुनाव एक दैवीय कार्य नही है पर मानुशिक जिम्मेवारी भी है। यह मृत्यु पर केन्द्रित नही पर जीवन पर केन्द्रित है! विष्वासी पवित्रताई के लिए चुना गया (इफि. 1:4; 2:10), एक विषेश अधिकार के लिए नही। इस वाक्याषं को इस प्रकार न समझे कि पिता कुछ को पुत्र के पास देते है बाकियों को नही।

'' उन सब को वह अनन्त जीवन दे। ''

अनन्त जीवन मसीह द्वारा परमेष्वर की ओर से मिलनेवाला एक तोहफा है (5:21,26;6:40,47; 10:28; 1यूह. 2:25;5:11)। इसका अर्थ है परमेष्वर का जीवन'', ''नए युग का जीवन'', या ''पुनरुत्थित जीवन''। यह प्राथमिक रूप से संख्यात्मक नही है,पर गुणात्मक है (10:10)।

17:3

" अनन्त जीवन यह है,"

यह अनन्त जीवन के प्रति यूहन्ना द्वारा जोडी हुई परिभाशा है। यह आयत मसीहत की दो प्रमुख सच्चाई को प्रगट करता हैः (1) अद्वौतवाद (व्यवस्था. 6:4–6) और (2) यीषु दाऊद वंष का दैवीय मसीह है (2षामू. 7)।

" कि वे तुझे जाने"

यह आयत केवल परमेष्वर के बारे में जानकारी ही नही दंती वरन् एक व्यक्तिगत संबन्ध,हलॉकि एक सच्चाई को भी पका करने की अवष्यकता है। सच्चाई यह है कि यीषु ही मसीह है जो एक सच्चा परमेष्वर का सपूर्ण प्रकाषन है (1:12,14; कुलु. 1:15; इब्रा. 1:3), और उसे व्यक्तियों को विष्वास करना, स्वीकार करना, मनफिरना, आज्ञकारी बनना, और दृढ़ रहना है।

" अद्वैत सच्चे परमेश्वर "

एक सच्चा और एकमात्र परमेष्वर का अस्तित्व के बारे में साबित करने में पुराना निसम अनोखा था (निर्ग. 8:10; 9:14; व्यवस्था. 4:35,39; 6:34; 33:26; 1षामू. 2:2; 2षामू. 7:22)। दूसरे षब्दों में परमेष्वर का अनोखेपन और एकता के पुराना निसम की प्रस्तुती अधिक आत्मिक प्राणीयों के प्राचीन पष्चिमी विचार के खिलाफ थे। यहाँ एकमात्र परमेष्वर ही है परन्तु कई प्राणी है (निर्ग. 15:11; व्यास्था. 3:24; भ.सं 86:8; 89: 6)।

कुछ हद तक पुराने निसम के कुछ अनुचछेंद एक से अधिक परमेष्वर के बारे में इषारा करते है (एलोहिम, पर मेरे लिए एक ही परमेष्वर है)। मूसा ने कुछ ओर भी आत्मिक प्राणीयों को महसूस कर लिया था। यह इस बात को पक्का नही कर रहा कि मूर्तियाँ वास्तव है, परन्तु उन मूर्तियों के पीछे षैतान है (1कुरि. 10:19–20)। अगला विषेशण है "सत्य" *(अलेथीमोस)*। यूहन्ना के लेखों में अक्सर यह षब्द *अलेथेस्* से संबन्धित होता है। ओर इसका अर्थ निकालना कठीन है। इसके पुराने नियम का रूपकात्मक पृश्ठभूमि भरोसेमन्द, ईमानदारी, तथा बफ़ादारी है (एमेथ से)। खुली और स्पश्टता से प्रगट यूनानी पृश्ठभूमि है । षायद यह सत्य बनाम झूठ (तीतुस. 1:2) है।

विषेश षीर्शकः यूहन्ना के लेखें में "सत्य (देखिए ***विषेश षीर्शक 6:55 भी)।***

पिता परमेष्वर

1. परमेष्वर सत्य है (3:33; 7:18,28; 8:26; 17:3; रोमि. 3:4; 1थिस्स. 1:9: 5:20; प्रकाष. 6:10)
2. परमेष्वर का मार्ग सत्य है (प्रकाष. 15:3)
3. परमेष्वर का न्याय सम्य है (प्रकाष. 16:7; 19:2)
4. परमेष्वर का कथन सही है (प्रकाष. 19:11)

2. पुत्र परमेष्वर

क. पुत्र सच्च/सत्य है।

1. सच्चा ज्योति (1:9; 1यूह. 2:8)
2. सच्ची दाखलता (15:1)
3. अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण (1:14,17)
4. वो सत्य हैं(14:6; 8:32)

5. वो सच्चा है (प्रकाष.3:7,14; 19:11)
ख. पुत्र का गवाही सत्य हैं (18:37)
3. यह तुलनात्मक समझ से हो
क. मूसा की व्यवस्था बनाम यीषु के अनुग्रह और सत्य (1:17)
ख. जंगल के मिलापवाला तम्बु बनाम स्वर्ग का मिलापवाला तम्बु (इब्रा. 8:2; 9:1)

4. यूहन्ना में इस षब्द का कई संकेतार्थ है (इब्रानी तथा यूनानी)। यूहन्ना इसे पिता और पुत्र को व्यक्तियों के रूप में,प्रचारकों के रूप में और संदेष के रूप में जिसे अपने अनुयायीयों के पास पहुँचाने के बारे में बताने के लिए प्रयोग करता है (4:13; प्रकाष.22:6)।

5. यूहन्ना में ये दोनों विषेशण सूचित करता है कि पिता एक और एकमात्र भरोसेमन्द दैवीय है (5:44; 1यूह. 5:20) और यीषु सच्चा और संपूर्ण प्रकाषन है जो छुटकारे की उद्धेष्य के लिए, यह केवल जानकारी ही नही,सत्य है!

'' और यीशु मसीह को,
जिसे तू ने भेजा है,''

यीषु पिता के द्वारा भेजा गया है, यह यूहन्ना के पुनरावर्तित दोहरावाद है (3:17,34; 5:36,38; 6:29, 38,57; 7:29; 8:42; 10:369 11:42; 17:3,8,18,21,23,25; 20:21)। रबियों ने आधिकारिक तौर से भेजनवालों को सुचित करने के लिए अपॉस्टलो षब्द का प्रयोग किया है।

17:4

'' मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।''

(देखिए नोटः 13:31—32)। षब्द ''महिमा'' का प्रयोग इस तरह भी कर सकते है किः (1) ''महिमा देना'', (2) ''महिमा को प्रगट करना''। आयत 6 बिन्दु दो को मानते है। यीषु के मुख्य कामों से एक था कि पिता को प्रगट करें (1:14,18)।

''काम पूरा करके ''

यूनानी मूलषब्द में इसका अर्थ है ''संपूर्ण रीति से पूरा करना'' (4:34; 5:369 19:30)। काम तीन प्रकार के थेः (1) पिता को प्रगट करना (1:14,18), पतित मानवजाती का छुटकारा (); और (3) सच्चे मनुश्यत्व का उदाहरण ()। साथ में यीषु की मध्यस्थता जारी है (1यूह. 2:1)।

17:5

''महिमा ... महिमा''

यह आयत यीषु के अस्तित्व के बारे में विषेश महत्व देती है ()। यीषु ने अपने चिन्ह और चमत्कार के द्वारा ''महिमा'' को षिश्यों पर प्रगट किया ()। अब उसकी अन्तिम महिमा होगी उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान, और स्वर्गीय महिमा की ओर वापसी ()। देखिए नोटः महिमा 1:14।

17:6—19

6. मैं ने तेरा नाम उन मनुष्यों पर प्रगट किया जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दियाः वे तेरे थे और तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्हों ने तेरे वचन को मान लिया है।
7. अब वे जान गए हैं, कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है, सब तेरी ओर से है।
8. क्योंकि जो बातें तू ने मुझे पहुंचा दीं, मैं ने उन्हें उनको पहुंचा दिया और उन्हों ने उन को ग्रहण कियाः और सच सच जान लिया है, कि मैं तेरी ओर से निकला हूँ, और प्रतीति कर ली है कि तू ही ने मुझे भेजा।
9. मैं उन के लिये बिनती करता हूँ, संसार के लिये बिनती नहीं करता हूँ परन्तु उन्हीं के लिये जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं।
10. और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है; और जो तेरा है वह मेरा है वह सब तेरा है; और जो तेरा है, वह मेरा है; और इन से मेरी महिमा प्रगट हुई है।
11. मैं आगे को जगत में न रहूँगा, परन्तु ये जगत में रहेंगे, और मैं तेरे पास आता हूँ; हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा कर, कि वे हमारी नाई एक हों।
12. जब मै उन के साथ था, तो मैं ने तेरे उस नाम से, जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा की, मैं ने उन की चौकसी की और विनाश के पुत्र को छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ, इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो।
13. परन्तु अब मैं तेरे पास आता हूँ, और ये बातें जगत में कहता हूँ, कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएं।
14. मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है, और संसार ने उन से बैर किया, क्योंकि जैसा मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।
15. मैं यह बिनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।
16. जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं।
17. सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र करः तेरा वचन सत्य है।
18. जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा।
19. और उन के लिये मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा पवित्र किए जाएं।

17:6

''. मैं ने तेरा नाम प्रगट किया ''

इब्रानी नाम ऐसे व्यक्ति का स्वभाव को दर्षाता है ()। यह वाक्यांष धर्मषास्त्रीय रीति से साबित करता है कि यीषु को देखने का अर्थ है परमेष्वर का देखना()।

''जिन्हें तू ने जगत में से मुझे दियाः''

धर्मषास्त्रीय रीति से यह चुनाव की ओर इषारा करता है (।

'' उन्हों ने तेरे वचन को मान लिया है।''

आज्ञाकारिता गम्भीर बात है ()। यह पुराने नियम की ''निर्दोश'' समझ से प्रयोग किया गया ()। यह परिपूर्ण आज्ञाकारिता या पापरहित जीवन को नही दर्षाता परन्तु जो कुछ भी सुना और प्रगट किया गया उसे पूरा करने

कि एक इच्छा को प्रगट करता है; यानी यह यीषु पर षिश्यों का विष्वास, यीषु में बने रहना और जैसा यीषु ने प्रेम किया वैसे एक दूसरे से प्रेम करना।

17:7

'' वे जान गए हैं,''

यह संदेष का विशय–सूची को दर्षाता है।

'' कि जो कुछ तू ने मुझे दिया है,
सब तेरी ओर से है।''

पिता ने यीषु को जो प्रगट किए उसे उसने कहा (17:8; 7:16; 12:48–49)।

17:8

'' उन्हों ने उन को ग्रहण किया:''

वे यीषु के संदेष जो परमेष्वर के बारे में थे ग्रहण किया। वहाँ किसी कर्म कारक की ओर सीधा कथन नहीं है। 1:12 में सीधा कर्म कारक ''ग्रहण करना'' यीषु की ओर दर्षाता है; यहाँ यीषु ने लाए हुए संदेष का जिक्र है (17:4)। यह सुसमाचार के दोनों पहलू को प्रगट करता है कि यह (1) एक व्यक्ति और (2) एक संदेष है।

'' ग्रहण किया: ... प्रतीति कर ली है ''

यह एक अनिषचित भूतकाल कथन है। यह सच्चाई यीषु के दैवीय उत्भव और संदेष की ओर इषारा करती है ()।

17:9

'' मैं उन के लिये बिनती करता हूँ,''

यीषु हमारे मध्यस्थ और वकील है (1यूह. 2:1)। पवित्रात्मा के समान (रोमि.8:26–27) पिता भी इन कार्यों में व्यस्त है (16:26–27)। छुटकारे के हर पहलू में त्रीएकता का प्रत्येक व्यक्ति षामिल है।

''संसार''

इस अध्याय में 18 बार ''कॉसमॉस'' षब्द का प्रयोग है। यीषु (1) पृथ्वी (17:5,24) और (2) विष्वासियों के दस पतित संसार के प्रति संबन्ध के बारे में ध्यान रखते हैं ()। यूहन्ना रचित सुसमाचार में यह षब्द का तात्पर्य है ''परमेष्वर से अलग हटकर अपनी मर्जी से चलनेवाला एक मानवीय समाज।'' कई बार इसका अर्थ ये होता है (1) पृथ्वी; (2) पृथ्वी पर का सूस्त जीवन; या (3) जीवन जो परमेष्वर से दूर है।

17:10

" और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है;
और जो तेरा है वह मेरा है"

यह त्रीएकता की एकता को प्रगट करती है (17:11,21–23; 16:15)।

'' इन से मेरी महिमा प्रगट हुई है।''

जैसा यीषु पिता को आदर देते है वैसे एक षिश्य के जीवन से यीषु को आदर मिलना चाहिए। कितनी सुन्दर जिम्मेवारी है यह!

17:11

" मैं आगे को जगत में न रहूँगा,"

यह निकटतम भविश्य (स्वर्गारोहण) है जब यीषु पिता के पास वापस जाएंगे (प्रेरित. 1:9–10)।

" पवित्र पिता,"

षब्द ''पवित्र'' का प्रयोग जितना पुराने नियम में हूआ है उतना नए नियम में नहीं है ()। यह विषेशण (हगियॉस) अधिकतर पवित्रात्मा के लिए दिया गया है। इसी यूनानी मूल षब्द का प्रयोग आयत 17 में षिश्यों (हगियासमॉस)के लिए और आयत 19 में यीषु (हगिसाज़ो) के लिए किया गया।
इस मूल षब्द का अर्थ है ''अलग करना''। यह परमेष्वर के उपयोग के लिए अलग किया गया । व्यक्तियों, जगह, और वस्तुओं के लिए प्रयोग करते है।यह परमेष्वर का श्रेश्ठ चरित्र (इस्राएल का पवित्र) को पतित, भौतिक और षारीरिक बातों से अलग सूचित करता है। यीषु पवित्र थे; जैसे उसके पीछे हो लेनेवाले उसके समान बनते जाते हैं वैसे उन्हें भी पवित्रताई दर्षाना है। इसी मूल षब्द से ''संत'' षब्द आया। विष्वासी मसीह में होने के कारण पवित्र है, परन्तु उन्हें चाहिए कि वे जैसे उसके लिए जीते है वैसे पवित्र बनते जाए।

'कि वे हमारी नाई एक हों'''

यह त्रीएक परमेष्वर की संबन्धात्मक एकता को दर्षाता है (7:21,22,23)। यह मसीहियों के लिए एक सुन्दर अनुरोध और जिम्मेवारी है! हमारे दिनों में इसकी कमी है (इफि.4:1–6)। एकता ही कुंजी है।

17:12

'' रक्षा की, ... चौकसी की ''

पहली क्रिया अपूर्ण काल और दूसरी क्रिया अनिष्चित भूतकाल में है। ये दानों पर्यायवाची षब्द हैं। इस अनुच्छेद की मुख्य बात है यीषु की निरन्तर सुरक्षा (1पत. 1:3;9)। एम. आर. विन्सेंट का वर्ड स्टडीस इन द न्यू

टेस्टमेन्ट, भाग. 1 में वह इन दोनों षब्दों के बीच में अन्तर लाता है। वह कहता है पहलेवाला (टेरेयॉ) संभालने और दूसरेवाला (फुलासॉ) सुरक्षित रखने का अर्थ से प्रयोग हुआ है (पृश्ठ. 496)।

'' उन में से कोई नाश न हुआ,''

यह यीषु की सुरक्षा के सामर्थ को दिखाता है (6:37,39; 10:28–29)। षब्द अपॉलुमि का अनुवाद करना कठीन है क्योंकि इसे दो भिन्न तरीके से उपयोग में लाया गया। गेरहार्ड किट्टल अपनी पुस्तक थियॉलजीकल डिक्षनरी ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट में इस षब्द के प्रति कहते है ''साधारण रीति से निम्नलिखित में से ख तथा घ इस संसार से संबन्धित है जैसा कि समानान्तर सुसमाचार में है, क तथा ग अगला संसार से संबन्धित है जैसा कि यूहन्ना और पौलूस मे है'' पृश्ठ. 394।

क. नश्ट करना या मारना
ख. खोना या नश्ट सहना
ग. नाष होना
ध. खो जाना

इस षब्द का प्रयोग अस्तित्व नाष के सिद्धान्त के लिए किया गया (फड्ज.द फयर दाट् कन्स्यूमस), अर्थात् उद्धार न पाए हुए लोग न्याय के बाद अस्तित्व में नही रहेंगे। यह दानि.12:2 के खिलाफ है। यह समानान्तर सुसमाचार के द्वारा प्रयोग किए गए संकेतार्थों और यूहन्ना तथा पौलूस द्वारा प्रयोग किए गए संकेतार्थों के अन्तर से बहक जाते है, उन्होंने आत्मिक खोएपन को रूपकात्मक ढ़ग से विवरण किया है, यह भौतिक नाष को नही दर्षाता। देखिए **विषेश षीर्शकः विनाष** *(अपोलुमी)* 10:10।

'' विनाश के पुत्र''

यह स्पश्ट रूप से यहूदा इसकरियोति को दर्षाता है। 2थिस्स. 2:3 में इसी षब्द का ही प्रयोग ''पाप का पुरूश'' (अन्तिम समय का मसीह विरोधी) के लिए किया गया। इस इब्रानी मुहावरे का अर्थ है ''जो नाष होने के लिए नियुक्त है''। इस आयत में पहले ही कहा गया कि '' जो नाष होने के लिए नियुक्त है उसे छोड़ उन में से कोई नाश न हुआ''।

विषेश षीर्शकः स्वधर्म त्याग *(अपहिसटेमि)*

इस यूनानी षब्द का अर्थ दायरा काफी बड़ा है। अंग्रेजी षब्द '' **स्वधर्म त्याग'' इस से निकला है। इसके अर्थ के लिए संदर्भ ही कुंजि है न कि पहले से निर्धारित परिभाशा।**
यह एक मिश्रित षब्द है। ***अपॉ*** **का अर्थ है ''से'' या ''दूर'',** ***हिसटेमि*** **का अर्थ है ''बैठना'', ''खड़े होना'' या ''दृढता से जमाना''।** देखिए निम्नलिखित (साधारण) प्रयोगः

1. षारीरिक रूप से हटाना
   क. मन्दिर से (लूका. 2:37)
   ख. घर से (मरकुस. 13:34)
   ग. व्यक्ति से (मरकुस. 12:12; 14:50; प्रेरित. 5:38)
   घ. सब वस्तुओं से (मत्ती. 19:27,29)
2. राजनैतिक रूप से हटाना (प्रेरित. 5:37)
3. संबन्ध से हटाना (प्रेरित. 5:38; 15:38; 19:9; 22:29)

4. कानूनी तौर पर हटाना (तलाक) (व्यवस्था. 24:1,3; मत्ती. 5:31; 19:7; मरकुस. 10:4; 1कुरि. 7:11)
5. कर्ज हटाना (मत्ती. 18:24)
6. छोड़ देने में चिन्ता नही दिखाना (मत्ती.4:20; 22:27; यूह. 4:28; 16:32)
7. छोड न देने के द्वारा चिन्ता दिखाना (यूह. 8:29; 14:18)
8. अनुमति देना (मत्ती. 13:30; 19:14; मरकुस. 14:6; लूका. 13:8)

धर्मषास्त्रीय समझ से क्रिया का भी विस्तार प्रयोग है।

1. रद्ध करना, माफी, पाप का भुगतान करना (निर्ग. 32:32; गिन.14:19; अय्यूब. 42:10; मत्ती. 6:12,14–15; मरकुस. 11:25–26)
2. पाप से दूर रहना (2तिमु. 2:19)
3. अपेक्षा करना चले जाने के द्वारा
   व्यवस्था से (मत्ती. 23:23; प्रेरित. 21:21)
   विष्वास से (यहेज. 20:8; लूका. 8:13; 2थिस्स.2:3; 1तिमु.4:1; इब्रा.2:13)

आधुनिक पाठक ऐसे कई धर्मषास्त्रीय सवाल करते है जिसके बारे में नए नियम के लेखकों ने कभी सोचा नहीं है। उसमें से एक है ईमानदारी को विष्वास से अलग करना।

बाइबल में कई व्यक्ति है जो परमेष्वार के लोगों के साथ थे और उनके जीवन में कुछ घटा।

1. पुराने नियम
   क. कोरह (गिन. 16)
   ख. एली के पुत्र (1षमू. 2; 4)
   ग. षैल (1षमू. 11–31)
   घ. झूठे भविश्यद्वक्ते (उदा:)
      1. व्यवस्था. 13:1–5; 18: 19–22
      2. यिर्मा. 28
      3. यहेज. 13:1–7
   ङ झूठे भविश्यद्वक्त्री
      1. यहेज. 13:17
      2. नेह.6:14
   च. इस्राएल के बुरे अगुवे (उदा:)
      1. यिर्मा.5:30–31; 8:1–2; 23:1–4
      2. यहेज. 22:23–31
      3. मीका. 3:5–12

2. नया नियम
   क. यूनानी षब्द है *अपॉस्टासिज़*। दूसरे आगमन से पहले की बुराई तथा झूठी षिक्षा के बारे में पुराना और नए नियम आगाह करता है (मत्ती. 24:24; मरकुस. 13:22; प्रेरित. 20:29,30; 2थिस्स. 2:9–12; 2तिमु. 4:4)। लूका 8:13 में पाया जानेवाला खेत के दृश्टान्त में षायद यीषु ने इस षब्द का प्रयोग किया है। ये झूठे षिक्षक स्पश्टरूप से मसीही नहीं है परन्तु वे उन्हीं में से निकले है (प्ररित. 20:29–30; 1यूह. 2:19); हलॉकि वे सच्चे हैं पर कमजोर विष्वासियों को अपने वष में करने में कामियाव रहे (इब्रा.3:12)।
   धर्मषास्त्रीय प्रष्न यह है कि क्या ये झूठे षिक्षक कभी विष्वासी थे ? उत्तर देना कठीन है, क्योंकि वे प्रादेषिक कलीसिया के सदस्य थे (1यूह. 2:18–19)। कई बार हमारी धर्मषास्त्रीय और परम्परा बाइबल के किसी आयत बिना उत्तर दे देगी।

ख. स्पश्ट विष्वास
1. यहूदा (यूह. 17:12)
2. षैमोन (प्रेरित. 8)
3. मत्ती. 7:21–23 में कहे गए लोग
4. मत्ती 13 में कहे गए
5. हुमिनयुस और सिकन्दर (1तिमु. 1:19–20)
6. हुमिनयुस और फिलेतुस (2तिमु. 2:16–18)
7. देमास (2तिमु. 4:10)
8. झूठे षिक्षक (2पत. 2:19–20; यहुदा. 12–19)
9. मसीही विरोधी (1यूह. 2:18–19)

ग. फलरहित विष्वास
1. मत्ती. 7
2. 1कुरि. 3:10–15
3. 2पत. 1:8–11

प्रतिनिधित्व प्रतिक्रिया हमारे व्यवस्थित धर्मषास्त्र (कैलविनिसम् तथा अरमेनियनिसम्) देने के कारण हम में से बहुत ही कम लोग इन अनुच्छेदों के बारे में सोचते है। कृप्या इस विशय को ले आने के कारण मेरी आलोचना न करें। मेरी चिंता सही व्याख्या पर है। बाइबल को हम से बातें करने की अनुमति देनी चाहिए न कि पहले से बने हुए एक धर्मषास्त्र को बढ़ावा देने को। यह दुःख की बात है कि अधिकतर हमारी धर्मषास्त्र संस्थापक, सांस्कृतिक या संबन्धात्मक (माता–पिता, दोस्त, पासबान) है, न कि बाइबलीय। कुछ परमेष्वर के लोगों ने परमेष्वर के लोग बनने के लिए न कर दी है (रोमि. 9:6)।

''कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो''

भ.सं. 41:9 का यह उद्धृत 13:18; 6:70–71 में है।

17:13

'' कि वे मेरा आनन्द अपने में पूरा पाएं।''

कितना अद्भुत वायदा है यह (15:11; 16:24)! यूहन्ना इसे फिर 1यूह. 1:4 और 2 यूह. 12 में भी किया है।

17:14

'' मैं ने तेरा वचन उन्हें पहुंचा दिया है,''

यहाँ वचन के लिए *लोगॉस* का प्रयोग हुआ है। अयत 8 में इसका पर्याय पद *रेह्मा* का प्रयोग है। यह यीषु के व्यक्तित्व, षिक्षा,और उदाहरणों के द्वारा दैवीय प्रकाषन का सबूत है। यीषु वचन देता है और वचन है। वचन व्यक्तिगत और परीबोधक वस्तु है। हम सुसमाचार के व्यक्ति को स्वागत करते और सुसमाचार संदेष को स्वीकार करते है!

" संसार ने उन से बैर किया,"

संसार द्वारा तिरसकार मसीह द्वारा स्वीकार का एक सबूत है (15:18–20)।

"क्योंकि वे संसार के नहीं।"

विष्वासी इस संसार में है परन्तु संसार के नहीं है (17:16; 1यूह. 2:15–17)।

" जैसा मैं संसार का नहीं,"

"संसार" पतित मानव युग और स्वर्गदूतों को दर्षाता है (8:23)।

17:15

" मैं यह बिनती नहीं करता,
कि तू उन्हें जगत से उठा ले,"

इस संसार में मसीहियों के अन्दर एक लक्ष्य है (17:18; मत्ती. 28: 18–20; प्रेरित. 1:8)। घर जाने का समय अब नही है!

एन ए एस बी, " उस दुष्ट "
एन के जे वी " उस दुष्ट "
एन आर एस वी " उस दुष्ट "
टी इ वी " उस दुष्ट "
एन जे बी " उस दुष्ट "

यह षब्द या तो नपुंसक नहीं तो पुलिंग है। यह साहित्य षैली कई बार दुश्टता के व्यक्ति को दर्षाता है (); इसलिए यह आयत मत्ती. 5:5,37; 6:13; 13:19,38 में बताए गए "दुश्ट" होंगे ()।

17:17

" पवित्र कर:"

यह मूल षब्द "पवित्र" (हागियोस) से निकला हुआ एक अनिषचित भूतकाल आदेष है। मसीह समानता के लिए विष्वासियो को बुलाया गया **। यह केवल सत्य को जानने के लिए ही हो सकता है, जो है जीवित वचन और लिखित वचन ।**

" तेरा वचन सत्य है। "

सत्य परमेष्वर के बारे में यीषु के सन्देष को दर्षाता है (8:31—32)। यीषु को परमेष्वर का सन्देष (*लोगॉस* 1:1,14) और सत्य (14:6) कहते हैं। पवित्रात्मा को भी कई बार सत्य की आत्मा कहा गया (14:17; 15:26; 16:13)। विष्वासी सत्य और पवित्रात्मा (1पत. 1:2) के द्वारा पवित्र किया गया। देखिए **विषेश षीर्शक 6:55 तथा 17:3।**

17:18

" जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा,"

यीषु के मृत्यु तक की आज्ञाकारिता और सेवा का जीवन () उसके अनुयायियों के लिए एक नमूना बनाया (17:19)।वो उनको खोए हुए दस संसार में सेवा के लिए भेजेंगे जैसे उसको भेजा गया था (20:21)। उन्हें चाहिए कि वे इस संसार को घेरे।

17:19

" मैं अपने आप को पवित्र करता हूँ"

यह कालवरी के संदर्भ में है।

" ताकि वे भी सत्य के द्वारा
पवित्र किए जाएं।"

यह ऐसा एक वाक्यांष है जिसका अर्थ है नतीजा पहले से सामने आया है और वह भविश्य में भी जारी रहेगा। हलॉकि वहाँ पर (1) मसीह के क्रूस के काम, पुनरुत्थान, और सवर्गारोहण या (2) उनके निरन्तर मन फिरनेवाला विष्वास और यीषु की षिक्षा के प्रति विष्वास प्रत्युत्तर पर आधारित एक आकस्मिक घटना अवष्य है। देखिए **विषेश षीर्शक 6:55 तथा 17:3।**

17:20—24

20. मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों।
21. जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।
22. और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे की हम एक हैं।
23. मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा।
24. हे पिता, मै चाहता हूँ कि जिन्हें तू ने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ, वहाँ वे भी मेरे साथ हों कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तू ने मुझे दी है, क्योंकि तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रखा।

17:20

" परन्तु उन के लिये भी

जो मुझ पर विश्वास करेंगे, "

यह एक वर्तमानकाल का वाक्य है और भविश्यकाल में कार्य होगा। यह बाद में आनेवाले तमाम विष्वासियों को सूचित कर रहा है और 10:16 के आधार पर अन्यजातियों को भी। देखिए **विषेश षीर्शक 2:23।**

" इन के वचन के द्वारा "

यह *लोगॉस* है। आयत 14 में इसका प्रयोग और 8 में इसका पर्यायवाची षब्द रेह्मा का प्रयोग इस बात की ओर इषारा कर रहा है कि षिश्य यीषु के सन्देष को एक दूसरे तक पहुँचाएंगे (मौखिक और लिखित)।

17:21

"कि वे वैसे ही एक हो"

यह एकता त्रीएकता है ()। यही एक पहलू है जिसका पालन षिश्यों ने नहीं किया।

" इसलिये कि जगत प्रतीति करे,
कि तू ही ने मुझे भेजा। "

एकता का उद्धेष्य सुसमाचार का फैलाव है। आयत 23 भी दस के समान है।
यीषु की प्रार्थना में एक संघर्श है। उन्होंने संसार के लिए प्रार्थना नहीं की (17:9), फिर भी वो अपने चेलों को अपने संदेष के साथ इस संसार में भेज रहे हैं जिस कारण वे सताए जाएंगे पर परमेष्वर संसार से प्रेम करते हैं (17:21,23; 3:16)। परमेष्वर चाहते हैं कि पूरा संसार विष्वास करे ()। परमेष्वर अपने स्वरूप और समानता में बनाए हुए से प्रेम करते है। पूरे संसार के पाप के निमित्त यीषु मरे।

17:22

" और वह महिमा जो तू ने मुझे दी,
मैं ने उन्हें दी है "

महिमा संदेष को दर्षाता है। वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टमेन्ट भाग.5 में ए.टी. रोर्बट्सन कहते है 17:24 में उल्लेखित महिमा अनन्त वचन की नहीं है पर देहधारी वचन की है (1:14; 2:11)" (पृश्ठ. 280)। देखिए नोटः महिमा 1:14।

17:23

" कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं,"

आयत 19 के समान (1) मसीह का आनेवाला काम और (2) उनके विष्वास में बने रहने के आधार पर यहाँ एक आकस्मिक घटना है। यीषु के द्वारा वे एकता में है और उसमें बने रहेंगे। एकता का उद्धेष्य है सुसमाचार फैलाव।

" जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा,
वैसा ही उन से प्रेम रखा।"

यह एक वायदा है **(16:27; 14:21,23), परन्तु एक षर्त है।**

17:24

"जहाँ मैं हूँ
वहाँ वे भी मेरे साथ हों "

यीषु अपने अनुयायियों के लिए जगह तैयार करने हेतु अपनी महिमा की ओर वापस जा रहे हैं (14:1—3)। यह संसार हमारा घर नहीं है न उसका था! ये उसका सृश्टि है, और उसे बयान करेंगे।

" कि वे मेरी उस महिमा को देखें
जो तू ने मुझे दी है "

इस आयत में षब्द "महिमा" आयत 22 के समान नहीं है। ऐसा लगता है कि यहाँ यीषु का अस्तित्व षामिल है।

" जगत की उत्पत्ति से पहिले "

सृश्टि से पहले से ही त्रीएक परमेष्वर छुटकारे के काम में व्यस्त थे। यह वाक्यांष कई बार नए नियम में है ()।

17:25—26
25. हे धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नहीं जाना, परन्तु मैं ने तुझे जाना और इन्हों ने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा।
26. और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूँगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूँ।।

17:25

" धार्मिक पिता,"

यह आयत 11 के पवित्र पिता की संतान हैं। यह एक इब्रानी षब्द से आया है जो "मापने का सरकंडा" है। न्याय का स्तर परमेष्वर ही है।

" संसार ने तुझे नहीं जाना, "

संसार, परमेष्वर से अलग हटकर अपनी मर्जी से चलनेवाले मानवीय समाज परमेष्वर को नहीं जानता है **(17:25) न उसके पुत्र को (1:10)। यह दुश्ट और बुरा है (3:19–20; 7:7)।**

" परन्तु मैं ने तुझे जाना "

यीषु ही परमेष्वर के बारे में समाचार देनेवाला उत्तम और पवित्र श्रोत है (1:18; 3:11)।

17:26

" मैं ने तेरा नाम उन को बताया "

यह पिता का चरित्र और मानवजाती के छुटकारे की योजना को यीषु के द्वारा प्रगट करने को दर्षाता है (17:6,11,12)। आयत 25–26 में षब्द 5 बार आया है।

" और बताता रहूँगा "

यह निम्नलिखित बातों की ओर इषारा कर रहा हैः **(1) यीषु के निरन्तर प्रकाषन में पवित्रात्मा द्वारा जो यीषु की षिक्षा को स्पश्ट करता है; या (2) उद्धार (पीढा का सप्ताह) की घटना आरम्भ होने को है। इस अनुच्छेद का प्रसंग बिन्दु 1 है। उद्धार में एक व्यक्ति और एक सन्देष, एक निर्णय और जीवनषैली, एक प्रारम्भिक विष्वास और एक निरन्तर विष्वास षामिल है। इस में "जानना" का यूनानी तथा इब्रानी संकेतार्थ सम्मिलित है।**

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. **यह प्रार्थना** धर्मषास्त्रीय रूप से इतनी महत्वपूर्ण क्यों है ?
2. **क्या यहूदा अनुग्रह से पतित विष्वासी था ?**
3. **हमारी एकता का क्या उद्धेष्य है ?**
4. **यीषु का अस्तित्व** इतना महत्वपूर्ण क्यों है ?
5. इस प्रसंग में इन कुंजी षब्दों की परिभाशा देंः
   - **क. महिमा**
   - **ख. देना**
   - **ग. जानना**
   - **घ. भेजा**
   - **ङ. नाम**
   - **च. संसार**

यूहन्ना – 18

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
धोखा और यीषु की	गतसमने में धोखा	गिरफ्तारी,	यीषु की गिरफ्तारी	यीषु की गिरफ्तारी

गिरफ्तारी	और यीशु की गिरफ्तारी	मुकद्दमा, क्रूसीकरण, और दफन (18:1—19:42)		
18:1—11	18:1—11	18:1—11	18:1—4 18:5क 18:5ख 18:5ग—7क 18:7ख 18:8—9 18:10—11	18:1—9 18:10—11
यीशु महायाजक के सामने	यीशु महायाजक के सामने		यीशु हन्ना के सामने	यीशु हन्ना और काइफा के सामने, पतरस इनकार करता है
18:12—14	18:12—14	18:12—14	18:12—14	18:12—14
पतरस के द्वारा यीशु का इनकार	पतरस के द्वारा यीशु का इनकार		पतरस के द्वारा यीशु का इनकार	
18:15—18	18:15—18	18:15—18	18:15—17क 18:17ख 18:18	18:15—18
महायाजक के द्वारा पूछताछ	महायाजक के द्वारा पूछताछ		महायाजक के द्वारा पूछताछ	
18:19—24	18:19—24	18:19—24	18:19—21 18:22 18:23 18:24	18:19—24
पतरस यीशु का इनकार दूसरी बार कर रहा है	पतरस यीशु का इनकार ओर दो बार किया		पतरस यीशु का इनकार दूसरी बार कर रहा है	
18:25—27	18:25—27	18:25—27	18:25क 18:25ख 18:26 18:27	18:25—27
यीशु पीलातुस के सामने	पीलातुस के न्यायालय में		यीशु पीलातुस के सामने	यीशु पीलातुस के सामने
18:28—38	18:28—38	18:28—32	18:28—29 18:30 18:31क 18:31ख—32	18:28—32
		18:33—38क	18:33 18:34 18:35 18:36	18:33—19:3

			18:37क
			18:37ख
			18:38क
यीषु के लिए मृत्यु का दण्डादेष (18:36ख–19:16ग)	बरब्बा की जगह यीषु को		यीषु के लिए मृत्यु का दण्डादेष (18:36ख– 19:16ग)
18:36ख–19:7		18:36ख–19:7	18:36ख–39
	18:39–40		
			18:40–19:3

<u>अध्ययन कालचक्र तीन</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड़ सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 18: 1–40</u>

क. गतसमने में यीषु की वेदना को यूहन्ना छोड़ देते है। यह इसलिए था कि वह यीषु के षक्तिषाली चरित्र का चित्रण कर रहे हैं जो हर परिस्थिती का नियंत्रण रखते हैं। उन्होंने स्वयं अपने प्राण दान किए (10:11,15,17,18)।

ख. इस अध्याय के घटनाक्रम समानान्तर सुसमाचार से भिन्न है। यह फरक इसलिए कि **(1) प्रत्यक्षदर्षी लेख के प्रकृति या (2) लेखक का** धर्मषास्त्रीय **उद्धेष्य। पवित्रात्मा प्रेरित सुसमाचार लेखकों के पास अधिकार था कि वे यीषु के जीवन की घटना, षब्दों का चुनाव करें और व्यवस्थित करें।**

ग. इस अध्याय के लिए सबसे उत्तम सहायक पुस्तिका है ए.एन.षेरविन का *रोमन सोसाईटी एण्ड रोमन लॉ इन द एन टी*।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

18:1—11

1. यीशु ये बातें कहकर अपने चेलों के साथ किद्रोन के नाले के पार गया, वहाँ एक बारी थी, जिस में वह और उसके चेले गए।
2. और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी वह जगह जानता था, क्योंकि यीशु अपने चेलों के साथ वहाँ जाया करता था।
3. तब यहूदा पलटन को और महायाजकों और फरीसियों की ओर से प्यादों को लेकर दीपकों और मशालों और हथियारों को लिए हुए वहाँ आया।
4. तब यीशु उन सब बातों को जो उस पर आनेवाली थीं, जानकर निकला, और उन से कहने लगा, किसे ढूंढ़ते हो?
5. उन्हों ने उसको उत्तर दिया, यीशु नासरी कोः यीशु ने उन से कहा, मैं ही हूँ: और उसका पकड़वानेवाला यहूदा भी उन के साथ खड़ा था।
6. उसके यह कहते ही, कि मैं हूँ, वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े।
7. तब उस ने फिर उन से पूछा, तुम किस को ढूंढ़ते हो।
8. वे बोले, यीशु नासरी को। यीशु ने उत्तर दिया, मैं तो तुम से कह चुका हूँ कि मैं ही हूँ, यदि मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें जाने दो।
9. यह इसलिये हुआ, कि वह वचन पूरा हो, जो उस ने कहा था कि जिन्हें तू ने मुझे दिया, उन में से मैं ने एक को भी न खोया।
10. शमौन पतरस ने तलवार, जो उसके पास थी, खींची और महायाजक के दास पर चलाकर, उसका दहिना कान उड़ा दिया, उस दास का नाम मलखुस था।
11. तब यीशु ने पतरस से कहा, अपनी तलवार काठी में रखः जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मैं उसे न पीऊं?

18:1

" किद्रोन के नाले "

षब्द नाले का अर्थ है "षीतकालीन–जलाषय" या "बरसाती नाला"। किद्रोन का अर्थ है (1) केदार, या (2) काला। यह ऐसा एक नाला है जो ग्रीश्मकाल में सूख जाता है और षीतकाल में बहता है। इस जगह में बलि के तमाम खून को बहाया जाता था। षायद इसलिए इसे षब्द "काला" से सूचित किया गया। यह जैतून और मोरिय्याह पहाड़ के बीच से बहता था (2षमू.15:23; 2राजा. 23:4,6,12; 2 इति. 15:16; 29:16; 30:14; यिर्मा. 31:40)।
इस बिन्दु पे यूनानी हस्तलेखों में भिन्नता है:

1. केदारों के (केद्रोन) आलेफ,बी, सी, एल में
2. केदार के (केद्रऊ) आलेफ, डी, डब्लयू में
3. किद्रोन के (केद्रोन) ए, एस में

"एक बारी "

गतसमने में यीषु की वेदना को यूहन्ना पूरी रीति से छोड़ देता है, परन्तु बारी के अन्दर की गिरफ्तारी का विवरण है। यह यीषु की मनपसन्द विश्राम की जगह है (18:2; लूका. 22:39)। यीषु स्पशट रूप से उसके जीवन के अन्तिम सप्ताह में इस जगह में सोए (लूका. 21:37)। यरूषलेम में बारी बनाना मना था क्योंकि उसमें उपयोग होनेवाली खाद की वजह से षहर अपवित्र माना जाता था। धनी लोग, इसलिए अपने बारी, दाख की बारी,आदि जैतून पहाड़ के पास बनाया करते थे।

"यहूदा "

यहूदा और उसके लक्ष्य के बारे में कई अनुमान है। यूहन्ना रचित सुसमाचार में उसे उल्लेखित और उसकी निन्दा करता है (6:71; 12:4; 13:2,26,39; 18:2,3,5)। यूहन्ना उसे लालची और विद्वेशी के रूप में चित्रित करता है।
यहाँ की बड़ी समस्या है कि परमेष्वर का परमाधिकार और मनुश्य की स्वेच्छा धर्मषास्त्रीय मामला। क्या परमेष्वर और यीषु ने यहूदा के साथ चतुराई की ? यदि षैतान ने यीषु को पकड़वाने के लिए उसे उक्साया तो क्या वह दोशी है या परमेष्वर ने पहले इस बाात को निर्धारित किया और ऐसे होने दिया तो वह दोशी है ?बाइबल इस सवाल का जवाब सीधे नहीं देती। परमेष्वर इतिहास के ऊपर नियंत्रण रखते हैं; वो भविश्य की घटनाओं को जानते हैं; परन्तु मनुश्य अपना चुनाव और कार्य के लिए जिम्मेवार है। परमेष्वर निश्कपट है, चतुर नहीं है।

18:3

एन ए एस बी, "रोमी योद्धाओं की टुकड़ी"
एन के जे वी "फौज का एक दल"
एन आर एस वी "सैनिक दस्ता"
टी इ वी "रोमी सैनिकों का एक झुण्ड"
एन जे बी "एक दस्ता"
यह रोमी सेना की एक पलटन की ओर इषारा करता है जिसमें 600 सैनिक होते है और वे मन्दिर के आस–पास के गढ़ में मौजूद थे (प्रेरित. 21:31,33)। यह सही नहीं लगता है कि इतनी बड़ी मात्रा में उन्हें बुलाया होगा। पर्व के दौरान के लड़ाई के लिए वे तैयार रहते थे। यीषु के मुकद्दमे में रोमी भी षामिल थे क्योंकि यहूदी यीषु को क्रूस पर चढ़ाना चाहते थे। इस के लिए काफी समय लग जाता था; केवल रोमी सरकार की अनुमती तथा सहयोग से ही यह कार्य हो सकता था।

" महायाजकों की ओर से प्यादे"

मन्दिर का लैवीय पुलीस भी रोमी सेना के साथ हो लिया। एक बार वे यीषु को गिरफ्तार करने में असफल रहे (7:32,35)।

" हथियार"

रोमी सैनिको के पास तलवारें थीं (6:64; 13:1,11) मन्दिर का लैवीय पुलीस मषाले लिए हुए था (मत्ती. 26:43; मरकुस. 14:43; लूका. 22:52)।

18:4

" तब यीशु उन सब बातों को जानकर "

यह यीशु के अपने ज्ञान और गिरफ्तारी, मुकद्दमा तथा क्रूसीकरण के ऊपर अपना नियंत्रण का सबसे बलपूर्वक कथन है (18:10,11,15,17,18)। यीशु का क्रूसीकरण आकस्मिक नहीं है (मरकुस. 10:45)।

18:5

एन ए एस बी, एन जे बी "यीशु नासरी"

एन के जे वी ,एन आर एस वी , टी इ वी "नासरत का यीशु"
नासरत षब्द के उत्भव के प्रति कई तर्क–वितर्क हैं। षायद इस षब्द का अर्थ निम्नलिखित बातों से कोई एक होगा (1) नासरी (2) नासरत (गिन. 6) या (3)नासरत से। नए नियम का प्रयोग तीसरे के लिए मान्यता देती है। कुछ लोगों ने इसे इब्रानी व्यंजन अक्षर एन ज़ेड आर से जोड़कर मसीह षीर्शक "षाखा" बना दिया (नेज़र यषा. 11:1; 14:19; 60:21)।

" मैं ही हूँ: "

यह षाब्दिक रूप से " मैं हूँ: "। जिसे यहोवा के लिए यहुदी प्रयोग करते है, परमेष्वर का वाचकीय नाम है (निर्ग.3:14; यषा.41:4)। इसी व्याकरणात्मक ढाँचे से यीशु ने दैवीयता के आग्रह 4:26; 8:24,28,58;13:19 में करते हैं। इसके महत्व को बताने के लिए इस आयत में इसे तीन बार दोहराया गया (18:6,8)।

18:6

" वे पीछे हटकर भूमि पर गिर पड़े "

यह यूहन्ना द्वारा यीशु के सामर्थषाली चरित्र और उपस्थिती को बताने का तरीका है। यह आदरसूचक किसी के आगे झुकने को नही दिखाता परन्तु भय को बताता है।

18:7

" तब उस ने फिर उन से पूछा, "

संभवता यीशु अपनी ओर ध्यान आकर्शित कर रहे थे न कि षिश्यों पर। यह आयत 8 के संदर्भ से जुड़ती है।

18:8

"यदि"

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है ; वे उसको ढूंढ़ रहा था।

" इन्हें जाने दो।"

यह एक अनिषचित भूतकाल आदेष है। यह जक.13:7 की भविश्यद्वाणी है **(मत्ती. 26:31; यूह. 16:32)।**

18:9

" कि वह वचन पूरा हो,
जो उस ने कहा था "

यह 16:32 के लिए संकेत है पर 17:12 का उद्धृत है।

18:10

"शमौन पतरस ने तलवार,
खींची और महायाजक के दास पर चलाकर,
उसका दहिना कान उड़ा दिया,"

पतरस का लक्ष्य उसका कान नही था पर सिर था! यह पतरस की सहमती को दिखाता है जिसके तहत वह यीषु के लिए मरने के लिए तैयार हुआ। पतरस का यह काम षायद यीषु की ओर से कहे गए कथन (लूका. 22:36—38) को गलत समझने के द्वारा हुआ है। लूका. 22:51 बताता है कि यीषु ने उसके कान को छूकर चंगा कर दिया।

" उस दास का नाम मलखुस था।"

यह एक प्रत्यक्षदर्षी ब्योरे को दर्षाता है।

18:11

" जो कटोरा "

इस रूपक को पुराने नियम में एक व्यक्ति की मंजिल को बताने के लिए प्रयोग किया है, नकारात्मक समझ से **(भ.सं. 11:6; 60:3; 75:8; यषा. 51:17,22; यिर्मा. 25:15,16,27—28)।**
यीषु के सवाल का **व्याकरणात्मक ढाँचा "हाँ" में उत्तर चाहता है। पतरस ऐसा कार्य करता है कि वह जानता है सबसे उत्तम** (मत्ती. 16:22; यूह. 13:8)।

18:12—14

12. तब सिपाहियों और उन के सूबेदार और यहूदियों के प्यादों ने यीशु को पकड़कर बान्ध लिया।
13. और पहले उसे हन्ना के पास ले गए क्योंकि वह उस वर्ष के महायाजक काइफा का ससुर था।
14. यह वही काइफा था, जिस ने यहूदियों को सलाह दी थी कि हमारे लोगों के लिये एक पुरूष का मरना अच्छा है।

18:12

"यीशु को बाँन्ध लिया।"

यह यीषु से डरने के कारण नही पर यह उनका साधारण तरीका था (18:24)।

18:13

" पहले उसे हन्ना के पास ले गए "

इन मुकद्दमों के क्रम के बारे में काफी सारे तर्क हैं। यूहन्ना में आयत 24 पृश्ठ के नीचे दी गई टिप्पणी के समान लगती है पर समानान्तर सुसमाचार में इसकी खास भूमिका है (मत्ती. 26:57; मरकुस. 14:53)।
पुराने नियम के अनुसार याजकत्व जीवन भर का है और यह हारून वंषज का है। परन्तु रामियों ने एक लैवी परिवार को खरीदकर इसे राजनैतिक बात बना दी। महिलाओं के आंगन में होनेवाले व्योपार को चलाना और नियंत्रण में रखने का काम महायाजक का था। यीषु के द्वारा मन्दिर को षुद्ध करना इस परिवार के क्रोध का कारण हुआ ।
जॉतिफस के अनुसार हन्ना 6–14 ई0 का महायाजक था। उसे सिरिया के राजपाल क्यूरिन्यूस ने नियुक्त किया था पर वलेरियुस के द्वारा हटाया गाया। उसके रिष्तेदारों (5 पुत्र और 1 पोता) ने पदभार संभाला। काइफा (18–36 ई0) उसका दामाद था (18:13)ष जिसने अब उस पदभार को संभाला है। वास्तविक रूप से इस पदवी को चलानेवाला हन्ना ही था। यूहन्ना ऐसा चित्रित करता है कि यीषु को सर्वप्रथम उसके पास ले जाया गया (18:13,19–22)।

18:14

" काइफा "

यहाँ यूहन्ना का ध्यान काइफा के द्वारा अज्ञानता में की गई यीषु की मृत्यु की भविश्यद्वाणी है (11:50)। वह हन्ना का दामाद और सन् 18–36 ई0 का महायाजक था। देखिए नोट:11:49।

18:अ15–18

15. शमौन पतरस और एक और चेला भी यीशु के पीछे हो लिए: यह चेला महायाजक का जाना पहचाना था और यीशु के साथ महायाजक के आंगन में गया।
16. परन्तु पतरस द्वार पर खड़ा रहा, तब वह दूसरा चेला जो महायाजक का जाना पहचाना था, बाहर निकला, और द्वारपालिन से कहकर, पतरस को भीतर ले आया।
17. उस दासी ने जो द्वारपालिन थी, पतरस से कहा, क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से है? उस ने कहा, मैं नहीं हूँ।
18. दास और प्यादे जाड़े के कारण कोएले धधकाकर खड़े ताप रहे थे और पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था।।

18:15

"शमौन पतरस और एक और चेला भी

यीशु के पीछे हो लिए''

दूसरे षिश्य का पहचाल के बारे में कई तर्क हैः (1) पारम्परीक सिद्धान्त है कि वह यूहन्ना था क्योंकि 20:2,3,4,8 में उसके लिए यही वाक्यांष का प्रयोग हुआ है। साथ में 19:25 में उसकी माँ का नाम भी दर्ज है। वह षायद मरीयम की बहन थी अर्थात् वह लैवी और याजक था (पॉलीकार्प का गवाही)। (2) यह षायद वहाँ का प्रादेषिक षिश्य जैसे कि निकुदिमुस या अरिमिथ्या के यूसफ़ होंगे क्योंकि महायाजक और उसके परिवार के साथ उनका रिष्ता अच्छा था (18:15—16)।

''यह चेला महायाजक का जाना पहचाना था ''

इस षब्द का अर्थ है ''खास मित्र''(लूका. 2:44; 23:49)। यूहन्ना में यह मछलियों के व्यापार से संबन्धित हो सकता है उसका परिवार यरूषलेम में मछलियाँ लाते होगा।

18:17

'' उस दासी ने जो द्वारपालिन थी,
पतरस से कहा,
क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से है? ''

यह व्याकरणात्मक ढाँचा, जैसे आयत 25, ''न'' में उत्तर चाहता है। यह यीषु के नाम न लेनेवालों की निन्दा को दर्षाता है। उसने यह प्रष्न इसलिए पूछा होगा (1) यूहन्ना के साथ पतरस का रिष्ता या (2) पतरस का गलीली उच्चारण।

'' मैं नहीं हूँ''

पतरस यीषु के निमित्त मरने के लिए तैयार था परन्तु ईमानदारी से एक दासी के प्रष्न का उत्तर देने के लिए तैयार नहीं था। समानान्तर सुसमाचार में तीनों तिरस्कार एक साथ दिए गए हैं परन्तु यूहन्ना में हन्ना द्वारा यीषु से प्रष्न ने तिरस्कार को बाँट दिया है (18:24)।

18:18

यह कहानी स्पश्ट विवरणों के साथ बताई गई है।

18:19—24

19. तब महायाजक ने यीशु से उसके चेलों के विषय में और उसके उपदेश के विषय में पूछा।
20. यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि मैं ने जागत से खोलकर बातें की; मैं ने सभाओं और आराधनालय में जहाँ सब यहूदी इकट्ठे हुआ करते हैं सदा उपदेश किया और गुप्त में कुछ भी नहीं कहाँ
21. तू मुझ से क्यों पूछता है? सुननेवालों से पूछः कि मैं ने उन से क्या कहा? देख वे जानते हैं; कि मैं ने

क्या क्या कहा?
22. तब उस ने यह कहा, तो प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था, यीशु को थप्पड़ मारकर कहा, क्या तू महायाजक को इस प्रकार उत्तर देता है।
23. यीशु ने उसे उत्तर दिया, यदि मैं ने बुरा कहा, तो उस बुराई पर गवाही दे; परन्तु यदि भला कहा, तो मुझे क्यों मारता है?
24. हन्ना ने उसे बन्धे हुए काइफा महायाजक के पास भेज दिया।

18:19

'' तब महायाजक ने यीशु से
उसके चेलों के विषय में
और उसके उपदेश के विषय में पूछा।''

यह हन्ना की ओर इषारा करता है न कि काइफा की ओर। सिंहासन के पीछे की षक्ति हन्ना ही था। उसने सन् 6–15 ई0 तक षासन किया। उसके तुरन्त बाद उसके दामाद ने और बाद में उसके 5 पुत्र और एक पोते ने षासन किया। हन्ना, जिसके पास मन्दिर परीसर में व्योपार करने का अधिकर है, उस व्यक्ति से जवाब तलब करने में व्याकुल था जिसने दो बार मन्दिर को षुद्ध किया था। यह दिलचस्प है कि हन्ना यीषु के चेले और षिक्षा के बारे में जाननेके लिए उत्सुक था।

18:20

यह वास्तव में सत्य है कि यीषु ने सार्वजनिकरूप में षिक्षा दी। हलॉकि यह भी सत्य है कि उसकी कई षिक्षाएं भीड़ के लिए ढकी हुई जैसे थी (मरकुस. 4:10–12)। सही मामला यह था कि उसके सुननेवालों में आत्मिक अन्धापन था।

18:21

'' तू मुझ से क्यों पूछता है?''

आयत 20 में यीषु अपनी षिक्षा को सार्वजनिक तरीके से साबित करते हैं। अब यीषु कह रहे हैं कि यहूदी नियम के अनुसार हन्ना से जवाब तलब गलत है।

18:22

'' प्यादों में से एक ने जो पास खड़ा था,
यीशु को थप्पड़ मारकर कहा, ''

इस षब्द का अर्थ है ''थप्पड़ देना'' या ''डंडे से मारना''। इसका अर्थ यह भी है ''हाथ से थप्पड़ मारना''। यह यषा. 50:6 के लिए एक संकेत है। यीषु कहते है यदि उसने गलती की तो दोशी ठहाराओ; नही तो मारते क्यों हैं ?

18:23

''यदि ... यदि''

यहाँ दो पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। यीषु हन्ना को सबूत लाने के लिए चुनौती दे रहे हैं।

18:24

समानान्तर सुसमाचार में मुकद्दमें का यह क्रम उलटा है।

18:25—27

25. शमौन पतरस खड़ा हुआ ताप रहा था। तब उन्हों ने उस से कहा; क्या तू भी उसके चेलों में से है? उस न इन्कार करके कहा, मैं नहीं हूँ।
26. महायाजक के दासों में से एक जो उसके कुटुम्ब में से था, जिसका कान पतरस ने काट डाला था, बोला, क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था?
27. पतरस फिर इन्कार कर गया और तुरन्त मुर्गे ने बांग दी।।

18:26

*'' महायाजक के दासों में से एक जो उसके कुटुम्ब में से था,
जिसका कान पतरस ने काट डाला था, ''*

पतरस से सवाल किसने किया इस मामले में चारों सुसमाचार में भिन्नता है: (1) मरकुस में एक नौकरानी ने पहला सवाल किया (मरकुस. 14:69); (2) मत्ती में एक दासी ने किया (मत्ती. 26:71); और (3) लूका में एक पुरुश ने सवाल किया (लूका. 22:58)। ऐतिहासिक ढाँच के आधार पर ऐसा लगता है कि जब वे आग ताप रहे थे तब किसी ने यह सवाल षुरू किया और दूसरे भी इस में षामिल हो गए।

'' क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था?''

अयात 17 तथा 25 के दो सवालों के विपरीत में यह **व्याकरणात्मक ढाँचा ''हाँ'' में उत्तर चाहता है।**

18:27

'' पतरस फिर इन्कार कर गया ''

मरकुस. 14:71 तथा मत्ती. 26:74 के आधार पर हमें मालूम है कि पतरस ने षपथ खाकर नकारा और कोसने लगा।

"तुरन्त मुर्गे ने बांग दी।"

चारों सुसमाचार के आधर पर यह घटनाएं आधी रात के 12 बजे से भोर के 3 बजे के बीच में हुईं। यहूदी यरूषलेम षहर में पषू पक्षियों को रखना मना करते थे, इसलिए यह एक रोमी मुर्गा होगा। लूका. 22:61 में लिखा है कि यीषु ने मुड़कर पतरस को देखा। ऐसा विष्वास किया जाता है कि हन्ना और काइफा एक ही इमारत में रहते थे और प्यादे यीषु को हन्ना के पास से काइफा और काइफा के पास से सनहिद्रन में लेकर जा रहे है। इस जाने के दौरान यीषु ने पतरस को देखा। यह सब आनुमानिक है क्योंकि हमारे पास रात के इन मुकद्दमों की ऐतिहासिक कालानुक्रमिका नहीं है।

18:28—32

28. और वे यीशु को काइफा के पास से किले को ले गए और भोर का समय था, परन्तु वे आप किले के भीतर न गए ताकि अशुद्ध न हों परन्तु फसह खा सकें।
29. तब पीलातुस उन के पास बाहर निकल आया और कहा, तुम इस मनुष्य पर किस बात की आरोप करते हो
30. उन्हों ने उस को उत्तर दिया, कि यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते।
31. पीलातुस ने उन से कहा, तुम ही इसे ले जाकर अपनी व्यवस्था के अनुसार उसका न्याय करोः यहूदयों ने उस से कहा, हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें।
32. यह इसलिये हुआ, कि यीशु की वह बात पूरी हो जो उस ने यह संकेत देते हुए कही थी, कि उसका मरना कैसा होगा।।

18:28

एन ए एस बी, एन के जे वी , एन जे बी **"किला"**
एन आर एस वी **"पिलातुस की निवासस्थान"**
टी इ वी **"राजपाल का महल"**
यह एक लतीनी षब्द है जो रोमी राज्यपाल की **निवासस्थान** की ओर इषारा करता है। यह अन्टोनियो गढ़ हो सकता है जो मन्दिर या हेरोद के महल के पास है।

" भोर का समय था,"

रोमी दस्तावेज के अनुसार पलिस्तीनी रोमी अधिकारी लोग न्यायालय में सवेरे एकत्रित होते थे। इसलिए भोर के समय सनहिद्रन ने इकट्ठे होकर गैरकानूनी रात्री के मुकद्दमे को कानूनी बनाने की प्रयास किया । वे तुरन्त यीषु को पीलातुस के पास ले गए।

" परन्तु वे आप किले के भीतर न गए

ताकि अशुद्ध न हों ''

अन्यजातीय व्यक्ति के निवासस्थान में प्रवेष करने के द्वारा वे फसह के लिए अषुद्ध हो सकता है। यह कितना व्यंग्यात्मक है कि वे रसमी कार्यों में अधिक महत्व दे रहे हैं और एक मनुश्य को गैरकानूनी तरीके से मृत्यु के लिए सौंप रहे हैं।
यह आयत विवादास्पद वचन है जो समानान्तर सुसमाचार जो दृढ़ता पूर्वक कहती है कि यीषु ने षिश्यों के साथ फसह भोजन किया (मत्ती. 26:17; मरकुस. 14:12; लूका. 22:1), और यूहन्ना रचित सुसमाचार जो दृढ़ता पूर्वक कहता है कि यीषु की गिरफ्तारी परम्परागत फसह पर्व की तैयारी के दिन में हुई , के बीच की ऐतिहासिक भिन्नता के बारे में कहते है। जरोम बिबलिकल कमन्टरी में प्रसिद्ध कैथलिक विद्वान रायमन्ड ब्रउन इस प्रकार कहते हैं:

> ''ऐतिहासिकता के मापदण्ड पे देखा जाए तो समानान्तर सुसमाचार से बढ़कर यूहन्ना रचित सुसमाचार में लिखी गई घटनाओं को अटल रहना चाहिए। उपरोक्त अनुच्छेद – एक साक्षी ब्यारा है जिसे समानान्तर सुसमाचार की परम्परा मालूम थी – कभी न सुलझा पानेवाली समस्या पैदा कर दी। यदि, दूसरी ओर, हम उस प्रत्यक्षदर्षी साक्षी जिसे यूहन्ना रचित सुसमाचार की रचना हुई समझते हैं तो यह अनुच्छेद अधिक समझने योग्य होंगे'' (458)।

वहाँ यह भी संभव है कि दो अलग अलग दिन में फसह मनाया जाता था, गुरुवार और षुक्रवार को। और एक समस्या इसके साथ जोडी गई कि षब्द ''फसह'' एक दिन का और 8 दिनका भी पर्व हो सकता है (फसह अखमिरी रोटी से षुरू हो जाता है, निर्ग. 12)।

'' फसह खा सकें। ''

अन्तिम भोजन के सही तिथि के बारे में अभी भी समस्या है। ऐसा लगता है कि समानान्तर सुसमाचार कहने का प्रयास कर रहा है कि यह फसह के भोजन में हुआ, परन्तु यूहन्ना कहते है कि यह एक दिन पहले हुआ है (18:28; 19:14)। उत्तर यह है कि षब्द ''फसह'' एक दिन का और 8 दिनका भी पर्व हो सकता है या एक विषेश सब्त भी हो सकता हैं।

18:29

जैसे फिरोन को परमेष्वर ने उपयोग किया वैसे यहाँ पीलातुस के व्यक्तित्व को परमेष्वर उपयोग में लाते हैं। सन् 26ई0 में साम्राट तिबरियास ने इसे यहुदिया के मुख्तार के रूप में नियुक्त किया। उसे वलेरियुस ग्रेटस (जिसने हन्ना को महायाजक पदवी से हटाया) के साथ अदला बदला किया गया। पोन्तियुस पीलातुस 5 वॉ रोमी मुख्तार था। वह अरखेलियुस (हेरोद महान का पुत्र) के राज्य का प्रबन्धक था जिसमें यहूदिया,गाज़ा, मृतसागर प्रान्त थे। पिलातुस के बारे में जानकारी हमें फ्लेवियस जॉसिफस के लेखों में मिलती है।

***विषेश षीर्शक:** पोन्तियुस पीलातुस*

1. व्यक्ति
   क. जन्मस्थान और समय अज्ञात है
   ख. इक्यूस्ट्रियन परिवार से है ()
   ग. पूर्व नियुक्ति अज्ञात है।

2. उसका व्यक्तित्व

क. दो विभिन्न दृश्टिकोण

1. फिलो और जॉसिफस उसे एक क्रूर तानाषाह के रूप में चित्रित करते है

2. नया नियम (सुसमाचार, प्रेरित) उसे कमजोर और आसानी से प्रभावित होनेवाला रोमी मुख्तार के रूप में चित्रित करता है।

ख. इन दोनो विचार के बारे में पॉल बारनेट, जीसस् एण्ड द राइज़ ऑफ एरली क्रिस्टियानीटी पृश्ठ. 143–148 में नुमाइषी विवरण देते हैं।

1. पीलातुस की नियुक्ति यहूदियों के मददगार साम्राट तिबरियास ने नहीं की परन्तु तिबरियास के मुख्य सलाहकार सेजान्युस जो यहूदी विरोधी था, ने की।

2. तिबरियास की राजनैतिक षक्ति क्षीण होने लगी और सेजान्युस सिंहासन के पीछे की षक्ति बन गया जो यहूदियों से नफरत करता था।

3. पीलातुस सेजान्युस का षरणागत था और निम्नलिखित बातों से उसे मोह लेना चाहता था।

1) यरूषलेम में रोमी कोटि को लाना (26ई0),जिसे पहले मुख्तारों ने कभी नहीं किया। रोमी देवताओं का चिन्ह यहूदियो के रोश को भड़काया।

2) रोमी देवताओं के चिन्ह से मुद्रित सिक्का बनाना (29–31 ई0)। जॉसिफस कहते है कि यहूदियों की रीतियों के उद्धेष्य से वह कर रहा था।

3) यरूषलेम में कृत्रिम नहर बनाने के लिए मन्दिर से धन लिया जाना।

4) यरूषलेम में फसह के दौरान कई गलीलियों का कत्ल करवाना (लूका. 13:12)।

5) सन् 31 ई0 में रोमी विजयोपहारों को यरूषलेम में लाना। हेरोद महान के पुत्र ने इसे हटाने का अनुरोध किया परन्तु उसने नहीं माना, इसलिए उन्होंने तिबरियास को लिखा और उसने उन चीज़ों को समुद्र के मार्ग कैसरिया में पहुँचाने की आदेष दिया ।

6) गेरिसिम पहाड़ में अपने धर्म की खोई हुई पवित्र वस्तुओं की खोज में जो सामरी गए थे उनका कत्ल करवाया (36/37 ई0)। इसकारण उनके प्रादेषिक अगुवे (विटेलियुस, सिरिया के राज्याधिकारी) ने उसे निश्कासित करके रोम में भेज दिया।

7) सन् 31 ई0 में सेजान्युस **को फाँसी दी गई और तिबरियास को राजनीती में पुनःप्रतिश्ठित किया गया।; इसलिए** सेजान्युस **का भरोसा जीतने हेतु पीलातुस ने बिन्दु 1,2,3,4 को किया। बिन्दु 5 और 6 तिबरियास का दिल जीतने के लिए किया गया परन्तु नुक्सान भुगतना पड़ा।**

8) यह स्पश्ट है कि यहूदी पक्ष साम्राट पुनः प्रतिश्ठित हो गया और यहूदियों के साथ नरमी से पेष आने के लिए सारे मुख्तारों को खत भी मिल चुका था, इसलिए यहूदी अगुवों ने मौके का फायदा उठाकर यीषु को सलीब पर चढ़ाने के लिए पीलातुस को मजबूर किया।

3. उसका अन्त

क. तिबरियास की मृत्यु के तुरन्त बाद उसे रोम में वापस बुलाया गया (37 ई0)

ख. उसे पुनःनियुक्त नही किया गया।

ग. इसके बाद उसके जीवन के बारे में कोई जानकारी नहीं। कई सिद्धान्त प्रचलित है पर कोई ठोस सबूत नहीं।

18:30

''यदि वह कुकर्मी न होता तो हम उसे तेरे हाथ न सौंपते।''

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। यीषु एक कुकर्मी नहीं थे। यह पीलातुस के प्रति एक व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी है जिसने धार्मिक अगुवों की बातों को नकारा।
क्रिया ''सौंपना'' और यहूदा इसकरियोति के लिए प्रयोग ''पकड़वाना'' दोनों एक ही षब्द है (6:68,71; 12:4; 13:2,11,21; 18:2,5)। इस षब्द का अर्थ है ''अधिकार के सामने किसी को सौंपना'' या ''एक परम्परा को सौंपना''।

18:31

'' हमें अधिकार नहीं कि किसी का प्राण लें।''

यहूदी अगुवों ने यीषु को ईष्वर निन्दा के लिए दोशी ठहराया, और रोमियों द्वारा उसे फाँसी दिलाने के लिए राजद्रोह का आरोप लगाया था।व्यवस्था. 21:23 के कारण यीषु का क्रूसीकरण यहूदियों के लिए बहुत ही ज़रूरी था। यीषु इस विशय में पहले से कह चुके थे 18:32; 3:14; 8:28; 12:32,33; गला. 3:13।

18:32

'' संकेत देते हुए कही थी,
कि उसका मरना कैसा होगा।''

क्यो यहूदी यीषु को मारना चाहता था ? यह प्रेरित. 7 से स्पश्ट है कि यदि कोई ईष्वर निन्दा करे तो उसे तुरन्त पत्थरवाह करें। यह संभवतः पुराने नियम का स्राप है जिसका उल्लेख व्यवस्था. 21:22—23 में है, से संबन्धित है। वास्तव में इसे भीड़ के द्वारा किया जाता था पर समकालीन रबियों का कहना है कि अब यह रोमियों का क्रूसीकरण है। वे चाहते थे कि यीषु जो अपने आपको मसीह कहता है परमेष्वर के द्वारा स्रापित हो। पतित मानवजाती के छुटकारे के प्रति यह परमेष्वर की योजना थी। यीषु, परमेष्वर का मेम्ना, एवज में अपने प्राण दिए (यषा. 53; 2कुरि. 5:21)। यीषु हमारे लिए स्राप बन गया (गला.3:13)।

18: 33—38क

33. तब पीलातुस फिर किले के भीतर गया और यीशु को बुलाकर, उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है?
34. यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही?
35. पीलातुस ने उत्तर दिया, क्या मैं यहूदी हूँ? तेरी ही जाति और महायाजकों ने तुझे मेरे हाथ सौंपा, तू ने क्या किया है?
36. यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाताः परन्तु अब मेरा राज्य यहाँ का नहीं।
37. पीलातुस ने उस से कहा, कि तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूँ; मैं ने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूँ कि सत्य पर गवाही दूं जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।
38. पीलातुस ने उस से कहा, सत्य क्या है?

18:33

'' क्या तू यहूदियों का राजा है?''

यीषु पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया (मत्ती. 27:1; मरकुस.15:2; लूका.23:2; यूह. 19:3,12,15,19–22)।

18:34

''यीशु ने उत्तर दिया,
क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या
औरों ने मेरे विषय में तुझ से कही?''

यदि पीलातुस ने राजनैतिक नेतृत्व के बारे में पूछा होता तो यीषु अवष्य मना करते। यदि यहूदियों ने संकेत दिया तो यह उसके मसीह होने को प्रगट करता है और यीषू ने उसे माना भी होता। पीलातुस अभी भी यहूदी धर्म की बातों पर विचार करना नहीं चाहता (18:35)।

18:35

यह प्रष्न **''न'' में उत्तर चाहता है।** पीलातुस यहूदी धर्म के प्रति अपना अनादार व्यक्त करता है।

18:36

''यदि मेरा राज्य इस जगत का होता,
तो मेरे सेवक लड़ते,''

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है। षब्द '' सेवक '' निम्नलिखित बातों को दर्षाता होगा (1) षिश्य या (2) स्वर्गदूत (मत्ती. 26:53)।

18:37

'' पीलातुस ने उस से कहा, तू राजा है''

यह यीषु और उसके आत्मिक राज्य का सामना करते हुए संसाररिक षक्ति की तरफ से माना था।

'' तू कहता है, क्योंकि मैं राजा हूँ;
मैं ने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूँ''

अस्पश्ट होने के कारण पहले वाक्यांष की व्याख्या करना कठीन है। यह योग्यताओं के साथ एक औपचारिक घोशणा है (मत्ती. 27:11;मरकुस.15:2; लूका. 23:3)। यीषु जानते थे कि वो कौन है, और वे क्यों आए (13:1,3; लूका. 2:49; मत्ती. 16:22)। पीलातुस को समझ में नहीं आया होगा!

18:38

'' पीलातुस ने उस से कहा, सत्य क्या है?''

पीलातुस ने यह सवाल किया, परन्तु उत्तर मिलने से पहले ही छोड़ दिया। पीलातुस ने इस बात को पक्का करना चाहा कि यीषु रोमी सम्राज्य के लिए खतरा नहीं है।उसने ऐसा ही किया। उसके बाद उसे छोड़ देने का प्रयास किया जैसे यहूदियों के फसह पर्व में किया जाता था (18:39; मत्ती.27:15)। जैसे लूका ने लिखा वैसे यूहन्ना लिखता है कि रोमी साम्राज्य के लिए मसीहत खतरा नहीं है।

18:38ख–40

38ख. और यह कहकर वह फिर यहूदियों के पास निकल गया और उन से कहा, मैं तो उस में कुछ दोष नहीं पाता।
39. पर तुम्हारी यह रीति है कि मैं फसह में तुम्हारे लिये एक व्यक्ति को छोड़ दूं सो क्या तुम चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूं?
40. तब उन्हों ने फिर चिल्लाकर कहा, इसे नहीं परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे; और बरअब्बा डाकू था।

18:39

'' तुम्हारी यह रीति है ''

यह मत्ती. 27:15 और लूका. 23:17 में इसका विवरण किया गया।

18:40

*'' तब उन्हों ने फिर चिल्लाकर कहा,
इसे नहीं परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे; ''*

बरअब्बा एक धनी व्यक्ति था और इसलिए यीषु के ऊपर लगाए हुए आरोप इसके ऊपर पहले से थे (मरकुस. 15:7; लूका. 23:19,25)। यह भीड़ अपने प्रादेषिक लोक नायक की प्रतीक्षा कर रही थी। यहूदी अगूवों ने इस मौके का फायदा उठाया और यीषु की सजा को सुनिषचित किया (मरकुस.15:11)।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. यीषु ऐसी एक जगह में क्यों गए जहाँ वो जानते थे कि यहूदा उसे मिलेगा ?

2. यीषु की गतसमने वेदना को यूहन्ना ने क्यों छोड़ दिया ?
3. क्यों सनहिद्र्न यीषु को पीलातुस के पास ले गया ?
4. समानान्तर सुसमाचार और यूहन्ना रचित सुसमाचार के अन्दर के घटनाक्रम में इतनी भिन्न क्यों है।
5. क्यो यूहन्ना इस बात को चित्रित करते हैं कि पीलातुस यीषु को छोडना चाहता है ?

यूहन्ना – 19

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
यीषु के लिए मृत्यु का दण्डादेष (18:38ख–19:16क)	सैनिक यीषु का मज़ाक उडाते हैं	(18:38ख–19:7)	यीषु के लिए मृत्यु का दण्डादेष (18:38ख–19:16)	यीषु पिलातुस के सामने (18:28–19:11)
18:38ख–19:7		18:38ख–19:7		18:33–19:3
			18:40–19:3	
	19:1–4			
	पिलातुस का निर्णय		19:4–5	19:4–7
	19:5–16			
			19:6क	
			19:6ख	
			19:7	
19:8–12		19:8–12	19:8–9क	19:8–11
			19:9ख–10	
			19:11	
			19:12	यीषु की मृत्यु का दण्डादेष
				19:12–16क
19:13–16क		19:13–16क	19:13–14	
			19:15क	
			19:15ख	
			19:15ग	
			19:16क	
यीषु का क्रूसीकरण	राजा क्रूस पर		यीषु का क्रूसीकरण	क्रूसीकरण
19:16ख–22		19:16ख–25क	19:16ख–21	19:16ख–22
	19:17–24			

			19:22	यीषु के वस्त्र का बटवारा
19:23–27			19:23–24	19:23–24
	तुम्हारी माता को देखो			यीषु और उसकी माता
	19:25–27	19:25क–27	19:25–26 19:27	19:25–27
यीषु की मृत्यु	पूरा हुआ		यीषु की मृत्यु	यीषु की मृत्यु
19:28–30	19:28–30	19:28–30	19:28 19:29–30क 19:30ख	19:28 19:29–30
यीषु को बेधा जाना	यीषु को बेधा जाना		यीषु को बेधा जाना	यीषु को बेधा जाना
19:31–37	19:31–37	19:31–37	19:31–37	19:31–37
यीषु को दफनाना	युसफ की कब्र में यीषु का दफन		यीषु को दफनाना	दफन
19:38–42	19:38–42	19:38–42	19:38–42	19:38–42

<u>अध्ययन कालचक्र तीन</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे थ्टप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>षब्द और वाक्यांष अध्ययन</u>

19:1–7
1. इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए।

2. और सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया।
3. और उसके पास आ आकर कहने लगे, हे यहूदियों के राजा, प्रणाम! और उसे थप्पड़ मारे।
4. तब पीलातुस ने फिर बाहर निकलकर लोगों से कहा, देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूँ; ताकि तुम जानो कि मैं कुछ भी दोष नहीं पाता।
5. तब यीशु कांटों का मुकुट और बैंजनी वस्त्र पहिने हुए बाहर निकला और पीलातुस ने उन से कहा, देखो, यह पुरूष।
6. जब महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर : पीलातुस ने उन से कहा, तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता।
7. यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।

19:1

" पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए। "

यह नही मालूम कि इतने कोड़े लगवाने के लिए कितना समय लगा होगा। जितनों को भी क्रूस की सजा सुनाई जाती थी उतनों को कोड़े लगाए जाते थे। यह इतनी भयानक बात थी कि कई लोग इस बीच मर भी गए। इस संदर्भ में पीलातुस ने यीषु को कोडे इसलिए लगवाए कि यीषु को लोगों से सहानुभूति मिले और उसे स्वतंत्र किया जाए (लूका. 23:16,22; यूह. 19:12)। यह यषा. 53:5 की भविश्यद्वाणी का परिपूर्णता है।
रोमी कोडे गैर रोमियों के लिए रखे हुए थे जो कि बहुत ही भयानक और दर्दनाक सज़ा थी। कोड़े के आगे की हिस्से में हड्डी के टुकडे बान्धा करते थे और दोशी को झुकाकर हाथों को बान्धकर उसी अवस्था में खड़ा करते थे। गिनती नही बताई गई। क्रूसीकरण से पहले साधारण रूप से ऐसा किया जाता था।

19:2

" सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर
उसके सिर पर रखा,"

यह कांटों का मुकुट **पीड़ा और ठिठोली के लिए ही था। राजा लोग चमकतार पत्तियोवाला मुकुट पहना करते थे पर राजाओं के राजा के लिए** कांटों का मुकुट!

" उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया। "

बैंजनी **रंग राजत्व को दर्षाता है। यह बहुत ही महंगा होता है। रोमी अधिकारियों के वस्त्र का रंग सुर्ख रंग का था। यह वस्त्र राजकीय वस्त्र के लिए एक संकेत है पर यहाँ यह किसी रोमी अधिकारी का पुराना वस्त्र होगा (मत्ती. 27:18)।**

19:3

***एन ए एस बी,* "और वे** उसके पास आकर कहने लगे,"
***एन के जे वी* "तब उन्होंने कहा"**
एन आर एस वी " उसके पास आ आकर कहने लगे,"
***टी इ वी* "और आकर कहने लगे"**

एन जे बी " वे लगातार उसके पास आ आकर कहने लगे,"
ये अपूर्ण काल वाक्य है। स्पश्ट रूप से एक के बाद दूसरे सैनिक ने ऐसा किया। यह यीषु से बढकर यहूदियो की ठिठोली के लिए किया गया। षायद पीलातुस यीषु के लिए लोगों के मन के अन्दर तरस पैदा करना चाहता था पर यह काम नही आया।

" और उसे थप्पड़ मारे।"

इस षब्द का सही अर्थ है डंडे से मारें। यह षायद राजकीय प्रणाम के ठिठोली होगी।

19:4

एन ए एस बी, " मैं इस में कुछ भी दोष नहीं पाता।"
एन के जे वी " मैं कुछ भी गलत नहीं पाता।"
एन आर एस वी " मैं कुछ भी दोष उसके विरोध में नहीं पाता।"
टी इ वी "मैंने उसे दोशी ठहराने योग्य कोई बात नही देखी"
एन जे बी " मैं ने इसके विरोध में कुछ भी नहीं पाया।"
यूहन्ना का एक उद्देष्य था कि वह इस बात को दर्षाए कि मसीहत रोमी साम्रज्य या उसके अधिकारियों के खिलाफ नही थी। यूहन्ना उल्लेखित करता है कि पीलातुस ने कई बार प्रसास किया कि यीषु को छोड दिया जाएं (18:38;1956,12)।

19:5

यीषु को (1) एक निन्दीत राजा का वस्त्र पहनाया गया (2) इतनी बुरी तरह मारा कि यहूदी अगुवों के राजद्रोह आरोपों की तमाषात्मक स्थिति को देखें। यूहन्ना के लिए यह जक. 6:12 का भी एक इषारा है।

19:6

' चिल्लाकर कहा,
कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर :"

यीषु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के पीछे का कारण यह था कि यहूदी अगूवे यह दिखाना चाहते थे कि व्यवस्था. 21:23 का स्राप कितना बड़ा है। हलॉकि गला. 3:13 से हम यह सीखते कि उसने हमारे स्रापों को अपने ऊपर उठा लिया (कुलु.2:14)।

" क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता। "

पीलातुस इसे तीन बार कहते है (18:38;19:4)।

19:7

" वह मारे जाने के योग्य है
क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।"

यीषु ने परमेष्वर के साथ एक होने का दावा किया, उसका अपना पुत्र। यहूदी जिन्होंने इस कथन को सुना था उनके अन्दर कोई संदेह नही था कि वो दैवीय होने का दावा कर रहे हैं (5:18; 8:53–59; 10:33)। यीषु के

खिलाफ वास्तविक अरोप ईष्वर निन्दा थी (मत्ती. 20:6,65)। जो ईष्वर निन्दक है उसे पत्थरवाह किया जाता था (लैव्य. 24:16)।

19:8—12

8. जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया।
9. और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, तू कहाँ का है? परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया।
10. पीलातुस ने उस से कहा, मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।
11. यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है।
12. इस से पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परन्तु यहूदयों ने चिल्ला चिल्लाकर कहा, यदि तू इस को छोड़ देगा तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं; जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का साम्हना करता है।

19:8

" जब पीलातुस ने यह बात सुनी
तो और भी डर गया। "

पीलातुस **की पत्नी ने पहले से उसे यीषु के बारे में चेतावनी दी थी (मत्ती. 27:19), अब यहूदी अगुवे दावा कर रहे हैं कि वो अपने आप को परमेष्वर का पुत्र कहता है।** पीलातुस **अब भ्रम में आकर डर गया। यह सर्वसाधारण बात थी कि यूनानी तथा रोमी देवताओं का मानुशिक वाहनों में प्रगट होना।**

19:9

पीलातुस **ने यीषु के उत्तर को याद किया होगा (18:37)। खुद इसे यषा.53:7 का परिपूर्णता के रूप में भी देखता है।**

19:10

" तुझे क्रूस पर चढ़ाने का
मुझे अधिकार है।"

पीलातुस **साबित कर रहा है कि उसके पास जीवन और मुत्यु के ऊपर राजनैतिक अधिकार है, तौभी ऐसे अषासित भीड के वष में उसने फैसला सुना दिया।**

19:11

" यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता,
तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता;"

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है।
यीषु पीलातुस **से डरे नही। वो जानते थे कि वो कौन है और क्यों आया है! बाइबल बताती है प्रत्येक मानवीय अधिकार के पीछे परमेष्वर है (रोमि. 13:1—7)।**

'' जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है,
उसका पाप अधिक है। ''

पहली नजर में लगता है कि यह यहूदा इसकरियोती के बरे में है (6:64,71; 13:11) परन्तु अधिकतर टिप्पणीकर्ता विष्वास करते है कि यह काइफा है जिसने औपचारिक रूप से यीषु को पीलातुस **के हाथ सौंपा। इसे इस प्रकार समझ सकते है कि यह (1)यहूदी अगुवे या (2) यहूदियों की ओर इषारा कर रहा है।**

19:12

'' पीलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा,''

यह एक अपूर्ण काल वाक्य है अथात् भूतकाल में दाहराया हुआ काम। कई बार उसने चाहा।

''यदि तू इस को छोड़ देगा तो
तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं;''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यहूदी अगुवे पीलातुस **उनकी इच्छा को पूरा नही करने तथा यीषु को मृत्यु दण्ड न देने के कारण उसकी वरीश्ठ अधिकारियों के साथ उसकी षिकायत का धमकी दे रहे है । वाक्यांष ''कैसर का दोस्त'' एक मुहावरा है , यह साम्राट के द्वारा दिया गया आदरसूचक षीर्शक की ओर इषारा करते है (अगस्तुस या वेसपेषन के द्वारा यह षुरू किया गया)।**
षब्द ''कैसर'' रोमी साम्राट का षीर्शक है। यह जूलियस कैसर से षरू हुआ और इसे अगस्तुस द्वारा अपनाया गया।

19:13—16

13. ये बातें सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया और उस जगह एक चबूतरा था जो इब्रानी में गब्बता कहलाता है, और न्याय आसन पर बैठा।
14. यह फसह की तैयारी का दिन था और छठे घंटे के लगभग थाः तब उस ने यहूदियों से कहा, देखो, यही है, तुम्हारा राजा!
15. परन्तु वे चिल्लाए कि ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ाः पीलातुस ने उन से कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं? महायाजकों ने उत्तर दिया, कि कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।
16. तब उस ने उसे उन के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।।

19:13

*<u>"ये बातें सुनकर पीलातुस यीशु को बाहर लाया,
और न्याय आसन पर बैठा।"</u>*

कौन न्याय आसन पर बैठा, इस विशय पर यह मूलपाठ अस्पश्ट है। विलियमस् तथा गुडषपेर्ड अनुवाद कहते है कि यीषु का मजाक उड़ाने हेतु उसे न्यायासन पर बैठाए। संदर्भ पीलातुस की ओर इषारा कर रहा है जो दण्डादेष की घोशणा करने पर है।

एन ए एस बी, एन के जे वी, एन जे बी " चबूतरा था जो इब्रानी में गब्बता कहलाता है,"
एन आर एस वी " पत्थर का चबूतरा था इब्रानी में गब्बता "
टी इ वी " पत्थर का चबूतरा था (इब्रानी नाम है गब्बता)"
इब्रानी/अरामिक षब्दों की परिभाशा के साथ का प्रयोग इस बात को दर्षाता है कि यूहन्ना का प्राप्तकर्ता अन्यजाती से है **(19:17)।** पत्थर का चबूतरा **रोमी दण्डादेष घोशित करने की जगह थीं। अरामिक षब्द** गब्बता **का अर्थ है "खडा पत्थर"।**

<u>19:14</u>

<u>"यह फसह की तैयारी का दिन था "</u>

समानान्तर सुसमाचार और यूहन्ना रचित सुसमाचार के बीच मे दिन के बारे में स्पश्ट भिन्नता थी। समानान्तर सुसमाचार **में यीषु की गिरफ्तारी से पहले यीषु ने षिश्यों के साथ फसह मनाया (मरकुस. 15:42), परन्तु यूहन्ना में भोजन पर्व से पहले तैयारी के दिन में किया गया।** देखिए नोटः 18:28।

<u>" छठे घंटे के लगभग थाः"</u>

पीलातुस के सामने यीषु का मुकद्दमा और क्रूसीकरण का कालानुक्रमिकाः

	मत्ती	**मरकुस**	**लूका**	**यहन्ना**
पीलातुस का दण्डादेष				छठा घंटा 19:14
क्रूसीकरण		**तीसरा घंटा 15:25**		
अन्धेरा छाया	छठे घंटे से नौवे घंटे तक 27:45	छठे घंटे से नौवे घंटे तक **15:33**	छठे घंटे से नौवे घंटे तक **23:44**	
यीषु चिल्लाए	नौवा घंटे 27:46	नौवा घंटे 15:34		

समय की तुलना करने के बाद दो व्याख्यात्मक विकल्प हमारे पास हैं कि (1) यूहन्ना ने रोमी समय का प्रयोग किया है जो कि 12.00 ए.एम से गिना जाता है (ग्लीसन एल. आरखर, एनसैक्लॉपीडिया ऑफ बाइबल डिफिकलटीज़, पृश्ठ. 364), समानान्तर सुसमाचार यहूदी समय का प्रयोग करता है जिसे 6.00 ए.एम से गिना जाता हैं। **(2) यीषु के क्रूसीकरण के लिए यूहन्ना बाद का समय का प्रयोग करता है जो कि** समानान्तर सुसमाचार **और** यूहन्ना रचित सुसमाचार के बीच **की भिन्नता का एक ओर उदाहरण है। ऐसा लगता है कि**

1:39 तथा 4:6 में यूहन्ना ने रोमी समय की बजाय यहूदी समय का प्रयोग किया है (एम. आर. विनसेन्ट, वर्ड स्टडीज़, पृश्ठ. 403)।
सुसमाचारों मे समय सारणी एक चिन्ह के तौर पर प्रयोग किया गया क्योंकि वे (1) मन्दिर में प्रतिदिन का बली चढाने का समय (9.00 ए.एम तथा 3.00 पी.एम, प्रेरित. 2:15; 3:1) और (2) दोपहर का वक्त जब निसान महीने का 14 तारीख को फसह का मेम्ना को वध करने का परम्परागत समय। आधुनिक ऐतिहासिक कालानुक्रमिका के समान बाइबल में कालानुक्रमिका उल्लेख नही है।

" देखो, यही है, तुम्हारा राजा!"

आयत 5 जक.6:12 के लिए संकेत और यह वाक्यांष जक. 9:9 के लिए संकेत है।

19:15

" ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ा:"

इस वाक्यांष मे तीन अनिषचित भूतकाल आदेष है। मूल षब्द " क्रूस पर चढ़ा " का अर्थ है "उठाना" या "श्रेश्ठ बनाना" । यह यूहन्ना का दोहरावाद का एक ओर उदाहरण है: **(3:14; 8:28; 12:32)।**

" महायाजकों ने उत्तर दिया,
कि कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।"

यह चौका देनेवाली व्यंग्य है। जिस ईष्वर निन्दा का आरोप उन्होने यीषु के ऊपर लगाया, अब वे उसी बात के लिए दोशी हैं। पुराने नियम में केवल परमेष्वर ही उसके लोगों का राजा है **(1षामू. 8)।**

" उन के "

मत्ती. 27:26–27; मरकुस. 15:15–16 में यह सर्वनाम रोमी सैनिकों को दर्षाता है। यूहन्ना में निहितार्थ यह है कि पीलातुस ने यीषु को यहूदियों के इच्छा पर छोड दिया।

19:17–22

17. तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता।
18. वहाँ उन्हों ने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को।
19. और पीलातुस ने एक दोष–पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उस में यह लिखा हुआ था, यीशु नासरी यहूदियों का राजा।
20. यह दोष–पत्र बहुत यहूदियों ने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहाँ यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था नगर के पास था और पत्र इब्रानी और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ था।
21. तब यहूदियों के महायाजकों ने पीलातुस से कहा, यहूदियों का राजा मत लिख परन्तु यह कि "उस ने कहा, मैं यहूदियों का राजा हूँ"।
22. पीलातुस ने उत्तर दिया, कि मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया।।

19:17

" अपना क्रूस उठाए हुए"

पहली षताब्दी में पलिस्तीनी क्रूस की आकृति के बारे में इतना पता नही हैं। हो सकता है यह ,, ज या ग था। कई बार एक से अधिक दोशियों को एक साथ फाँसी के मंच में लटकाया जाता था। कोई भी आकृति का क्यों न हो कोड़े खाने के बाद स्वयं उस लकडी को ले चलना था (मत्ती. 27:22; मरकुस. 15:21; लूका. 14:27; 23:26)।

" जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है
और इब्रानी में गुलगुता। "

इस वाक्याषं का वास्तविक अर्थ अज्ञात है। यह इब्रानी/अरामिक षब्द इस बात की ओर इषारा नही करता कि यह एक खोपड़ी के आकृति में बना हुआ बडा सा पहाड है, परन्तु यह एक छोटी सी चोटी थी जो यरूषलेम की ओर जानेवाला एक व्यस्त सड़क के किनारे पर थी। रोमी साम्रज्य ने विद्रोहियों को सबक सिखाने के लिए क्रूसीकरण को उपयोग में लाते थे। **यीषु का कत्ल षहर की दीवार के बाहर हुआ।**

19:18

" वहाँ उन्हों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया,"

कोई भी सुसमाचार क्रूसीकरण **का भौतिक प्रक्रिया का विवरण नही करता। रोमियों ने इसे कर्थागिनियुस से सीखा और कर्थागिनियुस ने इसे फारसियों से सीखा। एक बात हम जानते है कि यह एक बहुत ही भयानाक मृत्यु है। यह तरीका इसलिए विकसित हुआ कि एक व्यक्ति को कई दिनों तक दर्द में जीवित रखें। साधारण रूप से मृत्यु ष्वासावरोध से होती है। यह विद्रोहियों के लिए एक सबक था।**

" दो ओर मनुष्य"

यह यषा. 53:9 को परिपूर्ण किया जिसे मत्ती. 27:38; मरकुस. 15:27; लूका. 23:33 में उल्लेखित हैं।

19:19

" पीलातुस ने एक दोष–पत्र लिखकर "

पीलातुस **ने अपने हाथों से ही इस षीर्शक लिखा बाद में किसी ने इसे एक लकडी के हिस्से में लिखा है। मत्ती इसे ''दोश पत्र'' कहता है (एइटियन, मत्ती. 27:37), मरकुस और लूका ने इसे ''नक्षकारी'' कहते है (एपिग्राफ मरकुस.15:26; लूका. 23:28)।**

19:20

'' पत्र इब्रानी और लतीनी और यूनानी में लिखा हुआ था।''

हलॉकि सुसमाचारों में कई अन्तर होने के बावजूद भी यह दोश पत्र का षब्दों में कोई भिन्नता नही है।

1. **मत्ती. 27:37** "यह यहूदियों का राजा यीशु है"।
2. **मरकुस. 15:26** "यहूदियों का राजा"।
3. **लूका दृ 23:38** यह यहूदियों का राजा है।
4. **यूहन्ना. 19:19** यीशु नासरी यहूदियों का राजा।

इस षीर्शक के द्वारा पीलातुस यहूदियों को परेषान करना चाहता था (19:21—22)।

19:22

''मैं ने जो लिख दिया,
वह लिख दिया।''

यह जो लिखी गई बातों की संपूर्णता को महत्व देते है।

19:23— 25क

23. जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उसके कपड़े लेकर चार भाग किए, हर सिपाही के लिये एक भाग और कुरता भी लिया, परन्तु कुरता बिन सीअन ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था: इसलिये उन्हों ने आपस में कहा, हम इस को न फाडें, परन्तु इस पर चिट्ठी डालें कि वह किस का होगा।
24. यह इसलिये हुआ, कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कि उन्हों ने मेरे कपड़े आपस में बांट लिये और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डाली:
25क. सो सिपाहियों ने ऐसा ही किया।

19:23

'' चार भाग किए,
हर सिपाही के लिये एक भाग ''

सिपाहियों ने यीषु के वस्त्र के लिए चिट्ठी डाली। **यह कुरता के लिए था। वे किस प्रकार वस्त्र 4 भाग किए यह बात अज्ञात है। यह षायद उसके जूते, प्रार्थना वस्त्र, कमर बन्ध और दूसरे वस्त्र की ओर इषारा करते हैं। यह एक ओर भविश्यद्वाणी का परिपूर्णता है (भ.सं. 22:18)।**

" कुरता "

यीषु के बाहरी वस्त्र के लिए बहुवचन *हिमाटिया* का प्रयोग है। उसके अन्दरवस्त्र, जो त्वचा के साथ होता था, है कुरता **(*चीटोन*)। इनकी भिन्नता को हम मत्ती. 5:40 और लूका. 6:29 में देख सकते है। पहली षताब्दी के यहूदी एक ओर अन्दरवस्त्र पहना करते थे। यीषु को परिपूर्ण नंगा नही किया था।**

19:25–27

25. परन्तु यीशु के क्रूस के पास उस की माता और उस की माता की बहिन मरियम, क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थी।
26. यीशु ने अपनी माता से कहा; हे नारी, देख, यह तेरा पुत्र है।
27. तब उस चेले से कहा, यह तेरी माता है, और उसी समय से वह चेला, उसे अपने घर ले गया।।

19:25

"यीशु के क्रूस के पास उस की माता
और उस की माता की बहिन मरियम,
क्लोपास की पत्नी और मरियम मगदलीनी खड़ी थी।"

यहाँ इस बात पर एक वादविवाद है कि कितने नामों का वर्णन है, तीन या चार। संभवतः वहाँ चार नाम है क्योकि मरियम नामक दो बहन नही हो सकती। मरियम का बहन षलोमी का नाम का उल्लेख मरकुस.15:40 तथा मत्ती. 27:56 में मिलता है। यदि यह सही है तो याकूब, यूहन्ना और यीषु चचेरा भाई है। दूसरी षताब्दी के एक परम्परा कहते है कि क्लोपास **यूसफ का भाई था।** मरियम मगदलीनी **वह थी जिससे सात दुश्टात्माओं को यीषु ने निकाला था और पहला व्यकित है जिसे यीषु ने चुना था कि जी उठने क बाद सर्वप्रथम प्रगट हो (20:1–2, 11–18; मरकुस. 16:1; लूका.24:1–10)।**

विषेश षीर्शकः महिलाएं जिन्होंने यीषु के पीछे हो लिए।

क. यीषु और उनके षिश्यों को मदद किए हुए महिला अनुयायीयों के बारे में सर्वप्रथम उल्लेखित जगह है लूका. 8:1–3।

1. मरियम जो मगदलीनी कहलाती है **(लूका. 8: 2)।**

क. मत्ती. 27:56, 61; 28:1

ख. मरकुस. 15:40,47; 16:1,9

ग. लूका. 8:2; 24:10
घ. यूह. 19:25; 20:1,11,16,18
2. योअन्ना हेरोद का सेवक का पत्नी**(लूका. 24:10)**
3. सूसन्ना **लूका. 8:3**
4. ''और बहुत सी और स्त्रियां: ये तो अपनी सम्पत्ति से उस की सेवा करती थीं''।**(लूका. 8:3)।**

ख. क्रूसीकरण के समय में उपस्थित स्त्रीयो का एक झुण्ड
1. मत्ती की सूची
क. मरियम मगदलीनी (27:56)
ख. याकूब और योसेस की माता मरियम (27:56)
ग. जब्दी के पुत्रें की माता (27:56)
2. मरकुस की सूची
क. मरियम मगदलीनी (15:40)
ख. छोटे याकूब की और योसेस की माता मरियम (15:40)
ग. शलोमी (15:40)
3. लूका इतना ही कहते है जो स्त्रियां गलील से उसके पास आई थी, (23:49)
4. यूहन्ना की सूची
क. यीषु के माता मरियम (19:25)
ख. यीषु के माता का बहन (19:25)
ग. क्लोपास की पत्नी (19:25)
घ. मरियम मगदलीनी (19:25)

ग. यीषु के कब्र स्थान को देखने आई हुई एक झुण्ड महिलाएं
1. मत्ती की सूची
क. मरियम मगदलीनी (27:61)
ख. दूसरा मरियम (27:61)
2. मरकुस की सूची
क. मरियम मगदलीनी (15:47)
ख. योसेस की माता मरियम (15:47)
3. लूका इतना ही कहते है जो स्त्रियां गलील से उसके पास आई थी, (23:55)।
4. यूहन्ना में यीषु के कब्र स्थान को देखने आई हुई स्त्रियों का कोई जिक्र नही है।

घ. रविवार की सुबह के समय यीषु के कब्र पर आई महिलाएं
1. **मत्ती की सूची**
क. मरियम मगदलीनी (28:1)
ख. दूसरा मरियम (28:1)
2. मरकुस की सूची
क. मरियम मगदलीनी (16:1)
ख. याकूब की माता मरियम (16:1)
ग. षलोमी (16:1)
3. लूका की सूची
''वे कब्र पर आई (24:1—5,24)
क. मरियम मगदलीनी (24:10)
ख. योअन्ना **(24:10)**

ग. याकूब की माता मरियम (24:10)

4. **यूहन्ना केवल** मरियम मगदलीनी का जिक्र करता है **(20:1,11)।**

ङ ऊपरी कोठरी में महिलाएं उपस्थित थी

1. कई स्त्रियाँ (1:14)

2. यीषु के माता मरियम (1:14)

च. इन विभिन्न सूची के महिलाओं के साथ का रिष्ता अज्ञात हैं। मरियम मगदलीनी का **विषेश भूमिका थी। डिक्षनरी ऑफ जीसस एण्ड द गॉसपलस् (पृश्ठ. 880–886) का एक लेख ''महिलाएं'' में यीषु के जीवन और सेवा काल में उपस्थित महिलाओं का विवरण है।**

19:26

''षिश्य जिसे वो प्रेम रखता था''

यूहन्ना का नाम इस सुसमाचार में लिखा नही होने के कारण कई सोचते कि यही वह तरीका है जिसे वह अपना पहचान देता है **(13:23; 19526; 21:7,20)। इन आयतो में से हर बार वह षब्द *अगापाओ* का प्रयोग करता है, परन्तु 20:2 में *फिलियो* षब्द का प्रयोग करता है। ये षब्द यूहन्ना में पर्यायवाची है। तुलना करें 3:35 में *अगापाओ* तथा 5:20 में *फिलियो*, जहाँ पुत्र के प्रति पिता को दर्षाता है।**

19:27

'' उसी समय से वह चेला,
उसे अपने घर ले गया।''

यह अवष्य नही कि षिश्य ने उसी क्षण उसे अपने घर ले लिया, हलॉकि मत्ती. 27:56; तथा मरकुस. 15:40 का सूची देखने के बाद ऐसा लगता है सूची मे उसका नाम न होने के कारण वह षिश्य के साथ घर गई। परम्परा कहती है कि मरियम अपनी मृत्यु तक यूहन्ना के साथ रही उसके बाद वह इफिसुस में चले गए और जहाँ वह एक लम्बे अरसे तक जयवन्त सेवा करता रहा। यूहन्ना ने अपना बूढापे में इफिसूस में रहनेवाला प्राचीनों के अनुरोघ पर यादगार बातों को लिख छोडा है (यूहन्ना रचित सुसमाचार)**।**

19:28–30

28. इस के बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका; इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं प्यासा हूँ।
29. वहाँ एक सिरके से भरा हुआ बर्तन धरा था, सो उन्हों ने सिरके के भिगोए हुए इस्पंज को जूफे पर रखकर उसके मुंह से लगाया।
30. जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा पूरा हुआ और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।।

<u>*19:28*</u>

<u>*"यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका;*</u>
<u>*इसलिये कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी हो कहा,*</u>
<u>*मैं प्यासा हूँ।"*</u>

यह अस्पश्ट है कि वाक्यांष " पवित्र शास्त्र " " मैं प्यासा हूँ " **को या** "बात पूरी हो" **को दर्षाता है। यदि हम** " मैं प्यासा हूँ " **को पारम्परिक रूप से लेते है तो यह भ.सं 69:21 के लिए एक इषारा है।**

<u>*19:29*</u>

<u>*" वहाँ एक सिरके से भरा हुआ बर्तन धरा था,"*</u>

यह एक निम्नतम कटा दाखरस है। यह सैनिको और अपराधियों के लिए है। अधिक समय तक जीवित रखने के लिए इसे पिलाया जाता था।

<u>*"सिरका"*</u>

यह गरीबों का पेय था। याद रखे कि यरूषलेम में जब एक स्त्री ने उसे नषीली दाखरस दिया तो यीषु ने उसे ग्रहण नही किया (मरकुस. 15:23; मत्ती. 27:34)। भ. सं 22:15 को पूरा करने के लिए षायद यीषु ने इस पेय को स्वीकारा। उसका गला इतना सूख गया और बातें करना कठीन लग रहा था और उसे एक ओर बात कहने को रह गया था।

<u>*" जूफे पर रखकर "*</u>

कुछ विष्वास करते है कि यह फसह के प्रतीक है (निर्ग.12:22)। षेश लोग विष्वास करते है कि यह नकल करने वालो के द्वारा हुई एक गलती है वास्तव में यहाँ पर प्रयोग किया गया षब्द का अर्थ है "बर्छी", "भाला" या "डंडा"। मत्ती. 27:48; तथा मरकुस. 15:36 में "सरकंडा" लिखा गया।
नकल करने वालो के द्वारा हुई एक गलती है इसलिए बताया गया कि जूफे का लम्बा स्कन्द होता नही है (2 से 4 फुट), पर यह भी याद रखना कि क्रूस भी अधिक ऊँचा नही हुआ करते थे। हमारे पास का लम्बा क्रूस का तस्वीर षायद हम 3:14 को गलत समझने के कारण है। यीषु के पाँव जमीन से एक या दो फुट ऊपर ही थे।

<u>*19:30*</u>

<u>*" पूरा हुआ "*</u>

समानान्तर सुसमाचार में हम देखते है कि वो ऊँचे स्वर से चिल्लाकर **(मरकुस. 15:37; लूका. 23:46; मत्ती. 27:50) अपने प्राण त्याग दिया। यह संपूर्ण किया गया छुटकारे का काम की ओर इषारा करते है। मिस्र का पापरी में षब्द का इस प्रकार के रूप *(टेलॉस)* का अर्थ है "पूरा चुकाना"।**

<u>*" और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।"*</u>

वाक्यांष " सिर झुकाना" **एक मुहावरा है जिसका अर्थ है "सोने जाना" यीषु का मृत्यु उस के लिए आराम का समय था। मृत्यु का तात्पर्य है एक व्यक्ति का आत्मिक पहलू का भैतिकता से अलग होना। यह विष्वासियों के लिए मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच का समय में बिना षरीर के जीवन की माँग करता है (2कुरि. 5; 1थिस्स. 4:13:18)।**

मरकुस. 15:31; लूका. 23:46 में सुसामाचार "प्राण छोड़ दिये" **का प्रयोग के द्वारा सदृष्यता में आते हैं। इब्रानी में आत्मा और ष्वास के लिए एक ही षब्द का प्रयोग हुआ है। अन्तिम ष्वास का अर्थ है उसके आत्मा अलग हो रही है (उत्.2:7)।**

19:31—37

31. और इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों ने पीलातुस से बिनती की कि उन की टांगे तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था।
32. सो सिपाहियों ने आकर पहले की टांगें तोड़ीं तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे।
33. परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उस की टांगें न तोड़ीं।
34. परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लहू और पानी निकला।
35. जिस ने यह देखा, उसी ने गवाही दी है, और उस की गवाही सच्ची है; और वह जानता है, कि सच कहता है कि तुम भी विश्वास करो।
36. ये बातें इसलिये हुईं कि पवित्र शास्त्र की यह बात पूरी हो कि उस की कोई हड्डी तोड़ी न जाएगी।
37. फिर एक और स्थान पर यह लिखा है, कि जिसे उन्हों ने बेधा है, उस पर दृष्टि करेंगे।।

19:31

" वे उतारे जाएं ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, "

जमीन को प्रदूशित करनेवाले मृतषरीर के बारे में यहूदी बड़े चिंतित थे (व्यवस्था. 21:23), विषेशरूप से अतिपवित्र सब्त या फसह के दिन में।

" क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था। "

इसका व्याख्या दो तरीके से करते हैः (1) फसह का भोज और सब्त का दिन इस साल एक ही दिन में था (यहूदी लूनार केलनडर का प्रयोग करते थे) या (2) अखमीरी रोटी का पर्व इस बार सब्त का दिन में ही है। फसह पर्व और अखमीरी रोटी का पर्व (निर्ग.12) 8 दिन का पर्व था।

*" कि उन की टांगे तोड़ दी जाएं
और वे उतारे जाएं "*

स्पश्ट रीति से ऐसे मौके पहले भी आए है। इस बात के लिए काठ का हथौडा का प्रयोग करते थे। साधारण रीति से क्रूस की मृत्यु ष्वासावरोध से होता है। टांगे तोड़ने के द्वारा मृत्यु जल्द हो जाती है क्योंकि वह ष्वास लेने के लिए अपने पैर को ऊपर नही उठा पाएंगे।

19:33

" उन्होंने देखा कि वह मर चुका है,
तो उस की टांगें न तोड़ीं।"

यह भी भविश्यद्वााणी को परिपूर्ण किया **(निर्ग.12:42; गिन.9:129 भ.सं. 34:20)।**

19:34

" सिपाहियों में से एक ने
बरछे से उसका पंजर बेधा
और उस में से तुरन्त लहू और पानी निकला।"

यह एक प्रत्यक्षदर्षी चिकित्सा–संबन्धि विवरण है जो साबित करता है कि अवष्य मसीह यीषु मानव था। यूहन्ना रचित सुसमाचार तथा 1 यूहन्ना, नॉस्टिक विचारधारा, जो यीषु के दैवीयता को मानते तो है पर मानवीयता को नही, के बढौतरी के समय पर लिखा गया।
कुछ तो इसे धर्म–रीति, प्रभु भोज तथा बपतिस्मा, के रूप में व्याख्या करने की प्रयास किया परन्तु यह तो बिलकुल दृश्टान्त ही है।

19:35

यह आयत यूहन्ना के द्वारा दिया गया एक कथन है, जो कि प्रत्येक घटना (1) रात्रीकाल मुकद्‌दमा, (2) रोमी मुकद्‌दमा, और (3) क्रूसीकरण, का प्रत्यक्षदर्षी है। यीषु के मृत्यु पर का यह कथन 20:30–31 का सदृष्य में है, जो इस सुसमाचार के उद्धेष्य को प्रगट करता है (21:24)। देखिए **विषेश षीर्शक : यीषु के प्रति गवाही 1:8।**

19:36

यह फसह का मेम्ना के लिए एक संकेत है (निर्ग. 12:46; गिन. 9:12; भ.सं.34:20)। यह वाक्यांष पर भी निर्भर रहता हैः (1) बेधा **या (2) तोड़ी। पुनरुत्थान के बाद 40 दिनों तक यीषु स्वयं** प्रारम्भिक कलीसिया को इन वचनों को दिखाया/समझाया **(लुका. 24:27; प्ररित. 1:2–3)।** प्रारम्भिक कलीसिया की प्रचार इस बात को दर्षाता है कि परिपूर्ण किया गया पुराने नियम का भविश्यद्वाणियों को यीषु ने उन्हें दिखाया था।

19:37

यह जक. 12:10 से लिया गया उद्‌धृत है जो कि वायदों में से एक बडा वायदा है कि **(1) एक दिन इस्राएल मसीह यीषु की ओर फिरेगा विष्वास में (प्रकष. 1:7) या (2) जो यहूदी पहले से विष्वास कर रहे है वे यीषु का मृत्यु पर रो रहे है।**
यह उद्‌धृत **सेप्टुवजन्ट से नही लिया गया परन्तु *मसोरिटिक हीब्रू टेक्सट* से लिया गया है। सेप्टुवजन्ट में "मजाक उडाया" लिखा है पर *मसोरिटिक* में** "बेधा" **लिखा है।**

19:38 –42

38. इन बातों के बाद अरमतियाह के यूसुफ ने, जो यीशु का चेला था, (परन्तु यहूदियों के डर से इस बात को छिपाए रखता था), पीलातुस से बिनती की, कि मैं यीशु की लोथ को ले जाऊं, और पीलातुस ने उस की बिनती सुनी, और वह आकर उस की लोथ ले गया।
39. निकुदेमुस भी जो पहिले यीशु के पास रात को गया था पचास सेर के लगभग मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया।
40. तब उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया और यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा।
41. उस स्थान पर जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी; जिस में कभी कोई न रखा गया था।
42. सो यहूदियों की तैयारी के दिन के कारण, उन्हों ने यीशु को उसी में रखा, क्योंकि वह कब्र निकट थी।।

19:38–39

"यूसुफ ... निकुदेमुस "

ये दोनों सनहिद्रन का प्रभावित, धनी सदस्य तथा यीषु के गुप्त षिश्य थे अब इस मुष्किल परीस्थिति में सबके सामने से गया।

19:39

' पचास सेर के लगभग
मिला हुआ गन्धरस और एलवा ले आया।"

यह पहली षताब्दी यहूदियों का सुगन्धित इत्र था जिसे षवसंसकार के लिए प्रयोग किया जाता है। एक राजा के प्रतीक में यीषु के षवससंकार हुआ (2 इति.16:14)। देखिए **विषेश षीर्शकः अभिशेक 11:2।**

विषेश षीर्शकः षवससंकार का इत्र

क. गन्धरस, अरब का पेडों का एक प्रकार का गोंद

1. इसका जिक्र 12 बार पुराने नियम में हैं, अधिकतर बार बुद्धि साहित्य में इत्र के समानता में इसे बताया गया।

2. यह विद्वानों द्वारा बचपन में यीषु को दिया हुआ तोहफा में से एक था (मत्ती. 2:11)।

3. यह एक प्रतिरूप है

क. "पवित्र अभिशेक का तेल" में उपयोग किया गया (निर्ग. 30:23–25)।

ख. राजा के लिए तोहफा का रूप में (मत्ती. 2:11)।

ग. यीषु के षवसंसकर में प्रयोग (यूह. 19:39; 11:2), यह तालमूद (बेराकोह्त 53क) पर आधारित है।

ख. एलवा, **एक प्रकार की सुगन्धित लकडी।**

1. **सुगन्धित इत्र से संबन्धित है (गिन. 24:6; भ.सं. 45:8; नीति. 7:17; श्रेश्ठ. 4:14)।**
2. **मिस्री इसे** गन्धरस के साथ मिश्रित करकर षवसंसकार में प्रयोग करते है।
3. निकुदेमुस ने यीषु के ष्वसंसकार के लिए बहुत ही अधिक इन पदार्थे को लाया **(19:39) और यह तालमूद पर आधारित है (बेत्साह 6क)।**

19:40

" तब उन्हों ने यीशु की लोथ को लिया
उसे सुगन्ध द्रव्य के साथ कफन में लपेटा"

ये सुगन्ध द्रव्य दो उद्धेष्य से थे: **(1) दुर्गन्ध को हटाने तथा (2) कफन को अपनी जगह में रखने के लिए।**

19:41

" उस स्थान पर
जहां यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था,
एक बारी थी; "

यह बहुत प्रमुख है कि यूसुफ और निकुदेमुस ने कितनी षीघ्रता से काम किया है। यीषु का मृत्यु 3.00 पी.एम. में हुआ और 6.00 पी.एम से पहले उसे कब्र के अन्दर रखना है क्योंकि 6.00 पी.एम को यहूदी फसह का सब्त षुरू होगी।

"एक नई कब्र थी;
जिस में कभी कोई न रखा गया था। "

मत्ती. 27:6 से हम सीखते है कि यह यूसुफ की अपनी कब्र थी। यह यषा. 53:9 का परिपूर्णता है जिसका उद्धृत मत्ती. 27:57।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।
1. क्यों सैनिको ने यीषु को कोडा मारा तथा मजाक उडाया ?

2. यीषु को स्वतंत्र करने का पीलातुस का प्रयत्न की क्या विषेशता है ?
3. आयत 15 में यहूदी याजक का कथन इतना चौंकानेवाला क्यों है ?
4. क्रूसीकरण का विवरण देने में सुसमाचारों में इतना अन्तर क्यों हैं ?
5. यीषु का क्रूसीकरण किस प्रकार व्यवस्था. 21:23 से संबन्धित है ?

यूहन्ना – 20

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4] यीषु का पुनरुत्थान	एन के जे वी खाली कब्र	एन आर एस वी पुनरुत्थान	टी इ वी खाली कब्र	जे बी खाली कब्र
20:1–10	20:1–10	20:1–10	20:1–10	20:1–2 20:3–10
मरियम मगदलीनी के सामने यीषु की प्रत्यक्षता	मरियम मगदलीनी पुनरुत्थित प्रभु से मिलती है		मरियम मगदलीनी के सामने यीषु की प्रत्यक्षता	मरियम मगदलीनी के सामने यीषु की प्रत्यक्षता
20:11–18	20:11–18	20:11–13क 20:13ख 20:14–15क 20:15ख 20:16क 20:16ख 20:17	20:11–18	20:11–18

		20:18		
षिश्यों के सामने यीषु की प्रत्यक्षता	प्रेरितों को आदेष दिया गया		षिश्यों के सामने यीषु की प्रत्यक्षता	षिश्यों के सामने यीषु की प्रत्यक्षता
20:19—23	20:19—23	20:19—23	20:19—23	20:19—23
यीषु और थोमा	देखना और विष्वास करना		यीषु और थोमा	
20:24—29	20:24—29	20:24—29	20:24—25क 20:25ख 20:26—27 20:28 20:29	20:24—29
इस पुस्तक का उद्देष्य	ताकि तुम विष्वास कर सको		इस पुस्तक का उद्देष्य	पहला उपसंहार
20:30—31	20:30—31	20:30—31	20:30—31	20:30—31

<u>अध्ययन कालचक्र तीन</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 20:1—29</u>

क. अध्याय 14—17 में जो कुछ भी वायदा यीषु ने षिश्यों से किया उसे पुनरुत्थान के पहले ही रविवार के षाम को पूरा किया। देखिए नोटः 16:20।

ख. पुनरुत्थान के विवरण में अन्तर इसलिए कि (1) ये प्रत्ययक्षदर्षी विवरण है, (2) सालों बीतने के बाद इसे लिखा गया है, और (3) प्रत्येक लेखक खास एक झुण्ड को ध्यान में रखते हुए लिखा है और इसलिए विभिन्न बातों का महत्व दिया गया (मत्ती. 28; मरकुस. 16; लूका. 24)।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

20:1—10

1. सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा।
2. तब वह दौड़ी और शमौन पतरस और उस दूसरे चेले के पास जिस से यीशु प्रेम रखता था आकर कहा, वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानतीं, कि उसे कहाँ रख दिया है।
3. तब पतरस और वह दूसरा चेला निकलकर कब्र की ओर चले।
4. और दोनों साथ साथ दौड़ रहे थे, परन्तु दूसरा चेला पतरस से आगे बढ़कर कब्र पर पहले पहुंचा।
5. और झुककर कपड़े पड़े देखेः तौभी वह भीतर न गया।
6. तब शमौन पतरस उसके पीछे पीछे पहुंचा और कब्र के भीतर गया और कपड़े पड़े देखे
7. और वह अंगोछा जो उसके सिर से बन्धा हुआ था, कपड़ों के साथ पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक जगह लपेटा हुआ देखा।
8. तब दूसरा चेला भी जो कब्र पर पहले पहुंचा था, भीतर गया और देखकर विश्वास किया।
9. वे तो अब तक पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे, कि उसे मरे हुओं में से जी उठना होगा।
10. तब ये चेले अपने घर लौट गए।

20:1

" सप्ताह के पहले दिन "

यह रविवार का दिन था, फसह पर्व के बडा सब्त का दिन के बाद का पहला व्यवहारिक दिन था जिसमें पहला फल का अपर्ण मन्दिर में करते है। यीषु मृतकों में से पहला फल है (1कुरि. 15:23)। लगातार तीन रविवार के रात में यीषु का प्रगट होना विष्वासियों द्वारा रविवार के दिन यीषु की अराधना करने के लिए एक मंज बनाया (20:19,26; लूका. 24:36; प्रेरित. 20:7; 1कुरि. 16:2)।

" मरियम मगदलीनी "

यह यीषु और प्रेरितों के पीछे हो लिया हुआ कई स्त्रियों में से एक थी। जब यीषु गलील में थे तब इसके अन्दर से यीषु ने कई दुश्टात्माओं को निकाला था (मरकुस.16:9; लूका. 8:2)।
हलॉकि यूहन्ना रचित सुसमाचार मरियम का इस दौरा के लक्ष्य के बारे में कुछ नही कहता पर मरकुस. 16:1; लूका. 23:56 में कहते है कि कई स्त्रियाँ यीषु के षरीर में सुगन्ध द्रव्य लगाने गईं थी। षायद वे यूसफ और निकुदिमुस का इस काम के बारे में जानते नही थे या वे उसके साथ कुछ ओर जोडना चाहते थे।

'' भोर को अंधेरा रहते ही ''

जब वे घर से निकले तब अंधेरा था परन्तु वहाँ पहूँचते उजियाला हो गया (मत्ती. 28:1; मरकुस. 16:2)।

'' पत्थर को कब्र से हटा हुआ था''

पत्थर को अपने ख़ाने से हटाया गया था (मत्ती. 28:2)। याद रखे कि पत्थर प्रत्यक्षदर्षी साक्षियों के लिए हटाया गया था न कि यीषु के लिए। उसके पुनरुत्थित षरीर के लिए कोई भौतिक सीमाएं नही है जैसे उसके पार्थिव षरीर के लिए था।

20:2

'' तब वह दौड़ी ''

यीषु के षरीर वहाँ न होने का खबर देने के लिए वह तुरन्त वहाँ से दौड़ी (मत्ती.28:5)।

'' दूसरे चेले
जिस से यीशु प्रेम रखता था ''

यूनानी षब्द *फिलियो* का प्रयोग है यहाँ अर्थात् ''भाईचारा''। हलॉकि सामान्य यूनानी में *अगापाओ* के पर्यायावाची षब्द के तौर पर इसे प्रयोग करते थे। यह षिश्य यूहन्ना है, इस सुसमाचार का लेखक (20:4—8; 13:23)। यहाँ वह पतरस के साथ है।

'' वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं;''

यह एक पूर्णकाल वाक्य है अर्थात् कार्य पूरा हो चुका है। यीषु गायब है। मरियम के मन में ''वे'' या तो (1) यहूदी अगुवे है, या तो (2) रोमी सैनिक है। स्पश्ट रूप से ऊपरी कोठरी में एकत्रित प्रेरितों और षिश्यों को पुनरुत्थान ने हिलाकर रख दिए!

'' हम ''

इस ''हम'' में मरियम मगदलीनी और याकूब की माता मरियम और शलोमी, योअन्ना ओर स्त्रियाँ षामिल है (मरकुस. 16:1; मत्ती. 28:1; लूका. 24:10)।

20:4

'' दूसरा चेला
पतरस से आगे बढ़कर
कब्र पर पहले पहुंचा।''

षायद यूहन्ना सब प्रेरितो से छोटा था।

20:5

''झुककर ''

उस समय की कब्र का द्वार 3 या 4 फुट ऊँचा था यदि कोई अन्दर जाना चाहे तो उसे झुककर जाना था।

'' देखे:''

अर्थात् ध्यान से देखना। क्योकि बाहर सुबह का उजियाला और कब्र के अन्दर अंधेरा था।

'' कपड़े पड़े देखे ''

यूनानी मूलपाठ में कपड़े कहाँ कैसे पड़े थे इस विशय में कोई जानकारी नही है। यदि षरीर चुराया होता तो ये कपडे वहाँ नही होते, क्योंकि सुगन्ध द्रव्य गोंद के समान कार्य करते है।

20:6

''शमौन पतरस ''

शमौन *(केफास)* उसका इब्रानी (अरामिक) नाम था, पतरस *(पेटरॉस)* यीषु ने उसे दिया हूबर यूनानी नाम है। यूनानी में इसका अर्थ है ''अलग किया गया पत्थर'' या ''पानी से घिसा हुआ पत्थर'' (मत्ती. 16:18)। अरामिक में *पेटरॉस* और *पेटरा* में कोई अन्तर नही है।

20:7

'' अंगोछा ''

चेहरा एक अलग कपड़े से बान्धते थे (11:44)। यह संभव है कि इसे (1) चेहरे के ऊपर डालने के लिए; (2) चेहरा को बान्धने; या (3) जबड़ा को अपने स्थान में रखने के लिए प्रयोग करते थे।

'' अलग एक जगह लपेटा हुआ ''

अर्थत् किसी ने बडे घ्यान से लपेटा है। यह जो यूहन्ना का ध्यान को आकर्शित किया तथा विष्वास को बढाया।

20:8

'' देखकर विश्वास किया।''

यूहन्ना ने सबूत देखकर पुनरुत्थान में विष्वास किया।

20:9

'' वे पवित्र शास्त्र की वह बात न समझते थे,''

यह भ.सं. 16:10 की ओर इषारा करता है, जिसका उद्घत प्रेरित. 2:27 में पतरस ने पेन्तकुस्त के दिन में किया। हलॉकि यह यषा. 53:10–12 या होषै. 6:2 की ओर भी दर्षाता है। यीषु के पुनरुत्थान के विशय मे उस के कथन को सनहिद्रन ने समझ लिया परन्तु षिश्य नही समझें। कितनी चौंकानेवाली बात है!
यह आयत धर्मषास्त्रीय रीति से इस सत्य को बताते है कि पवित्रात्मा का आगमन अब तक नही हुआ, जब पवित्रात्मा दिया जाएगा तब वह उन्हें सब बातें जिन्हें यीषु ने कहा था समझने में मदद करेगी (2:22; 14:26)।

20:10

इसका अर्थ है कि (1) वे गलील की ओर वापस गया (मत्ती. 20:37; 28:7,10,16; यूह. 21 में देखते है कि वे गलील में मछली पकड रहे है।) या (2) वे यरूषलेम में अपने निवासस्थान की ओर वापस गए। पुनरुत्थान के बाद के अनुभव के आधार पर दूसरा बिन्दु सही है।

20:11–18

11. परन्तु मरियम रोती हुई कब्र के पास ही बाहर खड़ी रही और रोते रोते कब्र की ओर झुककर,
12. दो स्वर्गदूतों को उज्जवल कपड़े पहने हुए एक को सिरहाने और दूसरे को पैताने बैठे देखा, जहाँ यीशु की लोथ पड़ी थी।
13. उन्हों ने उस से कहा, हे नारी, तू क्यों रोती है? उस ने उन से कहा, वे मरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहाँ रखा है।
14. यह कहकर वह पीछे फिरी और यीशु को खड़े देखा और न पहचाना कि यह यीशु है।
15. यीशु ने उस से कहा, हे नारी तू क्यों रोती है? किस को ढूंढ़ती है? उस ने माली समझकर उस से कहा, हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहाँ रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी।
16. यीशु ने उस से कहा, मरियम! उस ने पीछे फिरकर उस से इब्रानी में कहा, रबूनी अर्थात् हे गुरू।
17. यीशु ने उस से कहा, मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।
18. मरियम मगदलीनी ने जाकर चेलों को बताया, कि मैं ने प्रभु को देखा और उस ने मुझ से बातें कही।।

20:11

'' रोती हुई ''

यह ''विलाप करना'' होता है (11:31)। यह एक अपूर्ण काल वाक्य है अर्थत् एक काम जो भूतकाल में षुरू होगया और अब भी वह जारी है। पूर्वीय षवसंसकार प्रक्रिया बहूत ही जजबात से भरी है।

20:12

'' दो स्वर्गदूतों ''

यूहन्ना और लूका इस बात से सहमत है कि वहाँ दो स्वर्गदूत उपस्थित थे। मत्ती जो हर बात के लिए दो होते है (8:28; 9:27; 20:30), के पास केवल एक ही स्वर्गदूत है। यह सुसमाचारों के बीच को एक ओर अन्तर है जिसका विवरण करना कठीन है।
सुसमाचाार प्रत्यक्षदर्षी विवरण है जिस झुण्ड के लिए इसे लिखा गया उस झुण्ड के अवष्यकता के अनुसार बातों को चुनने, स्वीकारने और लिखने का अधिकार पवित्रात्मा प्रेरणा प्राप्त सुसमाचार लेखक को स्वतत्रता थीं। आधुनिक पाठक कई बार सवाल करते है कि कौनसा सुसमाचार पढ़ने के लिए ऐतिहासिक रूप से बिलकुल सही है ? या वे ज्यादा ऐतिहासिक बातों का खोज करते है जिसे लेखक ने लिखा हो। सुसमाचार को समझने के लिए हमें अधिक ऐतिहासिक बातों की आवष्यकता नही है।

20:14

'' न पहचाना कि यह यीशु है।''

मगदलिनी मरियम ने यीषु को नही पहचाना। इसका कारण यह हो सकता है: (1) आँखों में आसू होने के कारण; (2) वह अन्धेरे से ज्योति की ओर देख रही थी; या यीषु का बाहरी रूप कुछ बदला सा था (मत्ती. 28:17; लूका. 24:15)।

20:15

''महाराज''

यह यूनानी षब्द *कूरियोस* है। यहाँ इसका प्रयोग धर्मषास्त्रीय रीति से नही हुआ है। इस षब्द के कई अर्थ है: श्रीमान, मालिक, पति, प्रभु, या गुरू। उसने सोचा कि वो (1) माली या (2) बारी के मालिक से बातें कर रही है।

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। उसने सोचा कि यीषु के षरीर को किसी ने चुराया है।

20:16

''मरियम ... रबूनी''

मरियम षाब्दीक रूप से मिरियम है। ये दोनो अरामिक षब्द है। यीषु ने उसके नाम कुछ अलग प्रकार से कहाँ यही बात को एम्मुवस की ओर जानेवालो के साथ जब उसने प्रर्थना किया तो उसने दोहराया (लूका. 24:30–31)। ''रबूनी'' का ''नी'' ''मेरा गुरू,'' या ''मेरे मालिक'' की ओर संकेत देते है।

<u>*20:17*</u>

एन ए एस बी, ''मुझ से मत चिपको''
एन के जे वी '' मुझे मत छू ''
एन आर एस वी '' मुझे नही छूना ''
टी इ वी '' मुझे नही छूना ''
एन जे बी ''मुझ से चिपकना नही''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है जिसका अर्थ है जो काम प्रगति में है उसे रोको। मरियम उसे छूना तथा पकडना चाहा! स्वर्गारोहण से पहले उसके षरीर को छूने के प्रति कोई धर्मषास्त्रीय बात नही है। 20:26 में उसने थोमा से उसे छूकर देखने के लिए कहा और मत्ती. 28:9 में उसके पाँव छूने से उस स्त्री को उसने मना नही किया।

<u>*'' मैं अब तक ऊपर नहीं गया,''*</u>

उसके पुनरुत्थान के 40 दिनों तक वो स्वर्ग नही जाएंगे (प्ररित. 1:9)।

<u>*'' मेरे भाइयों के पास जाकर ''*</u>

पुनरुत्थित, महिमा प्रप्त प्रभु अपने षिश्यों को ''भाई'' कहते है (मत्ती. 12:50)।

<u>*''मैं ऊपर जाता हूँ।''*</u>

यह एक वर्तमानकाल वाक्य है। परन्तु वास्तव में 40 दिनो तक यह हुआ नहीं (नूका.24:50–52; प्रेरित. 1:2–3)। यूहन्ना लगातार ''ऊपर'' ''नीचे'' का दोहरावाद का उपयोग कर रहा है। यीषु पिता से आया है (अस्तित्व) तथा पिता की ओर वापस जा रहे है (महिमा)।

<u>*'' कि मैं अपने पिता,*</u>
<u>*और तुम्हारे परमेश्वर ''*</u>

कितनी सुहावनी कथन है! पर इसे भी कहना अवष्य है कि यीषु के पुत्रत्व के बराबर नही है विष्वासियों का पुत्रत्व। वो पिता का अनोखा पुत्र है जो संपूर्ण ईष्वर और संपूर्ण मनुश्य है। केवल उसी के द्वारा ही विष्वासी उसके परिवार के सदस्य बनते है। वो उद्धारकर्ता, प्रभु और भाई हैं!

<u>*20:18*</u>

मरियम भी गवाह है!

20:19–23

19. उसी दिन जो सप्ताह का पहला दिन था, सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले
20. और यह कहकर उस ने अपना हाथ और अपना पंजर उन को दिखाएः तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।
21. यीशु ने फिर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।
22. यह कहकर उस ने उन पर फूंका और उन से कहा, पवित्र आत्मा लो।
23. जिन के पाप तुम क्षमा करो वे उन के लिये क्षमा किए गए हैं जिन के तुम रखो, वे रखे गए हैं।।

20:19

'' उसी दिन सन्ध्या के समय ''

यहूदियो का दिन षुरू और अन्त साँझ को होती है (उत्.1:5), अर्थात् रविार के 6.00 पीएम.

'' सप्ताह का पहला दिन था ''

पहला व्यवहारिक दिन रविवर था। यह कलीसिया के लिए यीषु के पुनरुत्थान को याद करने का दिन बन गया। यीषु ने स्वयं लगातार तीन रविवर में प्रगट होने के द्वारा इस तरीका का परिचय दिया (20:19,26; नूका. 24:36; प्रेरित. 20:7; 1कुरि. 16:2)।
पहला पीढी के मसीह लोग सब्त के दिन प्रादेषिक आराधनालय में और पर्व के दिन मे मन्दिर में एकत्रित होते थे। यीषु को मसीह के रूप में स्वीकार न करने के लिए हलॉकि रबियों ने एक ''स्राप वायदा'' को लागू किया । इस मौके पर वे सब्त के दिन आराधनालय मे जाना छोड दिया परन्तु रविवर के दिन वे विष्वासियों से यीषु के पुनरुत्थान को याद करने के लिए एकत्रित हुआ करते थे।

'' द्वार बन्द थे ''

यह बहुवचन इस बात का पुश्टी करता है कि ऊपरला और नीचला मंजिल दोनों के द्वार बन्द थे। इसका उल्लेख इसलिए किया गया कि (1) यीषु के प्रत्यक्षता को जोर दे या (2) गिरफ्तारी के डर को दर्षाए।

'' चेले थे,''

थोमा वहाँ नही था। षेश 11 प्रेरितो के अलावा ओर भी षिश्य वहाँ मौजूद थे (नूका. 24:33)।

''तुम्हें षान्ति मिलें ''

यह उनका आष्चर्य या डर को दिखाते है। यीषु ने उन्हें षान्ति का वायदा किया था (14:27; 16:33; 20:21)। यह षायद अभिवादन करने का अब्रानी तरीका *षालोम* भी है।

20:20

*'' उस ने अपना हाथ और अपना पंजर
उन को दिखाएः''*

यूहन्ना बाकी सुसमाचारों से बढ़कर यीषु का बेधा हुआ पंजर पर केन्द्रित करते है (19:37; 20:25)। लूका. 24:39 तथा भ.सं. 22:16 के अलावा यीषु के पाँव के बारे में कहीं जिक्र नही है। यीषु के महिमा प्राप्त षरीर में क्रूसीकरण का चिन्ह है (1कुरि. 1:23; गला. 3:1)।

'' प्रभु ''

यह षीर्शक पूर्ण धर्मषास्त्रीय समझ से प्रयोग किया गया है जो पुराने नियम के
षीर्शक यहोवा से संबन्धित है (निर्ग. 3:14)। पिता परमेष्वर का एक षीर्शक यीषु के लिए प्रयोग करने के द्वारा यीषु का संपूर्ण देवीयता को साबित करता है।

20:21

'' जैसे पिता ने मुझे भेजा है,''

यह संपूर्णकाल वाक्य है (17:18)। कलीसिया के पास दैवीय अधिकृत आदेष है (मत्ती. 28:18–20; प्रेरित. 1:8)।विष्वासियों को एक त्यागपूर्ण सेवा के लिए भेजा गया है (2कुरि. 5:14–15; 1यूह. 3:16)।
षब्द ''भेजना'' के लिए दो षब्दो का प्रयोग यीषु करते है। यूहन्ना मे ये दोनों पर्यायवाची षब्द है। अध्याय 8 में *पेम्पो* षब्द पिता के द्वारा पुत्र को भेजा जाने के लिए प्रयोग करते है (8:16,18,26,29), फिर भी 8:42 में *अपोस्टलो* का प्रयोग है। अध्याय 5,6 में भी इस प्रकार का प्रयोग हैं।

20:22

'' उस ने उन पर फूंका ''

यह एक अनिषचित भूतकाल आदेष है। यह ज्ञात नही है कि पेन्तिकुस्त के दिन में उतर आनेवाली पवित्रात्मा से किस प्रकार संबन्धित है। यीषु ने अपने षिश्यों से जो भी वायदा किए थे उन तमाम बातों को पहले ही प्रत्यक्षता में संपूर्ण किया। जैसे पवित्रात्मा ने यीषु को बपतिस्मा के लिए तैयार किया वैसे यीषु के द्वारा षिश्यों को नए सेवकोई के लिए तैयार करने से यह संबन्धित है।
प्रारम्भिक कलीसिया ने पवित्रात्मा पिता से या पुत्र और पिता से निकलता है इस विशय के ऊपर विवाद करने के लिए इस आयत का उपयोग करते थे। वास्तविकता में त्रीएकता का प्रत्येक व्यक्ति उद्धार के कार्य में कार्यषील है।
ए थियॉलजर ऑफ द न्यू टेस्टमेन्ट में जॉर्ज एल्डन लाड इस अनुच्छेद का व्याख्या को अस प्रकार संक्षिप्त करते है:

> '' यह अनुच्छेद पेन्तिकुस्त के दिन में उतरनेवाली पवित्रात्मा के विशय में अडचन को पैदा कर दिया जिसे निम्नलिखित तीन तरीकों में से एक के द्वारा सुलझाया जा सकता है। या तो युहन्ना पेन्तिकुस्त के बारे में नही जानता था और बदले में इस कहानी को उल्लेखित किया जो अप्रभावित यूहन्ना पेन्तिकुस्त बन गया; या पवित्रात्मा के दो प्रकार के वरदान है; या यीषु का फूंकना पेन्तिकुस्त के दिन में उतरनेवाली पवित्रात्मा के लिए एक संकेत और दृश्टान्त था'' (पृश्ठ. 289)।

20:23

'' जिन के पाप तुम क्षमा करो ''

यहाँ *आन* के साथ दो तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे साधारण रीति से द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य के लिए उपयोग करते थे। यह ऐसे एक घटना की ओर इषारा करते है जो सुसमाचार सुनानेवाले और विष्वास से प्रत्युत्तर देनेवाले से संबन्धित है। ये दोनों पहलू की अवष्यकता है। यह विष्वास करनेवाला साक्षियों के लिए अद्भुत जीवनदायक सामर्थ है। यीषु के जीवनकाल में यह सामर्थ 70 सेवकों के सेवा कार्य में प्रगट हुआ ।

''वे उन के लिये क्षमा किए गए हैं ''

यह सुसमाचार प्रचार के द्वारा परमेष्वर के तरफ से मिलनेवाला पाप क्षमा को दर्षाता है। विष्वासियों के पास राज्य का कुंजी है (मत्ती. 16:19) यदि वे इसे उपयोग करेंगे तो। यह वायदा कलीसिया के लिए है न कि व्यक्तियों के लिए। यह धर्मषास्त्रीय ढ़ंग से ''बान्धना तथा खोलने'' का समानता में है (मत्ती. 18:18)।

20:24—25

24. परन्तु बारहों में से एक व्यक्ति अर्थात् थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, जब यीशु आया तो उन के साथ न था।
25. जब और चेले उस से कहने लगे कि हम ने प्रभु को देखा हैः तब उस ने उन से कहा, जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा।।

20:24

'' परन्तु बारहों में से एक व्यक्ति अर्थात्
थोमा जो दिदुमुस कहलाता है,
जब यीशु आया तो उन के साथ न था।''

यूनानी में '' दिदुमुस '' का अर्थ है ''जुडुवा'' (11:16)। कईबार लोग इस षब्द का प्रयोग के द्वारा उसे संदेही कहलाते है, परन्तु 11:16 याद रखें। थोमा का जिक्र षेश सुसमाचारों से अधिक यूहन्ना रचित सुसमाचार में है (11:16; 14:5; 20:24,26,27,28,29; 21:21)।

20:25

'' जब तक ... मैं प्रतीति नहीं करूंगा।।''

'' जब तक'' दो नकारात्मक षब्दों के साथ एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है। यीषु ने इस बात का आदर किया। यीषु ने षिश्यों के विष्वास के साथ निम्न कार्य कियाः (1) उसके चमत्कर और (2) उसके भविश्द्वाणी। यीषु के संदेष बिलकुल नई थी। साबित तथा लागू करने के द्वारा सुसाचार को समझने का समय उन्हें दिया गया।

20:26–29

26. आठ दिन के बाद उस के चेले फिर घर के भीतर थे, और थोमा उन के साथ था, और द्वार बन्द थे, तब यीशु ने आकर और बीच में खड़ा होकर कहा, तुम्हें शान्ति मिले।
27. तब उस ने थोमा से कहा, अपनी उंगली यहां लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।
28. यह सुन थोमा ने उत्तर दिया, हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!
29. यीशु ने उस से कहा, तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य हैं वे जिन्हों ने बिना देखे विश्वास किया।।

20:26

'' आठ दिन के बाद ''

यह दूसरा रविवार का साँझ थी। यीशु ऊपरी कोठरी में षिश्यों के सामने प्रगट हुआ।

20:27

''अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो''

अर्थात् जो काम प्रगति में है उसे रोको। समस्त विष्वासी विष्वास और संदेह का मिश्रण है।

20:28

थोमा का अंगीकार धर्मषास्त्रीय ढ़ंग से आयत 17 से संबन्धित है। धर्मषास्त्रीय ढ़ंग से यीषु के लिए पिता को ''हे मेरे परमेश्वर '' कहना उचित नही है। ऐसा लगता है कि यह उसे अपना दैवीयता से दूर करते है।
थोमा का अंगीकार में पुराने नियम के जैसे षीर्शक *यहोवा एलोहिम* का प्रयोग है जिसका अनुवाद प्रभु परमेष्वर होता है। यीषु ने पूर्ण रूप से इस दैवीयता को ग्रहण किया। अध्याय 1:1 से यीषु नासरी का दैवीयता का प्रमाण देते आ रहे है।
यूहन्ना रचित सुसमाचार में कई बार यीषु ने अपना दैवीयता का दावा किया (8:58; 10:30; 14:9; 20:28) तथा लेखक भी उसका दैवीयता का परिचय देते है (1:1,14–18; 5:18)। अन्य बाइबलीय लेखक भी कहते है कि यीषु दैवीय है (फिलि. 2:6–7; कुलु. 1:15–17; तीतुस. 2:13)।

20:29

यह षुरूवाती वाक्यांष कथन या प्रष्न है जो हाँ में उत्तर चाहता है। **व्याकरणात्मक ढाँचा** अस्पश्ट है। यह 17:20 में कहे गए आषीर्वाद के समान है (1पत. 1:8)।

20:30–31

30. यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए।
31. परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह हैः और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।।

20:30

आयत 30–31 स्पश्ट रूप से इस सुसमाचार का उद्धेष्य और केन्द्रिय विशय है। यह एक सुसमाचार पत्रिका है। पवित्रात्मा प्रेरणा के अधीन यीषु के बोल–चाल को चुनने,स्वीकारने तथा संक्षिप्त करने का स्वतंत्रता है। नए नियम कोई तालमूद नही है।
द एक्सपोसिटरस बाइबल केमन्ट्रि भाग.1 में द अथोरिटि एण्ड इनस्पिरेषन ऑफ द बाइबल नामक लेख में कार्ल एफ. एच. हेनरी इस प्रकार कहते हैः
''बाइबल संपूर्ण घटना के ब्योरा प्रस्तुत करने की प्रयास नही कर रही है, चाहे वे सृश्टि की कहानी हो याा चाहे उद्धार का इतिहास क्यों न हो यहाँ तक कि देहधारण भी हो। जितनी बात मनुश्य का उद्धार और आज्ञाकारिता के लिए ज़रूरी है उतनी बातें बाइबल में दी गई है जिसके द्वारा सृश्टिकर्ता की सेवा करें। हलॉकि लेखकों ने विभिन्नता के साथ परमेष्वर के बातों को प्रस्तुत किया तौभी जो कुछ उन्हों ने रेखांकित किया है वे सब सही और मानने योग्य है। मार्ग निर्देषन के लिए मत्ती ने यीषु की सेवा का कालानुक्रमिका ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। लूका ने मरकुस में लिखि हुई अधिकतर बातों को छोड दिया है। यूहन्ना युक्तिसंगत बातों के द्वारा अपना सुसमाचार का प्रस्तुतीकरण करता है (20:30,31)'' (पृश्ठ. 27–28)।

20:31

एन ए एस बी, एन के जे वी, टी इ वी , एन जे बी '' कि तुम विश्वास करो,''
एन आर एस वी ''ताकि तुम विष्वास में आए''

कुछ षुरूवाती हस्तलेख पी66, आलेफ, एच, बी के आधार पर यूहन्ना ने यह विष्वासियों को विष्वास मे स्थिर रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए लिखा है।
कुछ ओर हस्तलेख के आधार पर यूहन्ना ले यह अविष्वासियों के लिए लिखा है। इसलिए यह दूसरे सुसमाचारों के समान एक सुसमाचार पत्रिका है।

'' मसीह ''

यह यूनानी षब्द *मेसायाह* का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''अभिश्क्त व्यक्ति''। यह पुराने नियम के दाऊद वंषज है जिसके बारे में भविश्यद्वाणी किया गया था कि वह धार्मिकता का नए युग का आरम्भ करेंगे। नसरेत का यीषु (1:45) यहूदियों का मसीह है (11:27)।
यीषु का यह पदवी के बारे में सुसमाचार के षुरूवत में देखते है (1:41) हलॉकि अन्यजातीय प्रसंग में मसीह के बदले में प्रभु षब्द का प्रयोग यीषू के लिए किया गया है (रोमि. 10:9–13; फिलि. 2:9–11)।
''मसीह'' का समसन्य विचार में अन्तिम दिन षास्त्र गूढार्थ था (1) फरीसियों में राजनैतिक, राश्ट्रीय प्रतीक्षाएं थीं और (2) यहूदी भविश्यात्मक साहित्यों में विष्वास्तरीय प्रतीक्षाएं थीं।

'' परमेश्वर का पुत्र''

यह षीर्शक समानन्तर सुसमाचार में अधिकतर बार प्रयोग किया, परन्तु युहन्ना में बिलकुल कम प्रयोग किया गया है (1:14,34,49)। यह यीषु और पिता के बीच का संबन्ध को बताने का अनोखा तरीका है। यूहन्ना पारीवारिक रूपको को प्रयोग कई तरीको से करता हैः (1) एक षीर्शक; (2) ''अपने एकलौते'' के संबन्ध में (मोनोजीनेस 1:18; 3:16; 1यूह. 4:9); और (3) षीर्शक पिता के प्रयोग के द्वारा (20:17)()()

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. **कब्र मे कौन आया था ? कब ? क्यों ?**
2. **षिश्यों ने क्यों** पुनरुत्थान का प्रतीक्षा नही किया ? क्या किसी ने प्रतीक्षा किया था ?
3. मरियम क्यो यीषु को पहचान नही पाई ?
4. क्यो यीषु ने मरियम को छूने के लिए मना किया ?
5. आयत 22–23 का विवरण अपने षब्दों में करो।
6. क्या थोमा को संदेही कहना सही है ?
7. यीषु के दिनों में षब्द विष्वास को किस प्रकार समझते थे, परिभाशा दें।

यूहन्ना – 21

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
7 षिश्यों के सामने यीषु की प्रत्यक्षता	**समुद्र तट पर नाष्ता**	**उपसंहार**	**7 षिश्यों के सामने यीषु की प्रत्यक्षता**	**तिबरियास के तट पर प्रत्यक्षता**
21:1—14	**21:1—14**	**21:1—3**	**21:1—3क**	**21:1—3**
			21:3ख—5क	
		21:4—8		**21:4—8**
			21:5	
			21:6	
			21:7—10	
		21:9—14		**21:9—14**
यीषु और पतरस	**यीषु पतरस को पुनः स्थापित करते हैं**		**यीषु और पतरस**	
21:15—19	**21:15—19**	**21:15—19**	**21:15क**	**21:15—19**
			21:15ख	
			21:15ग—16क	
			21:16ख	
			21:16ग—17क	
			21:17ख	
			21:17ग—19	
यीषु और प्रिय षिश्य	**प्रिय षिश्य और उसकी पुस्तक**		**यीषु और अन्य षिश्य**	
21:20—23	**21:20—25**	**21:20—23**	**21:20—21**	**21:20—23**
			21:22	
			21:23	**दूसरा उपसंहार**
21:24		**21:24—25**	**21:24**	**21:24**
21:25			**21:25**	**21:25**

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 21ः 1–25

क. अध्याय 21 के प्रति ऐसे एक तर्क–वितर्क जारी है कि यह बाद में जोडा गया क्योंकि 20:31 में इसका अन्त लगता है। हलॉकि ऐसे कोई यूनानी हस्तलेख नही है जिस में अध्याय 21 छोड दिया गया हो।

ख. आयत 25, बाद मे जोडा हुआ लगता है क्योंकि कुछ हस्तलेखों में आयत 24 के बाद 7:53–8:11 को लिखा गया है। और प्राचीन हस्तलेख *सीनाईटिक्स* का नकलकर्ता ने आएत 25 को छोड दिया है और दुबारा इसे लिखने के लिए दिखावटी पुराने मुद्रण का उपयोग करना पडा।

ग. यदि अध्याय 21 यूहन्ना रचित सुसमाचार का भाग नही तो भी इसका लेखक कोई प्रेरित ही है। यह प्रारम्भिक कलीसिया की प्रमुख दो सवालों का उत्तर देते हैः

1. क्या पतरस बहाल किया गया ?
2. यूहन्ना के लम्बी आयु के पीछे का रहस्य क्या है ?

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

21:1–3

1. इन बातों के बाद यीशु ने अपने आप को तिबिरियास झील के किनारे चेलों पर प्रगट किया और इस रीति से प्रगट किया।
2. शमौन पतरस और थोमा जो दिदुमुस कहलाता है, और गलील के काना नगर का नतनएल और जब्दी के पुत्र, और उसके चेलों में से दो और जन इकट्ठे थे।
3. शमौन पतरस ने उन से कहा, मैं मछली पकड़ने जाता हूँः उन्हों ने उस से कहा, हम भी तेरे साथ चलते हैंः सो वे निकलकर नाव पर चढ़े, परन्तु उस रात कुछ न पकड़ा।

21:1

'' तिबिरियास झील ''

तिबिरियास गलील के प्रषासक राजधानी है। इसे ''गलील का झील'' (6:1), या गन्नेसरेत की झील (मत्ती. 14:34; मरकुस. 6:35; लूका. 5:1) भी कहा गया, तथा इसे पुराने नियम में किन्नेरेत झील (गिन. 34:11; व्यवस्था. 3:17; यहो. 11:2; 12:3; 13:27; 19:35; 1 राजा. 15:20) कहा गया।

''यीशु ने अपने आप को इस रीति से प्रगट किया। ''

इस क्रिया का अर्थ है ''पूर्ण रीति या स्पश्ट रूप से प्रदर्षीत करना'' (1:31; 2:119 7:4; 953;1यूह. 1:2; 2:28; 3:2; 4:9)। मत्ती में यही मुलाकात एक पहाड़ के ऊपर हुई थी (16:32; 28:7,10,16), महान आदेष के निर्धारण के लिए। यूहन्ना रचित सुसमाचार में इसका निर्धारण तिबिरियास झील में है। इस मुलाकात में यीषु प्रारम्भिक कलीसिया की प्रमुख दो सवालों के साथ व्यवहार कर रहे हैः (1) पतरस बहाल किया गया ? (2) यूहन्ना के लम्बी आयु के पीछे का रहस्य क्या है ?

21:2

'' जब्दी के पुत्र,''

यह याकूब और यूहन्ना (जोहनान मत्ती. 4:21) की ओर इषारा करते है। इस सुसमाचार में याकूब और यूहन्ना के नाम का जिक्र नही किया गया।

21:3

''शमौन पतरस ने उन से कहा,
मैं मछली पकड़ने जाता हूँः''

यह एक वर्तमानकाल वाक्य है। इस मछली पकडनें के विशय में कई सिद्धान्त प्रचलित हैः (1) यीषु से मिलने के लिए जो समय बताया गया था उसके बीच के अन्तराल में यह दिल बहलाने के लिए किया गया काम था (मत्ती. 26:32; 28'7,10); (2) यह पैसे कमाने के लिए किया गया; या (3) यह पतरस के द्वारा इस काम के लिए उकसाया हुआ समय था। यह अध्याय लूका 5 से मेल खाता है।

'' उस रात कुछ न पकड़ा। '

ये रोगियों को चंगा कर सकता है, दुशात्माओं को निकालता है परन्तु हर वक्त किसी भी कार्य करने के लिए यह अलौकिक सामर्थ उनके पास नही था। नए नियम में यहाँ पर प्रयोग किया गया क्रिया मछली पकडने के लिए कहीं ओर प्रयोग नही किया है। साधारण रूप से इस क्रिया को किसी के गिरफ्तारी के लिए प्रयोग करते है।

21:4—8

4. भोर होते ही यीशु किनारे पर खड़ा हुआ; तौभी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है।
5. तब यीशु ने उन से कहा, हे बालको, क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है? उन्हों ने उत्तर दिया कि नहीं।
6. उस ने उन से कहा, नाव की दहिनी ओर जाल डालो, तो पाओगे, तब उन्हों ने जाल डाला, और अब मछलियों की बहुतायत के कारण उसे खींच न सके।
7. इसलिये उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम रखता था पतरस से कहा, यह तो प्रभु हैः शमौन पतरस ने यह सुनकर कि प्रभु है, कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था, और झील में कूद पड़ा।

8. परन्तु और चेले डोंगी पर मछलियों से भरा हुआ जाल खींचते हुए आए, क्योंकि वे किनारे से अधिक दूर नहीं, कोई दो सौ हाथ पर थे।

2:4

" तौभी चेलों ने न पहचाना कि यह यीशु है।"

यीशु को न पहचानने के पीछे कई सिद्धान्त हैं: (1) अन्धेरा काफी था; (2) वो काफी दूर था; (3) वे काफी थक चुके थे; (4) यीशु दिखने में अलग था (21:12; मत्ती. 28:16–17; लूका. 24:13) या (5) यीशु को पहचानने में परमेष्वर नेउन्हें रोककर रखा था (लूका. 24:16)।

21:5

" बालको,"

यह एक रूपक है। नए नियम में साधारण रूप से "बालको" के लिए दो षब्द का प्रयोग है। यहाँ पर प्रयोग किया गया षब्द *पाइडियॉन* 1 यूहन्ना, यूहन्ना रचित सुसमाचार में साधारण रूप से प्रयोग किया गया षब्द *टेक्नियॉन* से भिन्न है। षब्द *पाइडियॉन* केवल 4:49; 16:21 और यहाँ पर है। षब्द *पाइडियॉन* 1 यूहन्ना. 2:13,18 में है, परन्तु षब्द " *टेक्नियॉन* " 2:1,12,28 में प्रयोग किया गया है।

" क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है?"

यहाँ पर प्रयोग किया गया षब्द *"प्रोसफागियॉन"* किसी भी भोजन वस्तु जो रोटी के साथा खाया जाता है उसे दर्षाता हैं। इस प्रसंग में यह मछली को दर्षाता है। यह प्रष्न **"न" में उत्तर चाहता है।**

21:6

जब यीशु ने पहली बार षिश्यों (लूका. 5:1–11) को बुलया था उस बात को यहाँ दोहरा रहे है। इस अध्याय के विषेशता के तौर से (देखिए नोटः 21:15) नाव के लिए दो विभिन्न षब्दों का प्रयोग है – 21:3 में *"प्लोयियॉन"* (नाव) तथा 21:6 में *"प्लोइएरॉन"* (छोटा नाव)।

21:7

***एन ए एस बी,* "उसने अपना बाहरी वस्त्र पहनकर (जिसे काम के समय में उतारा था)"**
***एन के जे वी* " उसने अपना बाहरी वस्त्र पहनकर (जिसे वह उतारकर रखा था)"**
***एन आर एस वी* " उसने कुछ वस्त्र पहन लिये '**
***टी इ वी* "** कमर में अंगरखा कस लिया, क्योंकि वह नंगा था,"
***एन जे बी* "** पतरस ने कमर में अंगरखा कस लिया, (क्योंकि वह नंगा था,)"

पहली षताब्दी में पलिस्तीन के रहनेवाले एक लम्बा सा अन्दरवस्त्र के साथ एक बाहरी वस्त्र भी पहना करते थे। पतरस ने अपना बाहरी वस्त्र निकालकर अन्दर वस्त्र को ऊपर को कर रखा था।

'' इसलिये उस चेले ने जिस से यीशु प्रेम रखता था ''

यह इस सुसमाचर के लेखक प्रेरित यूहन्ना को बताता है (13:23; 20:2,3,8; 21:20)। इस सुसमाचार में यूहन्ना का नाम का उल्लेख नही है।

''यह तो प्रभु हैः ''

''गुरू,'' ''मालिक,'' ''प्रभु,'' ''श्रीमान'' के लिए यूनानी में षब्द *''कूरियोस''* का प्रयोग है। कुछ प्रसंग में यह विनम्र संबोधन को दर्षाता है, पर बाकी जगहों पर यह यीषु का दैवीयता को प्रगट करते है। इस प्रसंग में उन्होने यीषु को महिमा प्राप्त और पुनरुत्थित मसीह के रूप मे पहचाना।
यह अनुवाद पुराने नियम का उपयोग से लिया गया है जहाँ षब्द *यहोवा* को प्रभु में अनुवाद किया गया है। यह इसलिए हुआ कि यहूदी परमेष्वर के वाचा का नाम लेने से डरते थे और इस के बदले में इब्रानी में षब्द *''अडोनाई''* का प्रयोग करते थे जिसे यूनानी में *कूरियोस क*हते है। फिलि. 2:9—11 में सारे नामों से श्रेश्ठ नाम ''प्रभु'' है। यह प्रारम्भिक कलीसिया के बपतिस्मा के समय का अंगीकार एक भाग था (रोमियों. 10:9—13)।

21:9—14

9. जब किनारे पर उतरे, तो उन्हों ने कोएले की आग, और उस र मछली रखी हुई, और रोटी देखी।
10. यीशु ने उन से कहा, जो मछलियां तुम ने अभी पकड़ी हैं, उन में से कुछ लाओ।
11. शमौन पतरस ने डोंगी पर चढ़कर एक सौ तिर्पन बड़ी मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा, और इतनी मछलियां होने पर भी जाल न फटा।
12. यीशु ने उन से कहा, कि आओ, भोजन करो और चेलों में से किसी को हियाव न हुआ, कि उस से पूछे, कि तू कौन है?
13. यीशु आया, और रोटी लेकर उन्हें दी, और वैसे ही मछली भी।
14. यह तीसरी बार है, कि यीशु ने मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को दर्शन दिए।।

21:9

'' कोएले की आग,
और उस पर मछली रखी हुई,
और रोटी देखी।''

इस नाष्ते का उद्धेष्य है संगति और धर्मषास्त्रीय विचार। धर्मषास्त्रीय गूढार्थ हैः (1) यह भाग पतरस का तिरस्कार के विशय में बातें कर रहे है जहाँ दूसरे एक आग के सामने बैठा था (18:18)। इस षब्द को केवल दो जगह पर ही प्रयोग किया हैं, तथा (2) 1 यूहन्ना, और यूहन्ना रचित सुसमाचार नॉस्टिक झूठे विचारधारा, मसीह यीषु के मानवीयता का तिस्कार, के विरोध मे लिखा गया है। यीषु ने उनके साथ भोजन किया।

21:10

इस अनुच्छेद में मछली के लिए दो भिन्न षब्दो का प्रयोग हैः (1) आयत 9,10,13 में *ऑपसरियॉन* अर्थात् छोटी मछलियाँ तथा (2) आयत 6,8,11 में *इचथुस* अर्थात् बडी मछालियाँ।

21:11

"एक सौ तिर्पन "

इस प्रसंग में इसका कोई महत्व नही है। यह केवल एक प्रत्यक्षदर्शी सूचना है। हलॉकि प्रारम्भिक कलीसिया की आलंकारिक व्याख्या ने कई अर्थ को प्रस्तुत किया, जैसे किः (1) सिरिल ने कहा 100 अन्यजाती , 50 यहूदी, और 3 त्रीएकता को दर्षाता है; (2) अगस्टिन के अनुसार यह 10 आज्ञा और पवित्रात्मा के 7 वरदानें को जो संख्या 17 के बराबर है। और यह संख्या उनको दर्षाता है जो व्यवस्था और अनुग्रह के द्वारा मसीह में आया हो। जरोम ने कहा यह 153 प्रकार के मछलियाँ है और यह समस्त राश्ट्र की ओर इषारा करती हैं जो मसीह के पास आनेवाली है। इस प्रकार की व्याख्या टिप्पणीकर्ता की बुद्धि को दर्षाता है न कि प्रेरणा प्राप्त लेखक के सही विचार को।

" इतनी मछलियां होने पर भी जाल न फटा।"

यह साधारण प्रत्यक्षदर्शी विवरण या एक चमत्कार का विवरण है।

21:14

"यह तीसरी बार है,
कि यीशु ने मरे हुओं में से जी उठने के बाद चेलों को दर्शन दिए।"

यह अध्याय 20में वर्णीत दो पत्सक्षता के साथ मिलता हैं

21:15—19

15. भोजन करने के बाद यीशु ने शमौन पतरस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है? उस ने उस से कहा, हां प्रभु तू तो जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ: उस ने उस से कहा, मेरे मेमनों को चरा।
16. उस ने फिर दूसरी बार उस से कहा, हे शमौन यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रेम रखता है? उस ने उन से कहा, हां, प्रभु तू जानता है, कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ: उस ने उस से कहा, मेरी भेड़ों की रखवाली कर।
17. उस ने तीसरी बार उस से कहा, हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? पतरस उदास हुआ, कि उस ने उसे तीसरी बार ऐसा कहा; कि क्या तू मुझ से प्रीति रखता है? और उस से कहा, हे प्रभु, तू तो सब कुछ जानता हैः तू यह जानता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूँ: यीशु ने उस से कहा, मेरी भेड़ों को चरा।
18. मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तू जवान था, तो अपनी कमर बान्धकर जहां चाहता था, वहां फिरता था; परन्तु जब तू बूढ़ा होगा, तो अपने हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा तेरी कमर बान्धकर जहां तू न चाहेगा वहां तुझे ले जाएगा।
19. उस ने इन बातों से पता दिया कि पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा; और यह कहकर, उस से कहा, मेरे पीछे हो ले।

21:15

''शमौन, यूहन्ना के पुत्र, ''

यीषु ने उसे शमौन पतरस नही कहाँ पतरस पत्थर था!

'' प्रेम ... प्रेम ... प्रेम ''

यह पतरस का तीन बार तिरसकार करने से संबन्धित लगता है (18:17,25,27)। इस भाग में कुछ समानता और विरोधाभास भी हैः (1) प्रेम (फिलियो) बनाम प्रीति (अगापाओ); (2) मेम्ना बनाम भेड़; (3) जानना (गिनस्को) बनाम जानना (ओइडा)। इस बात पर काफी तर्क–वितर्क है कि यूहन्ना ने इसे जान बुझकर किया है यह लिखने में गड़बड़ हुई है। यूहन्ना अवष्य भिन्नता का प्रयोग करता है (जैसे कि बालक, नाव, मछली के लिए दो षब्दो का प्रयोग)। इस प्रसंग में अगापाओ और फिलियो में भिन्नता लगती तो है परन्तु ये सामान्य युनानी में पर्यायवाची षब्द भी है (3:35; 5:20; 11:3,5)।

'' क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम रखता है?''

इस सवाल के कर्म के प्रति वाक्य–विन्यास अस्पश्ट है। कुछ कहते है यह (1) मछली पकडने का काम; (2) पतरस के उस कथन जिसमें उसने कहा था कि वह बाकी षिश्यों से बढ़कर यीषु से प्रेम करता है (मत्ती. 26:33; मरकुस.14:29 यूह. 13:37); या (3) जो प्रधान है, वह सेवक की नाई बने (लूका. 9:46–48; 22:24–27) की ओर इषारा करता है।

''मेरे मेमनों को चरा''

यह एक वर्तमानकाल का आदेष है। ये तीनों कथन का **व्याकरणात्मक ढाँचा एकसा है** (21:16,17), परन्तु षब्दों में अन्तर है (मेमनों को चरा, भेड़ों की रखवाली कर)।

21:17

'' हे प्रभु,
तू तो सब कुछ जानता हैः ''

पतरस सावधानी से बातें करना सीख रहा है। वह एक अच्छे धर्मषास्त्र को प्रस्तुत कर रहा है (2:25; 6:61,64; 13:11; 16:30)।

'' तू यह जानता है कि
मैं तुझ से प्रीति रखता हूँः''

आयत 16 और 17 में षब्द ''जानता है'' के लिए प्रयोग किया गया यूनानी षब्दों में भिन्नता है (ओइडा 21:16), (ओइडा तथा गिनस्को 21:17)। सही कारण अज्ञात है।

21:18

'' अपने हाथ लम्बे करेगा,''

यह एक मुहावरे के समान है जिसे (1) प्रारम्भिक कलीसिया और (2) यूनानी साहित्य ने क्रूसीकरण के लिए प्रयोग किया था।

21:19

'' पतरस कैसी मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा; ''

परम्परा कहती है कि पतरस को उलटा क्रूस पर चढाया गया। दी एक्लिषियास्टिकल हिस्टरी भाग. 3:1 में यूसेबियुस कहते है यह विष्वास किया जाता है कि पतरस ने पन्तियस, गलातिया,बिथुनिया,कुपदुकिया, और आषिया में तितर बितर होकर रहनेवाले यहूदियों को वचन सुनाया। जब वह रोम में गया तो उसे क्रूस पर चढाया गया, उसके अनुरोध के अनुसार उलटा क्रूस पर चढाया।

''मेरे पीछे हो ले''

यह आयत 22 के समान एक वर्तमानकाल आदेष है। यह पतरस का नेतृत्व का बुलाहट का संपुश्टीकरण और नए किए जाने से संबन्धित है (मत्ती.4:19–20)।

21:20–23

20. पतरस ने फिरकर उस चेले को पीछे आते देखा, जिस से यीशु प्रेम रखता था, और जिस ने भोजन के समय उस की छाती की और झुककर पूछा हे प्रभु, तेरा पकड़वानेवाला कौन है?
21. उसे देखकर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, इस का क्या हाल होगा?
22. यीशु ने उस से कहा, यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे हो ले।
23. इसलिये भाइयों में यह बात फैल गई, कि वह चेला न मरेगा; तौभी यीशु ने उस से यह नहीं कहा, कि यह न मरेगा, परन्तु यह कि यदि मैं चाहूँ कि यह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इस से क्या ?

21:20

'' जिस से यीशु प्रेम रखता था,''

यह 13:25 की ओर इषारा करता है। वह अपने बारे में क्यों इस प्रकर कहता है यह अज्ञात है (13:23; 19:26; 20:2; 21:7,20)। संभावित सिद्धान्त निम्नलिखित हैः (1) पहली षताब्दी के यहूदी लेखों में लेखक का नाम नही लिखा जाता था; (2) जब यूहन्ना यीषु के षिश्य बना तब वह उम्र में काफी छोटा था; या (3) मुकद्दमा और क्रूसीकरण के समय में यीषु के साथ रहा हुआ एक मात्र प्ररित यूहन्ना ही था।

21:22

''यीशु ने उस से कहा,
यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे,
तो तुझे क्या? ''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है। हमें याद रखना है कि हमें केवल अपनी सेवकोई और वरदानों के विशय में विचार करना है न कि किसी ओर के बारे में। वहाँ ऐसी एक खबर फैली हुई थी कि यीषु के पुनरागमन तक यूहन्ना जीवित रहेगा। इसका उत्तर देने के लिए अध्याय 21 की रचना हुई (यूहन्ना पुनरागमन के विशय में अवष्य कहते है– 14:23; 1यूह. 3:2)।

''तू मेरे पीछे हो ले''

यह यूहन्ना रचित सुसमाचार के व्यक्तिगत निमंत्रण का निशकर्श है (1:43; 10:27; 12:26; 21:19,22)। यह सुसमाचार के व्यक्तिगत विचार को महत्व देता है, ''विष्वस करो'' सुसमाचार की विशय वस्तु को महत्व देता है।

21:24

24. यह वही चेला है, जो इन बातों की गवाही देता है और जिस ने इन बातों को लिखा है और हम जानते हैं, कि उस की गवाही सत्य है।

21:24

'' लिखा है ''

क्या यह (1) 21:20–23; (2) अध्याय 21; या (3) पूरा सुसमाचार से संबन्धित है ? उत्तर अज्ञाात है।

'' हम जानते हैं,
कि उस की गवाही सत्य है। ''

सर्वनाम ''हम'' किस झुण्ड की ओर इषारा करते है यह अज्ञात है। यह पक्का है कि यूहन्ना रचित सुसमाचार की सत्यता के लिए दूसरो का सहारा लिया गया है। यह इफिसुस के प्राचीनों की ओर इषारा कर रहे होंगे।प्रराम्भिक परम्परा कहती है कि इफिसुस के प्राचीनों ने बुजूर्ग यूहन्ना से इस सुसाचार को लिखने के लिए बिनती की क्योंकि प्रेरित लोग गुजर चुके थे और कलीसिया के भीतर यीषु के बारे में झूठी षिक्षा की भी बढ़ौतरी हो रही थी। देखिए **विषेश षीर्शक : यीषु के प्रति गवाही : 1:8।**

21:25

25. और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं।।

<u>*21:25*</u>

आयत 25 दो कारणों से संघर्श के घेरे में हैः (1) कई हस्तलेखों में 7:53—8:11 को आयत 24 और 25 के बीच में लिखा गया है; (2) सीनाईटिकस हस्तलेख में नकलकर्ता ने मिटाने के बाद आयत 25 को लिखा है। यह आयत हमें बताती है कि लेखक के पास विशयों को चुनने का अधिकार था। एक व्याख्यात्मक प्रष्न है कि ‘‘क्यों प्रत्येक सुसमाचार लेखक ने जिस प्रकार लिखा वैसे लिखने का चुनाव किया ?‘‘(गोर्डन फी एण्ड डग्लस स्टुवर्ट, हऊ टु रीड़ द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, पुश्ठ. 113—134)।

<u>*चर्चा के लिए प्रष्न*</u>

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. यूहन्ना 21 किस प्रकार लूका. 5 के समान है
2. षिश्यों ने यीषु को एकदम क्यों नही पहचाना ?
3. कौन है वह षिश्य जिस से यीशु प्रेम रखता था ?
4. क्यों यीषु ने पतरस से तीन बार प्रेम के विशय में प्रष्न किए ?
5. क्या यीषु ने बलपूर्वक कहा है कि उसके पुनरागमन तक यूहन्ना जीवित रहेगा ?
6. आयत 24 में किस के बारे में कहा गया है ?
7. क्या आयत 25 मौलिक है ?

1 यूहन्ना

1 यूहन्ना का परिचय

इस पत्री का अनोखापन

क. यह एक व्यक्तिगत पत्री नहीं है न किसी एक कलीसिया के लिए लिखा हुआ नही है। यह मुख्य कार्यालय से भेजी गई उत्तेजितज्ञापन के समान है, अर्थात् सार्वजनिक।

1. इस में पारम्पिरिक परिचय नहीं है (किस के द्वारा किस के लिए)
2. इस में कोई व्यक्तिगत अभिवादन या समाप्ति संदेष नहीं है।

ख. व्यक्तिगत नामो का उल्लेख नहीं है। कि कई कलीसियाओं के लिए लिखी हुई पत्री में ऐसा होना असाधारण बात है सिवाय इफिसियों, याकूब। बिना लेखक का नाम उल्लेखित अन्य नए नियम की पुस्तकें है यूहन्ना और इब्रानियों । हलॉकि यह स्पश्ट है कि 1यूहन्ना विष्वासियों के लिए लिखा गया जो कलीसिया के अन्दर झूठे षिक्षको का सामना कर रहा है।

ग. यह पत्री एक षक्तिषाली धर्मषास्त्रीय निबन्ध है:

1. यीषु की सर्वाधिक महत्वपूर्णता
   - क. संपूर्ण परमेष्वर और संपूर्ण मनुश्य
   - ख. यीषु मसीह पर विष्वास करने के द्वारा ही उद्धार मिलता है, न कि कोई गुप्त जानकारी या रहस्यात्मक अनुभवों से (झूठे षिक्षक)।
2. मसीही जीवन षैली का माँग (3 जाँच)
   - क. भाईचारा
   - ख. आज्ञाकारिता

ग. पतित संसारिक प्रणाली का तिरस्कार

3. यीषु नासरी पर विष्वास करने के द्वारा अनन्त जीवन की निष्चयता (27 बार ''जानना'' का प्रयोग)

4. किस प्रकार झूठे षिक्षकों को पहचाना जाए

घ. नए नियम की पुस्तकों में यूहन्ना के लेख (विषेश रूप से 1 यूहन्ना) सामान्य यूनानी भाशा की सरल पुस्तक है, तौभी यह पुस्तक, किसी अन्य पुस्तक से बढ़कर, यीषु में परमेष्वर के अतुलनीय और अनन्त सच्चाई को प्रगट करता है (परमेष्वर ज्योति है 1:5; परमेष्वर प्रेम है 4:8,16; परमेष्वर आत्मा है यूहन्ना. 4:24)।

ङ हो सकता है 1 यूहन्ना, यूहन्ना रचित सुसमाचार के लिए सहपत्र का काम करती हो। पहली षताब्दी का नॉस्टिक झूठी षिक्षा इन दोनों पुस्तक के लिए भूमिका बनाती है।यूहन्ना रचित सुसमाचार फैलाव के लिए लिखा गया है और 1 यूहन्ना विष्वासियों के लिए लिखा गया है।
प्रसिद्ध टिप्पणीकर्ता वेस्टकोट के अनुसार सुसमाचार यीषु की देवीयता और पत्री उसकी मानवीयता की उद्धोशणा करते हैं। ये दोनों पुस्तक एक साथ हैं!

च. यूहन्ना दा अर्थ देनेवाली षब्दों से लिखता है। यह मृत सागर चर्म लेख और नॉस्टिक झूठे षिक्षको की विषेशता है। 1 यूहन्ना का साहित्यक दोहरार्थ ढाँचा षब्दिक (ज्योति बनाम अन्धकार) और षैलीक (एक समारात्मक कथन नकारात्मक कथन के साथ) है। यह यूहन्ना रचित सुसमाचार के दोहरार्थ से भिन्न है (ऊपर बनाम नीचे)।

छ. केन्द्रिय विशयों का पुनरावर्ती के कारण 1 यूहन्ना की रूपरेखा बनाना कठीन है। ह पुस्तक एक चित्रित वस्त्र के समान है जिसे पुनरावर्ती विशयों से बनाया हो (बिल हेनड्रिक्स, टेपस्ट्रीस ऑफ ट्रूथ, द लेटेरस ऑफ जॉन)।

लेखक

क. यूहन्ना द्वारा रची गई बाकी पुरूतकों, यूहन्ना रचित सुसमाचार, 2 यूहन्ना के समान 1 यूहन्ना भी तर्क के धेरे में है।

ख. वहाँ दो महत्वपूर्ण पक्ष हैं

1. पारम्परिक

क. प्रारम्भिक कलीसिया के पिता लोग इस बात में एक मत थे कि इसका लेखक यीषु का प्रिय षिश्य प्रेरित यूहन्ना ही है।

ख. प्रारम्भिक कलीसिया के सबूत का निशकर्श

(1) रोम का क्लेमन्द (90 ई0) 1 यूहन्ना के लिए संकेत देते है।

(2) स्मुरना का पोलिकार्प (110–140 ई0) 1यूहन्ना से फिलिप्पियनस 7 में उद्घृत करता है।

(3) जस्टिन मार्टीयर (150–160 ई0) डयलॉग 123:9 में 1यूहन्ना से उद्घृत करता है।

(4) अनताकिया का इगनेष्सि (तिथि ज्ञात नही है पर सन् 100ई0 के आस पास) और हिरापुलिस का पापीयास –(50– 60 ई0 में जन्मा और 155 इ0 में षहीद हो गया) के लेखों में 1 यूहन्ना के लिए संकेत है।

(5) लियॉन का ऐरेनियुस (130–202 ई0) कहते है 1 यूहन्ना प्रेरित यूहन्ना का ही है। तर्तुलियन जो कि प्रारम्भिक कलीसिया के मौखिक सुरक्षा वक्ता थे उसने 50 किताबें झूठी षिक्षा के ऊपर लिखी है और कई बार 1यूहन्ना से उद्घृत किया है।

(6) अन्य प्रारम्भिक लोग जिन्होंने प्रेरित यूहन्ना के नाम इस पत्री को समर्पित किया है वे है क्लेन्द, ओरिगन, डिनोसिस (तीनों सिकन्द्रिया के है), मुराटोरियन (180—200) और यूसेबियूस (तीसरा षताब्दी)।
(7) जरोम (चौथी षताब्दी के दूसरे भाग) में साबित किया कि यह प्रेरित यूहन्ना का ही है और कहता है कि उसके दिनों कई लोग इस बात को नकारते हैं।
(8) मोपस्यूटिया के थियोडर, अन्ताकिया के बिषप (392—428) ने यूहन्ना के लेखक होने से इनकार किया।

ग. यदि यूहन्ना है तो हम इस यूहन्ना के बारे में क्या जानते हैं ?

(1) वह जब्दी और षलोमी का पुत्र है
(2) वह एक मछुवारा था अपने भाई याकूब के साथ गलील सागर में (वह कई नावों का मालीक था)
(3) कुछ विष्वास करते हैं कि उसकी माँ यीषु की माता मरियम का बहन थी (यूह. 19:25; मरकुस. 15:20)।
(4) यह स्पश्ट है कि वह एक धनी व्यक्ति था, क्योंकि उसके पासः
(क) मजदूर थे (मरकुस. 1:20)
(ख) कई नावें थीं
(ग) यरूषलेम में घर (मत्ती. 20:20)
(5) यरूषलेम में वह महायाजक का जाना पहचाना व्यक्ति था अर्थात् वह एक प्रसिद्ध व्यक्ति था (यूहन्ना. 18:15—16)
(6) यही वह यूहन्ना है जिसके पास यीषु की माता मरियम को सौंपा था।

घ. प्रारम्भिक कलीसिया की परम्परा कहती है कि यूहन्ना बाकी प्रेरितों से अधिक वर्श तक जीवित रहा। माता मरियम की मृत्यु के बाद वह यरूषलेम से आषिया मैनर की ओर चला गया और इफिसुस में रह गया। इस षहर से उसे पत्मुस के टापू की ओर तडीपार किया गया और बाद में उसे वहाँ से छोड दिया और वापस इफिसुस आया (युसेबियुस, पोलीकार्प, पापयिास, ऐरेनियुस)।

2. आधुनिक विद्वानषास्त्र

क. अधिकतर आधुनिक विद्वानों में यह सहमति है कि यूहन्ना की सब रचनाओं में एक जैसा षब्द, वाक्यांष और व्यकरणात्मक ढ़ाँचा है। सबसे अच्छा उदाहरण है जीवन बनाम मृत्यु, सत्य बनाम झूठ। इसी षैली को हम मृतसागर चर्मलेखों में देखते है।

ख. यूहन्ना के 5 रचनाओं में एक आपसी संबन्ध देखने को मिलता है। कई लोग कहते है लेखक एक से अधिक है। परन्तु सबसे प्रमुख बात है कि विचारधारा एक ही व्यक्ति की है और हो सकता है कि उसके चेलों ने उसे लिखा हो।

ग. यह मेरा व्यक्तिगत विष्वास है कि बुजूर्ग प्रेरित यूहन्ना ने अपने सेवकाई के अन्तिम चरणों में पहुँचकर इन पत्रियों की रचना की (जब वह इफिसुस में था)।

तारीख — स्पश्ट रूप से लेखक से संबन्धित है।

क. यदि यूहन्ना ने इन पत्रियों, विषेशरूप से 1यूहन्ना, को लिखा है तो हम पहली षताब्दी के अन्त के समय के बारे में कह रहे हैं। यह नॉस्टिक झूठे धर्मषास्त्रीय/ दर्षनषास्त्रीय बातों के बढावे के लिए समय दे रहे है साथ में 1 यूहन्ना की षब्दावली (बालकों) केअन्दर भी ठीक बैठता है, ऐसा लगता है कि एक बुजूर्ग व्यक्ति जवानों से बातें कर रहा हो। जेरोम कहता है यीषु के क्रूसीकरण के बाद 68 वर्श तक यूहन्ना जीवित रहा।

ख. ए. टी. रोबेर्टसन सोचते है कि सुसमाचार (95 ई0) से पहले पत्री लिखा गया है (85–95 ई0)।

ग. ऐ. होवार्ड मार्षल के द न्यू इन्टरनाषनल केमन्ट्रि सीरीस ऑन 1 जॉन के अनुसार तिथि 60–100 ई0 के बीच में हैं।

प्राप्त कर्ता

क. परम्परा के अनुसार यह आषिया मैनर के रोमी क्षेत्रों के लिए लिखा गया है और इफिसुस इसका प्रमुख षहर था।

ख. ऐसा लगता है कि यह पत्री कुछ खास कलीसियों के लिए भेजा गया जहाँ पर झूठे उपदेष पनप रहे थे (जैसे कुलुसियों तथा इफिसियों), विषेश रूप से (1) नॉस्टिक ने यीषु की मानवीयता का इनकार किया परन्तु उसकी देवीयता का इकरार, और (2) नॉस्टिक जो धर्मषास्त्र को नैतिकता और सभ्यता से अलग करता है।

ग. अगस्टिन (चौथा षताब्दी) कहते है यह बबूल में रहनेवालो के लिए लिखा गया है। यह षायद षब्दसमूह ''चुनी हुई श्रीमती'' और वाक्यांष ''जो बबूल में है'' (1पत. 5:13; 2यूह. 1) के कारण हुआ है।

घ. द मुराटोरियन फ्राग्मेन्ट, 180–200 ई0 में नए नियम के कानोनिकल सूची, कहते है कि इसे उसके सह षिश्य और बिषपों की उत्साहना के बाद लिखा गया है (आषिया मैनर में)।

विधर्म (झूठे षिक्षा)

स्पश्ट रूप से यह पत्री स्वयं एक प्रकार के झूठी षिक्षा के विरोध में है (''यदि हम कहे ...'' 1:6; ''जो कोई कहता है ... '' 2:9; 4: 20)।

ख. 1 यूहन्ना के अन्दर से हम कुछ विधर्म बातों का सबूत देख सकते है
1. यीषु मसीह की देहधारण का तिरस्कार
2. उद्धार में यीषु मसीह के केन्द्र होने से इनकार
3. सही मसीही जीवनषैली का अभाव
4. जानकारी के ऊपर अधिक जोर (कई बार गुप्त जानकारी)
5. पुथकथा की ओर रूझान

ग. पहली षताब्दी की स्थिति
पहली षताब्दी का रोमी संसार पूर्वी और पषचिमी धर्मो के सम्मेलन का समय था। रोमी और यूनानी देवताओं की नामधराई हो चुके थे। रहस्यात्मक धर्म बहुत ही प्रचलित था क्योंकि वे गोपनीय जानकारी और देवीयता के साथ व्यक्तिगत संबन्ध को विषेश महत्व देते थे। लौकिक यूनानी दर्षन षास्त्र प्रसिद्ध थे और अन्य विष्व–दर्षनों को भी अपना रहे थे। ऐसे एक संसार में मसीही विष्वास सम्मिलित हुए (परमेष्वर के पास पहुँचने का एक मात्र मार्ग यीषु है, यूह. 14:6)। इस विधर्म की पृश्ठभूमि कुछ भी क्यों न हो यह ऐसा एक प्रयास था कि जिसके द्वारा मसीहत को यूनानी–रोमी दर्षकों के लिए दिखावटी और बुद्धिसंगत स्वीकृत बनाई जाए।

घ. संभावित नॉस्टिक झुण्ड जिसका सामना यूहन्ना कर रहा होगा
1. प्रारम्भिक नॉस्टिक मत
क. प्रारम्भिक नॉस्टिक मतजो पहली षताब्दी में था वह इन बातों को विषेश महत्व देते थे कि अनीदकाल के विरूद्ध देतवाद आत्मा और भौतिक पदार्थ के बीच है। भौतिक पदार्थ बुरा और हठी है; आत्मा (वरिश्ठ परमेष्वर) अच्छा है। यह मानसिक बनाम षारीरिक, स्वर्गीय बनाम सांसारिक, अदृष्य बनाम दृष्य। जिसके पास

गोपनीय ज्ञान और संकेत षब्द है उसे यह अनुमति है कि वह स्वर्गदूतों का मण्डल से होकर परमेष्वर से एक होजाए इस बात पर अधिक महत्व है।

ख. प्रारम्भिक नॉस्टिक मत के दो प्रकार के रूप हैं जो 1 यूहन्ना की पृश्ठभूमि बनते है।
(1) डोसेटिक नॉस्टिक मत, जो यीषु की मानवियता तिरस्कार करते हैं क्योंकि भौतिक पदार्थ बुरा हैं।
(2) केरिन्तियन नॉस्टिक मत, बताता है कि मसीह स्वर्गदूतों की श्रृंखलों में से एक है जो एक ऊँचा अच्छे परमेष्वर और बुरा पदार्थ के बीच में है। यह 'मसीह आत्मा' यीषु की बपतिस्मा के समय पर उसके अन्दर आया और क्रूसीकरण से पहले उसे छोड़कर चला गया।
(3) इन दोनों झुण्ड में से कुछ सन्यासी जीवन बिताते थे और कुछ तो जो षरीर चाहते थे उसे पूरा करते थे। पहली षताब्दी का नॉस्टिक मत,का लिखित सबूत नही है दूसरी षताब्दी के मध्य समय से कुछ लिखित बातें हमें प्राप्त होती हैं आगे की जानकारी के लिए निम्न लिखित पुस्तकों को देखें

- क. हानस जॉनास का द नॉस्टिक रिलीजियन
- ख. एलाइन पेगल्स का द नॉस्टिक गोसपल्स
- ग. आन्ड्रयू हेल्मबोल्ड का द नाग हम्माडी नॉस्टिक टेक्सट्स एण्ड द बाइबल

2. इगनेष्यिस अपना लेख *टू द स्मुरनेएनस पअ दृअ* में इस विधर्म का एक ओर संभावित कारण को बताते है। वे यीषु के देहधारण को तिरस्कार किया और अपनी मर्जी से जीवन बिताया।

3. अन्ताकिया का मियान्डर इस विधर्म का एक श्रोत हो एकता है, जिसके बारे में ऐरेनियुस का लेख *एगइनस्ट हेरसीस गग्प्प* में उल्लेख है। वह षमौन सातरी का षिश्य और गोपनीय ज्ञान का वक्ता था।

ङ वर्तमान समय का विधर्म
1. जब कोई मसीही सच्चाई को किसी ओर विचारधारा के साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं तब वहाँ विधर्म का आत्मा उपस्थित है।
2. जहाँ लोग व्यक्तिगत संबन्ध और विष्वास की जीवनषैली के सही सिद्धान्त की अनुपस्थिति को महत्व देते हैं वहाँ विधर्म का आत्मा उपस्थित है।
3. जहाँ लोग मसीहत को ज्ञान का उच्च कोटी की ओर मोड़ते हैं वहाँ विधर्म का आत्मा है।
4. जब लोग सन्यासी जीवन या अपनी मर्जी के जीवन की ओर मुड़तें हैं तब विधर्म का आत्मा उपस्थित हो जाता है।

<u>उद्धेष्य</u>

क. विष्वासियों के प्रति एक प्रायोगिक विषेश ध्यान हैः
1. उन्हें आनन्द प्रदान करें (1:4)
2. परमेष्वर के योग्य जीवन बिताने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करे (1:7; 2:1)
3. उन्हें आदेष दे कि वे एक दूसरे से प्रेम रखें (4:7—21) न कि इस संसार को (2:15—17)
4. मसीह में उनके उद्धार की निष्चयता देने के लिए (5:13)

ख. विष्वासियों के प्रति सैद्धान्तिक ध्यान

1. यीषु की दैवीयता और मानवीयता को अलग अलग करने की गलती को झूठा सिद्ध करें।
2. परमेष्वरीय जीवनषैली के लिए आत्मिकता को बुद्धिसंगत की ओर बदल डालने की उस गलती को झूठा सिद्ध करें।
3. लोगों से दूर रहने से किसी का उद्धार हो सकता है इस गलत विचारधारा को झूठा सिद्ध करें।

अध्ययन कालचक्र एक

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए और मुख्य विशय का रूपरेखा बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

1. पुस्तक का केन्द्रीय विशय
2. साहित्य का प्रकार

अध्ययन कालचक्र दो

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पुनः पढ़िए और मुख्य विशय का रूपरेखा बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

1. पहले साहित्यिक इकोई विशय
2. दूसरे साहित्यिक इकोई विशय
3. तीसरे साहित्यिक इकोई विशय
4. चौथे साहित्यिक इकोई विशय
5. इत्यादि

1 यूहन्ना – 1

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
जीवन का वचन	जिसे हम ने सुना, देखा, और छूआ।	परिचय	जीवन का वचन	देहधारी वचन और पिता पुत्र के साथ सहभागिता
1:1–4 परमेष्वर ज्योति है	1:1–4 उसके साथ संगति का आधार	1:1–4 पाप के प्रति सही नजरिया	1:1–4 परमेष्वर ज्योति है	1:1–4 ज्योति में चलें
1:5–10	1:5–2:2	1:5–10	1:5–7	1:5–7 पहला षर्त : पाप को तोड़ना
			1:8–10	1:8–2:2

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

धर्मषास्त्रीय पृश्ठभूमि

क. यह अनुच्छेद यूहन्ना रचित सुसमाचार का प्रस्तवना से जुड़ा है (1:1–'18) जो उत्पत्ती 1:1 से जुड़ी है।

ख. निम्नलिखित बातों में विषेश ध्यान दिया गया है
1. यीषु मसीह की संपूर्ण मानवीयता
(क) मानवीय इन्द्रियों से संबन्धित कृदन्तः देखा, सुना,छूआ (1:1,3)। यीषु वास्तव में मनुश्य और भौतिक था।
(ख) यीषु का षीर्शक
(1) जीवन का वचन (1:1)
(2) उसका पुत्र यीषु मसीह (1:3)

2. यीषु नासरी की दैवीयता
(क) अस्तित्व (1:1,2)
(ख) देहधारण (1:2)

ये सत्य झूठे षिक्षको के विष्व–दर्षन के विरोध में है।

वाक्य–विन्यास

क. आयतें 1–4

1. आयतें 1–3 यूनानी में एक वाक्य है।
2. आयत 3 में मुख्य क्रिया है ''उदघोशणा''। प्रेरितों के प्रचार की विशय वस्तु में विषेश ध्यान है।
3. आयत 1 में ऐसे 4 वाक्यांष है जिसे विषेश महत्व के लिए प्रयोग किया गया है।
क. ''जो आदि से था,''
ख. ''जिसे हम ने सुना,''
ग. ''जिसे अपनी आंखों से देखा,''
घ. ''जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छूआ''
4. ऐसा लगता है कि आयत 2 यीषु की देहधारण के बारे में कोश्ठक में बताया गया। इसका **व्याकरणात्मक ढाँचा** इतना खराब है जिस वजह से लोगों के ध्यान को आसानी से अपनी तरफ कर लेता है!
5. आयत 3 तथा 4 प्रेरितों की उदघोशणा के उद्धेष्य का परिभाशा देते हैः संगती और आनन्द। प्रारम्भिक कलीसिया में किसी भी बात की मन्यता के लिए प्रेरितों का प्रत्यक्षदर्षी विवरण होना आवष्यक कसौटियों में से एक था।
6. आयत 1 में क्रिया विन्यास को देखें
क. अपूर्ण
ख. पूर्णकाल
ग. अनिषचित भूतकाल

ख. 1:5 – 2:2

1. 1:5 – 2:2 में सर्वनाम अस्पश्ट है। मैं समझता हूँ कि आयत 5 को छोड़कर बाकी सभी में पिता के लिए प्रयोग किया गया है (इफि.1:3–14)।
2. सब ''यदि'' तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।
3. यहाँ महत्वपूर्ण धर्मषास्त्रीय भिन्नता हैः
क. पाप के प्रति वर्तमानकाल क्रिया बनाम अनिषचित भूतकाल क्रिया
ख. पाप एकवचन बनाम बहुवचन

धर्मविरोधी (झूठे षिक्षक)

क. धर्म विरोधियो का झूठे कथन हम 1:6,8,10; 2:4,6,9 में देखते है।

ख. अयातें 5–10 एक धर्मषास्त्रीय तरीके के बारे में बताती है जिसके द्वारा परमेष्वर को जानना (धर्मषास्त्र) को परमेष्वर के पीछे हो लेने (नैतिकता) से अलग करते है। यह ज्ञान पर नॉस्टिकों द्वारा अनुचित महत्व देने को दर्षाता है। जो परमेष्वर को जानते है वह अपनी जीवनषैली में उसके चरित्र को उतारेंगे।

ग. 1:8–2:2 को 3:6–9 के संतुलन में देखना चाहिए। एक सिक्के के दो पहलू होते है। वे षायद दो गलतियों को झूठा साबित करेंगे।
1. धर्मषास्त्रीय गलती (पाप नहीं है)
2. नैतिक गलती (पाप से कोई फरख्क नही पड़ता)।

घ. 2:1–2 पाप को कम समझना और मसीही दोशदर्षन, संस्कृति या संन्यासीपन के बीच में संतुलन बैठाने का प्रयास करता है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

1:1–4

1. उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हम ने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, वरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छूआ।
2. (यह जीवन प्रगट हुआ, और हम ने उसे देखा, और उस की गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ)।
3. जो कुछ हम ने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है।
4. और ये बातें हम इसलिये लिखते हैं, कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।।

''जो''

यह पत्री एक नपुंसक सर्वनाम से आरम्भ होती है। यह परमेष्वर क संदेष के दो पहलू को बताता है, वे हैः (1) यीषु के बारे में संदेष, तथा (2) यीषु के व्यक्तित्व स्वयं (1:8,10; 2:20,24; 3:11,14)। सुसमाचार एक व्यक्ति, संदेष, और जीवनषैली है।

'' था,''

यह एक अपूर्ण कथन है। यह यीषु के अस्तित्व को बताता है (यह यूहन्ना के लेखों का पुनर्रावत केन्द्रिय विशय है 1:2; यूह. 1:1,15; 3:13; 5:57—58; 17:5)। यह उसका दैवीयता को बताने का तरीका है। यीषु पिता को प्रगट करते है क्योंकि वो आदि से पिता के साथ थे।

'' आदि से ''

यह उत्. 1 तथा यूह.1 के लिए स्पश्ट संकेत है। यीषु मसीह का आगमन कोई निम्न योजना नही था। सुसमाचार हमेषा छुटकारा के लिए परमेष्वर का योजना था (उत्. 3:15; प्रेरित. 2:23; 3:18; 4:28; 13:29)। यूहन्ना ने कई बार '' आदि ''*(आरके)* के सामान्य विचार को प्रस्तुत किया है। अधिकतर बातें प्राथमिक रूप से दो भागों में बाँटी जाती हैः

1. सृश्टि या उत्पत्ती 1:1—11 सेः
क. यूह. 1:1,2 (आदि में यीषु)
ख. यूह. 8:44; 1यूह. 1:1 (यीषु आदि से)
ग. यूह. 8:44; 1यूह. 3:8 (आदि से षैतान हत्यारा और झूठा है)
घ. प्रकाष. 3:14; 21:6,12 (यीषु आदि और अन्त हैं)
2. यीषु के देहधारण और सेवा के समय सेः
क. यूह. 8:25; 16:4; 1यूह. 2:7 (दो बार); 3:11; 2यूहन्ना.5,6 (यीषु के षिक्षा)
ख. यूह. 15:27 (यीषु के साथ)
ग. 1यूह. 2:13,24 (दो बार) (यीषु पर उनके भरोसा से)
घ. यूह. 6:64 (उनका यीषु के तिरस्कार से)

विषेश षीर्शकः यूहन्ना 1 का तुलना 1यूहन्ना 1 से

सुसमाचार	पत्री
आदि में (1:1,2)	आदि से (1:1)
वचन *(लॉगॉस)* (1:1)	वचन *(लॉगॉस)* (1:1)
जीवन *(ज़ोए)* (1:4)	जीवन *(ज़ोए)* (1:1,2)
यीषु में ज्योति (1:4)	परमेष्वर में ज्योति (1:5)
ज्योति प्रकाषित हुआ (1:4)	ज्योति प्रकाषित हुआ (1:4)
अन्धकार (1:5)	अन्धकार (1:5)
ज्योति के प्रति गवाही (1:6—8)	ज्योति के प्रति गवाही (1:3,5)
मनुश्य को परमेष्वर से मिलाया ()	मनुश्य को परमेष्वर से मिलाया (1:3)
उसके महिमा को देखा (1:14)	उसके महिमा को देखा (1:1—3)

''हम''

यह सामूहिक तथा व्यक्तिगत गवाही को दर्षाता है। यह सामूहिक गवाही 1 यूहन्ना का विषेशता है और इसे कम से कम 50 बार प्रयोग किया गया।
कुछ कहते है कि यह ''यूहन्ना की परम्परा'' की ओर इषारा करते है। यह यूहन्ना का अनोखे धर्मषास्त्र का षिक्षक है।

'' सुना, ... देखा,''

ये दोनों संपूर्ण वर्तमानकाल को दर्षाता है जो बने रहने का नतीजा को महत्व देते है। 5 इन्द्रियों के साथ प्रयोग होनेवाली विभक्ति प्रत्यों के साथ यीषु की मानवीयता को साबित करता है। वह अपने आप को यीषु नासरी का जीवन और षिक्षा के प्रत्यक्षदर्षी होने का बात को दृढता से कह रहा है।

''ध्यान से देखा;
... और छूआ।''

''देखा'' का अर्थ है ''बारीकी से निरीक्षण करना'' (यूह. 1:14); ''छूआ'' का अर्थ है ''बारीकी से अनुभव से परखा'' (यूह. 20:20,27; लूका. 24:39)।
''छूआ'' के लिए यूनानी में प्रयोग किया गया षब्द *''प्सेलाफाओ''* केवल दो बार नए नियम में पाते है: यहाँ और लूका. 24:39 में। लूका में इसे पुनरुत्थान के बाद यीषु के साथ का मुलाकात के लिए प्रयोग किया हैं। षायद 1 यूहन्ना में भी उसी अर्थ से ही प्रयोग किया गया है।

'' जीवन के वचन ''

लॉगॉस षब्द के द्वारा यूनानी झूठे षिक्षकों का ध्यान खींचने की प्रयास कर रहा है जैसे यूहन्ना रचित सुसमाचार का प्रस्तावना हो (1:1)। इस षब्द को यूनानी दर्षनषास्त्र में विस्तृत रूप से प्रयोग किया गया है (द गोसपलस् पृश्ठ. 10)। इब्रानी में भी इसकी पृश्ठभूमि है (द गोसपलस् पृश्ठ.9)। यह वाक्यांष सुसमाचार का विशय वस्तु और व्यक्ति को दर्षाता हैं।

1:2

यह आयत कोश्ठक में जीवन की परिभाशा दे रहे है।

''जीवन''

''ज़ोए'' षब्द का प्रयोग यूहन्ना में आत्मिक जीवन, पुनरुत्थित जीवन,नए युग का जीवन,या परमेष्वर का जीवन के लिए किया गया है ()। यीषु ने स्वयं को ''जीवन'' षब्द से नवाजा (यूह.14:6)।

'' प्रगट हुआ,''

इस आयत में दो बार इसका जिक्र है। यह कई बार परमेष्वर का अभिकरण को प्रस्तुत करते है। इस षब्द *''फानइरो''* का अर्थ है ''जो पहले से है उसे ज्सोती में लाना''। यह यूहन्ना का पसन्दीदा षब्द है ()। यह अनिषचित भूतकाल देहधारण को साबित करता है (यूह. 1:14) जिसे झूठे षिक्षकों ने ठुकराया है।

'' गवाही देते ''

यह यूहन्ना का व्यक्तिगत अनुभव को दर्षाता है। इस षब्द का प्रयोग न्यायालय में देनेवाला गवाही के लिए प्रयोग करते है। देखिए **विषेश षीर्शक** : यीषु के प्रति गवाही – यूह. 1:8।

'' समाचार देते हैं,''

यह यूहन्ना के आधिकारिक गवाही की ओर इषारा करते है जिसे उसके लेख और प्रचार के द्वारा प्रगट और उल्लेखित किया गया है। यह 1– 3 का मुख्य क्रिया है जिसे दो बार दोहराया है (1:2,3)।

'' पिता के साथ था ''

आयत 1 के समान यह भी यीषु के अस्तित्व के प्रति एक कथन है। यह यूह.1:1 का षब्दसमूह जैसे लगता है। परमेष्वर देहधारी हुआ (यूह. 1:14)। यीषु को जानने का अर्थ है परमेष्वर को जानना।

1:3

'' जो कुछ हम ने देखा और सुना है
उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं,''

यह ऐसे एक वाक्य है जिसके द्वारा आयत 1 और 2 का विचारधारा को ओर भी मजबूत करती है।

''उसका समाचार तुम्हें भी देते है''

यह आयत 1–4 का मुख्य क्रिया है। यह एक वर्तमानकाल वाक्य है।

'' इसलिये कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो;''

षब्द ''सहभागिता'' *(कोइनोनिया)* का अर्थ है
1. एक व्यक्ति के साथ करीबी रिष्ता
क. पुत्र के साथ (1:6; 1कुरि. 1:9)
ख. पवित्रात्मा के साथ (2कुरि. 13:13; फिलि. 2:1)
ग. पिता और पुत्र के साथ (1:3)
घ. अन्य विष्वासियों के साथ (1यूह. 1:7; प्रेरित. 2:42; गला. 2:9; फिलो.17)
2. किसी वस्तु और झुण्ड के साथ करीबी रिष्ता
क. सुसमाचार के साथ (फिलि. 1:5; फिलो.6)
ख. यीषु के लहू के साथ (1कुरि. 10:16)
ग. कश्ट के साथ (फिलि. 3:10; 4:14; 1पत.4:13)
घ. अन्धकार के साथ नही (2कुरि. 6:14)
3. खुले दिल से किया हुआ अंषदान (रोमि. 12:13; 15:26; 2कुरि. 8:4; 9:13; फिलि. 4:15; इब्रा. 13:16)।
4. मसीह में परमेष्वर का तोहफा अनुग्रह के द्वारा उसके साथ और सह विष्वासियों के साथ मनुश्य का रिष्ता को पुनःस्थापित करते है। यह ऐसा एक रिष्ता है मनुश्य का मनुश्य के साथ तथा मनुश्य का सृश्टिकर्ता के साथ। यह मसीह समाज के आवष्यकता और आनन्द की विषेशता को दर्षाता है। मसीहत एक सहभागिता है।

***विषेश षीर्शक** : मसीहत सहभागिता है।*

क. पौलूस का रूपक
1. देह
2. खेत

3. इमारत

ख. षब्द ''सन्त'' हमेषा बहुवचन है (फिलि. 4:21 के अलावा फिर भी वहाँ सहभागिता दिखाई पडती है।)
ग. मार्टिन लूथर का ''विष्वासी का याजकत्व'' वास्तव में बाइबलीय नही पर विष्वासियों का याजकत्व सही है (निर्ग. 19:6; 1पत. 2:5,9; प्रकाष. 1:6)। इस खोए हुए संसार के उद्धार के लिए विष्वासी लोग याजक हैं, यह किसी व्यक्तिगत भलाई के लिए नही।
घ. प्रत्येक विष्वासी को सब के लाभ के लिए वरदान दिए हुए है (1कुरि. 12:7)
ङ. केवल यहभागिता के द्वारा ही परमेष्वर के लोग प्रभावित हो सकते है। सेवकोई सहभागिता की है।

'' पिता के साथ,
.... पुत्र के साथ है। ''

ये वाक्यांष **व्याकरणात्मक रूप से एक समान है। यह वाक्य–विन्यास यीषु का दैवीयता को प्रमाणीत करता है** (यूह. 5:18; 10:33; 19:7)। पुत्र के (देहधारी परमेष्वर) बिना पिता (श्रेश्ठ परमेष्वर) का होना असंभव है जैसे कि झूठ्र षिक्षक कहते फिरते है (2:23; 5:10—12)।
पिता और पुत्र के साथ सहभागिता यूह. 14:23 से बिलकुल मेल खाती है।

1:4

''ये बातें हम लिखते हैं ''

(यूह. 15:11; 16:20,22,24; 17:13; 2यूह.12; 3यूह. 4)। पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के साथ सहभागिता के द्वारा विष्वासियों का आनन्द पूरा हो जाता है। झूठे षिक्षकों में दरार डालने के लिए यह एक प्रमुख बात थी। इस पत्री लिखने के द्वारा यूहन्ना का उद्धेष्य था कि (1) सहभागिता– व्यक्तिगत और सामूहिक; (2) आनन्द; और (3) निष्चयता। दूसरी तरफ से तो नॉस्टिक झूठे षिक्षकों के धर्मषास्त्र के खिलाफ विष्वासियों को तैयार करना था।

1:5—2:2

5. जो समाचार हम ने उस से सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, वह यह है; कि परमेश्वर ज्योति हैः और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं।
6. यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैंः और सत्य पर नहीं चलते।
7. पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।
8. यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैंः और हम में सत्य नहीं।
9. यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।
10. यदि कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।।
2:1 हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूँ, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धार्मिक यीशु मसीह।

2. और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त हैः और केवल हमारे ही नहीं, बरन सारे जगत के पापों का भी।

'' जो समाचार हम ने सुना,''

सर्वनाम ''हम'' यूहन्ना तथा दूसरे प्रत्यक्षदर्षी और जब यीषु इस धरती पर थे तब का उनके अनुयायीयों को दर्षाता है। 2:1 में यूहन्ना सीधा अपने पाठाकों से (तुम) बातें कर रहा है, षायद यह आसिया मैनर के कलीसियाओं की ओर इषारा कर रहे है।
क्रिया ''सुना'' आयतें 1—4 के भौतिक अंगों की ओर इषारा करता है। एक तरह से यूहन्ना यीषु के सेवा के दौरान अपनी उपस्थिति का वर्णन कर रहा है। यूहन्ना अपना नही परन्तु यीषु के षिक्षाओं को दूसरों तक पहुँचा रहे है। सुसमाचार का अनोखा ''मैं हूँ'' कथन के द्वारा वह यीषु की निजी षिक्षा को प्रगट करता है।

'' उस से ''

'' उस से '' 1:5—2:2 में यह एक मात्र सर्वनाम है जो यीषु को दर्षाता है। यीषु पिता को प्रगट करने आया (यूह. 1:18)। धर्मषास्त्रीय रीति से कहे तो यीषु तीन बातों के लिए आएः (1) पिता को प्रगट करें (1:5); (2) उसके पदचिन्हों पर चलने के लिए विष्वासियों को एक आदर्ष दे (1:7); और (3) पापी मनुश्य के बदले में मरने के लिए (1:7; 2:2)।

'' परमेश्वर ज्योति हैं ''

यह परमेष्वर का चरित्र का नैतिक बातों पर ध्यान दे रहे है (1तिमु.6:16; याकूब. 1:17)। नॉस्टिक झूठे षिक्षक के अनुसार ज्योति ज्ञान को दर्षाती है, परन्तु यूहन्ना प्रमाणीत करता है कि यह नैतिक पवित्रताई को भी दर्षाता है। ''ज्योति'' तथा ''अन्धकार'' साधारण षब्द थे (इसे मृतसागर चचर्मलेखें और प्रारम्भीक नॉस्टिक मत में भी पाया जाता है।)। यह षायद भला तथा बुरा का दोहरावाद है जो नॉस्टिक दोहरावाद आत्मा तथा पदार्थ से संबन्धित है। यह दैवीयता के प्रति यूहन्ना का सरल तथा गंभीर धर्मषास्त्रीय प्रमाण है। अन्य हैः (1) परमेष्वर प्रेम है (4:8,16); और (2) परमेष्वर आत्मा है (यूह. 4:24)। परमेष्वार के घराना, यीषु के समान (यूह.8:12; 9:5), परमेष्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करना है (मत्ती. 5:14)। यह एक बदला हुआ और बदलनेवाला प्रेम, क्षमा, और पवित्रताई के जीवन है। और यह सच्चा मनफिराव का सबूत में से एक है।

'' और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं।''

विषेश महत्व के लिए दो नकारात्मक का प्रयोग है। यह न बदलनेवाला परमेष्वर का पवित्र चरित्र का प्रमाण है (1तिमु. 6:16; याकूब. 1:17; भ.सं. 102:27; मलाकी. 3:6)।

1:6

''यदि हम कहें,''

यह कई तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्यों से एक है जो झूठे षिक्षकों के कथन की ओर दर्षाता है (1:8,10; 2:4,6,9)। झूठे षिक्षको के बातों को पहचानने का एक मात्र तरीका इस प्रकार के कथन हैं। वे प्रारम्भिक नॉस्टिक लगते है।
यह प्रष्नोत्तर के द्वारा सत्य को प्रगट करने का एक तरीका है जिसे हम मलाकी (1:2,6,7,12; 2:14,17; 3:7,14) और रोमियों (2:3,17,21–23; 3:1,3,7,8,9,31; 4:1; 6:1; 7:7) में पाते है।

'' उसके साथ हमारी सहभागिता है,''

विधर्मी कहते थे सहभागिता केवल ज्ञान के द्वारा ही हैं। यह प्लूटो की यूनानी दर्षनषास्त्र के हिस्सा हैं। यूहन्ना साबित करता है कि मसीहियो के चाहिए कि वे मसीह समानता में जीवन व्यतित करें (1:7, लैव्य.19:2; 20:7; मत्ती. 5:4,8)।

'' फिर अन्धकार में चलें,''

''चले'' एक वर्तमानकाल प्रक्रिया है। यह एक बाइबलीय रूपक है जिसके द्वारा नैतिक जीवन का मूल्य को प्रगट करता है (इफि. 4:1,17,5:2,15)। परमेष्वर बिना अन्धकार का ज्योति है। उसके संतान को उसके समान होना है (मत्ती. 5:48)।

'' तो हम झूठे हैं:
और सत्य पर नहीं चलते। ''

ये दोनो वर्तमाानकाल क्रिया है। यूहन्ना कई प्रकार के धार्मिक लोगों को झूठा कहते है (1:10; 2:4,20; 4:20; तथा देखिए यषा. 29:13)। जीवनषैली हृदय को प्रगट करती है। देखिए **विषेश षीर्शकः सत्य 6:55।**

1:7

***''यदि** हम भी ज्योति में चलें,''*

यह जारी रहनेवाला कार्य को दर्षानेवाला एक वर्तमानकाल वाक्य है। ''चलना'' मसीह जीवन को दर्षानेवाली नया नियम का रूपक है (इफि. 4:1,17,5:2,15)।
सत्य ऐसा कोई वस्तु है जिसमें हम जीते है न कि कुछ हम जानते है। सत्य यूहन्ना के कुंजी विचार है।

'' जैसा वह ज्योति में है,''

विष्वासियों को परमेष्वर के तरह सोचना तथा जीना चाहिए (मत्ती. 5:48)। इस पतित संसार में उसका चरित्र को हमारे द्वारा प्रगट करना है। उद्धार मनुश्य के अन्दर परमेष्वर का स्वरूप का पुनःस्थापना प्रक्रिया हैं।

''हम एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; ''

सहभागिता का यूनानीषब्द *कोईनोनिया* का अर्थ है दो या उसे अधिक लोगों के बीच में भागीदारी। यीषु के जीवन में विष्वासियों का भागीदारी पर आधारित है मसीहत। यदि हमने उसकी क्षमा का जीवन को पाया है तो उसका प्रेम का सेवा भी स्वीकारना है (3:16)। परमेष्वर को जानना अमूर्त सच्चाई नही है, पर घनिश्ठ संबन्ध तथा भक्तिपूर्ण जीवन। मसीहत का मंजिल केवल स्वर्ग ही नही पर अब का मसीहसमानता भी है। जब कोई परमेष्वर के साथ सही संबन्ध में होता तो वह सह विष्वासियों के साथ भी सही से व्यवहार करेंगे। सह

विष्वासियों के साथ प्रेम का कमी हमें इषारा करता है कि परमेष्वर के साथ हमारे संबन्ध में कोई न काई समसया है (4:20,21; मत्ती. 5:7; 6:14—15; 18:21—35)।

''यीशु का लहू ''

यह यीषु के बलिदान को दिखाता है (यषा. 52:13—53:12; 2कुरि. 5:21)। यह 2:2 के समान हैं, हमारे पाप का प्रायषचित बली। यही है यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला का ''देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है'' का संकेत (यूह. 1:29)। अपराधियों के बदले निर्दोश मारा गया!
प्रारम्भिक नॉस्टिकों ने यीषु के मानवीयता को नकारा। ''लहू'' के प्रयोग के द्वारा यूहन्ना यीषु की मानवीयता का प्रमाण दे रहा है।

'' सब पापों से शुद्ध करता है।''

षब्द पाप यहाँ बिना विभक्ति का एकवचन है। यह प्रत्येक पाप की ओर इषारा करता है। यह आयत एक ही बार षुद्ध (उद्धार) करने के विशय में नही बताती, पर निरन्तर जारी रहनेवाले षुद्धिकरण (मसीही जीवन) को दर्षाती है। ये दोनों मसीही जीवन का विषेश भाग हैं (1यूह.13:10)।

1:8

''यदि हम कहें,
कि हम में कुछ भी पाप नहीं, ''

यह एक ओर तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है। पाप पतित संसार की आत्मिक सच्चाई है। यूहन्ना रचित सुसमाचार इस माामले को प्रकाष मे लाता है (9:41; 15:22,24; 19:11)। यह व्यक्तिगत नैतिक जिम्मेवारी को तिरस्कार करनेवाले तमाम प्राचीन एवं नवीन कथनों को नकारते है।

''हम अपने आप को धोखा देते हैं:''

यह यूनानी वाक्यांष स्वयं के इच्छापूर्वक तिरस्कार को बताते है।

'' हम में सत्य नहीं। ''

पवित्र परमेष्वर द्वारा स्वीकृति का अर्थ यह नही कि पाप का तिरस्कार करे वरन पापको जानना तथा मसीह में परमेष्वर के प्रावधान को स्वीकार करना है। ''सत्य'' यीषु या यीषु के बारे में संदेष को दर्षाता है।

1:8,9

ये दोनो तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

1:9

'' मान लें,''

यह एक यूनानी मिश्रित षब्द ''बोलना'' और ''ठीक वैसा ही'' से है। विष्वासियें को निरन्तर मानना पड़ेगा कि उन्होने उसकी पवित्रताई को तोड़ा है (रोमि.3:23)। यह वर्तमानकाल वाक्य है जिसका अर्थ है निरन्तर जारी

रहनेवाला काम। मान लेने में निम्नलिखित बातें षामिल है (1) पापों का नाम लेना (1:9); (2) सार्वजनिक रूप से पापों का अंगीकार (मत्ती. 10:32; याकूब.5:16); और पाप से मूँह मोडना (मत्ती. 3:6; मरकुस. 1:5; प्रेरित. 19:18; याकूब. 5:16)। 1यूहन्ना में इस षब्द का प्रयोग कई बार है (1:9; 4:2,315; 2यूह. 7)। पापक्षमा का मार्ग है यीषु मसीह की मृत्यु, परन्तु पापी मनुश्य को चाहिए कि वे उद्धार प्राप्ति के लिए प्रत्युत्तर दे और निरन्तर देता रहे (यूह.1:12; 3:16)। देखिए **विषेश षीर्शक** : अंगीकारः यूहन्ना. 9:22–23।

"अपने पापों को"

बहुवचन पर ध्यान दीजिए। यह पाप के कार्य को दिखाते हैं।

"वो विश्वासयोग्य है"

यह पिता परमेष्वर को दिखाते है()। यह सच्चाई हमारी सुनिषचित आषा हैं। यह अपने वचन के प्रति परमेष्वार की विश्वासयोग्यता को प्रगट करती है (इब्रा.10:23; 11:11)। यह यिर्मा.31:34 में उल्लेखित परमेष्वर के नए वायदे की ओर भी इषारा कर रहे है जिस में पाप क्षमा का वायदा है।

"और धर्मी है"

पवित्र परमेष्वर अपवित्र लोगों को क्षमा करने के इस प्रसंग में यह वाक्यांष असाधारण लगता है। हलॉकि यह धर्मषास्त्रीय रीति से बिलकुल सही है क्योंकि परमेष्वर पाप को गंभीरता से लेते है फिर भी वो हमारे पापों के निवारण के लिए यीषु मसीह की मृत्यु के द्वारा प्रावधान किया है। देखिए **विषेश षीर्शक** :2:9।

"क्षमा करने, ... शुद्ध करने "

इस प्रसंग में ये दोनों पर्यायवाची षब्द है। ये दोनों खोए हुओं के उद्धार और निरन्तर होनेवाली षुद्धिकरण प्रक्रिया की ओर संकेत करता है (यषा. 1:18; 38:17; 43:25; 44:22; भ.सं. 103:3, 11–13; मीका. 7:19)। झूठे षिक्षक जिन्होंने सुसमाचार को ठुकराया उन्हें उद्धार की आवष्यकता है। विष्वासी जो लगातार पाप कर रहें है उसके जीवन में संगति की पुनःस्थापना की आवष्यकता है। यूहन्ना पहला झुण्ड को संषयहीनता से और दूसरा झुण्ड को स्पश्ट रूप से संबोधित कर रहे है।

1:10

"यदि हम कहे"

देखिए नोटः 1:6।

" हम ने पाप नहीं किया,"

अर्थात् न पहले न अभी पाप किया है। षब्द पाप एकवचन है और यह आम रीति से सब पाप को दर्षाता है। यूनानी षब्द का अर्थ है "निषाने से चूक जाना"। अर्थात पाप वह है जो परमेष्वर के वचन में प्रगट किया गया बातों का अनाज्ञाकारिता। झूठे षिक्षक ने कहा कि उद्धार ज्ञान से संबन्ध रखता है न कि जीवन से।

"हम उसे झूठा ठहराते हैं,"

समस्त मानवजाती के पापों पर आधारित है सुसमाचार (रोमि. 3:9–18,23; 5:1; 11:32)। या परमेष्वर (रोमि. 3:4), नहीं तो हम में पाप नही करके कहनेवाले, झूठ कह रहे है।

"उसका वचन हम में नहीं है"

यह षब्द लॉगॉस का दोनों विचारों को प्रगट कर रहा है यानि संदेष और व्यक्ति (1:1,8; यूह. 14:6)। यूहन्ना इसे कई बार "सत्य" कहते है।

2:1

" हे मेरे बालको,"

बालक के लिए यूहन्ना ने दो विभिन्न षब्दों का प्रयोग किया हैः (1) टेक्नियोन () और पाइडीयन ()। वे दोनों पर्यायवाची षब्द है। ये प्रेम भरा षब्द यूहन्ना की बढते उम्र के कारण आ गया होगा।

" मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूँ,
कि तुम पाप न करो;"

यह एक अनिषचित भूतकाल वाक्य है। यूहन्ना स्पश्ट रूप से वर्तमानकाल वाक्य से भिन्नता दिखाता है, एक जारी रहनेवाला पाप की आदत (3:6,9) और व्यक्तिगत पाप के कार्य जो प्रलोभित मसीहियों के द्वारा हो रहे हैं। वह निम्नलिखित बातो के बीच तालमेल बैठाने की प्रयास कर रहा है (1) पाप को कमजोर समझना (रोमि. 6:1; 1यूह. 1:8–10; 3:6–9; 5:16); और व्यक्तिगत पापों के प्रति मसीही निर्दयता। ये दोनो षायद दो भिन्न नॉस्टिक षिक्षा केन्द्र की ओर इषारा करता है। एक झुण्ड ने सोचा कि उद्धार एक बुद्धिसंगत बात है, इसलिए एक किस प्रकार जीवन व्यतित करते है वह कोई मायने नही रखता क्योंकि षरीर बुरा है। दूसरे झुण्ड ने सोचा कि षरीर बुरा है इसलिए इसे काबू में रखना चाहिए।

" और यदि कोई पाप करे, "

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यहाँ तक कि मसीही लोग भी पाप करते है (रोमि.7)।

" पिता के पास हमारा एक सहायक है, "

यह एक वकील के समान *(पाराक्लीटोस)* यीषु मसीह के जारी रहनेवाला मध्यस्थता के कार्य को दर्षाता है। यह एक प्रतिरक्षा के वकील के लिए प्रयोग करनेवाला षब्द है जो साथ साथ चलता रहता है। इसे यूहन्ना रचित सुसमाचार में ऊपरी कोठरी के वार्तालाप में पवित्राात्मा के लिए प्रयोग किया गया, जो हमारा भौमिक अन्दरनिवास सहायक है (यूह. 14:16,25; 15:26; 16:7)। हलॉकि केवल यहाँ पर यीषु के लिए इन षब्दों का प्रयोग किया है (यद्यपि इसे यूह. 14:16; इब्रा. 7525; 9:24 में भी प्रयोग में लाया है)। पौलूस ने भी रोमि. 8:34 में मसीह की मध्यस्थता के कार्य के लिए इसी विचार को उल्लेख किया है। रोमि. 8:26 में पवित्रात्मा मध्यस्थता के कार्य का भी पौलूस ने जिक्र किया है। हमारा एक सहायक स्वर्ग में है (यीषु) तथा हमारे अन्दर (पवित्रात्मा) हैं, इन दोनों को प्रेमि पिता ने अपनी तरफ से भेजा है।

"धार्मिक यीशु मसीह। "

यह षीर्शक का उपयोग 1:9 में पिता के लिए किया गया। यह यीषु के निश्पाप (पवित्रताई, परमेष्वर के समानता) को दर्षाता है (3:5; 2कुरि. 5:21; इब्रा. 2:18; 4:15; 7:26; 1पत. 2:22)। पिता की धार्मिकता को लोगों तक पहुँचाने का साधन था यीषु मसीह।

<u>*2:2*</u>

एन ए एस बी, एन के जे वी '' वह स्वयं हमारे पापों का प्रायश्चित्त बना है:''
एन आर एस वी '' वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है:''
टी इ वी **''मसीह स्वयं वह साधन है जिसके द्वारा हमारे पापों की क्षमा होती है''**
एन जे बी **''उन्होने हमारे पापों को मिटाने के लिए बलिदान दिया।''**

सैप्टूआजैन्ट में षब्द *हिलासमॉस* का प्रयोग है जिसका अर्थ है अनुग्रह का सिंहासन या प्रायश्चित्त का स्थान। यीषु परमेष्वर के सामने हमारी पाप भरी जगह में अपने आप को रख लिया (4:10; रोमि. 3:25)।
यूनानी–रोमी संस्कृति में इस षब्द ने देवीयता के साथ की संगति की पुनःस्थापना के विचार को प्रगट किया है। इसे सैप्टूआजैन्ट के अन्दर इब्रा. 5:9 में ''अनुग्रह का सिंहासन'' में अनुवाद किया है जो कि अतिपवित्र स्थान के वाचा के संदूक के पास है जहाँ पाप प्रायश्चित्त का दिन में समस्त जनता के लिए प्रायश्चित्त बली चढाया जाता है (लैव्य. 16)।
यह षब्द पाप के साथ परमेष्वर के रवैये को कम नही करता परन्तु पापियों के प्रति उनका सकारात्मक सोच विचार को प्रगट करता है।
षब्द ''प्रायश्चित्त'' प्रमाणित करता कि यीषु ने परमेष्वर का क्रोध को स्वयं पर उठा लिया (रोमि. 1:8; 5:9; इफि. 5:6; कुलु. 3:6)। परमेष्वर का पवित्रता को मनुश्य के पाप ने रुकावट ड़ाली हैं। यीषु की सेवा ने इसे ठीक किया (रोमि. 3:25; 2कुरि. 5:21; इब्रा. 2:17)।

<u>*'' केवल हमारे ही नहीं,*</u>
<u>*बरन सारे जगत के पापों का भी।''*</u>

यह असीमित प्रायश्चित्त को दिखाता है (4:14; यूह. 1:29; 3:16,17; रोमि. 5:18; तीतुस. 2:11; इब्रा. 2:9; 7:25)। यीषु पाप और सारे जगत का पापों के लिए मरा (उत्. 3:15)। तौभि मनुश्य को विष्वास, मनफिराव, आज्ञाकारिता, और सहनषीलता में प्रत्युत्तर देना है और देते रहना है!

<u>*चर्चा के लिए प्रष्न*</u>

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।
1. यूहन्ना ने क्यों कई क्रियाओं, यहाँ तक कि पाँच इन्द्रिय, का प्रयोग किया है ?
2. आयत 7 और 9 में पाई जानेवाला बलिदान षब्दों का सूची बनाए।
3. विधर्मियों का विष्वास का विवरण करे जिसका विरोध 1यूहन्ना करता है ?
4. किस प्रकार आयत 9 नॉस्टिक और विष्वासी से जुडे है ?
5. ''मान लेना'' की परिभाशा और विवरण दें

<u>*1 यूहन्ना – 2:3–3:3*</u>

<u>*पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद*</u>

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
मसीह हमारे मध्यस्थ	उसके साथ हमारी संगति का आधार (1:5–2:2)	आज्ञाकारिता	मसीह हमारे सहायक	ज्योति में चलना (1:5– 2:28)
2:1–6	उसे जानने का परख	2:1–2	2:1–2	दूसरा षर्त : आज्ञा पालन के लिए, विषेशरूप से प्रेम के प्रति
	2:3–11	2:3–6	2:3–6	2:3–11
नई आज्ञा		एक दूसरे के लिए प्रेम	नई आज्ञा	
2:7–14		2:7–11	2:7–8	
	उनका आत्मिक स्तर	मसीह में परमष्वर के साथ सही संबन्ध	2:9–11	तीसरा षर्त : संसार से नाता तोड़ना

	2:12–14 संसार से प्रेम न करें	2:12–14 संसार का सही मूल्यांकन	2:12–13 2:14	2:12–17
2:15–17 मसीह विरोधी	2:15–17 अन्तिम समय का धोखा	2:15–17 सच्चे विष्वास के प्रति ईमानदारी	2:15–17 मसीह के विरोधी	चौथा षर्त : मसीह विरोधियों से सावधान
2:18–25	2:18–23 सत्य तुम में रहे 2:24–27	2:18–25	2:18–19 2:20–21 2:22–23 2:24–25	2:18–28
2:26–27 परमेष्वर के संतान	परमेष्वर के संतान	2:26–27	2:26–27	परमेष्वर के संतान के समान प्रेम करे
(2:28–3:10)				
2:28–3:3	2:28–3:3	2:28	2:28–29	
				(2:29–4:6)
		2:29		2:29–3:2

<u>अध्ययन कालचक्र तीन</u>

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>*प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 2:3—3:3*</u>

क. पुनरावर्तित विशयों के कारण 1यूहन्ना का रूपरेखा बनाना कठीन है। अधिकतर टिप्पणीकर्ता इस बात से सहमत है कि दूसरा अध्याय ने 1 अध्याय के ही विशय को जारी रखा है जोकि परमेष्वर के साथ संगति, नकारात्मक और सकारात्मक दोनों।

ख. अध्याय 1 और 2 का ढाँचे में भी समानता है। यूहन्ना नॉस्टिकों का झूठे प्रमाण के विरोध में अपनी संदेष को प्रस्तुत करता है।

अध्याय 1	अध्याय 2
यदि हम कहे ... (6—7)	जो कोई कहता है ... (4—5)
यदि हम कहे ... (8—9)	जो कोई कहता है ... (6)
यदि हम कहे ... (10)	जो कोई कहता है ... (8—11)

ग. यह प्रसंग कई परीक्षा या सबूत पेष करते है जिसे सच्चा विष्वासी का प्रगटीकरण होता है (2:3—25)
1. पाप को मान लेने के लिए इच्छुक (प्रारम्भ में और निरन्तरता से) (1:5; 2:22)।
2. आज्ञाकारिता का जीवनषैली (2:3—6)।
3. प्रेम की जीवनषैली (2:7—11)।
4. दुश्ट या दुश्टता के ऊपर विजय (2:12—14)।
5. संसार को त्यागना (2:15—17)।
6. सहनषीलता/दृढ़ रहना (2:19)।
7. सिद्धान्त/उपदेष (2:20—24)।

घ. विषेश धर्मषास्त्रीय विचार (2:18—19 में)
1. ''अन्तिम समय'' (2:18)
क) यह वाक्यांष और इसके समान वाक्यांष ''अन्तिम दिन'' यीषु के जन्म से लेकर यीषु के पुनरागमन तक के समय को दर्षाता है। राज्य आ गया परन्तु संपूर्ण हुआ नही है।
ख) पुराने नियम के लोग दो युगों पर विष्वास करते थे, वर्तमान समय के बुरा युग और आनेवाली धार्मिकता का युग, जो अब भी भविश्य में होना है। पुराने नियम में यह स्पश्ट नही बताया कि यीषु के दो आगमन है, एक उद्धारकर्ता के रूप में दूसरा न्यायी के रूप में। ये दोनों युग का अन्तराल ज्यादा है।
ग) षब्द ''समय'' *(कैरोस)* के रूपकात्मक प्रयोग अनिषचित समय को दर्षाता है (यूह. 4:21,23; 5:25,28; 16:2)।

2. मसीह विरोधी (2:18)
(क) केवल यूहन्ना मसीह विरोधी षब्द का प्रयोग करता है (2:18,22; 4:3; 2यूह.7)। 2:18 में यह एकवचन और बहुवचन दोनों है (2यूह.7)।
1) इस अन्तिम समय का व्यक्ति के बारे में बाइबल का लेखकों ने लिखा है: (1) दानियेल (7:7—8, 23—26; 9:24—27); (2) यीषु (मत्तह.24; मरकुस.13); (3) यूहन्ना (प्रकाष. 13); और पौलूस (2थिसस.2)।
2) यूहन्ना भविश्य का और वर्तमान समय के व्यक्तियों का अन्तर बताता है (2:18; 4:3; 2यूह. 7; मरकुस. 13:6,22; मत्ती. 24:5,24)।
3) यूनानी में विभक्ति *एन्टि* का अर्थ हो सकता है: (1) विरोध या (2) बदले में। आयत 18 का एकवचन और बहुवचन जितना महत्व रखता है उतना यह भी विषेश है। इतिहास परमेष्वर और मसीहियों के विरोधियों से भरा हुआ है:
क. अन्तियोकस पअ एपिफानस (दानि. 8; 11:36—45 का छोटा सींग)।

ख. नीरो और डोमीषयन (दैवीयता का दावा किया , मसीह होने का नही)।
ग. नास्तिक साम्य वाद
घ. मानववाद
जो यीषु के विरुद्ध करते है उनके बारे में नही परन्तु उनके बारे में है जो स्वयं को मसीह कहते है।
क. मत्ती. 24:5,24 और मरकुस. 13:6,22 के झूठे षिक्षक
ख. आधुनिक विचित्र धर्म पंथ के अगुवे
ग. मसीह विरोधी (दानि. 7:8; 9:23–26,24–27; 2थिस्स. 2:3; और प्रकाष. 13)।
4) हर समय का मसीह लोगों को झूठे षिक्षक, जो मसीह का तिरस्कार करते है, और मसीह विरोधियों, जो स्वयं को मसीह कहते है, का सामना करना पडता है। एक दिन, अन्तिम दिन में, दुश्टता के विषेश अवतार इन दोनों कामों को करेंगे।

3. साथ रहना/बने रहना (2:19,24,27,28)।
क. आधुनिक सुसमाचार प्रचारक मसीह के लिए एक व्यक्तिगत निर्णय पर अधिक जोर दे रहा है, और यह ठीक भी है।हलॉकि बाइबल केवल निर्णय पर नही, पर षिश्यता पर अधिक जोर देती है (मत्ती. 28:19–20)।
ख. विष्वासी की सुरक्षा के उपदेष को दृढ़ रहने के उपदेष से अलग नही कर सकते हैं। देखिए **विषेश षीर्शक** :यूह. 8:31। यह एक विकल्प नही है। वास्तव में दृढ़ रहना एक बाइबलीय चेतावनी है।
ग. दृढ़ रहना पर ओर भी वचन हैः मत्ती. 10522; 13:1–9,18–23; मरकुस.13:13; यूह. 8:31; 15:1–27क्ष 1कुरि. 15:2; गला. 6:1; प्रकाष. 2:2,7,11,26,; 3:5,12,21; 21:7। देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहनाः 1यूह. 2:10।

<u>षब्द और वाक्यांष अध्ययन</u>

2:3–6

3. यदि हम उस की आज्ञाओं को मानेंगे, तो उस से हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं।
4. जो कोई यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूँ, और उस की आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है; और उस में सत्य नहीं।
5. पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ हैः हमें इसी से मालूम होता है, कि हम उस में हैं।
6. सो कोई यह कहता है, कि मैं उस में बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।

<u>2:3</u>

<u>'' उस से हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं।''</u>

अर्थत् ''हम जानते है कि हम उसे जान चुके है''। यह इस बात का महत्व दे रहा है कि इन समस्या का सामना करनेवाली कलीसिया के विष्वासी भी अपने उद्धार की निष्चयता प्रप्त कर सकते है। षब्द ''जानना'' का प्रयोग इब्रानी समझ से किया गया है (उत. 4:1; यिर्मा.1:5)। सुसमाचार एक व्यक्ति और सच्चाईयों एक ढ़ेर भी है। इस वाक्य की विषेशताएं निम्नलिखित हैः (1) हम परमेष्वर को जान सकते हैं; (2) हम जानते है कि वो

हमारे जीवन को चाहते है; और (3) हम जानते है कि हम जानते है (5:13)। परमेष्वार के साथ हमारे संबन्ध की निष्चयता हमारे कार्य और उद्धेष्य के द्वारा प्रगट हो जाती है (मत्ती. 7; याकूब; 1पतरस)। यह 1यूहन्ना का पुनरावर्तित विशय है (2:3,5; 3:24; 4:13;5:2,13)।
षब्द ''जानना'' के लिए यूहन्ना ने दो यूनानी षब्दों का प्रयोग किया है (गिनस्को तथा ओइडिया) जिसे 1यूहन्ना में 27 बार मिलते है।
यूहन्ना ने इसलिए लिखा है कि विष्वासियों को प्रोत्साहित करें और विधर्म को गलत ठहराए। नया नियम किसी ओर पुस्तक से बढ़कर षब्द जानने का प्रयोग यूहन्ना रचित सुसमाचार और 1 यूहन्ना करता है। सुसमाचार का ज्ञान और आज्ञाकारिता और प्रेम की जीवनषैली पर आधारित एक निष्चयता की पुस्तक है 1 यूहन्ना (याकूब की पत्री)।

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

'' हम उस की आज्ञाओं को मानेंगे ''

षर्त की बात को देखिए। नई वाचा परमेष्वर की तरफ से बिना किसी षर्त की है परन्तु मनुश्य की तरफ से मनफिराव विष्वास और आज्ञाकारिता का प्रत्युत्तर की षर्त इसमें षामिल है ()। सही मनफिराव का सबूत से एक है ज्योति के प्रति आज्ञाकारिता (यीषु तथा सुसमाचार)। पुराने नियम में बली चढाने से उत्तम था आज्ञाकारिता (1षामू.15:22; यीर्मा.7:22–23)।

2:4

'' मैं उसे जान गया हूँ ''

यह झूठे षिक्षकों के कई कथनों से एक है (1:6,8,10; 2:4,6,9)। यह मलाकी, रोमियों,और याकूब में उल्लेखित बातों से मेल खाते है। झूठे षिक्षक दावा कर रहे थे कि वे परमेष्वर को जानते है पर वे उद्धार से नैतिकता की जीवनषैली को अलग करने का प्रयास कर रहे थे । उन्होंने परमेष्वर को जानने का दावद किया तो जरूर परन्तु उनकी जीवनषैली ने उनके वास्तविक उद्धेष्य को प्रगट किया है।

'' और उस की आज्ञाओं को नहीं मानता,''

यह आदतन कार्य को दर्षाता है। हमारा जीवन हमारी आत्मिकता के स्तर को प्रगट करती है। अयात 4 सच्चाई को नकारात्मक ढ़ंग से और आयत 5 सकारात्मक ढ़ंग से प्रगट करती है।

''वह झूठा है;''

स्वयं को धोखा देने से बढ़कर बुरा और कोई नहीं है। सही मनफिराव का सबूत है आज्ञाकारिता। तुम फल से उन्हें पहचानेंगे (मत्ती. 7)।

2:5

'' पर जो कोई उसके वचन पर चले, ''

यह आदतन जीवनषैली की ओर इषारा करता है। वाचा के विष्वास में आज्ञाकारिता की खास भूमिका है। यह 1यूहन्ना और याकूब का केन्द्रिय विशय है। लिखित और जीवित वचन को जीवनषैली के द्वारा तिरस्कार करना और यह कहना संभव नही कि कोई परमेष्वर को जानता है।

'' उस में
सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ हैः ''

यह पूर्ण किया गया काम को दर्षाता है (4:12,17,18)। षब्द सिद्ध *(टीलोस,* 4:12,17,18) का अर्थ है परीपक्व,संपूर्ण, या किसी काम के लिए सुसज्जित, न कि पापरहित (1:8,10)।

'' हमें इसी से मालूम होता है,
कि हम उस में हैं। ''

यहाँ फिर से इस बात पर जोर दे रहे है कि परमेष्वर के साथ विष्वासी के संबन्ध के बारे में उन्हें दृढता हो। उसमें होने की विचार (बने रहना) यूहन्ना का लेखों का पुनरावर्तित विशय है ()। नया नियम प्रमाणित करता है कि पिता हम में वास करता है (1यूह. 5:20)। पिता और पुत्र दोनों हम में वास करते है (यूह.14:23; 17:21)।

2:6

'' बना रहता ''

देखिए **विषेश षीर्शक** : 2:10।

'' उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा
वह चलता था।''

यह सच्चा विष्वास के ऊपर की एक ओर विषेशता है कि उसे जीवनषैली विष्वास बनाई जाए। विष्वास एक निर्णय ही नही परन्तु निरन्तर चलते रहनेवाला एक रिष्ता है यीषु के साथ और नतीजन प्रतिदिन की मसीहसमानता का जीवन उत्पन्न हो जाता है। यह 1:7 के समान है। मसीहत का लक्ष्य केवल स्वर्ग ही नही पर अब की मसीह समानता भी है। हम सेवा के लिए बचाए गए है। हमें एक मिषन में भेजा गया जैसे यीषु को भेजा गया था। जैसे उसने अपने प्राण दिए बहूतो के लिए वैसे हमें भी , हम स्वयं को सेवक के समान देखें (3:16)।

सर्वनाम अस्पश्ट है यह यीषु के लिए है या पिता के लिए है ज्ञात नही । आयत 6 का प्रसंग पुत्र का माँग करता है (3:2,5,7,16; 4:17)। परमेष्वार का छुटकारे के काम और षुद्धिकरण प्रक्रिया में तरलता है।

2:7—11

7. हे प्रियों, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता, पर वही पुरानी आज्ञा जो आरम्भ से तुम्हें मिली है; यह पुरानी आज्ञा वह वचन है, जिसे तुम ने सुना है।
8. फिर मैं तुम्हें नई आज्ञा लिखता हूँ; और यह तो उस में और तुम में सच्ची ठहरती है; कयोंकि अन्धकार मिटता जाता है और सत्य की ज्योति अभी चमकने लगी है।
9. जो कोई यह कहता है, कि मैं ज्योति में हूँ; और अपने भाई से बैर रखता है, वह अब तक अन्धकार ही में है।
10. जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता।
11. पर जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह अन्धकार में है, और अन्धकार में चलता है; और नहीं जानता, कि कहाँ जाता है, क्योंकि अन्धकार ने उस की आंखे अन्धी कर दी

2:7

'' हे प्रियों, ''

यूहन्ना अपना पाठकों को प्रेम से भरा षब्दों से पुकारते है (2:1)। साधायण रूप से इस षब्द का प्रयोग पिता ने यीषु के लिए बपतिस्मा और रूपान्तरण के समय में किया । इसे 3:2,21; 4:1,7,11; 3यूह. 1,2,5,11 में दोहराया गया है।

'' मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिखता,
पर वही पुरानी आज्ञा ''

यह यूहन्ना का लेखों का विषेशता है (यूह. 13:34; 15:12,17)। समय के हिसाब से यह नई आज्ञा नही है, पर गुणवता के आधार पर यह नया हैं। विष्वासियों को आज्ञा दिया गया कि वे प्रेम करे जैसे यीषु ने उनसे किया (यूह. 13:34)।

'' पुरानी आज्ञा ''

2:3 में यह बहूवचन है परन्तु यहाँ यह एकवचन हैं। इस से ऐसा लगता है कि प्रेम सब आज्ञाओं को पूरा करता है (गला. 5:22; 1कुरि. 13:13)। प्रेम सुसमाचार का अधिकृत आदेष है।

'' जो आरम्भ से तुम्हें मिली है;''

यह सुननेवालों का पहला सुसमाचार संदेष की ओर इषारा करता है (2:24; 3:11; 2यूह.5–6)।

2:8

''जो उसमें सच्ची ठहरती है''

परमेष्वार को मसीह द्वारा जो जानते है उन के लिए एक नए युग का आरम्भ हुआ है और लगातार उनके मन और हृदय में बढते जाएंगे।

'' सत्य की ज्योति अभी चमकने लगी है।''

यीषु जगत की ज्योति है (यूह. 1:4,5,9) जो कि सत्य, प्रकाषन और नैतिक पवित्रताई के लिए बाइबलीय रूपक है। देखिए नोटः 1:7।

2:9

'' और अपने भाई से बैर रखता है, ''

यह एक निरन्तर होनेवाला प्रक्रिया को बताते है। बैर अन्धकार का सबूत है (मत्ती. 5:21–26)।

2:10

'' जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है,
वह ज्योति में रहता है,''

प्रेम विष्वासियों का उद्धार और सत्य और ज्योति का पहचान और संबन्ध को दर्षाता है। यह नई तथा पुरानी आज्ञा है (3:11,24; 4:7,11,21)।

***विषेश षीर्शक** : यूहन्ना के लेखों में ''बने रहना''*

यूहन्ना रचित सुसमाचार पिता परमेष्पर और पुत्र यीषु मसीह के विषेश रिष्ते के बारे में उल्लेख करता है। यह समानता और अधीनता पर आधारित एक अनोखा घनिश्ठ संबन्ध है। पूरे सुसमाचर में पिता जो कुछ कहता है उसे यीषु कहते है और जो कुछ पिता करते है उसे पुत्र करता है। यीषु ने स्वयं से कुछ नही किया, पर परमेष्वर के इच्छा पर कार्य किया।
घनिश्ठ संबन्ध और सेवकत्व ने यीषु और उनके षिश्यों के बीच का संबन्ध के लिए एक आदर्ष बन गया। यह घनिश्ठ संबन्ध किसी व्यक्ति का षोशण नही है, परन्तु नैतिक जीवनषैली की स्पर्धा है। संगति थाः(1) परबोध (सुसमाचार के प्रति विष्व–दर्षन कि यह परमेष्वर का वचन है) ; (2) संबन्ध परक (यीषु परमेष्वार का वायदा किए हुए मसीह है जिसके ऊपर भरोसा रख सकतें है।); और मसीह समानता (उसके चरित्र विष्वासियों में उत्पन्न होना)।
यीषु आदर्ष व्यक्ति, सच्चा इस्राएली और मनुश्य का सही स्तर है। वो आदम क्या था अस बात को दर्षाता है। यीषु ही परमेष्वर का सही स्वरूप है। वो निम्नलिखित बातों के द्वारा पतित मानव के अन्दर स्वरूप की पुनःस्थापना करते है (1) परमेष्वर को प्रगट करने के द्वारा; (2) हमारे बदले मरने के द्वारा; और (3) मनुश्य को नकल करने के लिए एक आदर्ष रख छोडने के द्वारा। षब्द ''बने रहना'' (मेनो) मसीहसमानता का लक्ष्य को प्रदर्षीत करता है (रोमि. 8:29),पतित का पुनःस्थापना (उत. 3)।
प्रेरित पौनूस का ''मसीह में'' और प्रेरित यूहन्ना का ''बने रहना'' का तात्पर्य है परमेष्वर के साथ संगति के लिए उसके सृश्टि, मानवजाति, का एक होना ।

यूहन्ना के प्रयोग पर ध्यान दें

1. ''बने रहना'' पिता और पुत्र के बीच में

क. पिता पुत्र में (यूह.10:38; 14:10,11,20; 17:21,23)।
ख. पुत्र पिता में (यूह.10:38; 14:10,11,20; 17:21)।

2. ''बने रहना'' परमेष्वर और विष्वासी के बीच में

क. पिता विष्वासी में (यूह. 14:20,23; 1यूह. 3:24; 4:12,13,15)।
ख. विष्वासी पिता में (यूह. 14:20,23; 17:21; 1यूह. 2:24,27; 4:13,16)।
ग. पुत्र विष्वासी में (यूह. 6:56; 14:20,23; 15:4,5; 17:21,23)।
घ. विष्वासी पुत्र में (यूह. 6:56; 14:20,23; 15:4,5,7; 1यूह. 2:6,24,27,28)।

3.''बने रहने''वाली अन्य वस्तु (सकारात्मक)

क. परमेष्वार का वचन
(1) नकारात्मक (यूह. 5:38; 8:37; 1यूह. 1:10; 2यूह. 9)।
(2) सकारात्मक (यूह. 8:31; 15:2; 1यमह. 2:14,24; 2यूह. 9)।

ख. परमेष्वर का प्रेम (यूह. 15:9–10; 17:26; 1यूह. 3:17; 4:16)।
ग. परमेष्वर की आत्मा
(1) पुत्र पर (यूह. 1:32)
(2) विष्वासियों में (यूह. 14:17)

घ. आज्ञाकारिता (यूह. 15:10; 1यूह. 3:24)
ङ. ज्याति में प्रेम ''बना रहता'' है (1यूह. 2:10)
च. परमेष्वर का इच्छा पूरा करना ''बने रहना' है (1यूह. 2:17)
छ. अभिशेक ''बना रहता'' है (1यूह. 2:27)
ज. सत्य ''बना रहता' है (2यूह.2)
झ. पुत्र ''बना रहता' है (यूह. 8:35; 12:34)

4. ''बने रहने''वाली अन्य वस्तु (नकारात्मक)

क. परमेष्वर का क्रोध ()
ख. अन्ध्कार()
ग. फेंक दिया और जलाया जाता है (''बने न रहने'' के करण) ()
घ. पापकरना (''बने न रहने'' के करण) ()
ङ. प्रेम नही करना (''बने न रहने'' के करण) ()
च. हत्यारा नही ()
छ. मृत्यु में ()

एन ए एस बी, एन के जे वी '' और उस में ठोकर का कोई करण नही है।''
एन आर एस वी **''ऐसे व्यक्ति में** ठोकर का कोई करण नही है''
टी इ वी **''हम में ऐसे कुछ नही है जिस से ओर कोई पाप करें''**
एन जे बी **''उसमें ऐसा कुछ भी नही है जिसे वह बह जाए।''**

इस आयत का दो संभवता अनुवाद इस प्रकार हो सकते है (1) जो विष्वासी प्रेम में चलते है वह व्यक्तिगत रूप से ठोकर नही खाएंगे (2:11) और जो विष्वासी प्रेम में चलते है वह दूसरों की ठोकर का कारण नही बनेंगे (मत्ती.18:6; रामि. 14:13; 1कुरि. 8:13)। दोनों सही है! सुसमाचार विष्वासी और गैर विष्वासी के लिए भी लाभदायक है।

2:11

'' जो कोई अपने भाई से बैर रखता है,
वह अन्धकार में है,
और अन्धकार में चलता है; ''

अविष्वास का चिन्ह है बैर (3:15; 4:20)। ज्योति और अन्धकार, प्रेम और बैर एक ही व्यक्ति में हो नही सकता। वह आदर्ष को प्रदर्षीत कर रहा है। हलॉकि कई बार विष्वासी पूर्वाग्रह, अप्रेमि और उपेक्षित हो जाता है। सुसमाचार तुरन्त तथा प्रगतिषील बदलावट लाते हे।

'' क्योंकि अन्धकार ने
उस की आंखे अन्धी कर दी''

यह विष्वासी का पाप में रहने का स्वभाव को (2पत.1:5–9) या तो षैतान का कार्य (2कुरि. 4:4) को दर्षाता है। मनुश्य के तीन षत्रु होते हैः (1) पतित संसारका कार्यप्रणाली; (2) व्यक्तिगत प्रलोभनकर्ता; षैतान और (3) हमारा ही पतित आदम का स्वभाव (इफि. 2:2–3, 16)।

2:12–14

12. हे बालको, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूँ, कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए।
13. हे पितरों, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूँ, कि जो आदि से है, तुम उसे जानते होः हे जवानों, मैं तुम्हें इसलिये लिखता हूँ, कि तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई हैः हे लड़कों मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि तुम पिता को जान गए हो।
14. हे पितरों, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि जो आदि से है तुम उसे जान गए होः हे जवानो, मैं ने तुम्हें इसलिये लिखा है, कि बलवन्त हो, और परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है, और तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है।

<u>*2:12–14*</u>

इन आयतों में पूर्णकाल वाक्य है जो भूतकाल का कार्य को दर्षाता है और उसका नतीजा अब है। जैसे पहला प्रसंग ने झूठे षिक्षकों को सेबोधित किया है वैसे यह प्रसंग विष्वासी को संबोधित करता है। विष्वासियों को कई षीर्शक दिए गए हैः ''बालक'', ''पितरों'', '''जवानों''। यह प्रसंग निष्चयता का जीवनषैली के सबूत पर ठीक नही बैठता। हम ये तीनों झूण्ड से व्यवहार <u>नही</u> करेंगे।
यहाँ चार बातों के विशय में कहा गया जिसे विष्वासी जानते है (1) उन्हें पाप क्षमा मिल गई है , (2:12); मसीह के द्वारा उन्होंने दुश्ट पर विजय पाई हैं (2:13); (3) वे जानते है कि पिता और पुत्र के साथ उनकी संगति है (2:13–14); और वे परमेष्वर के वचन में सामर्थी है (2:15)।

<u>*2:12*</u>

<u>*'' कि उसके नाम से तुम्हारे पाप क्षमा हुए।''*</u>

पाप क्षमा के लिए मानवजाति का एक मात्र आषा यीषु की सेवा है। इब्रानी समझ के अनुसार नाम व्यक्तित्व और चरित्र को दर्षाता है (3:23; 3यूह. 7; रोमि. 10:9–13; फिलि. 2:6–11)।

<u>*2:13*</u>

<u>*'' जो आदि से है,''*</u>

1यूहन्ना के सर्वनामें अस्पश्ट है और ये पिता परमेष्वर या पुत्र परमेष्वर को दर्षा रहे होंगे। इस प्रसंग में यह यीषु की ओर इषारा करता है। यह अस्तित्व का कथन है इसलिए उसके दैवीयता का प्रकाषन है (यूह.1:1,15; 3:13; 8:48,49; 17:5,24; 2कुरि. 8:9; फिलि. 2:6–7; कुलु. 1:17)।

<u>*'''तुम ने जय पाई हैः''*</u>

यह 1यूहन्ना का पुनारावर्तित वायदा तथा चेतावनी है (2:14; 4:4; 5:4–5,18,19)। इसे पूर्णकाल में बताया गया अर्थात् प्रक्रिया के संपूर्तीकरण। विष्वासी लोग जयवन्त है,फिर भी वे पाप, प्रलोभन, सताव से संघर्श कर रहे हैं क्योंकि वे परमेष्वर का राज्य है पर पूर्ण स्थिति में नही है।

<u>*'' उस दुष्ट ''*</u>

यह षैतान को दर्षाता है जिनका जिक्र आयत 14 में है।

<u>*'' कि तुम पिता को जान गए हो।''*</u>

''जानना'' का बाइबलीय विचार एक घनिश्ठ संबन्ध है (उत्.4:1; यिर्मा. 1:5)। यूनानी विचार है कारण पता लगााना। सुसमाचार व्यक्ति (यीषु) को स्वागत करना और संदेष (षिक्षा) को स्वीकारना तथा कार्य करना और जीना है।

<u>*2:14*</u>

"तुम बलवन्त हो,"

उनका बल वचन में बने रहने से प्राप्त होता है। यह पौलूस का अनुरोध इफि.6:10–18 के समान है। वचन सुसमाचार हैं। यह विचारणीय तथा व्यक्तिगत,परमेष्वर से आरम्भ और व्यक्तिगतरूप से स्वीकृत ,निर्णय तथा षिश्यता, सत्य और भरोसेमन्द हैं।

" परमेश्वर का वचन तुम में बना रहता है,"

यह परमेष्वर के वचन का सामानय विचार हैं (सुसमाचार)। यह यूहन्ना 15 के लिए एक संकेत है। इसे यूह. 5:38 और 8:37 में नकारात्मक रूप से प्रयोग किया गया है।

" तुम ने उस दुष्ट पर जय पाई है।"

यह संतो की सहनषीलता को दर्षाता है। इसे हम ओर भी 2:17,19,24,27,28; 5:18; 2यूह. 9 में देखते है। विष्वासियों का सुरक्षा की षिक्षा को इस सच्चाई से संतुलित करना चाहिए कि जो अन्त तक धीरज धरे रहेगाा वह बचाया जाएगा (प्रकाष. 2:7,11,17,26; 3:5,12,21)। देखिए **विषेश षीर्शक** दृढ़ रहने की आवष्यकता यूह. 8:21 ।

2:15–17

15. तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखोः यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उस में पिता का प्रेम नहीं है।
16. क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।

17. और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।।

2:15

" प्रेम न रखोः"

यह नकारात्मक विभक्ति के साथ एक वर्तमानकाल आदेष है, अर्थात् जो कार्य प्रगति में है उसे रोको। संसारिक प्रेम से एक ओर प्रकार के नॉस्टिक झूठे षिक्षक की ओर इषारा करता है।

"संसार"

नए नियम के अन्दर इस षब्द के दो विभिन्न अर्थ हैः (1) धरती/सृश्टि किया गया विष्व (यूहन्ना. 3:16; 16:33; 1यूह. 4:14) और (2) परमेष्वर से अलग हटकर अपनी मर्जी से चलनेवाला एक मानवीय समाज (1यूह.

2:15—17; 3:1,13; 4:45; 5:4—5,19)। पहलेवाला भौतिक सृश्टि की ओर इषारा करता है (उत्. 1—2) दूसरा पतित सृश्टि का विवरण करता है (उत्. 3)।

<u>विषेश षीर्शक : मानवीय सरकार</u>

क. <u>भूमिका</u>

1) परिभाशा — सरकार मानव द्वारा स्वयं को एक समूह में रखना है ताकि षारीरिक ज़रूरतों को पूरा कर सकें और सुरक्षित रख सकें।

2) उद्‌देष्य — परमेष्वर की इच्छा है कि अराजकता के लिए क्रम श्रेश्ठ हैं।

(क) मूसा की व्यवस्था, विषेश कर दस आज्ञा, मानव समाज के लिए परमेष्वर की इच्छा थी। यह जीवन और आराधना को समानता में लाती है।

(ख) सरकार का ढाँचे की वचन में वकालत नहीं की गई, यद्धपि प्राचीन इस्राएल में परमेष्वर का राज स्वर्ग के ढाँचे रूप में षामिल किया गया। न तो गणतंत्र और न ही तानाषाही बाइबल का सत्य है। मसीहियों को चाहे वे किसी भी सरकार के अधीन हो सही व्यवहार करना चाहिऐ। मसीहियों का उद्‌देष्य सुसमाचार प्रचार और सेवकाई है विद्रोह नहीं।

3) मानवीय सरकार की षुरूवात

(क) रोमन कैथोलिकवाद ने यह तर्क किया कि मानवीय सरकार बहुत ही आवष्यक थी यहाँ तक कि पतन से पहले भी। अरीस्टोटिल इस बात से सहमत थे। वह कहते हैं,''मनुश्य प्रषासनिक जानवर या प्राणी है'' इसके द्वारा उनका तात्पर्य यह था कि ''सरकार अच्छे जीवन के उत्थान के लिए आवष्यक है।''

(ख) जागृत, विषेश कर मार्टिन लूथर, कहते है कि मानवीय सरकार पतन के समय निहिन हुई। वह इस कहते हैं ''परमेष्वर के राज्य का बाँया हाथ''। उन्होंने कहा ''बुरे लोगों को वष में करने का परमेष्वर का तरीका यह है कि बुरे लोगों को सत्ता में रखें''।

(ग) कार्ल मार्कस का कहना है कि सरकार वह है जिसमें कुछ ज्ञानी लोग झुण्डों को वष में रखते हैं। उनके लिए सरकार और धर्म एक ही कार्य करते हैं।

ख. <u>बाइबलीय साधन</u>

1) पुराना नियम

(क) इस्राएल वह प्रतिमान है जिसका प्रयोग स्वर्ग में किया जाएगा। प्राचीन इस्राएल में यहोवा राजा थे।

ईष्वरीय षासन वह षब्द है जो सीधे परमेष्वर के षासन को प्रगट करता है (1षमू.8:4–9)।

(ख) मानवीय सरकार में परमेष्वर की श्रेश्ठता स्पश्ट देखी जा सकती है :

(1) यिर्म.27:6; एज्रा.1:1

(2) 2इति.36:22

(3) यषा.44:28

(4) दानि.2:21

(5) दानि.2:44

(6) दानि.4:17, 25

(7) दानि.5:28

(ग) परमेष्वर के लोगों को अधीनता में रहना और आदर करना होगा आक्रामक और दबाने वाली सरकार के :

(1) दानि.1–4, नबूकदनेस्सर

(2) दानि.5, बेलशस्सर

(3) दानि.6, दारा

(4) एज्रा और नेहम्याह

(घ) परमेष्वर के लोगों को प्रषासनिक अधिकारियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए :

(1) यिर्म.28:7

(2) मीषनाह, अवोट.3:2

2) नया नियम

(क) यीषु ने मानव सरकार का आदर किया

(1) मत्ती.17:24–27; मन्दिर का कर चुकाया

(2) मत्ती.22:15–22; रोम के कर और रोमन अधिकारियों की वकालत की

(3) यूह.19:11; परमेष्वर ही प्रषासनिक अधिकार देते हैं

(ख) मानव सरकार के प्रति पौलुस के षब्द

(1) रोमियों.13:1–7, विष्वासियों को प्रषासनिक अधिकारियों के अधीन रहना और उनके लिए प्रार्थना करनी चाहिए

(2) 1तीमु.2:1–3, विष्वासियों को प्रषासनिक अधिकारियों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए

(3) तीत.3:1, विष्वासियों को प्रषासनिक अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए

(ग) मानव सरकार के प्रति पतरस के षब्द

(1) प्रेरित.4:1–31; 5:29, पतरस और यूहन्ना न्यायलय के सामने (यह प्रषासनिक अनाज्ञाकारीता को दर्षाता है)

(2) 1पत.2:13–17, विष्वासियों को प्रषासनिक अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए

(घ) मानव सरकार के प्रति यूहन्ना के षब्द

(1) प्रका.17, परमेष्वर के विरूद्ध बाबुल की वेष्या मानव सरकार के रूप में खड़ी है

ग. सारांष

1) मानव सरकार परमेष्वर के द्वारा नियुक्त है। यह ''राजाओं का ईष्वरीय अधिकार नहीं है'', परन्तु सरकार का ईष्वरीय स्थान है। किसी भी सांचे की ऊपर वकालत नहीं की गई।

2) यह विष्वासियों के लिए धार्मिक कर्तव्य है कि वे प्रषासनिक अधिकारियों की आज्ञा का पालन आवष्यक आदर के साथ करें।

3) यह विष्वासियों के लिए सही है कि वे प्रार्थना और कर से सरकार का साथ दें।

4) मानव सरकार नियम लाने के उद्देष्य के लिए है। वे इस कार्य के लिए परमेष्वर के दास हैं।

5) मानव सरकार अंतिम नहीं है। यह अपने अधिकारों में सीमित है। जब मानव सरकार परमेष्वर की आज्ञा के ऊपर आने की कोषिष करती है तो विष्वासियों को अपने विवेक के आधार पर उसका विरोध करना चाहिए। जैसा की अगस्टीन ने, द सिटी ऑफ गॉड, में कहा है, ***''हम दो परिमण्डल के नागरिक हैं, एक अस्थाई और एक अनन्त। हमारी ज़िम्मेदारी दोनों के लिए है, परन्तु परमेष्वर का राज्य अंतिम और स्थाई है।''*** परमेष्वर के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी व्यक्तिगत और सहभागिता दोनों में है।

6) हमें विष्वासियों को प्रजातंत्र सरकार की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, और जब सम्भव हो वचन की षिक्षाओं को लागु करें।

7) सामाजिक परिवर्तन व्यक्तिगत परिवर्तन से आता है। सरकार में कोई वास्तविक अनन्त आषा नहीं है। सभी मानव सरकारें, यद्धपि परमेष्वर की इच्छा और उनके द्वारा प्रयोग की जाती हैं, परमेष्वर से अलग मानव संस्था का पापमय प्रगटीकरण है। यह विचार यूहन्ना के ''संसार'' के प्रयोग में नज़र आता है।

‘ न संसार में की वस्तुओं ’’’

यह भौतिक बातों के प्रति प्रेम को दर्षाता है (2:16) या तो संसार के तरफ से मिलनेवला अधिकार, इज्जत, प्रभाव, आदि (रोमि. 12:2; याकूब. 1‘27)। यह पतित संसार परमेष्वर से अलग होकर मनुश्य की तमाम आवष्यकताओं की पुरा करने की प्रयास करता है। यह जीवन को इस तरह प्रस्तुत करता है कि मनुश्य स्वतंत्र होना चाहता है। जब कोई संसाधन मनुश्य को परमेष्वर से स्वतंत्र होने की प्रस्तावना रखते है तब वे मुर्तीपूजक बन जाते है। उदाहरण के लिएः (1) मानवीय सरकार प्रणाली, (2) मानवीय षैक्षिक प्रणाली, (3) मानवीय आर्थीक प्रणाली, आदि। अगस्टिन के अनुसार मनुश्य के अन्दर परमेष्वर निर्मित एक खालीस्थान है। हम उसे संसारिक बातों से भरना चाहते है, परन्तु केवल यीषु में हम षान्ति और परिपूर्णता पा सकते है! स्वतंत्रता अदन का स्राप है!

‘‘यदि’’

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। हम जिसे प्रेम करते है वे इस बात को प्रमाणित करता है कि हम किसके है ... परमेष्वर का या षैतान का।

2:16

‘‘शरीर की अभिलाषा,’’

यह पतित मानवजाति का स्वयं–केन्द्रित नजरिया को बताता है (गला.5:16–21; इफि. 2:3; 1पत. 2:11)।

‘‘ आंखों की अभिलाषा ’’

यहुदियों की माने तो आँखें आत्मा के खिडकी है। पाप का उत्भव सोच में होता है बाहर अपना कार्य को करने बह निकलते है।

‘‘ जीविका का घमण्ड ’’

यह परमेष्वर से दूर हटकर करनेवाले कामों को दर्षाता हैं (अर्थत् मनुश्य स्वयं पर भरोसा रखते है)। जीविका का यूनानी षब्द *बियोस* इस धरती पर के पार्थिव, भौतिक, अस्थाई जीवन को दर्षाता है (3:17)।

‘‘ वह पिता की ओर से नहीं,
परन्तु संसार ही की ओर से है।’’

यहाँ दो कारण है जिस वजह से मसीही संसार से प्रेम नही रखनाः (1) यह प्रेम पिता की तरफ से नही (2:16), और (2) यह संसार मिटता जाता है (2:17)।

<u>*2:17*</u>

<u>*'' इस संसार मिटते जाते है ''*</u>

यह यहूदियों के दो युगों से संबन्धित है। एक नया और संपूर्ण युग जो आ रहा है; पाप और विद्रोह के दूसरे युग जो मिटते जाते है (रोमि. 8:18–25)।

<u>*'' पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है,*</u>
<u>*वह सर्वदा बना रहेगा।।''*</u>

यह अस्थई *बियोस* और बनाम परमेष्वार का जीवन *ज़ोए* है। ध्यान दे कि किस प्रकार एक प्रेमी जीवनषैली से अनन्त जीवन संबन्धित है, यह विष्वास का भूतकाल पर नही है (मत्ती. 25:31–46; याकूब. 2:14–26)। देखिए **विषेश षीर्शक** : परमेष्वर की इच्छा 4:34 ।

2:18–25

18. हे लड़कों, यह अन्तिम समय है, और जैसा तुम ने सुना है, कि मसीह का विरोधी आनेवाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इस से हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय है।
19. वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं; क्योंकि यदि हम में के होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल इसलिये गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं।
20. और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब कुछ जानते हो।
21. मैं ने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा, कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर इसलिये, कि उसे जानते हो, और इसलिये कि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं।
22. झूठा कौन है? केवल वह, जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है; और मसीह का विरोधी वही है, जो पिता का और पुत्र का इन्कार करता है।
23. जो कोई पुत्र का इन्कार करता है उसके पास पिता भी नहीं: जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है।
24. जो कुछ तुम ने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहे: जो तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे।
25. और जिस की उस ने हम से प्रतिज्ञा की वह अनन्त जीवन है।

<u>*2:18*</u>

<u>*'' हे लड़कों,''*</u>

देखिए नोट 2:1 ।

<u>*''यह अन्तिम समय है,''*</u>

यह बिना विभक्ति का है, नया नियम ने इस षब्द को यीषु के पुनरागमन को दर्षाने के लिए प्रयोग किया है (यूह.6:39–40,44)। यह यूहन्ना का एक विषेश विचारधारा है क्योंकि हमारे समान के अधिकतर टिप्पणीकर्ता सी. एच. डोड का *''रीयलाइसड एस्कटॉलजी''* से प्रभावित है। यह वास्तव है कि यूहन्ना सिखाता है कि परमेष्वर

का राज्य मसीह में आ गया। यह अनुच्छेद इस बात को प्रगट करता है कि वहाँ एक भविश्यात्मक घटना भी होगी। ये दोनों सही है। यह नया नियम का संघर्श ''है पर अब पूरा नही'' का दूसरा एक प्रस्तुतिकरण है।

'' मसीह का विरोधी ... मसीह के विरोधी ''

यह एकवचन और बहुवचन दोनों है। नया नियम में केवल यूहन्ना ने इस षब्द का प्रयोग किया है (2:18,22; 4:3; 2यूह. 7)। देखिए नोट प्रासंगिक अन्तरदृश्टि : 2:3—3:3 का घ.

'' आनेवाला है,''

यहाँ का वर्तमानकाल क्रिया भविश्य में होनेवाली बात को पक्का साबित करता है। मसीह विरोधी, एकवचन, आ रहा है और कई झूठे षिक्षक और नकली मसीह पहले से आ चुके है।
धर्मषास्त्रीय रूप से कहे तो षैतान यीषु के आने का घडी को न जानने के कारण हमेषा एक को तैयार रखता है कि जब कभी भी मौका मिले तो नेतृत्व अपने हाथ में लिया जाए।

'' उठे हैं;''

इस पतित संसार में मसीह विरोधी का आत्मा पहले से उपस्थित और कार्यषील है, पर परिपूर्ण रूप से प्रगट नही हुआ है। कुछ टिप्पणीकर्ता सोचते है कि यह यूहन्ना के समय का रोमी षासक की ओर इषारा करता है, अन्य टिप्पणकर्ता सोचते है कि यह भविश्य में आनेवाला अन्तिम समय का साम्राट की ओर इषारा करता है। अन्तिम समय यीषु के देहधारण के साथ षुरू हुआ है और इसका परीपूर्णता यीषु के पुनरागमन में होगी।

2:19

'' वे निकले तो हम ही में से,
पर हम में के थे नहीं;''

दृष्य कलीसिया के अन्दर की झूठी षिक्षा और झूठे षिक्षकों का साफ चित्र है (मत्ती. 7:21—23; 13:1—9, 18—23)। उनके भरोस, प्रेम, और सहनषीलता में कमी साबित करते है कि वे विष्वासी नही है। विधर्म अन्दर से ही निकलते है!
1यूहन्ना का लेखक क्रिया के काल को चुनने में सावधान था। आयत 19 दर्षाता है
1. वे निकल गए (अनिषचित भूतकाल)
2. वे हम में के थे नहीं;(अपूर्णकाल)
3. यदि हम में के होते, तो हमारे साथ रहते,(द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य)
वे अनुग्रह से नही गिरे। **उन्होंने** कभी जीवन बदलनेवाला पवित्रात्मा की षक्ति को अनुभव नही किया। **उन्होंने** कभी मन नही फिराया और ना ही यीषु को ग्रहण किया। ये झूठे चरवाहे है, झूठे भेड़। देखिए **विषेश षीर्शक** : **स्वधर्म त्याग** 17:12 ।

''यदि''

यह एक द्वितीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जिसे ''वास्तविकता के विपरीत'' कहा जाता है।

''यदि हम में के होते,
तो हमारे साथ रहते,''

यह भूतकाल में पूरा किए हुए काम को बताता है। यह संतों का सहनषीलता के प्रति कई आयतों में से एक है (2:24,27,28)। सच्चा विष्वास अटल रहता और फल लाता (मत्ती. 13:1—23)। देखिए **विषेश षीर्शक** : 8:31 ।

2:20

'' तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है,''

यहाँ ''तुम'' बहूवचन है जिसका उपयोग यूनानी में जो निकल गए है उनसे विष्वासियों को अलग दिखाने के लिए किया गया। हो सकता है कि नॉस्टिक पूर्वी धर्मो से प्रभावित हुए हों जो विषेश अभिशेक के बारे में सिखाते है जिससे परमेष्वर से ज्ञान और पहचान मिलती है। यहाँ यूहन्ना विष्वासियों के बारे में कहता है कि उनके पास परमेष्वर से अभिशेक है।
''पवित्र'' षायद (1) पिता परमेष्वर को (अनगिनत आयतें पुराने नियम में है, 2कुरि. 1:21); (2) पुत्र परमेष्वर को (मरकुस. 1:24; यूह. 6:69; प्रेरित. 3:44); और (3) पवित्रात्मा को (यूह. 1:33; 14:26; 20:22) दर्षा रहे होंगे । प्रेरित. 10:38 में देखते है कि अभिशेक में त्रीएकता के तीनों व्यक्ति षामिल थे। यीषु का अभिशेक हुआ था (लूका. 4:18; प्रेरत. 4:17; 10:38)। यहाँ सब विष्वासियों का है (2:27)। पुराने नियम का अभिशेक तेल के साथ (निर्ग. 29:7; 30:25; 37:29) इस बात को प्रगट करता है कि उन्हें परमेष्वर ने विषेश योजना के तहत बुलाया और एक खास काम के लिए सुसज्जित किया (भविश्यद्वक्ता, याजक, राजा)। षब्द ''मसीह'' का अर्थ है अभिशक्त। देखिए **विषेश षीर्शक** : अभिशेक 11:2 ।

एन ए एस बी, '' तुम सब जानते हो।''
एन के जे वी '' तुम सब कुछ जानते हो।''
एन आर एस वी **''तुम सब के पास ज्ञान है।''**
टी इ वी '' और तुम सब सत्य को जानते हो।''
एन जे बी '' और तुम सब ज्ञान को प्राप्त किए हो।''

नॉस्टिक झूठे षिक्षकों के गूढ़ ज्ञान के प्रति यह कथन का विषेश महत्व है। यूहन्ना प्रमाणित करता है कि विष्वासियो के पास मौलिक ज्ञान है (2:27; यूह. 16:7—14; यिर्मा.31:34), थकानेवाली ज्ञान नही, न किसी धर्म का और न किसी दूसरे किसम का (3:2)। यूहन्ना के लिए सत्य व्यक्तिगत और विचरणीय है, इसलिए इस अभिशेक को सुसमाचार या पवित्रात्मा की ओर इषारा कर सकता है।
अभिशेक और ज्ञान सबको दिया गया है न कि किसी ज्ञानी या छोटो झुण्ड को।

2:21

यह कई आयतों से एक है जो पाठको से कहती है कि वे अपने छुटकारे के प्रति निषचिंत रहे और सत्य को जाने। इस आयत में निष्चयता आत्मा से मिले हुए अभिशेक पर आधारित है जिसने विष्वासियों के अन्दर सुसमाचार के बारे में भूख बढ़ाया।

2:22

''झूठा कौन है ''

यह वाक्यंष एक विभक्ति के साथ है, इसलिए, यूहन्ना इषारा कर रहा होगा कि यह (1) एक झूठा षिक्षक है या (2) ''बडा झूठ'' सुसमाचार का तिरस्कार है (5:10)। झूठा मसीह विरोधी का पर्यायवाची षब्द है। मसीह विरोधी का आत्मा हर वक्त उपस्थित है इस जहान में; इसकी परिभाशा है '' जो यीशु के मसीह होने का इन्कार करता है''या ''जो मसीह का जगह लेना चाहता है''।

2:22–23

'' जो कोई पुत्र का इन्कार करता है ''

नॉस्टिक झूठे षिक्षकों ने परमेष्वर का जानने का दावा तो किया परन्तु **उन्होंने** यीषु का इन्कार किया और यीषु के स्थान को तुच्छ समझा (4:1–6; 5:11–12; यूह. 5:23)।
दूसरी षताब्दी के नॉस्टिक लेखों के आधार पर उनके विष्वास निम्नलिखित हैः
1. नॉस्टिकों ने मसीहत को यूनानी दर्षनषास्त्र के साथ (प्लूटो) मिलाने का प्रयास किया ।
2. उन्होंने सिखाया कि यीषु दैवीय था पर मनुश्य नही था क्योंकि पदार्थ (षरीर) बुरा है। इसलिए दैवीयता के देहधारण की कोई सम्भावना नही है।
3. **उन्होंने** उद्धार के बारे मे दो बातें सिखायाः
क. एक झुण्ड ने कहा कि स्वर्गदूतों का मण्डल *(एयोन)* का एक विषेशज्ञान ने आत्मा के लिए उद्धार लाया जो षरीर के कामों से संबन्धित नही है।
ख. दूसरा झुण्ड ने कहा षारीरिक सन्यासीपन (कुलु. 2:20–23) उद्धार लाता है। षरीर की इच्छा और आवष्यकताओं का त्याग इसके लिए ज़रूरी हैं।

''जो मान लेता है''

यह ''जो इन्कार करता है'' का ठीक विलोम है (2:22 में तीन बार, 2:23 में एकबार, 2:26 में एक बार)। देखिए **विषेश षीर्शक : मान लेना/अंगीकार यूह. 9:22–23 ।**

''पुत्र''

पिता के साथ संगति केवल पुत्र पर विष्वास करने के द्वारा ही मिलता है (5:10–13)। यीषु कोई विकल्प नही है। वो पिता के पास पहूँचने का एक मात्र मार्ग है (यूह. 5:23; 14:6)।

2:24

''जैसा तुम ने''

यह यूहन्ना के पाठक तथा झूठे षिक्षक और उनके अनुयायीयों के बीच का भेद बताते है (2:27)।

'' तुम ने आरम्भ से सुना है
वही तुम में बना रहेः''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है। यह झूठे षिक्षकों पर जय पाने के लिए दिया गया दो कारणें से एक है। दूसरा हम आयत 20 और 27 में पाते हैं जहाँ अभिशेक के बारे में बताया गया। फिर से, सुसमाचार एक व्यक्ति और संदेष है जो षब्दसमूह ''आदि से'' जुड़ा है (2:13,14,24– दो बार)। परमेष्वर का वचन व्यक्तिगत और विशय वस्तु दोनों है, लिखित और जीवित वचन है (1:8,10; 2:20,24)! देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहनाः 1यूह. 2:10।

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यह ''बने रहने'' के बारे में चेतावनी और उपदेष को जारी रखा है। ''बने रहने'' से ठहराव इस बात को दर्षाता है कि वे उसके भाग था ही नही (2:18719)। ''बने रहने''का जीवनषैली निष्चयता को लाते है (यूह. 15)। ''बने रहना'' वही संदेष है जिसे सुना और स्वीकारा और दोनों पिता पुत्र के साथ संगति किया (यूह. 14:23) जो एक जीवनषैली का चुनाव है, सकारात्म्क (प्रेम) और नकारात्मक है (संसार का इनकार)।

2:25

'' जिस की उस ने हम से प्रतिज्ञा की
वह अनन्त जीवन है। ''

आयत 25 का सर्वनाम अस्पश्ट है और यह पिता या पुत्र को दर्षाती है। षायद इसे जानबूझकर किया गया (जैसे 2 पत.1 में)। यह कथन स्पश्ट रूप से यूह. 3:15–16 और 6:40 का सा है। विष्वासी का आषा परमेष्वर का चरित्र और वायदे पर निर्भर है (यषा. 45:33; 55:11)। त्रीएक परमेष्वर के साथ हमारी घनिश्ठ संबन्ध आषा को पैदा करते है यानि अनन्त जीवन के वायदा को (5:13)। अनन्तजीवन का कई विषेशता है।

2:26–27

26. मैं ने ये बातें तुम्हें उस के विषय में लिखी हैं, जो तुम्हें भरमाते हैं।
27. और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उस की ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इस का प्रयोजन नही, कि कोई तुम्हें सिखाए, बरन जैसे वह अभिषेक जो उस की ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं: और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उस में बने रहते हो।

2:26

''जो तुम्हें भरमाते हैं''

भरमानेवाले हर समय है (मत्ती. 7:15; 24:11,24; 2यूह.7)।

2:27

'' वह अभिषेक ''

यह अभिषेक के फल को बताता है न कि साधन (पवित्राात्मा) और न षामिल वस्तुएं (सुसमाचार सत्य)। पुराने नियम के आधर पर अभिशेक का तात्पर्य है परमेष्वर ने किसी को विषेश योजना के तहत बुलाया और एक खास काम के लिए सुसज्जित किया। भविश्यद्वक्ता, याजक और राजा का अभिशेक होता था। यहाँ यह पवित्रात्मा का नतीजा के विशय में है जिसके द्वारा विष्वासियों का मन और हृदय सुसमाचार द्वारा प्रकाषित होता है। देखिए **विषेश षीर्शक** : अभिशेकः यूह. 11:2 ।
झूठे षिक्षकों ने परमेष्वर की तरफ से एक विषेश प्रकाषन का दवा किया (अर्थात् खास अभिशेक)। यूहन्ना प्रमाणित करता है कि सबविष्वासियों के पास यह अभिशेक है जब **उन्होंने** इस पवित्र पर विष्वास किया और पवित्राात्मा से भर गए।

''जो तुम्हें मिला''

आयत 24 का '' तुम ने सुना है,'' के समानता में है ''अभिशेक''। सुसमाचार को (1) व्यक्तिगत रूप से विष्वास के द्वारा (यूह.1:12) और (2) सत्य के रूप में (2यूह.9—10; 1कुरि. 15:1—4) स्वीकार करना है। ये दोनों काम पवित्रात्मा के द्वारा ही होते हैं।

'' और तुम्हें इस का प्रयोजन नही, कि कोई तुम्हें सिखाए, ''

यह आयत 20 की समानता में है (अर्थात् नई वाचा यिर्मा.31:34)। यूहन्ना पुनरावर्तीत विशयों का प्रयोग कर रहा है (2:20,24,27)। पवित्रात्मा, न कि नॉस्टिक झूठे षिक्षक, हमारे अतुलनीय षिक्षक है (यूह. 14:26)। इसका अर्थ यह नही कि प्रारम्भिक कलीसिया में मानवीय षिक्षा की कोई भूमिका नही थीं (इफि.4:11; प्रेरित. 13:1; 2कुरि. 12:28)। उद्धार के प्रति मौलिक बातें पवित्रात्मा हमें सिखाती है और कई बार मनुश्य को भी इस काम के लिए उपयोग में लाते है।

'' बरन जैसे वह अभिषेक जो उस की ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं:''

हर एक विष्वासी में पवित्रात्मा की तरफ से विवेक दिया गया है। पवित्रात्मा की तरफ से आनेवाली सच्चाई और नैतिकता की अगुवाई को हमें बड़ी भावुकता से लेना है।

'' जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है
वैसे ही तुम उस में बने रहते हो।''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है। अपने पाठको की निष्चयता के लिए यूहन्ना ने ''बने रहना'' के विचार को इस पत्री में अधिक प्रयोग किया है। बाइबल के आधार पर विष्वास एक वाचा है जिसकी षरूवात परमेष्वर स्वयं करता और मनुश्य उसका प्रत्युत्तर देता है ओर मनुश्य को चाहिए कि वह उसमें जारी रहें (''बने रहना'')। इसमें दैवीय और मानवीय बातें सम्मिलित है।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. झूठे षिक्षकों के विष्वास का विवरण करें।
2. ऐसा सबूत पेष करे जिसके द्वारा हम जान सकें कि हम वास्तव में छुड़ाए गए हैं।
3. विवरण करे कि आदतन पाप और अचानक होनेवाला पाप के बीच में क्या संबन्ध है।
4. विवरण करे कि संतों की सहनषीलता और विष्वासियों की निष्चयता के बीच क्या रिष्ता है।
5. मनुश्य के तीन षत्रु की सूची बनाए तथा परिभाशा दें।

यूहन्ना – 2:28–3:24

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी

परमेष्वर की संतान	परमेष्वर की संतान	सही चरित्र के द्वारा संतान होने के रिष्ते का प्रगटीकरण	परमेष्वर की संतान	परमेष्वर की संतान के तौर पर जीना
2:28—3:3	2:28—3:3			
				(2:29—4:6)
				2:29—3:2
		3:1—10	3:1—3	पहली षर्त : पाप से नाता तोडो
	परमेष्वर की संतान और पाप			3:3—10
3:4—10	3:4—9		3:4—6	
			3:7—8	
	प्रेम का आदेष		3:9—10	
एक दूसरे से प्रेम करो	3:10—15	एक दूसरे के प्रति प्रेम	एक दूसरे से प्रेम करो	दूसरी षर्त :आज्ञा पालन करे, विषेशरूप से जीवन में
3:11—18		3:11—18	3:11—12	3:11—24
	प्रेम का बाहरी कार्य		3:13—18	
परमेष्वर के सामने हियाब	3:16—23	मसीही की निष्चयता	परमेष्वर के सामने हियाब	
3:19—24	सत्य और झूठ की आत्मा	3:19—24	3:19—24	
	3:24—4:6			

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि

क. अध्याय 2 झूठे षिक्षकों पर केन्द्रित करता है (विषेशरूप से जिन्होंने यीषु की मनवीयता को ठुकराया हैं)।

ख. अध्याय 3 भी झूठे षिक्षकों की ओर संकेत करता है जिन्होंने उद्धार को नैतिकता से अलग किया हैं। अध्याय 3 विष्वासियों को भी संबोधित करता है।

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

2:28—3:3

28. निदान, हे बालको, उस में बने रहो; कि जब वह प्रगट हो, तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों।

29. यदि तुम जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उस से जन्मा है।
3:1 देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भीः इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना।
2. हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।
3. और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्रा करता है, जैसा वह पवित्रा है।

2:28

अनुच्छेद विच्छेद के बारे में अभी भी तर्क– वितर्क जारी है कि इसे आयत 28, 29 से करना है या फिर 30 से। आयत 27, 28 के बीच में दोहराया जाने के कारण विच्छेद इस जगह पर ही करना अच्छा है।

'' उस में बने रहो;''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है। यह सहनषीलता को बढावा देने के लिए प्रयोग किया गया तीसरा वर्तमानकाल आदेष है (2:19,24)। देखिए **विषेश षीर्शक : 8:31 ।**

'' जब वह प्रगट हो,''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, जैसे कि आयत 29 और 3:2 का '' जब वह प्रगट होगा ''। यह एक संषययुक्त घटना नही है पर एक संषययुक्त समय है। जब यह होगा तब वो सच्चे विष्वासियों से मिलेंगे जो बने रहते है।

'' तो हमें हियाव हो,''

हियाब का यूनानी षब्द *(परहेसिया)* का अर्थ है ''स्वतंत्रता से बोलना''। यीषु मसीह के सुसमाचार में विष्वासियों का ज्ञान और भरोसे पर आधारित वर्तमान समय का जीवनषैली है निष्चयता। नए नियम में इसे कई तरीके से प्रयोग किया है।
1. हियाब, निडरता, या निष्चयता संबन्धित है
क. मनुश्य से (प्रेरित. 2:29; 4:13,31; 2कुरि. 3:12; इफि. 6:19)
ख. परमेष्वर से (1यूह. 2:28; 3:219 4:12; 5:14; इब्रा. 3:6; 4:16; 10:19)
2. खुला, स्पश्ट, सादे ढ़ग से बोलना (मरकुस. 8:32; यूह. 7:139 10:24; 11:14; 16:25; प्रंरित. 28:31)
3. सार्वजनिक रूप से कहना (यूह. 7:26; 11:54; 18:20)
4. संबन्धित षब्द (परहेसियाज़ोमाई) का प्रयोग विपरीत परिस्थिति में निडरता से प्रचार करना (प्रेरित. 18:26; 19:18; इफि.6:20; 1थिस्स. 2:2)।

इस प्रसंग में यह अन्तिम दिन षास्त्र से जुडा हुआ है। विष्वासी यीषु के पुनरागमन से डरते नही पर हियाब से स्वागत करते है कयोंकि वे उसमें बने रहते है और मसीह समानता में जीते हैं।

एन ए एस बी, '' उसके आने पर उसके साम्हने लज्जित न हों। ''

एन के जे वी " उसके साम्हने लज्जित न हों। "
एन आर एस वी "उसके साम्हने लज्जित न हों। "
टी इ वी **"लज्जा के कारण उससे न छिपे"**
एन जे बी "उसके साम्हने लज्जित न हों। "
यह एक अनिषचित भूतकाल है जिसका अर्थ हो सकता है (1) विष्वासी स्वयं लज्जित हुआ, या (2) विष्वासी को लज्जित बनाया गया। यीषु के पुनरागमन में विष्वासी को खुष होना चाहिए, परन्तु जो स्वार्थी, और संसारिक जीवन बिताता है उसके आगमन में आष्चर्यचकित और लज्जित होंगे। वहाँ विष्वासियों का न्याय होगा (2कुरि. 5:10)।

" उसके आने पर "

यह यीषु के पुनरागमन के विशय मे है। षब्द *परूसिया* के प्रयोग केवल यहाँ पाते है जिसका अर्थ है षीघ्र ही होनेवाला राजकीय दौरा।

***विषेश षीर्शक** : मसीह के पुनरागमन का नए नियम षब्दें।*

यह षाब्दिक रूप से "परूसिया पर" है जिसका अर्थ है उपस्थिति और इसे राजकीय दौरा के लिए प्रयोग किया गया। मसीह के पुनरागमन के लिए नए नियम मे प्रयोग किया गया षब्द निम्नलिखित हैः (1) *एपिफनेइया* "आमने–सामने प्रत्यक्ष होना"; (2) *अपोकालुप्स* "पर्दाफाष करना"; और (3) प्रभु का दिन"। षब्द "प्रभु" यहोवा (10,11) और यीषु दोनों के लिए है(7,8,14)। इस प्रकार का **व्याकरणात्मक** अस्पश्टता नए नियम का लेखकों में यीषु के दैवीयता को बताने के लिए प्रयोग करनेवाला एक कार्य था।
नए नियम पुराने नियम का विष्व–दर्षन के आधार पर ही लिखा गया है, जो इस बात को प्रमाणित करता है
1. विद्रोही वर्तमान युग
2. आनेवाला धार्मिक युग
3. यह पवित्रात्मा के द्वारा मसीह के काम से लाया जाएगा।
प्रगतिषील प्रकाषन का धर्मषास्त्रीय पूर्वधारणा की माँग है क्योंकि नए नियम का लेखकों ने इस्राएल का प्रतीक्षा में थोडा सा अंषिक परिवर्तन लाया है। केवल इस्राएल के लिए ही सैनिकों के साथ मसीह आने के स्थान पर वहाँ यीषु के दो आगमन है। पहला आगमन है यीषु नासरी के रूप में देहधारी होना। वो यषा. 53 के दुःख भोगी सेवक के समान आया; और जक. 9:9 का आधार पर वो एक गधे के बच्चे पर थोडा सा सवारी किया। पहला अगमन ने मसीह के नया युग का प्रारम्भ किया, परमेष्वर का राज्य धरती में। एक तरफ से कहा जाए तो परमेष्वर का राज्य यहाँ है दूसरी तरफ से सोचा जए तो यह दूर है। यह इसलिए कि यीषु के दोनों आगमन के बीच का संघर्श के कारण आर्थात् इन दोनों युग के बारे में पुराने नियम में स्पश्टता नही है। वास्तविकता में यह दो आगमन में समस्त मानवजाती को बचाने का यहोवा का समर्पण को महत्व देते है (उत. 3:15; 12:3; निर्ग. 19:5 और भविश्यद्वक्ताओं का संदेष, विषेश रूप से यषायाह और योना)।
कलीसिया पुराने नियम का भविश्यद्वाणियों की परीपुर्णता के इन्तजार में नही है क्योंकि अधिकतर भविश्यद्वाणियाँ पहले आगमन की हैं (हऊ टु रीड् द बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ, पृश्ठ. 165–166)। विष्वासी क्या करते है कि वे पुनरुत्थित राजाओं का रजा प्रभुओं का प्रभु का महिमायुक्त आगमन की प्रतीक्षा में है, धरती में धार्मिक युग के ऐतिहासिक परिपूर्णता जैसे स्वर्ग में है (मत्ती. 6:10)। पुराने नियम का प्रस्तुति गलत नही थी किन्तु अधूरी थी। जैसे भविश्यद्वक्ताओं ने कहा वैसे वो यहोवा की महिमा और अधिकार के साथ आएग।
पुनरागमन एक बाइबलीय षब्द नही है, पर यह विचार पूरे नए नियम में पाया जाता है। उसके स्वरूप में बनाया हुआ मनुश्य और परमेष्वर के बीच का संगति का पुनःस्थापना होगी। बुराई का न्याय किया जएगाा और निकाला जाएगाा। परमेष्वर का उद्धेष्य कदापि पराजित नही होगा।

2:29

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यहाँ एक ज्ञान के विशय मे कहा गया जिसमें विष्वासी सहभागी है,परन्तु झूठे षिक्षकों ने इसे खेया।

'' तुम जानते हो ''

यह वर्तमानकाल है जो जारी रहनेवाला ज्ञन के बारे में है या तो यह एक वर्तमानकाल आदेष है जोकि विष्वासियों के प्राथमिक ज्ञान के बारे में है।

''वो''

आयतें 2:28; 2:1; और 3:7 बताती है कि यह यीषु को दर्षाती है। परन्तु सर्वनाम ''उस से जन्मा है'' पिता परमेष्वर की ओर इषारा करता है क्योंकि ''परमेष्वर से जन्मा है'' वाक्यांष का प्रयोग कई बार किया गया है (3:9; 4:7; 5:1,4,18; यूह. 1:13)।

''धार्मिक ... धर्मी''

यह एक पारीवारिक चरित्र है जिसका कामना हमसे करता है!

विषेश षीर्शक : धार्मिकता

''धार्मिकता'' इतना महत्वपूर्ण षीर्शक है कि प्रत्येक बाइबल विद्यार्थी को इस पर विस्तृत अध्ययन करना चाहिए।

पुराने नियम में परमेष्वर के चरित्र को ''न्यायी'' और ''धर्मी'' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मेसोपोटामिया का षब्द नदी किनारे पाए जाने वाले बेंत से लिया गया है जो दिवारों इत्यादि की सीधाई को नापने के प्रयोग में लाई जाती थी। परमेष्वर रूपक रीति से इस षब्द का प्रयोग अपने चरित्र को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। वे सीधा कोना हैं जिसके द्वारा सभी बातों को परखा जाता है। ये विचार परमेष्वर की धार्मिकता और उनके न्याय करने के अधिकार को प्रमाणित करता है।

मनुश्य परमेष्वर के स्वरूप में रचा गया था (उत्प.1:26—27; 5:1, 3; 9:6)। मानवजाति परमेष्वर के साथ संगति

के लिए रची गई थी। सारी सृश्टि परमेष्वर और मनुश्य के वार्तालाप के लिए मंच है। परमेष्वर चाहते थे कि उनकी सबसे उत्तम सृश्टि मानव उन्हें जाने, उनसे प्रेम करे, उनकी सेवा करे, और उनके समान हो। मनुश्य की वफ़ादारी की परीक्षा हुई (उत्प.3) और वास्तविक जोड़ा इस परीक्षा में असफल हुआ। इसके फलस्वरूप परमेष्वर और मानव के बीच का सम्बन्ध टूट गया (उत्प.3; रोमियों.5:12–21)।

परमेष्वर ने वायदा किया है कि वह इस संगती को पुनः स्थापित करेंगे (उत्प.3:15)। इसे वह अपनी इच्छा और अपने पुत्र के द्वारा करते हैं। मानव इस दूरी को भरने में असमर्थ है (रोमियों.1:18–3:20)।

पतन के बाद पुनः स्थापना की ओर परमेष्वर का पहला कदम था उनकी वाचा जो उनके निमन्त्रण और मानवजाति के पष्चाताप, विष्वासयोग्यता और आज्ञाकारी प्रतिउत्तर पर आधारित था। पतन के कारण मनुश्य सही प्रतिउत्तर के कार्य के लिए असमर्थ था (रोमियों.3:21–31; गला.3)। परमेष्वर को स्वयं ही षुरूवात करनी पड़ी पतित मनुश्य को पुनः स्थापित करने के लिए। ऐसा उन्होने इस तरह किया।

1) पापी मनुश्य को मसीह के कार्य द्वारा धर्मी घोशित करके (अदालती धार्मिकता)।

2) मसीह के कार्य द्वारा मनुश्य को मुफ्त धार्मिकता देकर (थोपी गई धार्मिकता)।

3) भीतर बसने वाली आत्मा देकर जो मनुश्य में धार्मिकता उत्पन्न करती है (नैतिक धार्मिकता)।

4) मसीह द्वारा परमेष्वर के स्वरूप को विष्वासियों में पुनः स्थापित करने के द्वारा अदन की वाटिका की संगति को पुनः स्थापित करके (उत्प.1:26–27) (सम्बन्धित धार्मिकता)।

परमेष्वर वाचामय प्रतिउत्तर चाहते हैं। परमेष्वर मुफ्त में देते हैं परन्तु मनुश्य को प्रतिउत्तर देना होगा और लगातार प्रतिउत्तर देना होगा
क) पष्चाताप में

ख) विष्वास में

ग) आज्ञाकारी जीवनषैली

घ) धीरज

धार्मिकता परमेष्वर और मनुश्य के बीच वाचामय और परस्पर कार्य है। यह परमेष्वर के चरित्र, मसीह के कार्य और पवित्र आत्मा के प्रोत्साहन कार्य पर आधारित है जिसका सभी व्यक्तियों को व्यक्तिगत रूप से प्रतिउत्तर देना होगा। यह विचार ''विष्वास द्वारा धर्मी ठहराया जाना'' कहलाता है। यह विचार सुसमाचारों में प्रगट हुआ पर इन षब्दों में नहीं। यह प्राथमिक तौर पर पौलुस द्वारा प्रयोग में लाया गया जो ''धार्मिकता'' के लिए यूनानी षब्द का प्रयोग विभिन्न तरह से 100 से अधिक बार करते हैं।

पौलुस एक षिक्षित रब्बी थे जो डिकाओसुने षब्द का प्रयोग इब्रानी अभिप्राय के सैप्टूआजैन्ट के एस डी क्यू से करते हैं न कि यूनानी साहित्य से। यूनानी लेखों में ये षब्द उस व्यक्ति से जुड़ा है जो परमेष्वर और समाज की आषाओं को पूरा करता है। इब्रानी अभिप्राय में ये हमेषा वाचा षब्दों के ढाँचे से जुड़ा है। यहोवा न्यायी, नैतिक और धर्मी परमेष्वर हैं। वे चाहते हैं कि उनके लोग उनके चरित्र को प्रगट करें। छुड़ाए गए मनुश्य नई सृश्टि बन जाते हैं। यह नयापन नई जीवनषैली को जन्म देता है जो भक्तिपूर्ण जीवन है (सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाने पर रोमन कैथोलिक केन्द्रीत हैं)। क्योंकि इस्राएल परमेष्वर के राज्य में है इसकारण सामाजिक और

धार्मिक कानून में कोई अन्तर नहीं है। ये अन्तर इब्रानी और यूनानी षब्दों का अंग्रेज़ी में अनुवाद करने के कारण आया और ''न्याय'' (सामाजिक कानून) और धार्मिकता (धर्मिक कानून) बन गया।

यीषु मसीह का सुसमाचार यह है कि पतित मानव परमेष्वर के साथ संगति के लिए पुनः स्थापित किया गया है। पौलुस का पक्ष यह है कि परमेष्वर मसीह के द्वारा दोशी को क्षमा करते हैं। यह पिता के प्रेम, दया और अनुग्रह; पुत्र के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान; पवित्रात्मा के सुसमाचार के करीब लाने से होता है। धर्मी ठहराया जाना परमेष्वर का मुफ्त में किया गया कार्य है पर ये भक्तिपूर्ण जीवन में बदलना चाहिए। जागृति लानेवालों के लिए ''परमेष्वर की धार्मिकता'' पापी मनुश्य को परमेष्वर के सम्मुख ग्रहण योग्य बनाना है और कैथोलिक के लिए यह परमेष्वर के समान होना है। यह दोनों ही सही हैं।

मेरे दृश्टिकोण में पूरी बाइबल उत्प.4–प्रका.20 तक परमेष्वर द्वारा अदन की संगति को परमेष्वर द्वारा पुनः स्थापित करने का वृतान्त है। बाइबल की षुरूवात परमेष्वर और मनुश्य के बीच पृथ्वी में संगति से होती है (उत्प.1–2) और बाइबल का अन्त भी इसी प्रकार की संगति से होता है (प्रका.21–22)। परमेष्वर का स्वरूप और उद्देष्य पुनः स्थापित होगा।

ऊपर की चर्चा को प्रमाणित करने के लिए दिए गए नए नियम के आयतों पर ध्यान दीजिए जो यूनानी षब्द समूह को प्रस्तुत करते हैं।

1) परमेष्वर धर्मी हैं (अधिकतर परमेष्वर न्यायी हैं से जुड़ा हुआ है)

क. रोमियों.3:26

ख. 2थिस्स.1:5–6

ग. 2तीमु.4:8

घ. प्रका.16:5

2) यीषु धर्मी हैं

क. प्रेरित.3:14; 7:52; 22:14 (मसीहा का षीर्शक)

ख. मत्ती.27:19

ग. 1यूह.2:1, 29; 3:7

3) अपनी सृश्टि के लिए परमेष्वर की इच्छा धार्मिकता है

क. लैव्य.19:2

ख. मत्ती.5:48 (रोमियों.5:17–20)

4) धार्मिकता को प्रदान और उत्पन्न करने के परमेष्वर के साधन

क. रोमियों.3:21–31

ख. रोमियों.4

ग. रोमियों.5:6–11

घ. गला.3:6–14

ङ. परमेष्वर द्वारा दिए गए
(1) रोमियों.3:24; 6:23

(2) 1कुरि.1:30

(3) इफि.2:8–9

च. विष्वास द्वारा प्राप्त

(1) रोमियों.1:17; 3:22, 26; 4:3, 5, 13; 9:30; 10:4, 6, 10

(2)1कुरि.5:21

छ. पुत्र के कार्य द्वारा

(1) रोमियों.5:21–31

(2) 2कुरि.5:21

(3) फिलि.2:6–11

5) परमेष्वर की इच्छा यह है कि उनके अनुयायी धर्मी बनें

क. मत्ती.5:3–48; 7:25–27

ख. रोमियों.2:13; 5:1–5; 6:1–23

ग. 2कुरि.6:14

घ. 1तीमु.6:11

ङ. 2तीमु.2:22; 3:16

च. 1यूह.3:7

छ. 1पत.2:24

6) परमेष्वर धार्मिकता से संसार का न्याय करेंगे

क. प्रेरित.17:31

ख. 2तीमु.4:8

धार्मिकता परमेष्वर का चरित्र है जो पापी मनुश्य को मुफ्त में यीषु मसीह द्वारा प्राप्त हुआ है। यह

1) परमेष्वर की आज्ञा है

2) परमेष्वर का वरदान है

3) मसीह का कार्य है

पर साथ ही यह धर्मी बनने की एक प्रक्रिया है जो पूर्ण हृदय और जोष से खोजी जानी चाहिए जो एक दिन मसीह के दूसरे आगमन पर समाप्त हो जाएगी। परमेष्वर के साथ संगति उद्धार के समय पुनः स्थापित कर दी गई थी परन्तु यह जीवनभर प्रगतिषील रहती है कि परमेष्वर के आमने–सामने मृत्यु या उठा लिए जाने के द्वारा समाप्त हो।

यहाँ पर एक अच्छा लेख है जो पौलुस और उनके पत्रों के षब्दकोश से लिया गया है।

''कैल्वीन, लूथर से अधिक, परमेष्वर की धार्मिकता के विचार पर अधिक ज़ोर देते हैं। परमेष्वर की धार्मिकता के प्रति लूथर का दृश्टिकोण छुटकारे के विचार से भरा है। कैल्वीन परमेष्वर की धार्मिकता को हमें देने और हम पर प्रगट करने के अद्‌भूत स्वभाव को प्रगट करते हैं।'' (पृश्ठ.834)

मेरे लिए परमेष्वर से विष्वासी के सम्बन्ध के तीन चरण हैं।

1) सुसमाचार व्यक्ति है (पूर्वी कलीसिया और कैल्वीन का अवधारणा)

2) सुसमाचार सत्य है (अगस्तीन और लूथर का अवधारणा)

3) सुसमाचार परिवर्तित जीवन है (कैथोलिक अवधारणा)

ये सभी सच हैं और स्वस्थ बाइबलीय मसीहत के लिए इसका इकट्‌ठा रहना आवष्यक है। यदि किसी एक पर अधिक ज़ोर दिया गया और दूसरे को दबाया तो समस्याऐं षुरू हो जाऐंगी।

हमें यीषु का स्वागत करना होगा।

हमें सुसमाचार पर विष्वास करना होगा।

हमें मसीह की समानता के लिए लगातार कोषिष करनी होगी।

'' जन्मा ''

अर्थात् बाहरी अभिकर्ता, परमेष्वर, के द्वारा लाया गया (यूह.3:3)। मसीहत के बारे में बताने के लिए प्रयोग किया गया इस पारीवरिक रूपक को ध्यान करें (यह एक परिवार है)। देखिए नोट 3:1।

3:1

''देखो कैसा प्रेम ''

प्रेम के लिए 1यूहन्ना में *अगापाओ* (क्रिया) या *अगापे* (संज्ञा, 2:5,15; 3:1,16,17; 4:7,8,9,1012,16,17,18; 5:3) का प्रयोग है। इसे साहित्यक यूनानी मे ंप्रयोग किया है परन्तु कम। ऐसा लगता है कि प्रारम्भिक कलीसिया ने सुसमाचार के प्रकाष में इसकी परिभाशा दी हैं। यह एक गहारा तथा बने रहनेवाला प्रेम को दर्षाता है। यह कहना सही नही होगा कि यह परमेष्वर का सा प्रेम है क्योंकि यूहन्ना रचित सुसमाचार में इसे *फिलियो* का पर्यायवाची षब्द के समान प्रयोग किया है (5:20; 11:3,36; 12:25; 15:19; 16:27; 20:2; 21:15,16,17)।
हलॉकि यह दिलचस्प बात है कि इसे हमेषा 1 यूहन्ना में विष्वासियों का आपसी प्रेम केलिए प्रयोग किया है। यीषु पर विष्वास और संगति परमेष्वर और मनुश्य के साथ हमारी संबन्ध को बदल डालती है!

'' पिता ने हम से किया है ''

यह एक पूर्णकाल है। परमेष्वर के तोहफा मसीह में उद्धार के प्रति इस काल का प्रयोग विष्वासी के सुरक्षा के सिद्धान्त को मजबूत करता है (यूह. 10; इफि. 2:5,8; 3:14; 5:1)।

विषेश षीर्शक : एक व्यक्ति के उद्धार के बारे में नए नियम में प्रमाण

यह आधारित है
1) परमेष्वर के चरित्र (यूह.3:16), पुत्र के कार्य (2कुरि.5:21), और पवित्र आत्मा की सेवकोई (रोमियों.8:14–16) न कि मनुश्य के कार्य, आज्ञाकारिता की मज़दूरी, और वंष पर

2) यह तोहफा है (रोमियों.3:24; 6:23; इफि.2:5, 8–9)

3) यह नया जीवन है, संसार के प्रति नया दृश्टिकोण है (याकूब और 1यूहन्ना)

4) यह ज्ञान है (सुसमाचार), संगति है (यीषु मसीह में और के साथ विष्वास), नई जीवनषैली (आत्मा द्वारा संचालित मसीह की समानता), तीनों ही, कोई एक अकेला नहीं।

''कि हम कहलाएं,''

इसे परमेष्वर की ओर से मिला हुआ आदरयोग्य षीर्शक (परमेष्वर के सन्तान) को बताने के लिए प्रयोग किया है।

'' परमेष्वर के सन्तान ''

यह 2:29–3:10 का केन्द्र है। यह हमारे उद्धार में परमेष्वर की दिलचस्पी को बताता है (ष्टह. 6:44,65)। परमेष्वर के साथ विष्वासी का नए रिष्ते के विवरण के लिए यूहन्ना पारीवारिक षब्दों का प्रयोग कर रहा है (2:29; 3:1,2,9,10; यूह. 1:12)।
यह बहुत दिलचस्प बात है कि परमेष्वर के साथ विष्वासी का नए रिष्ते का विवरण के लिए जब यूहन्ना (यूह. 3:3) और पतरस (1पत.1:3,23) पारीवारिक रूपक ''नया जन्म'' या ''ऊपर से जन्मा'' का प्रयोग करते है, तब पौलूस पारीवारिक रूपक ''लेपालकपन''(रोमि.8:15,23; 9:4; गला. 4:15; इफि. 1:5) का प्रयोग करता है और याकूब पारीवारिक रूपक ''जन्म''(याकूब. 1:18) ''उत्पन्न करना''का प्रयोग करता है। मसीहत एक परिवार है।

'' और हम हैं भीः''

यह एक वर्तमानकाल है। इसे हम के.जे.वी. में नही पाते है।

'' संसार हमें नहीं जानता, ''

षब्द ''संसार'' धर्मषास्त्रीय रूप से प्रयोग नही किया गया जैसे 2:15–17 में किया था। षब्द संसार परमेष्वर से अलग हटकर अपने मर्जी से चलनेवाले एक मानवीय समाज की ओर इषारा करते है (यूह. 15:18–19; 17:14–15)। संसार के द्वारा सताव और तिरस्कार हमारे मसीह में होने का एक ओर सबूत है (मत्ती. 5:10–16)।

'' क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना।''

यह स्पश्ट रूप से पिता परमेष्वर के लिए संकेत है क्योंकि यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीषु ने बार बार कहा कि संसार ने निता को नही जाना (यूह. 8:19,55; 15:18,21; 16:3)। 1यूहन्ना में सर्वनाम अस्पश्ट है। इस प्रसंग में व्याकरण पिता की ओर, और आयत 2 के अनुसार धर्मषास्त्रीय संकेत पुत्र की ओर है। हलॉकि यह जानबूझकर ऐसा लिखा होगा क्योंकि यूहन्ना में यीषु को जानना पिता को जानना है (यूह. 12:45; 14:9)।

3:2

'' अब तक यह प्रगट नहीं हुआ,
कि हम क्या कुछ होंगे! ''

यह अन्तिम–समय घटनाओं के बारे में प्रस्तुत करने में यूहन्ना की असमर्थता को बताता है (प्रेरित. 1:7)। यह इस बात को भी प्रगट करता है कि 2:27 का अर्थ यह नही होता कि हर क्षेत्र का ज्ञान हो। यहाँ तक कि जब यीषु देहधारी हुआ तब इस घटना के बारे में उसका ज्ञान भी थोडा ही था (मत्ती. 24:36; मरकुस. 13:22)।

'' जब वह प्रगट होगा ''

षब्द ''जब'' एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य को परिचित कराता हैं। यह यहाँ पर यीषु के पुनरागमन का संषययुक्त समय को प्रदर्षीत किया है।

'' हम भी उसके समान होंगे,''

यह हमारे मसीहसमानता की संपूर्णता है (2कुरि. 3:18; इफि. 4:13; फिलि. 3:21; कुलु. 3:4)। इसे कई बार महिमा प्राप्त करना कहा जाता है (रोमि.8:28–30)। यह हमारे उद्धार की संपूर्णता है। यह भविश्यात्मक परीवर्तन मनुश्य के अन्दर जब उसे रचा गया था तबका स्वरूप में आने को दर्षाता है (तउ.1:26; 5:1,3; 9:6)। परमेष्वर के साथ घनिश्ठ संबन्ध संभव है।

'' क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। ''

उसका संपूर्णता में उसे देखने का अर्थ है हम उसके समानता में परीवर्तित हो जाएगें (1कुरि. 13:12)। यह यीषु के पुनरागमन में विष्वासी के महिमा प्राप्त की ओर इषारा करता है (रोमि.8:29)। यदि ''दोशमुक्ति'' का अर्थ पाप का दण्ड से छुटकारा है, और ''षुद्धिकरण'' का अर्थ पाप का सामर्थ से छुटकारा है तो ''महिमाप्राप्ती'' का अर्थ है पाप की उपस्थित से छुटकारा ।

3:3

'' जो कोई ''

2:29–3:10 में 7 बार यूनानी षब्द *''पास''* का प्रयोग है। यूहन्ना सीधे सच्चाई का प्रदर्षन कर रहे है। एक व्यक्ति परमेष्वर का सन्तान या षैतान का संतान बन सकते है (2:29; 3:3,4,6–दो बार,9,10)।

''यह आशा ''

यह पुनरुत्थान का दिन को बताने के लिए पौलूस के द्वारा प्रयोग किया गया षब्द है। यह घटना असंदिगध्ता को बताता है और समय अस्पश्ट था।
नए नियम का दूसरे लेखकों के समान यूहन्ना दूसरे आगमन का आषा के बारे में नही बताता। केवल इसी जगह में इस षब्द का प्रयोग यूहन्ना करता है। वर्तमान में यीषु में बने रहने का फायदा और कर्तव्य पर जोर दे रहा है। इसका अर्थ यह नही है कि उसने बुराई का अन्तिम समय न्याय (2:18) और विष्वासियों के महिमा प्राप्ती (3:1–3) की प्रतीक्षा नही की।

'' वह अपने आप को वैसा ही पवित्रा करता है,
जैसा वह पवित्रा है। ''

पवित्रता आवष्यक है (मत्ती. 5:8,48)। हमें षुद्धिकरण प्रक्रिया में सहयोग देना है (2कुरि.7:1; याकूब. 4:8; 1पत. 1:22) जैसे यूह. 1:12 में दोशमुक्ति के लिए हमारे सहयोग के बारे में कहते है। जब हम यहेज.18:31 का तुलना 36:26–27 करेंगे तब हमारी उद्धार में परमेष्वर का भाग (परमाधिकार) और मनुश्य का भाग का संघर्श देख सकते है (स्वेच्छा)। परमेष्वर हमेषा षुरूवात करते है (यूह.6:44,65), और वह चाहता है कि उसके वाचा के लोग प्रारम्भिक मनफिराव और विष्वास के द्वारा प्रत्युत्तर दे और मनफिराव, विष्वास, आज्ञाकारिता, सेवा, आराधना, सहनषीलता में बने रहें।

<u>प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 3:4–10</u>

क. यह अनुच्छेद मसीही प्रवीणता या संपूर्ण षुद्धिकरण (रोमि. 6) और पापमयजीवन में लगे रहने (रोमि.7) के बीच का विवाद में रहा है।

ख. हमें कभी भी इस बात की अनुमति देना नही चाहिए कि हमारे धर्मषास्त्रीय सोच विचार अनुच्छेदों के अध्ययन को नियंत्रित करें। जब तक हम 3 अध्याय और 1 यूहन्ना की पत्री का अध्ययन पूरा न करे तब तक किसी ओर पुस्तक की बातों को सम्मिलित करने का प्रयास न करें।

ग. यह भाग स्पश्ट रूप से विष्वासियों के इंतजार के लक्ष्य को बताता है, पाप से परिपूर्ण छुटकारा। इसे रोमि. 6 अध्याय में भी प्रगट किया गया। मसीह के सामर्थ के द्वारा हम संभवताः पापरहित जीवन बिता सकते है।

घ. यह अनुच्छेद इस पत्री का मुख्य प्रसंग के साथ मेल खाता है।
1. 1:8–2:2 के बिना इसके व्याख्या करना मूर्खता होगी।
2. 1 यूहन्ना का संपूर्ण उद्धेष्य को नाष करनेलायक व्याख्या, उद्धार के निष्चयता के विरूद्ध में झूठे षिक्षकों का कथनों की व्याख्या करना भी मूखर्ता होगी।
3. यह अनुचछेद पापरहित जीवन या पाप का महत्व हीनता के विशय में झूठे षिक्षकों का रवैया से संबन्धित हैं । षायद 1:8–2:2 झूठे षिक्षक की ओर इषारा करता है और 3:1–10 षेश लोगो की ओर इषारा करता है।

ङ. इन दोनों अनुचछेद के बीच में असत्याभास संबन्ध है। मसीही के जीवन में पाप नए नियम की पुनरावर्तित समस्या है (रोमि. 7)। यह पूर्वनियुक्ति और स्वेच्छा या सुरक्षा और सहनषीलता के बीच का संघर्श है। यह असत्याभास एक धर्मषासत्रीय संतुलन को प्रस्तुत किया है। झूठे षिक्षक पाप के क्षत्र में दो गलतियाँ कर रहे थे।

च. यह सारे धर्मयाास्त्रीय तर्क निम्नलिखित गलतफ़हमी की वजह से हुई हैं
1. यीषु मे हमारी पदवी
2. उस पदवी को दैनिक जीवन में अनुभवों के द्वारा पूरा करने का प्रयास
3. वायदा है कि एक दिन ज़रूर हम विजय प्राप्त करेंगे।
हम पाप के दण्ड से मुक्त हुए (दोशमुक्ति), फिर भी हम उसकी सामर्थ के साथ संघर्श कर रहे है (प्रगतिषील षुद्धिकरण), और एक दिन पाप की उपस्थिति से मुक्त होंगे (महिमा प्राप्ती)। यह पत्री पाप कों मान लेने की और पापरहित जीवन की ओर बढने की प्राथमिकता पर प्रकाष डालती है।

छ. दूसरा विकलप यूहन्ना के साहित्यक दोहरावाद से आता है। उसके अनुसार जो कोई मसीह में है वह धर्मी है, और जो कोई षैतान मे है वह पापी है। इसके बीच में ओर कोई श्रेणी नही है। यह त्योहारिक मसीहियों को जगाने की घण्टी है।

ज. इस कठीन विशय के प्रति कुछ उल्लेख
1. इस अनुच्छेद का 7 पारम्परिक व्याख्या के लिए देखें *द टीनडेयल न्यू टेस्टमैन्ट कमन्ट्रिस* में जॉन आर. डबल्यु. स्टॉट का ''एपिस्टलस ऑफ जॉन (पृश्ठ. 130–136)।
2.ओरलोन विल्ली का *क्रिसटियन थियॉलजी,* भाग. 2 (पृश्ठ.440)।
बी.बी. वारफील्ड का ''पेरफक्षनिसम''।

<u>षब्द और वाक्यांष अध्ययन</u>

3:4—10

4. जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है; ओर पाप तो व्यवस्था का विरोध है।
5. और तुम जानते हो, कि वह इसलिये प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं।
6. जो कोई उस में बना रहता है, वह पाप नहीं करताः जो कोई पाप करता है, उस ने न तो उसे देखा है, और न उस को जाना है।
7. हे बालको, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उस की नाईं धर्मी है।
8. जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया हैः परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे।
9. जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता; क्योंकि उसका बीज उस में बना रहता हैः और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है।
10. इसी से परमेश्वर की सन्तान, और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं; जो कोई धर्म के काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह, जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता।

3:4

एन ए एस बी, '' जो कोई पाप में लिप्त है, वह व्यवस्था का विरोध करता है;''
एन के जे वी '' जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है;''
एन आर एस वी '' जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का प्रति अपराधी है;''
टी इ वी '' जो कोई पाप करता है, वह परमेष्वर का व्यवस्था का उलंघन करता है;''
एन जे बी '' जो कोई पाप करता है, वह दुश्टता का काम करता है;''

यहाँ और आयत 6 में सर्वनाम ''जो कोई'' का प्रयोग है। यह समस्त मानवजाती को दर्षाता है।
इस में वर्तमानकाल क्रियाओं का प्रयोग है जो आदतन, जारी रहनेवाला तथा जीवनषैली कार्यें की ओर इषारा करता है। धर्मषास्त्रीय समस्या (तुलना करें 1:7—10 से 3:6—9) क्रिया का काल से सुलझा नही सकते, यह केवल दो प्रकार के नॉस्टिक झूठे षिक्षकों के ऐतिहासिक क्रम और इस पत्री का संदर्भ से ही सुलझा सकते है। अगला विषेशता है षब्द ''व्यवस्था का विरोध'' का प्रयोग। यह मूसा की व्यवस्थाा या सामाजिक नियम के प्रति विद्रोह के बारे में नही कह रहा है। इसी षब्द का प्रयोग मसीह विरोधी के लिए 2थिस्स. 2:3,7 में किया है। यह पाप की संपूर्ण परिभाशा हो सकती है (यूह. 9:41; रोमि. 14:23; याकूब. 4:17; 1यूह. 5:17), जो कि मसीह समानता का बिलकुल विपरीत है।

3:5

''वो प्रगट हुआ,''

यह यीषु के देहधारण के बारे में कह रहे हैं (3:8; 2तिमु. 1:10)। यही क्रिया, *फनेरॉ,* का प्रयोग 3:2 में यीषु के दूसरे आगमन के लिए किया गया है। वो पहले उद्धारकर्ता के रूप में आया (मरकुस. 10:45; यूह. 3:16; 2कुरि. 5:21) और अब न्यायी रूप में प्रगट होंगे! बिल हेनड्रिक्स द लेट्रस ऑफ जॉन में इस प्रकार कहते है किः

> ''इस आयत और आयत 8 में यीषु के आगमन के उद्धेष्य के बारे में दो तीव्र कथन है। उसे परमेष्वर के द्वारा भेजा गया कि वह पाप को उठा ले (3:15), और वो प्रगट इसलिए हुआ कि

षैतान के कार्य को नश्ट करे (3:8)। लूका यीषु के आगमन के उद्धेष्य को इस प्रकार कहते हे कि वो खोए हुओं को ढूंढने और बचाने आया (लूका. 19:10)। यूहन्ना रचित सुसमाचार कहता है कि वो भेडों को बहुतायत से जीवन देने आया (यूह. 10:10)। मत्ती यीषु के उद्धेष्य को यीषु नाम का अर्थ बताते हुए कहते है कि वो अपने लोगों के पाप से छुटकारा देंगे (मत्ती. 1:21)। इन तमाम कथनों का मौलिक बात यह है कि यीषु ने ऐसा कुछ कार्य किया जो मनुश्य नही कर सकता था'' (पृश्ठ.79—80)।

'' पापों को हर ले जाए; ''

यह काम मनुश्य का प्रत्युत्तर,मनफिराव,और विष्वास पर निर्भर है। इस कथन का पृश्ठभूमि दो संभावित श्रोतों से हो सकती है (1) पाप प्रायष्चित का दिन (लैव्य. 16) जहाँ दो बकरे इस्राएल के छावनी से पापों को प्रतिरूप के तौर पर उठा ले जाते हैं (यूह. 1:29 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का प्रयोग); या यीषु ने क्रूस पर किए हुए कामों की तरफ इषारा (यषा.53:11—12; इब्रा. 9:28; 1पत. 2:24)।

'' और उसके स्वभाव में पाप नहीं।''

हमारे बदले में उसके पाप प्रायष्चित मृत्यु का आधार यीषु का पापरहित जीवन है (यूह. 8:46; 2कुरि. 5:21; इब्रा. 4:15;7:26; 1पत. 1:19; 2:22)।
इस आयत के षुरूवात में पाप बहुवचन और अन्त में एकवचन है। पहले पाप के काम को और दूसरा उसके धर्मी चरित्र को दर्षाता है। लक्ष्य है कि विष्वासी यीषु की पदवीय और प्रगतिषील षुद्धिकरण में सहभागी होंगे। पाप यीषु और उसके लोगों के लिए एक अनजान बात हैं।

3:6

'' जो कोई उस में बना रहता है,
वह पाप नहीं करता:''

यह 3:4 के समान है। यह 1:8—2:2 और 5:16 के बीच में स्पश्ट अन्तर बताता है। 1यूह. का परिचय में प्रासंगिक अन्तरदृश्टि को देखें।

'' जो कोई पाप करता है,
उस ने न तो उसे देखा है,
और न उस को जाना है।''

जो कोई लगातार पाप में बने रहते है उसने न तो यीषु को जाना और न पहचाना है। पापी मसीही (1) यीषु के लक्ष्य का तोडफोड करता; (2) मसीही समानता का उद्धेष्य को नाष करता ; और (3) व्यक्तिगत आत्मिक स्वभाव को बताता है (यूह. 8:44)।

3:7

'' किसी के भरमाने में न आना; ''

यह नकारात्मक के साथ का वर्तमानकाल आदेष है, अर्थात जो कार्य प्रगति पर है उसे रोको। झूठे षिक्षकों का उपस्थिति (2:26) 1यूहन्ना के सही धर्मषास्त्रीय समझ के लिए ऐतिहासिक वतावरण बनाता है विषेशरूप से 1:7–10 तथा 3:4–10 के लिए।

" जो धर्म के काम करता है,
वही उस की नाईं धर्मी है।"

इसी आयत को बाकी संदर्भों से अलग करकर कर्म के द्वारा धार्मिकता का उपदेष का बढावा देना सही नही है। नया नियम इस बात में स्पश्ट है कि कोई भी अपनी व्यक्तिगत योग्यता के कारण पवित्र परमेष्वार के पास नही पहुँचेगा। हलॉकि मनुश्य को परमेष्वर का तोहफा उद्धार के प्रति प्रतिक्रिया जताना ज़रूरी है। हमारे कोई भी प्रयास हमें परमेष्वर तक नही पहुँचाएगें। हमारे धर्म के काम हमारे आत्मिक स्तर (प्रकाष. 22:11) और उद्धार के बाद का प्रौढता को प्रगट करता है । हमारा उद्धार भले कामों से नही हुआ पर भले कामों के लिए हमारा उद्धार हुआ है। मसीह में परमेष्वर के इस तोहफे का उद्धेष्य है मसीहसमान अनुयायी (इफि. 2:8,9,10)। प्रत्येक विष्वासी के प्रति परमेष्वर की परम इच्छा यह नही कि जब वह मरेगा (दोशमुक्ति) तो उसे स्वर्ग मिले पर अब की मसीह समानता (अस्थाई षुद्धिकरण) है (मत्ती. 5:48; रोमि. 8:28–29; गला. 4:19)। देखिए **विषेश षीर्शक** : धार्मिकता 2:29 ।

3:8

" जो कोई पाप करता है,
वह शैतान की ओर से है,"

परमेष्वर के संतान के पहचान उनके जीवनषैली से होती है, जैसे षैतान के हैं (3:10; इफि. 2:1–3)।

" क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है:"

क्योंकि शैतान आरम्भ ही से ही लगातार पाप करता आया है (यूह. 8:44)। क्या यह सृश्टि या स्वर्गदूतों का विद्राह के बारे में है ?
धर्मषास्त्रीय रूप से यह बताना कठीन है कि कब षैतान ने परमेष्वर से विद्रोह किया। अय्यूब1–2; जक. 3; 1राजा. 22:19–23 इषारा करता है कि षैतान परमेष्वर के सेवकों का दल में से एक था। यह हो सकता है कि पूर्वी राजाओं का घमण्ड, अहंकार और इच्छाएं (यष. 14:13–14; यहेज. 28:12–16) षैतान के विद्रोह को दर्षा रही होंगी (यहेज. 28:12–16)। लूका. 10:18 में यीषु कहते है उसने षैतान को बिजली के नाईं स्वर्ग से गिरते हुए देखा और यह नही बताते है कि यह कब हुआ। प्रकाषन की कमी के कारण षैतान का उत्भव और विकास संदिग्ध है। अकेला पड़े हुए वचन को लेकर एक उपदेष बनाना सही नही है।

"परमेष्वर का पुत्र"

देखिए निम्नलिखित **विषेश षीर्शकः परमेष्वर का पुत्र।**

विषेश षीर्शक : परमेष्वर का पुत्र

नए नियम में यीषु के लिए दिए गए षीर्शकों में से यह बड़ा षीर्शक है। जरूर इसका दैवीय सम्बन्ध है। इसमे ''पुत्र'', ''मेरा पुत्र'', और परमेष्वर को ''पिता'' कहकर सम्बोधित करना षामिल है। यह लगभग 124 बार नए नियम में आया है। यहां तक कि यीषु ने स्वयं को जो ''मनुश्य का पुत्र'' कहकर पुकारा उसका भी दैवीय सम्बन्ध है (दानि.7:13—14)।

पुराने नियम में ''पुत्र'' संज्ञा तीन विषेश समूहों को दी जाती थी।

1. स्वर्गदूत (बहुवचन में) (उत्पति6:2, अय्यूब1:6, 2:1)

2. इस्राएल के राजा (2षमू.7:14, भ.सं.2:7, 89:26—27)

3. पूर्ण इस्राएल देष (निर्ग.4:22—23, व्यव.14:1, होषे11:1, मलाकी2:10)

4. इस्राएल के न्यायी (भ.सं.82:6)

यह दूसरा प्रयोग है जो यीषु के साथ जुड़ा हुआ है। इस प्रकार ''दाऊद का पुत्र'' और ''परमेष्वर का पुत्र'' दोनों (2षमू.7, भ.सं.2, 89) से सम्बन्ध रखता है। पुराने नियम मे ''परमेष्वर का पुत्र'' षब्द मसीहा के लिए प्रयोग नहीं किया गया पर केवल अनन्त राजा के लिए किया गया जो कि इस्राएल का ''अभिशिक्त पद'' है। पर मृत सागर के समीप पाए गए लेखों में मसीह के लिए यह षब्द साधारण है (देखिए यीषु और सुसमाचार का षब्दकोश पृश्ठ 770)। साथ ही बाइबल के मध्य काल के यहूदी लेखों में ''परमेष्वर का पुत्र'' षब्द का प्रयोग मसीह के लिए किया गया है (2एसद्रास 7:28, 13:32, 37, 25, 14:9, 1हनोक105:2)।

उनके नए नियम की पृश्ठभूमि यीषु को कई श्रेणियों में बांटने में सहायक है।

1. आदी से उनका होना (यूहन्ना 1:1—18)

2. उनका कुवांरी द्वारा जन्म (मत्ती 1:23, लूका1:31—35)

3. उनका बपतिस्मा (मत्ती3:17, मरकुस1:11, लूका3:22 परमेष्वर की स्वर्ग से की गई घोशणा भ.सं.2 के राजा को यषा.53 के दुःख उठाने वाले दास से जोड़ती है)।

4. षैतान द्वारा उनकी परीक्षा (मत्ती4:1—11, मरकुस 1:12, 13, लूका4:1—13 उनकी परीक्षा की गई कि वह अपने ईष्वर पुत्र होने पर संदेह करें या कम से कम अपने उद्देष्य को क्रूस को छोड़ किसी दूसरे मार्ग से पूरा करें)।

5. अस्वीकार्य दोश स्वीकार करने वालों से उनकी अभिपुश्टि

क) दुश्टात्मा (मरकुस 1:23—25, 3:11—12, लूका4:31—37)

ख) अविष्वासी (मत्ती 27:43, मरकुस14:61, यूहन्ना19:7)

6. चेलों द्वारा उनकी अभिपुश्टि
मत्ती14:33,16:16
यूहन्ना1:34, 49, 6:69, 11:27

7. स्वयं अभिपुश्टि
मत्ती11:25–27
यूहन्ना10:36

8. उनके द्वारा परमेष्वर के लिए पारिवारिक षब्दों का प्रयोग

क) परमेष्वर को ''अब्बा'' कहकर पुकारना
–मरकुस14:36
–रोमियों8:15
–गला.4:6

ख) परमेष्वर को पिता कहकर पुकारना उनके और परमेष्वर के बीच सम्बन्ध को दर्षाता है।

संक्षेप में षीर्शक ''परमेष्वर का पुत्र'' का बहुत ही गहरा धर्मषास्त्रिय अर्थ है उन लोगों के लिए जो पुराने नियम के वायदों को जानते हैं परन्तु नए नियम के लेखक अन्यजातियों की पृश्ठभूमि के कारण इसका प्रयोग करने में संकोच करते हैं क्योंकि उनके ''देवता'' स्त्रियों को ले जाते थे और जो संतान पैदा होती थी वो ''राक्षस'' होते थे।

'' प्रगट हुआ,''

यूनानी षब्द फनेरो का अर्थ है प्रकाष में लाना।आयत 5और 8 समान है जो कहते है मसीह अपने देहधारण में पूरी तरह प्रगट हुआ है । झूठे षिक्षकों के साथ की समस्या यह नही थी कि उन्हें सुसमाचार स्पश्ट रूप से नही दिखाई पडा, पर उनके पास अपनी ही कुछ धर्मषास्त्रीय तथा दर्षनषास्त्रीय बातें थी।

'' कि शैतान के कामों को नाश करे।''

समय और षरीर में यीषु के प्रगट होने का तात्पर्य था कि नाष करें जिसका अर्थ है षैतान के कामों को पूरी तरह से ''छुडाना'', ''खोलना'', और ''नश्ट करना''। यीषु ने उसे कालवरी में पूरा किया, परन्तु मनुश्य को उसके संपूर्ण किए गए काम और तोहफा के प्रति अपना प्रत्युत्तर को विष्वास के द्वारा उसे ग्रहण करने के द्वारा जताना है (1:2)। नए नियम अब है पर पूरा नही'' संघर्श दुश्ट का नाष के साथ भी संबन्ध रखता है। षैतान को हरा दिया गया, पर वह दस दुनिया में कार्यषील है जब तक परमेष्वर का राज्य संपूर्णता में नही पहूँचता।

3:9

'' जो कोई परमेश्वर से जन्मा है ''

यह सही किए गए काम की ओर इषारा करता है जो एक बाहरी अभिकर्ता के द्वारा (परमेष्वर) हुआ है।

'' पाप नहीं करता;''

इस कथन की विषेशता के बारे में दो सिद्धान्त हैः (1) यह नॉस्टिक झूठे षिक्षकों से संबन्धित है खास तौर पर जिन्होंने उद्धार को बुद्धिसंगत बातों की ओर परीवर्तित करके नैतिक जीवनषैली का तिरस्कार किया है या (2) वर्तमानकाल क्रिया जारी रहनेवाला आदतन पाप की प्रक्रिया को दर्षाता है (रोमि. 6:1), न कि कभी कभी होनेवाला पाप (रोमि. 6:15)।इस धर्मषास्त्रीय बातों का उल्लेख रामि. 6 (मसीह में पाप न करने की सामर्थ) और रोमि. 7 (पाप न करने के लिए विष्वासी का निरन्तर प्रयत्न) में है।

'' क्योंकि उसका बीज उस में बना रहता हैः ''

यूनानी षब्दसमूह ''उसके बीज'' के अर्थ के प्रति कई सिद्धान्त हैं। (1) अगस्टिन और लूथर ने कहा यह परमेष्वर के वचन की ओर इषारा करता है (लूका. 8:11; यूह. 5:38; याकूब. 1:18; 1पत. 1:23); कैलविन कहते है कि यह पवित्रात्मा के लिए एक संकेत है (यूह. 3:5,6,8; 1यूह. 3:24; 4:4,13); या (3) कईयों ने कहा कि यह दैवीय स्वभाव या नयापन को दर्षाता है (2पत. 1:4; इफि.4:24); (4) संभवताः यह ''इब्राहिम के बीज के समान'' मसीह को दर्षाता है (गला. 3:16); (5) कुछ कहते है यह ''परमेष्वर से जन्मा'' का पर्यायवाची षब्द है (लूका. 1:55; यूह. 8:33,37); (6) स्पश्टरूप से यह ऐसा एक षब्द था जिसके द्वारा नॉस्टिक मनुश्य के अन्दर की दैवीय किरण को बताता है। प्रसंग के अनुसार बिन्दु 4 सही हैं।

3:10

यह 4–9 का सरांष है। इसका **व्याकरणात्मक ढाँचा काम जो प्रगति में है उसे दर्षाता है।** धर्मषास्त्रीयरूप से **यह यीषु के पहाड़ी उपदेष के समान है** (मत्ती. 7:16–20)। एक का जीवनषैली उसके हृदय को प्रगट करता है , आत्मिक स्तर।

'' परमेश्वर की सन्तान,
... शैतान की सन्तान ''

इब्रानी में यह एक व्यक्ति के बारे में बतानू का तरीका है।

3:11–12

11.क्योंकि जो समाचार तुम ने आरम्भ से सुना, वह यह है, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखे।
12. और कैन के समान न बनें, जो उस दुष्ट से था, और जिस ने अपने भाई को घात कियाः और उसे किस कारण घात किया? इस कारण कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धर्म के थे।।

3:11

" जो समाचार "

यह यूनानी षब्द (*अज्जेलिया* जिसका अनुवाद साधारणरूप से *एन्जल* होता है) केवल 1यूह. 1:5 और 3:11 में पाए जाते है। पहला उपदेषात्मक और दूसरा नैतिकता से संबन्धित प्रयोग है। यह यूहन्ना का मसीहत के दोनों पहलू को संतुलन में रखने का तरीका है (1:8,10; 2:20,24; 3:14)।

" तुम ने आरम्भ से सुना, "

यह वाक्यांष यीषु को जीवित वचन (यूह.1:1) और प्रगट किए गए वचन (1:1; 2:7,13,14; 2यूह. 5,6) के रूप में दर्षाता है।

" हम एक दूसरे से प्रेम रखे।"

यह इस बात का सबूत है कि विष्वासी सच्च में छुडाया गया है (1,14)। ये यीषु के वचन को प्रतिबिंबित करता है (यूह. 13: 34—35; 15:12,17; 1यूह. 3:23; 4:7—8,11—12,19—21)।

3:12

" कैन "

कैन के जीवन के बारे में उत्. 4 में विवरण किया गया है। दुरुस्त आयत 4:4 है (इब्रा.11:4) जहाँ कैन और हाबेल के बलिदानों का जिक्र है। कैन का व्यवहार पतित मानव के प्रभाव को दिखाता है (उत्.4:7; 6:5,11,12,13)। दोनों यहुदी और मसीही परम्परा में कैन विद्रोह का एक उदाहरण है (इब्रा. 11:4; यहुदा. 11)।

" जो उस दुष्ट से था,"

व्याकरणात्मक ढाँचा षायद पुलिंग एकवचन है (3:10) या नपुंसक एकवचन है। यह अस्पश्ट **व्याकरणात्मक ढाँचा** मत्ती. 5:37; 6:13; 13:19,38; यूह. 17:15; 2थिस्स. 3:3; 1यूह. 2:13,14; 3:12; 5:18,19 में भी पाते है। अधिकतर बार यह षैतान की ओर इषारा करता है (मत्ती. 5:37; 13:38; यूह. 17:15)।

3:13—22

13. हे भाइयों, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचम्भा न करना।
14. हम जानते हैं, कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे हैं; क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं: जो प्रेम नहीं रखता, वह मृत्यु की दशा में रहता है।
15. जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।

16. हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए।
17. पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?
18. हे बालको, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें।
19. इसी से हम जानेंगे, कि हम सत्य के हैं; और जिस बात में हमारा मन हमें दोष देगा, उसे विषय में हम उसके साम्हने अपने अपने मन को ढाढ़स दे सकेंगे।
20. क्योंकि परमेश्वर हमारे मन से बड़ा है; और सब कुछ जानता है।
21. हे प्रियो, यदि हमारा मन हमें दोष न दे, तो हमें परमेश्वर के साम्हने हियाव होता है।
22. और जो कुछ हम मांगते हैं, वह हमें उस से मिलता है; क्योंकि हम उस की आज्ञाओं को मानते हैं; और जो उसे भाता है वही करते हैं।

3:13

''तो अचम्भा न करना''

यह नकारात्मक विभक्ति के साथ वर्तमानकाल का आदेष हैं जिसका अर्थ है जो काम प्रगति में है उसे रोको। यह एक अच्छा संसार नही हैः जैसा परमेष्वर ने चाहा।

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है।

'' संसार तुम से बैर करता है ''

यीषु का वैर किया और यह उसके अनुयायीयों का भी करेंगे। यह नए नियम का सर्वसाधारण विशय है (यूह. 15:8; 17:14; मत्ती.5:10–11; 2तिमु. 3:12) और एक का विष्वासी होने का सबूत भी है।

3:14

'' हम जानते हैं,''

यह दुसरा एक सर्वसाधारण विशय है। परमेष्वर की संतानों का दृढ़ विष्वास (1) मन का बदलाव, और (2) व्यवहार के बदलाव से संबन्धित है जो इब्रानी तथा यूनानी मूलषब्द ''मनफिराव'' का अर्थ है।

''हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचे है''

यह एक ओर पूर्णकाल है (यूह. 5:24)। हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुंचने का एक सबूत है कि हम एक दूसरे से प्रेम करेंगे। और दूसरा सूबत है संसार हम से वैर रखेगा।

'' क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं:''

परमेष्वर के घराने का मुख्य चरित्र है (यूह. 13:34–35; 15:12,17; 2यूह.5; 1कुरि. 13; गला. 5:22) क्योंकि यह परमेष्वर का स्वभाव है (4:7–21)। प्रेम परमेष्वर के साथ मनुश्य के संबन्ध का आधार नही है पर परिणाम है। प्रेम उद्धार का अधार नही और यह दूसरा सबूत हैं।

'' जो प्रेम नहीं रखता,
वह मृत्यु की दशा में रहता है। ''

जैसे विष्वासी प्रेम में बना रहता है वैसे अविष्वासी वैर में। प्रेम के जैसा वैर भी किसी के आत्मिक स्तर को प्रकट करता है।

3:15

'' जो कोई ''
2:29 से अब तक यूहन्ना ने इस षब्द को (पास) 8 बार प्रयोग किया है। केवल दो प्रकार के लोग होते है, प्रेम रखनेवाले तथा वैर रखनेवाले।

'' जो कोई अपने भाई से बैर रखता है,
वह हत्यारा है;''

पापं सोच विचार में पैदा होता है। पहाड़ी उपदेष में यीषु ने षिक्षा दी कि वैर करना हत्या करने के बराबर है जैसा लोभ व्यभिचार के समान है (मत्ती. 5:21–22)।

'' और तुम जानते हो,
कि किसी हत्यारे में
अनन्त जीवन नहीं रहता।''

इसका तात्पर्य यह नही कि हत्यारा व्यक्ति मसीही नही बन सकता। पाप की क्षमा मिलती है, पर जीवनषैली हृदय को प्रगट करता है। यहाँ कह रहे कि जो वैर करता रहता है वह मसीही नही बन सकता है। वैर जीवन ले लेता है, प्रेम जीवन देता है।

3:16

''हम ने जाना''

आयत 15 में यूनानी षब्द *ओइडा* और यहाँ *गिनस्को* का प्रयोग है। यूहन्ना के लेखों में इसे पर्यायवाची षब्दों के समान प्रयोग किया है।

'' प्रेम इसी से ''

सही प्रेम का नजारा यीषु ने दिखाया। विष्वासियों को उसके पद चिन्हों पर चलना है (2कुरि. 5:14–15)।

'' उस ने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; ''

यह एक अनिषचित भूतकाल वाक्य है। यीषु के ही षब्दो द्वारा कलवरी को दर्षा रहे है (यूह.10:11,15,17,18; 15:13)।

'' हमें भी ''

विष्वासी यीषु के आदर्ष के द्वारा बन्धे हुए हैं (2:6; 4:11)।

'' भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए। ''

मसीह हमारे आदर्ष हैं। जैसे यीषु ने दूसरों के लिए अपना प्राण दान दिया वैसे हमें भी ज़रूरत पड़ने पर भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए। स्वयं का तिरस्कार पतन के विपरीत है और हमारे अन्दर दूसरों का भलाई के लिए परमेष्वर के स्वरूप की पुनःस्थापना है (2कुरि. 5:14—15; फिलि. 2:5—11; गला. 2:20; 1पत. 2:21)।

3:17

'' जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो
और वह अपने भाई को कंगाल देखकर ''

आयत 16 का प्राण देना की बात को प्रायोगिक रीति से अपने भाई को मदद करने से जोड़ रहे है। ये आयतें याकूब की पत्री से काफी मेल खा रहा है (याकू. 2:15,16)।

''उस पर तरस न खाना चाहे''

हमारा व्यवहार अपने पिता को प्रगट करता हैं।

3:18

'' हम प्रेम वचन और जीभ ही से नहीं करे''

कर्म षब्दों से अधिक प्रभावषाली है (मत्ती. 7:24; याकूब. 1:22—25; 2:14—26)।

'' पर काम और सत्य के द्वारा ''

षब्द सत्य यहाँ चौंका देनेवाला है। यह षब्द 1:5 तथा 3:11 में प्रयोग किए गए ''समाचार'' के समान है जो दोनों उपदेष और जीवनषैली को दिखाता है। हमारे कार्य और लक्ष्य परमेष्वरीय प्रेम के द्वारा प्रेरित होना चाहिए न कि स्वयं केन्द्रित कर्मों से।

3:19

'' इसी से हम जानेंगे,''

यह पहले कहे हुए प्रेम से भरे काम को दर्षाता है। यह हमारे उद्धार का एक ओर उदाहरण है।

'' कि हम सत्य के हैं; ''

विष्वासियों की प्रेम से भरी जीवनषैली दो बातों को दर्षाती है (1) कि वे सत्य के साथ है; और (2) कि उनके विवेक षुद्ध हैं।

3:19—20

इन दोनों यूनानी आयतों के अनुवाद के पीछे असमंजिस है। एक संभावित अनुवाद हो सकता है कि यह परमेष्वर के न्याय को महत्व दे रहा है तो दूसरा परमेष्वर की दया को महत्व दे रहा है। प्रसंग के आधार पर दूसरा सही लगता है।

3:20—21

दोनों आयत तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है।

3:20

***एन ए एस बी,* ''यदि किसी में हमारे मन हमें दोश देता है''**
***एन के जे वी* ''क्योकि यदि हमारा मन हमें दोश देता है''**
***एन आर एस वी* ''जब कभी भी हमारा मन हमें दोश देता है''**
***टी इ वी* ''यदि हमारा विवेक हमें दोश देता है तो''**
***एन जे बी* ''यहाँ तक कि हमार जज़बा हमें दोश दे''**

सब विष्वासी अन्दरूनी दुःख को महसूस करते है कि वे परमेष्वर की इच्छा को जानने के बावजूद भी उस स्तर में जीवन बिता नही पा रहे हैं। ये दुःख परमेष्वर की आत्मा की ओर से (मनफिरव में मदद करता है) या षैतान की ओर से (स्वयं का नाष या गवाही को खोने का कारण बनता है) हो सकता है। यह सही अपराधबोध और गलत अपराधबोध दोनों है। विष्वासी परमेष्वर के वचन को पढ़ने के द्वारा (प्रचारक की सुनने के द्वारा भी) अन्तर को पहचान पाएगा। यूहन्ना उन विष्वासियों को तसल्ली दे रहा है जो प्रेम करने के मामले में खरे उतरे हैं पर अब भी पाप के साथ संघर्श कर रहे हैं। देखिए **विषेश षीर्शक** : मन यूह. 12:40

'' और सब कुछ जानता है। ''

परमेष्वर हमारे सही लक्ष्य को जानता है (1षमू. 16:7; 1राला. 8:39; 1इति. 28:9; यीर्मा.17:10; लूका. 16:15; प्रेरित. 1:24; रोमि. 8:26,27; 1कुरि.4:4)।

3:21

''यदि हमारा मन हमें दोष न दे,''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है। मसीही लोग अभी भी पाप और स्वयं के साथ संघर्श कर रहे हैं (2:1; 5:16—17)। वे अभी भी प्रलोभन का सामना कर रहे हैं ओर कई बार गलत तरीके से पेष आते हैं। कई बार उनका विवके उन्हें दोशी ठहराता है।
सुसमाचार का ज्ञान, यीषु के साथ मधुर संगति, पवित्रात्मा अगुवाई के लिए इच्छा और पिता का सर्वज्ञान हमारे हृदय को षान्त करता है।

'' हमें परमेश्वर के साम्हने हियाव है।''

यह परमेष्वर के सम्मुख में हमारा खुले और मुफ्त संपर्क को दिखाता है। यह यूहन्ना का पुनरावर्तित षब्द तथा विशय है (यूह. 2:28; 3:21; 4:17; 5:14; इब्रा. 3:6; 10:35)। यह वाक्यांष निष्चयता की भलाईयों से दो बातों का जिक्र करता हैः (1) कि विष्वासियों के पास परमेष्वर के पास जाने का हियाब है; और (2) वे जो कुछ उससे माँगते है उसे पाते हैं।

3:22

'' और जो कुछ हम मांगते हैं,
वह हमें उस से मिलता है; ''

यह यीषु के कथनों को प्रतिबिंबित करता है मत्ती. 7:7; 18:19; यूह. 9:31; 14:13—14; 15:7,16; 16:23;मरकुस. 11:24; लूका. 11:9—10। इन आयतों का वायदा काफी सारे विष्वासियों की प्रार्थनाओं से भिन्न है। ऐसा लगता है यह आयत प्रार्थना के असीमित उत्तर के बारे में कह रही है। इसी प्रकार के अनुच्छेदों के साथ तुलना करने से धर्मषास्त्रीय संतुलन होता है।

विषेश षीर्शक : प्रार्थना, असीमित पर सीमित।

क. समानान्तर सुसमाचार

1. विष्वासियों को उत्साहित किया गया कि वे प्रार्थना में दृढ़ रहे और परमेष्वर ''अच्छे चीजों'' का प्रावधान करेंगे (मत्ती. 7:7—11) या अपनी आत्मा देंगे (लूका. 11:5—13)।
2. कलीसिया की अनुषासन प्रणाली के अनुसार विष्वासियो को (दो) प्रार्थना में एक होने के लिए कहा गया है (मत्ती. 18:19)।
3.यहूदी धर्म के न्याय के प्रसंग के आधार पर विष्वासियों को बिना संदेह का विष्वास करने को कहा गया है (मत्ती. 21:22; मरकुस. 11:23—24)।
4. दो दृश्टान्तों के संदर्भ के अनुसार (लूका. 18:1—8 अधर्मी न्यायी तथा लूका 18:9—14 फरीसी और पापी) विष्वासियों को उत्साहित किया गया कि वे अधर्मी और स्वधर्मी फरीसी के समान न बनें।

ख. यूहन्ना के लेखें में
1. यीषु के अन्धे व्यक्ति को चंगा करने के संदर्भ में फरीसियों के अन्धेपन प्रगट किया गया है।यीषु की प्रार्थना को कबूल किया गया है क्योंकि वह जानता था पिता परमेष्वर कौन है और उसके अनुसार जीवन निर्वाह करता है (9:31)।
2. यीषु के ऊपरी कोटरी का वार्तालाप (यूह. 13:17)।
(क) 14:12—14 विष्वास की प्रार्थना का चरित्र चित्रण निम्नलिखित है

(1) विष्वासियों से निकलता है
(2) यीषु के नाम से माँगते हैं।
(3) इच्छा रखेंगे कि पिता का महिमा हो।
(4) आज्ञाओं को मानने के द्वारा
(ख) विष्वासी की प्रार्थना का चरित्र चित्रण निम्नलिखित है
(1) यीषु में बना रहता है
(2) उसके वचन उनमें बना रहता है
(3) इच्छा रखेंगे कि पिता का महिमा हो।
(4) बहुत सा फल लाता है
(5) आज्ञाओ को मानने के द्वारा (आयत. 10)
(ग) विष्वासियों की प्रार्थना का चरित्र चित्रण निम्नलिखित है
(1) उनके चुनाव
(2) उनका फल लगना
(3) यीषु के नाम से माँगता है।
(4) एक दूसरे से प्रेम करने के वायदा को पूरा करने के द्वारा
(घ) विष्वासियों की प्रार्थना का चरित्र चित्रण निम्नलिखित है
(1) यीषु के नाम से माँगता है।
(2) इच्छा है कि आनन्द पूरा हो जाए।

3. 1यूहन्ना
(क) 3:22–24 में विष्वासियों का प्रार्थना का चरित्र चित्रण निम्नलिखित है ।
(1) आज्ञाओ को मानने के द्वारा
(2) सही जीवन के द्वारा
(3) यीषु में विष्वास करने के द्वारा
(4) परस्पर प्रेम करने के द्वारा
(5) उसमें बने रहना और वह हम में
(6) पवित्रात्मा के वरदानों के द्वारा
(ख) 5:14–16 विष्वासियों की प्रार्थना का चरित्र चित्रण निम्नलिखित है
(1) परमेष्वर मे हियाब
(2) उसकी इच्छानुसार
(3)विष्वासी एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते है

ग. याकूब

1.1:5–7 विष्वासियों को कई तरह की परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है, उनसे कहा गया कि वे बिना संदेह से बुद्धि के लिए प्रार्थना करें।
2. 4:2–3 सही उद्धेष्य के साथ विष्वासियों को माँगना चाहिए।
3. जो षारीरिक समस्या का सामना कर रहे हैं उनसे कहा गया कि
(क) प्राचीनों से प्रार्थना करवाए
(ख) विष्वास की प्रार्थना बचाएगी
(ग) पाप क्षमा माँगे
(घ) परस्पर पापों की क्षमा माँगते हुए प्रार्थना करें (1यूह. 5:16 के समान)।

प्रभावषाली प्रार्थना की कुंजी है मसीह समानता।यीषु के नाम से प्रार्थना करने का तात्पर्य यह है। सबसे बुरा

काम परमेष्वर कर सकते है वह है स्वार्थ से भरी प्रार्थना का उत्तर देना! दूसरे षब्दों में कहे तो हर प्रार्थना का उत्तर मिलता है। प्रार्थना का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है परमेष्वर के साथ समय बिताना, उस पर भरोसा करते हुए।

'' क्योंकि हम उस की आज्ञाओं को मानते हैं;
और जो उसे भाता है वही करते हैं। ''

प्रार्थना के उत्तर के लिए दो माँग हैः
1. आज्ञाकारिता
2. जो बातें परमेष्वर के लिए भावती हैं उसे करना (यमह.8:29)। 1यूहन्ना प्रभावषाली मसीही जीवन और सेवकोई का मार्ग निर्देषिका है।

3:23—24

23. और उस की आज्ञा यह है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और जैसा उस ने हमें आज्ञा दी है उसी के अनुसार आपस में प्रेम रखें।
24. और जो उस की आज्ञाओं को मानता है, वह इस में, और यह उस में बना रहता हैः और इसी से, अर्थात् उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है, हम जानते हैं, कि वह हम में बना रहता है।।

3:23

'' उस की आज्ञा यह है ''

दो पहलू के साथ यहाँ ''आज्ञा'' एकवचन है। पहला पहलू है व्यक्तिगत विष्वास (यूह. 6:29,40)। दूसरा पहलू है नैतिक (3:11; 4:7)। सुसमाचार एक संदेष है जिस पर विष्वास करना है, व्यक्ति है जिसे ग्रहण करना है और जीवनषैली है जिसके अनुसार चलना है।

'' कि हम उसके पुत्र
यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें ''

बाइबलीय विष्वास को समझने में विष्वास का सामान्य विचार प्रमुख है। पुराने नियम के षब्द अमन का अर्थ है ''बफेदारी'', ''भरोसा'', ''निर्भरता'', ''विष्वासयोग्यता''। यूनानी षब्द पिस्टिइयो का अनुवाद तीन षब्दों में किया गया हैः प्रीति, विष्वास, भरोसा। यह षब्द जितना परमेष्वर के लिए सही है उतना मसीहियों के जीवन में नहीं है। यह उसका चरित्र, प्रकाषन और वायदा अटल नीव की स्थापना करते है।
नाम पर विष्वास करना या नाम से प्रार्थना करने का तात्पर्य है कि नाम एक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है
1. यीषु — मत्ती. 1:21,23,25; 2:22; 10:22; 12:21; 18:5,20; 19:29; 24:5,9; यूह. 1:12; 2:23; 3:18; 4:26; 15:21; 17:6; 20:31 ।
2. पिता — मत्ती. 6:9; 21:9; 23:29; यूह. 5:43; 10:25; 12:13; 17:12 ।

3. त्रीएकता – मत्ती. 28:19

<u>*3:24*</u>

<u>*" जो उस की आज्ञाओं को मानता है,*</u>
<u>*.... बना रहता है:"*</u>

ये दोनों वर्तमानकाल है। आज्ञाकारिता बने रहने से जुडी हुई है। प्रेम इस बात का सबूत है कि हम उसमें और वो हम में है (4:12, 15,16; यूह. 14:23; 15:10)। देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहना: 1यूह. 2:10।

<u>*" उस आत्मा से जो उस ने हमें दिया है "*</u>

यूहन्ना विष्वासियों का मूल्यांकन करने के लिए कुछ सबूत का प्रयोग करता है (रोमि. 4:13; 8:14–16)। दो बातें पवित्रात्मा से संबन्धित हैं: (1) यीषु को मान लेना (रोमि.10:9–13; 1कुरि. 12:3); और (2) मसीह के समान जीवन बिताना (यूह. 15; गला. 5:22; याकूब. 2:14–26)।

<u>*चर्चा के लिए प्रष्न*</u>

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. 3:11–24 में समरूप बनानेवाल विशय कौन–सा है ?
2. आयत 16 तथा 17 के बीच के संबन्ध को विवरण करें। प्राण देना जरूरतमन्द भाईयों की मदद से किस प्रकार जुड़े हैं ?
3. आयतें 19 तथा 20 परमेष्वार के न्याय की गम्भीरता को बताता है या परमेष्वर के तरस को, जो हमारे मनों को षान्त करता है, बताता है ?
4. आयत 22 में प्रार्थना के प्रति यूहन्ना के कथन को हम किस प्रकार अपने प्रतिदिन के जीवन में लागु कर सकते हैं ?
5. यूहन्ना का कथन मसीहियों का पाप मान लेना और पापरहित जीवन के साथ एक व्यक्ति किस प्रकार मेल कर सकता है ?
6. जीवनषैली के ऊपर यूहन्ना ने इताना जोर क्यों दिया है ?
7. नए जन्म मे षामिल धर्मषास्त्रीय सत्य को प्रगट करें।
8. यह किस प्रकार प्रतिदिन के मसीही जीवन के साथ जुड़ते हैं ?

1 यूहन्ना – 4

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
परमेष्वर की आत्मा और मसीह विरोधी की आत्मा	सत्य की आत्मा और झूठ की आत्मा	सत्य और झूठ की परख	सही और गलत आत्मा	मसीही विरोधी और संसार के विरोध में सुरक्षा का तीसरा

				कदम
	3:24—4:6			
4:1—6		4:1—6	4:1—3	4:1—6
			4:4—6	प्रेम और विष्वास का श्रोत (4:7—5:13)
परमेष्वर प्रेम हैं	प्रेम के द्वारा परमेष्वर को जानना	प्रेम की आषिशें	परमेष्वर प्रेम हैं	प्रेम का श्रोत
4:7—12	4:7—11	4:7—12	4:7—10	4:7—5:4
	प्रेम के द्वारा परमेष्वर को देखना		4:11—12	
	4:12—16			
4:13—16क		4:13—16क	4:13—16क	
4:16ख—21	प्रेम का पूर्णता	4:16ख—21	4:16ख—18	
	4:17—19			
	विष्वास से आज्ञाकारिता		4:19—21	
	4:20—5:5			

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 4:1 —21

क. यूहन्ना 4 जो कहता है कि हम परमेष्वर के ओर से बोलते है उनको परखने का सबसे अच्छा साहित्य है। यह अनुच्छेद निम्नलिखितों से संबन्धित हैः (1) झूठे भविश्यद्वक्ता जिसे मसीही विरोधी कहते हैं (2:18—25); (2) जो धोखा देने के प्रयास में है (2:26; 3:7); और जो दावा करता है कि उनके पास विषेश ज्ञान है (3:24)। प्रारम्भिक मसीहियों की भयानक स्थिति को समझना है तो एक को चाहिए कि वह उन दावा की गई बातों को जानें (1कूरि. 12:10; 14:26—33; 1 थिस्स. 5:20—21; 1यूह. 4:1—6)। आत्मिक परख उपदेष और समाजिक जीवन की परीक्षा के द्वारा ही होती है (याकूब. 3:1—12)।

ख. 1यूहन्ना की रूपरेखा बनाना कठीन है क्योंकि इस में पुनरावर्तित विशय हैं। पिछले अध्यायों में जो कुछ भी सिखाया गया है उसे दोहराया गया है, विषेशरूप से एक दूसरे से प्रेम करने के बारे में (4:7—21; 2:7—12; 3:11—24)।

ग. यूहन्ना झूठे षिक्षकों का विरोध करने ओर विष्वासियों को उत्साहित करने के लिए लिख रहा है। इसे वह कई प्रकार की परीक्षा/परख के द्वारा कर रहा हैः

1. उपदेषात्मक परीक्षा (यीषु में विष्वास, 2:18—25; 4:1—6, 14—16; 5:1,5,10)।
2. जीवनषैली की परीक्षा (आज्ञाकारिता, 2:3—7; 3:1—10, 22—24)।
3. समाजिक परीक्षा (2:7—11; 3:11—18; 4:7—12, 16—21; 5:1—2)

विभिन्न आयतें विभिन्न झूठे षिक्षकों को दर्षाती हैं। 1यूहन्ना नॉस्टिक झूठे षिक्षकों का विरोध कर रहा है। नए नियम के अन्य भागों में दूसरे असत्य को संबोधित कर रहा है (यूहन्ना. 1:13; रोमि. 10:9—13; 1कुरि. 12:3)। हर एक प्रसंग को ध्यान से पढ़कर देखना है कि यह कौन से विधर्म को संबोधित कर रहा हो। वहाँ झूठ कई श्रोत से आया है।
(क) यहूदी न्याय संगत
(ख) यूनानी दर्षन षास्त्री
(ग) जो एक विषेश प्रकाषन का दावा करता है।

<u>षब्द और वाक्यांष अध्ययन</u>

4:1 —6

1. हे प्रियों, हर एक आत्मा की प्रतीति न करोः बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं।
2. परमेश्वर का आत्मा तुम इसी रीति से पहचान सकते हो, कि जो कोई आत्मा मान लेती है, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है वह परमेश्वर की ओर से है।

3. और जो कोई आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है; जिस की चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आनेवाला हैः और अब भी जगत में है।
4. हे बालको, तुम परमेश्वर के होः और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।
5. वे संसार के हैं, इस कारण वे संसार की बातें बोलते हैं, और संसार उन की सुनता है।
6. हम परमेश्वर के हैंः जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है; जो परमेश्वर को नहीं जानता वह हमारी नही सुनता; इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचान लेते हैं।

4:1

'' प्रतीति न करोः''

यह एक नकारात्मक विभक्ति के साथ वर्तमानकाल का आदेष है जिसका अर्थ है जो काम प्रगति में है उसे रोको। दृढ़ व्यक्तित्व, बौद्धिक तर्क या चमत्कारी घटना को परमेष्वर की ओर से समझकर मसीही लोग स्वीकार करते थे। वास्तव में झूठे षिक्षक स्वयं को (1) परमेष्वर की ओर से कहते थे, या (2) परमेष्वर से विषेश दर्षन प्राप्त है कहते थे।

विषेश षीर्शक : क्या मसीहियों को एक दूसरे पर दोश लगाना चाहिए?

इस विशय पर दो तरह से चर्चा करना आवष्यक है। पहले तो मसीहियों को एक दूसरे दोश लगाने के लिए चेतावनी (मत्ती.7:1—5; लूका.6:37, 42; रोमियों.2:1—11; याक.4:11—12)। अगुवों को जाँचने के लिए चेतावनी (मत्ती.7:6, 15—16; 1कुरि.14:29; 1थिस्स.5:21; 1तीमु.3:1—13; 1यूह.4:1—6)।

सही जाँच के कुछ नियम जो सहायक होंगे

1) साबित करने के उद्देष्य से जाँच होनी चाहिए (1यूह.4:1 — ''परीक्षा'' जो स्वीकृति के दृश्टिकोण से हो)

2) जाँच नम्रता और कोमलता से की जानी चाहिए (गला.6:1)

3) जाँच व्यक्तिगत प्राथमिकताओं पर आधारित नहीं होनी चाहिए (रोमियों.14:1—23; 1कुरि.8:1—13; 10:23—33)

4) जाँच द्वारा उन अगुवों की पहचान होनी चाहिए जिन्होंने ''समालोचना का सामना न किया हो'' न तो कलीसिया से और न ही समाज से (1तीमु.3)।

'' हर एक आत्मा ''

व्यक्तियों के लिए आत्मा षब्द का प्रयोग हुआ है। यह परमेष्वर के एक अनकहे संदेष की ओर इषारा करता है। विधर्म कलीसिया के अन्तर से ही उत्पन्न हुआ है (2:19)। झूठे षिक्षक कहते थे कि वे परमेष्वर की ओर से कह

रहे हैं। यूहन्ना प्रमाणित करता है कि मनुश्य के काम और षब्दों के पीछे दो आत्मिक श्रोत है, परमेष्वर और षैतान।

" बरन आत्माओं को परखो, "

यह एक वर्तमानकाल का आदेष है। यह एक आत्मिक वरदान (1कुरि. 12:10; 14:29) और आवष्यकता भी है। यूनानी षब्द *डोकिमाज़ो* का अर्थ है ग्रहणयोग्यता के लिए परखना"। जब तक बुराई का पर्दाफाष नही होता उत्तम का विचार करते रहे (1कुरि. 13:4—7; 1थिस्स. 5:20)।

विषेश षीर्शकः "परख" का यूनानी षब्द तथा उनका संकेतार्थ ।

यूनानी में दो षब्द हैं जो किसी उद्‍देष्य से किसी की परीक्षा के विचार को प्रगट करते हैं।

1) *डोकिमाज़ो, डोकिमियोन, डोकिमासिया*

यह परीक्षा का धातुरूपक षब्द है जो धातु के वास्तविक होने की आग से जाँच के लिए प्रयोग में लाया जाता है। आग सच्चे धातु को प्रगट करती है कुडे को जलाने के द्वारा। यह षारीरिक प्रक्रिया परमेष्वर और मनुश्य द्वारा दूसरों की परीक्षा के लिए एक उत्तम मुहावरा बन गई। यह षब्द ग्रहण करने के लिए केवल सकारात्मक बातों के लिए प्रयोग की जाता है।

नए नियम में परीक्षा के लिए इसका प्रयोग किया गया है।

(क) बैल, लूका.14:19

(ख) अपने आप को, 1कुरि.11:28

(ग) हमारा विष्वास, याक.1:3

(घ) परमेष्वर को भी, इब्रा.3:9

इन परीक्षाओं का प्रतिफल सकारात्मक निकला (रोमियों.1:28; 14:22; 16:10; 2कुरि.10:18; 13:3; फिलि.2:27; 1पत.1:7)। इसलिए यह षब्द इस विचार को व्यक्त करता है कि किसी की परीक्षा हुई और वह निकाला :

(क) मूल्यवान

(ख) अच्छा

(ग) वास्तविक

(घ) कीमती

(ङ) आदरयोग्य

2) *पेइराज़ो, पेइरासोमाय*

इस षब्द का अर्थ है गलती निकालने और त्यागने के उद्‌देष्य से परीक्षा। इसका प्रयोग मरूभूमि में यीषु की परीक्षा के लिए किया गया है।

(क) यीषु मसीह को फंसाने के लिए (मत्ती.4:1; 16:1; 19:3; 22:18, 35; मरकुस.1:13; लूका.4:2; 10:25; इब्रा. 2:18)

(ख) (पेइराज़ो) षैतान के षीर्शक के रूप में प्रयोग किया गया (मत्ती.4:3; 1थिस्स.3:5)

(ग) परमेष्वर की परीक्षा (मिश्रित षब्द एकपेइराज़ो)मत करो, में यीषु द्वारा प्रयोग किया गया (मत्ती.4:7; लूका. 4:12, देखिए 1कुरि.10:9)

(घ) विष्वासियों की परीक्षाओं के सम्बन्ध में इसका प्रयोग किया गया है (1कुरि.7:5; 10:9, 13; गला.6:1; 1थिस्स. 3:5; इब्रा.2:18; याक.1:2, 13, 14; 1पत.4:12; 2पत.2:9)।

'' क्योंकि बहुत से
झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में
निकल खड़े हुए हैं।''

यह एक पूर्णकाल है (यिर्मा. 14:14; 23:21; 29:8; मत्ती. 7:15; 24:11,24; प्रेरित. 20:28–30; 2पत. 2:1; 1यूह. 2:18–19, 24;3:7; 2यूह. 7)। वे कलीसिया छोड़े परन्तु अभी भी वे कहते है कि वे परमेष्वर की ओर से बोलते हैं।

4:2

'' परमेश्वर का आत्मा
तुम इसी रीति से पहचान सकते हो,''

पवित्रात्मा हमेषा यीषु को प्रगट करता है (यूह. 14:26; 15:26; 16:13–15)। यह बात पौलूस के लेखों में भी देख सकते हैं (1कुरि. 12:3)।

'' जो कोई आत्मा मान लेती है,''

यह जारी रहनेवाले काम को बताता है न कि केवल भूतकाल के विष्वास का प्रमाण। यह 1यूहन्ना का पुनरावर्तित विशय है (यूह. 1:9; 2:23; 4:2–3; 4:15; यूह. 9:22; 2यूह. 7)। यह षब्द एक व्यक्ति का यीषु के सुसमाचार के प्रति विषेश, सार्वजनिक, षाब्दिक सर्मपण है। देखिए **विषेश षीर्शक** : यूह. 9:22 ।
यह विधर्म के विरोध में प्रारम्भिक कलीसिया की जीवन–मृत्यु का संघर्श है।

'' कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया है

वह परमेश्वर की ओर से है।''

यह झूठे षिक्षकों के प्रति आवष्यक उपदेषात्मक परख है। इसका मौलिक प्रमाण यह है कि यीषु संपूर्ण मनुश्य है (षारीरिक) तथा परमेष्वर भी है (1:1–4; 2यूह.7; यूह. 1:14; 1तिमु. 3:16)। यह पूर्णकाल वाक्य प्रगट करता है कि यीषु का मनुश्यत्व अस्थाई नही था पर स्थाई है।

4:3

'' मसीह के विरोधी की आत्मा ''

यहाँ के षब्द यीषु को तिरस्कार करनेवालों को दर्षाता है।

'' जिस की चर्चा तुम सुन चुके हो,
कि वह आनेवाला हैः
और अब भी जगत में है।''

यह एक पूर्ण वर्तमानकाल वाक्य है जो इस बात को प्रगट करता है कि यूहन्ना ने इस विशय का जिक्र पहले से कर चुके हैं और अब उस याद को ताजा किया गया। 2:18 कि जैसे यह आयत भी उस बात को साबित कर रही है कि झूठे षिक्षक आ चुके है और आएंगे भी। सदियों से झूठे षिक्षक एक ऐसी कड़ी बन्धन में है जिसकी षुरूवात उत्पत्ती. 3 में है और उनके पास झूठी जानकारी, जीवनषैली, पेषा है जो अन्त में मसीह विरोधी का भी मार्ग बनानेवाले होंगे।

4:4–6

''तुम ... वे ... हम''

इन सब सर्वनामों की विषेशता है। तीन प्रकार के झुण्ड को संबोधित करते हैः सच्चा विष्वासी (यूहन्ना तथा उनका पाठक,) झूठे विष्वासी (नॉस्टिक झूठे षिक्षक और उनका साथी), और यूहन्ना का मिष्नरी सेवा संघ। इसकी समानता हम इब्रा. 6तथा 10 में देख सकते हैं।

4:4

'' उन पर जय पाई है;''

यह उपदेषात्मक और जयवन्त मसीही जीवन की ओर इषारा करता है। यह कितना उत्साह भरा वाक्य है!
यीषु का ध्यान यह है कि एक मसीही पाप और षैतान के ऊपर विजय पाए। वह इस षब्द (निकाओ) का प्रयोग 6 बार इस पत्री में करता है (2:13,14; 4:4; 5:4,5), प्रकाषितवाक्य में 11 बार, और 1 बार सुसमाचार में प्रयोग किया है (16:33)।षब्द जय एक बार लूका में (11:22) और पौलूस का लेखों में दो बार है (रोमि.3:4; 12:21)।

'' क्योंकि जो तुम में है,

वह उस से जो संसार में है,
बड़ा है।''

यह अन्तरनिवास दैवीयता के प्रति एक बलपूर्वक कथन है। यहाँ पिता का अन्तरनिवास के बारे में है (यूह. 14:23; 2कुरि.6:16)। नया नियम अन्तर निवास के बारे में विषेश महत्व देता हैः (1) पुत्र का अन्तरनिवास (मत्ती. 28:20; कुलु. 1:27), और (2) पवित्रात्मा का अन्तरनिवास (रोमि. 8:9; 1युह.4:13)। पवित्रात्मा और पुत्र की पहचान करीब से की गई (रोमि. 8:9; 2कुरि. 3:17; गला. 4:6; फिलि. 1:19; 1 पत. 1:11)। देखिए **विषेश षीर्शक** : यूह. 14:15 ।
वाक्यांष '' जो संसार में है,'' षैतान और उसके अनुयीययों की ओर इषारा करता है (यूह. 12:31; 14:30; 16:11; 2कुरि. 4:4; अफि. 2:2; 1यूह. 5:19)। 1यूहन्ना में षब्द ''संसार'' का हमेषा नकारात्मक अर्थ ही होता है (अर्थत् परमेष्वर से अलग हटकर अपनी मर्जी से चलनेवाला एक मानवीय समाज)।

4:5

'' वे संसार के हैं,''

षब्द संसार परमेष्वर से अलग हटकर अपनी मर्जी से चलनेवाले एक मानवीय समाज की ओर इषारा करता है। यह पतित मानवजाती की स्वतंत्र आत्मा की ओर इषारा करता है। इसके लिए उदाहरण है कैन का जीवन (3:12)।

'' संसार उन की सुनता है।''

मसीही षिक्षक और झूठे षिक्षक के लिए एक ओर सबूत कि कौन किसकी सुनता है (यूह. 15:19; 1तिमु. 4:1)।

4:6

'' वह हमारी सुनता है ''

सच्चा विष्वासी लगातार प्रेरितों की षिक्षा को सुनेंगे तथा प्रत्युत्तर देंगे। विष्वासी प्रचारक का प्रचार और उनके सुननेवालों को देखकर सही प्रचारक को पहचान सकते हैं।

'' इसी प्रकार हम सत्य की आत्मा
और भ्रम की आत्मा को पहचान लेते हैं।''

यह षायद पवित्रात्मा (यूह. 14:17; 15:26; 16:13; 1यूह. 4:6; 5:7) तथा षैतान की ओर इषारा कर रहा है। विष्वासियों को चाहिए कि वे संदेष के श्रोत को पहचानें। अधिकतर बार ये दोनो परमेष्वर के नाम से ही दिया जाता है। एक यीषु और मसीहीसमानता को श्रेश्ठ बताता है तो दूसरा मानुशिक ज्ञान और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देता है।
नए नियम में आत्मा षब्द के प्रयोग के बारे में *सिनॉनिमस ऑफ ओल्ड टेस्टमेन्ट* में रॉबोंट गिरडेल्स्टॉन इस प्रकार कहते हैः
''1. दुश्ट आत्माएं
2. मनुश्य की आत्मा
3. पवित्रात्मा
4. मनुश्य की आत्मा के द्वारा आत्मा उत्पादन करनेवाली बातें
क. दासत्व का आत्मा बनाम लेपालक की आत्मा – रोमि. 8:15

ख. नम्रता की आत्मा – 1कुरि. 4:21
ग. विष्वास की आत्मा – 2कुरि. 4:13
घ. उसकी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा – इफि. 1:17
ङ. भय की आत्मा बनाम सामर्थ, प्रेम, अनुषासन की आत्मा – 2तिमु. 1:7
च. भ्रम की आत्मा बनाम सत्य की आत्मा – 1 यूह. 4:6'' (पृश्ठ. 61–63)।

4:7–14

7. हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है।
8. जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।
9. जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसे द्वारा जीवन पाएं।
10. प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा।
11. हे प्रियों, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।
12. परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; यदि हम आपस में प्रेम रखें, तो परमेश्वर हम में बना रहता है; और उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है।
13. इसी से हम जानते हैं, कि हम उस में बने रहते हैं, और वह हम में; क्योंकि उस ने अपने आत्मा में से हमें दिया है।
14. और हम ने देख भी लिया और गवाही देते हैं, कि पिता ने पुत्र को जगत का उद्धारकर्ता करके भेजा है।

4:7

'' हम आपस में प्रेम रखें;''

प्रतिदिन की जीवनषैली सारे विष्वासियों का एक आम चरित्र है (1कुरि. 13; गला. 5:22)। यह यूहन्ना का लेखों का पुनरावर्तित विशय और नैतिक परख का निचोड भी है (यूह. 13:34; 15:12, 17; 1यूह. 2:7–11; 3:11;23 2यूह. 5)।

'' क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है:''

प्रेम का श्रोत परमेष्वर ही है (4:16)। यह वेकारीक नही पर उद्धेष्यपूर्ण है (4:10; यूह. 3:16)।

'' और जो कोई प्रेम करता है,
वह परमेश्वर से जन्मा है;
और परमेश्वर को जानता है। ''

एक विष्वासी बनने के लिए यूहन्ना के द्वारा प्रयोगित षब्द षारीरिक जन्म से संबन्धित है (2:29; 3:9; 5:1; 4:18; यूह. 3:3,7,31; 19:11)। षब्द जानना इब्रानी समझ से प्रयोग किया है जिसका अर्थ है जारी रहनेवाला घनिश्ठ संबन्ध (उत. 4:1; यिर्मा. 1:5)। यह 1यूहन्ना का पुनरावर्तित विशय है जिसका प्रयोग 77बार इस पत्री में

<u>4:8</u>

*<u>'' जो प्रेम नहीं रखता,
वह परमेश्वर को नहीं जानता है,
क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।''</u>*

प्रेम की जीवल षैली इस बात के परखने का तरीका है कि हम पपरमेष्वर को जानते हैं कि नही।
यह यूहन्ना के गम्भीर कथनों में से एक है: ''परमेष्वर ज्योति है'' (1:5), और ''परमेष्वर आत्मा है'' (यूहन्ना 4:24) के साथ ''परमेष्वर प्रेम है'' मेलखाता है। परमेष्वर का प्रेम और क्रोध के विवरण के लिए व्यवस्था. 5:9 तुलना 5:10 और 7:9 के साथ कीजिए।

<u>4:9</u>

*<u>'' जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है,
वह इस से प्रगट हुआ,''</u>*

परमेष्वर ने अपने एकलौते पुत्र को हमारे बदले में मरने के लिए भेजने के द्वारा अपने प्रेम को स्पश्ट रूप से हमपर प्रगट किया है (यूह. 3:16; 2कुरि. 9:15; रोमि. 8:32)।प्रेम एक जज़्बा नहीं है पर एक कार्य है। विष्वासियों को प्रतिदिन के जीवन में इसे दर्षाना पडेगा। परमेष्वर को जानने का तात्पर्य है जैसे वो प्रेम करता है वैसे प्रेम करना।

*<u>'' परमेश्वर ने अपने
एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है,''</u>*

देहधारण और उसका नतीजा स्थिर है। परमेष्वर के सारी भलाई मसीह के द्वारा ही आती है।
षब्द ''एकलौता'' यूनानी में *मोनोजेनेस* है जिसका अर्थ है ''अनोखा''। कुंवारी से जन्म परमेष्वर और मरियम के लिए एक षारीरिक संबन्ध का काम नही था। यूहन्ना इस षब्द का प्रयोग कई बार करता है (यूह.1:14,18; 3:16,18; 1यूह. 4:9)। देखिए नोट : यूह. 3:16। एक अनोखी समझ में यीषु परमेष्वर की संतान है। प्राप्त की गई समझ से विष्वासी भी परमेष्वर की संतान है।

<u>''कि हम उसे द्वारा जीवन पाएं''</u>

इस के लिए विष्वास का होना अतिआवष्यक है। देहधारण का उद्धेष्य अनन्तजीवन और बहुतायत का जीवन था (यूह. 10:10)।

<u>4:10</u>

<u>''इस प्रेम में''</u>

परमेष्वर का प्रेम यीषु के जीवन और मृत्यु में स्पश्ट रूप से प्रदर्षित है (रोमि. 5:6,8)। यीषु को जानने का अर्थ है परमेष्वर को जानना।

<u>'' नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया;''</u>

नया नियम विष्व के धर्मों से अनोखा हैं। धर्मों में लोग परमेष्वर के खोज मे रहते है परन्तु मसीहत में परमेष्वर स्वयं पतित मानवजाती के खोज में है। अद्‌भुत सच्चाई यह है कि हमारे प्रेम नही वरन परमेष्वर का प्रेम हैं। हमारे पाप, विद्रोह, स्वयं और घमण्ड के बीच में भी वो हमें ढूंढ़ते है। मसीहत के महिमायुक्त सच्चाई है कि परमेष्वर पतित मानवजाती से प्रेम करते है और एक नया रिष्ते की षुरूवात करवाई और जीवन परीवर्तित करनेवाली संबन्ध को जारी रखा है।

'' हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा।''

देखिए नोटः2:2

4:11

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। परमेष्वर अवष्य प्रेम करते है (रोमि. 8:31)।

'' परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया,''

इसे उस तरीके से प्रेम किया करके समझना चाहिए।

'' तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए।''

उसने हमसे प्रेम किया इसलिए हमें भी परस्पर प्रेम करना चाहिए (2:6; 3:16; 4:1)। यह कथन झूठे षिक्षकों का गलत काम और विचार को प्रगट करता है।

4:12

'' परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा; ''

इस षब्द का अर्थ है ध्यान से किसी वस्तु या व्यक्ति को देखना (निर्ग. 33:20–23; यूह. 1:18; 5:37; 6:46; 1तिमु. 6:16)। हो सकता है कि झूठे षिक्षकों ने परमेष्वर को देखने की बात फैलाई हो। यीषु पिता को परिपूर्णरूप से प्रगट करने आए। उसे देखने के द्वारा हम परमेष्वर को जान सकते है।

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

'' परमेश्वर हम में बना रहता है ''

देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहनाः 1यूह. 2:10।

'' उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। ''

प्रेमी मसीह बने रहने का एक सबूत है (2:5; 4:17)।

4:13

'' उसका प्रेम हम में सिद्ध हो गया है। ''

पवित्रात्मा का अन्तरनिवास (3:24; रोमी. 8:9) और उसका परविर्तित करनेवाला प्रभाव निष्चयता का प्रमाण है। आयत 14 प्रेरित की गवाही है। आयत 13 और 14 में त्रीएकता के तीनों व्यक्तित्व प्रगट हैं। देखिए **विषेश षीर्शक** : 14:26 ।

4:14

'' हम ने देख भी लिया और गवाही देते हैं, ''

यह 1:1—3 का जैसे यीषु के बारे में यूहन्ना के प्रत्यक्षदर्षी गवही को बताता है। देखिए **विषेश षीर्शक** : यीषु के प्रति गवाही 1:8 ।

'' कि पिता ने पुत्र को भेजा है''

पिता परमेष्वर ने पुत्र को भेजा है (यूह. 3:16) यह बात नॉस्टिक झूठे षिक्षकों का आत्मा (अच्छा) और पदार्थ (बुरा) के बीच दोहरावाद को नकारते है। यीषु सच्च में परमेष्वर था और उसे इस पापी संसार का मोक्ष (रोमि. 8:18—25)के लिए भेजा गया, विषेशरूप से उत. 3 का स्राप से।

'' जगत का उद्धारकर्ता के रूप में''

पिता ने उद्धार के वाहन के रूप में यीषु को उपयोग किया यह बात नॉस्टिक झूठे षिक्षकों के एक गोपनीय ज्ञान प्राप्ती, जो स्वर्गदूतों के क्षेत्र से मिलता है, को नकारते है।
षब्दसमूह '' जगत का उद्धारकर्ता'' (1) देवताओं का षीर्शक, तथा (2) रोमी कैसर का आम पदवी था। मसीहियों के लिए इस षीर्शक के योग्य केवल यीषु ही था जो सताव के लिए एक वजह बनी।
वो सबका उद्धारकर्ता है यदि प्रत्युत्तर देंगे तो (यूह. 3:16; रोमि. 5:18)।

4:15—21

15. जो कोई यह मान लेता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र हैः परमेश्वर उस में बना रहता है, और वह परमेश्वर में।
16. और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम हैः जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है।
17. इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ, कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी है।
18. प्रेम में भय नहीं होता, बरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ।
19. हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया।
20. यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ; और अपने भाई से बैर रखे; तो वह झूठा हैः क्योंकि जो अपने भाई से, जिस उस ने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उस ने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता।
21. और उस से हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई अपने परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे।।

4:15

'' जो कोई यह मान लेता है,
कि यीशु परमेश्वर का पुत्र हैः''

''मानलेना'' के लिए देखिए नोट : 4:2 । एक सच्चे मसीही के प्रति यूहन्ना का तीन परखों में से एक है यीषु के व्यक्तित्व और काम की धर्मषास्त्रीय सच्चाई (2:22–23; 4:1–6; 5:1,5)। 1युहन्ना और याकूब प्रेम का जीवनषैली और आज्ञाकारिता में मेल खाते है। मसीहत एक व्यक्ति, सच्चाई का भण्डार, और जीवनषैली है।
षब्द ''जो कोई'' परमेष्वर की तरफ से सब को उसके पास आने का एक नेवता है। प्रत्येक मनुश्य परमेष्वर का स्वरूप में बनाया गया (उत. 1:26–27; 5:3; 9:6)। मानवजाती का उद्धार के बारे में उत. 3:15 में वायदा किया गया है। अब्राम का बुलाहट समस्त संसार तक पहुँचने की बुलाहट थी (उत. 12:3; निर्ग. 19:5)। यीषु के मृत्यु ने पाप की समस्या का प्रबन्ध किया (यूह. 3:16)। हर कोई उद्धार पा सकता है यदि वे मनफिराव, विष्वास, आज्ञाकारिता, सेवा और सहनषीलता के वाचा की बातों पर बने रहे तो। सब के लिए परमेष्वर का वचन है ''आओ'' (यष. 55)।

'' परमेश्वर उस में बना रहता है,
और वह परमेश्वर में।''

यह मनुश्य के साथ परमेष्वर की वाचा के ढाँचे को प्रगट करता है। परमेष्वर हमेषा षरूवात करता है परन्तु मनुश्य की जिम्मेवारी है कि प्रत्युत्तर दे और देता रहे।
बने रहने में एक वाचा की माँग करता है और यह एक अदभुत् वायदा भी है। कल्पना करे कि विष्व का सृश्टिकर्ता, इस्राएल का पवित्र, पतित मानवजाती मे वास कर रहा है (यूह. 14:23)। देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहनाः 1यूह. 2:10।

4:16

'' उस को हम जान गए,
और हमें उस की प्रतीति है;''

मसीह में परमेष्वर का प्रेम परमेष्वर के साथ उनका रिष्ते का आधार है।

'' जो परमेश्वर हम से रखता है ''

यह परमेष्वर का निरन्तर प्रेम को दर्षाता है।

'' परमेश्वर प्रेम है;''

इस प्रमुख सच्चाई को दोहराया गया है (4:8)।

4:17

'' इसी से प्रेम सिद्ध हुआ,''

यह यूनानी षब्द *टीलोस* (4:12) है। इसका अर्थ है परीपवूर्णता, प्रौढ़ता, संपूर्णता, न कि पाप रहित जीवन।

'' हम में ''

यह विभक्ति प्रत्य यूनानी में *मेटा* है जिसे ''हमारे बीच में'', ''हमारे साथ'' में अनुवाद कर सकते है।

''हमें हियाव हो; ''

वास्तव में इस षब्द का अर्थ है बोलने की आज़ादी। यूहन्ना इसे कई बार प्रयोग करता है (2:28; 3:21; 5:14)। यह पवित्र परमेष्वर के पास जाने के लिए हमारे हियाब को दिखाते है (इब्रा. 3:6; 10:35)।

''न्याय के दिन;
क्योंकि जैसा वह है,
वैसे ही संसार में हम भी है।''

मसीहियों को जैसे यीषु ने प्रेम किया वैसे प्रेम करना है (3:16; 4:11)। जैसे यीषु को सताया और तिरस्कार किया वैसे उन्हें भी करेंगे, परन्तु वे भी यीषु के समान पिता के प्रेम और आत्मा सहायता से स्थिर रहेंगे। एक दिन प्रत्येक मानव को जीवन के इस तोहफे के लिए परमेष्वर के सम्मुख में लेखा देना होगाा। जो मसीह में है उन्हें न्याय के दिन के बारे में घबराने की अवष्यकता नही है।

4:18

'' प्रेम में भय नहीं होता,''

जब हम परमेष्वर को पिता के रूप में जाना है तब हमें न्यायी के रूप में उन से डरने की आवष्यकता नही है। कईयों को मसीही बनने के पीछे के कारण न्याय, दण्डादेष या नरक के प्रति डर है। हलॉकि एक अदभत् बात छुटकारा प्राप्त लोगों के जीवन में होता हैः जिसका आरम्भ डर से होता है उसका अन्त बिना डर का है!

'' क्योंकि भय से कष्ट होता है,''

यह बहुत कम प्रयोग किया गया षब्द है , केवल यहाँ और मत्ती. 25:46 में पाते है। वर्तमानकाल क्रिया परमेष्वर का क्रोध का भय अस्थाई ओर अन्तिम समय का भी है। मनुश्य परमेष्वर के स्वरूप में सिरजा गया (उत. 1:26–27) जिसमें व्यक्तित्व, ज्ञान, चुनाव और नतीजे षामिल हैं। यह एक नैतिक संसार है।

4:19

''हम प्रेम करते हैं,
इसलिए कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया''

यह आयत 10 का पुनरावर्तित बात की विषेशता को महत्व देता है। परमेष्वर हमेषा षुरूवात करते है (यूह. 6:44,65) परन्तु पतित मानवजाती को चाहिए कि वे प्रत्युतर दें (यूह. 1:12; 3:16)। विष्वासी उसके भरोसे पर भरोसा करता अेर उसकी विष्वासयोग्यता पर विष्वास करता है। त्रीएक परमेष्वर का प्रेमी, विष्वसयोग्य और कार्यषील चरित्र ही छुडाए हुओं की आषा और निष्चयता है।

4:20

''यदि कोई कहे,''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। यह यूहन्ना के द्वारा झूठे षिक्षकों से उद्घृत किया कथनों से एक है। (1:6,8,10; 2:4,6)।

'' मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ;
और अपने भाई से बैर रखे;''

हमारी प्रेम का जीवनषैली प्रगट करता है कि हम मसीही है कि नही। टकराव तो होता है परन्तु वैर नही। देखिए **विषेश षीर्शक** : जातीवाद : यूह. 4:4 ।

'' वह झूठा हैः ''

यूहन्ना कई संभावित विष्वासियों को झूठा कहता है (2:4,22; 4:20)। यूहन्ना यह भी कह रहा है कि जो झूठ को सच्चाई के रूप में प्रचार करते है वे परमेष्वर को भी झूठा ठहराते है (1:6; 10; 5:10)।

4:21

यह आयत इस अध्याय का निचोड़ है। प्रेम एक सच्चे विष्वासी के सबूत है जिसकी कोई नकल नही कर सकता है। वैर षैतान की संतान होने का सबूत है। झूठे षिक्षक भेडों का विभाजन कर रहे थे और संघर्श पैदा कर रहे थे।

''भाई''

यहाँ षब्द भाई अस्पश्ट है। इसका अर्थ सह विष्वासी हो सकता है। यूहन्ना विष्वासियों के लिए इस षब्द को बार बार प्रयोग करता है।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. सही मसीहत के तीन परख की सूची बनाए ।
2. कैसे एक व्यक्ति के बारे में कह सकते है कि वह वास्तव में परमेष्वर की ओर से कह रहा है ?
3. सत्य के दो श्रोत के बारे में कहे।
4. षीर्शक ''जगत का उद्धारकर्ता'' की विषेशता क्या है ?
5. झूठे को साबित करनेवाले कार्यों की सूची बनाए।

1यूहन्ना – 5

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
विष्वास संसार के ऊपर जयवन्त	विष्वास से आज्ञाकारिता	जयवन्त विष्वास	संसार के ऊपर हमारी विजय	
	4:20—5:5			
5:1—5		5:1—5	5:1—5	विष्वास का श्रोत
पुत्र के बारे में गवाही	परमेष्वर की गवाही की निष्चयता		यीषु मसीह के बारे में गवाही	5:5—13
5:6—12	5:6—13	5:6—12	5:6—12	
अनन्तजीवन का ज्ञान		उपसंहार	अनन्तजीवन	
5:13—15	प्रार्थना में निष्चय और तरस	5:13	5:13—15	पापियों के लिए प्रार्थना
	5:14—17	5:14—17		5:14—17
5:16—17	सत्य को जानना और झूठ को ठुकराना		5:16—17	पत्री का सारांष
5:18—21	5:18—21	5:18—20	5:18	5:18—21
			5:19	
			5:20	
		5:21	5:21	

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

<u>षब्द और वाक्यांष अध्ययन</u>

5:1—4

1. जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न करनेवाले से प्रेम रखता है, वह उस से भी प्रेम रखता है, जो उस से उत्पन्न हुआ है।
2. जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उस की आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं।
3. और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उस की आज्ञाओं को मानें; और उस की आज्ञाएं कठिन नहीं।
4. क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है, और वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है।

<u>*5:1*</u>

<u>*'' जो कोई'' (दो बार)*</u>

1यूहन्ना में षब्द *पास* का प्रयोग है (2:29; 3:3,4,6 दो बार, 9,10; 4:7; 5:1)। कोई भी यूहन्ना की धर्मषास्त्रीय बातों से बच नही सकता है। यह परमेष्वर की तरफ से एक विष्वस्तरीय निमंत्रण है (यूह. 1:12; 3:16; 1तिमु. 2:4; 2पत. 3:9)। यह पौलूस के आमन्त्रण के समान है जो रोमि. 10:9—13 में उल्लेखित है।

<u>*'' विश्वास ''*</u>

इसे ''भरोसा'', विष्वास'' और प्रतीति'' में अनुवाद कर सकते हैं। 1यूहन्ना और पास्तरीय पत्रियों में इसे उपदेषात्मक विशय से कहा गया है (यहूदा.3,20)। पौलूस का लेख और सुसमाचारों में इसे व्यक्तिगत भरोसे और संपूर्ण के लिए प्रयोग किया है। सुसमाचार विष्वास करने की एक सच्चाई और ग्रहण करने का एक व्यक्ति है, तथा 1 यूहन्ना और याकूब ने इसे स्पश्ट किया है कि यह एक प्रेम का जीवन और सेवा है जिसमें जीना है।

'' कि यीशु ही मसीह है,''

झूठे षिक्षकों की षिक्षा यीषु जो मनुश्य है उसके इर्द–गिर्द घूमती है जो संपूर्ण दैवीय भी था (5:5)।

''परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है''

यह एक कार्य की संपूर्णता को दर्षाता है जो एक बाहरी अभिकर्ता (परमेष्वर) के द्वारा पूरा किया गया।

एन ए एस बी, ''जो उस से उत्पन्न हुआ है प्रेम करता है''
एन के जे वी ''जो उस से उत्पन्न हुआ है उसे प्रेम करता है''
***एन आर एस वी* ''माता पिता प्रेम करते है तथा बच्चे भी''**
***टी इ वी* ''पिता से प्रेम करता और बच्चे से भी''**
***एन जे बी* ''पिता से प्रेम करता और पुत्र से भी''**

(1) एकवचन, (2) अनिषचित भूतकाल, और (3) झूठे षिक्षको द्वारा यीषु को धर्मषास्त्रीय रूप से पिता से अलग करने के प्रयास के कारण यह षब्दसमूह प्रेमी यीषु की ओर संकेत कर रहा है। हलॉकि यह मसीहियों के परस्पर प्रेम के विशय में भी हो सकता है।

5:2

यह आयत 3 के साथ 1यूहन्ना एक मुख्य विशय को दोहराता है। प्रेम,परमेष्वर का प्रेम जारी रहनेवाला एक प्रेम (2:7–11; 4:7–21) और आज्ञाकारिता (2:3–6) के द्वारा प्रदर्षित किया गया। एक सच्चे विष्वासी के सबूत पर ध्यान कीजिए: (1) परमेष्वर से प्रेम करता है; (2) परमेष्वर के पुत्र से प्रेम करता है (5:1); (3) परमेष्वर की सन्तानों से प्रेम करता है (5:2); (4) आज्ञा पालन (5:2,3); और (5) जय पाते है (5:4–5)।

'' और परमेश्वर का प्रेम यह है,''

प्रेम एक भावुकता की बात नहीं है, परन्तु परमेष्वर और हमारे कार्यों पर आधारित है। आज्ञाकारिता गम्भीर बात है (यूह. 14:15,21,23; 15:10; 2यमह. 6)।

'' उस की आज्ञाएं कठिन नहीं। ''

नई वाचा में जिम्मावरी ज़रूर है (मत्ती. 11:29–30 जहाँ रबियों ने जुआ का प्रयोग किया है)। वह परमेष्वर के साथ हमारे रिष्ते को रोक देता है, हमारे रिष्ते के आधर परमेष्वर का अनुग्रह है न कि मनुश्य के किसी काम या योग्यता से (इफि. 2:8,9,10)। यीषु के मार्ग निर्देषन झूठे षिक्षको से काफी अलग है।

<u>5:4</u>

एन ए एस बी, एन के जे वी , एन आर एस वी '' जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है,''
टी इ वी , एन जे बी **''परमेष्वर की संतान बन गए है।''**

जो कोई परमेष्वर की ओर से जन्मा है वे संसार को जीत लेगा।

'' वह संसार पर जय प्राप्त करता है,''

यीषु इस संसार को हरा चुके है (16:33)। विष्वास से यीषु के साथ एकता में है वे इस संसार पर विजय प्राप्त करेंगे। षब्द संसार परमेष्वर से अलग हटकर अपने मर्जी से चलनेवाले एक मानवीय समाज की ओर इषारा करते है (उ.त. 3)।

''जय पाना''

विष्वासी जय पाया हुआ है और यीषु के द्वारा जय पाते रहेंगे।

'' हमारा विश्वास ''

यूहन्ना के लेखों में केवल यहाँ विष्वास की (पिस्टीस्) संज्ञा का प्रयेग है। षायद यूहन्ना सही धर्मषास्त्र और प्रतिदिन का मसीह समानता के ऊपर अधिक महत्व देने से चिंतित थे। हमारा विष्वास विजय लाता है क्योंकि (1) यह यीषु के विजय से संबन्धित है; (2) यह परमेष्वर के साथ हमारे नए रिष्ते से संबन्धित है; और (3) यह पवित्रात्मा के अन्तरनिवास का सामर्थ से संबन्धित है।

5:5—12

5. संसार पर जय पानेवाला कौन है? केवल वह जिस का विश्वास है, कि यीशु, परमेश्वर का पुत्र है।
6. यही है वह, जो पानी और लहू के द्वारा आया था; अर्थात् यीशु मसीहः वह न केवल पानी के द्वारा, बरन पानी और लहू दोनों के द्वारा आया था।
7. और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है।
8. और गवाही देनेवाले तीन हैं; आत्मा, और पानी, और लहू; और तीनों एक ही बात पर सम्मत हैं।
9. जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं, तो परमेश्वर की गवाही तो उस से बढ़कर है; और परमेश्वर की गवाही यह है, कि उस ने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है।
10. जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह अपने ही में गवाही रखता है; जिस ने परमेश्वर को प्रतीति नहीं की, उस ने उसे झूठा ठहराया; क्योंकि उस ने उस गवाही पर विश्वास नहीं किया, जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के विषय में दी है।
11. और वह गवाही यह है, कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया हैः और यह जीवन उसके पुत्र में है।
12. जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है।।

<u>*5:5*</u>

यह हमारे विष्वास की विशयवस्तु की परिभाशा देता है, जिसे आयत 4 में विवरण किया गया। हमारी विजय ही हमारा यीषु पर के विष्वास का एक सबूत है जो कि संपूर्ण मनुश्य और परमेष्वर है। विष्वासी साबित करता है कि (1) यीषु मसीह है (5:1), (2) परमेष्वर की संतान (5:1); (3) परमेष्वर का पुत्र (5:5); और (4) जीवन (1:2; 5:20)।

<u>*5:6*</u>

<u>*''यही है वह, जो ''*</u>

यह देहधारण और उसका बलिदान को महत्व दे रहा है , जिसे झूठे षिक्षकों ने नकारा है।

<u>*'' पानी और लहू ''*</u>

ऐसा लगता है कि पानी यीषु के भौतिक जन्म (यूह. 3:1—9) और लहू भौतिक मृत्यु की ओर इषारा करते है। नॉस्टिक झूठे षिक्षकों के द्वारा यीषु के मनुश्यत्व का तिरस्कार किए जाने पर ये दोनो बात उसके मनुश्यत्व को प्रगट करती है।
अगला विकलप नॉस्टिक झूठे षिक्षकों से संबन्धित है कि पानी यीषु के बपतिस्मा को दर्षाता है। उनका कहना कि बपतिस्मा के समय पर यीषु के ऊपर मसीह का आत्मा उतर आई और क्रूस के मृत्यु (लहू) से पहले मसीह की आत्मा उन्हें छोडकर चली गई।

<u>*'' जो गवाही देता है,*</u>
<u>*वह आत्मा है; ''*</u>

पवित्रााात्मा की भूमिका है कि सुसमाचार को प्रगट करें। त्रीएकता के अन्दर वो है जो एक व्यक्ति को पाप के बारे में निरूत्तर करता, मसीह की और अगुवाई करता और विष्वासी के अन्दर मसीह को उत्पन्न करता (युह. 16:7—15) हैं।

<u>*''आत्मा सत्य है''*</u>

(यूह. 14:17; 15:26; 16:13; 1यूह. 4:6)।

<u>*5:7*</u>

अंग्रेज़ी अनुवादों में आयतें 6,7, और 8 का आरम्भ और अन्त के बारें में असमंजिस है। कुछ कहतें है यह आयत वास्तव में असली के भाग नही है।

इस आयत को नकारने से अद्वैत परमेष्वर, परन्तु तीन व्यक्तित्व प्रगटीकरण (पिता. पुत्र और पवित्रात्मा) का बाइबलीय सिद्धान्त में कोई हानी नहीं पहुँच रही है। हलॉकि यह सही है कि बाइबल ने कभी भी षब्द त्रीएक का प्रयोग नही किया, परन्तु कई बाइबल भाग में तीनों व्यक्तित्व का कार्य प्रगट है:

1. यीषु के बपतिस्मा के समय पर (मत्ती. 3:16–17)
2. महान आदेष में (मत्ती. 28:19)
3. पवित्रात्मा भेजा गया (यूह. 14:26)
4. पतरस का पेन्तकुस्त का प्रचार (प्रेरित. 2:33–34)
5. आत्मा और षरीर के बारे में पौलूस की चर्चा (रोमि. 8:7–10)
6. आत्मिक वरदानों के बारे में पॉलूस की चर्चा (1कुरि. 12:4–6)
7. पौलूस की यात्रा योजनाएं (2कुरि. 1:21–22)
8. पौलूस की आषिर्वाद में (2कुरि. 13:14)
9. समय का परिपूर्णता के बारे में पौलूस की चर्चा (गला. 4:4–6)
10. पिता के प्रति पौलूस की प्रार्थना (इफि.1:3–14)
11. अन्यतजाती लोगों के अलगाव के बारे में पौलूस की चर्चा (इफि. 2:18)
12. परमेष्वर की एकता के बारे में पौलूस की चर्चा (इफि. 4:4–6)
13. परमेष्वर की दया के बारे में पौलूस की चर्चा (तीतुस. 3:4–6)
14. पतरस की प्रस्तावना (1पत. 1:2)

देखिए **विषेश षीर्शक** : त्रीएकता. यूह. 14: 26 ।

5:8

'' आत्मा, और पानी, और लहू;
और तीनों एक ही बात पर सम्मत हैं।''

पुराने नियम में किसी बात की प्रमाणीकता के लिए दो या तीन गवाह होना आवष्यक था (व्यवस्था. 17:6; 19:15)। यहाँ यीषु के जीवन की ऐतिहासिक घटनाएं यीषु की संपूर्ण मानवीयता और दैवीयता के लिए एक गवाही थी। इस आयत में फिर से पानी और लहू का जिक्र आत्मा के साथ किया गया है। षायद यीषु के बपतिस्मा के समय पर आत्मा का कबूतर की नाई उतर आने की ओर संकेत करता है। ऐतिहासिक संकेत के विशय में टिप्पणीकर्ताओं के बीच में असहमती है कि यह किस घटना की ओर दर्षाता है (उसका जन्म, बपतिस्मा, या मृत्यु)। यह झुठे षिक्षकों का यीषु की सच्ची मानवीयता के तिरस्कार से संबन्धित है।

5:9

''यदि''

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। जिन कलीसियाओ के लिए यूहन्ना लिख रहा है वे असमंजिस में होगया, क्योंकि वे इन झूठे षिक्षकों के ही प्रचार सुने थे।

'' जब हम मनुष्यों की गवाही मान लेते हैं,
तो परमेश्वर की गवाही तो उस से बढ़कर है; ''

यह दैवीय गवाही, इस प्रसंग में, (1) पवित्रात्मा की गवाही और, (2) यीषु के भौमिक जीवन और मृत्यु के बारे में प्रिरितों की गवाही की ओर दर्षाता है।

'' परमेश्वर की गवाही यह है,
कि उस ने अपने पुत्र के विषय में गवाही दी है।''

यह यीषु के बपतिस्मा (मत्ती. 3:17) या उसके रूपान्तर (मत्ती. 17:5; यूह. 5:32,37; 8:18) के समय पर परमेष्वर के षाब्दिक प्रमाण को दर्षाता है। देखिए **विषेश षीर्शक** : यीषु के प्रति गवाही यूह. 1:8 ।

5:10

'' वह अपने ही में गवाही रखता है;''

इस वाक्यांष को दो तरीके से अनुवाद कर सकते हैं: (1) विष्वासी के अन्तर पवित्रात्मा की अन्दरूनी गवाही (रोत. 8:16), या (2) सुसमाचार की सच्चाई (प्रकाष. 6:10; 12:17; 19:10)। देखिए **विषेश षीर्शक** : यीषु के प्रति गवाही यूह. 1:8 ।

'' उस ने उसे झूठा ठहराया;''

जो कोई यीषु का तिरस्कार करता है वह परमेष्वर का भी तिरस्कार करता है (5:12) क्योंकि उसने परमेष्वर को झूठा ठहराया।

'' क्योंकि उस ने विश्वास नहीं किया,''

यह दोबारा न होनेवाली बात की ओर दर्षाता है।

5:11—12

'' परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है:''

यह एक भूतकाल का कार्य या संपूर्ण किए गए काम को दर्षाता हैं (यूह. 3:16)। अनन्तजीवन की परिभाशा यूह. 17:3 में दिया गया है। कुछ हद तक यह वचन यीषु की ओर इषारा कर रहे है (1:2; 5:20)। दूसरे षब्दों में यह परमेष्वर की तरफ से एक तोहफा है (2:25; 5:11; यूह. 10:28), इसे मसीह पर विष्वास करने के द्वारा प्राप्त होती है (5:13; यूह. 3:16)।पुत्र के ऊपर व्यक्तिगत विष्वास के बिना पिता के साथ एक व्यक्ति संगति रख नही सकता है।

5:13—15

13. मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।
14. और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो हमारी सुनता है।

15. और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है।

5:13

" कि तुम जानो,"

एक का उद्धार की निष्चयता 1 यूहन्ना का कुंजी विचार और कई बार दोहराया हुआ उद्धेष्य भी है। यह स्पश्ट है कि निष्चयता विष्वासियों के लिए एक विरासत है! यह भी स्पश्ट है कि प्रसंग के अनुसार वहाँ पर ऐसे भी सच्चे विष्वासी थे जिनके अन्दर कोई निष्चयता नही थी। यह यूह.20:31 के समान है।
1यूहन्ना के अन्तिम प्रसंग (5:13–20) में सात बातों का सूची दी हुई है जिन्हें विष्वासियों को जानना चाहिए। उनके सुसमाचर के प्रति ज्ञान उन्हें एक विष्वदर्षन का उपलब्ध कराता है और यह जब मसीह में व्यक्तिगत विष्वास के साथ जुड जाते है तो निष्चयता के लिए एक अच्छा नीव बन जाता है।

1. विष्वासियों के पास अनन्त जीवन है (5:13, ओइडा)
2. परमेष्वर विष्वासियों की प्रार्थना सुनते है (5:15, ओइडा)
3. परमेष्वर विष्वासियों क प्रार्थना का उत्तर देते है (5:15, आइडा)
4. विष्वासी परमेष्वर से जन्मा है (5:18, ओइडा)
5. विष्वासी परमेष्वर के हैं (5:19, ओइडा)
6. विष्वासी जानते है कि मसीह आ गए और उन्हें समझ दिया है (5:20, ओइडा)
7. विष्वासी जो सत्य है उसे जानते है – चाहे पिता हो या पुत्र हो (5:20, गिनस्को)।

***विषेश पीर्शक** : निष्चयता*

क. क्या मसीही जान सकते है उनका उद्धार हुआ है (5:13) ? 1यूहन्ना में तीन परख या सबूत हैः
1. सैद्धान्तिक (विष्वास) (5:1,5,10; 2:18–25; 4:1–6,14–16; 5:11–12)
2. जीवनषैली (आज्ञाकारिता) (5:2–3; 2:3–6; 3:1–10; 5:18)
3. सामाजिक (प्रेम) (5:2–3; 2:7–11; 3:11–18; 4:7–12,16–21)

ख. निष्चयता संस्था का एक मामला बन गया
1. जॉन कैलविन परमेष्वर के चुनाव के ऊपर अपनी निष्चयता रखता है। उसके माने तो हम हमारी जीवन के बारे में पक्का कुछ नही कह सकते है।
2. जॉन वेस्ली के माने तो हमारी निष्चयता धर्मपर आधारित है। उसने विष्वास किया कि जाना गया पाप के ऊपर एक व्यक्ति नियंत्रण पा सकता है।

3. रोमन कैथलिक के आधार पर सही कलीसिया की सदस्य होने के नाते निष्चयता मिल जाता है।
4. अधिकतर सुसमाचार यह विष्वास करते है निष्चयता बाइबल के वायदों पर आधारित है जो पवित्रात्मा के फलों से संबन्धित हैं।

ग. मुझे लगता है कि पतित मानवजाती की निष्चयता त्रीएक परमेष्वर के चरित्र से जुड़ी है

1. पिता परमेष्वर का प्रेम
(क) यूह. 3:16; 10:28,29
(ख) रोमि. 8:31—39
(ग) इफि. 2:5,8,9
(घ) फिलि. 1:6
(ङ) 1पत. 1:3—5
(च) 1यूह. 4:7—21

2. पुत्र परमेष्वर के कार्य
(क) हमारे बदले में मृत्यु
1) प्रेरित. 2:23
2) रोमि. 5:6—11
3) 2कुरि. 5:21
4) 1यूह. 2:2; 4:9—10
(ख) महायाजकीय प्रार्थना (यूह. 17:12)
(ग) जारी रहनेवाला मध्यस्थता
1) रोमि. 8:34
2) इब्रा. 7:25
3) 1यूह. 2:1

पवित्रात्मा परमेष्वर की सेवा कार्य
(क) बुलाना (यूह. 6:44,65)
(ख) मुहर लगााना
1) 2कुरि. 1:22; 5:5
2) इफि. 1:13,14; 4:3
(ग) प्रमाणीत करना
1) रोमि. 8:16—17
2) 1यूह. 5:7—13

घ. मनुश्य को परमेष्वर के वाचकीय तोहफा का प्रत्युत्तर देना है (प्रारम्भिक और निरन्तर)
1. विष्वासी पाप (मनफिराव) से यीषु (विष्वास) के द्वारा परमेष्वार की तरफ मुड़ जाए
क) मरकुस. 1:15
2) प्रेरित. 3:16,19; 20:21
2. मसीह में परमेष्वर के तोहफा को विष्वासी ग्रहण करें
क) यूह. 1:12; 3:16
ख) रोमि. 5:1;
ग) इफि. 2:5,8,9
3 विष्वासियों को विष्वास में बने रहना हैं

क) मरकुस. 13:13
ख) 1कुरि. 15:2
ग) गला. 6:9
घ) इब्रा. 3:14
ङ) 2पत. 1:10
च यहूदा. 20–21
छ) प्रकाष. 2:2–3,7,10,17,19,25,26; 3:5,10,11,21
4. विष्वासियों को तीन परख का सामना करना है
क) सैद्धान्तिक (5:1,5,10; 2:18–25; 4:1–6,14–16; 5:11–12)
ख) जीवनषैली (5:2–3; 2:3–6; 3:1–10; 5:18)
ग) सामाजिक (5:2–3; 2:7–11; 3:11–18; 4:7–12,16–21)

ङ निष्चयता कठीन है क्योंकि
1. कई बार विष्वासी कुछ अनुभवों को खोजते है जिसकी प्रतिज्ञा बाइबल में नही है।
2. कई बार विष्वासी सुसमाचर को पूरी तरह समझ नही पाते
3. कई बार विष्वासी स्वेच्छा से पाप में बने रहते है (1कुरि. 3:10–15; 9:27; 1तिमु. 1:19–20; 2तिमु. 4:10; 2पत. 1:8–11)
4. कुछ विषेश प्रकार के लोग कभी परमेष्वर के बिना षर्तीय प्रेम और स्वीकृती को नही अपना सकते है।
5. बाइबल में कई झूठे दावों का उदाहरण है (मत्ती. 13:3–23; 7:21–23; मरकुस. 4:14–20; 2पत. 2:19–20; 1यूह. 2:18–19)।

'' नाम पर विश्वास करो''

यह विष्वास में बने रहने की बात कहते है। यह पुरने नियम की षैली है नाम व्यक्ति को प्रगट करता है। देखिए **विषेश षीर्शक** : यूह. 2:23

5:14

'' हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है,''

यह पुनरावर्तित विशय है (2:28; 3:21; 4:17)। यह परमेष्वार के करब जाने का हियाब तथा स्वतंत्रता को दर्षाता है।

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

'' हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, ''

यूहन्ना का कथन परमेष्वर के सामने विनती करने का विष्वासी का हियाब को दिखाते हैं। प्रार्थना क्यों और किसलिए एक व्यक्ति सच्चा विष्वासी है या नही इस बात को प्रगट करता है। हम जानते है प्रार्थना हमारे इच्छाओं का पूरा करने का एक साधन नही है, परन्तु हमारे जीवन में परमेष्वर का इच्छाा जानने का एक मार्ग है (3:22; मत्ती. 6:10; मरकुस. 14:36)। देखिए **विषेश षीर्शक** : 2:17 । देखिए **विषेश षीर्शक : प्रार्थना, असीमित पर सीमितः 1यूह. 3:22।**

विषेश षीर्शक : मध्यस्थता प्रार्थना

क. भूमिका

1) प्रार्थना अति महत्वपूर्ण है यीषु के उदाहरण के कारण।

(क) व्यक्तिगत प्रार्थना, मरकुस.1:35; लूका.3:21; 6:12; 9:29; 22:29–46

(ख) मन्दिर का षुद्ध किया जाना, मत्ती.21:13; मरकुस.11:17; लूका.19:46

(ग) प्रार्थना का नमूना, मत्ती.6:5–13; लूका.11:2–4

2) प्रार्थना है हमारा मूर्त कार्य, व्यक्तिगत तौर पर हमारा विष्वास, ध्यान रखने वाले परमेष्वर जो उपस्थित हैं, तैयार और दूसरों की जगह पर और अपने लिए कार्य करने की योग्यता।

3) पौलुस ने अपने बच्चों की प्रार्थनाओं पर कार्य करने के लिए स्वयं को सीमित किया है (याक.4:2)।

4) प्रार्थना का मुख्य उद्देष्य है त्रिएक परमेष्वर के साथ संगति और समय बिताना।

5) प्रार्थना की सीमा है कुछ भी और कोई भी जिसमें विष्वासी की रूचि है। हम एक बार प्रार्थना कर सकते हैं, विष्वास करते हुए, या बार–बार विचार के रूप में या रूचि लौटने पर।

6) प्रार्थना में कई तत्व षामिल हैं

(क) त्रिएक परमेष्वर की स्तुति प्रषंसा

(ख) परमेष्वर की उपस्थिति, संगति और उपायों के लिए धन्यवाद देना

(ग) अपने भूतकालीन और वर्तमान पापी होने को स्वीकार करना

(घ) अपनी समझी गई आवष्यकताओं और इच्छाओं के लिए निवेदन

(ङ) मध्यस्थता जहाँ हम पिता के सामने दूसरों की आवष्यकताओं को रखते हैं

7) मध्यस्थता प्रार्थना एक रहस्य है। परमेष्वर उन लोगों से हमसे भी अधिक प्रेम करते हैं जिनके लिए हम प्रार्थना करते हैं, फिर भी हमारी प्रार्थनाएं परिवर्तन, प्रतिउत्तर, केवल हमारी ही नहीं पर उनकी भी आवष्यकता को प्रभावित करती हैं।

ख. बाइबलीय सामग्री

1) पुराना नियम

(क) मध्यस्थता प्रार्थना के कुछ उदाहरण

(1) इब्राहीम ने सदोम के लिए विनती की, उत्प.18:22 के बाद

(2) इस्राएल के लिए मूसा की प्रार्थनाएं

(१) निर्ग.5:22–23

(२) निर्ग.32:31 के बाद

(३) व्यव.5:5

(४) व्यव.9:18, 25 के बाद

(3) इस्राएल के लिए षमूएल की प्रार्थनाएं

(१) 1षमू.7:5–6, 8–9

(२) 1षमू.12:16–23

(३) 1षमू.15:11

(4) अपने बेटे के लिए दाऊद की प्रार्थना, 2षमू.12:16–18

(ख) परमेष्वर मध्यस्थता प्रार्थना करने वालों की खोज में हैं, यषा.59:16

(ग) जाना हुआ, बिना स्वीकार किए हुए पाप और पष्चाताप न करने वाला स्वभाव हमारी प्रार्थनाओं को प्रभावित करता है

(1) भ.सं.66:1

(2) नीति.28:9

(3) यषा.59:1–2; 64:7

2) नया नियम

(क) पुत्र और पवित्र आत्मा की मध्यस्थता प्रार्थना की सेवा

(1) यीषु

(१) रोमियों.8:34

(२) इब्रा.7:25

(३) 1यूह.2:1

(2) पवित्र आत्मा, रोमियों.8:26–27

(ख) पौलुस की मध्यस्थता प्रार्थना की सेवा

(1) यहूदियों के लिए प्रार्थना

(१) रोमियों.9:1 के बाद

(२) रोमियों.10:1

(2) कलीसियाओं के लिए प्रार्थना

(१) रोमियों.1:9

(२) इफि.1:16

(३) फिलि.1:3–4, 9

(४) कुलु.1:3, 9

(५) 1थिस्स.1:2–3

(६) 2थिस्स.1:11

(७) 2तीमु.1:3

(८) फिले.1:4

(3) पौलुस कलीसियाओं को अपने लिए प्रार्थना करने को कहते हैं

(१) रोमियों.15:30

(२) 2कुरि.1:11

(३) इफि.6:19

(४) कुलु.4:3

(५) 1थिस्स.5:25

(६) 2थिस्स.3:1

(ग) कलीसिया की मध्यस्थता प्रार्थना की सेवा

(1) एक–दूसरे के लिए प्रार्थना

(१) इफि.6:18

(२) 1तीमु.2:1

(३) याक.5:16

(2) विषेश समूहों के लिए प्रार्थना की अनुरोध

(१) हमारे षत्रुओं, मत्ती.5:44

(२) मसीही सेवकों, इब्रा.13:18

(३) अधिकारियों, 1तीमु.2:2

(४) रोगियों, याक.5:13–16

(५) पाप में लौटने वालों, 1यूह.5:16

(3) सभी मनुश्यों के लिए प्रार्थना, 1तीमु.2:1

ग. उत्तर मिली हुई तमाम प्रार्थनाओं में रूकावटें

1) मसीह और पवित्र आत्मा से हमारा सम्बन्ध

(क) उनमें बने रहो, यूह.15:7

(ख) उनके नाम में, यूह.14:13, 14; 15:16; 16:23–24

(ग) पवित्र आत्मा में, इफि.6:18; यहू.1:20

(घ) परमेष्वर की इच्छा के अनुसार, मत्ती.6:10; 1यूह.3:22; 5:14—15

2) उद्देष्य या कारण

(क) संदेह करने वाले नहीं, मत्ती.21:22; याक.1:6—7

(ख) नम्रता और पष्चाताप, लूका.18:9—14

(ग) बुरी इच्छा से माँगना, याक.4:3

(घ) स्वार्थ, याक.4:2—3

3) दूसरे पक्ष

(क) निरन्तर

(1) लूका.18:1—8

(2) कुलु.4:2

(3) याक.5:16

(ख) लगातार माँगते रहना

(1) मत्ती.7:7—8

(2) लूका.11:5—13

(3) याक.1:5

(ग) घर में फूट, 1पत.3:7

(घ) पाप से स्वतंत्र

(1) भ.सं.66:18

(2) नीति.28:9

(3) यषा.59:1—2

(4) यषा.64:7

घ. धर्मषास्त्रीय उपसंहार

1) क्या विषेश अधिकार है! क्या अवरसर है! क्या कर्तव्य और ज़िम्मेदारी है!

2) यीषु हमारे उदाहरण हैं। पवित्र आत्मा हमारी निर्देषिका है। पिता उत्सुकता से इन्तज़ार कर रहे हैं।

3) यह आपको, आपके परिवार, आपके मित्रों और संसार को बदल सकता है।

5:15

"यदि"

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है।

"हम जानते है"

यह आयत 14 के समानता में हैं। यह विष्वासियों का निष्चय है कि परमेष्वर उनकी सुनता और प्रत्युत्तर देता है।

5:16—17

16. यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिस का फल मृत्यु न हो, तो बिनती करे, और परमेश्वर, उसे, उन के लिये, जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु न हो, जीवन देगा। जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु हैः इस के विषय में मै बिनती करने के लिये नहीं कहता।
17. सब प्रकार का अधर्म तो पाप है, परन्तु ऐसा पाप भी है, जिस का फल मृत्यु नहीं।।

5:16

"यदि"

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य। आयत 16 सह विष्वासियों के लिए हमारी प्रार्थना के महत्व को बताता है (गला. 6:1; याकूब. 5:13—18) कुछ सीमा के अन्दर रहते हूए (जो पाप मृत्यु की ओर ले जाती है उसके लिए नही), ऐसा करना झूठे षिक्षकों का षिक्षा लग रहे है (2पत. 2)।

" अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे,
जिस का फल मृत्यु न हो,"

यूहन्ना ने पाप का कई विभाग बनाया। इसे कुछ लोग एक व्यक्ति का (1) परमेष्वर के साथ संगति; (2) सह विष्वासियों के साथ संगति; और (3) संसार के साथ संगति से इसे जोडते है। सबसे बड़ा पाप है यीषु मसीह पर का विष्वास/भरोसा का तिरस्कार। यह है जो मृत्यु की ओर ले जानेवाला पाप।

विषेश पीर्शक *: क्या है वह पाप जिसका फल मृत्यु है ?*

क. व्याख्यान षास्त्र विचार

1. 1यूहन्ना के ऐतिहासिक ढ़ाँचा के सही पहचान होना आवष्यक है।
(क) कलीसिया में नॉस्टिक झूठे षिक्षकों का उपस्थिति (2:19,26; 3:7; 2यूह. 7)।
1) ''केरिन्तियन'' नॉस्टिकों ने सिखाया कि यीषु नामक मनुश्य को बपतिस्मा के समय पर मसीह का आत्मा मिली और क्रूस पर प्राण देने से पहले वह आत्मा उसे छोड़कर चला गया (5:6–8)।
2) डोसेटिक नॉस्टिकों ने सिखाया कि यीषु एक दैवीय प्राणी था और वास्तव में एक मनुश्य नही था (1:1–3)।
3) मनुश्य के षरीर के बारे में दूसरी षताब्दी के नॉस्टिकों का लेखों ने 2 भिन्न विचारधारा को पेष किया है।
क) उद्धार की सच्चाई को हृदय में प्रगट करने के कारण आत्मिक स्थान में षरीर की कोई विषेशता नही है। इसलिए जो कुछ षरीर चाहे वह कर सकता है
ख) षरीर बुराई से भरा हुआ होने के कारण (यूनानी विचार) षारीरिक अवष्यकताओं को नजरअंदाज कर देना चाहिए।

ख. ये झूठे षिक्षकों ने कलीसिया छोड़ तो दिया परन्तु उनका विचारधारा ने नही।

2. 1यूहन्ना के साहित्य संदर्भ की सही पहचान होना आवष्यक है।

क. झूठे षिक्षा का विरोध करने और विष्वासियों के मजबूत करने के लिए 1 यूहन्ना लिखा गया।
ख. ये दोनों उद्धेष्य सच्चा विष्वासियों के परख में देख सकते है।
(1) सैद्धान्तिक
क) यीषु वास्तव में मनुश्य था (1:1–3; 4:14)
ख) यीषु वासत्व में परमेष्वर था (1:2; 5:20)
ग) मनुश्य पापी है और एक पवित्र परमेष्वर को लेखा देना होगा (1:6,10)
घ) मनुश्य का क्षमा किया गया और परमेष्वर के साथ मेल कराया गया
1) यीषु के मृत्यु के द्वारा (1:7; 2:1,2; 3:16; 4:9,1014; 5:6–8)
2) यीषु में विष्वास करने के द्वारा (1:9; 3:23; 4:15; 5:1,4,510–12,13)
(2) प्रायोगिक (सकारात्मक)
क) आज्ञाकारिता की जीवनषैली (2:3–5; 3:22,24; 5:2–3)
ख) प्रेम का जीवनषैली (2:10; 3:11,14,18,23; 4:7,11,12,16–18,21)
ग) मसीहसमानता की जीवनषैली (पाप नही करता 1:7; 2:6,29; 3:6–9; 5:18)
घ) बुराई के ऊपर विजय की जीवनषैली (2:13,14; 4:4; 5:4)
ङ) उसके वचन उनमें वास करते है (1:10; 2:14)
च) उनके पास पवित्रात्मा है (3:24; 4:4–6,13)
छ) उत्तर प्राप्त प्रार्थना (5:14,15)
(3) प्रायोगिक (नकारात्मक)
क) पाप की जीवनषैली (3:8–10)
ख) वैर की जीवनषैली (2:9,11; 3:15; 4:20)
ग) अनाज्ञाकारिता की जीवनषैली (2:4; 3:4)
घ) संसार से प्रेम (2:15,16)
ङ) मसीह का तिरस्कार (पिता और पुत्र का तिरस्कार, 2:22,23; 4:2,3; 5:10–12)

3. 1यूहन्ना के विषेश बातों का प्रासंगिक अनुच्छेद के साथ संबन्ध की सही पहचान होना आवष्यक है।

क. क्या आयत 16 के षब्द ''भाई'' ऐसा पापियों से संबन्ध रखता है जिस पाप का फल मृत्यु नही यह उनसे संबन्ध रखता है जो मृत्यु के फल निकलनेवाला पाप करता है ?
ख. क्या ये विरोधी कभी कलीसिया की सदस्य रहे ?
ग. क्या है निम्नलिखित बातों की विषेशता
1) ''पाप'' विभक्ति के बिना
2) क्रिया ''देखा'' एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य और अनिषचित भूतकाल के समान
घ. पापी के व्यक्तिगत मनफिराव के बिना एक मसीही की प्रार्थना (याकूब.5:15,16) किस प्रकार उसे अनन्त जीवन में प्रवेष करा सकता है ?
ङ आयत 17 विभिन्न प्रकार के पाप से कैसे संबन्धित है (मृत्यु फल पाप, और जिसका फल मृत्यृ नही) ?

ख. धर्मषास्त्रीय समस्या
1. क्या एक अनुवादक इसे निम्नलिखित अनुच्छेदों के साथ जोड़ने का प्रयास कर सकता है
क. सुसमाचार में कहे गए ''क्षमा न मिलनेवाला'' पाप
ख. इब्रा. 6 और 10 का पाप
1यूहन्ना के संदर्भ यीषु के समय का फरीसियों के ''क्षमा न मिलनेवाला'' पाप (मत्ती. 12:22;37; मरकुस. 3:2;29) और इब्रा. 6 तथा 10 का अविष्वासी यहूदियों के समान लगता है । ये तीनों झुण्ड के लोगों ने (फरीसी, अविष्वासी यहूदी और नॉस्टिक झूठे षिक्षक) सुसमाचार को स्पश्टरूप से सुना पर उन्होंने यीषु मसीह पर विष्वास करने को नकारा।
2. इस अनुच्छेद की कसौटी आधुनिक संस्थाओं की विचारधारा होनी चाहिए ?
3. पाप जिसका फल मृत्यु है षारीरिक मृत्यु या अनन्त मृत्यु को दर्षाता है ? इस प्रसंग में यूहन्ना के ज़ोए का उपयोग अनन्त मृत्यु को दर्षाता है।

''परमेष्वर उसे जीवन देगा। ''

यहाँ पर एक धर्मषास्त्रीय समस्या है। यूहन्ना के लेखों में आम रीति से ज़ोए अनन्त जीवन को दर्षाता है, परन्तु इस प्रसंग में यह स्वास्थ की पुनःस्थापना या पाप क्षमा है।

5:17

हर पाप परमेष्वर के सम्मुख में गम्भीर है, परन्तु यीषु पर के विष्वास और मनफिरावच के द्वारा पापक्षमा प्राप्त कर सकते है सिवाय अविष्वास के।

5:18—20

18. हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह बचाए रखता हैः और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।

19. हम जानते हैं, कि हम परमेश्वर से हैं, और सारा संसार उस दुष्ट के वश में पड़ा है।
20. और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैंः सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

5:18

'' जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है,''

अनन्त जीवन में देखने लायक विषिश्टताएं है। झूठे षिक्षकों का हृदय उनका मृत जीवनषैली को प्रगट करता है।
यूहन्ना ने दो प्रकार के झूठे षिक्षकों के बारे में उल्लेखित करता है। एक है जो पाप को षामिल होने को नकारते है (1:8–2:1) दूसरा है पाप की भूमिका को षक्तिहीन बनाते है (3:4–10; 5:18)। पापों को प्राथमिक रूप से मानलेना और छोड़ देना अति आवष्यक है।पाप एक समस्या थी, समस्या है और समस्या रहेगी (5:21)।

''जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ,
उसे वह बचाए रखता है''

पहला क्रिया अनिषचित भूतकाल है जो एक अभिकर्ता (अर्थात् पवित्रात्मा, रोमि. 8:11) के द्वारा पूर्णकिया गया काम को बताता है। यह देहधारण की ओर इषारा करता है। दूसरा क्रिया वर्तमानकाल है यह यीषु मसीह के द्वारा विष्वासियों को दृढ़ रखने के कार्य को दर्षाता है।

एन ए एस बी, '' और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।''
एन के जे वी '' दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।''
एन आर एस वी '' वह दुष्ट उन्हें छूने नहीं पाता।''
टी इ वी ''वह दुष्ट उन्हें कोई हानी नहीं पहुँचाएगा''
एन जे बी **''उनके ऊपर उस दुश्ट का कोई अधिकार नही है।''**

यह एक वर्तमानकाल वाक्य है इसका अर्थ है दुश्ट अपने अधिकार को उस पर जारी नही रख नहीं सकते है। इस षब्द का ओर प्रयोग केवल यूह. 20:17 में पाते है। बाइबल और अनुभव से यह स्पश्ट है कि मसीहियों का प्रलोभन होता तो है। इस वाक्यांष के अर्थ के बारे में तीन सिद्धान्त प्रचलित हैः (1) विष्वासी व्यस्था का उलंघन पर आधारित दुश्ट का दोशारोपण से मुक्त है (दोशमुक्ति); (2) यीषु हमारे लिए प्रार्थना करते हैं (2:1; नूका. 22:32–33); और (3) षैतान हमारे उद्धार को हम से छीन नही सकते है (रोमि. 8:31–39), 5:16–17 के आधार पर षायद एक विष्वासी को जल्द इस संसार से निकाल सकते है।

5:19

'' हम जानते हैं,
कि हम परमेश्वर से हैं,''

यह एक विष्वासी का विष्वास प्रमाण हैं, मसीह में यह विष्व–दर्षन है (4:6)। बाकी सब बातें इस सच्चाई पर आधारित है (5:13)।

" सारा संसार
उस दुष्ट के वश में पड़ा है।"

(यूह. 12:31; 14:30; 16:11; 2कुरि. 4:4; इफि. 2:2; 6:12)। यह (1) आदम के पाप; (2) षैतान का विद्रोह; और (3) प्रत्येक व्यक्ति का पाप का चुनाव के कारण संभव हुआ है।

5:20

"परमेश्वर का पुत्र आ गया "

यह परमेष्वर के पुत्र का देहधारण को दर्षाता है। मनुश्य षरीर में दैवीयता नॉस्टिक झूठे षिक्षको के लिए एक बड़ी समस्या थीं क्योकि वे पदार्थ का बुराई को प्रमाणीत करते थे।

" उस ने हमें समझ दी है,"

दैवीयता के बारे यीषु ने न कि नॉस्टिक झूठे षिक्षकों ने अन्तरदृश्टि प्रदान किया है। यीषु ने अपने जीवन, षिक्षा, कार्य, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा पिता को पूरी तरह प्रगट किया है। वो परमेष्वर का जीवित वचन हैंः उसके बिना कोई भी पिता के पास नही आता (यूह. 14:6; 1यूह. 5:10–12)।

" हम उस में जो सत्य है,
अर्थात्
उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैंः
सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।"

पहला वाक्यांष " हम उस में जो सत्य है," पिता परमेष्वर को दर्षाता है (यूह. 17:3), परन्तु एक व्यक्ति के बारे में दूसरा वाक्यांष है " सच्चा परमेश्वर" यह किस के लिए कहा गया उसे पहचानना कठीन है। संदर्भ के अनुसार देखा जाए तो यह पिता को दर्षाता है, पर धर्मषास्त्रीय रूप से यह पुत्र के लिए संकेत है। **व्याकरणात्मक ढाँचा में अस्पश्टता जानबूझकर किया होगा। यूहन्ना के लेखों में जैसा आम रीति से प्रगट करता है वैसे पिता पुत्र में होंगे।** पिता और पुत्र का दैवीयता और सच्चाई में धर्मषास्त्रीय विचार की आावष्यकता है (यूह. 3:33; 7:28; 8:26)। नए नियम यीषु नासरी का परिपूर्ण दैवीयता को सही प्रमाणीत करती है (यूह. 1:1,18; 20:28; फिलि. 2:6; तीतुस. 2:13; इब्रा. 1:8)।

5:21
21. हे बालको, अपने आप को मुरतों से बचाए रखो।

5:21

एन ए एस बी, "अपने आप को मुरतों से बचाए रखो"
एन के जे वी, एन आर एस वी "अपने आप को मुरतों से दूर रखो"

टी इ वी " अपने आप को **झूठे देवताओं से दूर रखो**"
एन जे बी "**झूठे देवताओं से** अपने आप को **सुरक्षित रखो**"

यह एक अनिषचित भूतकाल आदेष है, एक महत्वपूर्ण सच्चाई। यह प्रत्येक मसीहियों का षुद्धिकरण के प्रति कार्यषील रहने को दर्षाता है (3:3), जिसकी मजा वे प्रभु में ले रहे है (इफि. 1:4; 1पत. 1:5)।
षब्द "मुरत" (यूहन्ना ने इस षब्द को दो बार प्रयोग किया है यहाँ और प्रकाष. 9:20), या तो झूठे षिक्षकों के षिक्षा या झूठे षिक्षकों की ओर इषारा करता है, मृत सागर चर्मलेखों के आधार पर पाप और मुरत दोनों पर्यायवाची षब्द है।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।
1. तीन परख के सूची बनाए जिसे यह पता लगता हैकि वे तसीह में है।
2. आयत 6 और 8 में पानी" और "लहू" का क्या तात्पर्य है
3. क्या हम जान सकते हैकि हम मसीही है ? क्या ऐसा भी मसीही हो सकता है जिन्हें मालूम ही नही ?
4. मृत्यू की ओर ले जानेवाला पाप क्या है ? क्या यह एक विष्वासी के द्वारा किया जाता है ?
5. हम प्रलोभन से अपने आप बच निमलते हे या परमेष्वर हमें बचाता है ?

2 यूहन्ना

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
अभिवादन	माननीय स्त्री का अभिवादन		परिचय	अभिवादन
आयतें. 1–3	आयतें 1–3	आयतें. 1–2	आयतें 1–3	आयतें. 1–3
		आयत. 3		
प्रेम और सत्य	मसीह की आज्ञा पर चलें		प्रेम और सत्य	प्रेम का नियम
आयतें. 4–11	आयतें. 4–6	आयतें. 4–6	आयतें. 4–6	आयतें. 4–5

				आयत. 6
	मसीह विरोधियों से सावधान			मसीह के षत्रु
	आयतें. 7—11	आयतें. 7—11	आयतें. 7—8	आयतें. 7—11
			आयतें. 9—11	
अन्तिम अनुवाद	यूहन्ना का विदाई भाशण		अन्तिम कथन	
आयतें. 12—13	आयतें. 12—13	आयत. 12	आयत. 12	आयत.12
		आयत. 13	आयत. 13	आयत. 13

लघु परीचय

2 यूहन्ना स्पश्ट रूप से 1यूहन्ना के संदेष और साहित्य रचना से संबन्धित है। ये दोनों की रचना एक ही लेख के द्वारा और एक ही समय में हुआ है। इसकी रचना प्रगट करती है कि यह पहला षताब्दी का लेख है एक ही पापीरस् पन्ना में ठीक बैठता है।
1यूहन्ना कई कलीसियाओं के लिए लिखा गया, 2 युहन्ना एक प्रादेषिक कलीसिया और उसकी अगुवे के लिए लिखा गया है।यह आसिया मैनर का पहला षताब्द के कलीसिया के लिए एक खिड़की है।

अध्ययन कालचक्र एक

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए और मुख्य विशय का रूपरेखा बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

1. पुस्तक का केन्द्रीय विशय

2. साहित्य का प्रकार

अध्ययन कालचक्र दो

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे थ्टप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पुनः पढ़िए और मुख्य विशय का रूपरेखा बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

1. पहले साहित्यिक इकोई विशय

2. दूसरे साहित्यिक इकोई विशय

3. तीसरे साहित्यिक इकोई विशय

4. चौथे साहित्यिक इकोई विशय

5. इत्यादि

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे थ्टप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

आयतें 1—3

1. मुझ प्राचीन की ओर से उस चुनी हुई श्रीमती और उसके लड़केबालों के नाम जिन से मैं उस सच्चाई के कारण सत्य प्रेम रखता हूँ, जो हम में स्थिर रहती है, और सर्वदा हमारे साथ अटल रहेगी।
2. और केवल मैं ही नहीं, बरन वह सब भी प्रेम रखते हैं, जो सच्चाई को जानते हैं।।
3. परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, और दया, और शान्ति, सत्य, और प्रेम सहित हमारे साथ रहेंगे।।

आयत. 1

''प्राचीन''

यह षीर्शक (प्रसबिटरॉस) 2 और 3 यूहन्ना के लेखक को पहचानने में सहायता करती हैं। इस षब्द का अर्थ बाइबल में काफी गहरा हैं

1. यह परमेष्वर के स्वर्गदूतो के लिए प्रयोग किया गया है (यषा. 24:23)। प्रकाषित वाक्य में स्वर्गदूतों के लिए यही षब्द का प्रयेग किया गया है (4:4,10; 5:5,6,8,11,14; 7:11,13; 11:16; 14:3; 19:4)।

2. इसे पुराने नियम के पुरनियों के लिए प्रयोग किया गया है (निर्ग. 3:16; गिन. 11:16)। बाद में इसे नए नियम के सनहिद्रन के लिए प्रयोग किया गया है (मत्ती. 21:23; 26:57)। यीषु के दिनों में इन 70 लोगों के परीशद को भ्रश्टाचारी याजकों के द्वारा चलाया जाता था।

3. प्रदेषिक कलीसिया की अगुवों केनिए प्रयोग किया गया है यह तीन पर्यायवाची षब्दों से एक था (पासबान, अध्यक्ष और प्राचीन– तीतुस. 1:5,7; प्रेरित. 20:17, 28)। पतरस और यूहन्ना स्वयं अगुवों के बीच में षामिल कराता था (1पत. 5:1; 2यूह.1; 3यूह.1)।

4. कलीसिया में बुजूर्गों के लिए प्रयोग किया गया, केवल नेतृत्व के लिए नही (1तिमु. 5:1; तीतु. 2:2)। यूहन्ना के लेखों में लेखक के बारे में विभिन्न तरीकों से सुचीत किया गयाः (1) सुसमाचार एक छिपा हुआ षब्द का प्रयोग करते है ''प्रिय षिश्य''। (2) पहला पत्रि अज्ञात है; (3) दूसरा और तीसरा पत्रियों में ''प्राचीन'' षीर्शक का प्रयोग है, और (4) प्रकाषित वाक्य में ''उसका दास यूहन्ना'' का प्रयोग है।
इन लेखों के लेखक के बारे में काफी वाद–विवाद है। कोई भी अब तक नतीजे पर नही पहुँचा है। वास्तव में इसका लेखक पवित्रात्मा है।

'' उस चुनी हुई श्रीमती और उसके लड़केबालों ''

इस षीर्शक के बारे में कई विवाद है। कईयों ने कहा कि यह एक इलक्ट्रा (यूनानी नाम) नामक एक वनिता के लिए लिखा गया है (सिकन्द्रिया का क्लेमन्द) या किरिया नामक वनिता के लिए लिखा गया है (अथानेनियुस)। मैं जेरोम के साथ सहमत हूँ कि यह एक कलीसिया के लिए थाः कारण निम्नलिखित है (1) कलीसिया षब्द यूनानी में स्त्रीलिंग है (आयत.1); (2) कलीसिया यीषु के दुल्हन है सो यह कलीसिया की ओर इषारा कर रहे होंगे (इफि. 5:25–32; प्रकाष. 19:7,8; 21:2); (3) इस कलीसिया के सदस्यों को बच्चे बुलाए गए है (आयत. 13); (4) इस कलीसिया का एक बहन है ऐसा लगता है कि यह दूसरा एक ओर प्रादेषिक कलीसिया की ओर इषारा करता है (आयत. 13); अस पत्री में एकवचन और बहुवचन के बीच में एक खेल सा है (एकवचन – आयतें 4,5,13; बहुवचन – आयतें 6,8,10,12); और (6) 1पतरस 5:13 में कलीसिया के लिए यही षब्द का प्रयोग किया गया है।

'' जिन से ''

यह चौकानेवाली बात है क्योंकि यह एक पुलिंग सर्वनाम है, जिसे एक स्त्रीलिंग (वनिता) या नपुंसक (बच्चे) के साथ मेल खाना है। मेरे ख्याल से यूहन्ना ने इसे कुछ विषेश उद्धेष्य से लिखा गया है।

''मैं प्रेम रखता हूँ''

सुसमाचार और प्रकाषित वाक्य में यूहन्ना फिलियो और अगरपाओ षब्दों को पर्यायवाची षब्दों के समान प्रयोग करते है। परन्तु 1,2 और 3 यूहन्ना में केवल अगापाओ षब्द का प्रयोग हैं (3,5,6 यूह. 3:18)

सच्चाई

यह एक पुनरावर्तित विशय है (1दो बार 2,3,4)। आयत 9 तथा 10 के ''षिक्षा'' सच्चाई के र्प्यायवाची षब्द है। इस षब्द का प्रयोग किसी प्राद्रषिक झूठे षिक्षा के वजह से हुई जिसे हम इस पत्री में साफ दिखाई पड़ती है (आयतें. 4, 7–10)। सच्चाई निम्नलिखित तीन बातों से किसी एक को दर्षा रहे होंगेः (1) पवित्रात्मा (यूह. 14:17); (2) यीषु मसीह स्वयं (यूह. 8:32; 14:6); या (3) सुसमाचार का विशयवस्तु (1यूह. 3:23)।

आयत. 2

'' जो हम में स्थिर रहती है,''

यह यूहन्ना के विषेश षैली है जिसके द्वारा वह विष्वासियों के बने रहने का विशय के बारे में कहते हैं। देखिए **विषेश षीर्शक** : बने रहनाः 1यूह. 2:10। इस प्रसंग में इस षब्द का अर्थ है पवित्रात्मा का अन्दरनिवास (रोमि. 8:9; या पुत्र का अन्दरविास–रोमि. 8:9–10)। त्रीएकता के षेश व्यक्तित्व भी विष्वासी में बने रहते है (यूह. 14:23)।

''सर्वदा हमारे साथ अटल रहेगी''

सच्चाई विष्वासी में हमेषा के लिए बना रहता है। निष्चयता के कितना अनोखा वचन है यह! सच्चाई सुसमाचार का व्यक्ति और संदेष हैं। यह सच्चाई हमेषा प्रेम, परमेष्वर के प्रति प्रेम, सह विष्वासियों के प्रति प्रेम और खोए हुए संसार के प्रति प्रेम को उत्पन्न करता है।

आयत 3

'' अनुग्रह, और दया, और शान्ति,''

यह दो कामनाओं के साथ लिखा हुआ एक यूनानी खत का परीचय है। पहला कि इसे थोड़ा सा बदलकर इसे मसीहत का बनाया गया। अभिवादन के लिए यूनानी षब्द है केरिएन। इसे कारीस में बदल दिया गया जिसका अर्थ है अनुग्रह। यह परीचय पास्तरीय पत्रीयों के समान हैं, 1तिमु. 1:2; 2तिमु. 1:2; इन में से दो षब्दों का प्रयोग गलातिया और 1थिस्सलुनिकिया के पत्रीयों में पौलूस ने किया है।
दूसरा, सामान्य **व्याकरणात्मक ढाँचा** स्वास्थ के लिए प्रार्थना एक प्रार्थना या षुभकामना है। हलॉकि 2 यूहन्ना एक सत्य का कथन है– एक इच्छा के साथ परमेष्वर के साथ खड़े होने का वयदा।
अनुग्रह, और दया, परमेष्वर के चरित्र को प्रतिबिंबित करते है जो पतित मनुश्य के लिए मसीह के द्वारा मुफ्त उद्धार लाते हैं। शान्ति,परमेष्वर का तोहफा का स्वीकृती को प्रतिबिंबित करते है। विष्वासी परिपूर्ण परीवर्तन का सामना करता है। जैसे पतन ने समस्त क्षेत्र को प्रभावित किसा वैसे उद्धार भी उसे पुनःस्थापित करता है, पहले पदवी के द्वारा (विष्वास के द्वारा दोशमुक्ति), और उसके बाद विष्व–दर्षन में अन्दरनिवास पवित्रात्मा के द्वारा

देखनेलायक बदलाव लाते है जिसे प्रगतिषील मसीहसमानता में पहुँचाते है (प्रगतिषील षुद्धिकरण)। मानव में परमेष्वर का स्वरूप (उत. 1:26–27)को पुनःस्थापित किया गया!
यह भी संभव है कि ये तीनों षब्द झूठे षिक्षकों से भी संबन्ध रखता है। केवल यहाँ पर यूहन्ना ने दया (ईलीयोई) षब्द का प्रयोग किया है।अनुग्रह का उपयोग सुसमाचार में 1:14,16,17 और प्रकाषितवाक्य में 1:4; 22:21 में है।

'' परमेश्वर पिता,
और यीशु मसीह की ओर से ''

दोनों संज्ञा में विभक्ति पारा का प्रयोग है जिस कारण उन दोनों को समानता में रखते हैं। यह यीषु के दैवीयता को प्रमाणीत करने का एक ओर तरीका है।

'' पिता के पुत्र ''

1यूहन्ना का बात को इसे दोहराया गया कि बिना पुत्र के कोई भी पिता बन नही सकता (1यूह. 2:23; 4:15; 5:10)। झूठे षिक्षकों ने परमेष्वर के साथ उनका एक विषेश संबन्ध होने की बात का दावा किया गया। यूहन्ना बार बार इस बात को दोहरा रहे है कि पिता के पास पहूँचने का एक ही मार्ग यीषु ही है (यूह. 14:6)।

आयतें 4–6

4. मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैं ने तेरे कितने लड़के–बालों को उस आज्ञा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली थी सत्य पर चलते हुए पाया।
5. अब हे श्रीमती, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं, पर वही जो आरम्भ से हमारे पास है, लिखता हूँ; और तुझ से बिनती करता हूँ, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें।
6. और प्रेम यह है कि हम उस की आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह वही आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर चलना भी चाहिए।

आयत. 4

'' मैं बहुत आनन्दित हुआ,''

संभवताः प्राचीन ने इस कलीसिया के बारे में षायद किसी यात्री सदस्यों से सुना है।

'' कितने लड़के–बालों को सत्य पर चलते हुए पाया''

यह निम्नलिखित बातों की ओर इषारा करता है (1) कलीसिया में कईयों का परमेष्वरीय प्रेमी जीवन (2यूह. 3–4), या (2) मनडली के अनदर के कुछ विधर्मीयों को पहचानने का एक तरीका जो कईयों को नाष की ओर ले गए थे।

'' उस आज्ञा के अनुसार,
जो हमें पिता की ओर से मिली थी ''

यह भूतकाल में दिया गया एक आदेष की ओर इषारा करता है (यूह. 13:34—35; 15:12; 1यूह. 3:11; 4:7,11,12,21)।

आयत. 5

'' वही जो आरम्भ से हमारे पास है,''

यह यीषु के प्रारम्भिक षिक्षा की ओर इषारा करता है (1यूह. 2:7,24; 3:11)। उस आदेष का विशयवस्तु पुनःदोहराया गया जैसे कि ''एक दूसरे से प्रेम करो'' (आयत. 5) और यीशु मसीह शरीर में होकर आया इस बात को मानते हैं (आयत. 7)।

''हम एक दूसरे से प्रेम रखें''

यह 1यूहन्ना में बताए गए तीन परखों से पहला वाला है जिसके द्वारा हमें पता चले कि एक व्यक्ति मसीही है कि नही। 1यूहन्ना के परख हैंः सैद्धान्तिक, प्रेम और जीवनषैली। इन परखों को 2यूहन्ना में भी दोहराया गयाः (1) प्रेम (आयत. 5; 1यूह. 2:7—11; 3:11—18; 4:7—12, 16—21; 5:1,2); (2) उसकी आज्ञाओं का पालन करते है (आयत. 6; 1यूह. 2:3—6; 3:1—10; 5:2—3); (3) सैद्धान्तिक (आयत. 7; 1यूह. 1:1; 2:18—25; 4:1—6,14—16; 5:1,5,10)।

आयत. 6

''और प्रेम यह है''

प्रेम एक जारी रहनेवाली प्रक्रिया है। यह सच्चे विष्वाससियों का चिन्ह हैं (1कुरि.13; गला. 5:2; 1यूह. 4:7—21)।

आयतें 7—11

7. क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आयाः भरमानेवाला और मसीह का विरोधी यही है।
8. अपने विषय में चौकस रहो; कि जो परिश्रम हम ने किया है, उस को तुम न बिगाड़ोः बरन उसका पूरा प्रतिफल पाओ।
9. जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहींः जो कोई उस की शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।
10. यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न तो घर मे आने दो, और न नमस्कार करो।
11. क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उस के बुरे कामों में साझी होता है।।

आयत. 7

'' बहुत से ऐसे भरमानेवाले ''

यह षब्द यूनानी के *प्लेने* से आया है जिसे ग्रहों को सूचित करने के लिए उपयोग करते है। आकाष गंगा में कुछ ग्रह बिना किसी सही तरीके से फिरते है उन्हें ''घूमनेवाले'' कहते है । इसे रूपक के समान जो सच्चाई से फिर जाते है उनके लिए प्रयोग किया गया।
झूठे षिक्षक केवल गलत ही नही या लोगों को नाष की ओर ले गए इतना ही नही पर परमेष्वर के स्पश्ट ज्योति का विद्रोह किया है। इसलिए उनके इस पाप को ''क्षमारहित पाप'' या ''मृत्यु की ओर ले जानेवाले पाप'' कहा जाता है। नया नियम पहले से कहते है कि झूठे षिक्षक प्रगट होंगे और बड़ी समस्या को उत्पन्न करेंगे (मत्ती. 7:15; 24:11,24; मरकुस. 13:22; 1यमह. 2:26; 3:7; 4:1)।

'' जगत में निकल आए हैं,''

यह संसार केवल एक भौतिक संसार है। ये झूठे षिक्षक कलीसिया छोड़ चुके है (1यूह. 2:19) या वे अपनी बातों को फैलाने के काम में व्यस्त है (3यूहन्ना)।

'' जो यह नहीं मानते,''

यह यूनानी में *होमोलोगियो* है जिसका अर्थ है अपना विष्वास का सार्वजनिक घोशणा।

''यीशु मसीह
शरीर में होकर आयाः''

ये भरमानेवाले यीषु के व्यक्तित्व के बारे में गलत षिक्षा को जारी रखा। यह आयत उस उपदेष को फिर से दोहरा रहे कि ''आत्माओं को परखो'' (1यूह. 4:1–6; यूह. 1:14; 1तिमु. 3:16)। नॉस्टिकों के दोहरावाद के अनुसार यीषु कभी भी परिपूर्ण मनुश्य या परिपूर्ण परमेष्वर नही हो सकता हैं।
यह प्रारम्भिक नॉस्टिकों के अन्दर दो धर्मषास्त्रीय विचारधारा को प्रगट करता हैः (1) यीषु के मानवीयता का तिरस्कार। वो मनुश्य रूप में आया परन्तु आत्मा था, और (2) यीषु के क्रूस पर का मृत्यु को नकारते है; इस झुण्ड के विचार है मसीह का आत्मा यीषु नामक एक व्यक्ति के ऊपर उसके बपतिस्मा के समय पर उतर आया और क्रूस के मृत्यु से पहले उसे छोडकर चला गया।
यहाँ पर वर्तमानकाल का प्रयोग के द्वारा नॉस्टिक झूठी षिक्षा का विरोध कर रहे है।

'' भरमानेवाला और मसीह का विरोधी यही है।''

1यूह. 2:18 में एकवचन और बहूवचन के बीच में अन्तर था। बहुवचन का पूरा होना यूहन्ना के ही समय में हुआ और वे कलीसिया को छोड़ा (1यूह. 2:19)। और एकवचन का प्रकट होना भविश्य मे होगा।

आयत. 8

'' चौकस रहो;''

यह यूनानी में *ब्लेपो* है जिसे रूपके के तौर पर प्रयोग किया गया। यह दुश्ट के विरोध में एक चेतावनी है (मत्ती. 24:4; मरकुस. 13:5; लूका. 21:8; प्रेरित. 13:40;1कुरि. 8:9; 10:12; गला. 5:12; इब्रा. 12:25)। झुठ को

परखने में विष्वासी जिम्मेवार है, क्योंकि (1) वे सुसमाचार जानते हैं (2) उनके पास पवित्रात्मा है; ओर (3) वे निरन्तर होनेवाली संगति हैं

एन ए एस बी, " कि जो परिश्रम हम ने किया है, उस को तुम न बिगाड़ोः"
एन के जे वी " उस को तुम न बिगाड़ो कि जो परिश्रम हम ने किया है, :"
एन आर एस वी " कि जो परिश्रम हम ने किया है, उस को तुम न बिगाड़ो"
टी इ वी " कि जो परिश्रम हम ने किया है, उस को तुम न खाओ "
एन जे बी **"या तो सारे परिश्रम नाष होंगे।"**

" बरन उसका पूरा प्रतिफल पाओ।"

यह उनका सुसमाचार स्वीकृती को दिखाता है। सुसमाचार का प्रौढ़ता और विकास उनके द्वारा ही है (1कुरि. 9:27; 15:10,14,58; 2कुरि. 6:1; गला. 2:2; फिलि. 2:16; 1थिस्स. 2:1; 3:5)।

आयत. 9

एन ए एस बी, " जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता,"
एन के जे वी " जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की उपदेष में बना नहीं रहता,"
एन आर एस वी " जो कोई मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता,"
टी इ वी " जो कोई मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, पर आगे बढ़ जाता है,"
एन जे बी "यदि कोई मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, पर आगे बढ़ जाता है तो"

सुसमाचार की नेवता सब के लिए है। और विधर्म ने भी वेसा ही किया। इस में दो मुख्य बात है (1) आगे बढता जाता है, और (2) बना नही रहता। पहलेवाला झूठे षिक्षकों के प्रति है ओर दूसरा विष्वासियोंके प्रति है जो कि उनके अन्दर सत्य का वचन बने रहना (यूह. 8:31; 15:7; 1यूह. 2:14)। देखिए **विषेश षीर्शक : दृढ़ रहने की आवष्यकता** : यूहन्ना. 8:31

" उसके पास परमेश्वर नहींः"

आयत 2 का सत्य ओर मसीह का षिक्षा दोनों एक समान हैं। झूठे षिक्षक और उनके अनुयायियों के लिए कोई प्रतिफल नहीं है। वे परमेष्वर के बिना आत्मिकरूप से खोया हुआ अवस्था में है ंयदि कोई पिता को अपनाना चाहे तो उसके पास पुत्र का होना अतिआवष्यक है (1यूह. 5:10–12)।

आयत. 10

"यदि"

यह पहले दर्जे का षर्त वाक्य है जो लेखक के नज़रिये से उनके लेख के लिए सत्य है। झूठे षिक्षक आएंगे।

" उसे न तो घर मे आने दो, "

यह नकारात्मक विभक्ति के साथ वर्तमानकाल आदेष हैं जिसका अर्थ है जो काम प्रगति में है उसे रोको।

षब्द ''घर'' मसीही भाईचारा को दर्षाता है।(मत्ती. 25:35; रोत. 12:13; 1तिमु. 3:2; तीतुस. 1:8; इब्र. 13:2; 1पत. 4:9; 3यूह.5–6), षायद घुमफिरकर चलनेवाले प्रचारक के विशय में (रोमि. 16:5; 1कंरि. 16:19; कु. 4:15; फिले. 2)।

'' न नमस्कार करो।''

यह नकारात्मक विभक्ति के साथ वर्तमानकाल का आदेष है। नामधारी मसीहियों के साथ अपना पहचान नही बनना है कई मसीही होने का दावा करते है। मसीही अगुवों को विधर्म के बारे में जानकारी हो।

आयतें 12–13

12. मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज और सियाही से लिखना नहीं चाहता; पर आशा है, कि मैं तुम्हारे पास आऊंगा, और सम्मुख होकर बातचीत करूंगाः जिस से तुम्हारा आनन्द पूरा हो।
13. तेरी चुनी हुई बहिन के लड़के–बाले तुझे नमस्कार करते हैं।

आयत. 12

'' मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं,''

यह 3यूहन्ना के अन्त के समान है – 3यूह. 13,14 ।

'' जिस से तुम्हारा आनन्द पूरा हो। ''

यह यूहन्ना में आम पाए जानेवाला विशय हैं (यूह. 3:29; 15:11; 16:24 ; 17:13; 1यूह. 1:4)। यह आनन्द नीचे दिए गए बातों से होता हैः (1) षिक्षक की उपस्थिति, (2) सत्य का ज्ञान जिसे उसने लाया।

आयत. 13

यह आयत 1 के समान रूपकात्मक बातों का प्रयेग करता है जिसे वह दूसरी एक कलीसिया के बारे में बताता हे।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. 1यूहन्ना में उल्लेखित उन परखों के बारे में बताए जो 2यूहन्ना में पाए जाते है।

क.

ख.

ग.

2. क्या यह एक महिला के लिए लिखा गया या कलीसिया के लिए ?
3. इस छोटी सी पत्री से आप कैसे बता सकते है कि विधर्मी कलीसिया में उपस्थ्ति हैं ?
4. कौन और कैसा है मसीही विरोधी ?
5. आयत 10 और 11 के तर्क हमारे बाइबलीय भाईचारे के विरोध मे है ?

3 यूहन्ना

पाँच आधुनिक अंग्रेजी अनुवादों के विच्छेद

यू बी एस[4]	एन के जे वी	एन आर एस वी	टी इ वी	जे बी
अभिवादन	गयुस को अभिवादन		परिचय	अभिवादन
आयत. 1	आयतें 1–4	आयत. 1	आयत. 1क	आयतें 1–4
			आयत. 1ख	
आयतें 2–4		आयतें 2–4	आयतें 2–4	
सहयोग और विरोध	सहयोग के लिए सराहना		गयुस की प्रषंसा	
आयतें 5–8	आयतें 5–8	आयतें 5–8	आयतें 5–8	आयतें 5–8
	दियुत्रिफेस और देमेत्रियुस		दियुत्रिफेस और देमेत्रियुस	दियुत्रिफेस के उदाहरण से सावधान
आयतें 9–10	आयतें 9–12	आयतें 9–10	आयतें 9–10	आयतें 9–11
आयतें 11–12		आयतें 11–12	आयत 11	देमेत्रियुस की प्रषंसा
			आयत 12	आयत 12
अन्तिम अभिवादन	विदाई अभिवादन		अन्तिम अभिवादन	उपसंहार
आयतें 13–15	आयतें 13–15	आयतें 13–14	आयतें 13–14	आयतें 13–15
		आयत 15	आयत. 15क	
			आयत 15ख	

प्रासंगिक अन्तरदृश्टि 3 यूहन्ना

परीचय

क. यह 2यूहन्ना से थोड़ा सा छोटा है। मैं सोचता हूँ कि इसे पहली षताब्दी के अन्त में आसिया मैनर की किसी प्रादेषिक कलीसिया के लिए लिखा गया।

ख. यह घूम–फिरकर सेवा करनेवाले प्रचारकों को उपदेष देने के लिए लिखा गया है।

ग. तीन व्यक्तियों के नाम इस पत्री में उल्लेखित है।
1. गयुस
(क) बाइबल के अन्य भागों में 3 गयुस के बारे में लिखा गया हैः मकिदुनिया की गयुस प्रेरित. 19ʻ29; दिरबे का गयुस प्रेरित. 20:4; कुरिन्द का गयुस रोमि. 16:23; 1कुरि. 1:14 ।
(ख) ''प्रेरितों के नियमावली'' के अनुसार 3यूहन्ना के गयुस युहन्ना के द्वारा पिरगमुन में नियुक्त किया गया बिषप था।
2. दियुत्रिफेस (उस कलीसिया में समस्या पैदा करनेवाला परमेष्वर रहित व्यक्ति)
(क) नए नियम में केवल यहाँ इस व्यक्ति के बारे में चर्चा है।
(ख) उसके व्यहार का चित्रण आयतें 9–10 में है।
3. देमेत्रियुस (यूहन्ना के पत्री को इस कलीसिया में ले आनेवाला)
(क) वह एक घूम–फिरकर सेवा करनेवालों से एक तथा इस पत्री को अफिसुस से यहाँ पहुँचानेवाला व्यक्ति था।
(ख) ''प्रेरितों के नियमावली'' के अनुसार देमेत्रियुस फिलेदिलफिया का बिषप था जिसे यूहन्ना ने नियुक्त किया था।

घ. प्रारम्भिक कलीसिया घूम–फिरकर सेवा करनेवालों की मदद के लिए काफी संघर्श किए।

अध्ययन कालचक्र एक

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे थ्टप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए और मुख्य विशय का रूपरेखा बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

1. पुस्तक का केन्द्रीय विशय

2. साहित्य का प्रकार

अध्ययन कालचक्र दो

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पुनः पढ़िए और मुख्य विशय का रूपरेखा बनाओ और विशय को एक वाक्य में लिखो।

1. पहले साहित्यिक इकोई विशय

2. दूसरे साहित्यिक इकोई विशय

3. तीसरे साहित्यिक इकोई विशय

4. चौथे साहित्यिक इकोई विशय

5. इत्यादि

अध्ययन कालचक्र तीन

अनुच्छेद में वास्तविक लेखक की मनसा का अनुकरण करना।

यह पढ़ने के लिए एक मार्गदर्षक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि बाइबल का अनुवाद करने के लिए आप स्वयं ज़िम्मेदार हैं। हम में से हरेक को उस रोषनी में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्र आत्मा प्रमुख हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं छोड सकते।

बाइबल की पूरी पुस्तक को एक ही बार में पढ़िए। विशय को पहचानिए। अपने विच्छेद की तुलना नए पांच अनुवादों के विच्छेद से कीजिए। अनुच्छेद प्रेरणा पाया हुआ नहीं पर यह वास्तविक लेखक के उद्देष्य को समझने में सहायक है जो कि अनुवाद का हृदय है। हर अनुच्छेद का केवल एक ही अर्थ होता है।

1) पहला अनुच्छेद

2) दूसरा अनुच्छेद

3) तीसरा अनुच्छेद

4) इत्यादि

षब्द और वाक्यांष अध्ययन

आयत. 1

1. मुझ प्राचीन की ओर से उस प्रिय गयुस के नाम, जिस से मैं सच्चा प्रेम रखता हूँ।

आयत. 1

''प्राचीन''

यह ''पासबान'' और ''बिषप'' का पर्यायवाची षब्द है (तीतुस. 1:5,7; प्रेरित. 20:17,28)। देखिए नोट : 2यूहन्ना. आयत. 1 ।

'' उस प्रिय''

यह यूहन्ना के पत्रियों का खासियत है (1यूह. 2:7; 3:2,21; 4:1,7,11; 3यूी. 1,2,5,11), परन्तु इसे सुसमाचार और प्रकाषितवाक्य में नही पाता हैं।

'' गयुस ''

इस कलीसिया की पासबान कौन था (गयुस या देमेत्रियुस) इस बात के ऊपर काफी वाद विवाद हैं। आयत 9 में ''मण्डली'' और ''उन'' षब्द का प्रयोग षायद देमेत्रियुस को अगुवे के रूप में इषारा करता है।

''जिस से मैं सच्चा प्रेम रखता हूँ''

यूहन्ना के लेखों में प्रेम और सच्चाई कई बार एक साथ आता है (2यूह. 1,2,3,4; 3यूह. 1,3,4,7,8,12)। सच्चाई षायद (1) पवित्रात्मा (यूह. 14:7); (2) पुत्र यीषु (यूह. 8:32; 14:6); या (3) सुसमाचार की विशयवस्तु (1यूह.2:2; 3:23)।

आयतें. 2–4

2. हे प्रिय, मेरी यह प्रार्थना है; कि जैसे तू आत्मिक उन्नति कर रहा है, वैसे ही तू सब बातों मे उन्नति करे, और भला चंगा रहे।
3. क्योंकि जब भाइयों ने आकर, तेरे उस सत्य की गवाही दी, जिस पर तू सचमुच चलता है, तो मैं बहुत ही आनन्दित हुआ।
4. मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि मेरे लड़के–बाले सत्य पर चलते हैं।

'' मेरी यह प्रार्थना है;''

यह यूनानी खत आरम्भ करने का तरीका है। यह प्राप्तकर्ता के स्वास्थ और ऐष्वर्य के लिए षुभ कामना है। प्रियों का अभिवादन करने का तरीका है।

''तू सब बातों मे उन्नति करे,
और भला चंगा रहे''

यह रोमी–यूनानी खत आरम्भ करने का तरीका है। यह प्रचारकों की उन्नती के विशय में नही कह रहे।

''आत्मिक''

यहाँ *सुके* (आत्मा) षब्द का प्रयोग है यह *न्यूमा* का पर्यायवाची षब्द हैं। इसे याजकत्व का निचोड़ बताने के लिए प्रयोग करते हैं। यह षरीर, आत्मा तथा प्राण के विशय मे नही कहता। मनुश्य एक है (उत्. 2:7) हम एक आत्मा है।

आयत. 3

''मैं बहुत ही आनन्दित हुआ''

(2यूह. 4; फिलि. 4:10)।

'' आकर, गवाही दी,''

अर्थात् कलीसिया की सदस्य लगातार इफिसुस जाते थे और गयुस के बारे में चर्चा करते थे, और (2) इफिसुस से लौटे हुए सेवकोके ने गयुस के बारे में चर्चा की।

''सत्य पर चलते हैं''

मसीहत एक जीवन है जिसमें यीषु के साथ का संबन्ध के साथ जीना है। प्रारम्भिक कलीसिया ''मार्ग'' कहलाते थे (प्रेरित. 9:2; 19:9,23; 24:22)। सच्चाई केवल बुद्धिसंगत बात नही है पर एक संबन्ध भी हैं । देखिए **विषेश षीर्शक** : सत्य 1:7 ।

आयत. 4

'' मेरे लड़के ''

यूहन्ना की पत्री में पाए जानेवाला आम पदवी हैं (1यूह. 2:12,13,18,28; 3:7,18; 4:4; 5:21)। यह यूहन्ना का (1) प्रेरिताई अधिकार या (2) कलीसिया और विष्वासियों के लिए प्रेम को दर्षाता है जहाँ उसने अपने अन्तिम दिनों की सेवा की है।

आयतें 5–8

5. हे प्रिय, जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है, जो परदेशी भी हैं, उसे विश्वासी की नाई करता है।
6. उन्हों ने मण्डली के साम्हने तेरे प्रेम की गवाही दी थीः यदि तू उन्हें उस प्रकार विदा करेगा जिस प्रकार परमेश्वर के लोगों के लिये उचित है तो अच्छा करेगा।
7. क्योंकि वे उस नाम के लिये निकले हैं, और अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते।
8. इसलिये ऐसों का स्वागत करना चाहिए, जिस से हम भी सत्य के पक्ष में उन के सहकर्मी हों।।

<u>*आयत. 5*</u>

<u>*''विश्वासी की नाई करता है''*</u>

गयुस के कार्य दियुत्रिफेस के कार्य जो आयत 9—10 में के बिलकुल विरुद्ध है।

<u>*''जो कुछ तू करता है''*</u>

गयुस ने हर एक घूम—फिरकर सेवा करनेवालों की मदद हर हालत में किया।

<u>*'' जो परदेशी भी हैं,''*</u>

यह कलीसिया घूम—फिरकर सेवा करनेवालों की स्वगत किया, प्रसंग के अनुसार गयुस अकेला उन्हें न पहचानने के बाजजूद वे यीषु से प्रेम करते है सुनकर उनकी मदद की।

<u>*आयत. 6*</u>

<u>*'' उन्हों ने मण्डली के साम्हने*</u>
<u>*तेरे प्रेम की गवाही दी थीः''*</u>

स्पश्ट रूप से इफिसुस कलीसिया में अराधना के बीच में सेवकोई का ब्योरा देने का समय रखा गया था।

<u>*''तू अच्छा करेगा''*</u>

यह एक यूनानी मुहावरा है जिसका अर्थ है कृप्या (प्रेरित. 10:33)।

<u>*'' उन्हें उस प्रकार विदा करेगा ''*</u>

यह तैयारी, प्रार्थना, प्रावधान के लिए प्रयोग करनेवाला एक मुहावरा है (प्रेरित. 15:3; रोमि. 15:24; 1कुरि. 16:6; 2कुरि. 1:16; तीतुस. 3:13)।

<u>*'' जिस प्रकार परमेश्वर के लिये उचित है ''*</u>

अर्थात् विषेश, प्रेम भरा और बहुतायत के तरीके से (कुलु. 1:10; 1थिस्स. 2:12)। विष्वासियों को चाहिए कि सुसमाचार के सेवकों की सेवा सम्मानुयुक्त तरीके से करनी है।

<u>*आयत. 7*</u>

एन ए एस बी, '' उस नाम के लिये ''
एन के जे वी '' उसके नाम के लिये ''
एन आर एस वी '' मसीह के लिये ''
टी इ वी '' मसीह के सेवा के लिये ''
एन जे बी '' परिपूर्ण रूप से उस नाम के लिये ''

यह इस बात का उदाहरण है कि ''उस नाम'' एक व्यक्ति को दर्षाता हैं। विष्वासियों को उसके नाम विष्वास करना चाहिए (रोमि. 10:9; 1कुरि. 12:3; फिलि. 2:9—11; 1यूह.3:22), उन्हें उसके नाम के लिए कार्य करना है (मत्ती. 10:22; 24:9; मरकुस. 13:13; लूका. 21:12,17; यूह. 15:21; 20:31; प्रेरित. 4:17; 5:41; 9:14; रोमि. 1:5; 1पत.4:14;,16; प्रकाष. 2:3)।

एन ए एस बी, '' अन्यजातियों से कुछ ग्रहण नहीं करते।''
एन के जे वी '' अन्यजातियों से कुछ नहीं लेते।''
एन आर एस वी '' अन्यजातियों से कुछ मदद नहीं लेते।''
टी इ वी '' अविष्वासियों से कोई मदद नहीं लेते।''
एन जे बी '' अन्यजातियों पर निर्भर न रहते हुए।''

पहली षताब्दी के अन्त में अविष्वासियों को ''अन्यजाती'' से संकेत किया करते थे (मत्ती. 5:47; 1पत. 2:12; 4:3)। विष्वासियों को चाहिए कि वे सुसमाचार के कार्य को मदद करें। जो मदद करता है वे अपने हृदय को प्रगट करता हैं।
प्रभु के सेवक लोग किसी आदर और पैसे के लिए सेवा नही कर रहे है पर त्यागपूर्ण तरीके से इस में षामिल होते है।

आयत. 8

'' चाहिए,''

यह एक साधारण उपदेष है (यूह. 13:14; 19:7; 1यूह. 2:6; 3:16; 4:11)।

''ऐसों का स्वागत ''

उस समय का प्रादेषिक सराय की खस्ता हलात की वजह से प्रारम्भिक कलीसिया में पहुनाई की एक गम्भीर भूमिका थी (मत्ती. 25:35; रोमि. 12:13; 1तिमु. 3:2; 5:10; तीतुस. 1:8; इब्रा. 13:2; 1पत. 4:9)।

आयतें 9—10

9. मैं ने मण्डली को कुछ लिखा था; पर दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है, हमें ग्रहण नहीं करता।
10. सो जब मैं आऊंगा, तो उसके कामों की जो वह कर रहा है सुधि दिलाऊंगा, कि वह हमारे विषय में बुरी बुरी बातें बकता है; और इस पर भी सन्तोष न करके आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता, और उन्हें जो ग्रहण करना चाहते हैं, मना करता है: और मण्डली से निकाल देता है।

आयत. 9

'' मैं ने मण्डली को कुछ लिखा था;''

यह 1 या 2 यहन्ना की पत्री की ओर दर्षाता है, अधिकतर मानते है कि यह 2यूहन्ना की ओर दर्षाता है।

'' दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है,''

यह पहला व्यक्ति है जिसके बारे में कलीसिया में बड़ा बनना चाहता है करके लिखा है। इस विशय के बारे में हमें जानकारी नही कि वह पासबान है या एक विष्वासी है। यह उसके लक्ष्य को बताता है। इस प्रकार के लोग कलीसिया में हर सदी में होता है।

'' हमें ग्रहण नहीं करता। ''

वह केवल प्रेरितों का अधिकार ही नही पर प्रेरितों की नीती को भी ठुकराया।

आयत. 10

''यदि''

यह एक तृतीय दर्जे का षर्तीय वाक्य है, अर्थात् सम्भावित कार्य।

'' उसके कामों की जो वह कर रहा है सुधि दिलाऊंगा,''

यूहन्ना चाहता है कि उसके लक्ष्य (आयत. 9) और कामों (आयत. 10) को सुधारा जाए।
1.
एन ए एस बी, '' वह हमारे विषय में बुरी बुरी बातें बकता है;''
एन के जे वी '' वह हमारे विषय में बुरे षब्दो का प्रयोग करता है;''
एन आर एस वी ''झूठे आरोपों को हम पर लगाता है''
टी इ वी '' वह हमारे विषय में भयानाक बातें बकता और बोलता फिरता हैं;''
एन जे बी '' वह हमारे विषय में बुरे बुरे आरोप लगाता है''

2. ''वह आप ही भाइयों को ग्रहण नहीं करता ''
3. '' जो ग्रहण करना चाहते हैं, उन्हें मना करता है:''
4. ''वह मण्डली से निकाल देता है''

आयतें. 11–12

11. हे प्रिय, बुराई के नहीं, पर भलाई के अनुयायी हो, जो भलाई करता है, वह परमेश्वर की ओर से है; पर जो बुराई करता है, उस ने परमेश्वर को नहीं देखा।
12. देमेत्रियुस के विषय में सब ने बरन सत्य ने भी आप ही गवाही दीः औश्र हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है, कि हमारी गवाही सच्चा है।।

आयत. 11

'' बुराई के अनुयायी न हो''

यह एक वर्तमानकाल आदेष है जिसका अर्थ है जो काम प्रगति में है उसे रोको। हमारे आदर्ष को हमें सावधानी से चुनना है। हमें कलीसिया में परीपक्व मसीहियों के सतान व्यवहार करना चाहिए (2थिस्स. 3:7,9; इब्रा. 6:12; 13:7)। देमेत्रियुस एक अच्छा आदर्ष है, दियुत्रिफेस बुरा आदर्ष है।

'' जो भलाई करता है,
वह परमेश्वर की ओर से है;''

यह आज्ञाकारिता की परख को दर्षाता है (1यूह. 2:3—6,28,29; 3:4—10; 5:18; 2 यूह. 6)। बाकी दोनों परख के लिए संकेत भी है (1) सैद्धान्तिक (आयतें. 3—4); और (2) प्रेम (आयतें. 1—2,6)।

''जो बुराई करता है,
उस ने परमेश्वर को नहीं देखा''

झूठे षिक्षकों ने परमेष्वर के साथ घनिश्ठ संबन्ध का दावा तो ज़रूर किया पर परमेष्वर रहित और अप्रेमी जीवन बिताया। प्रतिदिन की जीवन षैली में परमेष्वर के साथ संबन्ध नही हैं।

आयत. 12

'' देमेत्रियुस के विषय में सब ने गवाही दी''

ऐसा लगता है कि यह गयुस के लिए देमेत्रियुस के प्रति यूहन्ना का एक अनुमोदन पत्र है।

'' सत्य ने भी आप ही ''

देमेत्रियुस के गवाही के प्रति सत्य ने स्वयं गवाह बना हैं।

''और तू जानता है,
कि हमारी गवाही सच्चा है''

यूहन्ना मसीह के लिए अपना भरोसेमन्द गवाही को पेष कर रहे हैं।

13—14

13. मुझे तुझ को बहुत कुछ लिखना तो था; पर सियाही और कलम से लिखना नहीं चाहता।

14. पर मुझे आशा है कि तुझ से शीघ्र भेंट करूंगाः तब हम आम्हने साम्हने बातचीत करेंगेः तुझे शान्ति मिलती रहे।

आयत. 13

यह 2 यूहन्ना के समान है।

14ख. तुझे शान्ति मिलती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार करते हैंः वहां के मित्राों के नाम ले लेकर नमस्कार कह देना।।

आयत. 14

'' तुझे शान्ति मिलती रहे। ''

यह इब्रानी भाशा के षालोम है (लूका. 10ः5)। यह केवल समस्याओं की अनुपस्थिती के विशय में नही कह रहे है पर परमेष्वर की आषिशों की उपस्थिती को प्रगट कर रहे है। यह षिश्यों के लिए पुनरुत्थित मसीह का पहला वचन था (यूह. 20ः19,21,26)। परमेष्वर के जन के लिए प्रार्थना के समय में पौलूस (इफि. 6ः23) और पतरस (1पत. 5ः14) ने इसे उपयोग किया हैं।

'' नाम ले लेकर ''

यह व्यक्तियों को सूचित करने का एक तरीका है।

चर्चा के लिए प्रष्न

यह एक अध्ययन सहायक टीका है, जिसका अर्थ यह है कि आप अपने बाइबल अनुवाद के लिए ज़िम्मेदार हैं। हममें से हरेक को उस प्रकाष में चलना है जो हमारे पास है। अनुवाद में आप, बाइबल और पवित्रात्मा प्राथमिक हैं। आप इसे टिप्पणीकार पर नहीं थोप सकते।

यह प्रष्न चर्चा के लिए इसलिए दिए गए हैं ताकि आप इस भाग की मुख्य बातों पर विचार कर सको। ये विचारों को जागृत करने के लिए हैं न कि परिभाशा प्रस्तुत करने लिए।

1. गयुस और देमेत्रियुस के बीच के अन्तर के प्रति कई सिद्धान्त है। उन में से कुछ हैः (1) धर्मषास्त्रीय कारण; (2) सामाजिक कारण; (3) कलीसिया संबन्धि कारण; और (4) नैतिकता संबन्धि कारण। इन में से प्रत्येक का विवरण करें और देखिए कि यह 3 यूहन्ना से कितने जुड़े है।

2. 2 और 3 यूहन्ना आपस में किस प्रकार संबन्धित है ?

3. 1 यूहन्ना में पाए गए तीन परख में से 2 और 3 यूहन्ना में पाए जानेवालों का सूची बनाएं ।